बृहत्पाराशर-होराशास्त्र

एक अध्ययन

विषयानुक्रमणिका

* * *

प्रथम
गणित खण्ड

卐 ।। श्री गुरवे नमः ।। 卐
।। श्री गणेशाय नमः ।।

अध्याय-1

विभिन्न लग्न साधन और विधि

लग्न की महत्ता :- ज्योतिष शास्त्र में लग्न की प्रमुखता है, इसे केन्द्र का प्रमुख अंग माना गया है । किसी भी कार्य के प्रारम्भ में लग्न बलवत्ता की प्रधानता होती है । इसके विषय में राजमार्त्तण्ड में लिखा है कि

लग्नं कोटिगुणं विद्याद् ग्रहवीर्य समन्वितम् ।

तस्मात्सर्वेषु कार्येषु लग्नवीर्यं विलोकयेत् ।।[1]

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट है कि ज्योतिष शास्त्रानुसार प्रचलित मुहूर्त्त परम्परा में लग्न की प्रमुखता है ।

इन्दुः सर्वत्र बीजाऽम्भो लग्नं च कुसुमप्रभम् ।

फलेन सदृशोंऽशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम् ।।[2]

भुवन दीपक नाम ग्रन्थ में बताया है कि समस्त कार्यों में चन्द्रमा बीज सदृश, लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान है ।

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी लग्नं ज्योतिः परं मतम् ।

लग्नं दीपो महान् लोके लग्नं तत्त्वं दिशन् गुरुः ।।[3]

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता, समर्थ स्वामी, परमज्योति और बड़ा दीपक संसार में माना गया है, क्योंकि गुरु जनों का यही आदेश है ।

---

1. "मुहूर्तपारिजात" (ज्यौतिषकल्पद्रुम), पं० सीताराम झा, पेज–132 से उद्धृत ।
2. "भुवन दीपकः", अध्याय 2 श्लोक 46 पेज 26, डॉ० सत्येन्द्र मिश्र, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन ।
3. "वृहदैवज्ञरञ्जनम्", डॉ० मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास, पेज 288 से उद्धृत।

म्लैच्छेषु विस्मृतं लग्नं कलिकालप्रभावतः ।

प्रभुप्रभावमासाद्य जैनधर्मेऽवतिष्ठति ।।[1]

म्लेच्छ जाति में कलियुग के प्रभाव से लग्न का ज्ञान नहीं रह गया है । यह जैन धर्म में भी प्रधान माना जाता है ।

न तिथिर्न च नक्षत्रं न योगो नैन्दवं बलम् ।

लग्नेमेव प्रशंसन्ति गर्गनारदकश्यपाः ।।[2]

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि–नक्षत्र व चन्द्र बल को न मानकर केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है ।

लग्नं जीवो मनश्चन्द्रः शरीरं तिथि भादिकाः ।

जीवे पुष्टे फलं पुष्टं नष्टे नष्टं विदुर्बुधाः ।।[3]

"ज्योतिसागर" नामक ग्रन्थ में बताया है कि लग्न जीव, मन चन्द्रमा और तिथि–नक्षत्रादिक शरीर होता है । अतः जीव के पुष्ट होने पर फल भी प्रबल और जीव के निर्बल होने पर या यों समझिये कि लग्न के निर्बल होने पर फल भी नहीं होता ।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः ।

तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरितो यथा ।।[4]

"ज्योतिर्विवरण" में कहा गया है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियाँ विलीन हो जाती हैं ।

---

1. "बृहदैवज्ञरञ्जनम्", डॉ० मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास, पेज 288 से उद्धृत।
2. वही, पेज 288
3. वही पेज 289
4. वही पेज 289

यथा जन्मलग्नाच्छुभं वाशुभं वा फलं जायते तद्वेदवें प्रकल्प्यम् ।

सदा सर्वकार्ये बुधैर्लग्नवीर्यं विचिन्त्यं विना तेन कार्यं न किञ्चित् ।।[1]

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है । अतः समस्त कार्यों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए ।

लग्न की परिभाषा :

1. **लग्नं भवति राशीनामुदयो यदवशादिहं ।**

   शुभं चाप्यशुभं सर्वं फलं ददति वै ग्रहाः ।।[2]

   पूर्व क्षितिज में राशियों का उदय लग्न कहलाता है उसी लग्न के वश सूर्य आदि ग्रह शुभाशुभ फल देते हैं ।

2. "इष्ट समय पर पूर्व क्षितिज पर जो राशि उदित हो रही होगी वह लग्न कहलाता है ।"

3. "कुण्डली में प्रथम केन्द्र की लग्न संज्ञा होती है ।"

अतः कहा जा सकता है कि लग्न के बिना प्रश्न विचार, जन्मपत्री का फलादेश, अन्य कोई शुभ कार्य, यज्ञादि कार्य बिना प्रबल लग्न के नहीं करने चाहिए । यदि निर्बल लग्न में कोई कार्य किया जाता है तो उसके फल की हानि होती है ।

---

1. "वृहदैवज्ञरञ्जनम्", डॉ० मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास, पेज 290 से उद्धृत।
2. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्रम्", दैवज्ञ पं० देवचन्द्र झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

लग्न का घटना-बढना :-

प्रत्येक राशि का मान 30° होता है । बारह राशियों का मान 30°×12=360° होता है । इन राशियों का समय इसलिए घटता–बढ़ता है कि हमारी पृथ्वी गोलाकार न होकर अण्डाकार मानी गई है । अतः अलग–अलग अक्षांश पर राशियों के चलने के समय में अन्तर हो जाता है ।[1]

जैसे :–
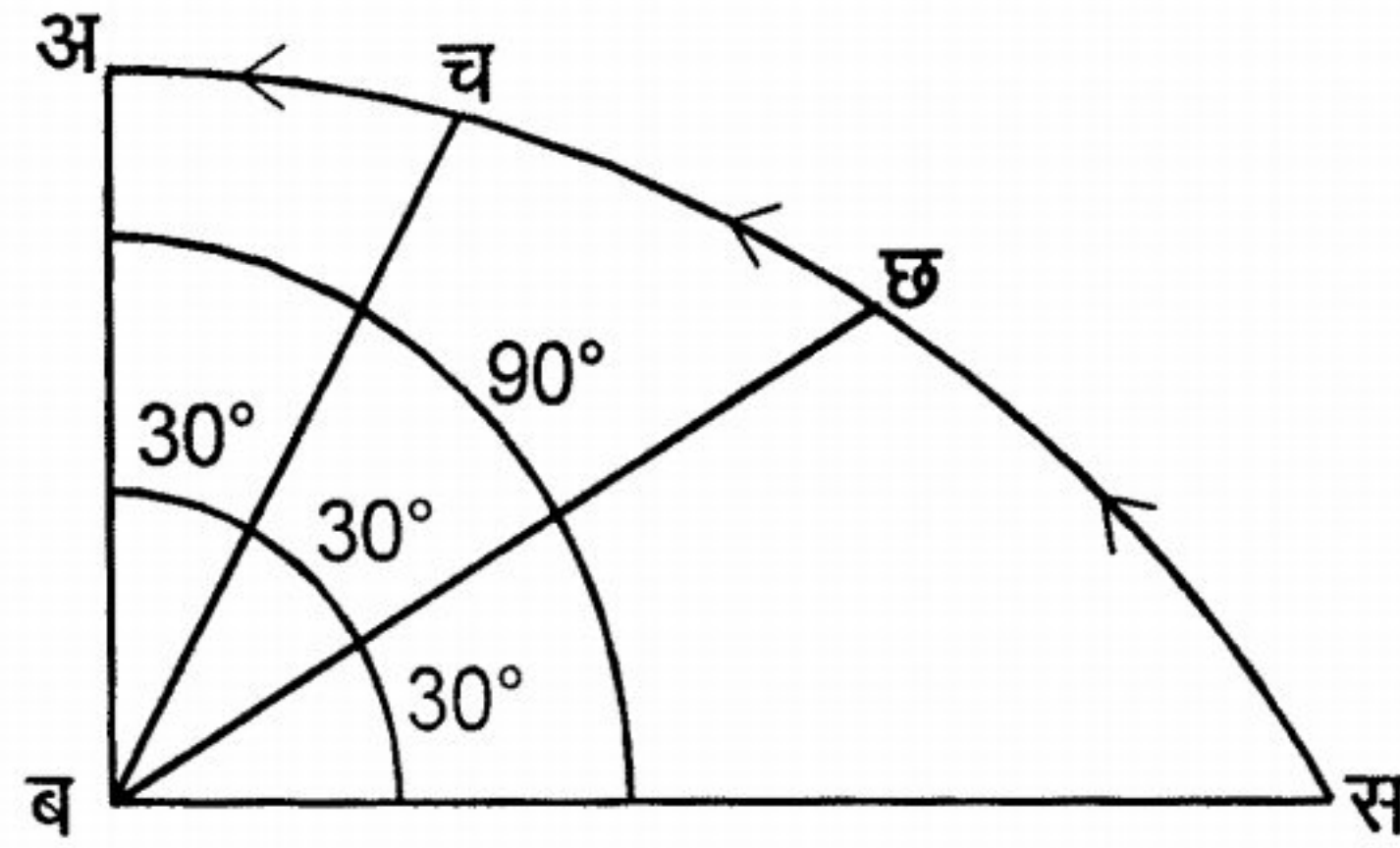
अब देखें ∠अ ब स = 90°, ∠छ ब स = 30°, ∠च ब छ = 30°, ∠अ ब च = 30° लेकिन चाप अ च की बजाय चाप च छ बड़ी तथा चाप च छ की बजायें चाप छ स बड़ी हैं । चाप स छ बड़ी रहने से समय ज्यादा लगेगा । इससे कम च छ में लगेगा तथा इससे कम समय अ च में लगेगा । इससे लग्न का घटना–बढ़ना स्पष्ट प्रतीत होता है । लेकिन यह पूर्ण रूप से सही नहीं जंच रहा है । इसके साथ एक अन्य सूत्र है जो इस सूत्र से भिन्न है वो इस प्रकार है :–

लग्न का परिमाण :- लग्न का परिमाण किसी स्थान का निश्चित नहीं हो सकता । लग्न

---

1. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकीनन्दन सिंह ।

अक्षांश का सूर्यक्रान्ति के अनुसार भिन्न स्थानों का भिन्न होता है । एक स्थान पर भी सूर्य क्रान्ति के अनुसार लग्न के मान में अन्तर आता है । कार्य के लिए "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" में लग्न के मान इस प्रकार बताए हैं :–

अर्कादिधूमपर्यंताः क्रमात्स्युर्घटिकांशके ।
सत्र्यंशा घटिकास्तिस्रो मेषानिमिषयोर्द्विज।।
चतस्रः कुंभवृषयोस्तथा मकरयुग्मयोः ।
वित्र्यंशाः पंच सत्र्यंशास्ताः कर्किधनुषोः स्मृताः।।
सिंहवृश्चिकयोः षट् च अंशोनाः सप्त शेषयोः ।
नित्यं मानमिदं प्रोक्तं मेषादुदयराशिजम् ।।[1]

मेष और मीन का 3 घटी 20 पल, वृष –कुम्भ का 4 घटी 0 पल, मिथुन–मकर का 4 घटी 40 पल, कर्क धनु का 5 घटी 0 पल, सिंह वृश्चिक का 6 घटी 0 पल, कन्या तुला का 6 घटी 40 पल लग्न परिमाण होता है ।

उपरोक्त चाप वाले उदाहरण में प्रत्येक राशि से 7वीं राशि का मान बराबर होता है, लेकिन दूसरे उदाहरण में ऐसा घटित नहीं हो रहा है । ज्योतिष रत्नाकार के अनुसार जो राशि पूर्व क्षितिज पर उदित है वह लग्न जन्म कुंडली का प्रथम भाव है , पश्चिम क्षितिज पर सातवां भाव है । ठीक हमारे सिर पर दसवां भाव है और ठीक पाताल में चौथा भाव होता है । इस प्रकार हम गणित द्वारा नियमानुसार लग्न व बारह भावों को आगे स्पष्ट कर रहे हैं।

लग्न साधन विधि :-"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्लोक 35 से 40 तक लग्न साधन विधि दी है । जिस समय का लग्न स्पष्ट करना हो, उस समय का तात्कालिक सूर्य स्पष्ट कर

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड अध्याय 18, श्लोक 16 से 18 खेमराज श्रीकृष्णदास, श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रैस, मुम्बई ।

अयनांश जोड़ें, पश्चात् राशि का अंक अलग स्थापित कर अंश, कला, विकला, अंक लेकर 30 अंश में घटावें तो भोग्यांश होते हैं । इनको स्वोदय से गुणा करके 30 का भाग देने से लब्ध अंक 'भोग्यकाल' होगा, इसी प्रकार भुक्तांशों से भुक्त का होता है । इस भोग्य काल को इस घटी की पल करके इन पलों में भोग्य काल घटावें (घटाने के बाद सूर्य के राशि अंक में एक संख्या बढ़ा दे) बाद बची हुई पल राशि में जितने आगामी लग्नमान घटें उतने घटावें (और राशि अंक में उतनी संख्या बढ़ाता जावे) जो स्वोदय नहीं घटे उसकी अशुद्ध संज्ञा होती है । अब शेष अंक को 30 से गुणा कर अशुद्ध स्वोदय का भाग देकर लब्धि अंश आदि सूर्य की बढ़ाई हुई राशि में युक्त करें और अयनांश घटा दे तो लग्न सिद्ध होगा ।

1. उपरोक्त विधि को घटित करने के लिए प्रथम अयनांश "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" अनुसार ज्ञात करेंगे ।

2. इसके बाद "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 2, श्लोक 39 के अनुसार चालन बनाकर सूर्य स्पष्ट करेंगे ।

3. इसके बाद सूर्य उदय, सूर्य अस्त, पंचाग परिवर्तन, दिनमान तथा इष्ट साधन करेंगे ।

4. लंकोदय पल से स्थानीय चरखण्ड बनाकर रोहतक की पल्भा निकालेंगे ।

5. उपरोक्त विधि के अनुसार लग्न ज्ञात करेंगे ।

मानक उदाहरण :- 14/15-11-1985, जन्म समय 2-00 बजे रात्रि, जन्म स्थान रोहतक अक्षांश 28-54° उ०, रेखांश 76-38 पूर्व । श्लोक 39 अध्याय 2 के अनुसार हमने सन् 1985 का मातर्ण्ड पञ्चांग शुभ संवत् 2042 शक् 1907 गुरूवार कार्तिक शुक्लपक्ष द्वितीया के लिए मंगलवार को ग्रहांक्ति गणित के लिए ली जो इस प्रकार है :–

पञ्चांग ग्रह मंगलवार पंक्ति इष्ट 56°-40

	सू०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०
	6	5	7	9	6	7	0	6
	26	16	19	16	10	5	14	14
	53	34	13	4	34	52	45	45
	36	10	15	56	40	13	45	45
गति	60	37	38	7	75	7	3	3
	24	29	27	27	10	6	11	11
		मा	मा	मा	मा	मा	व	व

अयनांश निकालना :-

पेज 25 शास्त्रानुसार शक् 1907 में से 444 घटाया तथा 60 से भाग दिया तो अयनांश सिद्ध होगा[1] =

```
        1907
      — 444
   60)1463( 24
       120
       263
       240
        23
```

= 24°-23 घटी अयनांश सिद्ध है ।

चालन बनाना :-

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 2, श्लोक 39 के अनुसार अपने इष्टकाल से आगे की पंक्ति में इष्ट (वार, घटी, पल) घटाना चाहिए एवं अपने इष्टकाल के पीछे की पंक्ति हो तो इष्ट में पंक्ति घटाने से जो शेष अंक रहता है वह चालन (वार,घटी, पल) चालन होता है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", द्वितीय अध्याय पेज 25, लाईन 7, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम प्रैस, मुम्बई ।

क्रम से प्रथम ऋण तथा दूसरा धन चालन होता है ।[1]

मानक उदाहरण में जन्म गुरूवार पाँचवा वार है **और पंक्ति मंगलवार तीसरे वार की है अतः** ऋण चालन हुआ ।

हमारा इष्ट = 47-55 + पाँचवा वार = 5-47-55 हुआ

पंक्ति मंगलवार : 3-56-40

नियमानुसार =	5 - 4 7 - 5 5	
	− 3 - 5 6 - 4 0	पंक्ति
	1 - 5 1 - 1 5	यह हमारा ऋण चालन सिद्ध हुआ ।

श्लोक 40 के अनुसार ग्रहों का तात्कालिककरण गोमूत्रिकान्याय से करेंगे ।

चालन 1-51-15 पंञ्चांग में सूर्य गति - 60 - 24 है ।

सूर्य स्पष्ट	60 - 24
1	60 - 24
51	00 - 3060 - 1224
15	00 - 0000 - 900 - 360
	60 - 3084 - 2124 - 360 ÷ 60
	+ 6 लब्धि - 0 शेष
	60 - 3084 - 2130 ÷ 60
	+ 35 लब्धि - 30 शेष
	60 - 3119 ÷ 60
	51 लब्धि - 59 शेष
	111 ÷ 60 = 1 लब्धि 51 शेष

= 00 - 1 - 51 - 59 - 30 - 00
\+ 6 - 26 - 53 - 36 - 00 - 00
6 - 28 - 45 - 35 सूर्य स्पष्ट हुआ।

---

1. "बृहत्पाराशर--होराशास्त्र", अध्याय 2 श्लोक 39, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम प्रैस, मुम्बई ।

सूर्य उदय, सूर्य अस्त, पञ्चांग परिवर्तन, दिनमान तथा इष्ट साधन :-

मानक तिथि 14/15-11-1985 रात्रि 2.00 बजे अर्थात् 15-11-1985 समय 2-00 बजे स्थान रोहतक का जन्म

स्पष्ट सूर्य	6 - 28 - 45 - 35	
	+ 0 - 24 - 23 - 00	अयनांश
	7 - 23 - 8 - 35	सायन सूर्य

अक्षांश :- 28-54° उत्तर   **सूर्य क्रान्ति :- 18-09**[1]

रेखांश :- 76-38 पूर्व   बेलान्तर :- **15 मिनट घन (+)**[2]

चर सारिणी पर सूर्य क्रान्ति का फल :-

28 अक्षांश 19 अंश क्रान्ति पर = 41 - 30[3]

28 अक्षांश 18 अंश क्रान्ति पर = 39 - 49[4]

1 - 41

$1\times60+41= \frac{101\times54}{60}$ = 90 सै० = 1 मिनट — **30 सै०**

54 प्र० सै० ताज्य

28-54 अक्षांश 18 अंश क्रान्ति = 39 - 49

\+ 1 - 30

41 - 19

---

1. "श्री मार्त्तण्ड पञ्चागम्" संवत् 2042 क्रान्ति सारणी से लिया गया ।
2. "भारतीय ज्योतिष", डा० नेमीचन्द शास्त्री पेज, 118 ।
3. वही पेज 117 ।
4. वही पेज 117 ।

अब 9 कला क्रान्ति का फल लेंगे ।

28 अक्षांश पर 19 अंश का फल = 42 - 12[1]

28 अक्षांश पर 18 अंश का फल = 39 - 49[2]

2 - 23 अंतर

$$2\times60 = 120 + 23 = \frac{143 \times 7}{60} = 16\text{-}41$$

अर्थात 17 सैकिण्ड फल आया ।

28 - 54 अक्षांश का 18-09 क्रान्ति फल

```
   41 - 19
+   0 - 17
----------
   41 - 36
```

नियमानुसार 6 घण्टे में से घटाया

```
  6 - 00 - 00
—     41 - 36
-------------
  5 - 18 - 24   यह स्थानीय सू० अ० आया ।
```

अब 12 घण्टे में से सू० अ० घटाया ।

```
  12 - 00 - 00
—  5 - 18 - 24   सू० अ०
--------------
   6 - 41 - 36   स्थानीय सू० उ० लोकल हुआ।
```

अब इसे स्टैन्डर्ड बनायेंगे अतः इसमें देशान्तर ऋण हो तो जोड़ेंगे और धन हो तो घटायेंगे।

इसी प्रकार बेलान्तर को ऋण होने पर इस समय में जोड़ेंगे और धन होने पर घटायेंगे ।

---

1. "भारतीय ज्योतिष", डॉ० नेमीचन्द शास्त्री पेज, 117 ।
2. वही पेज 117 ।

	सू० - उ०
	6 - 41 - 36
देशान्तर +	?3 - 28
	7 - 05 - 04
बेलान्तर —	15 - 00
	6 - 50 - 01

रोहतक का सू० उ० 6 — 50 आया

	सू० - अ०	
	5 - 18 - 24	
+	23 - 28	देशान्तर
	5 - 41 - 52	
—	15 - 00	बेलान्तर
	5 - 26 - 52	

यहाँ 52 सै० है तो एक 26 में बढ़ाया

5— 27 रोहतक का सू० अ० आया ।

इष्टकाल, साधन तथा परिभाषा :

"किसी स्थान पर सूर्य उदय से जातक के जन्म समय का अन्तर (घटी, पलों में) इष्ट काल कहलाता है ।"

उपरोक्त उदाहरण में रोहतक सूर्य उदय हमने 6-50 निकाला है ।

जातक का जन्म समय	=	26 - 00
सूर्य उदय	= —	6 - 50
अन्तर	=	19 - 10 घं० - मि०

$$(19 - 10) \times \frac{5}{2} = \frac{95 - 50}{2} =$$

= 47 घटी - 55 पल इष्ट घटयादि हुआ ।

दिनमान = 5 - 18 - 24
× 5
26 - 32 - 00 = 26-32 सिद्ध दिनमान हुआ ।

लंकोदय पल से स्थानीय चरखण्ड बनाना तथा रोहतक की पलभा निकालना :-

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्लोक 31 से 34 तक **पलभा तथा चरखण्ड** बनाने के नियम हैं । हम इन्हें शास्त्रानुसार घटित करेंगे । जोकि **मानक उदाहरण** में **रोहतक** का जन्म है । अक्षांश 28-54 उत्तर है, इस पर कार्य कर रहें हैं ।

पलभा साधन विधि :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 3, श्लोक 31-32 में पलभा ज्ञान दिया है । जिस दिन सायन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करे उस दिन मध्यान्ह काल में 12 अंगुल का शंकु (कील) धूप में सीधा रख कर **छाया लेनी चाहिए । वही पलभा कहलाती है । यह** पलभा अलग–अलग अक्षांशों पर अलग–२ होगी । **इसको तीन जगह रख कर 10-8-10 से** गुणा करें अन्त्य के खण्ड को तीन का भाग देने पर **तीन चरखण्ड** प्राप्त होंगे ।

ज्योजिष ग्रन्थों में भिन्न–२ अक्षांशों की पलभा दी गई है । इनमें भारतीय ज्योतिष, डॉ० नेमीचन्द शास्त्री के ग्रन्थ की पलभा सटीक मानी जाती है । अतः इसी की पलभा से चर खण्ड निम्न प्रकार से ज्ञात करेंगे ।

	अं०	प्र० अं०	प्र०प्र०अं०
29 अक्षांश की पलभा =	6	39	4[1]
28 अक्षांश की पलभा =	6	22	48[2]
	0	16	16

1. "भारतीय ज्योतिष", डा० नेमीचन्द शास्त्री पेज, 129 ।
2. वही पेज 129 ।

0-54 कला की पलभा निकालने के लिए :–

$$16 \times 60 = 960 + 16 = \frac{976 \times 54}{60} = \frac{4393}{5} = 878 \div 60 = 14 \text{ लब्धि } 38 \text{ शेष}$$

28 अक्षांश की पलभा = 6 - 22 - 48

54 कला की पलभा = + 14 - 38

6 - 37 - 26 अंगुलात्मक पलभा रोहतक की हुई ।

अब इसे नियमानुसार तीन जगह रखकर 10 - 8 - $3\frac{1}{3}$ से गुणा करेंगे ।

$6\text{-}37\text{-}26 \times 10 = 66\text{-}14\text{-}20$

$6\text{-}37\text{-}26 \times 8 = 52\text{-}59\text{-}28$

$6\text{-}37\text{-}26 \times \frac{10}{3} = 22\text{-}4\text{-}47$

लंकोदय चरखण्डों का वेधापल का पलात्मक मान स्थानीय बनायेंगे :-

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्लोक 34 के अनुसार प्रथम तीन राशि में घटाना फिर तीन में जोड़ना आदि क्रम से सभी राशियों के मान ज्ञात करेंगे ।

मेष = 278 — 66 / 14 = 211 / 46 मीन

वृष = 299 — 53 / 59 = 246 / 1 कुम्भ

मिथुन = 323 — 22 / 4 = 345 / 56 मकर

कर्क = 323 + 22 / 4 = 345 / 4 धनु

सिंह = 299 + 52 / 59 = 351 / 59 वृश्चिक

कन्या = 278 + 66 / 14 = 344 / 14 तुला

उपरोक्त में मेष, मिथुन तथा सिंह के 46—56—59 का 1 मान बढ़ाकर चरखण्ड हुए ।

मेष — मीन	= 212	कर्क — धनु	= 345
वृष — कुम्भ	= 246	सिंह — वृश्चिक	= 352
मिथुन — मकर	= 301	कन्या — तुला	= 344

इन्हीं चरखण्डों से हम इष्ट समय का लग्न ज्ञात करेंगे ।

लग्न साधन :-

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्लोक 35 से 40 तक नियमानुसार गणित कर लग्न निकालेंगे ।

स्पष्ट सूर्य = 6 - 28 - 45 - 35

अयनांश + 0 - 24 - 33 - 00

7 - 23 - 8 - 35 **सायन सूर्य हुआ**

अं० क० वि०

सूर्य वृश्चिक राशि का भुक्तांश 23 - 8 - 35 है इसे एक राशि में घटाया

1 - 00 - 00 - 00

23 - 8 - 35

0 - 6 - 51 - 25 **यह भोग्यांश हुआ ।**

वृश्चिक राशि का रोहतक का उदयमान = 351-59 **है अर्थात् = 352 है** ।

352 के भोग्यांश 6-51-25 से गुणा किया । गुणनफल 2413-38-40 आया । इस गुणनफल के प्रथम अंक 2413 को 30 से भाग दिया । लब्धि 80 और (13 शेष छोड़ दिया।)

अब इष्टकाल = 47-55 के पल बनाये = 47 × 60 = 2820+55=2875 पल हुए ।

इसमें लग्न के भोग्यांश 80 घटाये = 2875 — 80 = 2795

हमारा सायन सूर्य, वृश्चिक राशि का है अतः धनु राशि **के चरखण्ड** घटाने प्रारम्भ किये जो अग्र प्रकार से हैं :—

```
  2795
— 345   धनु
  2450
— 301   मकर
  2149
— 246   कुम्भ
  1903
— 212   मीन
  1691
— 212   मेष
  1479
— 246   वृष
  1233
— 301   मिथुन
   932
— 345   कर्क
   587
— 352   सिंह
   235
— 344   कन्या
```

यह नहीं घटा तो कन्या राशि अशुद्ध हुई। अब 235 को 30 से गुणा कर 344 से भाग देंगे। 235×30=7050 ÷ 344 कन्या का चरखण्ड

```
344) 7050 ( 20 अंश
     688
     170
     ×60
344) 10200 ( 29 कला
      688
      244
      ×60
344) 13440 ( 39 विकल
      1032
       3120
       3096
         24  शेष छोड़ दिया ।
```

हमारी राशि सिंह तक घटी है अतः

5-20-29-39 हुआ ।

इसमें से अयनांश घटाने पर सायन लग्न होगा ।

	रा०	अं०	क०	वि०
	5	20	29	39
अयनांश —	0	24	23	00
	4	26	06	39

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" अनुसार लग्न सिद्ध हुआ ।

<u>दशम लग्न स्पष्ट</u> :- ''बृहत्पाराशर–होराशास्त्र'', अध्याय 2, श्लोक 44 के अनुसार नत को इष्ट मानकर लग्न स्पष्ट साधन की प्रक्रियानुसार गणित करने दशम भाव स्पष्ट होता है। जो निम्न प्रकार से है। मानक उदाहरण में जन्म इष्ट 47-55 (घ०-प०), दिनमान 26-32 (घ०-प०), दिनार्ध 13-16 (घ०-प०), रात्रिमान 33-28 (घ०-प०) है।

सायन सू० 7-23-8-35 तथा रोहतक का अयनांश 24-23 स्पष्ट कर चुके हैं ।

नत् बनाना :–

अहोरात्र	60 - 00
इष्ट	47 - 55
	12 - 05
दिनार्ध	+ 13 - 16
	25 - 21 पूर्व नत् है ।

पूर्व नत् के कारण भुक्त प्रकार से लंकोदय मान द्वारा दशम भाव की लग्न साधन करेंगे । हमारा सायन सू० वृश्चिक का 23-8-35 है ।

7 - 23 - 8 - 35
× 299 लंकोदय पल
230 - 19 - 46 - 25

पूर्वनत् 25 - 21
× 60
1500
+ 21
1521 नत् पल हुए ।

पूर्व नत् होने के कारण उल्टे क्रम में से घटाएंगे ।

1524 - 00
— 230 - 19 वृश्चिक
1290 - 41

```
     1290 - 41
 —    278 - 00    तुला
     ---------
     1012 - 41
 —    278 - 00    कन्या
     ---------
      734 - 41
 —    299 - 00    सिंह
     ---------
      435 - 41
 —    323 - 00    कर्क
     ---------
      112 - 41
 —    323 - 00    मिथुन नहीं घटी अतः मिथुन अशुद्ध राशि हुई ।
     ---------
```

अब 112 - 41

× 30

60) 1230 (20

120

30 शेष

112 × 30 = 3360 + 20 = 3380 — 30 ÷ 323 = 10-27-57 इसको तीन राशि में से घटाया

```
      रा० - अ० - क० - वि०
       3  - 00 -  00 - 00
 —          10 -  27 - 57
      -------------------
       2  - 19 -  32 - 03
 —     0  - 24 -  23 - 00    अयनांश घटाया
      -------------------
       1  - 25 -  09 - 03    दशम लग्न स्पष्ट हुआ ।
```

<u>**भाव लग्न :-**</u> "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 11, श्लोक 1 से 21 तक भाव–होरा–घटी लग्न दिया जिसे सिद्ध कर रहे हैं

विधि :- इष्ट घटी को 5 से भाग देने पर लब्धि को उदय कालिक सूर्य में जोड़ने से भाव लग्न होती है ।

इष्ट घटी 47 - 55 उदयकालिक सू० 6-27-56-39 है ।

अब 5) 47 - 55 (9
45
———
2
× 30
———
60
+ 55
5) 115 (23
10
———
15
15
———
×

	रा०	अ०	क०	वि०	
	9 -	23 -	00 -	00	
+	6 -	27 -	56 -	38	उदयकालिक सूर्य ।
	16 -	20 -	56 -	38	
—	12 -	00 -	00 -	00	
	4 -	20 -	56 -	38	भाव लग्न सिद्ध हुआ ।

<u>होरा लग्न साधन विधि</u> :- इष्ट घटी को 2 से गुणा कर 5 का भाग देने से लब्धि का उदयकालिक सूर्य में जोड़ने से 24 से ज्यादा हो तो 24 में घटाने से होरा लग्न होती है ।

इष्ट 47-55 × 2÷ 5 = होरा लग्न

अब 47- 55
× 2
5) 95- 50 (19-10-00-00
5
———
45
45
5) 50 (10
50
———
×

	6- 27-56-38	उदयकालिक सूर्य।
+	19-10-00-00	
	26-07-56-38	
—	24-00-00-00	
	2- 7-56-38	होरा लग्न सिद्ध हुआ।

<u>घटी लग्न</u> :- विधि घटी लग्न साधन के लिए इष्ट घटी को 12 से भाग दें, शेष बची हुई राशि होंगी, पलों में 2 का भाग देने से लब्धि कला विकला होंगे । इनको उदयकालिक सूर्य में जोड़ने से घटी लग्न होगी ।

अब इष्ट = 47-55, उदयकालिक सूर्य 6-27-56-38

```
12 ) 47 ( 3          2 ) 55 ( 27 अंश
     36                  4
     ---                ---
     11  राशि            15                 रा० अं० क० वि०
                         14             =   11 - 27 - 30 - 00
                        ---               + 6 - 27 - 56 - 38
                          1               -----------------
                       × 60                 18 - 25 - 26 - 38
                 2 ) 60 ( 30 कला          — 12 - 00 - 00 - 00
                     60                   -----------------
                    ---                 =   6 - 25 - 26 - 38
                     ×                      घटी लग्न सिद्ध हुआ ।
                    ---
```

भाव लग्न 5 घटी की होती है । होरा लग्न 2½ घटी की होती है तथा घटी लग्न 1 घटी की होती है ।

गुलिक लग्न :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 2, श्लोक 66 से 71 तक गुलिक लग्न साधन दिया है । हम अपने मानक उदाहरण के अनुसार गुलिक लग्न बना रहे हैं ।

विधि :- गुलिक लग्न बनाने के लिए उस दिन का (जन्म वाले दिन का) स्पष्ट सूर्य के राशि अंश लेकर उन्हें लग्न सारिणी में से उस अंश के नीचे जो अंक दिये होंगे और उसमें अपने गुलिक इष्ट को जोड़ लेंगे । जोड़ने के पश्चात् वे ही अंक सारिणी में फिर से देखेंगे। सारिणी में बांई तरफ राशि तथा उपर अंश होंगे वही राशि अंश गुलिक लग्न होगी ।

जैसे :–

गुलिक इष्ट :–

दिन मान : 26-32, जन्म समय रात्रि का है अतः

```
  60 - 00
  26 - 32
  -------
  33 - 28        रात्रिमान ÷ 8 = 4-11 का एक खण्ड आया ।
```

	4 - 11	चं० - 1
+	4 - 11	
	8 - 22	मं० - 2
+	4 - 11	
	12 - 33	बु० - 3
+	4 - 11	
	16 - 44	गु० - 4
+	4 - 11	
	20 - 55	शु० - 5
+	4 - 11	
	25 - 06	श० - 6
+	4 - 11	
	29 - 17	सू० - 7
+	4 - 11	
	33 - 28	8 खण्ड का स्वामी नहीं होता ।

4 - 11	
× 6	शनि खण्ड
25 - 06	गुलिक इष्ट हुआ

अब उपरोक्त सूत्रानुसार :

स्पष्ट सू० 6 - 28 लग्न सारिणी में देखा तो फल :—

फल	39 - 33 - 57
गु० इष्ट +	25 - 06 - 00
	64 - 39 - 57
—	60 - 00 - 00
	4 - 39 - 57

पुनः लग्न सारिणी में देखने पर फल 0-14 मिला अतः हमारी गुलिक लग्न 0-14-00-00 सिद्ध हुई अर्थात् मेष राशि के 14° पर गुलिक लग्न है ।

प्राण पद लग्न :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 2, श्लोक 72 से 75 तक प्राण पद

लग्न साधन दिया है ।

विधि :- नियमानुसार 47 घ० को 4 से गुणा किया 47×4=188, 55 प० को 15 का भाग दिया

55 ÷ 15 = 3 ल० 10 शेष आया। 188 में 3 जोड़ा = 191 ÷ 12 = 15 ल० 11 शेष प्राण पद।

सू० स्पष्ट	6 - 28 - 45 - 11
+	11 - 00 - 00 - 00
	18 - 28 - 45 - 11
—	12 - 00 - 00 - 00
	6 - 28 - 45 - 11 प्राण पद हुआ ।

दूसरा तरीका :-

```
     47
  ×  60
   2820
  +  55
15 ) 2875 ( 191
     15
     137
     135
      25
      15
     10×2=20 अंश
```

```
12 ) 191 ( 15
     12
     71
     60
     11 रा

   रा० — अं०
 =  11 — 20
```

स्पष्ट सूर्य

	6 - 28 - 45 - 11
+	11 - 20 - 00 - 00
	18 - 18 - 45 - 11
—	12 - 00 - 00 - 00
	6 - 18 - 45 - 11 प्राणपद लग्न हुआ ।

* * *

अध्याय-2

भाव साधन और विधि

भाव की परिभाषा :- "जन्म कुण्डली में लग्न की प्रथम भाव संज्ञा होती है ।" उससे अगले भाव को द्वितीय भाव कहते हैं । लग्न से द्वादश तक कुण्डली में बारह भाव होते हैं।

लग्न सहित बारह भावों को गणित द्वारा स्पष्ट किया जाता है । लग्न गणित तथा दशम लग्न प्रथम अध्याय में कर चुके हैं । इन बारह भावों की बारह संधि भी होती हैं। जो इस अध्याय में स्पष्ट कर रहे हैं । यह निम्न प्रकार से है ।

भाव साधन :- **लग्नं सुखात्सुखं कामात्कामं खात्खं च लग्नतः।**
अंशमेकं द्विगुणितं युञ्ज्याल्लग्नादिषु क्रमात् ।।
पूर्वापरयुतेरर्धं संधिः स्याद्भावयोर्द्वयोः ।
एवं द्वादशभावाः स्युर्भवन्ति हि ससंधयः।।[1]

विधि :- i) दशम भाव में 6 राशि जोड़ने से चतुर्थ ।

ii) लग्न में 6 राशि जोड़ने से सप्तम भाव होता है।

iii) चतुर्थ भाव में से लग्न को घटायेंगे जो शेष है उसको 6 का भाग देकर षष्टयांश निकाल लेंगे उस षष्टयांश को लग्न में जोड़ने से लग्न सन्धि होती है ।

iv) लग्न सन्धि में जोड़ने से द्वितीय भाव इसी प्रकार चतुर्थ भाव तक संस्कार करेंगे ।

v) फिर इसी षष्टयांश को 30° में से घटाकर जो शेष आयेगा उसे चतुर्थ भाव में और अगले छटे भाव की सन्धि तक जोड़ते चले जायेंगे। तो हमारे छटे भाव की सन्धि तक भाव स्पष्ट होंगे।

vi) अब लग्न से लेकर छटे भाव की सन्धि तक प्रत्येक भाव में राशियों में 6 जोड़कर के अं०, क० वि० वही रहेंगे उन्हें सप्तम भाव से लेकर द्वादश भाव सन्धि तक लिख देंगे ।

vii) I भाव में 6 जोड़ने पर 12 राशि से अधिक आये तो 12 राशि घटा देंगे इसी प्रकार सभी भावों का संस्कार करेंगे ।

मानक उदाहरण में लग्न = 4-26-6-39 है, दशम भाव = 1-25-09-02 है ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 45-46 खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।।

दशम

1 - 25 - 09 - 03
\+ 6 - 00 - 00 - 00
7 - 25 - 09 - 03 चतुर्थ भाव आया
— 4 - 26 - 06 - 39 लग्न घटाया
2 - 29 - 02 - 24 ÷ 6
= 0-14-50-24 षष्टयांश आया इसे लग्न में जोड़ा

4- 26-0· -39 लग्न
\+ 0-14-50-24
5-10-57- 3 प्रथम भाव सन्धि
\+ 0-14-50-24
5-25-47-27 द्वितीय भाव

5-25-47-27 द्वितीय भाव
\+ 0-14-50-24
6-10-37-51 द्वितीय भाव सन्धि
\+ 0-14-50-24
6-25-28-15 तृतीय भाव
\+ 0-14-50-24
7-10-18-39 तृतीय भाव सन्धि
\+ 0-14-50-24
7-25-09-03 चतुर्थ भाव

अब षष्टयांश को 30° में से घटाया

30-00-00
— 14-50-24 षष्टयांश
15-09-36

7-25-09-03 चतुर्थ भाव
\+ 0-15-09-36
8-10-18-39 चतुर्थ भाव सन्धि
\+ 0-15-09-36
8-25-28-15 पञ्चम भाव
\+ 0-15-09-36
9-10-37-51 पञ्चम भाव सन्धि
\+ 0-15-09-36
9-25-47-27 छटा भाव
\+ 0-15-09-36
10-10-57-03 छटे भाव की सन्धि

4-26- 6- 39 लग्न
\+ 6-00-00-00 राशि
10-26-06-39 सप्तम भाव

5-10-57-03 प्रथम भाव सन्धि
\+ 6-00-00-00 राशि
11-10-57-03 सप्तम भाव सन्धि

5-25-47-27 द्वितीय भाव
\+ 6-00-00-00
11-25-47-27 अष्ठम भाव

6-10-37-51
\+ 6-00-00-00
12-10-37-51
— 12-00-00-00
0-10-37-51 अष्ठम भाव सन्धि

6-25-28-15 तृतीय भाव
\+ 6-00-00-00
12-25-28-15
— 12-00-00-00
0-25-28-15 नवम भाव

7-10-18-39 तृतीय भाव सन्धि
— 6-00-00-00
13-10-18-39
— 12-00-00-00
1-10-18-39 नवम भाव सन्धि

7-25-09-03 चतुर्थ भाव
\+ 6-00-00-00
13-25-09-03
13-25-09-03
— 12-00-00-00
1-25-09-03 दशम भाव

8-10-18-39 चतुर्थाभाव सन्धि
\+ 6-00-00-00
14-10-18-39
— 12-00-00-00
2-10-18-39 दशम भाव सन्धि

8-25-28-15 पञ्चम भाव
— 6-00-00-00

14-25-28-15
— 12-00-00-00
2-25-28-15 एकादश भाव

9-10-37-51 पञ्चम भाव सन्धि
\+ 6-00-00-00
15-10-37-51
— 12-00-00-00
3-10-37-51 एकादश भाव सन्धि

9-25-47-27 छटा भाव
\+ 6-00-00-00
15-25-47-27
— 12-00-00-00
3-25-47-27 द्वादश भाव

10-10-57-03 छठे भाव की सन्धि
\+ 6-00-00-00
16-10-57-03
— 12-00-00-00
4-10-57-03 द्वादश भाव सन्धि

भावाः स्पष्टाः

1	x	2	x	3	x	4	x	5	x	6	x	भावाः
4	5	5	6	6	7	7	8	8	9	9	10	रा०
26	10	25	10	25	10	25	10	25	10	25	10	अं०
06	57	47	37	28	18	09	18	28	37	47	57	क०
39	03	27	51	15	39	03	39	15	51	27	03	वि०
7	x	8	x	9	x	10	x	11	x	12	x	भावाः
10	11	11	0	0	1	1	2	2	3	3	4	रा०
26	10	25	10	25	10	25	10	25	10	25	10	अं०
06	57	47	37	28	18	09	18	28	37	47	57	क०
39	03	27	51	15	39	03	39	15	51	27	03	वि०

* * *

अध्याय-3

ग्रह, कारकांश, स्वांश तथा मैत्री चक्र साधन

ग्रह की परिभाषा : निशाकाल में आकाशस्थ दिखाई देने वाले तेजपुञ्ज जो कि निश्चल होते हैं उन्हें नक्षत्र कहते हैं । कुछ अन्य वृहद् आकार वाले गतिशील तेज पुञ्ज अपनी गति के द्वारा उन्हीं निश्चल नक्षत्रों को पकड़ लेते हैं, अतः वे ग्रह कहलाते हैं।[1]

नक्षत्र की परिभाषा :–

उपरोक्त परिभाषा में नक्षत्र आया है उसे और स्पष्ट करने के लिए स्वतंत्र परिभाषा इस प्रकार है :–

''आकाशीय वृत्त को 28 भागों में बांटकर प्रत्येक भाग में जो तारागण विद्यमान हैं, उन्हें नक्षत्र कहते हैं। ये तारागण अपने अपने स्थान पर स्थित रहते हैं। अतः इन्हें नक्षत्र कहते हैं। 'न क्षरति इति नक्षत्रम्' अर्थात् जो अपने स्थान से चलायमान न हो उन्हें नक्षत्र कहते हैं।'[2]

उपर्युक्त ग्रहों की संख्या प्राचीन मत से नौ है । इस दिशा में यद्यपि अनुसन्धान निरन्तर चल रहा है तदनुसार आधुनिक परिवेश में इनकी संख्या 12 (इन्द्र, वरूण, यम) हो गई है । इन्द्र, वरूण तथा यम आदि ग्रहों का हमारे पुरातन ग्रन्थों में कहीं फलादेश नहीं है । आधुनिक ज्योतिषाचार्य इन नूतन ग्रहों के फलादेश करने का प्रयत्न जरूर कर रहे हैं ।

इन ग्रहों के अतिरिक्त ''बृहत्पाराशर–होराशास्त्र'' के श्लोक 61 से 65 तक पाँच अप्रकाश ग्रह बतलाये गये हैं । जिन्हे पापी ग्रह कहा है जो वंश, आयु तथा ज्ञान का नाश करने वाले हैं। इनका गणित द्वारा साधन आगे कर रहे हैं ।

सूर्य को हम प्रथम अध्याय में स्पष्ट कर आये हैं । जो कि 6-28-45-35 है । यह शास्त्रानुसार चालन (1-51-15) बनाकर गोमुत्रिकान्याय से किया है ।

---

1. ''बृहत्पाराशर–होराशास्त्र'', ग्रहरूप वर्णन, अध्याय श्लोक 6, चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
2. ''सर्वांग ज्योतिष'', डॉ० सुधीकान्त भारद्वाज, आकाश परिचय अध्याय, भारद्वाज पब्लिकेशन, दिल्ली ।

<u>भयातभभोगसाधन :-</u>

इष्टमधिकं नक्षत्रन्यूनं तदा इष्टादित्यनेन ज्ञेयम्।

इष्टाद्विहीनं च दिनर्क्षनाडी भयातसंज्ञा भवतीह तस्य।

दिनर्क्षनाडी खरसेषु शुद्धा निजर्क्षयुक्तः सहिते भभोगः।।

इष्टं न्यूनं नक्षत्रमधिकं तदा मतर्क्षनाडयेति ज्ञेयम् ।

गर्तर्क्षनाडी खरसेषुशुद्धा सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ता ।

भयातसंज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्षनाडीसहिते भभोगः ।।[1]

यदि इष्ट अधिक और नक्षत्र कम हो तो :- इष्ट में दिन नक्षत्र की घटीपल घटाने से

[illegible] नक्षत्र [illegible] घटी पल को 60 में से घटाकर वर्तमान नक्षत्र की अर्थात

'भयात्' को 60 से गुणा करके 'भभोग' का भाग देकर जो अंक प्राप्त हो उसमें गत अश्विनी आदि नक्षत्र संख्या को 60 से गुणा कर जोड़े । अब इस राशि को 2 से गुणा कर 9 का भाग देने से (ऊपर के अंक में 30 का भाग देने पर) जो अंक प्राप्त होगा, वह राशि, अंश कला, विकलात्मक चन्द्रस्पष्ट होगा ।

चन्द्रगति स्पष्ट करने के लिए चन्द्रमा की मध्यम गति 48000 में भभोग की संख्या का भाग देने से चन्द्रमा की इष्ट दिन की गति स्पष्ट होती है ।

(i) **नक्षत्र का भयात् भभोग निकालना** :- मार्त्तन्ड पञ्चांग[1] चंडीगढ़ को रोहतक के अक्षांश को बनाने के लिए इसके नक्षत्र, योग, करण आदि में परिवर्तन करना पड़ेगाा । वह इस प्रकार है । चन्डीगढ़ का सू० उ० स्टैंडर्ड अनुसार 6:52 बजे है और रोहतक का सू० उ० 6-50 बजे का है । जो हम पहले अध्याय में निकाल चुके हैं । दोनों का अन्तर 2 मिनट का है । रोहतक का सू० उ० चन्डीगढ़ से पहले का है । इनका अन्तर दो मिनट का है । अतः 2 मिनट के पल बनाकर जो कि 5 पल हुए इन्हें चन्डीगढ़ के पञ्चांग के तिथि, नक्षत्र आदि में जोड़ देंगे तो वह रोहतक के अक्षांश का पञ्चांग बन जायेगा । इससे हम अपनी पत्रिका का निर्माण करेंगे । जैसे :—चन्डीगढ़ में उस दिन ज्येष्ठा नक्षत्र घ०-प० 45-35 है इसमें 5 पल जोड़े तो 45-40 ज्येष्ठा नक्षत्र का मान रोहतक का हुआ । अगले दिन मूल नक्षत्र 40-02 है इसमें भी 5 पल जोड़े तो 40-07 रोहतक के मूल नक्षत्र का मान आया । अब इससे नक्षत्र का भयात्, भभोग बनायेंगे।

14 नवम्बर 1985	60-00	अहोरात्र
	— 45-40	जेष्ठा नक्षत्र रोहतक का
	14-20	मूल नक्षत्र 14 नवम्बर रोहतक का आया ।
15 नवम्बर का मूल	+ 40-07	
	54-27	मूल भभोग

1. "श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्", संवत् 2042 चण्डीगढ़ ।

54×60+27= 3267 मू० न० पलात्मक भभोग

	घ०-प०	
14 नवम्बर	47-55	इष्ट घटी
	— 45-40	जेष्ठा का मान
	2-15	मू० न० भुक्त

2×60+15=135×60=8100 मू० न० पलात्मक **भयात्**

अब भभोग का भयात् से भाग देंगे ।

```
3267) 8100 ( 2 घ०
      6534
      1566
      × 60
3267 ) 93960 ( 28 प०
       6534
       28620
       26136
        2484

        2484
         ×60
3267 ) 149040 ( 46 वि०
       13068
        18360
        16335
         2025
```

घ० - प० - वि०
= 2 - 28 - 46

अश्विन से मूला तक गत नक्षत्र $18 \times 60 = 1080$

```
           2-28-46
      + 1080-00-20
      ------------
        1082-28-46
नियमानुसार    ×    2
      ------------
   9 ) 2164-57-32 ( 240
       18
       --
        36
        36
        --
         4
       × 60
        ---
        240
        +57
   9 ) 297 ( 33
       27
       --
        27
        27
        --
         0
   9) 32 (3
      27
      --
       5
      ×60
   9 ) 300 ( 33
       27
       --
        30
        27
        --
         3
        ---
```

```
                      रा०-अं०-क०-वि०-प्रवि०
30) 240-33-3-33 ( 8 - 0- 33- 3- 33
    240
    ---
     ×
    ---
```

रा० - अं० - क० - वि०
चन्द्र स्पष्ट = 8 - 0 - 33 - 3

चन्द्रगति साधन :-

चन्द्रमध्यम गति $\times$ 60 $\div$ पलात्मक भभोग = चन्द्रगति

कo-विo

$48000 \times 60 = 2880000 \div 3267 = 881\text{-}33$ चन्द्र गति

मंगल स्पष्ट :-

चालन	37-29 मंo गति
1	37-29
51	00-1887-1479
15	00-0000-555-435
	37-1916-2034-435÷60
	7 लब्धि 15 शेष
	37-1916-2041÷60
	34 लब्धि 1 शेष
	37-1950÷60
	32 लब्धि 30 शेष
	69 ÷ 60
	1 लब्धि 9 शेष

0- 1- 9 -30-1-15

\+ 5-16-34-10 (पंक्ति)

5-17-43-30 मंगल स्पष्ट

बुध स्पष्ट :-

चालन	38-27 बुध गति
1	38-27
51	00-1938-1377
15	00-0000-570-405
	38-1965-1947-405÷60
	6 लब्धि 45 शेष
	38-1965-1953÷60
	32 लब्धि 33 शेष
	38-1997÷60
	33 लब्धि 17 शेष
	71 ÷ 60
	1 लब्धि 11 शेष

0- 1- 9-30-1-15

\+ 7-19-13-15 (पंक्ति)

7-20-24-32 बुध स्पष्ट

गुरु स्पष्ट :-

चालन	7-27 गुरु गति
1	7-27
51	0-357-1377
15	0-000- 105-405
	7-384-1482-405÷60 6 लब्धि 45 शेष
	7-384-1488÷60 24 लब्धि 48 शेष
	7-1950÷60 6 लब्धि 48 शेष
	13 ÷ 60 0 लब्धि 13 शेष

0- 0- 13-48-48-45
+ 9-16- 4-56 (पंक्ति)
9-16-18-45 गुरु स्पष्ट

शुक्र स्पष्ट :-

चालन	75-10 शुक्र गति
1	75-10
51	00-3825-510
15	00-0000-1125-105
	75-3825-1635-150÷60 2 लब्धि 30 शेष
	75-3825-1637÷60 27 लब्धि 17 शेष
	75-3862÷60 64 लब्धि 22 शेष
	139 ÷ 60 2 लब्धि 19 शेष

0- 2-19-22-17-30
+ 6-10-34-40 (पंक्ति)
6-12-54-02 शुक्र स्पष्ट

शनि स्पष्ट :-

चालन	7-6 शनि गति
1	7-6
51	0-357-306
15	0-000-105-90
	7-363-411-90÷60 1 लब्धि 30 शेष
	7-363-412÷60 6 लब्धि 52 शेष
	7-369÷60 6 लब्धि 9 शेष
	13 ÷ 60 0 लब्धि 13 शेष

= 0-0-13-9-52-30
\+ 7-5-52-13 (पंक्ति)
7-6-05-23 शनि स्पष्ट

राहू स्पष्ट :-

चालन	3-11 राहू गति
1	3-11
51	0-153-561
15	0-000- 45-165
	3-164-606-165÷60 2 लब्धि 45 शेष
	3-164-608÷60 10 लब्धि 8 शेष
	3-174÷60 2 लब्धि 54 शेष
	5 ÷ 60 0 लब्धि 5 शेष

राहू वक्री घटाया 0-14-45-45 (पंक्ति)
— 0- 0- 5-54-8-45
0-14-39-51 राहू स्पष्ट

केतु स्पष्ट : स्पष्ट राहू में 6 राशि जोड़ने से केतु स्पष्ट होगा । 0-14-39-51
\+ 6-00-00-00
6-14-39-51 केतु स्पष्ट

<u>अप्रकाश ग्रह</u> :-

लग्नगे चन्द्रगे वापि वंशायर्ज्ञाननाशनम् ।

इति धूमादिदोषाणां फलं पद्मासनोदितम् ।।[1]

आगे कहे गये धूमादि अप्रकाश ग्रह, लग्न अथवा चन्द्रमा के साथ हो तो वंश, आयु और ज्ञान का नाश करते हैं । यह फल पूर्वकाल में ब्रह्मा ने कहा था ।।

चत्वारो राशयो भानौ युक्तभागास्त्रयोदश ।

धूमो नाममहादोषः सर्वकर्मविनाशकः ।।

धूमो मंडलतः शुद्धौ व्यतीपातोत्र दोषदः ।

स षट्भेत्र व्यतीपाते परिवेषस्तु दोषकृत् ।।

परिवेषश्च्युतश्चक्रादिंद्रचापश्च दोषदः ।

अत्यष्टयंशयुते चापे केतुखेटः परो विषम् ।।

एकराशियुते केतौ सूर्यः स्यात्पूर्ववत्समः ।

अप्रकाशग्रहाश्चैते दोषाः पापग्रहाः स्मृताः ।।[2]

तात्कालिक स्पष्ट सूर्य में 4-13-20 जोड़ने से से 'धूम' नाम का महादोष होता है, जो सब कार्य का नाश करने वाला है । इस धूम को 12 राशि में कम करने से 'व्यतिपात' दोष (नाम) होता है । इसमें 6 राशि योग करने से 'परिवेष' नामक दोष होता है । परिवेष को 12 राशि में घटाने से 'इन्द्रचाप' नाम का दोष है । इन्द्रचाप में 16 अं० 40 क० योग करने से 'केतु' होता है । केतु में 1 राशि योग करने से पूवोक्त स्पष्ट सूर्य के समान अंक होता है। इस प्रकार ये 5 अप्रकाश ग्रह स्पष्ट होते हैं ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 2, श्लोक 61 खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 2, श्लोक 62,63,64,65 खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

अप्रकाश ग्रह साधन :-

		रा०-अं०-क०-वि०	
स्पष्ट सूर्य		6 - 28 - 45 - 35	
	+	4 - 13 - 20 - 00	
		11 - 12 - 05 - 35	धूम
		12 - 00 - 00 - 00	
	—	11 - 12 - 05 - 35	
		0 - 17 - 54 - 25	व्यतिपात
	+	6 - 00 - 00 - 00	
		6 - 17 - 54 - 25	परिवेष (मण्डल)
		12 - 00 - 00 - 00	
	—	6 - 17 - 54 - 25	
		5 - 12 - 05 - 35	इन्द्र चाप
	+	0 - 16 - 40 - 00	
		5 - 28 - 45 - 35	केतु
	+	1 - 00 - 00 - 00	
		6 - 78 - 45 - 35	स्पष्ट सूर्य

इन्द्र चाप 6
केतु
4
प्राण पद
7
परिवेष
5
3
8
2
9
11
व्यतिपात
1
गुलिक
10
12 धूम
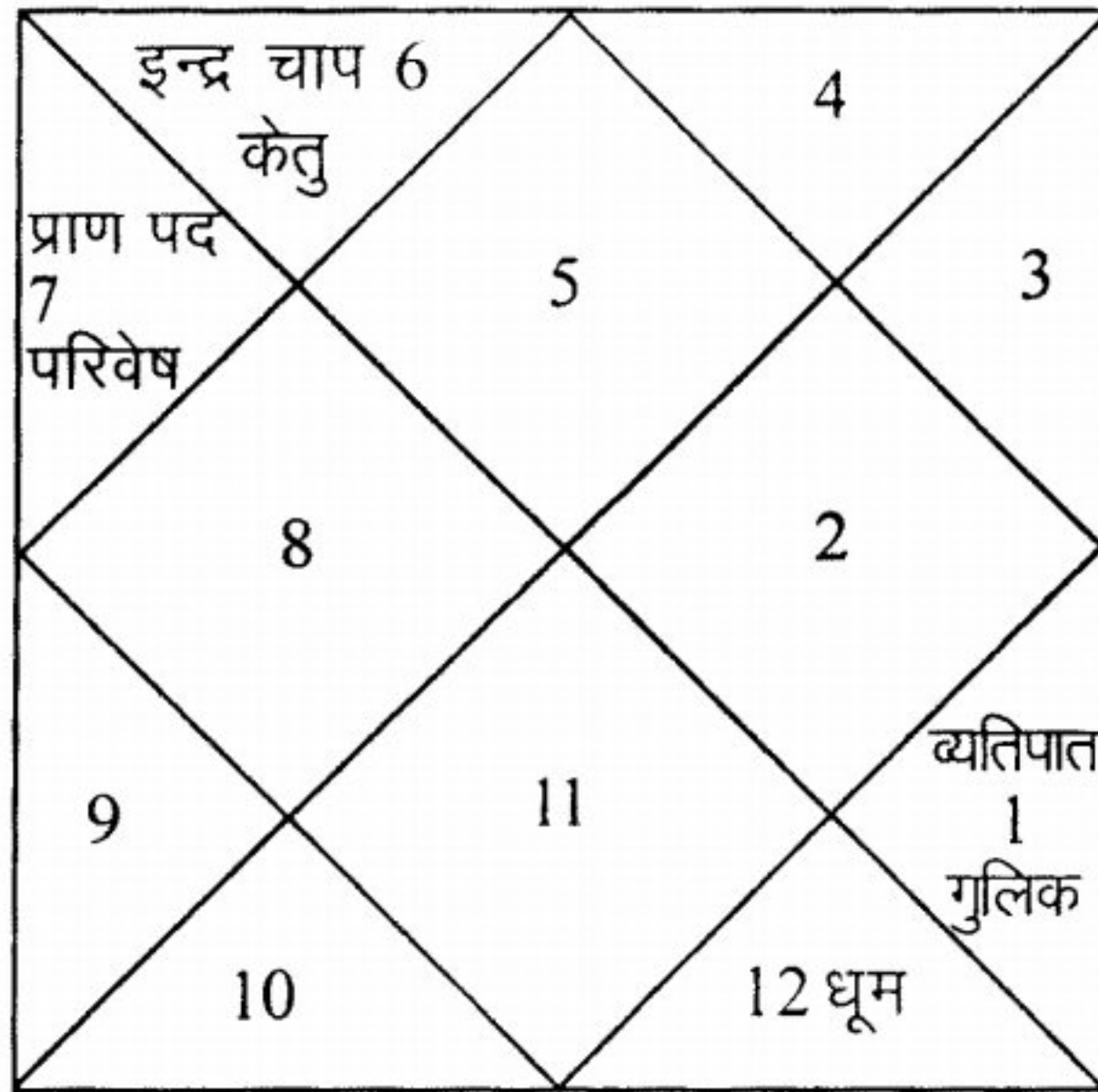
अप्रकाश ग्रह/गुलिकादि

धूम	व्यतिपात	परिवेश	इन्द्रचाप	केतु	प्राणपद	गुलिक	होरा लग्न	भाव लग्न	घटी लग्न	ग्रह
11	0	6	5	5	6	0	2	4	6	रा०
12	17	17	12	28	28	14	7	20	25	अं०
5	54	54	05	45	45	0	56	56	26	क०
35	25	25	35	35	11	0	38	38	38	वि०

ग्रह स्पष्ट चक्र

ल०	सू०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०	चं०	ग्रह
4	6	5	7	9	6	7	0	6	8	रा०
26	28	17	20	16	12	6	14	14	0	अं०
06	45	43	24	18	54	5	39	39	33	क०
39	35	40	32	45	02	23	51	51	03	वि०
		मा	मा	मा	मा	मा	व अ	व अ		मा० व०
	3	2	1	2	2	1	1	3	1	चरण
	विशषा	हस्त	जेष्ठा	श्रावण	स्वाति	अनुराधा	भरणी	स्वाति	मूला	नक्षत्र
	60	37	38	7	75	7	3	3	881	
	24	29	27	27	10	6	11	11	33	गति

लग्न कुण्डली व चलित चक्र :-

लग्न कुण्डली

मं० 6
4
सू० 7 शु० के०
5
3
8 श० बु०
2
9 चं०
11
1 रा०
10 गु०
12

चलित चक्र

मं० 6
4
सू० 7 शु० के० श०
5
3
8 चं० बु०
2
9
11
1 रा०
10
12
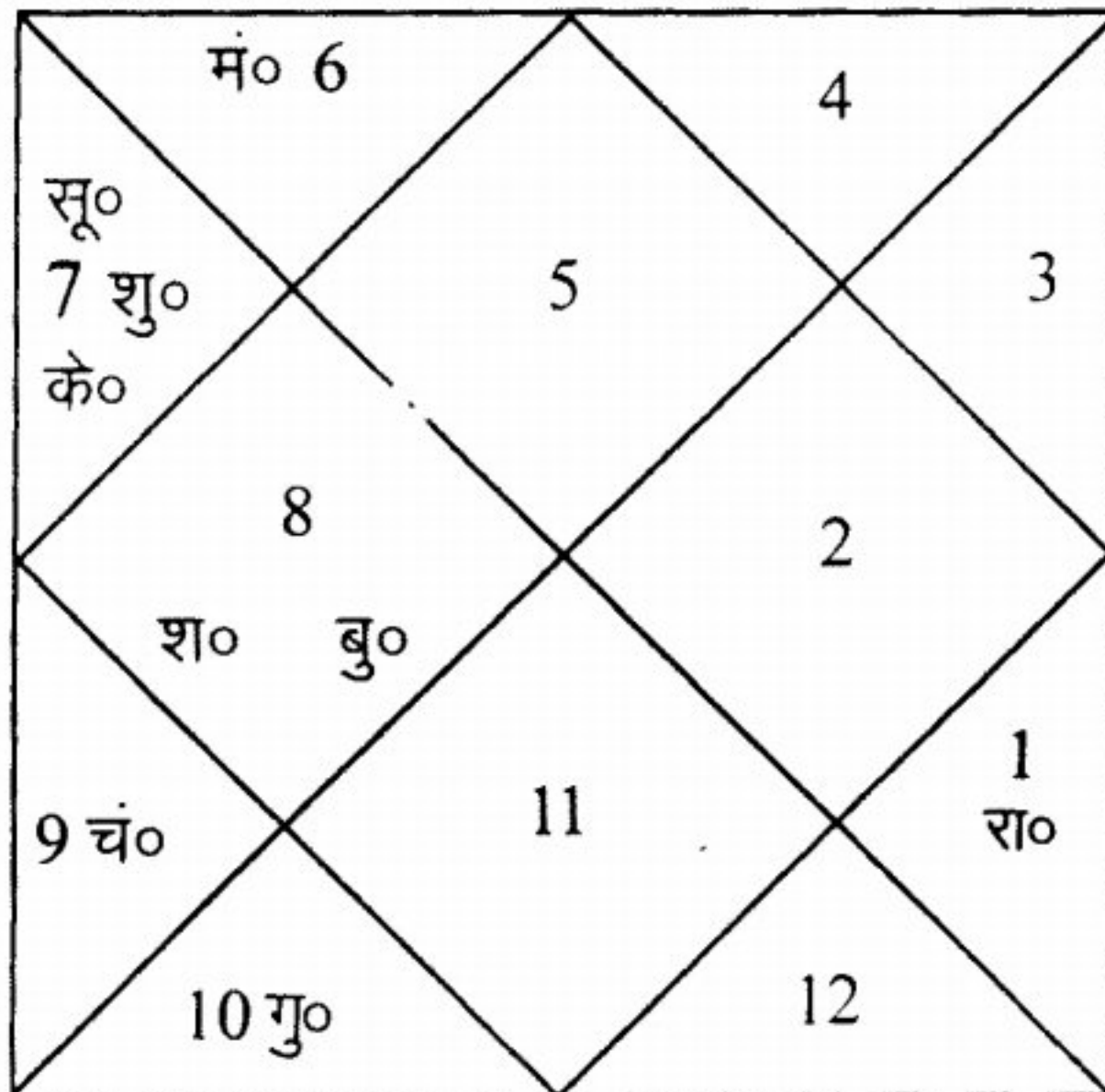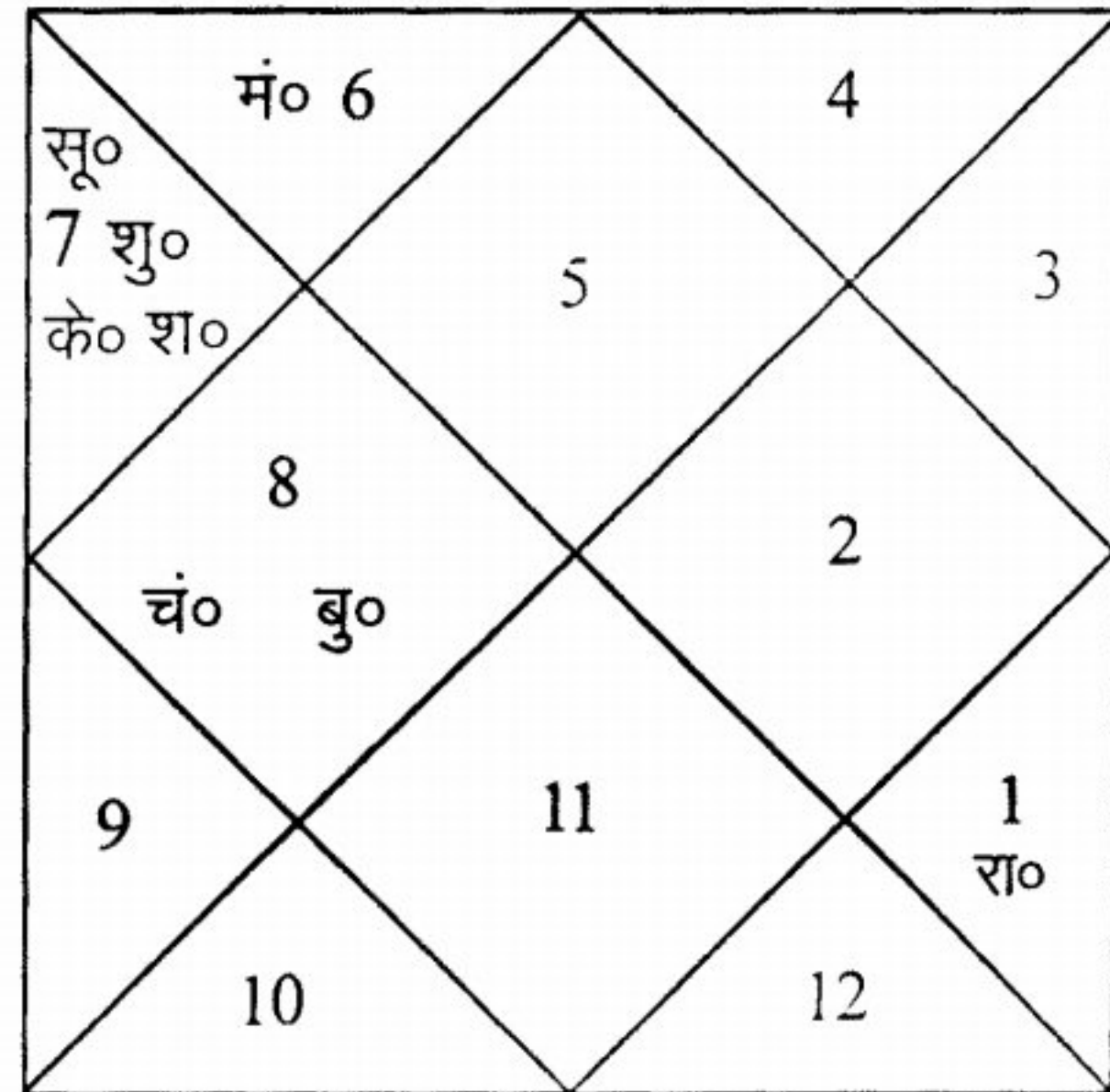
<u>कारकांश ग्रह</u> :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 8, श्लोक 1 से 33 में ग्रहों के कारकांश का विस्तृत वर्णन है । इसके निष्कर्ष रूप से ग्रहों के आत्मकारक आदि का वर्णन है । सबसे अधिक अंश वाले ग्रह की आत्मकारक संज्ञा होती है । इससे कम अंश वाले की अमात्यकारक संज्ञा होती है । उससे कम अंश वाले की भातृ कारक संज्ञा होती है । उससे कम अंश वाले की मातृकारक संज्ञा होती है । उससे कम अंश वाले की पितृ कारक संज्ञा होती है । उससे कम अंश वाले की जातिकारक संज्ञा होती है । उससे कम अंश वाले स्त्री/पति कारक संज्ञा होती है । हमारे मानक उदाहरण में ग्रहों के अंशानुसार कारक निम्न प्रकार से हैं :–

<u>कारकांश ग्रह साधन</u> :-

सबसे ज्यादा अंश सूर्य का है । अतः आत्म कारक हुआ । इससे कम अंश बुध का है अतः यह अमात्य कारक हुआ । उससे कम अंश मंगल का है, अतः यह भातृ कारक हुआ । उससे कम अंश गुरु का है अतः यह मातृ कारक हुआ । उससे कम अंश शुक्र क है अतः यह पितृ कारक हुआ । उससे कम अंश शनि क है अतः यह जाति कारक हुआ । सबसे कम अंश चन्द्र का है । अतः यह स्त्री कारक हुआ ।

मानक उदाहरण के ग्रहों में हमारे कारकांश इस प्रकार होंगे ।

कारकग्रह

1 आत्म कारक	2 आमात्य कारक	3 भ्रातृ कारक	4 मातृ कारक	5 पुत्र पितृ कारक	6 जाति कारक	7 स्त्री पति कारक
सूर्य	बुध	मंगल	गुरु	शुक्र	शनि	चन्द्र

आत्मकारक जिस नवमांश में होगा वह कारकांश कुण्डली होगी ग्रह लग्न में जिस राशि पर है वही रखेंगे । हमारा आत्मकारक सू० नवमांश में मिथुन का है अतः मिथुन लग्न कारकांश लग्न होगी ।

स्वांश कुण्डली लग्न कारकांश वाली होगी और ग्रह नवमांश कुण्डली के अनुसार बैठायेंगे ।

कारकांश चक्र

4
2
5
3
1 रा०
6 मं०
12
सू०
7 शु०
के०
9 चं०
11
8
श० बु०
10 गु०

स्वांश चक्र

4
2 गु०
श०
5
रा०
3
मं० सू०
1 चं०
6
12
7
9
11
के०
8
10
शु० बु०
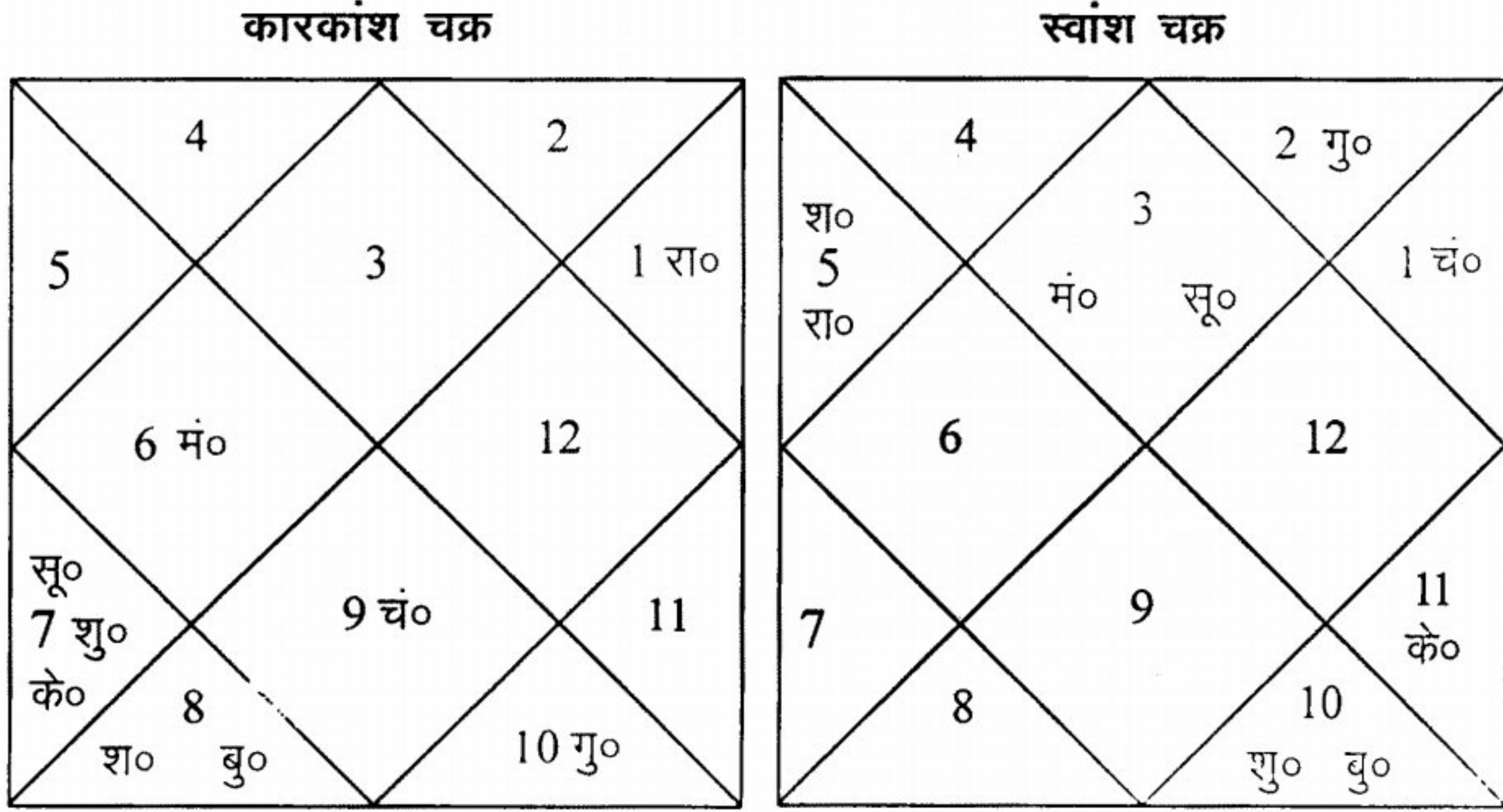
ग्रहों का उच्च नीच :-

अजो वृषो मृगः कन्या कुलीरझषतौलिका : ।

सूर्यादीनां क्रमादेतास्तुंगसंज्ञाः प्रकीर्तिताः ।

नीचास्तत्सप्तमा ज्ञेया ग्रहा नीचा विनिश्चताः ।।

सूर्यस्य भागे दशमे तृतीये चंद्रस्य जीवस्य तु पंचमेंऽशे ।

सौरस्य विंशे त्वधिसप्त केतोर्विद्याद्भृगोः पंचदशे बुधस्य ।

भौमस्य विंशेऽष्टयुते पराच्चैर्विंशल्लवे सूर्यसुतस्य नीचा : ।।[1]

सूर्यादि ग्रहों की क्रम से मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन तथा तुला उच्चराशि है । इन कथित राशियां से सातवीं राशि उस ग्रह की 'नीच' संज्ञक होती है । सूर्य 10° पर, चन्द्रमा 3° पर, मंगल 28° पर बुध 15° पर और 20° पर 'परमोच्च' होता है और सातवीं राशि के इन्हीं अंशो पर 'परमनीच' होता है ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 2, श्लोक 46, 47, 48 खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

मूलत्रिकोण व स्वराशि :-

विंशतिरंशाः सिंहेत्रि कोणमपरेस्वभवनमर्कस्य ।

उच्चं भागत्रितयं वृषमिंदोः स्यात्त्रिकोणमपरेंशाः ।।

द्वादश भागा मेषे त्रिकोणमपरे स्वभे तु भौमस्य ।

उच्चफलं कन्यायां बुधस्य तिथ्यंश कैः सदा चिंत्यम् ।।

परतस्त्रिकोणजाते पंचभिरंशैःस्वराशिजं परतः ।

दशभिर्भगैर्जीवत्रिकोणफलं स्वभं परं चापे ।।

शुक्रस्य तु तिथयोंऽशास्त्रिकोणमपरे तुले स्वराशिश्च ।

कुंभे त्रिकोणनिजभै रविजस्य रविर्यथा सिंहे ।।[1]

सूर्य — सिंह राशि में 20° तक 'मूल त्रिकोण' बाद में 'स्वराशि' है ।

चन्द्र — वृष 3° तक 'उच्च' बाद में 'मूल त्रिकोण' है ।

मंगल — मेष में 12° तक 'मूलत्रिकोण' बाद में स्वराशि है ।

बुध — कन्या में 15° तक 'उच्च' बाद 5° 'मूल त्रिकोण' शेष 10° 'स्वराशि' है ।

गुरु — धनुराशि में 10° तक 'मूल त्रिकोण' है । बाद में स्वराशि है ।

शुक्र — तुला में 15° तक 'मूल त्रिकोण' है । शेष स्वराशि है ।

शनि — कुंभ में 20° तक 'मूल त्रिकोण' है । शेष स्वराशि है ।

---

1. ''बृहत्पाराशर–होराशास्त्र'', पूर्वाखण्ड, अध्याय 2, श्लोक 49 से 52, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

ग्रहों का मित्राधिमित्र :-

रवेः समो ज्ञः सितसूर्यपुत्रावरी, परे ये सुहृदो वरायः ।

चन्द्रस्य नारी, रविचंद्र पुत्रौ मित्रे, समाः शेषनभश्चराः स्युः ।।

समौ सितार्की, शशिजश्च शत्रुर्मित्राणि शेषाः पृथिवीसुतस्य ।

शत्रुः शशी सूर्यसितौ च मित्रे, समाः परे स्युः शशिनंदनस्य ।।

गुरार्ज्ञशुक्रौ रिपुसंज्ञकौ तु, शनिः समोऽन्ये सुहृदो भवंति ।

शुक्रस्य मित्रे बुधसूर्यपुत्रौ, समौ कुजार्यावितरावरी तौ ।।

शनेः समो वाक्पतिरिंदुसूनुशुक्रौ च मित्रे, रिपवः परेऽपि ।

ध्रुवंग्रहाणां चतुराननेन शत्रुत्वमित्रत्वस मत्वमुक्तम् ।।

दशायबंधुसहजस्वांत्यस्थास्ते परस्परम् ।

सुहृद्भवेदधिसुहृत्समो मित्रं परः समः ।।

तथा त्रिकोणषष्ठाष्टसप्तैकस्थितखेचराः ।

अन्योन्यं रिपुतां यांति तत्कालं तानि वै मुने ।।[1]

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री विचार :-

सूर्य के — बुध सम; शुक्र, शनि शत्रु तथा चन्द्र, मंगल व गुरु मित्र हैं ।

चन्द्रमा के — सूर्य, बुध मित्र; मंगल, गुरु, शुक्र, शनि सम हैं ।

मंगल के — शुक्र, शनि सम; बुध शत्रु तथा सूर्य, चन्द्र, गुरु मित्र हैं ।

बुध के — चन्द्र शत्रु; सूर्य, शुक्र मित्र और मंगल, गुरु, शनि सम हैं ।

गुरु के — बुध, शुक्र शत्रु; शनि सम तथा सूर्य, चन्द्र, मंगल मित्र हैं ।

शुक्र के — बुध, शनि मित्र; मंगल गुरु सम; सूर्य, चन्द्र शत्रु हैं ।

शनि के — गुरु सम; बुध, शुक्र मित्र तथा सूर्य, चन्द्र, मंगल शत्रु हैं ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 2, श्लोक 53 से 58, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

पंचधामैत्रीचक्र

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ग्रह
चं० मं० गु०	सू० — बु०	सू० चं०	सू० शु०	सू० चं०	बु० श०	शु०	अधिमित्र
बु०	मं० गु० शु० श०	शु० श०	मं० गु०	श०	मं० गु०	०	मित्र
श०	०	बु० गु०	चं०	मं० बु० शु०	चं०	सू० चं० मं० बु० गु०	सम
०	०	०	श०	०	०	०	शत्रु
शु०	०	०	०	०	सू०	०	अधिशत्रु

* * *

अध्याय-4

षोडश वर्ग तथा विंशोपक बल/पारिजातादि संज्ञा साधन

जन्म कुण्डली में षोडश वर्ग का प्रचलन वैदिक काल से है । सभी आदि आचार्यों तथा आधुनिक आचार्यों ने षोडशवर्ग को निर्विवाद माना है । बिना षोडश वर्ग के किसी भी जन्म कुण्डली का सही-२ फलादेश करना असम्भव है क्योंकि ग्रहों की षडवर्ग, सप्तवर्ग, दशवर्ग तथा षोडशवर्ग में उच्चांश व नीचांश का पता लगाने पर ही उनकी पारिजातादि संज्ञाये प्राप्त होंगी तथा सभी वर्गों में उनके स्वामी देवताओं का ज्ञान प्राप्त होने पर ही शुभाशुभ फल का ज्ञान होता है । ज्योतिष में षोडशवर्ग का बड़ा भारी महत्त्व है। इसके बिना ऐसा लगता है जैसे कोई तैरना न जानता हो और समुद्र में कूद जाये । अतः कहा जा सकता है कि षोडश वर्ग के बिना किसी जन्म कुण्डली का वैज्ञानिक फलादेश करना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव भी है ।

षोडश वर्ग :-

लग्न को सोलह भागों में विभक्त कर वर्ग बनाये जाते हैं । ये सोलह भाग "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" में इस प्रकार हैं :–

वर्गान् षोडशसंख्याकान् ब्रह्मा लोकपितामहः ।
तानह संप्रवक्ष्यामि मैत्रेय श्रूयतामिति ।।
क्षेत्रं होरा च द्रेष्काणस्तुर्यांशः सप्तामांशकः ।
नवांशो दशमांशश्च सूर्यांशः षोडशांशकः ।।
विंशाशो वेदवान्हंसो भांशास्त्र्यशांशस्ततः ।
खवेदांशाऽक्षवेदांशःषष्ठ्यश्च ततः परम् ।।[1]

इन सोलह वर्गों का फलादेश में बड़ा महत्त्व बतलाया गया है । ये वर्ग महर्षि पराशर ने अपने

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 52 से 54, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

शिष्य मैत्रेय को लोकपितामह ब्रह्मा के कहे हुए बतलाये हैं । वे इस प्रकार हैं ।

1. लग्न, 2. होरा, 3. द्रेष्काण, 4. चतुर्थांश, 5. सप्तमांश, 6. नवमांश, 7. दशमांश, 8. द्वादशांश, 9. षोडशांश, 10. विंशांश, 11. चतुर्विंशांश, 12. सप्तविंशांश, 13. त्रिंशांश, 14. खवेदांश, 15. अक्षवेदांश, 16. षष्ठयंश

ये कुण्डली के वर्ग होते हैं तथा इन वर्गों के स्वामी भिन्न–भिन्न हैं । ज्योतिषाचार्यों ने लग्नों का दस/सोलह भाग कर उनका फलादेश में प्रयोग किया है ।

श्लोक संख्या 30 जातक परिजात में लिखा है :–

लग्नं होरादृकक्काणं स्वश्नवदशकद्वादशांशाः कलांशाः

त्रिंशत्षष्टयंशकाख्या व्ययदुरितचयश्रीकरा मानवानाम् ।

होरा राश्यर्धमोजे दिनकरशशिनोरिन्पुमार्तण्डहोरे

युग्मे राशौ दृगाणा निजतनयतपः स्थानपानां भवन्ति ।।[1]

लग्न, होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, दशमांश, द्वादशांश, षोडशांश, त्रिंशांश, षष्टयंश – ये दस वर्ग होते हैं ये दस वर्ग मनुष्यों को व्यय, कष्ट, उन्नति और धन–धान्य देने वाले होते हैं ।

इन वर्गो का मानक उदाहरण द्वारा सिद्ध कर रहे हैं ।

1. **लग्न** :- मानक उदाहरण लग्न स्पष्ट 4-26-6-39 है । अतः पहला वर्ग लग्न ही रहेगा। इसमें सभी ग्रह राशि अंशो के आधार पर रखे जायेंगे ।

---

1. ''जातक पारिजात'', अध्याय 1, श्लोक 30, चौखम्बा, सुरभारती प्रकाशन, पेज-14 ।

लग्न

मं० 6
4
शु०
7 सू०
5
3
के०
श० 8 बु०
2
9 चं०
11
1
रा०
10 गु०
12
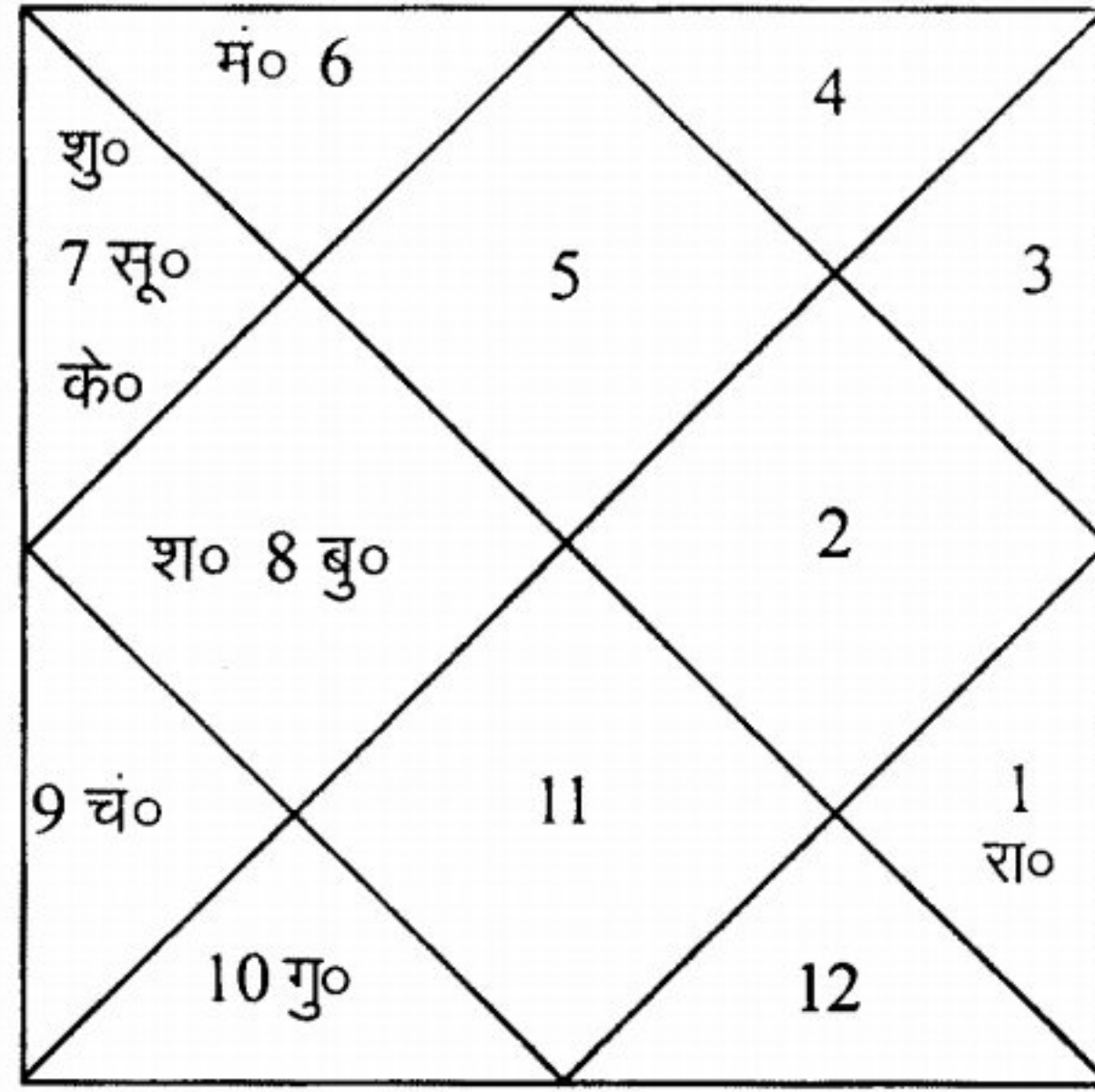
2. होरा :-

> **तत्क्षेत्रं तस्य खेटस्य राशेर्यो यस्य नायकः ।**
>
> **सूर्येन्द्वोर्विषमे राशौ समे तद्विपरीतकम् ।।**
>
> **पितरश्चन्द्रहोरेशा देवाः सूर्यस्य कीर्तिताः ।**
>
> **राशेरर्द्धम्भवेद्धोरा ताश्चतुर्विंशितिः स्मृताः ।**
>
> **मेषादि तासां होराणां परिवृत्तिद्वय भवेत् ।।**[1]

होरा साधन विधि :- लग्न राशि के अंशों को 2 से भाग देने पर दो होरा 15-15 अंश की होती है । अर्थात राशि का आधा भाग एक होरा होती है । विषम राशि में प्रथम 15° तक सूर्य की होरा तथा बाद के 15° तक चन्द्र की होरा होती है । प्रथम होरा का स्वामी देव तथा द्वितीया होरा का स्वामी पितर होता है । सम राशि होने पर पहली होरा चन्द्र की तथा द्वितीय होरा सूर्य की होती है ।

सम राशि – वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन है ।

विषम राशि – मेष, मिथुन, सिंह, तुला धनु, कुम्भ है ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 55-56, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

होरा साधन :-

होरा

(i) हमारी लग्न सिंह विषम राशि 26° पर है अतः दूसरी होरा चन्द्र की हुई। इसी प्रकार सूर्यादि ग्रहों को सम, विषम राशि का ज्ञान कर दोनों भागों में रखेंगे।

(ii) जैसे सूर्य तुला के 28° पर विषम राशि तो चन्द्र की होरा में आयेगा ।

(iii) मंगल, कन्या सम राशि में 7° पर है। इसकी पहली होरा 15° तक चन्द्र की अतः सूर्य की होरा में आयेगा ।

(iv) चन्द्र विषम राशि धनु में है । पहली होरा चन्द्र की हुई अतः कर्क राशि में आयेगा ।

(v) बुध वृश्चिक सम राशि 20° पर है अतः पहली होरा चन्द्र की हुई दूसरी सूर्य की अतः सिंह में रखेंगे ।

(vi) गुरु सम राशि मकर के 16° पर है अतः सूर्य की होरा में रखा जायेगा ।

(vii) शुक्र विषम राशि तुला के 12° पर है तो सूर्य की होरा में रखा जायेगा ।

(viii) शनि वृश्चिक सम राशि के 6° पर है अतः पहली होरा चन्द्र में रखा जायेगा ।

(ix) राहू विषम राशि मेष के 0° पर है तो चन्द्र की होरा में रखा जायेगा ।

(x) केतु विषम राशि तुला के 8° पर है तो चन्द्र की होरा में रखा जायेगा ।

3. द्रेष्काण :

राशित्रिभागा द्रेष्काणस्तेच षट्त्रिंशदीरिताः ।
परिवृत्तित्रयंतेषां मेषादेः क्रमशो भवेत् ।।
स्वपंचनवमानां च विषमेषु समेषु च ।
नारदागस्तिदुर्वासा द्रेष्काणेशाश्चरादयः ।।[1]

---
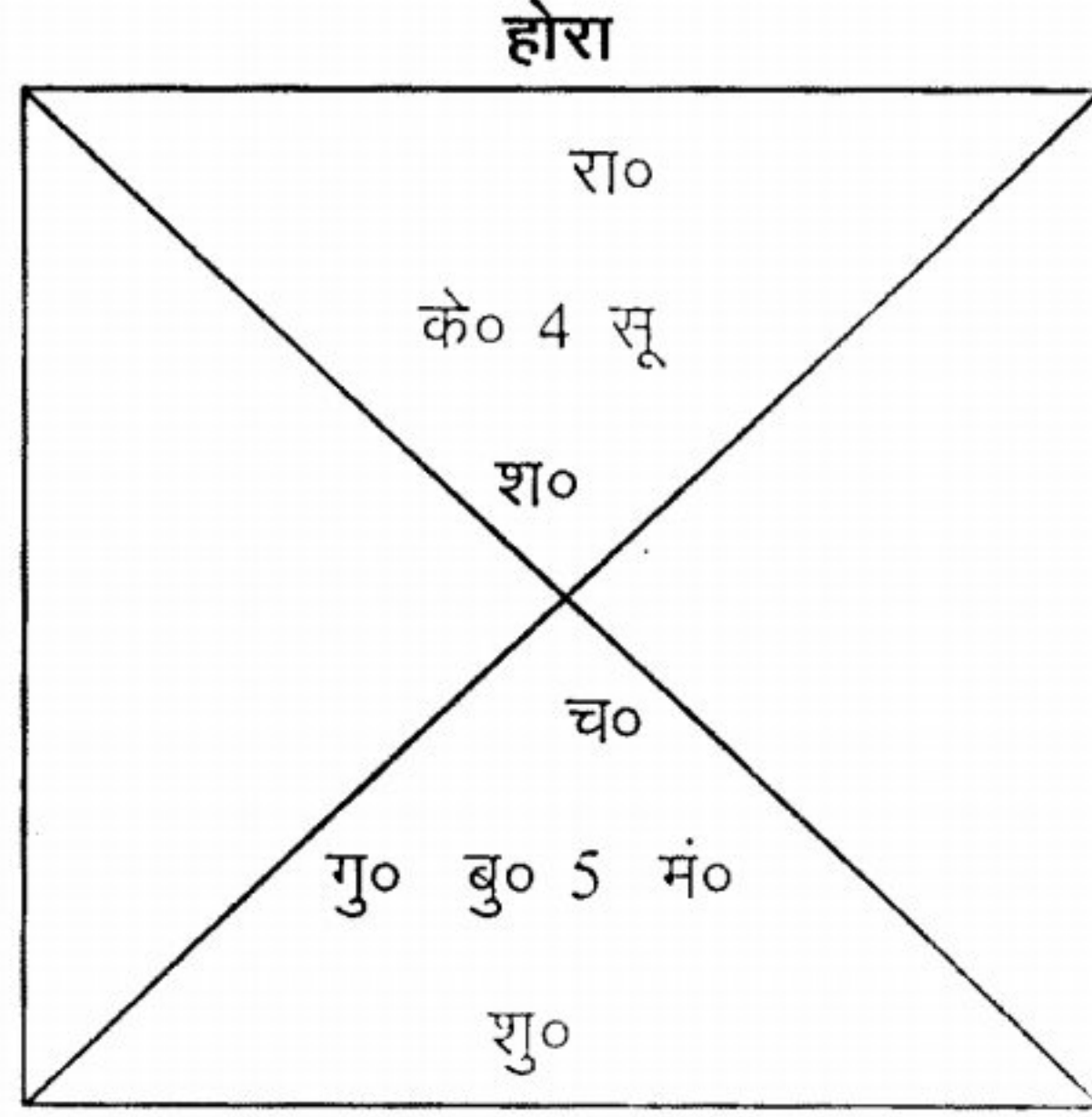
1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 57-58, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

द्रेष्काण साधन विधि :- इसमें प्रत्येक राशि के तीसरे भाग को द्रेष्काण कहते हैं । सभी द्रेष्काण 12×3 = 36 होते हैं । मेषादि राशियों में तीन आवृत्ति होती हैं । प्रथम भाग का राशीश ही स्वामी होता है । दूसरे भाग का पञ्चमेश तथा तीसरे भाग का नवमेश स्वामी है। इसी क्रम से नारद, अगस्ति, दुर्वासा इनके देवता होते हैं । "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" पेज 36 पर द्रेष्काण चक्र दिया है इसी के अनुसार द्रेष्काण कुण्डली सिद्ध की जाती है ।

द्रेष्काण

2 गु०
12
3 सू०
1
के०
11
शु०
4 बु०
10 मं०
रा०
7
9
चं०
5
6
8 श०
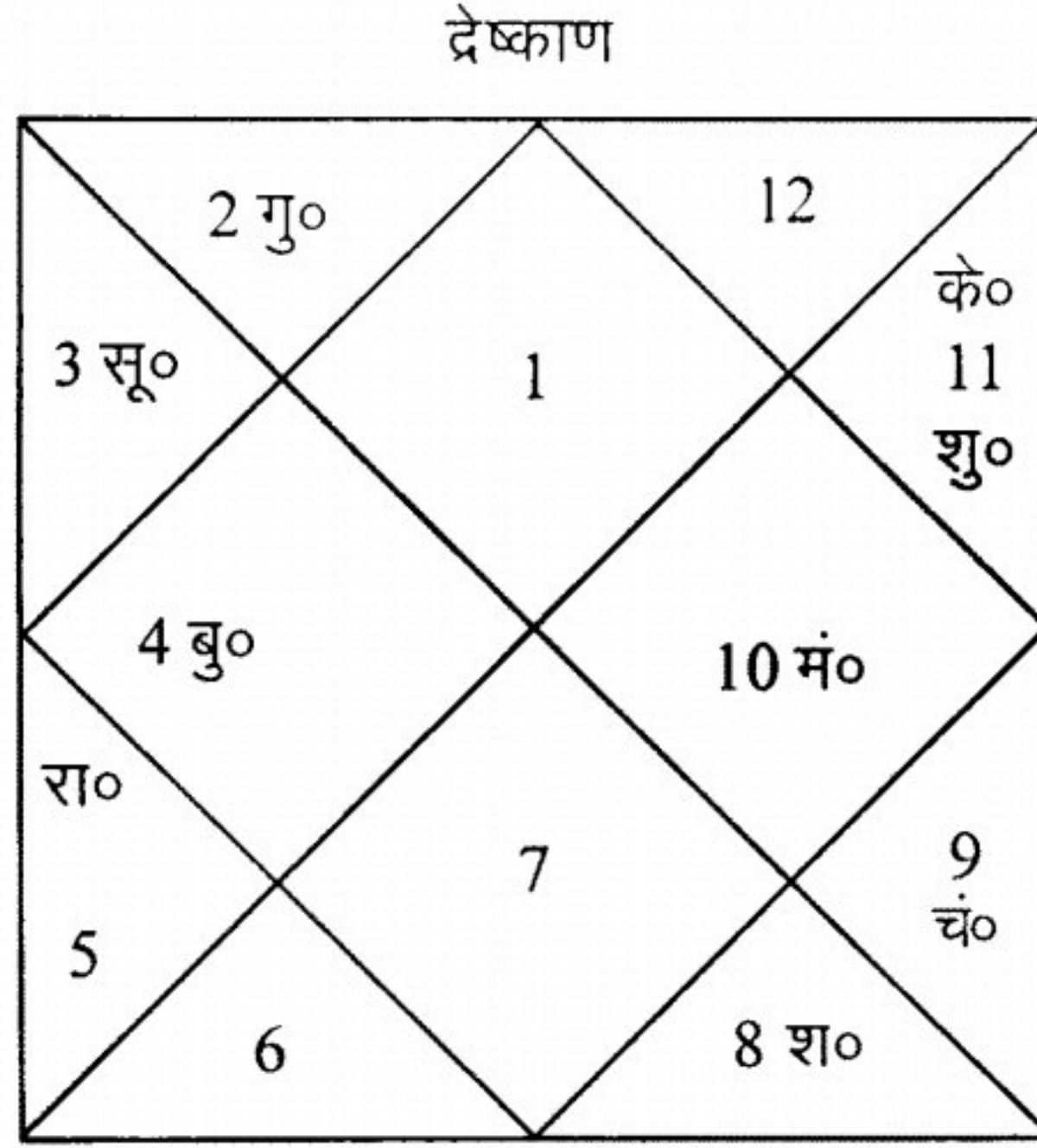
द्रेष्काण साधन :-

(i) मानक उदाहरण लग्न 4-26-6-39 है । लग्न 26° पर होने से उपरोक्त रीति अनुसार तीसरा द्रेष्काण मेष राशि का है । इसका स्वामी दुर्वासा है । इसी प्रकार सूर्यादि ग्रहों के राशि अंशों के अनुसार सभी ग्रह उपरोक्त कुण्डली में रखेंगे ।

(ii) सूर्य तुला के 28° पर है तो मिथुन के द्रेष्काण में आयेगा। इसका स्वामी भी दुर्वासा होगा।

(iii) चन्द्रमा धनु राशि के 0° पर है तो धनु राशि में आयेगा। इसका स्वामी नारद होगा।

(iv) मंगल कन्या राशि के 17° पर है तो मकर राशि में आयेगा । इसका स्वामी अगस्ति होगा।

(v) बुध वृश्चिक राशि के 20°-24' पर है । तो कर्क राशि में आयेगा । इसका स्वामी

दुर्वासा होगा ।

(vi) गुरु मकर के 16° पर है तो वृष राशि में आयेगा । इसका स्वामी अगस्ति होगा ।

(vii) शुक्र तुला के 12° पर है तो कुम्भ राशि में आयेगा । इसका स्वामी अगस्ति होगा ।

(viii) शनि वृश्चिक राशि के 6° पर है तो सिंह राशि में आयेगा । इसका स्वामी अगस्ति होगा।

(ix) राहू मेष राशि के 14° पर है अतः सिंह में आयेगा । इसका स्वामी अगस्ति होगा ।

(x) केतू तुला के 14° पर है तो कुम्भ में आयेगा। इसका स्वामी अगस्ति होगा ।

चतुर्थांश :-

स्वर्क्षादिकेंद्रपतयस्तुर्यांशेशाः क्रियादयः ।

सनकश्च सनंदश्च कुमारश्च सनातनः ।।[1]

चतुर्थांश साधन विधि :- राशि के चार भागो में प्रथम भाग का स्वामी राशिपति है । द्वितीया भाग का चतुर्थ भावाधिपति एवं तृतीय का सप्तमेश और चतुर्थांश का दशमेश स्वामी होता है । और सनक, सनन्दन, सनत्कुमार, सनातन क्रम से देवता होते हैं ।

राशि के 30° को 4 से भाग करने पर एक भाग 7/30 अंश, कला होती है । इसका स्वामी राशिपति ही है । दूसरा भाग 15 अंश तक इसका स्वामी चतुर्थेश है, तीसरा भाग 22/30 अंश कला तक होता है । इसका स्वामी सप्तमेश तथा चौथा भाग 30° अंश तक होता है । इसका स्वामी दशमेश होता है । मूल ग्रन्थ में इसका स्पष्ट चक्र दिया है उसी अनुसार हम कार्य करेंगे ।

चतुर्थांश साधन :-

(i) मानक उदाहरण लग्न 4-26-6-39 है । चतुर्थांश चक्र में हमने देखा सिंह राशि के 26° अंश पर वृष लग्न है उसका स्वामी शुक्र है । अतः हमने चतुर्थांश की वृष लग्न की कुण्डली बनाई ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 59, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

चतुर्थांश चक्र

3
गु०
4 रा०
सू०
2
बु०
1
12
मं०
5
11
6
8 श०
शु० 1
के०
7
9 चन्द्र
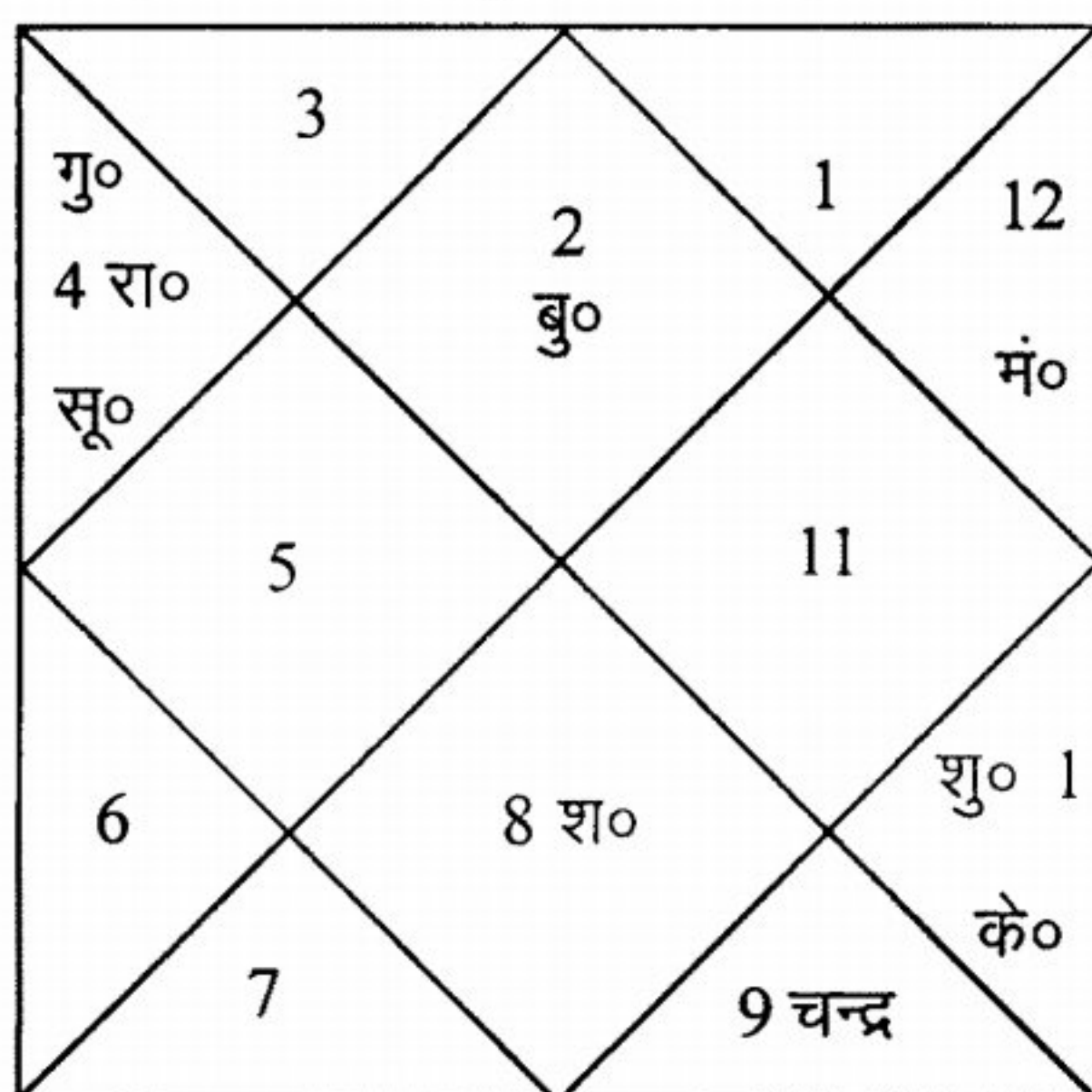
अब सभी ग्रहों के राशि अंशानुसार उपरोक्त कुण्डली में ग्रहों को रखेंगे ।

(ii) सूर्य तुला के 28 अंश पर है तो हमने चतुर्थांश चक्र में देखा तो सू० कर्क राशि में आयेगा। इसका स्वामी चन्द्र तथा देवता सनातन हुआ ।

(iii) चं० धनु राशि के 0 अंश 33 कला पर है । चक्र में देखा तो धनुराशि में ही आयेगा । इसका देवता सनक है ।

(iv) मं० कन्या के 17 अंश पर है । चक्र में देखा तो मीन राशि में आया तथा इसका देवता सनत्कुमार हुआ ।

(v) बु० वृश्चिक राशि के 20 अंश पर है । चक्र में देखा तो वृष राशि आया इसका देवता सनत्कुमार हुआ ।

(vi) गुरु मकर राशि के 16 अंश पर है चक्र में देखा तो कर्क राशि में आया इसका देवता सनत्कुमार है ।

(vii) शु० तुला के 12 अंश पर है चक्र में देखा तो मकर राशि में आया इसका देवता सनंदन हुआ ।

(viii) श० वृश्चिक राशि के 6 अंश पर है चक्र में देखा तो वृश्चिक में आया इसका देवता सनक हुआ ।

(ix) रा० मेष राशि के 14 अंश पर है चक्र में देखा तो कर्क में आया इसका देवता सनंदन है।

(x) के० तुला राशि के 14 अंश पर है चक्र में देखा तो मकर राशि में आया इसका देवता सनंदन है ।

सप्तमांश :-

सप्तमांशपास्त्वोजगृहे गणनीया निजेशतः ।
युग्मराशौ तु विज्ञेयाः सप्तमर्क्षादिनायकात् ।।
क्षारक्षीरौ च दध्याज्यौ तथेक्षुरससंभवः ।
मद्यशुद्धजलावोजे समे शुद्ध जलादिकाः ।।[1]

सप्तमांश विधि :- राशि के सात भाग करने से एक भाग 4 अंश 17 कला 8 विकला का होता है। इसमें 4 अंश 17 कला 8 विकला जोड़ते रहने से सातवें भाग में 30 अंश पूरे हो जाते हैं। इसमें विषम राशियों के राशिपति से ही गिनना । सम राशियों में सातवीं राशि से गणना करना चाहिए । विषम राशियों के देवता – क्षार, क्षीर, दधि, धृत, इक्षुरस, मद्य, जलादि क्रम से जाना जाता है । सम राशियों में इससे विपरीत क्रम से जल, मद्य, इक्षुरस, धृत, दधि, क्षीर तथा क्षार आदि देवता होते हैं।

2-4-6-8-10-12 सम राशि,

1-3-5-7-9-11 विषम राशि हैं ।

सप्तमांश साधन :-

(i) मानक उदाहरण लग्न 4-26-6-39 है । सप्तांश चक्र में सिंह राशि के 26 अंश 6 कला 39 कला पर देखा तो कुम्भ का सप्तमांश आया विषम राशि का आया इसका देवता विपरीत क्रम से गिनने पर शुद्ध जल आया ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 60-61, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

सप्तमांश चक्र

12
शु० 10 के०
11
9
1 सू०
चं०
2
8
5
3 श
7
गु०
मं० 4 रा०
6 बु०
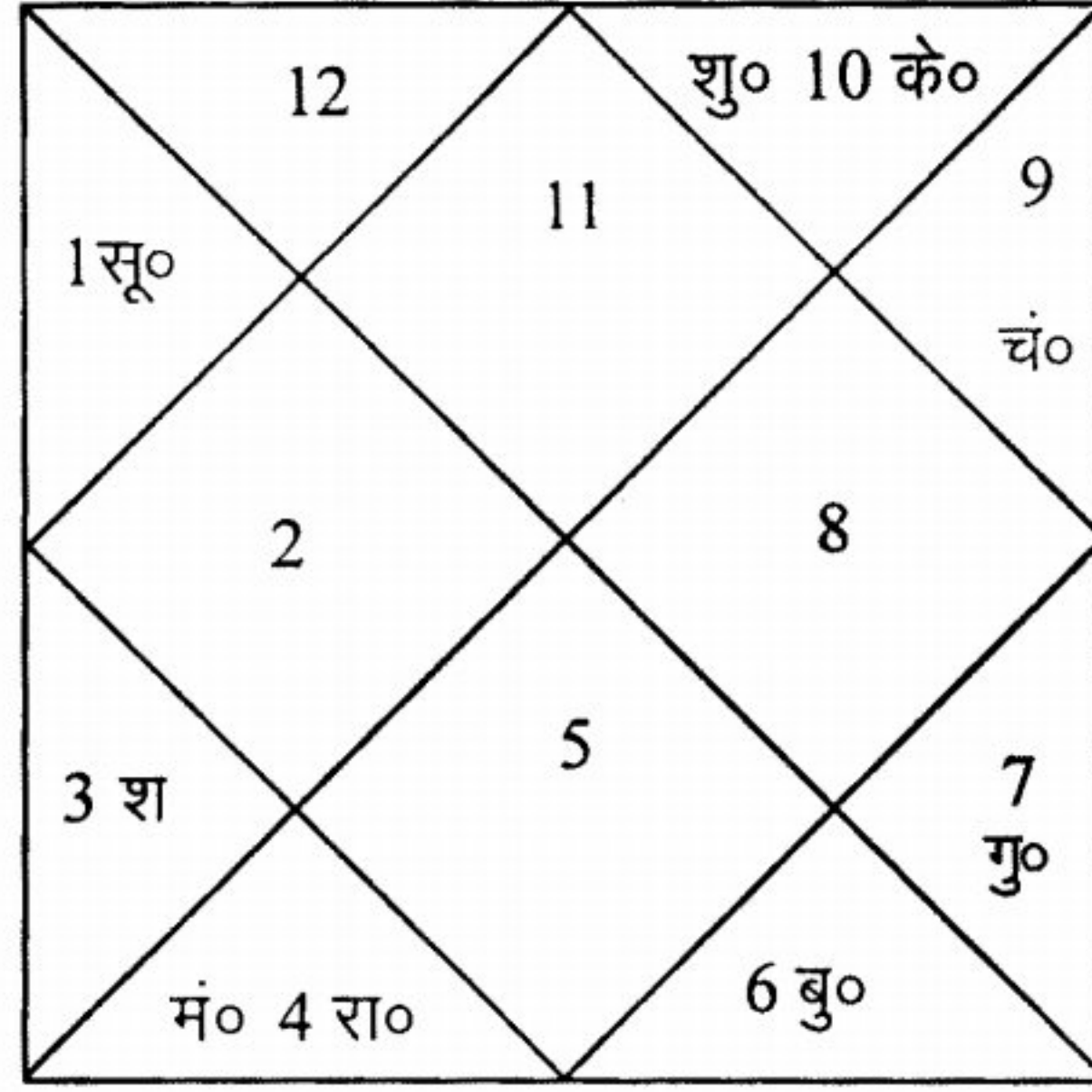
(ii) अब हमारा सूर्य विषम राशि तुला के 28 अंश पर है तो सप्तमांश चक्र में देखा तो मेष राशि में आया इसका देवता शुद्ध जल हुआ ।

(iii) चन्द्र धनु विषम राशि के 0 अंश 33 कला पर है चक्र में देखा तो धनु राशि में ही रहा इसका देवता क्षार हुआ ।

(iv) मंगल सम राशि कन्या के 18 अंश 43 कला पर है । चक्र में देखा तो कर्क राशि में आया इसका देवता दधि हुआ ।

(v) बुध समराशि वृश्चिक के 20 अंश 24 कला पर है । चक्र में देखा तो कन्या में आया इसका देवता दधि हुआ ।

(vi) गुरु समराशि मकर के 16 अंश 18 कला पर है । चक्र में देखा तो तुला में आया इसका देवता धृत हुआ ।

(vii) शुक्र विषम राशि तुला के 12 अंश 54 कला पर है । चक्र में देखा तो मकर राशि में आया इसका स्वामी धृत हुआ ।

(viii) शनि समराशि वृश्चिक के 6 अंश 5 कला पर है चक्र में देखा तो मिथुन राशि में आया इसका देवता मद्य हुआ ।

(ix) राहू विषम राशि मेष के 14 अंश 39 कला पर है चक्र में देखा तो कर्क राशि में आया

तो इसका देवता धृत हुआ ।

(x) केतु तुला विषम राशि के 14 अंश 39 कला पर है चक्र में देखा तो मकर राशि पर आया इसका देवता धृत सागर हुआ ।

नवमांश :-

> **नवांशेशाच्चरस्तस्मारिथरे तन्नवमादितः ।**
> **उभये तत्पंचमादेरिति चिंत्यं विचक्षणैः ।**
> **देवा नृराक्षसाश्चैव चरादिषु ग्रहेषु च ।।**[1]

नवमांश साधन विधि :- राशि को नौ से भाग करने से 3 अंश 20 कला का एक भाग होता है । इसे नौ बार जोड़ने से 30 अंश पूरे होते हैं । इस वर्ग का व्यवहार में ज्यादा प्रयोग होता है । चर राशि में राशि स्वामी से, स्थिर राशि में नवराशि से तथा द्विस्वभाव राशि में पञ्चम राशि से गणना की जाती है । चर राशि में देवता, मनुष्य, राक्षस स्वामी हैं । स्थिर राशि में मनुष्य, राक्षस, देव तथा द्विस्वभाव राशि में राक्षस, देव व मनुष्य स्वामी होते हैं । इनकी तीन बार आवृत्ति होती है।

नवमांश साधन :-

(i) मानक उदाहरण लग्न 4-26-6-39 है । नवमांश चक्र में सिंह राशि के 26 अंश पर देखेंगे तो वृश्चिक राशि का नवमांश आया ।

(ii) हमारा सूर्य तुला राशि के 28 अंश 45 कला पर है । नवमांश चक्र में देखा तो मिथुन में आया इसका देवता राक्षस हुआ ।

नवमांश चक्र

9
7
शु० 10 बु०
8
6
11 के०
रा० 5 श०
12
गु०
4
2
1 च०
मं० 3 सू०
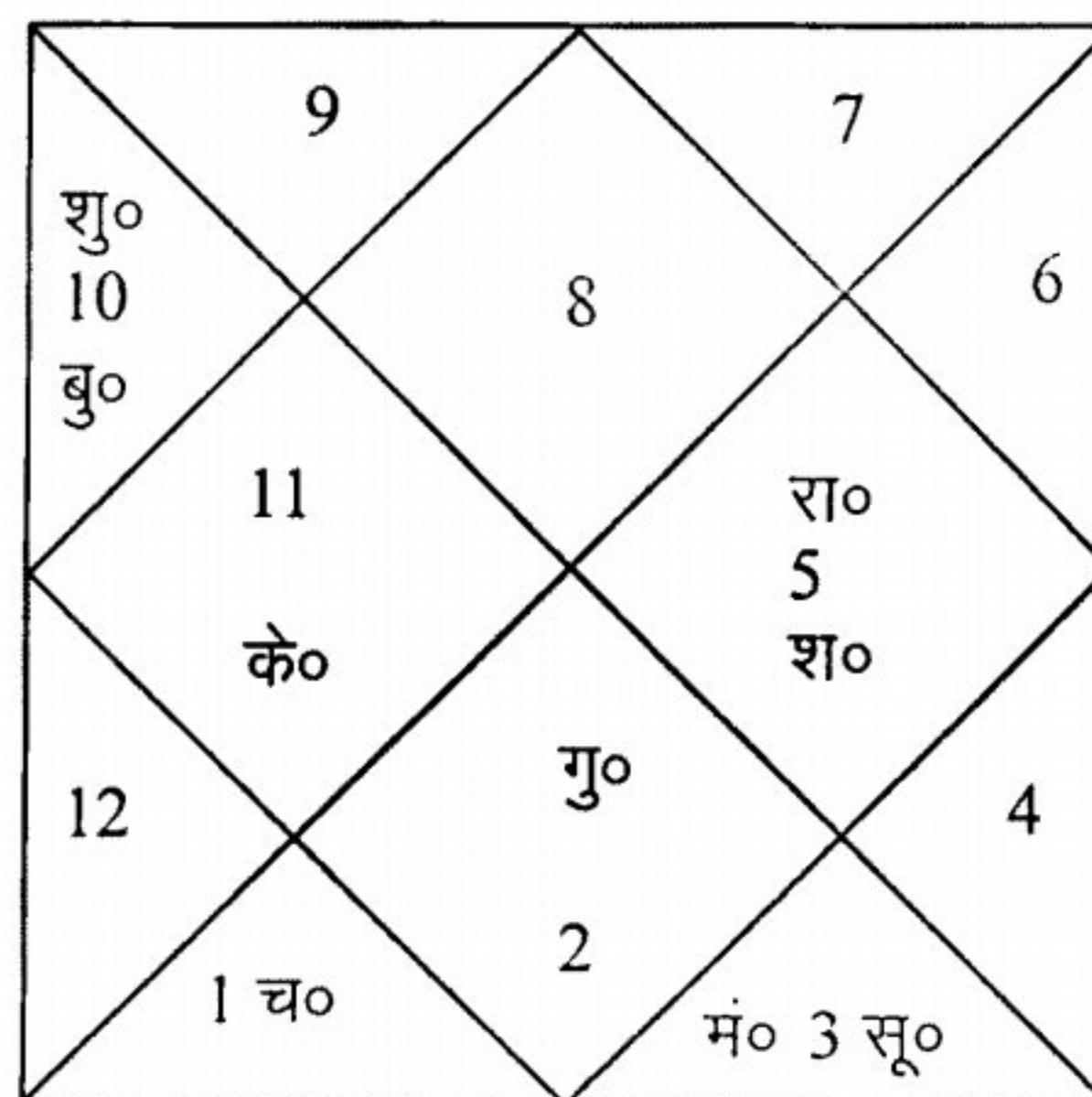
1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 62, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

(iii) चन्द्र धनु राशि के 0 अंश 33 कला पर है । चक्र में देखा तो मेष राशि में आया इसका देवता देव हुआ ।

(iv) मंगल कन्या राशि 17 अंश 43 कला पर है । चक्र में देखा तो मिथुन में आया इसका देवता राक्षस हुआ ।

(v) बुध वृश्चिक के 20 अंश 24 कला चक्र में देखा तो मकर राशि पर आया इसका देवता देव हुआ ।

(vi) गुरु मकर राशि के 16 अंश 18 कला पर है चक्र में देखा तो वृष राशि में आया इसका देवता मनुष्य हुआ ।

(vii) शुक्र तुला राशि के 12 अंश 54 कला पर है चक्र में देखा तो मकर राशि में आया इसका देवता देव हुआ ।

(viii) शनि वृश्चिक राशि के 6 अंश 5 कला पर है चक्र में देखा तो सिंह राशि में आया इसका देवता मनुष्य हुआ ।

(ix) राहू मेष राशि के 14 अंश 39 कला पर है चक्र में देखा तो सिंह राशि में आया इसका देवता मुनष्य हुआ ।

(x) केतु तुला राशि के 14 अंश 39 कला पर है । चक्र में देखा तो कुम्भ राशि में आया इसका देवता मनुष्य हुआ ।

दशमांश :-

दिगंशया ततश्चौजे युग्मे तन्नवमाद्वदेत् ।
पूर्वादिदशदिक्पाला इंद्राग्नियमराक्षसाः ।।
वरुणो मारुतश्चैव कुबेरेशानपद्मजाः ।
अनन्तश्च क्रमादोजे समे वा व्युत्क्रमेण तु ।।[1]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 63-64, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

दशमांश साधन विधि :-

इसमें राशि के 30 अंशो को 10 का भाग देने पर प्रत्येक भाग तीन अंश का होता है। इसमें विषम राशि में अपनी राशि से तथा सम राशि में अपने से नौवी राशि से गणना की जाती है । देवता विषम राशि में – इन्द्र, अग्नि, यम, राक्षस, वरुण, मारूत, कुबेर, ईशान, पद्मज, अनन्त क्रम से होते हैं। सम राशियों में क्रमशः अनन्त, पद्मज, ईशान, कुबेर, मारूत, वरुण, राक्षस, यम, अग्नि, इन्द्रादि देवता होते हैं ।

दशमांश साधन

(i) मानक उदाहरण लग्न 4-26-6-39 हैं । दशमांश चक्र में सिंह राशि के 26 अंश पर देखा तो मेष राशि विषम आई इसका देवता पद्मज हुआ ।

दशमांश चक्र

2, 12, शु० 11 गु० के०, 3, 1, 4, बु०, सू०, 10, 5, मं०, 9, चं०, रा०, 6 श०, 7, 8
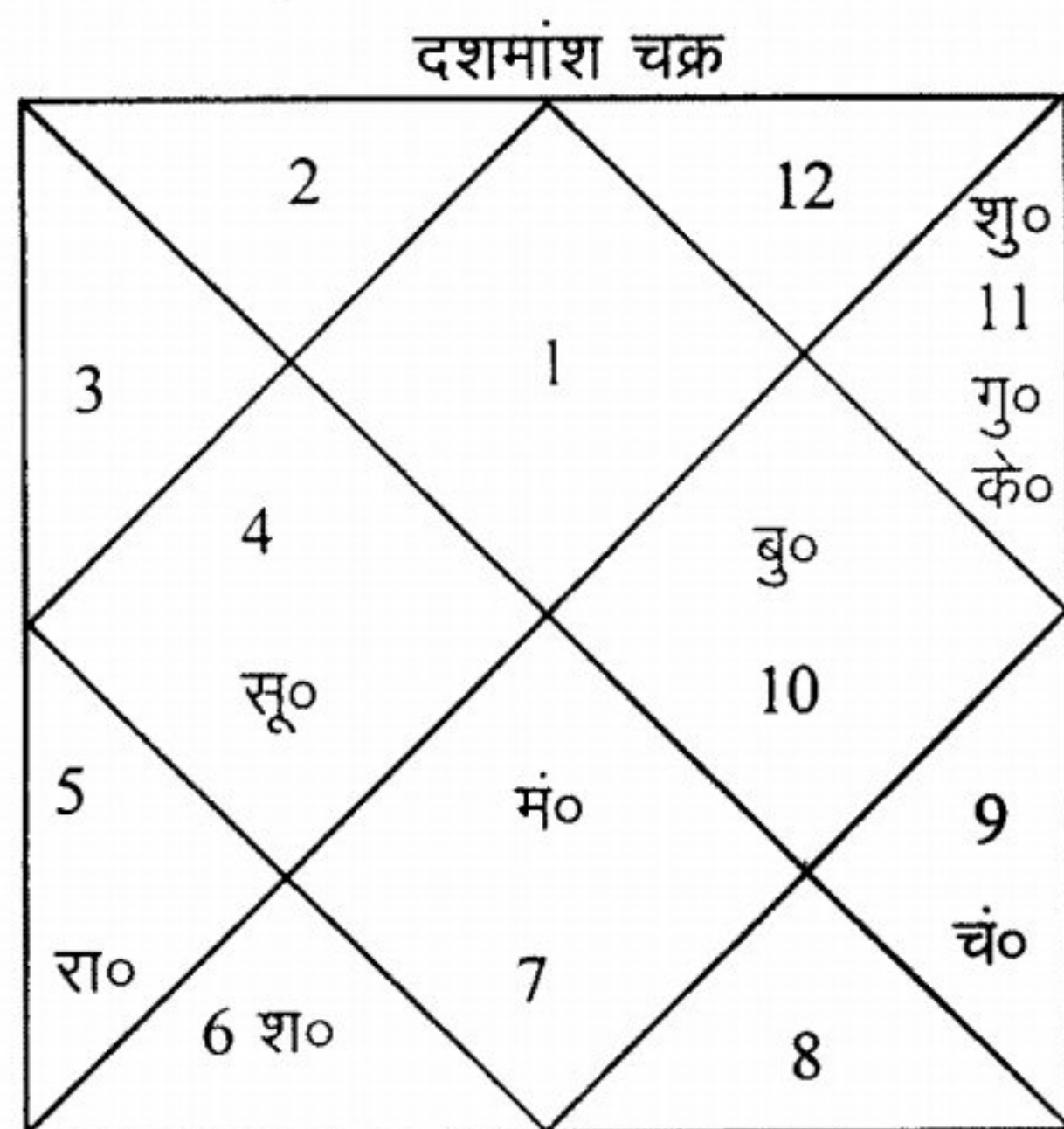
(ii) हमारा सूर्य तुला राशि के 28 अंश 45 कला पर है । दशमांश चक्र मे देखा तो कर्क राशि आई । कर्क राशि सम राशि है । इसका देवता इन्द्र हुआ ।

(iii) चन्द्र धनु राशि के 0 अंश 33 कला पर है । चक्र में देखा तो धनु राशि आई धनु राशि विषम राशि है । इसका देवता इन्द्र हुआ ।

(iv) मंगल कन्या राशि के 17 अंश 43 कला पर है चक्र में देखा तो तुला राशि आई । तुला

राशि विषम राशि है । इसका देवता मारुत हुआ ।

(v) बुध वृश्चिक राशि के 20 अंश 24 कला पर है चक्र में देखा तो मकर राशि आई, मकर राशि सम राशि है । अतः इसका देवता राक्षस हुआ ।

(vi) गुरु मकर राशि के 16 अंश 18 कला पर है चक्र में देखा तो कुम्भ राशि आई कुम्भ राशि विषम राशि है । अतः इसका देवता मारुत हुआ ।

(vii) शुक्र तुला राशि के 12 अंश 54 कला पर है चक्र में देखा तो कुम्भ राशि में आया कुम्भ राशि विषम राशि है अतः इसका देवता वरूण हुआ ।

(viii) शनि वृश्चिक राशि के 6 अंश 5 कला पर है चक्र में देखा तो कन्या में आया । कन्या सम राशि है । अतः इसका देवता यम हुआ ।

(ix) राहू मेष राशि 14 अंश 39 कला पर है। चक्र में देखा तो सिंह राशि पर आया सिंह राशि विषम राशि है । अतः इसका स्वामी वरूण हुआ ।

(x) केतु तुला के 14 अंश 39 कला पर है । चक्र में देखा तो कुम्भ राशि में आया । कुम्भ राशि विषम राशि हुई अतः इसका देवता वरूण हुआ ।

द्वादशांश :-

द्वादशांशस्य गणना तत्तत्क्षेत्राद्विनिर्दिशेत् ।
तेषामधीशाः क्रमशो गणेशाऽश्वियमाहयः ।।[1]

द्वादशांश साधन विधि :- राशि के 30 अंश को 12 का भाग देने पर एक भाग 2/30 अंश कला होता है । इसकी गणना अपनी राशि से होती है । जैसे मेष के द्वादशांश की मेष से, वृष की वृष से, मिथुन की मिथुन से होती है । इनके देवता गणेश, अश्विन कुमार, यम तथा सर्प हैं । इनकी तीन आवृति होती हैं ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 65, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

द्वादशांश चक्र

बु० 4 गुरु
2
5
3
1
मं०
सू० 6
के०
शु० 12
रा०
7
चं०
11
8
9
10 श०
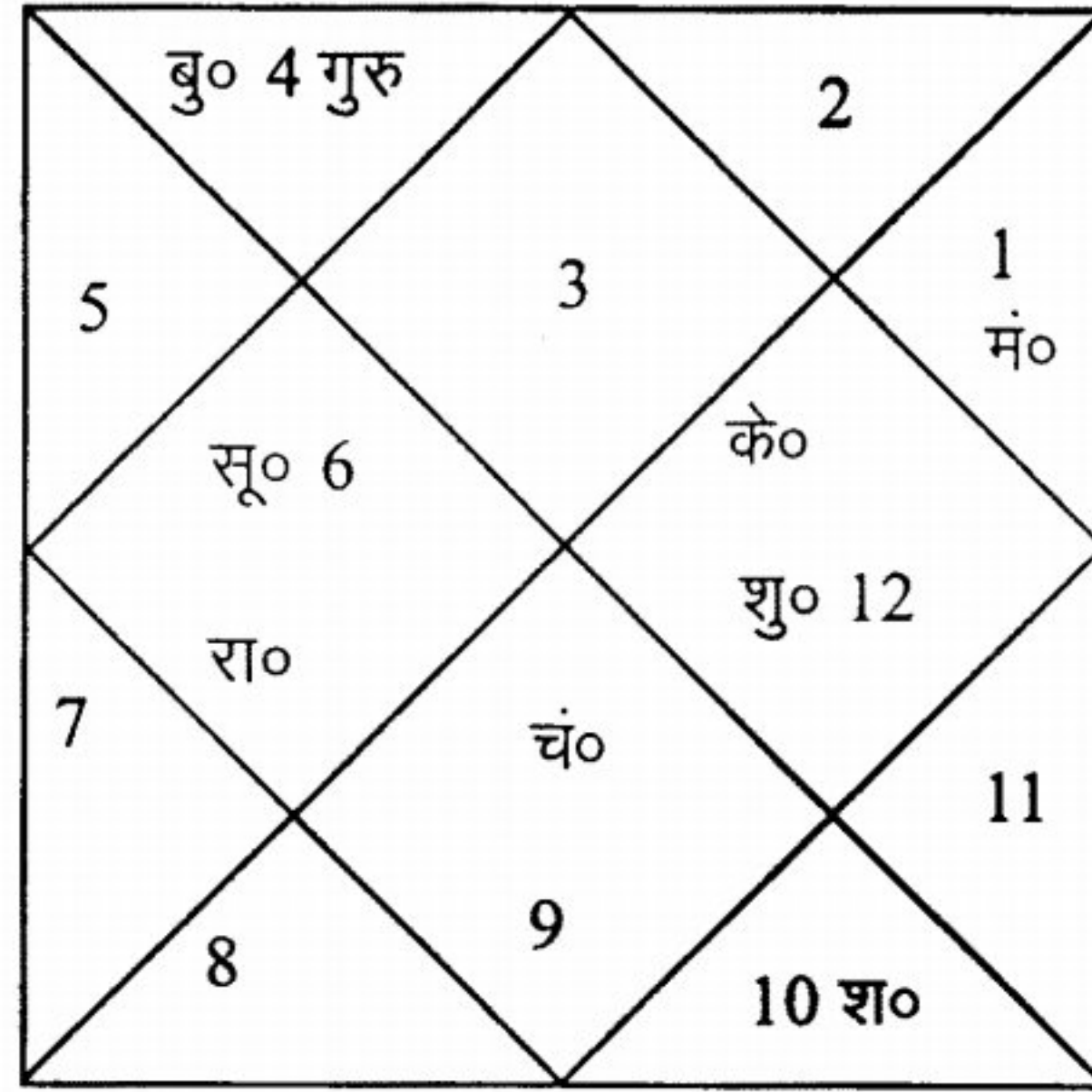
द्वादशांशमाह साधन :

(i) मानक उदाहरण लग्न 4-26-6-39 है, द्वादशांश चक्र में सिंह राशि के 26 अंश 6 कला पर देखा तो मिथुन राशि आई इसका स्वामी बुध, देवता यम हुआ ।

(ii) सूर्य तुला के 28 अंश 45 कला पर है चक्र में देखा तो कन्या राशि में आया इसका देवता सर्प हुआ ।

(iii) चन्द्र धनु रशि के 0 अंश 33 कला पर है चक्र में देखा तो धनु राशि में आया इसका देवता गणेश हुआ ।

(iv) मंगल कन्या राशि के 17 अंश 43 कला पर है चक्र में देखा तो मेष राशि में आया इसका देवता सर्प हुआ ।

(v) बुध वृश्चिक राशि के 20 अंश 24 कला पर है चक्र में देखा तो कर्क राशि में आया इसका देवता गणेश हुआ ।

(vi) गुरु मकर राशि के 16 अंश 18 कला पर है । चक्र में देखा तो कर्क राशि में आया इसका देवता यम हुआ ।

(vii) शुक्र तुला राशि के 12 अंश 54 कला पर है चक्र में देखा तो मीन में आया इसका देवता अश्विनी कुमार हुआ ।

(viii) शनि वृश्चिक राशि के 6 अंश 5 कला पर है । चक्र में देखा तो मकर में आया इसका

देवता यम हुआ ।

(ix) राहू मेष राशि के 14 अंश 39 कला पर है । चक्र में देखा तो कन्या राशि में आया इसका देवता अश्विनी कुमार हुआ ।

(x) केतु तुला के 14 अंश 39 कला पर है । चक्र में देखा तो मीन राशि में आया इसका देवता अश्विनी कुमार हुआ ।

षोडशांश :-

अजसिंहाश्चितो ज्ञेया नृपांशाः क्रमशः सदा ।

अजविष्णू रहः सूर्यो ह्योजे युग्मे प्रतीपकम् ।।[1]

षोडशांश साधनविधि :- इसमें मेष, सिंह, धनु, राशि से अर्थात इनको नवमांश की तरह आदि राशि मानकर गणना की जाती है । इसका एक भग 1-52-30 अंश कलादि होता है । इसके देवता विषम राशि में ब्रह्मा, विष्णु, हर, सूर्य होते है सम राशि में सूर्य, हर, विष्णु, ब्रह्मा होते हैं । आगे भी इसी प्रकार गणना होती है ।

षोडषांश चक्र

7 शु०
5
रा० 8 के० श०
6 मं०
4 सू०
गु० 9 च०
3 बु०
10
12
2
11
1

---
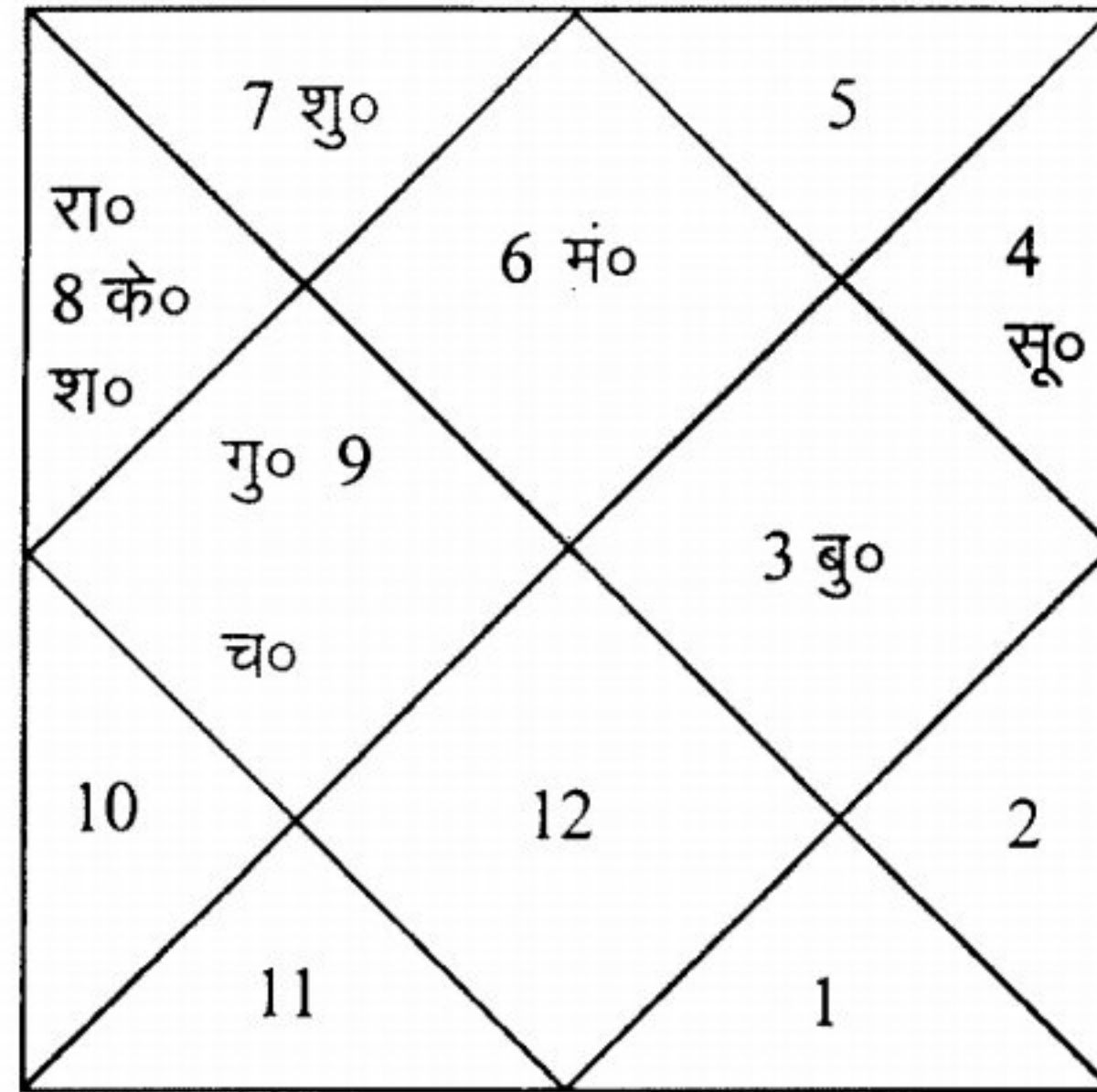
1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 66, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

षोडशांश साधन :

(i) मानक उदाहरण लग्न 4-26-6-39 है । षोडशांश चक्र में देखा तो कन्या राशि आई। कन्या सम राशि है इसका देवता हर हुआ ।

(ii) सूर्य तुला राशि के 28 अंश 45 कला और 35 विकला पर है षोडषांश चक्र में देखा तो कर्क सम राशि में आया इसका देवता ब्रह्मा हुआ ।

(iii) चन्द्र धनु के 0 अंश 33 कला पर है चक्र में देखा तो धनु में आया यह विषम राशि है इसका देवता ब्रह्मा हुआ ।

(iv) मंगल कन्या के 17 अंश 43 कला पर है चक्र में देखा तो कन्या में आया यह सम राशि है । इसका देवता हर हुआ।

(v) बुध वृश्चिक राशि के 20 अंश 24 कला पर है । चक्र में देखा तो मिथुन राशि में आया यह विषम राशि है इसका देवता हर हुआ ।

(vi) गुरु मकर राशि के 16 अंश 18 कला पर है चक्र में देखा तो धनु राशि में आया यह विषम राशि है । इसका देवता ब्रह्मा हुआ ।

(vii) शुक्र तुला के 12 अंश 54 कला पर है चक्र में देखा तो तुला राशि में आया यह विषम राशि है इसका देवता हर हुआ ।

(viii) शनि वृश्चिक राशि के 6 अंश 5 कला पर है । चक्र में देखा तो यह वृश्चिक राशि में आया यह सम राशि है इसका स्वामी ब्रह्मा हुआ ।

(ix) राहू मेष राशि के 14 अंश 39 कला पर है चक्र में देखा तो यह वृश्चिक राशि में आया यह सम राशि है । इसका स्वामी सूर्य हुआ।

(x) केतु तुला के 14 अंश 39 कला पर है, चक्र में देखा तो यह वृश्चिक में आया वृश्चिक सम राशि है इसका देवता सूर्य हुआ ।

विशांश :-

अथ विंशतिभागानामधिपा ब्रह्मणोदिताः ।

क्रियाच्चरे स्थिरे चापान्मृगेन्द्रादि्द्वस्वभावके ।।

काली गौरी जय लक्ष्मीर्विजया विमला सती ।

तारा ज्वालामुखी श्वेता ललिता बगलामुखी ।।

प्रत्यंगिरा शची रौद्री भवानी वरदा जया ।

त्रिपुरा सुमुखी चेति विषमे परिचिंतयेत् ।।

समराशौ दया मेधा छिन्नशीर्षा पिशाचिनी ।

धूमावती च मातंगी बाला भद्राऽरुणाऽनला ।।

पिंगला छुछुका घोरा वाराही वैष्णवी सिता ।

भुवनेशी भैरवा च मङ्गला ह्यपराजिता ।।[1]

विशांश साधन विधि :- विशांश वर्ग में चर (मेष, कर्क, तुला, मकर) राशियों में मेष से गणना होती है । स्थिर राशियों में धनुराशि से और द्विस्वभाव में सिंह से गणना होती है । इसका परिमाण राशियों में 1-30 अंश कला है ।

इसके देवता, विषम राशियों में क्रमशः काली, गौरी, जया, लक्ष्मी, विजया, विमला, सती, त्रिपुरा और सुमुखी है । सम राशियों में – दया, मेधा, छिन्नशीर्षा, पिशाची, धूमावती, मातंगी, बाला, भद्रा, अरूणा, अनला, पिंगला, छुछुका, घोरा, वाराही, वैष्णवी, सिता, भुवनेश्वरी, भैरवी, मंगला और अपराजिता ये क्रमशः देवता हैं ।

विशांश चक्र

3
1 श० रा०
2
12
4 मं०
5
11 गु०
च०
के०
6
8 सू०
10 बु०
7
9 शु०

---
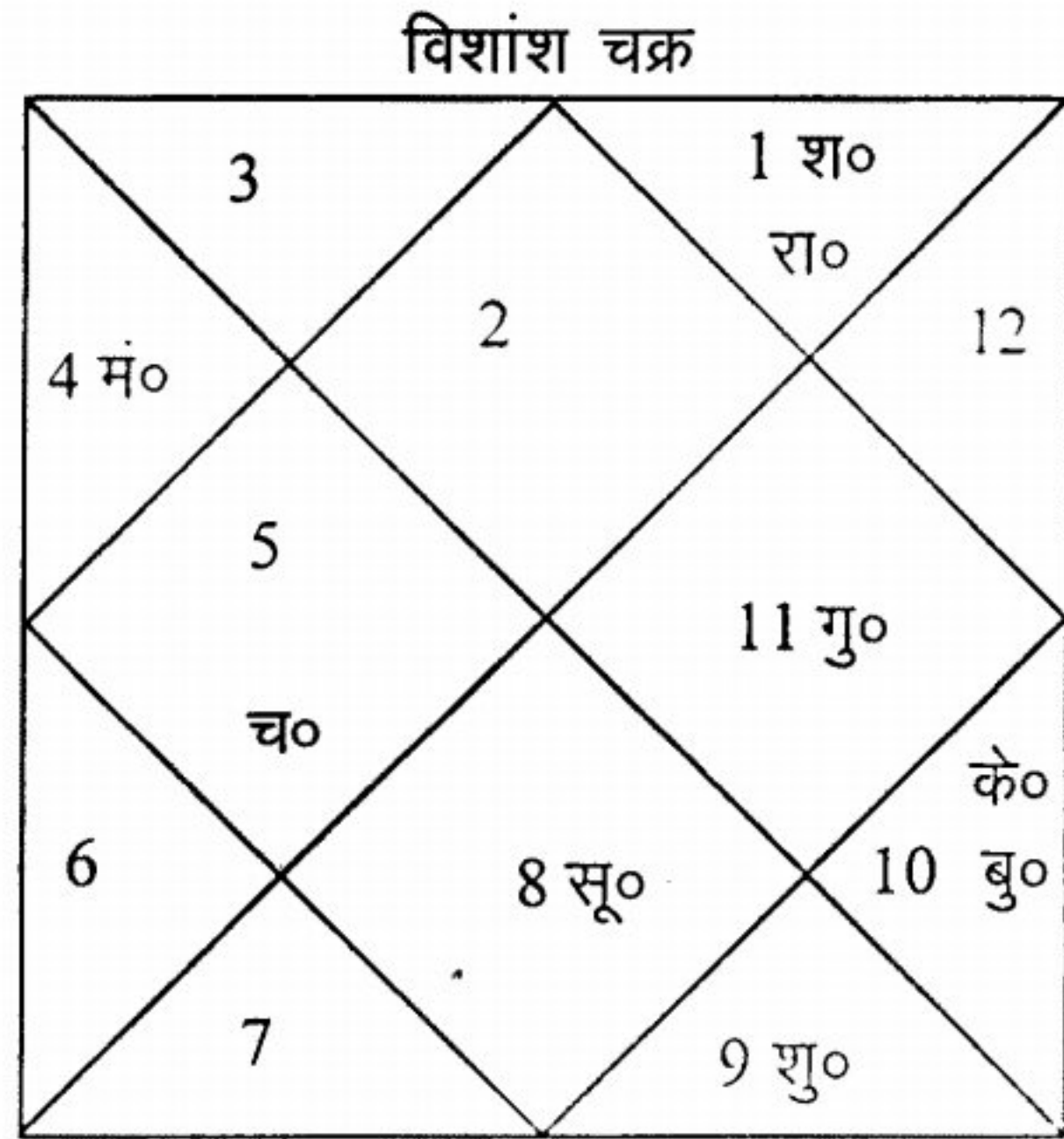
1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 67 से 71, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

विशांश साधन :

(i) मानक उदाहरण लग्न 4-26-6-39 है । विशांश चक्र में सिंह के 26 अंश पर देखा तो वृष राशि सम आई अतः इसकी देवता भैरवी हुई ।

(ii) सूर्य तुला के 28 अंश 45 कला पर है । चक्र में देखा तो वृश्चिक सम राशि में आया अतः इसकी देवता अपराजिता हुई ।

(iii) चन्द्र धनु के 0 अंश 33 कला पर है । चक्र में देखा तो सिंह विषम राशि में आया इसकी देवता काली हुई ।

(iv) मंगल कन्या के 17 अंश 43 कला पर है चक्र में देखा तो कर्क सम राशि में आया । अतः इसकी देवता छुछुका हुई ।

(v) बुध वृश्चिक के 20 अंश 24 कला पर है । चक्र में देखा तो मकर सम राशि में आया अतः इसकी देवता वाराही हुई ।

(vi) गुरु मकर राशि के 16 अंश 18 कला पर है । चक्र में देखा तो कुम्भ विषम राशि में आया अतः इसकी देवता ललिता हुई।

(vii) शुक्र तुला राशि के 12 अंश 54 कला पर है चक्र में देखा तो धुन विषम राशि में आया अतः इसकी देवता ज्वालामुखी हुई ।

(viii) शनि वृश्चिक राशि के 6 अंश 5 कला पर है चक्र में देखा तो मकर सम राशि में आया इसकी देवता अनला हुई।

(ix) राहु मेष राशि के 14 अंश 39 कला पर है । चक्र में देखा तो मेष विषम राशि में आया इसकी देवता काली हुई ।

(x) केतु तुला राशि में 14 अंश 39 कला पर है । चक्र में देखा तो मकर सम राशि में आया इसकी देवता अनला हुई ।

चतुर्विंशांश :-

सिद्धांशकानामधिपाः सिंहादोजभगे गृहे ।

कर्काद्युग्मभगे खेट स्कंदः पर्शुधरोऽनलः ।।

विश्वकर्मा भगो मित्रो मयोंऽतक वृषध्वजाः ।

गोविंदो मदनो भीमः सिंहादौ विषमे क्रमात् ।

कर्कादौ समभे भीद्विलोमेन विचिंतयेत् ।।[1]

चतुर्विंशांश चक्र साधन विधि :- चतुर्विंशांश वर्ग में विषम राशियों में सिंह से तथा सम राशियों में कर्क राशि से गणन करनी होती है । इसका एक भाग 1-15 अंश कला का होता है ।

विषम राशियों में – स्कन्द, पशुधर, अनल, विश्वकर्मा, भग, मित्र, मय, अन्तक, वृषध्वज, गोविन्द, मदन, भीम ये देवता होते हैं । सम राशियों में इसके विपरीत कर्म से होते हैं ।

चतुर्विंशांश चक्र

2
12
3 शु०
1
11
रा० 4 के० सू०
10
चं० 5 गु०
7
9
6 मं०
श० 8 बु०

---
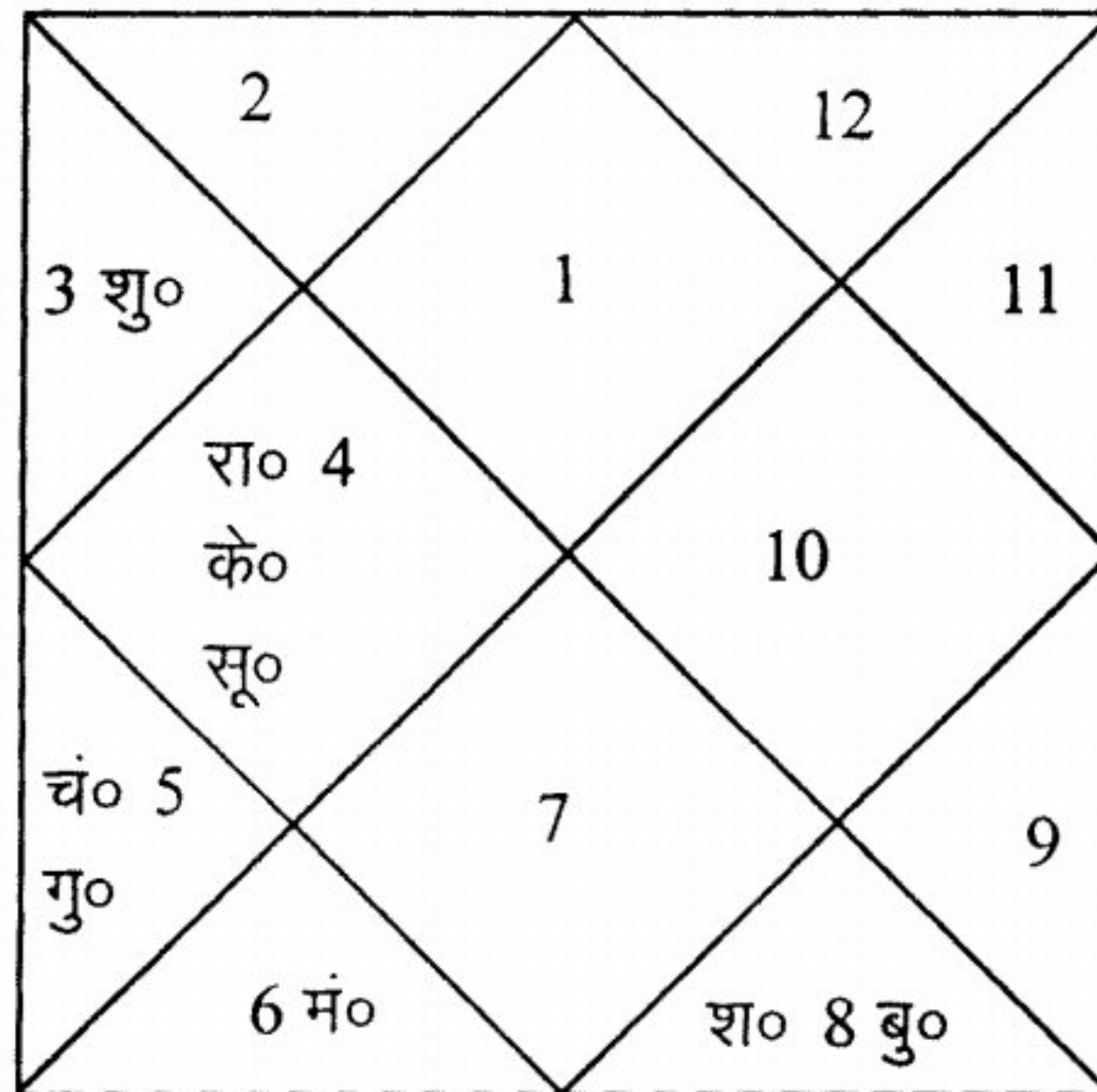
1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 72-73, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

चतुर्विंशांश चक्र साधन :

(i) मानक उदाहरण लग्न 4-26-6-39 है । चतुर्विंशांश चक्र में देखा तो मेष विषम राशि आई अतः इसका देवता वृषध्वज हुआ ।

(ii) सूर्य तुला के 28 अंश 45 कला 35 विकला पर है चक्र में देखा तो कर्क सम राशि में आया अतः इसका देवता स्कंद हुआ ।

(iii) चन्द्र धनु के 0 अंश 33 कला पर है । चक्र में देखा तो सिंह विषम राशि में आया इसका देवता स्कंद हुआ ।

(iv) मंगल कन्या के 17 अंश 43 कला पर चक्र में देखा तो कन्या सम राशि में आया इसका देवता गोविंद हुआ ।

(v) बुध वृश्चिक राशि के 20 अंश 24 कला पर है, चक्र में देखा तो सिंह विषम राशि में आया इसका देवता अंतक हुआ।

(vi) गुरु मकर राशि के 16 अंश 18 कला पर है । चक्र में देखा तो सिंह विषम राशि में आया इसका देवता मदन हुआ ।

(vii) शुक्र तुला राशि के 12 अंश 54 कला पर है । चक्र में देखा तो मिथुन विषम राशि में आया इसका देवता मदन हुआ ।

(viii) शनि वृश्चिक राशि के 6 अंश 5 कला पर है चक्र में देखा तो वृश्चिक सम राशि में आया इसका देवता अन्तक हुआ ।

(ix) राहू मेष राशि के 14 अंश 39 कला पर है चक्र में देखा तो कर्क सम राशि में आया इसका देवता स्कंद हुआ।

(x) केतु तुला के 14 अंश 39 कला पर है चक्र में देखा तो कर्क सम राशि में आया इसका देवता स्कंद हुआ ।

भांश :-

नक्षत्रेशाः क्रमाद्दस्रयमवह्निपितामहाः ।

चंद्रेशादितिजीवा हि पितरो भगसंज्ञिताः ।।

अर्यमार्कस्त्वष्टमरुच्छक्राग्निमित्रवासवासवाः ।

निर्ऋत्युदक विश्वेजगो बिन्दो वसवोंबुपः ।।

ततोऽजपादहिर्बुध्न्यः पूषाचैव प्रकीर्तितः ।

नक्षत्रेशास्तु भांशेशा भांश संख्यस्वभात् क्रमात् ।।[1]

भांश चक्र (सप्तविंशांश) साधन विधि : सप्तविंशांश वर्ग 30 अंश के 27 भाग होते हैं । एक भाग 1-6-40 अंश कला विकलादि का होता है, राशियों के आदि गण्य क्रमशः मेष, कर्क, मकर ये तीन बार आवृत्ति रुप में आते हैं और नक्षत्रों के देवता ही इनके देवता होते हैं । यथा :– अश्विनीकुमार, यम, वह्नि, ब्रह्मा, चन्द्रमा, ईश, अदिति, जीव, अहि, पितर, भग, अर्यमा, सूर्य, त्वष्टा, मरुत, शक्राग्नि, मित्र, वासव, राक्षस, वरुण, विश्वेदेव, गोविन्द, वसु, वरुण, अजपात, अहिर्बुध्न्य, पूषा क्रमशः ये देवता हैं ।

भांश चक्र (सप्तविंशांश) साधन :-

(i) मानक उदाहरण में लग्न 4-26-6-39 है भांश चक्र में देखा तो मीन राशि आई इसका देवता वरुण हुआ ।

(ii) सूर्य 6-28-45-35 है भांश चक्र में देखा तो वृश्चिक राशि में आया इसका देवता अहिर्बुध्न्य हुआ ।

भांश चक्र

12
1 चं०
2 रा०
श० 3
4 बु०
5
शु० 6 गु०
7 मं०
सू० 8 के०
9
10
11

---
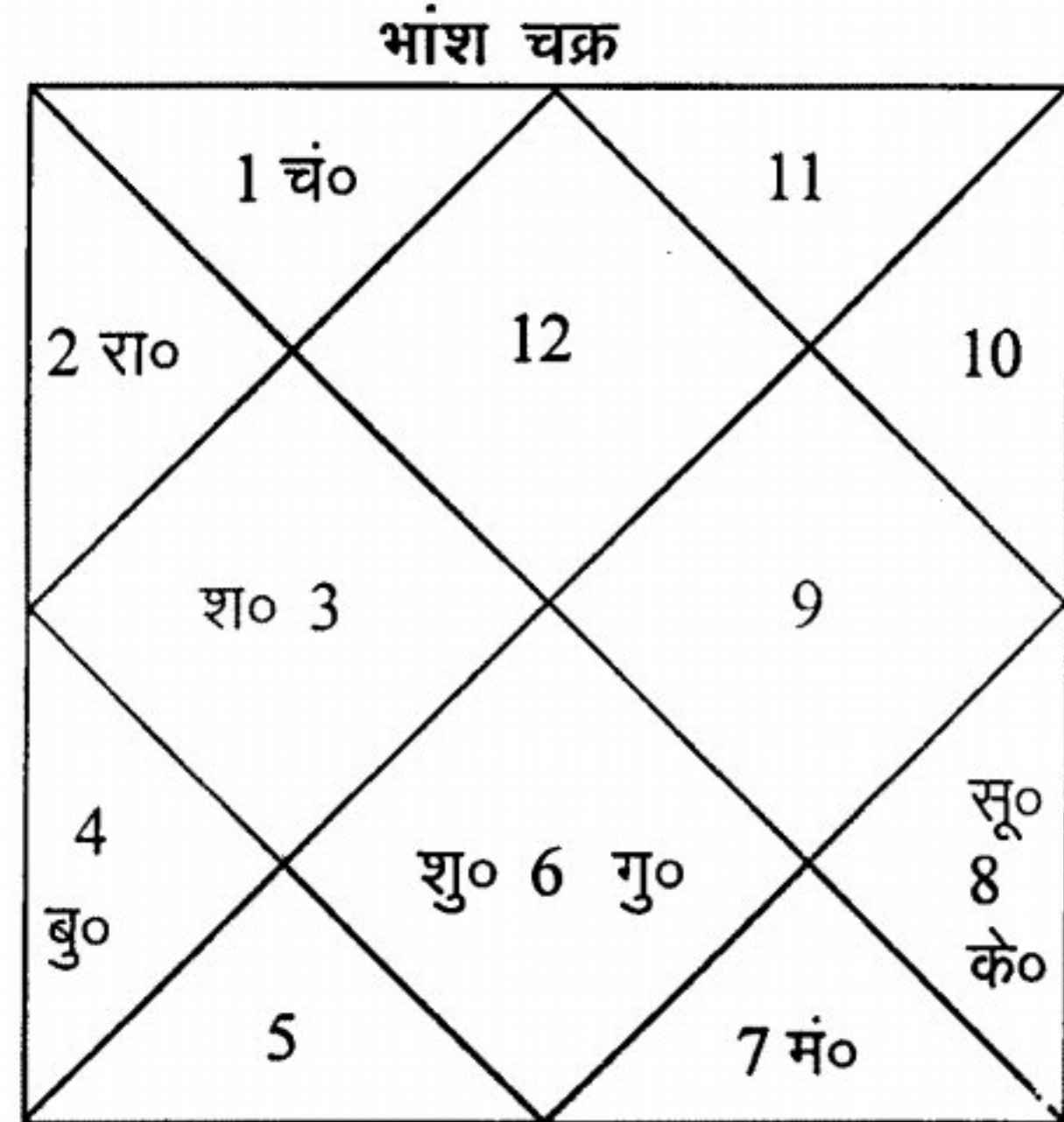
1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 74 से 76, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

(iii) चन्द्र धनु के 0 अंश 33 कला पर है चक्र में देखा तो मेष राशि में आया इसका देवता अश्विनी कुमार हुआ ।

(iv) मंगल कन्या के 17 अंश 43 कला पर है । चक्र में देखा तो तुला में आया इसका स्वामी शक्राग्नि हुआ ।

(v) बुध वृश्चिक के 20 अंश 24 कला पर है चक्र में देखा तो कर्क राशि में आया इसका देवता राक्षस हुआ ।

(vi) गुरु मकर राशि के 16 अंश 18 कला पर है चक्र में देखा तो कन्या में आया इसका देवता मरुत हुआ ।

(vii) शुक्र तुलः के 12 अंश 54 कला पर है चक्र में देखा तो कन्या में आया इसका देवता अर्यमा हुआ ।

(viii) शनि वृश्चिक राशि के 6 अंश 4 कला पर है चक्र में देखा तो मिथुन में आया इसका देवता ईश हुआ ।

(ix) राहू मेष राशि के 14 अंश 39 कला पर है चक्र में देखा तो वृष राशि में आया इसका देवता त्वष्टा हुआ ।

(x) केतु तुला के 14 अंश 39 कला पर है चक्र में देखा तो वृश्चिक राशि में आया इसका देवता त्वष्टा हुआ ।

त्रिशांश :- **त्रिंशांशेशाश्च विषमे कुजार्कीज्यज्ञभार्गवाः ।**
पंचपंचाष्टसप्ताक्षभागा व्यत्ययतः समे ।।
वह्निः समीरशक्रौ च धनदो जलदस्तथा ।
विषमेषु क्रमाज्ज्ञेयाः समराशौ विपर्ययम् ।।[1]

त्रिशांश वर्ग साधन विधि :- त्रिशांश वर्ग में 5 भाग होते हैं तथा 5, 5, 8, 7, 5 अंशो के है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 77-78, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

भागपति ग्रह क्रमशः विषम राशियों में मं०, श०, गु०, बु०, शु० है । सम राशियों में शु०, बु०, गु०, श०, मं० है । देवता क्रमशः विषम राशियों में वह्नि, वायु, शक्र, धनद, जलद हैं और सम राशियों में जलद, धनद, शक्र, वायु, वह्नि होते हैं । इस वर्ग में कर्क तथा सिंह राशि का त्रिशांश नहीं होता ।

त्रिशांश वर्ग साधन :

(i) मानक उदाहरण लग्न 4-26-6-39 है त्रिशांश चक्र में देखा तो तुला विषम राशि आई इसका देवता जलद हुआ ।

त्रिशांश चक्र

शु० 8 रा० के०
6 श०
9
7 सू०
5
बु० 10
4
11
1 चं०
3
मं० 12 गु०
2
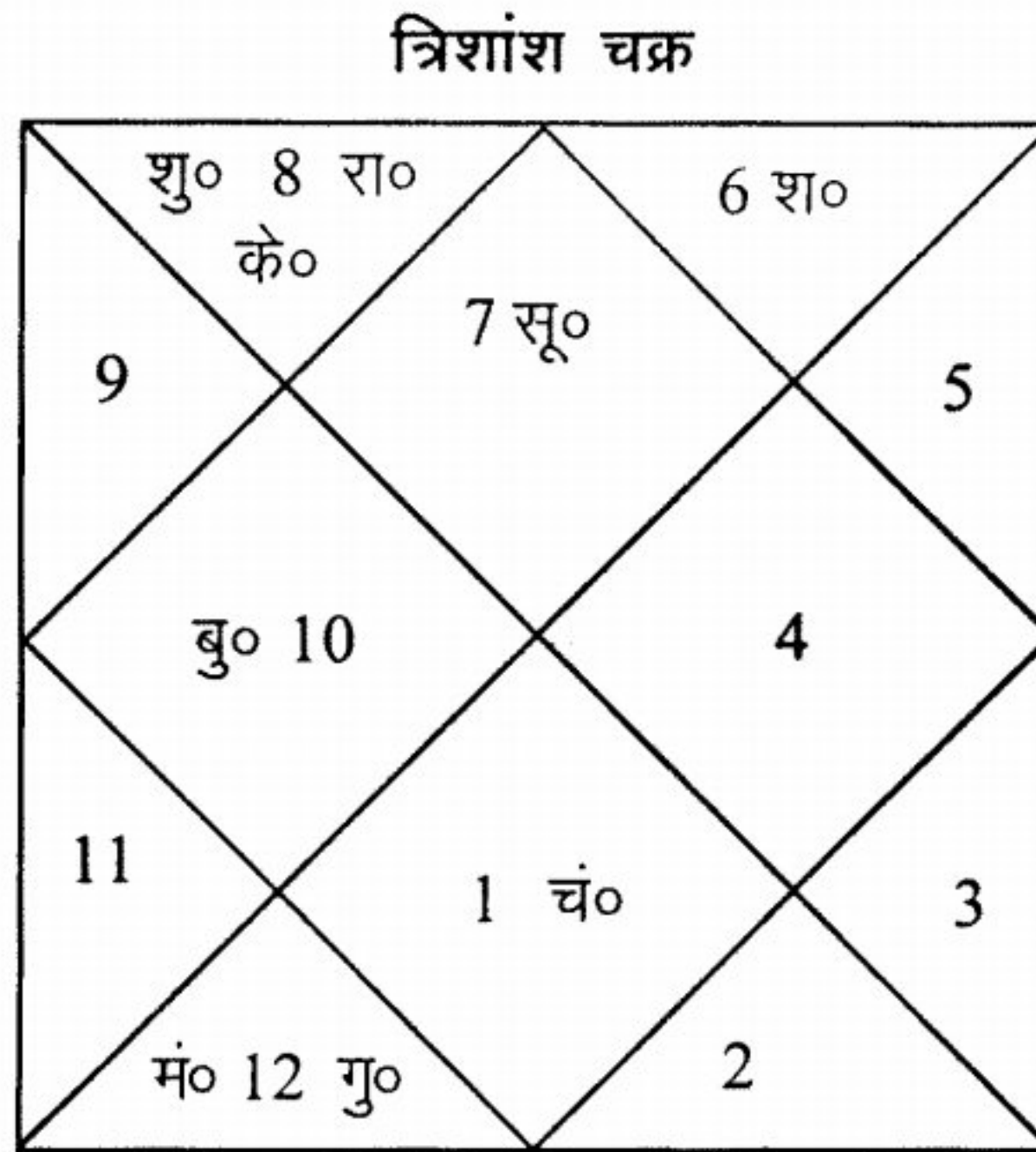
(ii) सूर्य तुला विषम राशि के 28 अंश 45 कला पर है विषम चक्र में देखा तो तुला में आया इसका स्वामी जलद हुआ ।

(iii) चन्द्र विषम राशि धनु के 0 अंश 33 कला पर है विषम चक्र में देखा तो मेष राशि में आया इसका स्वामी वह्नि हुआ ।

(iv) मंगल कन्या सम राशि के 17 अंश 43 कला पर है सम चक्र में देखा तो मीन में आया इसका स्वामी शक्र हुआ ।

(v) बुध वृश्चिक सम राशि के 20 अंश 24 कला पर है सम चक्र में देखा तो मकर में आया

इसका स्वामी वायु हुआ ।

(vi) गुरु मकर सम राशि के 16 अंश 18 कला पर है सम चक्र में देखा तो मीन में आया इसका स्वामी शक्र हुआ ।

(vii) शुक्र तुला विषम राशि के 12 अंश 54 कला पर है विषम चक्र में देखा तो कन्या में आया इसका स्वामी जलद हुआ ।

(viii) शनि वृश्चिक राशि के 6 अंश 5 कला पर है । सम चक्र में देखा कन्या में आया इसका स्वामी धनद हुआ ।

(ix) राहू मेष विषम के 14 अंश 39 कला पर है विषम चक्र में देखा तो धनु राशि में आया इसका स्वामी शक्र हुआ ।

(x) केतु तुला विषम राशि के 14 अंश 39 कला पर है विषम चक्र में देखा तो धनु रशि में आया इसका स्वामी भी शक्र हुआ ।

खवेदांश :-

चत्वारिंशतिभागानामधिपा विषमे क्रियात् ।

विष्णुश्चंद्रो मरीचिश्च त्वष्टा धाता शिवो रविः ।।

यमो यक्षेशगंधर्वः कालो वरुण एव च ।

समभे तुलतो ज्ञेयाः स्वस्वाधिपसमन्विता : ।।[1]

खवेदांश साधन विधि :- इस वर्ग के 40 भाग होते हैं । प्रत्येक भाग 0 अंश 45 कला का होता है । विषम राशियों में मेष से तथा सम राशियों में तुला से गणना होती है ।

देवता :– विष्णु, चन्द्र, मरीचि, त्वष्टा, धाता, शिव, रवि, यम, यक्षेश, गन्धर्व, काल, वरुण ये बारह देवता होते है। इन्हीं देवताओं की तीन बार आवृत्ति होती है चौथी बार विष्णु, चन्द्रमा, मरीचि और त्वष्टा की आवृत्ति करने पर 40 भाग पूर्ण हो जाते हैं ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 79-80, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

खवेदांश साधन :

(i) मानक उदाहरण लग्न : 4-26-6-39 है, खवेदांश चक्र में देखने पर कुम्भ राशि आई इसका देवता काल हुआ ।

खवेदांश चक्र

12
10 बु०
1 चं०
11
9
के० 8 रा०
2
सू० 3 श०
5
7
गु० 4
शु० 6 मं०
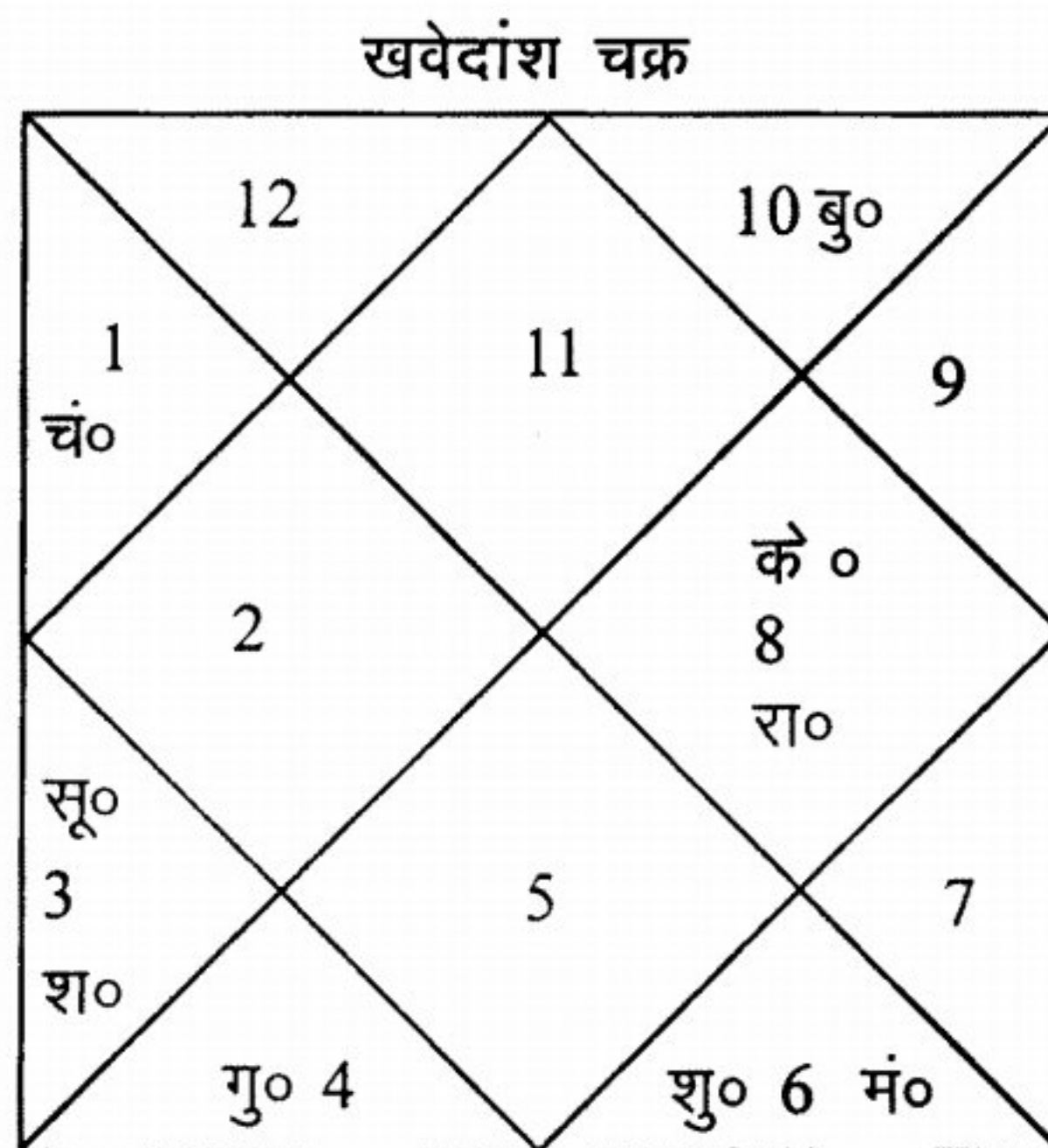
(ii) सूर्य तुला के 28 अंश 45 कला पर है, चक्र में देखा तो मिथुन में आया । इसका देवता मरीचि हुआ ।

(iii) चन्द्र धनु के 0 अंश 33 कला पर है । चक्र में देखा तो मेष राशि में आया इसका देवता विष्णु हुआ ।

(iv) मंगल कन्या के 17 अंश 43 कला पर है । चक्र में देखा तो कन्या में आया इसका देवता वरुण हुआ ।

(v) बुध वृश्चिक राशि के 20 अंश 24 कला पर है । चक्र में देखा तो मकर में आया इसका देवता त्वष्टा हुआ ।

(vi) गुरु मकर के 16 अंश 18 कला पर है। चक्र में देखा तो कन्या में आया इसका देवता शिव हुआ ।

(vii) शुक्र तुला के 12 अंश 54 कला पर है, चक्र में कन्या में आया, इसका देवता शिव हुआ।

(viii) शनि वृश्चिक के 6 अंश 5 कला पर है। चक्र में देखा तो मिथुन में आया इसका देवता यक्षेश हुआ ।

(ix) राहू मेष के 14 अंश 39 कला पर है । चक्र में देखा तो वृश्चिक में आया इसका देवता यम हुआ ।

(x) केतु तुला के 14 अंश 39 कला पर है। चक्र में देखा तो वृश्चिक में ही आया इसका देवता यम हुआ ।

अक्षवेदांश :-

तथाक्षवेदभागानामधिपाश्चरभे क्रियात् ।

स्थिरेसिंहाद्द्विस्वभावे चापाद्ब्रह्मेशकेशवाः ।

ईशाच्युतसुरज्येष्ठविष्णुकेशाश्चरादिषु ।।[1]

अक्षवेदांश वर्ग साधन विधि :- इसमें एक राशि 45 भाग है । एक भाग 40 कला का होता है । इसमें चर राशियों में मेष से तथा स्थिर राशियों से सिंह से एवं द्विस्वभाव राशियों में धनु राशि से गणना होती है । देवता – चर राशि में ब्रह्मा, शंकर, विष्णु, क्रम से तथा स्थिर राशियों में शंकर, विष्णु, ब्रह्मा क्रम से तथा द्विस्वभाव राशियों से विष्णु, ब्रह्मा, शंकर क्रम से बार–बार आवृत्ति करने से गणना पूर्ण होती है ।

चर राशि – मेष, कर्क, तुला, मकर

स्थिर राशि – वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ

द्विस्वभाव – मिथुन, कन्या, धनु, मीन

अक्षवेदांश वर्ग साधन :

(i) मानक उदाहरण लग्न 4-26-6-39 है । अक्षवेदांश चक्र में देखा तो वृश्चिक स्थिर राशि है । इसका देवता शंकर हुआ ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 81, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

अक्षवेदांश चक्र

9 चं०
7 सू०
शo 10 केo
8 शु०
6
मं० 11
5 बु०
12
2 श०
4
1 गु०
3
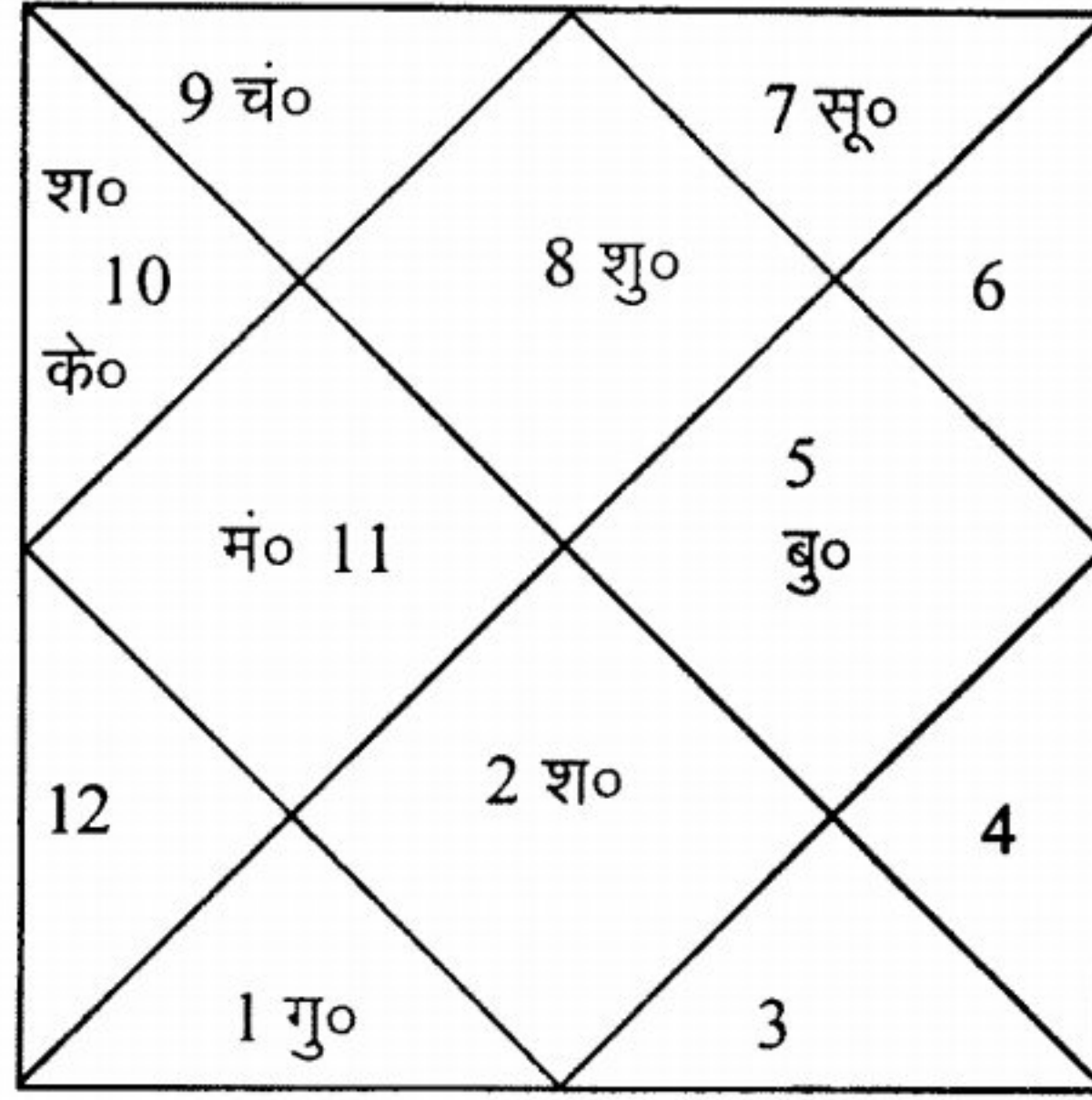
(ii) सूर्य तुला के 28 अंश 45 कला पर है । चक्र में देखा तो तुला चर राशि में आया, इसका देवता ब्रह्मा हुआ ।

(iii) चन्द्र धनु के 0 अंश 33 कला पर है । चक्र में देखा तो धनु द्विस्वभाव राशि में आया, इसका देवता विष्णु हुआ ।

(iv) मंगल कन्या के 17 अंश 43 कला पर है । चक्र में देखा तो कुम्भ स्थिर राशि में आया, इसका देवता शंकर हुआ ।

(v) बुध वृश्चिक के 20 अंश 24 कला पर है । चक्र में देखा तो सिंह स्थिर राशि में आया, इसका देवता शंकर हुआ ।

(vi) गुरु मकर के 16 अंश 18 कला पर है । चक्र में देखा तो मेष चर राशि में आया, इसका देवता ब्रह्मा हुआ।

(vii) शुक्र तुला के 12 अंश 54 कला 2 विकला पर है । चक्र में देखा तो वृश्चिक स्थिर राशि में आया, इसका देवता शंकर हुआ ।

(viii) शनि वृश्चिक के 6 अंश 5 कला पर है । चक्र में देखा तो वृष स्थिर राशि में आया, इसका देवता शंकर हुआ ।

(ix) राहू मेष के 14 अंश 39 कला पर है। चक्र में देखा तो मकर चर राशि में आया, इसका

देवता ब्रह्मा हुआ ।

(x) केतु तुला के 14 अंश 39 कला पर है । चक्र में देखा तो मकर चर शनि में आया, इसका देवता ब्रह्मा हुआ।

षष्ठ्यंश :-

घोरश्चं राक्षसो देवः कुबेरो यक्षकिन्नरौ ।

भ्रष्टः कुलघ्नो गरलो वह्निर्माया पुरीषकः ।।

अपांपतिर्मरुत्वांश्च कालः सर्पामृतेन्दुकाः ।

मृदुः कोमलहेरंबब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।।

देवाद्रौ कलिनाशश्च क्षितीशकमलाकरौ ।

गुलिको मृत्युकालश्च दावाग्निर्घोरसंज्ञकः ।।

यमश्च कण्टकसुधाऽमृतौ पूर्णनिशाकरः ।

विषदग्धकुलांतश्च मुख्यो वंशक्षयस्तथा ।।

उत्पातकालसौम्याख्याः कोमलः शीतलाभिधः ।

करालदंष्ट्रचंद्रास्यौ प्रवीणः कालपावकः ।।

दण्डभृन्निर्मलः सौम्यः क्रूरोऽतिशीतलोमृतः ।

पयोधिं भ्रमणाख्यौ च चंद्ररेखा स्वयुग्मपौ ।।

समेभे व्यत्ययाज्ज्ञेया षष्ट्यंशाश्च प्रकीर्तिताः ।

षष्ट्यंशस्वामिनस्त्वोजे तदीशाव्द्यत्ययः समे ।।

शुभषष्ट्यंशसंयुक्ता ग्रहाः शुभफलप्रदाः ।

क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्ता नाशयन्ति खचारिणः ।।

राशीन् विहाय खेटस्य द्विघ्नमंशाद्यमर्कहृत् ।

शेषं सैकं च तद्राशिनाथषष्ट्यंशपाः स्मृताः ।।[1]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 82 से 90, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

षष्ठ्यंश वर्ग :- इसमें पहले देवता कहे गये हैं । ये देवता विषम राशियों में लिखित क्रम तथा सम राशियों में विपरीत कर्म होता है । ये इस प्रकार हैं :— घोर, राक्षस, देव, कुबेर, यक्ष, किन्नर, भ्रष्ट, कुलघ्न, गरल, अग्नि, माया, पुरीष, अपापति, मरुतवत्, काल, अहिभाग, अमृत, चन्द्र, मृदु, कोमल, हेरम्ब, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, देव, आर्द्र, कलिनाश, क्षितीश्वर, कमलाकर, गुलिक, मृत्यु, काल, दावाग्नि, सुधा, अमृत, पूर्णचन्द्र, विषप्रदग्ध, कुलनाश, वंशक्षय, उत्पात, कालरुप, सोम्य, कोमल, शीतल, दृंष्ट्रा कराल, इन्दुमुख, प्रवीण, कालग्नि, दण्डायुध, निर्मल, सोम्य, क्रूर, अतिशीतल, सुधांशु, पयोधीश, भ्रमण, इन्दु रेखा ये 60 देवता होते हैं ।

षष्ट्यंश वर्ग साधन विधि :

जिस ग्रह या लग्न में षष्ठयंश की राशि देखना हो उसके स्पष्ट में से राशि अलग रखकर अंश, कला, विकला को द्विगुणित कर कला को 30 में कम कर अंश में जोड़कर और अंश को 12 से भाग देकर लब्धि त्यागकर शेष संख्या में एक जोड़कर इसके पश्चात् लग्न या ग्रह जिस राशि में हो उसी राशि से गिन कर अंक प्राप्त करें वही उस लग्न राशि का षष्टयांश होगा ।

षष्ट्यंश वर्ग साधन :

(क) इसमें 30 कला का एक षष्ट्यंश होता है । जैसे $30° \times 60 = 1800 \div 30 = 30$ कला लेकिन ग्रन्थ में स्पष्ट चक्र दिया है । स्पष्ट चक्र सम विषम राशियों के देवता भी दिए हैं । उसी के अनुसार कार्य करेंगे ।

(i) मानक उदाहरण में लग्न 4-26-6-39 है । चक्र में 26 अंश 6 कला पर सिंह राशि के नीचे देखा तो तुला विषम राशि का षष्ट्यंश प्राप्त हुआ । इसका देवता निर्मल हुआ। अतः तुला राशि की कुण्डली बनाएंगे ।

षष्टांश चक्र

8
6
चं०
9
के०
शु० 7
5
4
10
बु०
सू०
11
1
3
रा०
मं०
12
श० 2 गु०
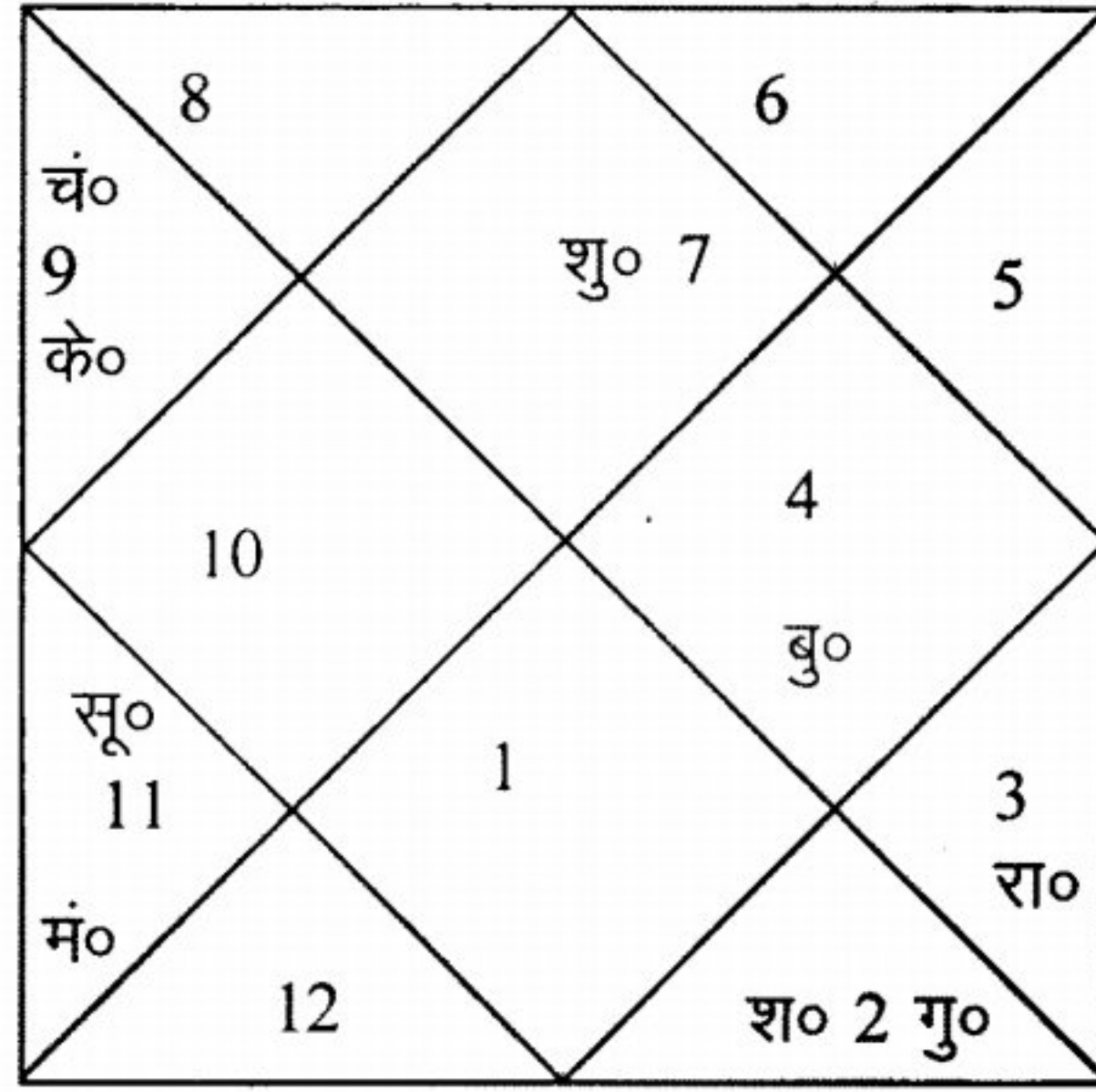
(ii) सूर्य तुला के 28 अंश 45 कला पर है, चक्र में देखा तो कुम्भ सम राशि में आया, इसका देवता देव हुआ ।

(iii) चन्द्र, धनु के 0 अंश 33 कला पर है । चक्र में देखा तो धनु विषम राशि में आया, इसका देवता राक्षस हुआ ।

(iv) मंगल कन्या के 17 अंश 43 कला पर है । चक्र में देखा तो कुंभ सम राशि में आया, इसका देवता देव हुआ ।

(v) बुध वृश्चिक राशि के 20 अंश 24 कला पर है । चक्र में देखा तो कर्क सम राशि में आया, इसका देवता कोमल हुआ ।

(vi) गुरु मकर राशि के 16 अंश 18 कला पर है । चक्र में देखा तो वृष सम राशि में आया, इसका देवता क्षितिश्वर हुआ ।

(vii) शुक्र तुला के 12 अंश 54 कला पर है । चक्र में देखा तो तुला विषम राशि में आया, इसका देवता आर्द्रा हुआ ।

(viii) शनि वृश्चिक के 6 अंश 5 कला पर है । चक्र में देखा तो मिथुन विषम राशि में आया, इसका देवता दंष्ट्राकाराल हुआ।

(ix) राहू मेष के 14 अंश 39 कला पर है । चक्र में देखा तो मेष विषम में आया, इसका देवता गुलिक हुआ ।

(x) केतु तुला के 14 अंश 39 कला पर है । चक्र में देखा तो धनु विषम राशि में आया, इसका देवता गुलिक हुआ ।

वर्ग भेद :-

वर्गभेदानहं वक्ष्ये मैत्रेय त्वं विधारय ।

षड्वर्गाः सप्तवर्गाश्च दिग्वर्गा नृपवर्गकाः ।।

भवति वर्गसंयोगे षड्वर्गे किंशुकादयः ।

द्वाभ्यां किंशुकनामा च त्रिभिर्व्यंजनमुच्यते ।।

चतुर्भिश्चमाराख्यं च छत्रं पंचभिरेव च ।

षड्भिः कुण्डलयोगः स्यान्मुकुटाख्यं च सप्तभिः ।।

सप्तवर्गेऽथ दिग्वर्गे परिजाता दिसंज्ञकाः ।

पारिजातं भवेद्द्वाभ्यामुत्तमं त्रिभिरुच्यते ।।

चतुर्भिर्गोपुराख्यं स्याच्छरैः सिंहासनं तथा ।

पारावतं भवेत्षड्भिर्देवलोकं च सप्तभिः ।।

वसुभिर्ब्रह्मलाकाख्यं नवभिः शक्रवाहनम् ।

दिग्भिः श्रीधामयोगं स्यादथषेडशवर्गके ।

भेदकं च भवेद्द्वाभ्यां त्रिभिः स्यात्कुसुमाख्यकम् ।।

चतुर्भिर्नागपुष्पं स्यात्पंचभिः कंदुकाह्वयम् ।

केरलाख्यं भवेत्षड्भिः सप्तभिः कल्पवृक्षकम् ।

अष्टभिश्चंदनवनं नवभिः पूर्णचंद्रकम् ।।

दिग्भिरुच्चैः श्रवा नाम रुद्रैर्धन्वन्तरिर्भवेत् ।

सूर्यकान्तं भ्वेत्सूर्यैविश्वैः स्याद्विदु माख्यकम् ।।

शक्रसिंहासनं शक्रैर्गोलोकंतिथिभिर्भवेत् ।

भूपैः श्रीवल्लभख्यं स्याद्वर्गा भेदैरुदाहृताः ।।

स्वोच्चमूलत्रिकोणस्वभवनाधिपतिं तथा ।

स्वारूढात्केंद्रनाथानां वर्गा ग्राह्यः सुधीमताः ।।

अस्तङ्गता ग्रहजिता नीचगा दुर्बलस्तथा ।

शयनादि वयादुरथा उत्पन्ना योगनाशकाः ।।[1]

वर्ग भेद :- इसमें प्राय चार समूह में इनका विचार किया जाता है । 1. षड्वर्ग, 2. सप्तवर्ग, 3. दशवर्ग, 4. षोडशवर्ग ।

(i) इनसे षड्वर्ग तथा सप्तवर्ग की एक जैसी संज्ञाएं होती हैं तथा दशवर्ग और षोडशवर्ग में भिन्न–भिन्न संज्ञाएं होती हैं । इनमें पहले दो की संज्ञाएं इस प्रकार हैं :– दो वर्गों में किंशुक । तीन से व्यंजन । चार में से चामर । पाँच से छत्र । छः से कुण्डल और

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 91 से 102, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

सात से मुकुट नाम होता है ।

(ii) दश वर्ग की संज्ञाएं इस प्रकार हैं :– दो से पारिजात । तीन से अत्तम । चार से गोपुर। पाँच से सिंहासन । छः से पारावत । सात से देवलोक । आठ से ब्रह्मलोक । नौ से शक्रवाहन। दश से श्री धाम नाम होता है ।

(iii) षोडशवर्ग से संज्ञाएं इस प्रकार है :– दो से भेदक। तीन से कुसुम। चार से नागपुष्प। पाँच से कंदुक । छः से केरल । सात से कल्पवृक्ष। आठ से चंदनवन। नौ से पूर्णचन्द्र। दश से उच्चैःश्रवा। ग्यारह से धन्वन्तरी। बारह से सूर्यकान्त। तेरह से विद्रुम। चौदह से शक्रसिंहासन। पन्द्रह से धन्वन्तरि । सोलह से श्री बल्लभ नाम की समूहआलम्बन संज्ञाएँ होती हैं ।

इनमें जो ग्रह स्वग्रही, उच्च राशि वा मूल त्रिकोण में होंगे हैं । उनको ही ग्रहण किया जाता है तथा वे ही ग्रह शुभ फलकारक और बलवान होते हैं । इसके विपरीत जो ग्रह अस्त, नीच तथा शत्रु राशिगत होते हैं वे ग्रह अनिष्ट तथा वर्ग के योगनाशक होते हैं ।

मानक उदाहरण में सभी ग्रहों के वर्ग तथा संज्ञांए नियमानुसार ज्ञात करेंगे ।

षड्वर्ग :- 1. गृह, 2. होरा, 3. द्रेष्काण, 4. नवमांश, 5. द्वादशांश, 6. त्रिशांश, इन कुण्डलियों में ग्रहों की संज्ञा ज्ञात करने से षडवर्ग होता हैं ।

सप्तवर्ग :- 1. गृह, 2. होरा, 3. द्रेष्काण, 4. सप्तमाशं, 5. नवमांश, 6. द्वादशांश, 7. त्रिंशांश ये सप्तवर्ग हैं ।

दशवर्ग :- 1. गृह, 2. होरा, 3. द्रेष्काण, 4. सप्तमांश, 5. नवमांश, 6. दशमांश, 7. द्वादशांश, 8. षोडशांश, 9. त्रिशांश, 10. षष्ठयंश । ये दश वर्ग संज्ञा के लिए ग्रहण किए जाते हैं ।

षोडश वर्ग :- 1. गृह, 2. होरा, 3. द्रेष्काण, 4. चतुर्थांश, 5. सप्तमांश, 6. नवमांश, 7. दशमांश, 8. द्वादशांश, 9. षोडशांश, 10. विशांश, 11. चतुर्विशां, 12. भांश, 13. त्रिशांश, 14. खवेदांश, 15. अक्षवेदांश, 16. षष्ठयंश आदि वर्ग ग्रहण किये जाते हैं ।

वर्ग भेद संज्ञा सहित

	षडशवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडषवर्ग
सू०	0- ____	1- ____	1- ____	1- ____
चं०	0- ____	0- ____	0- ____	0- ____
मं०	2-किशुंक	2-किशुंक	2-पारिजात	2-भेदक
बु०	0- ____	1- ____	2-पारिजात	2-भेदक
गु०	2-किंशुक	2-किंशुक	3-उत्तम	5-कन्दुक
शु०	2-किंशुक	2-किंशुक	3-उत्तम	3-कुसुम
श०	1- ____	1- ____	1- ____	1- ____

विश्वा बल :-

अथातः संप्रवक्ष्यामि वर्गं विश्वाबलं द्विज ।

यस्य विज्ञानमात्रेण विपाकं दृष्टिगोचरम् ।।

गृहविश्वाबलं वीक्ष्य सूर्यादीनां खचारिणाम् ।

स्वगृहोच्चबलं पूर्णं शून्यं तत्सपतमस्थिते ।।

ग्रहस्थितिवशाज्ज्ञेयं द्विराश्यधिपतिस्तथा ।

मध्ये तु पाततो ज्ञेया ओजयुग्मर्क्षभेदतः ।।

सूर्यहोराफलं दद्युर्जीवार्कवसुधात्मजाः ।

चंद्रास्फर्जिदर्कपुत्राश्चंद्रहोराफलप्रदाः ।।

फलद्वयं बुधो दद्यात्समे चांद्रतदन्यके ।

रवेः फलं स्वहोरादौ फलहीनं विरामके ।।

मध्येऽनुपातात्सर्वत्र द्रेष्काणि विचिंतयेत् ।

गृहवत्तुर्यभागेऽपि नवांशादावपि स्वयम् ।।

सूर्यः कुजफलं धत्ते भार्गवस्य निशापतिः ।

त्रिंशांश के विचिंत्यैवमत्रापि गृहवत्स्मृतः ।।

लग्नहेरादृकाणंकभागसूर्यांयशका इति ।

सर्वे षड्वर्गा विश्वकाः क्रमात् ।।

रसनेत्राब्धिपंचाश्विभूमयः सप्तवर्गके ।

स्थूलं फलं च संस्थाप्य तत्सूक्ष्मं च ततस्ततः ।।

ससप्तमांशकं तत्र विश्वका पंचलोचनम् ।

त्रयः सार्द्धं द्वयं सार्द्धवेदं द्वौ रात्रिनायकाः ।।

दशवर्गादिरंशढ्याः कलांशाः षष्टिभागकाः ।

[illegible]गं क्षेत्रस्य विज्ञेयाः पंचषष्ट्यंशकस्य च ।।

सार्द्धैकभागाः शेषाणां विश्वकाः परिकीर्तिताः ।

अथ वक्ष्ये विशेषेण विश्वकां मम संमताम् ।।

क्रमात् षोडशवर्गाणां क्षेत्रादीनांपृथक् ।

होरांशाभागदृक्काणकुचंद्रशशिनः क्रमात् ।।

कलांशस्य द्वयं ज्ञेयं त्रयं नंदांशकस्य च ।

क्षेत्रे सार्द्धे च त्रितयं चतुःषष्ट्यंशस्य हि ।।

अर्द्धमर्धे तु शेषाणां ह्येतत्स्वीयमुदाहृतम् ।

पूर्णं विश्वाबलं विंशे धृतिः स्यादधिमित्रके ।।

मित्रे पंचदश प्रोक्तं समे दश प्रकीर्तितम् ।

श[illegible] सप्ताधिशत्रौ च पंच विश्वाबलं भवेत् ।।

वर्गविश्वाः स्वविश्वघ्नाः पुनर्विंशतिभाजिताः ।

विश्वाफलोपयाग्यं तत्पंचोनं फलदो न हि ।।

तदूर्ध्वं स्वल्पफलदं दशोर्ध्वं मध्यमं मृतम् ।

तिथ्यर्धं पूर्णफलदं बोध्यं सर्वं खचारिणाम् ।।

अथान्यदपि वक्ष्येऽहं मैत्रेय त्वं विधारय ।

खेटाः पूर्णफलं दद्युः सूर्यात्सप्तमके स्थिताः ।।

फलाभावं विजानीयात्समे सूर्यंनभश्चरे ।

मध्येऽनुपाता त्सर्वत्र ह्युदयास्तविशोपकाः ।।

वर्गविश्वासमं ज्ञेयंफलमस्य द्विजर्षभ ।

यच्च यत्र फलं बुद्धवा तत्फलं परिकीत्तितम् ।।

वर्गविश्वाफलं चादावुदयास्तमतः परम् ।

पूर्णं पूर्णेति पूर्णं स्यात्सर्वदैवं विचिंतयेत् ।।

हीनं हीनेति हीनं स्यात्स्वल्पेत्यल्पकं स्मृतम् ।

मध्यं मध्येति मध्यं स्याद्यावत्तस्य दशास्थितिः ।।[1]

विश्वा बल :- विश्वा बल अपने आप में बड़ा महत्त्वपूर्ण विषय है । सभी विद्वान इसे निर्विवाद स्वीकार करते हैं । क्योंकि ग्रहबल जाने बिना ग्रह का सही फलादेश करना सम्भव नहीं हैं। इसमें चार वर्ग बताये हैं । 1. षडवर्ग, 2. सप्तवर्ग, 3. दशवर्ग, 4. षोडष वर्ग । सभी वर्गो के विश्वा संख्या भी अलग–अलग वर्गो के अनुसार दी गई हैं । जिसे आगे लिख दिया जायेगा। इसमें पञ्चधा मैत्री के अनुसार ग्रहों को बल मिलता है, तथा अंकित विश्वासंख्या से गुणा कर 20 का भाग देने से ग्रह का विश्वा बल प्राप्त होता हैं । उपरोक्त सभी का सरलीकरण निम्न

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 112 से 134, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

प्रकार से हैं :–

	1	2	3	4	5	6	वर्ग
1. षडवर्ग -	लग्न	होरा	द्रेष्काण	नवमांश	द्वादशांश	त्रिशांश	—वर्गो के नाम
	6	2	4	5	2	1	विश्वा संख्या

	1	2	3	4	5	6	7	वर्ग
2. सप्तवर्ग-	लग्न	होरा	द्रेष्काण	सप्तमांश	नवमांश	द्वादशांश	त्रिशांश	—वर्गो के नाम
	5	2	3	2½	4½	2	1	विश्वा संख्या

	1	2	3	4	5	6	7	8
3. दशवर्ग -	लग्न	होरा	द्रेष्काण	सप्तमांश	नवमांश	दशमांश	द्वादशांश	षोडशांश
	3	$^3/_2$	$^3/_2$	$^3/_2$	$^3/_2$	$^3/_2$	$^3/_2$	$^3/_2$

9	10	वर्ग
त्रिशांश	षष्टयांश	—वर्गो के नाम
$^3/_2$	5	विश्वा संख्या

	1	2	3	4	5	6	7	8
4. षोडषवर्ग-	लग्न	होरा	द्रेष्काण	चतुर्थांश	सप्तमांश	नवमांश	दशमांश	द्वादशांश
	3½	1	1	½	½	3	½	½

9	10	11	12	13	14	15	16	वर्ग
षोडशांश	त्रिशांश	चतुर्विशांश	भांश	त्रिशांश	खवेदांश	अक्षवेदांश	षष्टयांश	--वर्गो के नाम
2	½	½	½	1	½	½	4	विश्वा संख्या

अधिमित्र-18, मित्र-15, सम-10, शत्रु-7, अधिशत्रु-5 तथा स्वक्षेत्री ग्रह का पूर्ण बल वही होगा जो उसकी विश्वा संख्या में निर्धारित किया । परमोच्च का बल भी पूर्ण बल प्राप्त होगा। लेकिन यह सम्भव नहीं हो सकता क्योंकि ग्रह अपने परमोच्च अंश पर प्राप्त होना सम्भव नहीं हैं या तो वह कुछ कला विकला आगे निकल चुका होता है या फिर कुछ पीछे रह जाता है इसलिये इसका बल मैत्री चक्रानुसार की अनुपातिक निकालना चाहिये ।

विंशोपक बल साधन विधि $= \dfrac{\text{प्राप्त बल} \times \text{विश्वा संख्या}}{20} =$ विश्वा बल

षड वर्ग विंशोपक बल साधन :- हम कार्य मानक उदाहरण से कर रहें हैं :–

1. सू० लग्न कुण्डली के अधिशत्रु के घर में हैं अतः 5 बल हुआ । षडवर्ग में लग्न की विश्वा संख्या 6 है । सूत्रानुसार –

$$\frac{5\times6}{20} = \frac{3}{2} = 1.5$$ बल प्राप्त हुआ ।

2. सू० होरा में चन्द्र के घर हैं । सू० का चन्द्र अधिमित्र है । उसका बल 18 है । होरा की विश्वा संख्या 2 है । सूत्रानुसार –

$$\frac{18\times2}{20} = \frac{9}{5} = 1.8$$ बल

3. सू० द्रेष्काण में मिथुन राशि बुध के घर में हैं । सू० का बुध मित्र है। मित्र का बल 15 तथा विश्वा संख्या 4 है । सूत्रानुसार –

$$\frac{15\times4}{20} = \frac{3}{1} = 3.00$$ बल

4. सू० नवमांश कुण्डली में मिथुन राशि बुध के घर में हैं । सू० का बुध मित्र हैं इसका बल 15 तथा विश्वा संख्या 5 हैं । सूत्रानुसार –

$$\frac{15\times5}{20} = \frac{15}{4} = 3.75$$ बल

5. सू० द्वादशांश में कन्या राशि बुध के घर में हैं । सू० का बुध मित्र है इसका बल 15 तथा विश्वा संख्या 2 है । सूत्रानुसार –

$$\frac{15\times2}{20} = \frac{3}{2} = 1.5 \text{ बल}$$

6. सू० त्रिशांश में तुला राशि शुक्र के घर में हैं । सू० का शुक्र अधिशत्रु है इसका बल 5 है । विश्वासंख्या 1 है । सूत्रानुसार

$$\frac{5\times1}{20} = \frac{1}{4} = 0.25 \text{ बल}$$

उपरोक्त नियम से सभी वर्गों का बल निकाल कर वर्ग बल चक्र में आगे लिख रहे हैं ।

षडवर्ग विंशोपक बल

	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
1. लग्न –	1.5	4.5	3.00	4.5	4.5	6.00	4.5
2. होरा –	1.8	1.8	1.8	1.8	1.40	0.5	1.00
3. द्रेष्काण –	3.00	3.00	3.00	2.00	2.00	3.6	2.00
4. नवमांश –	3.75	3.75	2.5	1.75	2.5	4.5	2.5
5. द्वादशांश –	1.5	3.00	2.00	1.00	1.40	1.5	2.00
6. त्रिशांश –	0.25	0.75	0.1	0.35	1.0	0.75	0.5
कुल बल =	11.80	16.80	12.4	11.40	12.80	16.85	12.5

सप्त वर्ग विंशोपक बल

	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
1. लग्न –	0.5	3.75	2.5	3.75	3.75	5.0	2.5
2. होरा –	1.40	1.8	1.8	1.8	1.8	0.5	1.0
3. द्रेष्काण –	1.5	2.7	2.25	1.5	1.5	2.7	1.5
4. सप्तमांश –	2.25	2.5	2.25	2.5	1.25	2.25	1.25
5. नवमांश –	4.5	4.5	2.25	1.2	2.25	4.05	2.25
6. द्वादशांश –	1.5	1.5	2.00	1.0	1.8	1.5	2.25
7. त्रिशांश –	0.25	0.75	0.5	0.25	1.0	0.75	2.00
कुल बल =	11.90	17.50	13.55	12.30	13.35	16.75	10.50

दश वर्ग विंशोपक बल

	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
1. लग्न –	0.75	2.25	1.5	2.25	2.25	3.00	1.5
2. होरा –	1.35	1.35	1.35	1.35	1.35	0.37	0.75
3. द्रेष्काण –	0.5	1.12	1.12	0.75	0.75	1.35	0.75
4. सप्तमांश –	0.6	1.12	1.35	1.50	0.75	1.35	0.75
5. नवमांश –	0.5	1.12	0.75	0.52	0.75	1.35	0.75
6. दशमांश –	0.6	1.12	1.12	0.52	0.75	1.35	0.75
7. द्वादशांश –	0.5	1.12	1.5	0.75	1.35	1.12	1.5
8. षोडशांश –	0.6	1.12	0.75	1.50	1.50	1.5	0.75
9. त्रिशांश –	0.16	1.12	0.75	0.75	1.50	1.12	0.75
10. षष्ट्यंश –	4.5	3.75	4.5	3.75	2.5	3.75	2.5
कुल बल =	10.06	15.19	14.69	13.64	13.82	16.26	10.75

षोडश वर्ग विंशोपक बल

	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
1. लग्न –	0.87	0.87	1.75	2.62	2.62	3.5	1.35
2. होरा –	0.9	0.9	0.9	0.9	0.9	6.25	0.5
3. द्रेष्काण –	0.75	0.75	0.75	0.5	0.5	0.9	0.5
4. चतुर्थांश –	0.45	0.37	0.25	0.25	0.45	0.45	0.25
5. सप्तमांश –	0.9	0.75	0.45	0.5	0.25	0.45	0.5
6. नवमांश –	2.25	2.25	1.5	1.05	1.5	2.07	1.5
7. दशमांश –	0.45	0.37	0.37	0.17	0.37	0.45	0.25
8. द्वादशांश –	0.37	0.37	0.5	0.25	0.45	0.37	0.5
9. षोडशांश –	1.8	1.5	1.00	2.00	2.00	2.00	1.00
10. विंशांश –	0.45	0.45	0.45	0.17	0.37	0.37	0.25
11. चतुर्विंशांश–	0.45	0.45	0.25	0.37	0.37	0.37	0.25
12. भांश –	0.45	0.37	0.45	0.25	0.25	0.45	0.25
13. त्रिंशांश –	0.25	0.75	0.5	0.35	1.00	0.75	0.5
14. खवेदांश –	0.37	0.37	0.25	0.17	0.45	0.45	0.25
15. अक्षवेदांश –	0.12	0.37	0.35	0.45	0.25	0.37	0.5
16. षष्टयंश –	0.0	3.00	4.10	2.00	2.00	4.00	3.12
कुल बल =	11.37	13.89	14.38	12.00	13.81	17.38	11.47

विंशोपक बल चक्र

	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
1. षडवर्ग –	11.80	16.80	12.4	11.40	12.80	16.85	12.5
2. सप्तवर्ग –	11.90	17.50	13.55	12.30	13.35	16.75	10.50
3. दशवर्ग –	10.06	15.19	14.69	13.64	13.82	16.26	10.75
4. षोडषवर्ग –	11.37	13.89	14.38	12.00	13.81	17.38	11.47

भाव संज्ञा :-

अथान्यदपि वक्ष्यामि मैत्रेय श्रृणु सुव्रत ।

लग्नतुर्यास्तवियतां केंद्रसंज्ञा विशेषतः ।।

द्विपंचरं ध्रलाभाख्यं ज्ञेयं पणफरादिकम् ।

त्रिषड्भाग्यव्ययादीनामापोक्लिममिति द्विज ।।

लग्नात्पंचमभाग्यस्य कोणसंज्ञा विधीयते ।

षष्ठाष्टव्ययभावानां दुःसंज्ञास्त्रिसंज्ञकाः ।।

चतुरस्र तुयरं ध्रं कथयन्ति द्विजोत्तम् ।

स्वस्थादुपचयर्क्षाणि त्रिषडायांबराणि हि ।।

तनुर्धनंचसहजाबंधुपुत्रारयस्तथा ।

युवतीरंध्रधर्माख्यंकर्मलाभव्ययाः क्रमात् ।।[1]

भाव संज्ञा :- लग्न, चतुर्थ, सप्तम व दशम की केन्द्र संज्ञा है । 2, 5, 8, 11 भावों की पणफर संज्ञा है । 3, 6, 9, 12 आपोक्लिम संज्ञा है । लग्न से 5, 9 की त्रिकोण संज्ञा है । 6, 8, 12 की दुष्ट वा त्रिक संज्ञा होती है । चतुरस्र 'तुर्य रंध्र' को 4, 8 कहते हैं । 3, 6, 10, 11 को उपचय तथा वृद्धि कहते हैं । सामान्तया बारह भावों के नाम तनु, धन, सहज, बन्धु, पुत्र, शत्रु, जाया, रंध्र, धर्म, कर्म, लाभ और व्यय ये 12 भावों की संज्ञा है ।

* * *

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 135 से 139, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

अध्याय-5

ग्रहबल चतथा भाव बल साधन

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" उत्तर खण्ड अध्याय छः में षड़बल के विषय में बतलाया गया है। यह बल जाने बिना किसी भी कुण्डली का सही फलादेश करना अत्यन्त कठिन है। क्योंकि जो ग्रह व स्थान बलवान होगा उसका फल उत्तम होगा तथा जो ग्रह व स्थान निर्बल होगा उसका फल कष्टमय होगा। "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" में कुल छः प्रकार के बल बतलाये है। 1. स्थान बल 2. दृष्टिबल 3. काल बल 4. चेष्टा बल 5. नैसर्गिक बल 6. दृग्बल।

उपरोक्त छः बलों को जोड़ने से कुल षड़बल होता है। यह ग्रहों का बल है तथा जिस भाव का ग्रह स्वामी होगा उस भाव का वही बल माना जाता है।

स्थान बल निकालने के लिए पहले उच्च बल निकाला जाता है जो निम्न प्रकार से है :–

उच्च बल :- **नीचोनं तु ग्रहं भार्धाधिके शक्राद्विशोधयेत् ।**

भागीकृत्यत्रिभिर्भक्तं फलमुच्चबलं भवेत् ।।[1]

1. **उच्च बल साधन विधि** : ग्रह स्पष्ट में उसका नीच घटाकर शेष 6 से अधिक हो तो 12 में से कम कर शेष के अंशादि कर तीन का भाग देने से ग्रह का उच्च बल कलादि प्राप्त होगा। सभी ग्रहों के उच्च और नीच इस प्रकार है।

ग्रह	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
	रा०अं०	रा०अं०	रा०अं०	रा०अं०	रा०अं०	रा०अं०	रा०अं०
उच्च	0–10	1–3	9–28	5–15	3–5	11–27	6–20
नीच	6–10	7–3	3–28	11–15	9–5	5–27	0–20

उच्च बल साधन :- मानक उदाहरण में सू० 6 - 28 - 45 - 35 है। सूर्य नीच 6 - 10 रा० अं० है। इसको सूर्य में घटाकर अंशादि करके तीन का भाग देने पर कलादि उच्चबल प्राप्त होगा।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 8, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

इसी विधि से सभी ग्रहों का उच्च बल साधन करेंगे ।

	रा०		अं०		क०		वि०	
सूर्य :	6	–	28	–	45	–	35	**स्पष्ट सूर्य**
–	6	–	10					**नीच सूर्य**
	0	–	18	–	45	–	35	
×	30							
	0	–	18	–	45	–	35 ÷ 3 = 6.15	**उच्च बल सूर्य**

चन्द्र :

	8	–	0	–	33	–	3	**चन्द्र स्पष्ट**
–	7	–	3	–	00	–	00	**चन्द्र नीच**
	0	–	27	–	33	–	3	
×	30							
	0	–	27	–	33	–	3 ÷ 3 = 9.11	**उच्चबल चन्द्र**

मंगल :

	5	–	17	–	43	–	40	**मंगल स्पष्ट**
–	3	–	28	–	00			**मंगल नीच**
	1	–	19	–	43	–	40	
×	30							
	30	–	19	–	43	–	40	

= 49 – 43 – 40 ÷ 3 = 16.34 **उच्चबल मंगल**

बुध :

	7	–	20	–	24	–	32	**बुध स्पष्ट**
–	11	–	15	–	00	–	00	**बुध नीच**
	8	–	05	–	24	–	32	**छः राशि से अधिक है अतः षडाल्प किया**

	12	–	00	–	00	–	00	
	8	–	5	–	24	–	32	
	3	–	54	–	35	–	28	
×	30							

90 ÷ 54 = 144 – 35 – 28 ÷ 3 = 48.11 उच्चबल बुध

गुरू :

	9	–	16	–	18	–	45	गुरू स्पष्ट
–	9	–	5	–	00	–	00	गुरू नीच
	0	–	11	–	18	–	45	
×	30							
	0	–	11	–	18	–	45 ÷ 3 = 3.46 उच्चबल गुरू	

शुक्र :

	6	–	12	–	54	–	02	शुक्र स्पष्ट
–	5	–	27	–	00	–	00	शुक्र नीच
	0	–	15	–	54	–	02	
×	30							
	0	–	15	–	54	–	02 ÷ 3 = 5.18 उच्चबल शुक्र	

शनि :

	7	–	6	–	5	–	23	स्पष्ट शनि
–	0	–	20	–	00	–	00	नीच शनि
	6	–	16	–	5	–	23	
×	30							

180 + 16 = 196 – 5 ÷ 3 = 65.21 उच्च बल शनि

ग्रह	सूं०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
उच्च बल=	6.15	9.11	16.34	48.11	3.46	5.18	65.25

सप्तवर्ग बल :

मूलत्रिकोणस्वर्भाधिमित्रमित्रसमारिषु ।

अधिशत्रुगृहेचापि स्थितानां क्रमशो बलम्।।[1]

सप्तवर्ग बल साधन विधि : सप्त वर्गों में गृह, होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश तथा त्रिशांश वर्ग लिया जाता है। यदि ग्रह मूल त्रिकोण में हो तो उसका बल 45, स्वराशि में हो तो 30 बल, अधि मित्र में हो तो 20 बल, मित्र राशि में हो तो 15 बल, सम राशि में हो तो 10 बल, शत्रु राशि में हो तो 4 बल, अधि शत्रु राशि में हो तो 2 कला बल लिया जाता है। यहाँ पंचधा मैत्री का होना जरूरी हैं। जो पहले निकाल चुके हैं। निम्न प्रकार से हैं :–

पंचधा मैत्री चक्र

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ग्रह
चं मं गु	बु सू	चं सू	शु सू	चं सू	श बु	शु	अधिमित्र
बु	मं शु गु श	शु श	मं गु	श	मं गु	0	मित्र
श	0	बु गु गु	चं	मं बु शु	चं	मं सू चं बु गु	सम
0	0	0	श	0	0	0	शत्रु
शु	0	0	0	0	सू	0	अधिशत्रु

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 9, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेङ्कटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

सप्त वर्ग कुण्डली इस प्रकार हैं :–

लग्न

मं० 6
4
सू० 7 शु० के०
5
3
8 श० बु०
2
9 चं०
11
1 रा०
10 गु०
12

होरा

के० रा० 4 सू० श०
चं० गु० 5 गु० बु० मं० शु०

द्रेष्काण

गु० 2
12
सू० 3
1
11 के० शु०
4 बु०
10 मं०
5 रा०
7
9 चं०
6
8 श०

सप्तमांश

12
शु० 10 के०
सू० 1
11
9 चं०
2
8
3 श०
5
7 गु०
4 मं० रा०
6 बु०

नवमांश

9
7
शु०
10
बु०
8
6
11 के०
रा०
5
श०
12
2 गु०
4
1 चं०
3 मं०
सू०

द्वादशांश

बु० 4 गु०
2
5
3
1 मं०
सू० 2
रा०
शु०
12
के०
11
7
चं० 9
8
10 श०

त्रिशांश

शु० 8 के० रा०
6 श०
9
7 सू०
5
10 बु०
4
11
1 चं०
3
12 मं०
गु०
2
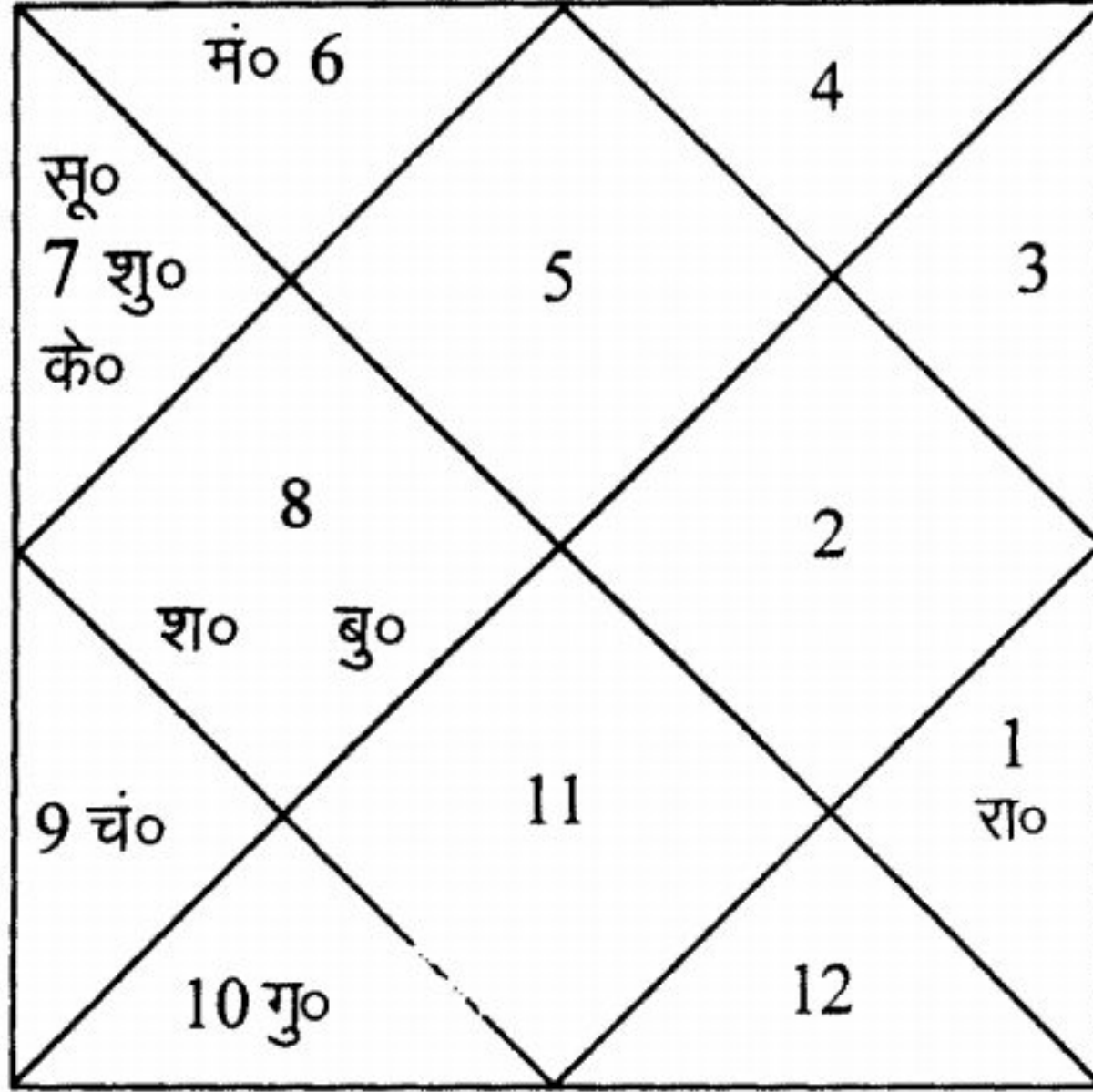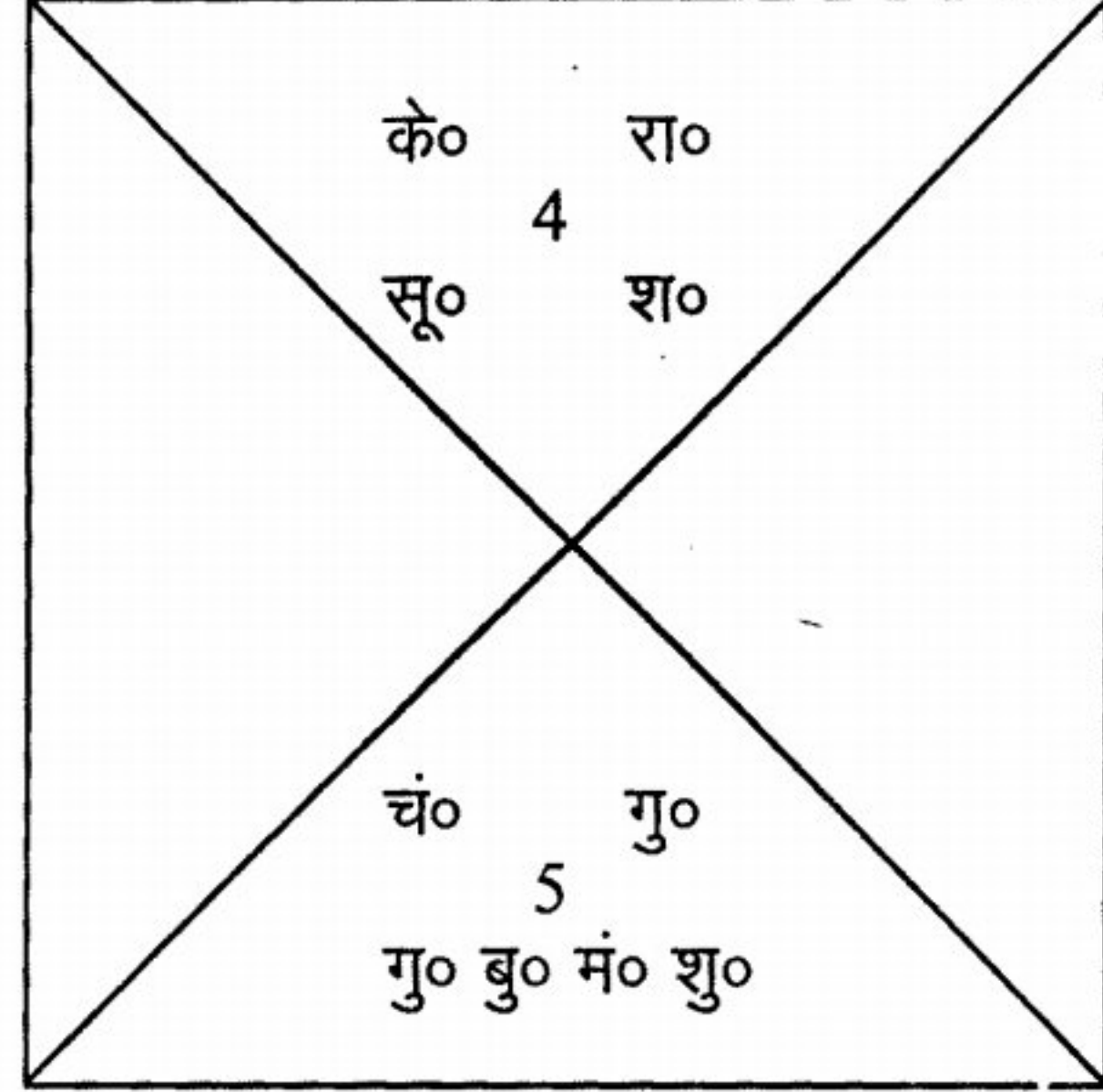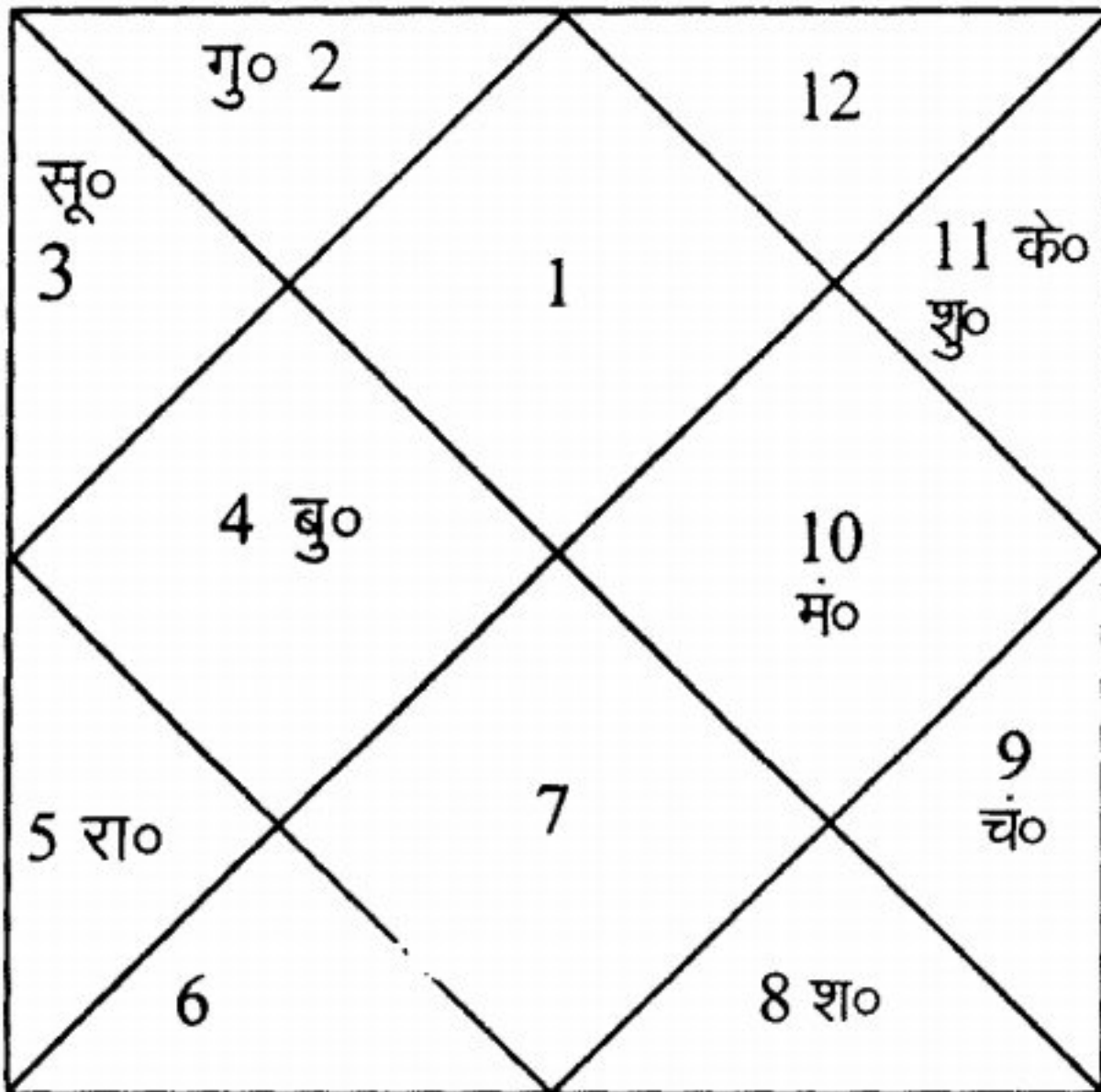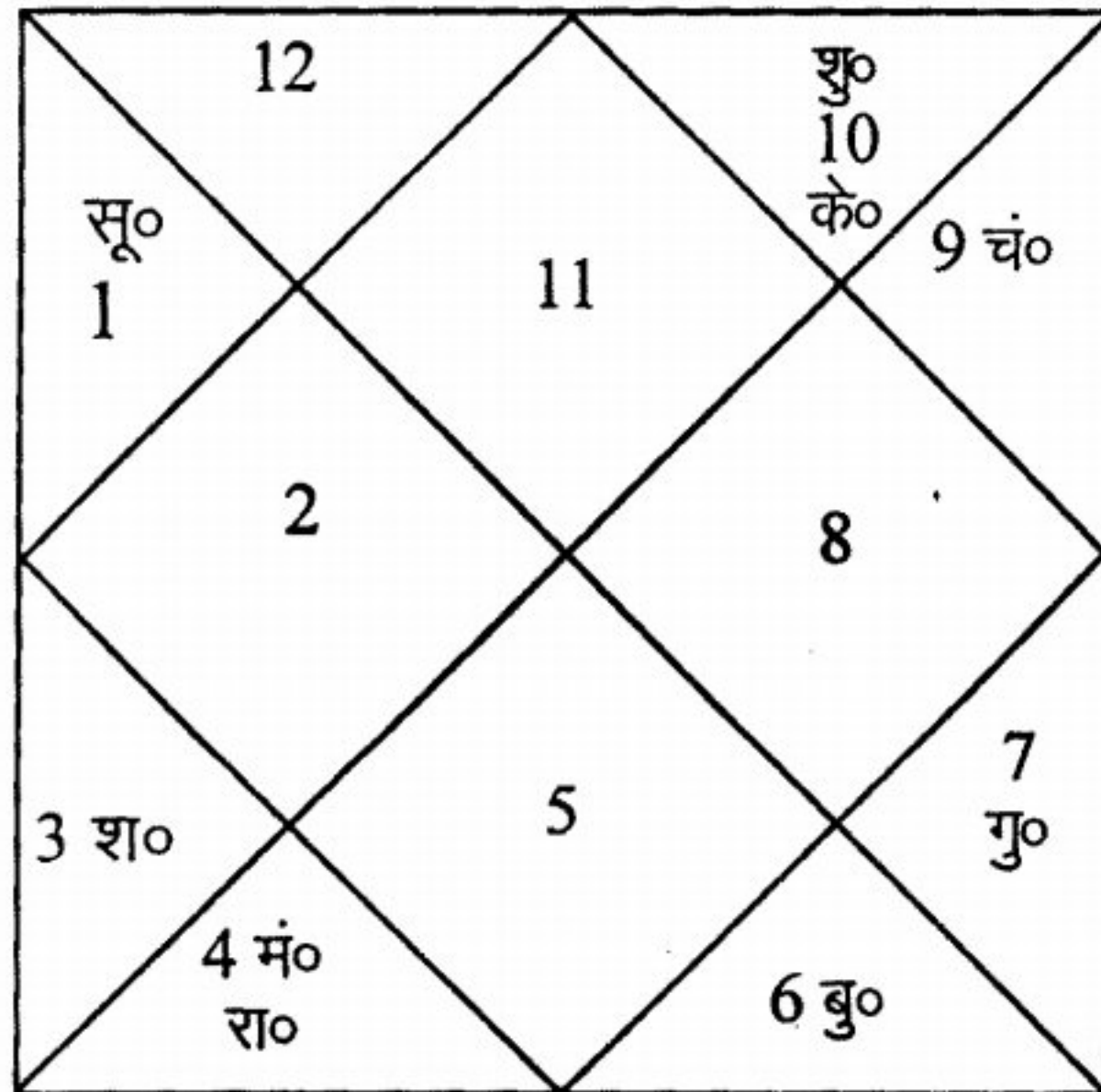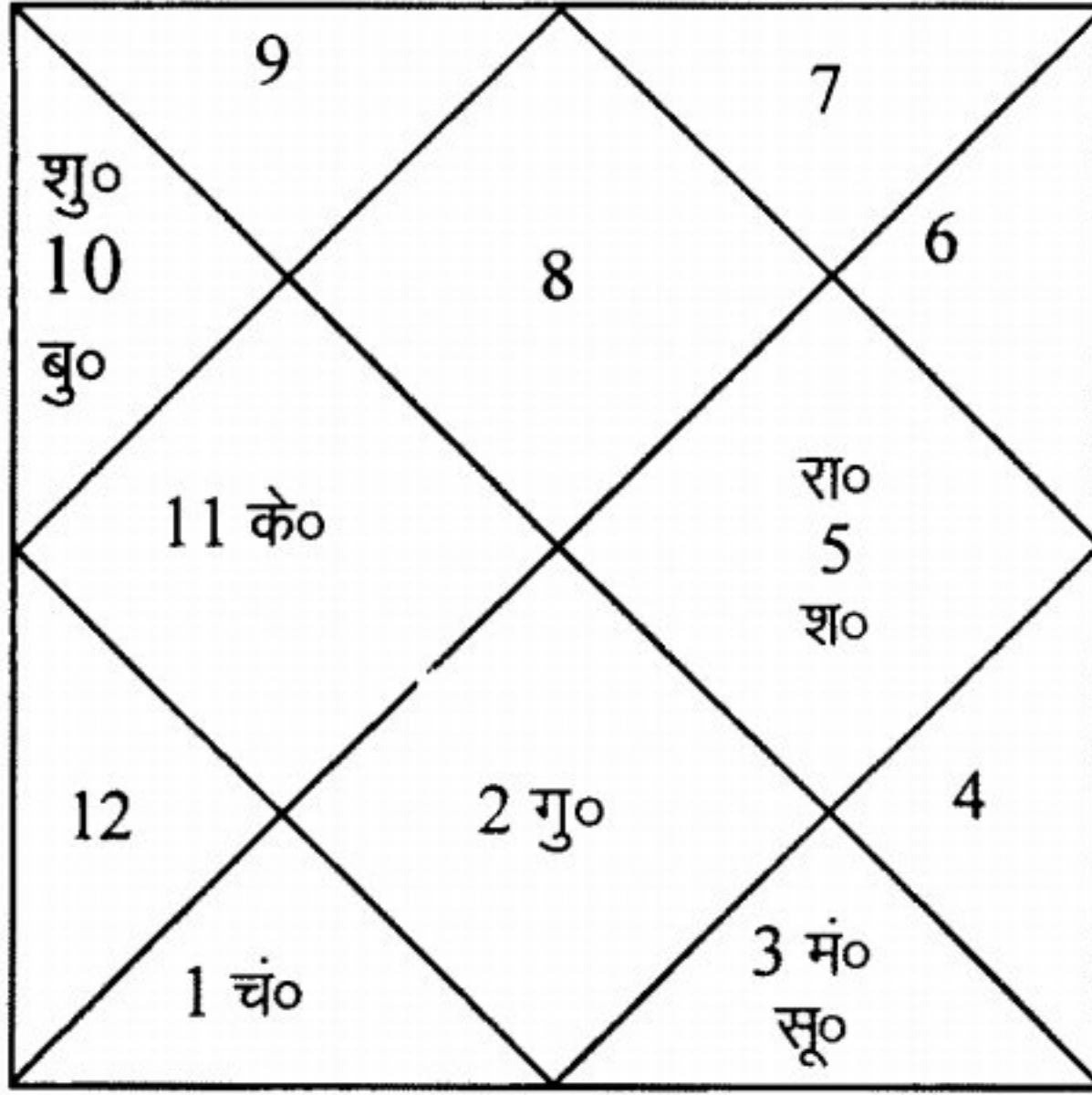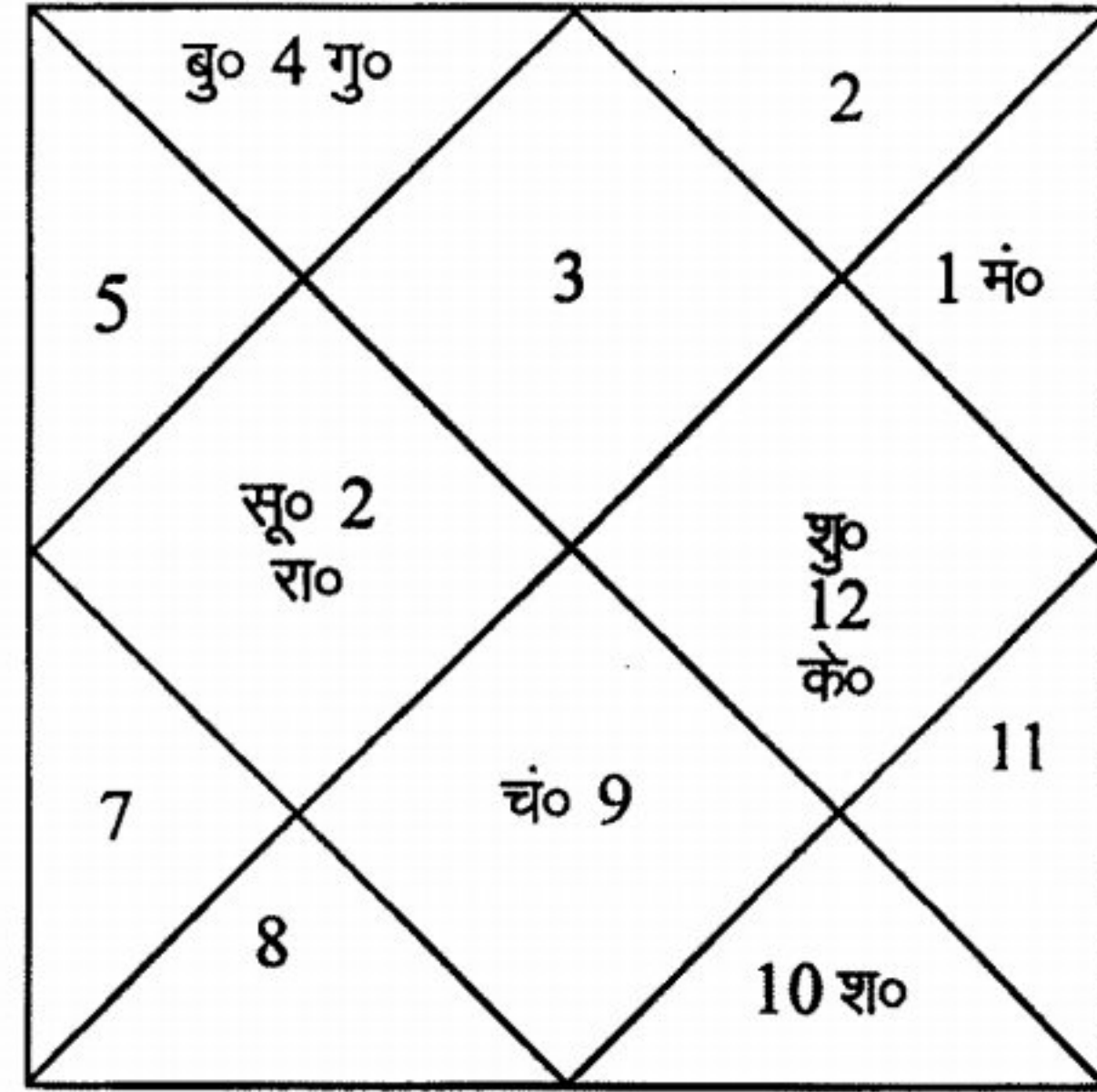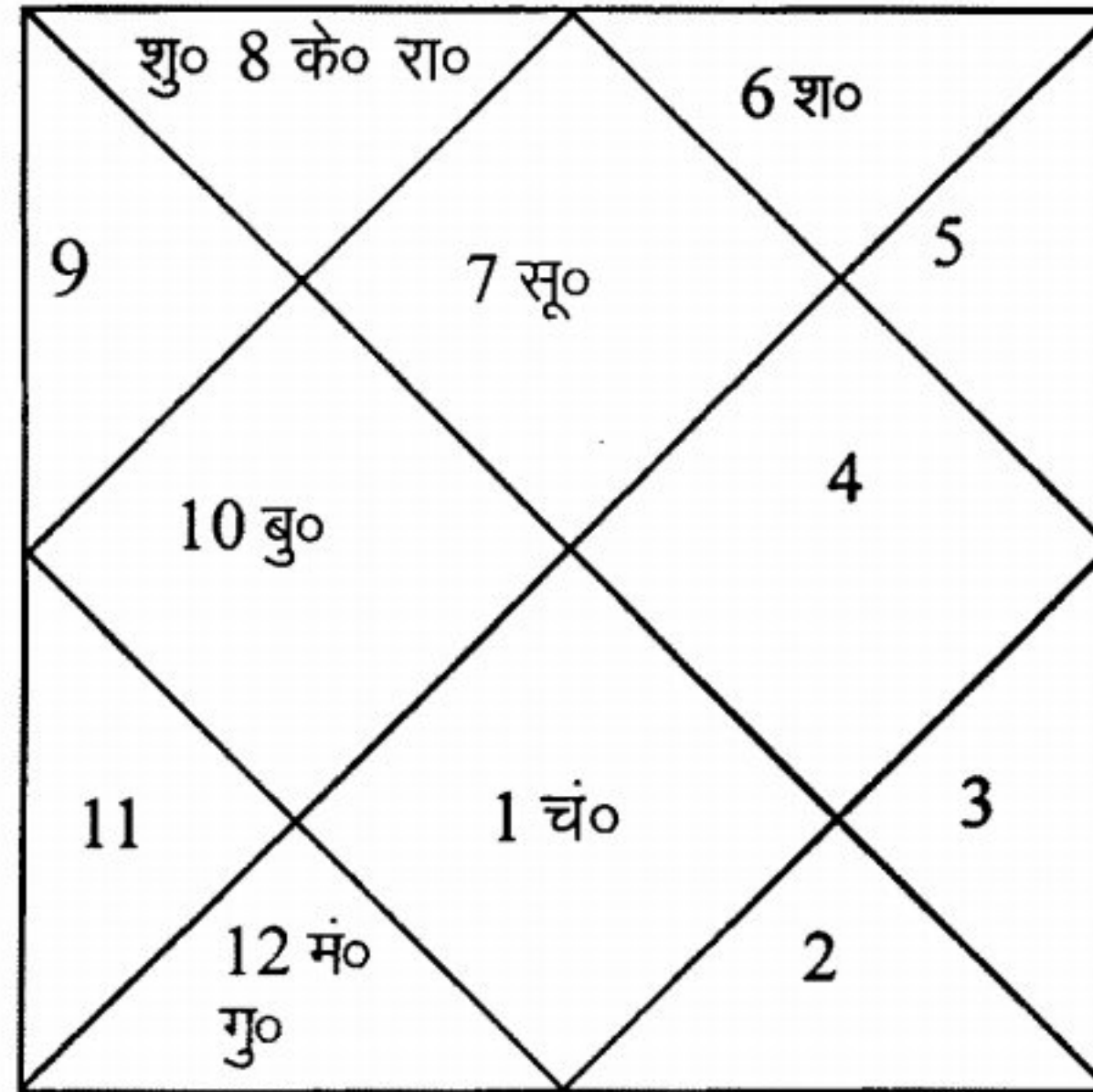
सप्तवर्ग बल साधन :- सप्त वर्ग साधन में पहले लग्न कुण्डली में **सूर्य को देखा,** यह तुला राशि शुक्र के घर में है। अतः पंचधा मैत्री में देखा तो **सूर्य का शुक्र अधिशत्रु है अतः इसका** बल 2 प्राप्त हुआ। इसके बाद लग्न कुण्डली में चन्द्र **को देखा तो यह धनु राशि गुरू के घर** में हैं। पंचधा मैत्री में चन्द्र का गुरू मित्र है अतः मित्र का 15 बल प्राप्त हुआ। मंगल लग्न कुण्डली में कन्या राशि बुध के घर में हैं। पंचधा मैत्री में मंगल का बुध सभ है अतः सम का 10 बल प्राप्त हुआ। बुध लग्न कुण्डली में वृश्चिक राशि मंगल के घर में है बुध का मंगल

पंचधा मैत्री में सम ग्रह है अतः इसका 10 प्राप्त हुआ। गुरू लग्न कुण्डली में मकर राशि शनि के घर में है। पंचधा मैत्री में गु० का शनि मित्र है अतः 15 बल प्राप्त हुआ। शुक्र लग्न कुण्डली में तुला राशि अपने घर में है अतः इसका बल 30 प्राप्त हुआ। शनि लग्न कुण्डली में वृश्चिक राशि मंगल के घर में है। पंचधा मैत्री में देखा शनि का मंगल सम है अतः उसका 10 बल प्राप्त हुआ। उपरोक्त नियमानुसार होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश तथा त्रिशांश का बल ज्ञात करने पर निम्न प्रकार से सप्तवर्ग बल चक्र तैयार होगा।

सप्त वर्ग बल चक्र

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ग्रह
अ.शत्रु 2	मित्र 15	सम 10	सम 10	मित्र 15	स्व० गृ० 30	सम 10	लग्न
अ.मित्र 20	अ.मित्र 20	अ.मित्र 20	अ.मित्र 20	अ.मित्र 20	अ.शत्रु 2	सम 10	होरा
मित्र 15	मित्र 15	स्व० गृ० 30	सम 10	सम 10	अ.मित्र 20	सम 10	द्रेष्काण
अ.मित्र 20	मित्र 15	अ.मित्र 20	स्व 30	सम 10	अ.मित्र 20	सम 10	सप्तमांश
मित्र 15	मित्र 15	सम 10	शत्रु 4	सम 10	अ.मित्र 20	सम 10	नवमांश
मित्र 15	मित्र 15	स्व० 30	सम 10	अ.मित्र 20	मित्र 15	स्व० 30	द्वादशां
अ.शत्रु 2	मित्र 15	सम 10	शत्रु 4	स्व० 30	मित्र 15	सम 10	त्रिशांश
99	110	130	88	115	112	90	कुल बल

युग्मायुग्म बल :

भूताब्धयः खरामाश्च नखास्तिथिर्दिशो युगाः ।

द्वाविंदुशुक्रौ युग्मांशे तिथिरोजांशगाः परे ।।[1]

युग्मायुग्म बल साधन विधि :– "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अनुसार चन्द्र और शुक्र समराशि या समराशि नवमांश में हो तो 15 बल अर्थात दोनों में हो तो 30 बल पाते है। अन्य ग्रह सूर्य, भौम, बुध, गुरु, शनि ये विषम राशि या विषम राशि के नवमांश हों तो 15 बल पाते है।

युग्मायुग्म बल साधन :-

(i) मानक उदाहरण में सूर्य लग्न कुण्डली में तुला विषम राशि में है अतः 15 बल प्राप्त हुआ। नवमांश कुण्डली में सूर्य मिथुन राशि विषम में है तो 15 बल प्राप्त हुआ। लग्न और नवमांश का कुल बल 30 प्राप्त हुआ।

(ii) चन्द्र लग्न कुण्डली में धनु राशि विषम में है अतः 0 बल नवमांश में मेष विषम राशि में भी 0 बल प्राप्त हुआ। अतः चन्द्र का बल 0 + 0 = 0 बल हुआ।

(iii) मंगल लग्न कुण्डली में कन्या सम राशि में रहने से 0 बल प्राप्त हुआ। नवमांश में मिथुन विषम राशि में रहने से 15 बल प्राप्त हुआ। अतः मंगल का बल 0+15=15 बल हुआ।

(iv) बुध लग्न कुण्डली वृश्चिक सम राशि में रहने से 0 बल प्राप्त हुआ। नवमांश कुण्डली में मकर राशि सम राशि में रहने से 0 बल प्राप्त हुआ। अतः 0 + 0 = 0 बल हुआ।

(v) गुरू लग्न में मकर सम राशि में रहने से 0 बल प्राप्त हुआ। नवमांश कुण्डली में वृष राशि सम में रहने से 0 बल प्राप्त हुआ। अतः 0 + 0 = 0 बल हुआ।

(vi) शुक्र लग्न कुण्डली में तुला विषम राशि में रहने से 0 बल प्राप्त हुआ। नवमांश में मकर सम राशि में रहने से 15 बल प्राप्त हुआ अतः 0 + 15 = 15 बल हुआ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 10, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

(vii) शनि लग्न कुण्डली में वृश्चिक सम राशि में रहने से 0 बल प्राप्त हुआ। नवमांश में सिंह विषम राशि में रहने से 15 बल प्राप्त हुआ अतः 0 + 15 = 15 बल हुआ। ये सभी बल कलाओं में प्राप्त होते हैं।

युग्मायुग्मक बल चक्र

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	अंश
30	0	15	0	0	15	15	कला
0	0	0	0	0	0	0	विकला

केन्द्र बल :-

केंद्रादिषु स्थिता लग्नात्षष्टिस्त्रिंशत्तितिः क्रमात् ।

आदिमध्यावसानेषु द्रेष्काण स्थिताः क्रमात् ।।[1]

केन्द्र बल साधन विधि : इसमें ग्रह लग्न कुण्डली केन्द्र 1 – 4 – 7 – 10 स्थान में हो तो बल 60 कला। पण्फर 2 – 5 – 8 – 11 में हो तो 30 बल प्राप्त होता है। आपोक्लिम 3 – 6 – 9 – 12 में ग्रह हो तो 15 बल प्राप्त होता है।

केन्द्र बल साधन :-

(i) मानक उदाहरण में लग्न कुण्डली में सूर्य तृतीय भाव आपोक्लिम में है अतः 15 बल प्राप्त हुआ।

(ii) चन्द्र लग्न कुण्डली में पंचम भाव पण्फर में है अतः 30 बल प्राप्त हुआ।

(iii) मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव पण्फर में है अतः 30 बल प्राप्त हुआ।

(iv) बुध लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव केन्द्र में है अतः 60 बल प्राप्त हुआ।

(v) गुरू लग्न कुण्डली में षष्ट भाव आपोक्लिम में है अतः 15 बल प्राप्त हुआ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 11, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

(vii) शनि लग्न कुण्डली में वृश्चिक सम राशि में रहने से 0 बल प्राप्त हुआ। नवमांश में सिंह विषम राशि में रहने से 15 बल प्राप्त हुआ अतः 0 + 15 = 15 बल हुआ। ये सभी बल कलाओं में प्राप्त होते हैं।

युग्मायुग्मक बल चक्र

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	अंश
30	0	15	0	0	15	15	कला
0	0	0	0	0	0	0	विकला

केन्द्र बल :-

केंद्रादिषु स्थिता लग्नात्षष्टिस्त्रिंशततितिः क्रमात् ।

आदिमध्यावसानेषु द्रेष्काण स्थिताः क्रमात् ।।[1]

केन्द्र बल साधन विधि : इसमें ग्रह लग्न कुण्डली केन्द्र 1–4–7–10 स्थान में हो तो बल 60 कला। पण्फर 2–5–8–11में हो तो 30 बल प्राप्त होता है। आपोक्लिम 3–6–9–12 में ग्रह हो तो 15 बल प्राप्त होता है।

केन्द्र बल साधन :-

(i) मानक उदाहरण में लग्न कुण्डली में सूर्य तृतीय भाव आपोक्लिम में है अतः 15 बल प्राप्त हुआ।

(ii) चन्द्र लग्न कुण्डली में पंचम भाव पण्फर में है अतः 30 बल प्राप्त हुआ।

(iii) मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव पण्फर में है अतः 30 बल प्राप्त हुआ।

(iv) बुध लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव केन्द्र में है अतः 60 बल प्राप्त हुआ।

(v) गुरू लग्न कुण्डली में षष्ट भाव आपोक्लिम में है अतः 15 बल प्राप्त हुआ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 11, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

(vi) शुक्र लग्न कुण्डली में तृतीय भाव आपोक्लिम में है अतः **15 बल प्राप्त हुआ।**

(vii) शनि लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव केन्द्र में है अतः **60 बल प्राप्त हुआ।**

केन्द्र बल चक्र

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	अं
15	30	30	60	15	15	60	क
0	0	0	0	0	0	0	वि.

द्रेष्काण बल :-

पुन्नपुंसकयोषाख्या दद्युस्तिथिबलं ग्रहाः ।

स्वषड्वर्गगतास्त्रिंशदेवं स्थानबलं विदुः ।।[1]

द्रेष्काण बल साधन विधि : इसमें पुरूष ग्रह (सू० मं० गु०) **प्रथम द्रेष्काण में 10°** तक हों तो 15 बल होता है। इससे अधिक हों तो शून्य (0) बल होता है। **नपुंसक ग्रह (बु० श०) द्वितीय द्रेष्काण में 10°** से 20° तक हों तो 15 बल अन्यथा शून्य बल प्राप्त होता है। **स्त्री ग्रह (चं० शु०) तीसरे द्रेष्काण में** 20° से अधिक हो तो 15 बल अन्यथा शून्य बल होता है। विशेष में जो ग्रह षड् वर्ग में अपने ही वर्ग का हो उसका बल 30 होता है। लेकिन ऐसा संयोग बड़ा मुश्किल से प्राप्त होता है।

द्रेष्काण बल साधन :-

(i) मानक उदाहरण में सूर्य पुरूष ग्रह तृतीय **द्रेष्काण में 28° पर है तो शून्य बल हुआ।**

(ii) चन्द्र स्त्रि ग्रह नोवें द्रेष्काण में 0 अंश पर **है अतः शून्य बल प्राप्त हुआ।**

(iii) मंगल पुरूष ग्रह दशवें द्रेष्काण में है 17° पर है अतः शून्य बल प्राप्त हुआ।

(iv) बुध नपुसंक ग्रह चौथे द्रेष्काण में 20° पर है अतः शून्य बल प्राप्त हुआ।

(v) गुरू पुरूष ग्रह दूसरे द्रेष्काण में 16° पर है अतः शून्य बल प्राप्त हुआ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 12, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

(vi) शुक्र स्त्री ग्रह ग्यारहवें द्रेष्काण में 12° अंश पर है अतः शून्य बल प्राप्त हुआ।

(vii) शनि नपुंसक ग्रह आठवें द्रेष्काण में 6° पर है अतः शून्य बल प्राप्त हुआ।

द्रेष्काण बल चक्र

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	शं०	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	बल
0	0	0	0	0	0	0	
0	0	0	0	0	0	0	

1. **कुल स्थान बल :**

	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
उच्च बल =	6.15	9.11	16.34	48.11	3.46	5.18	65.21
सप्तवर्ग बल =	99.0	110.0	130.0	88.0	115.0	112.0	90.0
युग्मायुग्मक बल =	15.0	0.0	15.0	0.0	0.0	15.0	15.0
केन्द्र बल =	15.0	30.0	30.0	60.0	15.0	15.0	60.0
द्रेष्काण बल =	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
कुल स्थान बल =	135.15	149.11	191.34	196.11	133.46	147.18	230.21

दिग्बल :-

अर्कात्कुजात्सुखं जीवाज्ज्ञाच्चास्तं लग्नमार्कितः ।

मध्यलग्नं भृगोश्चंद्रद्राद्धित्वा षड्भाधिके सति ।।[1]

दिग्बल साधन विधि : इसमें सूर्य तथा मंगल के राश्यादि में चतुर्थ भाव घटाना, बुध, गुरू में सप्तम भाव घटाना, शनि में लग्न घटाना, चन्द्र व शुक्र में दशम भाव घटाना। शेष अंक 6 राशि से ज्यादा हो तो षड़ाल्प करना अर्थात 12 राशि में से घटाना उपरांत राश्यादि के

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 13, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

अंश कर 3 का भाग देने पर दिग्बल प्राप्त होता है।

दिग्बल साधन :

मानक उदाहरण में सूर्य 6 – 28 – 45 – 35 पर है। चुतर्थ भाव 7 – 25 – 9 – 3 है।

सूर्य :

6 – 28 – 45 – 35 स्पष्ट सूर्य		12 – 00 – 00 – 00
— 7 – 25 – 09 – 03 चतुर्थ भाव		— 11 – 3 – 36 – 32
11 – 03 – 36 – 32		0 – 26 – 23 – 28 ÷ 3

सूर्य छः राशि से अधिक है षडाल्प किया। = 8.47 सूर्य दिग्बल

चन्द्र :

8 – 00 – 33 – 03 चंद्र स्पष्ट	12 – 00 – 00 – 00
– 1 – 25 – 09 – 3 दशम भाव	– 6 – 04 – 24 – 00
6 – 04 – 24 – 00	5 – 25 – 36 – 00

छः राशि से ज्यादा है अतः षडाल्प किया। × 30 अंशादि किया

150 + 25 = 175 – 36 ÷ 3

= 58.32 चंद्र दिग्बल

मंगल :

5 – 17 – 40 – 43 स्पष्ट मंगल	12 – 00 – 00 – 00
– 7 – 25 – 9 – 03 चतुर्थ भाव	– 9 – 22 – 31 – 40
9 – 22 – 31 – 40	2 – 07 – 28 – 20

छः राशि से ज्यादा है अतः षडाल्प किया। × 30 **अंशादि किया**

60 + 7 = 67 – 28 ÷ 3

= 22.29 मंगल दिग्बल

बुध :

	7 – 20 – 24 – 32	बुध स्पष्ट	12 – 00 – 00 – 00
–	10 – 26 – 06 – 39	सप्तम भाव	– 8 – 24 – 17 – 53
	8 – 24 – 17 – 53		3 – 05 – 42 – 07

छः राशि से ज्यादा है अतः षडाल्प किया। × 30 अंशादि किया

90 + 05 = 95 – 42 ÷ 3

= 31.54 बुध दिग्बल

गुरू :

	9 – 16 – 18 – 45	गुरू स्पष्ट	12 – 00 – 00 – 00
–	10 – 26 – 06 – 39	सप्तम भाव	10 – 20 – 12 – 06
	10 – 20 – 12 – 06		1 – 09 – 47 – 54

छः राशि से ज्यादा है अतः षडाल्प किया। × 30 अंशादि किया

30 + 9 = 39 – 47 ÷ 3

= 13.15 गुरू दिग्बल

शुक्र :

6 – 12 – 54 – 02 शुक्र स्पष्ट

– 1 – 25 – 09 – 3 दशम भाव

4 – 17 – 45 – 59

× 30

120 + 17 = 137 – 45 ÷ 3 = 45.55 शुक्र दिग्बल हुआ।

शनि :

	7 – 06 – 05	23	शनि स्पष्ट
–	4 – 26 – 6 –	39	लग्न घटाया
	2 – 09 – 58 –	44	
×	30		अंशादि किया

60 + 9 = 69 – 58 ÷ 3 = 23.19 शनि दिग्बल हुआ।

दिग्बल चक्र

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ग्रह
8.47	58.32	22.29	31.54	13.15	45.55	23.19	दिग्बल

काल बल साधन : काल बल साधन के लिये नतोन्नत **बल, पक्ष बल, त्रिभाग बल, अब्द बल,** मास बल, वार बल, होरा बल, अयन बल तथा युद्ध बल को **जोड़ने से कुल काल बल होता है।** काल बल साधन के लिए सर्व प्रथम नतोन्नत् बल साधन किया जाता है । जो इस प्रकार है :–

नतोन्नत बल :-

> **चक्राद्विशोध्य रामाप्तं भागीकृत्य च तद्बलम् ।**
> **आमध्याह्नदर्धरात्राद्दिवारात्रिरिति क्रमात् ।।**
> **अर्कभार्गवसूरीणांद्विघ्ना नाड्यो गता दिवा ।**
> **भौमचंद्रशनीनां तु षष्टिभ्यो वर्जयेदमाः ।।**
> **दिवाबलमिति प्रोक्तं बलं नैशं ततोऽन्यथा ।**
> **षष्टिरेव सदा ज्ञस्य । चंद्रादर्कं विशोध्य च ।।**[1]

1. **नतोन्नत बल साधन विधि** : इसके निकालने के चार प्रकार दिये है। जो निम्न प्रकार से हैं :–

(i) दिनार्द्ध से पहले का इष्टकाल हो तो दिनार्द्ध में से **इष्ट काल घटाने पर पूर्व नत् होता है।**

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 14 से 16, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

(ii) दिनार्द्ध के बाद का इष्टकाल हो तो दिनमान में से इष्टकाल घटाने पर जो शेष बचे वह पश्चिम नत् होता है।

(iii) रात्रि अर्द्ध से पहले का इष्ट काल हो तो दिनमान को इष्टकाल में घटाने से जो शेष हो उसमें दिनार्द्ध जोड़ने पर पश्चिम नत् होता है।

(iv) रात्रि अर्ध के बाद का जन्म इष्टकाल हो तो 60 में से इष्टकाल को घटाने पर जो शेष आवे उसके दिनार्द्ध जोड़ने से पूर्व नत् होता है।

पूर्वनत्×2 = नतोन्नत् बल (चं० मं० श०) बुध का हमें 60 बल रहेगा।

नत् — 30×2 = नतोन्नत बल (सू० गु० शु०)

नतोन्नत् बल साधन :- हमारे मानक उदाहरण में जन्म अर्ध रात्रि के बाद 2.00 बजे इष्ट 47 – 55 पर है। अतः उपरोक्त चार नं० सूत्र लागू होगा। इष्ट 47–55 दिनमान 26–32 दिनार्द्ध 13–16 रात्रिमान 33–28 जो हम पहले निकाल चुके है।

अब :

	60	–	00	अहोरात्र
–	47	–	55	इष्ट
	12	–	05	
+	13	–	16	दिनार्द्ध
	25	–	21	पूर्व नत् आया
	×		2	
=	50	–	42	नतोन्नत् बल चं०, मं०, श० का हुआ

नत् को 30 में घटाने तथा दो से गुणा करने पर सू० गु० शु० का नतोन्नत् बल होगा।

	30	–	00	
–	25	–	21	
	4	–	39	
		×	2	
	9	–	18	नतोन्नत् बल सू० गु० शु०

सूत्रानुसार बुध का पूर्ण नतोन्नत् बल 60 रहेगा।

नतोन्नत बल चक्र

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ग्रह
9.18	50.42	50.42	60.00	9.18	9.18	50.42	नतोन्नत् बल

पक्ष बल साधन :-

अंगाधिके विशोध्यार्कादभगीकृत्य त्रिभिर्भजेत् ।

पक्षजं बलमिंदुज्ञशुक्रार्याणां तु षष्टितः ।।[1]

(2) **पक्ष बल साधन विधि** : चन्द्र स्पष्ट राश्यादि में सूर्य स्पष्ट राश्यादि घटाना (यदि सूर्य राश्यादि अधिक हो तो 12 राशि चन्द्र में जोड़ कर घटाना) **शेष अंक संख्या छः से अधिक हो तो 12 राशि में से घटाना। शेषांक को अंश करके तीन का भाग देना। जो लब्ध हो वह** चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र का पक्ष बल होता है। उस बल को 60 में से घटाने पर सू०, मं०, श० का पक्षबल प्राप्त होता है।

मानक उदाहरण में चन्द्र स्पष्ट 8 – 0 – 33 – 03 है। सूर्य स्पष्ट 6 – 28 – 45 – 35 है।

पक्षबल साधन :

$$
\begin{array}{rcccccccl}
 & 8 & - & 0 & - & 33 & - & 03 & \text{चन्द्र} \\
- & 6 & - & 28 & - & 45 & - & 35 & \text{सूर्य} \\
\hline
 & 1 & - & 01 & - & 47 & - & 28 & \\
\times 30 & & & & & & & & \text{अंशादि किया}
\end{array}
$$

$$30 + 1 = 31 - 47 - 28 \div 3 = 10 - 35$$

= चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र का पक्ष बल प्राप्त हुआ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 17, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

अब   60 – 00
 –   10 – 35   (पक्ष बल चं०, बु०, गु०, शु०)
        49 – 25   = सूर्य, मंगल, शनि का पक्ष बल प्राप्त हुआ।

पक्ष बल चक्र

सू०	च०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	अं
49	10	49	10	10	10	49	क
25	35	25	35	35	35	25	वि

त्रिभाग बल :-

हित्वान्येषामहोरात्रिं त्रिभागीकृत्य यत्र तु ।
जन्मलग्नतदंशाधिपतेः षष्टिबलं भवेत् ।।
आधाने चित्प्रवेशे तु त्रिंशद्भूतार्णवा बलम् ।
ज्ञाऽर्कमंदेंदुशुक्राराः पतयः सर्वदा गुरुः ।।[1]

(3) **त्रिभाग बल साधन विधि :** उसमें दिन तथा रात्रि के 3–3 भाग करें। दिन के तीन भाग के स्वामी ग्रह क्रम से बुध, सूर्य व शनि होते हैं। रात्रि के तीनों भागों के स्वामी क्रम से चन्द्र, शुक्र व मंगल होते हैं। इसमें दिन का जन्म हो तो दिनमान को तीन से भाग करे। रात्रि का जन्म हो तो रात्रिमान को तीन से भाग करें। क्रम से उस खण्ड का जो स्वामी ग्रह आयेगा उसका 60 कला बल होगा। यदि आधान काल का विचार करना हो तो 60 की जगह 30 कला बल होगा। इस बल में गुरू का हमेशा 60 कला बल ग्रहण होता है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 18-19, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

त्रिभागबल साधन :-

हमारे मानक उदाहरण में रात्रि 2.00 बजे इष्ट 47–55 पर जन्म है। इसमें रात्रिमान को तीन से भाग करने पर उस खण्ड का जो ग्रह स्वामी होगा उसका 60 बल होगा बाकि सभी ग्रहों का शून्य बल होगा।

इष्ट = 47 –55 दिनमान = 26–32 रात्रिमान = 33–28 पहले निकाल चुके हैं।

रात्रिमान = 33 – 28 ÷ 3 = 11 – 9 – 20

	11 – 9 – 20	पहला खण्ड चन्द्र का आया।
+	11 – 9 – 20	
	22 – 18 – 40	दूसरा खण्ड शुक्र का आया।
+	11 – 9 – 20	
	33 – 28 – 00	तीसरा खण्ड मगंल का आया।

अब यह देखना है कि हमारा इष्ट किस खण्ड में आता है। अतः सू० अं० से जन्म समय का इष्ट बनाकर खण्ड ज्ञात करे। सू० अं० 5–27 पहले निकाल चुके हैं। सू० अं० से रात्रि 2.00 बजे तक 8 घण्टे 33 मिन्ट होते हैं। इनको $2\frac{1}{2}$ से गुणा किया तो 21 – 22 – 30 आया। अतः हमारा दूसरा खण्ड 22 – 18 – 40 का है इष्ट कम है। अतः दूसरा खण्ड शुक्र का आया उसका बल 60 होगा।

त्रिभाग बल चक्र

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	अं०
0	0	0	0	60	60	0	क०
0	0	0	0	0	0	0	वि०

वर्षपति, मासपति, वारपति व होरेश बल साधन : वर्षपति या अब्दबल, मास बल, वार बल निकालने के लिये "ग्रह लाघव" अनुसार अहर्गण[1] बनाने की रीति मध्यमाधिकार श्लोक 4–5 में दी हैं। जो काफी पेचीदा प्रतीत होती है। "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" टीका गणेशदत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन चौक वाराणसी तथा "भारतीय ज्योतिष", डॉ० नेमीचन्द शास्त्री, ज्ञानपीठ प्रकाशन दोनों ने सोदाहरण एक ही सूत्र अपनाया है। वर्षपति, मासपति, वारपति का बल क्रमशः 15, 30, 45 होता है। उपरोक्त बल निकालने के लिए सबसे पहले अहर्गण साधन करना पड़ता है।

कलियुगाद्यहर्गण साधन विधि : इष्ट शक वर्ष में 3179 जोड़ने से कलि गत वर्ष होते हैं। कलिगत वर्षों को 12 से गुणा कर चैत्रादि गिनकर गत मास जोड़ना। इस योग को तीन स्थानों पर रखना। प्रथम स्थान में 70 से भाग देकर जो लब्ध आये उसे द्वितीय स्थान में जोड़ना तथा इस योगफल में 33 का भाग देना। लब्धि को तृतीय स्थान में ज़ोड़ना। पुनः इस योगफल को 30 से गुणा कर गत तिथि जोड़ना। तिथि की गणना शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से करना। इस योग को दो स्थानों रखना। प्रथम स्थान की संख्या को 11 से गुणा कर 703 का भाग देकर लब्धि को द्वितीय स्थान की संख्या में घटाने से कलियुगाद्यहर्गण प्राप्त होता है।

वर्षपति मासेपति बल साधन विधि : इष्ट दिन का कलियुगाद्यहर्गण लाकर उसमें 373 घटाकर शेष में 2520 का भाग देने पर जो शेष आये उसे दो स्थानों में रखकर पहले स्थान में 360, का दूसरे स्थान में 30 का भाग देना। दोनों स्थानों की लब्धियों को क्रमशः 3 और 2 से गुणा कर, गुणनफल में एक जोड़कर इस योग को 7 से भाग देने पर प्रथम स्थान के शेष में वर्षपति और द्वितीय स्थान के शेष से मास पति होता है। जिस वार का जन्म हो वही वारपति होता है।

मानक उदाहरण : विक्रम संवत् 2042 शक 1907 कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया–तृतीया वार गुरूवार–शुक्रवार (इसमें गुरूवार सूर्योदयकालीन तिथि द्वितीया जो 14 घटी 15 पल का मान

---

1. "ग्रहलाघव", पं० रामस्वरुप, मध्यमाधिकार, श्लोक 4-5, खेमराज श्रीकृष्ण दास, वेंकटेश्वर स्टीम प्रैस, मुम्बई ।

श्री मार्त्तण्ड पंचांगम्' में दिया है। अतः जन्म कालीन तिथि तृतीया प्राप्त होती है तथा वार 12 बजे के बाद शुक्रवार माना गया है। लेकिन हम वारपति गुरुवार को मानेंगे।)

1907 + 3179 = 5086 × 12 = 61032 + 7 (गत मास) = 61039

(1)	(2)	(3)
61039 ÷ 70	61039	61039
	+ 871	+ 1876
	61910 ÷ 33	62915
= 871 ल० 69 शेष	= 1876 ल० 2 शेष	

62915 × 30 = 1887450 + 2 (गत तिथि) = 1887452

1887452 × 11 =	1887452
20761972 ÷ 703 =	– 29533
= 29533 ल०, 173 शेष	1857919 कलियुगाद्यहगर्ण आया।

1857919 – 373 = 1857546 ÷ 2520 = ल० = 737, शेष = 306

यहाँ लब्धि का उपयोग न होने से शेष 306 को दो स्थानों रखा।

306 ÷ 360	306 ÷ 30
= 0 लब्धि, 306 शेष	= 10लब्धि, 6 शेष
वर्षेश = $\frac{ल \times 3+1}{7}$	= 10 × 2 = 20 + 1 = 21
0 × 3 +1 = 1 ÷ 7	21 ÷ 7 =
	3 लब्धि, 0 शेष मास पति शनि आया
= 0 लब्धि, शेष 1 वर्ष पति सूर्य आया	इसका बल =30
इसका बल = 15	

वारपति गुरू है क्योंकि गुरूवार को जन्म हुआ है। अतः वारपति गुरू का बल 45 हुआ।

1. "श्री मार्त्तण्ड पंचांग", श्री० वि० सं० 2042, पेज 77, चण्डीगढ़।

होरेश बल :-

वर्षमासदिनेशानां तिथिस्त्रिंशच्छरार्णवाः ।

कालहोराधिपस्यैवं पूर्णं बलमुदाहृतम् ।।[1]

होरेश बल साधन विधि : "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" अध्याय छः श्लोक 20 में सिर्फ इतना दिया है कि जिस ग्रह की होरा में जन्म होता है उसका बल 60 कला होता है। लेकिन कोई सूत्र नहीं दिया गया। लेकिन बाबुलाल ठाकुर की पुस्तक में होरा[2] निकालने की दो रीतियां दी गई हैं। जो इस प्रकार है :– (लग्न – सू०) × 2 = होरेश ÷ 7 जो शेष बचे निम्न संख्या से होरेश ज्ञात करें। जिस वार में जन्म होता है पहली होरा 1 घण्टे की उसी वार की होगी। होरा क्रम इस प्रकार है। 1. शनि 2. गुरू 3. मंगल 4. सूर्य 5. शुक्र 6. बुध 7. चन्द्र

उपरोक्त क्रमानुसार :

सूत्र –1

```
      4 – 26 – 6  – 39 लग्न
    – 6 – 28 – 45 – 35 सूर्य
    ----------------------
      9 – 47 – 21 – 04
                   ×  2
    ----------------------
     19 – 4  – 42 –  8 = 20 माना
     7)20(7
       14
       ---
```

6 शेष गुरूवार पहली होरा से गिनने पर छठी होरा चन्द्र की आई।

सूत्र –2 (इष्ट घटी × 2) ÷ 5 = लब्धि होरा क्रम 1 सात से अधिक हो तो 7 का भाग दें।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 20, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. "सचित्र ज्योतिष शिक्षा", बाबुलाल ठाकुर, द्वितीय खण्ड गणित प्रथम भाग, मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली, वाराणसी, पटना, मद्रास, प्रथम संस्करण 1970, पेज 426–427।

घ० प०

इष्ट = 47 – 55

× 2

---

95 – 50 = 96 माना ÷ 5 = $19\frac{1}{5}$ = 20 माना ÷ 7 = 2 लब्धि, 6 शेष

उपरोक्त क्रम से छटी होरा चन्द्र की हुई।

सूत्र–3[1] :– ग्रन्थ में बताया गया है कि पहली होरा उसी वार की होगी जिस वार में जन्म है। एक होरा 2½ घटी की होती है अर्थात् एक घण्टे की एक होरा। सूर्य उदय से जन्म समय तक उपरोक्त क्रम से गिनने पर सरलता से होरेश का ज्ञान होता है। जैसे :– उदाहरण में गुरुवार 14 – 11 – 1985 को सू० उ० 6 – 50 (घं० मि०) निकाल चुके है। 6.50 से 7.50 तक गुरू की होरा रहेगी फिर छटे वार की होरा होगी। उसके बाद छटे वार की होरा इस क्रम से जन्म समय तक होरेश सरलता से ज्ञात किया जा सकता है । जन्म समय 15 – 11 – 1985, 2.00 बजे सुबह है। अब निम्न प्रकार से देखे।

6.50 से०	18.50 बु०
7.50 गु०	19.50 चं०
8.50 मं०	20.50 श०
9.50 सू०	21.50 गु०
11.50 बु०	22.50 मं०
12.50 चं०	23.50 सू०
13.50 श०	24.50 शु०
14.50 गु०	25.50 बु० = 1.50 सुबह पर बु० की होरा समाप्त हुई
16.50 सू०	26.50 चं० = 2.50 सुबह तक चन्द्र की होरा रही
17.50 शु०	

---

1. सूत्र –3, [illegible] के लिये सव्यं बनाया गया है।

1.50 पर बुध की होरा समाप्त हुई अतः अगली होरा चन्द्र की आई। चन्द्र होरेश हुआ उसका बल 60 कला = 1° है।

अयन बल :-

आधाने चित्प्रवेशे तु त्रिंशच्छरजलाकराः ।

सायनांशग्रहभुजराशीनिष्वब्धिभिः सुरै : ।।

सूर्यैर्हत्वा क्रमाद्राशिभागः स्यादनुपाततः ।

एवं राश्यादिके युंज्यादर्कारार्योशनः सु च ।।

राशित्रयमथो युंज्यान्मेषादिस्येषु तेष्वथ ।

तुलादिस्थेषु राश्यार्दीस्त्रिराशिभ्यस्तु वर्जयेत् ।।

चंद्रार्क्योर्विपरीति स्यात्सदा युंज्याद्बुधस्य तु ।

भागीकृत्य त्रिभिर्भक्तं ग्रहाणामायनं बलम् ।।[1]

अयन बल साधन विधि :- तात्कालिक ग्रह स्पष्ट में अयनांश जोड़ने से सायन ग्रह होता है। अयनांश पहले अध्याय में 24–23 निकाल चुके है। सायण ग्रह के बाद ग्रहलाघव रीति से भुज[2] बनाकर ध्रुवांक ज्ञात करे। सायण ग्रह करने पर तीन राशि से कम ग्रह हो तो वही भुज होता है। तीन राशि से अधिक हो तो छः राशि में घटाने से, छः राशि से अधिक ग्रह हो तो छः राशि कम करने पर, नौ राशि से अधिक हो तो बारह राशि में घटाने पर भुज होता है। भुज के तीन ध्रुवांक हैं। (1) 45, (2) 33, (3) 12 ये ध्रुवांक हैं। भुज करने पर राशि स्थान में 0 हो तो प्रथम अर्थात 45 भुज खण्ड ध्रुवांक। एक हो तो 33 ध्रुवांक दो हो तो 12 ध्रुवांक

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 21 से 24, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

2. "ग्रह लाघव", पं० रामस्वरुप, अधिकार दो, श्लोक 17, पेज 27, खेमराज श्रीकृष्णदास मुम्बई।

होता है। ग्रह के अंशादि अंक को भुजखण्ड से गुणा कर 30 का भाग दें। जो लब्धि अंशादि आयें उसमें ध्रुवांक का गत खण्ड जोड़े। इसके बाद राशि बनाकर तुलादि छः राशि हो तो तीन राशि घटाना। मेषादि छः राशि हों तो तीन राशि जोड़ना। यह संस्कार चन्द्र, शनि का विपरीत होता है। बुध के अयन बल में तीन राशि सदा जोड़ना । तत्पश्चात् अंशादि बनाकर तीन का भाग देने पर अयन बल स्पष्ट होता है। सूर्य का अयन बल द्विगुणित् करना।

सूर्य अयन बल साधन :

	6 – 28 – 45 – 35	स्पष्ट सूर्य
+	0 – 24 – 23 – 00	अयनांश
	7 – 23 – 08 – 35	सायण सूर्य हुआ
–	6 – 00 – 00 – 00	राशि कम की
	1 – 23 – 08 – 35	भुज हुआ
	× 33	दूसरा खण्ड
	759 – 264 – 1155	सर्वण किया

= 763 – 43 – 15 ÷ 30

30) 763 - 43 – 15 (25

60

163

150

13

× 60

780

+ 43

= 25 – 27 – 26

+ 45 – 00 – 00 गत खण्ड जोड़ा

70 – 27 – 26

30) 823 (27
60
223
210
13
× 60
780
+ 15
30) 795 (26
60
195
180
15

तुलादि राशि में रहने से तीन राशि में से घटाया।

=	90	–	00	–	00 तीन राशि
–	70	–	27	–	26
	19	–	32	–	34 ÷ 3 नियमानुसार

= 6 – 30 – 51

× 2 दुगना किया

13 – 01 – 42 सूर्य का अयन बल प्राप्त हुआ।

चन्द्र अयन बल साधन :-

	8	–	0	–	33	–	03	स्पष्ट चन्द्र
	0	–	24	–	23	–	00	अयनांश
	8	–	24	–	56	–	03	
–	6	–	00	–	00	–	00	
	2	–	24	–	56	–	03	
						×	12	
			288	–	672	–	36	सवर्ण किया

= 299 – 12 – 36 ÷ 30

30) 299 – 12 – 36 (9
270
29
× 60
1740
+ 12
30) 1752 (58
150
252
240
12
× 60
720
× 36
30) 756 (25
60
156
150
6

गत खण्ड = 45 + 33 = 78

= 9 – 58 – 25
+ 78 – 00 – 00 गत खण्ड जोड़े
87 – 52 – 25
+ 90 – 00 – 00 तीन राशि जोड़ी
177 – 52 – 25 ÷ 3

= 59 – 19 – 28 चन्द्र का अयन बल हुआ।

मंगल अयन बल साधन :

	5	–	17	–	43	–	40	स्पष्ट मंगल
+	0	–	24	–	23	–	00	अयनांश
	6	–	12	–	06	–	40	सायण ग्रह
–	6	–	00	–	00	–	00	

0 – 12 – 06 – 40 भुज

× 45 भुज खण्ड

504 – 240 – 1800 सवर्ण किया

= 508 – 30 – 00 ÷ 30

30) 508 – 30 – 00 (16

30

208

180

28

× 60

2080

\+ 30

30) 2110 (70

210

10

× 60

30) 600 (20

60

0

= 16 – 70 – 20 यहाँ गत खण्ड नहीं है क्योंकि पहला खण्ड है। अतः तुलादि सायण ग्रह रहने से 3 राशि में घटाया।

90 – 00 – 00

16 – 70 – 20

72 – 49 – 40 ÷ 3

= 24 – 16 – 33 (अयन बल मंगल)

बुध अयन बल साधन :

7 –	20 –	24 –	32	स्पष्ट बुध
0 –	24 –	23 –	00	अयनांश
8 –	14 –	47 –	32	
– 6 –	00 –	00 –	00	

2 – 14 – 47 – 32 भुज

× 12 भुज खण्ड

168 – 564 – 384 सवर्ण किया

= 170 – 30 – 24 ÷ 30

30) 177 – 30 – 24 (5

150

27

× 60

30) 1620(54 = 5 – 54 – 0 गत खण्ड 45 + 33 = 78

150

120 5 – 54 – 0

120 + 78 भुज खण्ड

×

30) 24 (0 83 – 54 – 00

+ 90 – 00 – 00 तीन राशि जोड़ी

173 – 54 – 00 ÷ 3

= 57 – 58 = 0 बुध का अयन बल हुआ।

गुरू अयन बल साधन :-

9 – 16 – 18 – 45 स्पष्ट ग्रह

0 – 24 – 23 – 00 अयनांश जोड़ा

10 – 10 – 41 – 45 सायण गुरू

12 – 00 – 00 – 00 नौ राशि से ज्यादा है अतः 12 में से घटाया

10 – 10 – 41 – 45

1 – 19 – 18 – 15

× 33 दूसरा भुज खण्ड आया

627 – 594 – 495 सवर्ण किया

= 637 ÷ 02 – 15 ÷ 30

30) 637 – 2 – 15 (21

60

37

30

7

× 60

420

+ 2 = 21 – 14 – 04

30) 422 (14 + 45 गत खण्ड जोड़ा

30 66 – 14 – 04

122 तुलादि खण्ड में रहने से 3 रशि मे से घटाया।

120

2

× 60

120 90 – 00 – 00

+ 15 — 66 – 14 – 4

30) 135 (4 23 – 45 – 56 ÷ 3

120 = 7 – 55 गुरू का अयन बल हुआ।

15

शुक्र अयन बल साधन :-

```
    6 – 12 – 54 – 02   स्पष्ट शुक्र
    0 – 24 – 23 – 00   अयनांश
  ------------------
    7 – 07 – 17 – 02   सायन शुक्र
 –  6 – 00 – 00 – 00   राशि घटायी
  ------------------
    1 – 7 – 17 – 2     भुज
               × 33    दूसरा भुज खण्ड
  ------------------
       231 – 561 – 66  सवर्ण किया
    = 240 – 22 ÷ 06 ÷ 30
```

```
30) 240 – 22 – 6 ( 8
    240
    ---
     ×                        = 8 – 0 – 44
30) 22 ( 0                    + 45              गत खण्ड जोड़
   × 60                       ----------------
   ----                         53 – 0 – 44
   1320
    + 6                       तुलादि सायन ग्रह होने से 3 राशि में घटाया।
30) 1326 ( 44
    120                         90 – 00 – 00
    ---                       — 53 – 00 – 49
    126                       ----------------
    120                         36 – 59 – 16 ÷ 3
    ---
     6                        = 12 – 19 – 45 शुक्र अयन बल आया।
```

शनि अयन बल साधन :

```
    7 – 6 – 5 – 23       स्पष्ट शनि
 +  0 – 24 – 23 – 00     अयनांश
  ------------------
```

```
        8  –  00  –  28  –  23  सायण ग्रह
   –    6  –  00  –  00  –  00
   ----------------------------
        2  –  00  –  28  –  23  भुज हुआ
                        ×  12  तीसरा भुज खण्ड
   ----------------------------
           –  00  –  336 –  276 सवर्ण किया
        =  5 – 40 – 36 ÷ 3

30) 5 – 40 – 36 ( 0
 × 60
 ----
  300
+  40                          गत खण्ड 45 + 33 = 78
30) 340 ( 11
   300
   ---
    40                  =  0   –  11  –  21
    30                  +  78  –  00  –  00 भुज खण्ड जोड़ा
   ---                  ---------------------
    10                     78  –  11  –  21
 ×  60
   ---
   600    शनि तुलादि सायण ग्रह होने विपरीत संस्कार अर्थात 3 राशि जोड़ी।
    36
30) 636 ( 21
   60
   ---
   36                      78  –  11  –  21
   30                   +  90  –  00  –  00
   ---                  ---------------------
    6                      168 –  11  –  21 ÷ 3
                        =  56 – 3 – 47 शनि का अयन बल हुआ।
```

युद्ध बल साधन विधि : "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय छः श्लोक 25 – 27 में ग्रहों का युद्ध बल दिया। इष्टकाल के ग्रह स्पष्टों में कोई भी दो ग्रह, राशि, अंश, कला, विकला में समान हो तो उन दोनों ग्रहों का युद्ध समझना चाहिए। युद्ध बल जानने की रीति यह है कि उन दोनों ग्रहों का आया हुआ बल परस्पर घटाकर जो अन्तर हो वह हीन बल में घटाना और अधिक बल में युक्त करना तो हीन बली ग्रह दक्षिण दिशा का निर्जित बल कहलाता है। बलाधिक ग्रह उत्तर दिशा का विजयी कहलाता है। हमारे मानक उदाहरण में कोई ग्रह राशि, अंश, कला, विकला के समान नहीं है। अतः सभी ग्रहों का बल शून्य ग्रहण करेंगे।

कुल काल बल

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
नतोन्नत बल	9 – 18	50 – 42	50 – 42	60 – 00	9 – 18	9 – 18	50 – 42
पक्ष बल	49 – 25	10 – 35	49 – 25	10 – 35	10 – 35	10 – 35	49 – 25
त्रिभाग बल	00 – 00	00 – 00	00 – 00	00 – 00	60 – 00	60 – 00	00 – 00
अब्द बल	15 – 00	0 – 00	00 – 00	00 – 00	00 – 00	00 – 00	00 – 00
मास बल	00 – 00	00 – 00	00 – 00	00 – 00	00 – 00	00 – 00	30 – 00
वार बल	0 – 00	0 – 00	00 – 00	00 – 00	45 – 00	00 – 00	00 – 00
होरा बल	0 – 00	60 – 00	00 – 00	0 – 00	0 – 00	0 – 00	00 – 00
अयन बल	13 – 01	59 – 19	24 – 16	57 – 58	7 – 55	12 – 19	56 – 03
युद्ध बल	00 – 00	0 – 00	0 – 00	0 – 00	0 – 00	0 – 00	0 – 00
कुल काल बल	86 – 44	180 – 36	124 – 23	128 – 33	132 – 48	92 – 12	186 – 10

चेष्टा बल :-

शीघ्रभुक्तेस्तु पादोनं दलं शीघ्रतरस्य तु ।

मध्यमस्फुटविश्लेषदलयुक्तोनित स्फुटात् ।।

मध्यमे त्वधिके न्यूने शीघ्रादत्रास्फुटं ज्यजेत् ।

चेष्टाकेद्रं भखेटानां रवींद्रोरयनांशयुक् ।।[1]

चेष्टा बल साधन विधि : "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड अध्याय छः श्लोक 28–29 में चेष्टा बल साधन दिया है। प्रथम सूर्यादि ग्रहों को मध्यम करना तत्पश्चात् स्पष्ट करना। ग्रहों के मध्यम स्पष्ट करने की विधि ग्रह लाघव से करना सारणी से करना हो तो केशवी जातक से करना चाहिए। मानक उदाहरण में हम चेष्टा बल केशवी जातक से ग्रह मध्यम तथा स्पष्ट करेंगे। इसके पश्चात् शीघ्रोच्च तथा चेष्टा केन्द्र ज्ञात कर 3 से भाग देकर चेष्टा बल साधन करेंगे। चेष्टा बल ज्ञात करने के लिए सबसे पहले अहर्गण साधन करना पड़ता है । जो निम्न प्रकार से है :–

अहर्गण[2] साधन विधि :– 1442 वर्तमान शक में कम करना जो शेष रहे उसको 11 से भाग देना जो लब्धि आवे वह चक्र जानना और शेष रहा उसको 12 से गुणा देना चैत्रादि इष्ट मास तक युक्त करना वह मध्यम मासगण हुआ उसको दो स्थानों में रखना एक में चक्र दूना और 10 मिलाकर 33 का भाग देना जो लब्धि आवे उसको 30 से गुणा देना और शुद्ध प्रतिपदा से इष्ट तिथि तक जोड़ के चक्र को जो षटयंश सो युक्त करके दो स्थानों में रखना । एक में 64 का भाग देके जो लब्धि आवे सो ऊनाह जानना । इसको दूसरे में कम करना जब जो अंक आवे उसे अहर्गण जानना जो अहर्गण आया सो शुद्ध किया अशुद्ध जानने वास्ते चक्र को 5 से गुण के अहर्गण में युक्त करना और 7 से भाग देना जो शेष रहे सो इष्ट वार जानना। वार की गणना 0 शेष से चन्द्र वार, 1 से मंगलादि क्रम को जानना ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 28-29, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

2. "केशवीजातकम्", गंगाविष्णु श्री कृष्णदास 'लक्ष्मीवेक्ङ्टेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई, पेज 2 ।

मानक उदाहरण में शक 1907 गुरूवार का जन्म है।

शक संवत् = 1907

− 1442 = 42 चक्र 3 शेष

11) 465 (42

44

25 $42 \times 2 = 84 + 10 = 94$

22

3

6) 42 (7 चक्र षष्ट्यंश

42

×

$3 \times 12 = 36 + 7$ (गत मास) $= 43$

$43 + 94 = 137 \div 33$

= 4 ल० 5 शेष

43

+ 4 अधिमास

47

× 30

1410

+ 1 गततिथि

1411

+ 7 चक्र षष्टयांश

1418

$1418 \div 64$

22 ल० 10 शेष

1418

− 22

1396 अहर्गण हुआ

अहर्गण जांच : $42 \times 5 = 210 + 1396 = 1606 \div 7 = 22$ ल० 3 शेष गुरूवार आया।

मध्यम ग्रह साधन विधि : अहर्गण को 60 से भाग देना जो लब्धि और शेष ऐसे 2 अंक आते हैं सो आगे मध्यम ग्रहसारणी में सूर्यादि ग्रहों का 1 से 67 तक शेष लब्धि कोष्टक है, उसके नीचे वह कोष्टक के राश्यादि अंक लिखे हैं वह शेष कोष्टक ही लब्धि कोष्टक है । परंतु उसका फल लेने की रीति जुदी है । वह प्रकार ऐसा है जो लब्धि अंक हो सो शेष कोष्टक में देखना । अनंतर वह कोष्टक के नीचे राशि सहित नौ अंक है जिसमें राशि का त्याग करके अंक लेना । अनंतर पहला अंक जो हो उसको 6 से भाग देके जो शेष रहे जिसको दूना करना तो लब्धि कोष्टक राशि अंक होता है । अनंतर उसके नीचे का अंक अंश स्थान में आता है इस वास्ते 30 से अधिक हो तो 30 से भाग देके जो अंक आवे उसको राशि स्थान के जोड़ देना जो लब्धि कोष्टक फल तैयार होता है ।

सारणी का अभिष्ट शेष कोष्टक के नीचे अंक हो सो और अभीष्ट लब्धि कोष्टक का जो अंक हो सो दोनों का योग करना । अनंतर उस अंक को चक्रनिघ्न ध्रुवोनक्षेपक तैयार सारणी में उपर के बाजू के नीचे अंक है सो अभिष्टवचक्र के नीचे के अंक में युक्त करना तो प्रातःकाल का मध्यम ग्रह होता है । इष्ट काल का मध्यम ग्रह करना हो तो सूर्योदय के अनंतर जो इष्ट घटी और पल हो उसका कोष्टक ग्रहसारणी के पीछे राश्यादि लिखा है उसमें से अपन्ः जो इष्ट घटी, पल हो उसके नीचे के अंक को प्रातःकाल का जो ग्रह हो उसमें युक्त करना तो इष्ट काल का मध्य ग्रह होता है ।[1]

1396 ÷ 7 = 23 ल० 16 शेष   अहर्गण चक्र = 42

मध्यम सूर्य साधन :

0 – 15 – 46 – 10 – 44 – 34 – 24 (16 शेष का सारणी फल)

0 – 22 – 40 – 07 – 56 – 34 – 27 (23 लब्धि सारणी का फल)

---

1. ''केशवीजातकम्'', गंगाविष्णु श्री कृष्णदास, लक्ष्मीवेक्ङ्टेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई, पेज 2 ।

6) 22 (3

18

4 × 2 = 8 + 1 = 9 राशि अंक आया

30) 40 (1

30

10

	9 –	10 –	07 –	56 –	34 –	27 –	00 (संस्कारित सूर्य) लब्धि सा० फल
+	0 –	15 –	46 –	10 –	44 –	34 –	24 (शेष 16 का फल)
	9 –	25 –	54 –	07 –	19 –	01 –	24
+	9 –	03 –	15 –	18 –	00 –	00 –	00 (रवि ध्रुव क्षेपक चक्र 42)
	18 –	29 –	09 –	25 –	19 –	01 –	24
	12 –	00					(राशि घटाई)
	6 –	29 –	09 –	25 –	19 –	01 –	24 (प्रात कालिक मध्यम सूर्य)

	0 –	00 –	46 –	19 (47 घटी कोष्टक फल)
+	0 –	00 –	00 –	54 (45 पल कोष्टक फल)
	0 –	00 –	47 –	13

	6 –	29 –	09 –	25
+	0 –	00 –	47 –	13
	6 –	29 –	56 –	38 (इष्ट कालिक मध्यम सूर्य)

मध्यम चन्द्र साधन :

7 –	00 –	49 –	17 –	50 –	56 (16 शेष सारिणी फल)
10 –	03 –	03 –	21 –	54 –	28 (23 लब्धि सारिणी फल)

6) 3 (0　　　　　　30) 3 (0
0　　　　　　　　0
3× 2 = 6 राश्यांक　　　3　= 6 + 0 = 6 राश्यांक

6 – 3 – 21 – 54 – 28 – 00 (संस्कारित चं० लब्धि सा० फल)
+ 7 – 0 – 49 – 17 – 50 – 56 (16 शेष फल)
13 – 04 – 11 – 12 – 18 – 56
+ 6 – 10 – 46 – 18 – 00 – 00 (42 चक्र चन्द्र क्षेपक फल)
19 – 14 – 57 – 30 – 18 – 56
– 12 (राशि घटाई)
7 – 14 – 57 – 30 – 18 – 56 (प्रातः कालिक मध्यम चन्द)
+ 0 – 10 – 19 – 16 (47 घटी फल)
+ 0 00 – 12 – 04 (55 पल फल)
7 – 25 – 20 – 50 – 18 – 56 (इष्ट कालिक मध्यम चन्द्र)

चन्द्रोच्च साधन :

0 – 01 – 46 – 53 – 42 – 51 (16 शेष सारिणि फल)
0 – 02 – 33 – 39 – 42 – 51 (23 लब्धि सारिणि फल)

6) 2 (0　　　　　　30) 33 (1
0　　　　　　　　30
2 × 2 = 4 + 1 = 5　　　3

5 – 03 – 39 – 42 – 51 – 00 (संस्कारित चन्द्र)
+ 0 – 01 – 46 – 53 – 42 – 51(16 शेष सारिणि फल)
5 – 05 – 26 – 36 – 33 – 51
+ 7 – 22 – 3 – 00 – 00 – 00 (42 चक्र क्षेपक फल)

12 – 27 – 29 – 36 – 33 – 51
– 12

0 – 27 – 29 – 36 – 33 – 51 (प्रातः कालीन चन्दोच्च)
+ 0 – 0 – 5 – 13 (47 घटी फल)
+ 0 – 0 – 0 – 6 (55 पल फल)

0 – 27 – 34 – 55 – 33 – 51 (इष्ट कालिक चन्द्रोच्च)

मध्यम मंगल साधन :

0 – 08 – 23 – 04 – 16 – 57 (16 शेष सारिणि फल)

0 – 12 – 03 – 09 – 54 – 23 (23 लब्धि सारिणि फल)

6) 12 (2   30) 3 (0
12   0

0 × 2 = 0 + 0 = 0   3

0 – 03 – 09 – 54 – 23 – 00 (संस्कारित मंगल)
+ 0 – 8 – 23 – 04 – 16 – 57 (16 शेष सारिणी फल)

0 – 11 – 32 – 58 – 39 – 57
+ 4 – 14 – 44 – 00 – 00 – 00 (42 चक्र मंगल क्षेपक फल)

4 – 26 – 16 – 58 – 39 – 57 (प्रातः कालिक मध्य मंगल)
+ 0 – 00 – 24 – 36 (47 घटी कोष्टक फल)
+ 0 – 00 – 00 – 28 (55 पल कोष्टक फल)

4 – 26 – 42 – 02 – 39 – 57 (इष्ट कालिक मध्यम मंगल)

बुध केन्द्र साधन :

1 – 19 – 42 – 26 – 09 – 55 (16 शेष बुध सारिणि फल)

2 – 11 – 27 – 15 – 06 – 46 (23 लब्धि बुध केन्द्र सारिणि फल)

6) 11 (1   30) 27 (0

6   0

5 × 2 = 10 + 0 = 10   27

10 – 27 – 15 – 06 – 46 – 00 (संस्कारित बुध केन्द्र)

\+ 1 – 19 – 42 – 26 – 09 – 55 (16 शेष बुध केन्द्र सारिणी फल)

12 – 16 – 57 – 32 – 55 – 55

\+ 2 – 14 – 39 – 00 – 00 – 00 (42 चक्र ध्रुव क्षेपक फल)

15 – 01 – 36 – 32 – 55 – 55

– 12 (राशि घटाई)

3 – 9 – 36 – 32 – 55 – 55

\+ 0 – 02 – 26 – 00 (47 घटी कोष्टक फल)

\+ 0 – 00 – 02 – 50 (55 पल कोष्टक फल)

3 – 04 – 05 – 22 – 55 – 55 (इष्ट कालिक बुध केन्द्र)

मध्यम गुरू साधन :

0 – 01 – 19 – 46 – 17 – 08 – 00 (16 शेष कोष्टक फल)

0 – 01 – 54 – 40 – 17 – 08 – 00 (23 लब्धि कोष्टक फल)

6) 01 (0   30) 54 (1

0   30

1 × 2 = 2 + 1 = 3   24

3 – 24 – 40 – 17 – 08 – 00 – 00 (संस्कारित गुरू)

\+ 0 – 01 – 19 – 46 – 17 – 08 – 00 (16 शेष कोष्टक फल)

3 – 26 – 00 – 03 – 25 – 08 – 00

\+ 6 – 07 – 40 – 00 – 00 – 00 – 00 (42 चक्र ध्रुव क्षेपक फल)

10 – 03 – 40 – 03 – 25 – 08 – 00 (प्रातः कालिक मध्यम गुरू)

\+ 00 – 00 – 03 – 55 (47 घटी कोष्टक फल)

\+ 00 – 00 – 00 – 04 (55 पल कोष्टक फल)

---

10 – 03 – 44 – 02 – 25 – 8 – 00 (इष्ट कालिक मध्यम गुरू)

शुक्र केन्द्र साधन :

0 – 09 – 51 – 54 – 41 – 46 – 00 (16 शेष कोष्टक फल)

0 – 14 – 10 – 52 – 22 – 32 – 00 (23 लब्धि कोष्टक फल)

6) 14 (2   30) 10 (0

12   0

$2 \times 2 = 4 + 0 = 4$ 10

4 – 10 – 52 – 22 – 32 – 00 – 00 (संस्कारित शुक्र)

\+ 0 – 09 – 51 – 54 – 41 – 46 – 00 (16 शेष फल)

---

4 – 20 – 44 – 17 – 13 – 46 – 00

\+ 5 – 26 – 45 – 00 – 00 – 00 – 00 (42 चक्र ध्रुव क्षेपक फल)

---

10 – 17 – 29 – 17 – 13 – 46 – 00 (प्रातः कालिक शुक्र केन्द्र)

\+ 0 – 00 – 25 – 59 (47 घटी कोष्टक फल)

\+ 0 – 00 – 00 – 34 (55 पल कोष्टक फल)

---

10 – 17 – 58 – 50 – 13 – 46 – 00 (इष्ट कालिक शुक्र केन्द्र)

मध्यम शनि साधन :

0 – 00 – 32 – 06 – 09 – 14 (16 शेष कोष्टक फल)

0 – 00 – 46 – 08 – 50 – 46 (23 लब्धि कोष्टक फल)

6) 60 (0   30) 40 (1

0   30

$0 \times 2 = 0 + 1 = 1$ 16

	1	– 16	– 08	– 50	– 46	– 00	(संस्कारित शनि)
+	0	– 00	– 32	– 06	– 9	– 14	(16 शेष कोष्टक फल)
	1	– 16	– 40	– 56	– 55	– 14	
+	5	– 15	– 57	– 00	– 00	– 00	(42 चक्र ध्रुव क्षेपक फल)
	7	– 02	– 37	– 56	– 55	– 14	(प्रातः कालिक मध्यम शनि)
+	0	– 00	– 01	– 34			(47 घटी कोष्टक फल)
+	0	– 00	– 00	– 1			(55 पल कोष्टक फल)
	7	– 02	– 39	– 31	– 55	– 14	(इष्ट कालिक मध्यम शनि)

प्रातः कालिक सूर्यादि मध्यम ग्रह चन्द्रोच्च, बुध केन्द्र, शुक्र, केन्द्र

	सू०	बु०	शु०	चं०	चन्द्रोच्च	मं०	बुध केन्द्र	गुरू	शु० केन्द्र	श०
रा०	6	6	6	7	0	4	3	9	10	7
अं०	29	29	29	14	27	26	01	23	17	2
क०	09	09	09	57	29	10	36	40	29	37
वि०	25	25	25	30	36	58	32	03	17	56
प्र०वि०	19	19	19	18	33	39	55	25	13	55
प्र०प्र०वि०	01	01	01	56	51	57	55	08	46	14
प्र०प्र०प्र०वि०	24	24	0	0	0	0	0	0	0	0

इष्ट कालिक मध्यम ग्रह चन्द्रोच्च, बुध केन्द्र, शुक्र, केन्द्र

	सू०	बु०	शु०	चं०	चन्द्रोच्च	मं०	बुध केन्द्र	गुरू	शु०केन्द्र	श०
रा०	[illegible]	6	6	7	0	4	3	10	10	7
अं०	29	29	29	25	27	26	04	03	17	2
क०	56	56	56	28	34	42	05	44	58	31
वि०	38	38	38	50	55	02	22	02	50	55
प्र०वि०	19	10	19	18	33	39	55	25	13	14
प्र०प्र०वि०	1	01	01	56	51	57	55	08	46	14
प्र०प्र०प्र०वि०	24	24	24	0	0	0	0	0	0	0

सूर्य साधन विधि : मध्यम सूर्य में सूर्य का मन्दोच्च घटाने से सूर्य का मन्द केन्द्र होता है। मन्द केन्द्र का भुज बनाकर अंश करें। सूर्य स्पष्ट सारणी में अंश कोष्टक का फल ग्रहण कर उसके नीचे गुण तथा हर ज्ञात करें। भुज के कला विकला में **गुण तथा हर का संस्कार करें। इस** फल को अंश फल की विकला में युक्त करें। यह सूर्य **का मन्द फल होगा। मन्द फल को** मध्यम सूर्य में ऋण/धन जैसा अंक प्राप्त हो करकें **तो मन्द स्पष्ट सूर्य होता है। मन्द** स्पष्ट सूर्य में अयनांश युक्त करें तो यह सायण सूर्य होगा। इसका भुज करें जो हमने पहले भुज खण्ड निकाले थे वह भुज खण्ड लेकर पहले आया गुण फल युक्त करके 60 से भाग देने से सूर्य का चर प्राप्त होगा। इस चर को मन्द स्पष्ट सूर्य में **धन करने पर सूर्य स्पष्ट होगा।** इसी रीति से अन्य ग्रह भी स्पष्ट करना। "केशवी जातक" **द्वारा ग्रह साधन निम्न प्रकार से हैं :–**

सूर्य साधन :

2 – 18 – 00 – 00 (सूर्य मन्दोच्च)

– 6 – 29 – 56 – 38 (मध्यम सूर्य)

7 – 18 – 03 – 22 (सूर्य मन्द केन्द्र)

– 6

1 – 18 – 3 – 22 (भुज)

48° – 3' – 22" (भुजांश)

1 – 37 – 9 (48° कोष्टक फल) गुणा = 3, हर = 2

\+ 5 (गुण हर फल)

1 – 37 – 14 (मन्द फल)

3 – 22

× 3

10 – 06 ÷ 2

6 – 29 – 56 – 38 (मध्यम सूर्य)

– 1 – 37 – 14 (मन्द फल)(केन्द्र तुलादि होने से ऋण) = 5–03 (गुण हर फल)

6 – 28 – 19 – 24 (मंद स्पष्ट सूर्य)

\+ 24 – 23 – 35 (अयनांश)

---

7 – 22 – 42 – 59 (सायण सूर्य)

– 6

---

1 – 22 – 42 – 59 अब भुज एक आया हमारा प्रथम चरखण्ड 66 है।

इसमें पहले आये गुण फल 3 युक्त किया।

66 + 3 = 69 ÷ 60 = 1 – 9 (चर प्राप्त हुआ)

6 – 28 – 19 – 24 (मन्द स्पष्ट सू०)

\+ 1 – 9 (चर)

---

6 – 28 – 20 – 33 (सूर्य स्पष्ट हुआ)

चन्द्र साधन : इसमें सबसे पहले चन्द्र का त्रिफल संस्कार किया जाता है जो निम्न प्रकार से है :–

चन्द्र त्रिफल संस्कार विधि :

(i) चन्द्र साधन के लिए पहले चन्द्र का त्रिफल संस्कार किया जाता है । प्रथम फल अपने देश से दक्षिणोत्तर रेखा कितने योजन है, वह देखकर जो योजन हो उसको 6 से भाग दे करके जो भागाकार आवें वह कला होगी, सो अपना देश दक्षिणोत्तर रेखा के पश्चिम होय तो फल धन ओर पूर्व होय तो फल ऋण जानना।

(ii) द्वितीय फल पहिले जो चर किया है उसको 2 से गुणा कर 9 से भाग देने जो फल आवे सा कलादि जानना। चर जैसा ऋण धन होवे वैसा ऋण, धन करना।

(iii) तृतीय फल सूर्य का जो मन्दफल आया है उसको 27 से भाग देना जो फल आवे सो अंशादि जानना। सूर्यफल ऋण धन जानना। अब तीनों फलों का एकीकरण करना। धन किंवा ऋण फल आवें उसे मध्यम चन्द्र में फल ऋण होय तो ऋण, धन होय तो धन करना तो त्रिफल संस्कृत चन्द्र होता है ।

चन्द्र त्रिफल संस्कार : चन्द्र में त्रिफल संस्कार के लिए देशान्तर संस्कार किया जाता है। मुख्य देशान्तर रेखा भारत के वर्तमान में $82\frac{1}{2}$ अंश है परन्तु पहले उज्जैन से गुजरने वाली देशान्तर रेखा ही मुख्य रूप से प्रधान देशान्तर या रेखांश या मध्यान्ह रेखा के नाम से प्रचलन में थी। अतः ''केशवी जातक'' में उज्जैन वाली रेखा ही प्रयोग में लाई गई है। इसी से देश का पूर्व भाग या पश्चिम भाग देखा जाता है तथा योजनों में दूरी नापी जाती है।

ग्रह लाघव द्वारा पृथ्वी की परिधि 4800 योजन है। अतः दूरी नापना निम्न प्रकार से होग। एक वृत (पृथ्वी गोल) में 360 अंश होते हैं। इसलिए 360° अंश = 4800 योजन

1 अंश $= 4800 \div 360 = \frac{80}{6} = \frac{40}{3} = 13\frac{1}{3}$ योजन

1 अंश = 60 कला अतः 1 कला = $\frac{40}{3} \div 60 = \frac{40}{3} \times \frac{1}{60} = \frac{2}{9}$ योजन

दूरी नापने के लिये = देशान्तर कला $\times \frac{2}{9} =$ योजन दूरी

(1) देशान्तर

रोहतक = 76–38	1 कला = $\frac{2}{9}$ योजन दूरी
उज्जैन = 75–43	55 कला = $\frac{2}{9} \times \frac{55}{1} = \frac{110}{9} = 12\frac{2}{9}$ योजन दूरी
अन्तर = 0–55 कला	देशान्तर संस्कार = $\frac{110}{9} \div \frac{6}{1} = \frac{110}{9} \times \frac{1}{6} = \frac{55}{27}$
	= 2 कला, 2 विकला देशान्तर पूर्व में होने से ऋण (प्रथम फल)

		कला	–	विकला	
(2)	चर = 66 × 2 = 132 ÷ 9 =	1	–	4	(द्वितीय फल) (ऋण)
(3)	सूर्य–मन्दफल : 1 – 37 – 14 ÷ 37 =	0	–	4	(तृतीय फल) (ऋण)

कला	–	विकला	
2	–	2	(ऋण)
1	–	4	(ऋण)
0	–	4	(ऋण)
3	–	10	

चन्द्र साधन विधि : चन्द्रोच्च में त्रिफल संस्कृत चन्द्र कम करना तो चन्द्र का मन्द केन्द्र होता है । अनंतर उस केन्द्र का भुज करना, यह सायण ग्रह का करना, भुज का अंश करना, अब अंश कोष्टक के आगे स्पष्ट सारणी में देखना और उसके नीचे का भागायिक फल लेना अनंतर भुज भाग के नीचे जो कला विकला होय उसको इष्ट भुजांश कोष्टक के नीचे जो गुण लिखा है उससे गुणा कर उसी कोष्टक के नीचे जो हर लिखा है उससे भाग देने से भागाकार आयेगा। सो भुज भागफल के विकला में युक्त करना तो चन्द्र का मन्द होता है। वह फल घन होये तो त्रिफल संस्कृत चन्द्र में युक्त करना ऋण होय तो कम करना तो चन्द्र स्पष्ट होता है।

चन्द्र साधन :

7 – 25 – 28 – 50 (मध्यम चन्द्र)
– 00 – 3 – 10 (ऋण त्रिफल)
7 – 25 – 25 – 40 (त्रिफल संस्कृत चन्द्र)
\+ 23 – 24 – 35 (अयनांश जोड़ा)
8 – 18 – 50 – 15 सायन ग्रह

0 – 27 – 34 – 55 (चन्द्रोच्च)
– 8 – 18 – 50 – 15
3 – 08 – 44 – 40
6 – 00 – 00 – 00
– 3 – 8 – 44 – 40
2 – 21 – 15 – 20 (भुज हुआ)
81°– 15'– 20" (भुजांश हुआ)
4 – 57 – 49 (81° सारिणी फल)
\+ 12 – 16 (गुण हर फल)
4 – 58 – 01 – 16
7 – 25 – 25 – 40
4 – 58 – 01
8 – 00 – 23 – 41 (चन्द्र स्पष्ट हुआ)

गुण = 4
हर = 5
15 – 20
× 4
5) 61 – 20 (12–16
60
1
× 60
60
\+ 20
5) 80(
80

भौम साधन :

6	– 29	– 56	– 38	(मध्यम सूर्य)
– 4	– 26	– 42	– 02	(मध्यम मंगल)
2	– 03	– 14	– 36	(प्रथम शीघ्र केन्द्र)

63° – 14' – 36" (केन्द्रांश)

23	– 49	– 12		(63° शीघ्र सारिणी फल)
	4	– 46		(14' शीघ्र सारिणी फल)
		12	– 14	(36' शीघ्र सारिणी फल)
23	– 54	– 10	– 14	(प्रथम शीघ्र फल)

23 – 54 – 10 ÷ 2 = 11 – 57 – 5 (प्रथम शीघ्र फलार्द्ध)

4	– 26	– 42	– 02	(मध्यम भौम)
+	11	– 57	– 5	(फलार्द्ध)
5	– 08	– 39	– 07	(दल संस्कृत भौम)

4	– 00	– 00	– 00	(भौम मन्दोच्य)
– 5	– 08	– 39	– 07	(दल संस्कृत भौम)
10	– 21	– 20	– 53	(भौम मन्द केन्द्र)

12	– 00	– 00	– 00	
–10	– 21	– 20	– 53	
1	– 08	– 39	– 07	(भुज)

38° - 39' - 7" (मन्द केन्द्रांश)

7	11	36		(38° मन्द फल सा० फल)
	7	16		(39' मन्द फल सा० फल)
		1	8	(7' मन्द फल सा० फल)
7	18	53	8	(मन्द फल भौम)

	4	26	42	02	(मध्यम भौम)
−		7	18	53	(भौम मन्द केन्द्र तुलादि होने से ऋण)
	4	19	23	09	(मन्द स्पष्ट भौम)

	2	3	14	36	(प्रथम शीघ्र केन्द्र)
+		7	18	53	(विरूद्ध किया)
	2	10	33	29	(द्वितीय शीघ्र केन्द्र)

70° – 33' – 29" (द्वितीय शीघ्र केन्द्रांश)

26	12	0		(70° शीघ्र सा० फल)
	11	13		(33' शीघ्र सा० फल)
		9	52	(29' शीघ्र सा० फल)
26	23	22	52	(द्वितीय शीघ्र फल)

4	19	23	9	(मन्द स्पष्ट भौम)
+	26	23	22	
5	15	46	31	(भौम स्पष्ट हुआ)

बुध साधन :

4 – 28 – 29 – 32 (मध्यम बुध)

3 – 4 – 5 – 22 – 55 (बुध केन्द्र)

= 94° – 5' – 22" (बुध केन्द्राश)

20 – 14 – 48 (94° शीघ्र सारिणी फल)

0 – 26 (5' शीघ्र सारिणी फल)

1 – 56 (22" शीघ्र सारिणी फल)

20 – 15 – 15 –56 ÷ 2 = 10 – 7 – 37 – 10

6 – 28 – 56 – 38 (मध्यम बुध)

+ 10 – 7 – 37 (प्रथम शीघ्र फलार्द्ध)

7 – 09 – 04 – 15

7 – 00 – 00 – 00 (बुध मन्दौच्च)

7 – 9 – 4 – 15

11 – 20 – 55 – 45

12 – 00 – 00 – 00

– 11 – 20 – 55 – 45

0 – 09 – 04 – 15 (मन्द केन्द्र बुध)

9° – 4' – 15" (केन्द्रांश)

0 – 43 – 12 (9° मन्द फ० सारिणी फल)

+ 0 – 19 (4' मन्द फ० सारिणी फल)

+ 1 – 12 (15" मन्द फ० सारिणी फल)

0 – 43 – 32 – 12

6 – 28 – 29 – 32 (मध्यम बुध)
\+ 0 – 43 – 32

6 – 29 – 13 – 04 (मन्द स्पष्ट बुध)

3 – 4 – 5 – 22 (प्रथम शीघ्र केन्द्र)
– 0 – 0 – 43 – 32 (मन्द फल)

3 – 3 – 21 – 50

93° – 21' – 50"

20 – 9 – 16 (93° शीघ्र सारिणी फल)
\+ 1 – 49
\+ 4 – 20

20 – 11 – 09 – 20 (द्वि० शीघ्र फल)

6 – 29 – 13 – 04 (मन्द स्पष्ट बुध)
\+ 20 – 11 – 9

7 – 19 – 24 – 13 (बुध स्पष्ट)

गुरू साधन :

6 – 29 – 56 – 38 (मध्यम सूर्य)
–10 – 3 – 44 – 2 (मध्यम गुरू)

8 – 26 – 2 – 34

12 – 00 – 00 – 00
8 – 26 – 12 – 34

3 – 03 – 47 – 26 (भुज)

93° – 47' – 26" (भुजांश)

10 – 38 – 24 (93° शीघ्र सारिणी फल)

+ 0 – 38 (47' शीघ्र सारिणी फल)

0 – 21 (26" शीघ्र सारिणी फल)

---

10 – 39 – 02 –21 ÷ 2 = 5 – 19 – 31 (फलार्द्ध)

10 – 3 – 44 – 2 (मध्यम गुरू)

– 5 – 19 – 31 (फलार्द्ध)

---

9 – 28 – 24 – 31 (दल संस्०त)

6 – 00 – 00 – 00 (मन्दौच्य)

9 – 28 – 24 – 31

---

8 – 1 – 35 – 29 (मन्द केन्द्र)

– 6

---

2 – 1 – 35 – 29 (भुज)

61° – 35' – 29" (मन्द केन्द्रांश)

4 – 50 – 48 (61° मन्द सा० फल)

1 – 38 (31' मन्द सा० फल)

1 – 21 (29" मन्द सा० फल)

---

4 – 52 – 27 – 21 (मन्द फल)

10 – 3 – 44 – 02 (मध्यम गुरू)

– 4 – 52 – 27 (मन्द फल ऋण)

---

9 – 28 – 51 – 35 (मन्द स्पष्ट गुरू)

8	– 26	– 12	– 34	(प्रथम शीघ्र केन्द्र)
+	4	– 52	– 27	(विरूद्ध किया)
9	– 01	– 05	– 01	(द्वि० शी० फल)
12	– 00	– 00	– 00	
– 9	– 1	– 5	– 01	
2	– 28	– 55	– 59	(भुज केन्द्र)

88° – 55' – 59" (द्वि० भुज केन्द्रांश)

	10	– 29	– 36	(88° शी० सा० फल)
+		2	– 56	(55' शी० सा० फल)
+			3 – 9	(59" शी० सा० फल)
10	– 32	– 35	– 9	(द्वि० शी० फल)

9	– 28	– 51	– 35	(मन्द स्पष्ट गुरू)
–	10	– 32	– 35	(द्वि० शी० फल)
9	– 18	– 15	– 00	(गुरू स्पष्ट हुआ)

शुक्र साधन :

10 – 17 – 58 – 50 (शुक्र केन्द्र तुलादि)

12 – 00 – 00 – 00

–10 – 17 – 58 – 50

1 – 12 – 01 – 10 (केन्द्र भुज)

42° – 1' – 10"

17 – 24 – 0 (42° शी० सा० फल)

\+ 0 – 24 (1' शी० सा० फल)

4 – 0 (10" शी० सा० फल)

17 – 24 – 28 – 0 ÷ 2 = 8 – 42 – 14 (फलार्द्ध)

6 – 29 – 56 – 38 (मध्यम शुक्र)

– 8 – 42 – 14 (फलार्द्ध ऋण)

6 – 21 – 14 – 24

3 – 00 – 00 – 00 (शुक्र मन्दोच्च)

6 – 21 – 14 – 24

8 – 8 – 45 – 36 (शुक्र मन्द केन्द्र तुलादि)

– 6 –

2 – 8 – 45 – 36 (भुज)

68° – 45' – 36" (शुक्र मन्द केन्द्रांश)

1 – 27 – 12 (68° मन्द सा० फल)

\+ 0 – 18 (45' मन्द सा० फल)

\+ 0 – 14 (36" मन्द सा० फल)

1 – 27 – 30 – 14

6 – 29 – 56 – 38 (मध्य शुक्र)

– 1 – 27 – 14(मन्द केन्द्र तुलादि होने से ऋण)

6 – 28 – 29 – 24 (मन्द स्पष्ट शुक्र)

10 – 17 – 58 – 50 (प्रथम शीघ्र केन्द्र)

\+ 1 – 27 – 14 (विरूद्ध के स्थान धन)

10 – 19 – 26 – 04 (द्वितीय शीघ्र केन्द्र)

12 – 00 – 00 – 00

— 10 – 19 – 26 – 4

1 – 10 – 33 – 56 (केन्द्र भुज)

40° – 33' – 56" (केन्द्र भुजांश)

16 – 36 – 0 (40° शीघ्र सा० फल)

13 – 12 (33' शीघ्र सा० फल)

\+ 22 – 24 (51" शीघ्र सा० फल)

16 – 49 – 34 – 24 (द्वितीय शीघ्र फल)

6 – 28 – 29 – 24(मन्द स्पष्ट शुक्र)

– 16 – 34 – 24(द्वितीय शीघ्र केन्द्र तुलादि से ऋण)

6 – 11 – 55 – 00 (शुक्र स्पष्ट हुआ)

शनि साधन :

6	– 29	– 56	– 38	(मध्यम सूर्य)
– 7	– 2	– 39	– 32	(मध्यम शनि)
11	– 27	– 17	– 06	(प्रथम शीघ्र केन्द्र)
12	– 00	– 00	– 00	
11	– 27	– 17	– 06	
0	– 02	– 42	– 54	

2° – 42' – 54" (केन्द्रांश भुज)

0	– 12	– 0		(2° शीघ्र सा० फल)
+	4	– 12		(42' शीघ्र सा० फल)
		5	– 24	(54" शीघ्र सा० फल)
0	– 16	– 17	– 24	÷ 2 = 0 – 8 – 8 – 42 (फलार्द्ध)

7	– 2	– 39	– 32	
–	0	– 8	– 8	(प्रथम केन्द्र तुलादि से ऋण)
7	– 2	– 31	– 24	
8	– 00	– 00	– 00	(मन्दौच्च शनि)
– 7	– 2	– 31	– 24	
0	– 27	– 28	– 36	(शनि मन्द केन्द्र मेषादि)

27° – 28' – 36" (शनि मन्द केन्द्रांश)

3	– 34	– 48		(27° मन्द सा० फल)
+	3	– 55		(28' मन्द सा० फल)
+		5	– 2	(36" मन्द सा० फल)
3	– 38	– 48	– 2	(मन्द फल शनि)

	7 – 2 – 39 – 31	(मध्यम शनि)
+	3 – 38 – 48	(फल+मन्द केन्द्र मेषादि होने से)
	7 – 6 – 18 – 19	(मन्द स्पष्ट शनि)
	11 – 27 – 17 – 6	(प्रथम शीघ्र केन्द्र)
–	3 – 38 – 48	(विरूद्ध किया)
	11 – 23 – 38 – 18	(द्वितीय शीघ्र केन्द्र)
	12 – 00 – 00 – 00	
–	11 – 23 – 38 – 18	
	0 – 06 – 21 – 42	(भुज)
	6° – 21' – 42"	(भुज केन्द्रांश)
	0 – 36 – 0	(6° शीघ्र सा० फल)
+	2 – 6	(21' शीघ्र सा० फल)
+	4 – 12	
	0 – 38 – 10 – 12	(द्वितीय शीघ्र सा० फल)
	7 – 6 – 18 – 19	(मन्द स्पष्ट शनि)
–	0 – 38 – 10	(द्वितीय शीघ्र सा० फल)
	7 – 5 – 40 – 09	(शनि स्पष्ट)

ग्रह स्पष्ट

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	
6	8	5	7	9	6	7	रा०
28	0	15	19	18	11	5	अं०
20	23	46	24	15	55	40	क०
33	41	31	13	0	0	9	वि०

विशेष नोट :- उपरोक्त ग्रह केशवी जातक ग्रन्थ से **केवल चेष्टा बल साधन के लिये स्पष्ट** किये गये हैं। इन ग्रहों में तथा प्रथम अध्याय में जो अन्तर आता है। वह अन्तर इसलिये आता है कि कुछ समय पश्चात् केशवी जातक में बनाई गई सारिणी फेल हो जाती है तथा आजकल कम्प्यूटर द्वारा जो ग्रह स्पष्ट किये जाते हैं उनमें मुख्यतः चित्रापक्षीय अयनांश का उपयोग किया जाता है लेकिन हमने चालन द्वारा निर्यण ग्रह गोमुत्रिका न्याय से प्रथम अध्याय में साधन किये है। केवल वे ही ग्रह फलादेश में उपयुक्त होंगे। अलग–अलग पंचागों में भी ग्रहों का अन्तर होता है। हमने "मार्तंड पञ्चांग" को आधार माना है।

शीघ्रोच्च साधन विधि :

1. मंगल, गुरू, शनि का शीघ्रोच्च = मध्यम सूर्य
2. बुध का शीघ्रोच्च = मध्यम सूर्य + बुध शीघ्र केन्द्र
3. शुक्र का शीघ्रोच्च = मध्यम सूर्य + शुक्र शीघ्र केन्द्र

शीघ्रोच्च साधन :

बुध :					
		4 – 24 – 5 – 22	बुध शीघ्र केन्द्र
	+	6 – 29 – 56 – 38	मध्यम सूर्य
		11 – 24 – 02 – 00	बुध शीघ्रोच्च

शुक्र :

10	– 17	– 58	– 50	शुक्र केन्द्र
+ 6	– 29	– 56	– 38	मध्यम सूर्य
17	– 17	– 55	– 28	
–12				
5	– 17	– 55	– 28	शुक्र शीघ्रोच्च

शीघ्रोच्च चक्र

मं०	बु०	गु०	शु०	श०
6	11	6	5	6
29	24	29	17	29
56	2	56	55	56
38	0	38	28	38

भौम चेष्टा बल साधन :

5	– 15	– 46	– 31	(स्पष्ट भौम)
– 4	– 26	– 42	– 2	(मध्यम भौम)
0	– 19	– 04	– 29 ÷ 2	
= 9	– 32	– 14		

	4	– 26	– 42	– 02	(मध्यम मं०)
–	0	– 9	– 32	– 14	(अन्तार्द्ध)
	4	– 17	– 09	– 48	
–	6	– 29	– 56	– 38	(शीघ्रोच्च)
	9	– 17	– 13	– 10	

```
   12 - 00 - 00 - 00
 -  9 - 17 - 13 - 10
 ------------------
    2 - 12 - 47 - 50      (चेष्टा केन्द्र)
 ------------------
 =   72 - 18 - 50 ÷ 3
 =   26 - 9 - 25   (भौम चेष्टा बल)
```

बुध चेष्टा बल साधन :

```
   7 - 19 - 24 - 13       (स्पष्ट बुध)
 - 6 - 29 - 56 - 38       (मध्यम बुध)
 ------------------
   0 - 19 - 27 - 35 ÷ 2
 = 9 - 48 -47 (अन्तार्ध)
```

```
    6 - 29 - 56 - 38      (मध्यम बुध)
 -  0 -  9 - 48 - 47[1]   (अन्तार्ध)
 ------------------
    6 - 20 - 07 - 51
 - 11 - 24 -  2 - 00      (शीघ्रोच्च)
 ------------------
    6 - 26 - 05 - 51
 ------------------
   12 - 00 - 00 - 00
 -  6 - 26 - 05 - 51
 ------------------
    5 - 03 - 54 -  9      (चेष्टा केन्द्र)
 ------------------
 =  153 - 54 - 9 ÷ 3
 =  51 - 18 - 03          ( चेष्टा बल बुध)
```

---

1. यहाँ बी॰ एल॰ ठाकुर ने बुध केन्द्र घटाया है।

गुरू चेष्टा बल साधन :

9 – 18 – 15 – 00 (स्पष्ट गुरू)

+10 – 03 – 44 – 2 (मध्यम गुरू)

19 – 21 – 59 – 2

–12

7 – 21 – 59 –2 ÷ 2

= 3 – 40 – 59 – 31 (अन्तरार्ध)

= 4 – 10 – 59 – 31

10 – 3 – 44 – 2[1] (मध्यम गुरू)

– 4 – 10 – 59 – 31 (अर्ध)

5 – 52 – 44 – 31

– 6 – 29 – 56 – 38 (शीघ्रोच्च)

9 – 22 – 47 – 53

12 – 00 – 00 – 00

– 9 – 22 – 45 – 53

2 – 07 – 12 – 07 (चेष्टा केन्द्र)

= 67 – 12 – 7 ÷ 3

= 22 – 24 – 02 (चेष्टा बल गुरू)

शुक्र चेष्टा बल :

6 – 11 – 55 – 00 (स्पष्ट शुक्र)

+ 6 – 29 – 56 – 38 (मध्यम शुक्र)

13 – 11 – 51 – 38 ÷ 2

= 6 – 35 – 55 – 49 (अन्तरार्ध)

---

1. यहाँ बी॰ एल॰ ठाकुर ने मध्यम सूर्य में से अर्ध घटाया है।

6 – 29 – 56 – 38	(मध्यम शुक्र)
– 6 – 35 – 55 – 49[1]	(अन्तरार्ध)
11 – 54 – 00 – 49	
– 11 – 24 – 2 – 02	(शीघ्रोच्च)
0 – 29 – 58 – 49 ÷ 3	(चेष्ट केन्द्र)
= 9 – 59 – 56	(चेष्टा बल शुक्र)

शनि चेष्टा बल :

7 – 5 – 40 – 9	(स्पष्ट शनि)
– 7 – 09 – 37 – 56	(मध्यम शनि)
0 – 3 – 02 – 13 ÷ 2	
= 0 – 1 – 31 – 6	

7 – 2 – 37 – 56	
– 0 – 1 – 31 – 6	(अन्तार्ध)
7 – 1 – 06 – 50	
– 6 – 29 – 56 – 38	(शीघ्रोच्च)
0 – 01 – 10 – 12 ÷ 3	(चेष्टा केन्द्र)
= 0 – 23 – 20	(शनि चेष्टा बल)

सूर्य चेष्टा बल साधन : सूर्य का चेष्टा केन्द्र नहीं निकाला जाता। सूर्य का जो अयन बल है वही सूर्य का चेष्टा बल है। स्फुट चेष्टा बल बनाने के लिये अयन बल × 2 = स्फुट चेष्टा बल। सूर्य का अयन बल = 13 – 01 – 42 पहले निकाल चुके है।

13 – 01 – 42 × 2 = 26 – 3 – 24 स्फुट चेष्टा बल सूर्य ।

चन्द्र चेष्टा बल : चन्द्र का भी चेष्टा केन्द्र नहीं निकाला जाता। क्योंकि जो ग्रह वक्री नहीं होते उनका चेष्टा केन्द्र नहीं होता। चन्द्र को जो पक्ष बल है। वही चन्द्र का चेष्टा बल होता है। चन्द्र का पक्ष 10 – 35 – 9 बल पहले निकाल चुके है। इसे अयन बल में जोड़ने से स्फुट

1. यहाँ बी॰ एल॰ ठाकुर ने शुक्र केन्द्र घटाया है।

चेष्टा बल होगा 10 – 35 – 9 + 59 – 19 – 28 = 69 – 54 – 37 स्फुट चेष्टा बल चन्द्र हुआ।

चेष्टा केन्द्र चक्र

मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ग्रह
2	15	2	0	0	रा
22	03	07	29	01	अं ÷ 3 = चेष्टा बल
18	54	12	59	10	क
50	09	07	49	12	वि.

चेष्टा बल

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	
13	10	26	51	22	09	0	क
1	35	09	18	24	59	23	वि०
42	09	25	03	02	56	20	प्र० वि०

स्फुट चेष्टा बल = चेष्टा बल + अयन बल

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	
26	69	50	109	30	22	56	क
03	54	25	16	19	18	26	वि०
24	37	58	03	02	56	20	प्र० वि०

नैसर्गिक बल :-

अंगाधिकेऽर्कात्संशोध्य भागीकृत्यं त्रिभिर्भजेत् ।

सूर्यचंद्रौ सत्रिराशीकृत्वा प्रोक्तविधिस्तथा ।।

एवं चेष्टाबल प्रोक्तं नैसर्गिकमथो शृणु ।

षष्टिरकेषवः सप्त दश षड्विंशतिस्ततः ।।[1]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 30-31, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

नैसर्गिक बल साधन : यह बल स्वाभाविक बतलाया गया है। **सूर्यादि ग्रहों का क्रमशः** 60, 51, 17, 23, 34, 43 तथा 9 बल बतलाया गया है। लेकिन बृहत्पाराशर–होराशास्त्र [1]पं० देव चन्द्र झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी वाली पुस्तक में सप्तम 60 कला को एकादि सात से गुणा करने से क्रमशः शनि, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र, चन्द्र, सूर्य इन सातों ग्रहों का नैसर्गिक स्फुट बल होता है।

विधि :- भारतीय ज्योतिष[2], नेमिचन्द शास्त्री, भारतीय **ज्ञान पीठ वाली पुस्तक में एकोत्तर** अंकों में पृथक् – पृथक् 7 का भाग देने से क्रमशः शनि, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र, चन्द्र और सूर्य का नैसर्गिक बल होता है। उसमें एक में 7 भाग देने से शनि, दो से मंगल, तीन से बुध, चार से गुरू, पाँच से शुक्र, छ से चन्द्र, 7 से सूर्य का नैसर्गिक बल उदाहरण सहित दिया है। जैसे :

1÷ 7 = शनि	7) 1 (0	
2÷ 7 = मंगल	× 60	
3÷ 7 = बुध	7) 60(8	
4÷ 7 = गुरू	56	
5÷ 7 = शुक्र	4	= 0 – 8– 34 शनि नैसर्गिक बल आया।
6 ÷ 7 = चन्द्र	× 60	
7÷ 7 = सूर्य	7) 240(34	
	21	
	30	
	28	
	2	

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं॰ देवचन्द्र झा, चौखम्बा **संस्कृत संस्थान वाराणसी पेज–153**।
2. "भारतीय ज्योतिष", नेमिचन्द शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ पेज – 209 ।

2. मंगल : 7) 2 (0

× 10

7) 120 (17

7

50

49 = 0 – 17 – 9 मंगल का नैसर्गिक बल

1

× 60

7) 60 (8

56

4 आधे से ज्यादा **शेष** रहने पर 8 = 9 माना।

3. बुध : 7) 3 (0

× 60

7) 180 (25

14

40

35 = 0 – 25 – 43 बुध नैसर्गिक बल

5

× 60

7) 300 (42

28

20

14

6 6 शेष आधे से ज्यादा है अतः 42 = 43 माना।

4. **गुरू :** 7) 4 (0

× 60

7) 240 (34

21

30

28

2

× 60

7) 120 (17

7

50

49

1

= 0 – 34 – 17 गुरू नैसर्गिक बल आया।

5. **शुक्र :** 7) 5 (0

× 60

7) 300 (42

28

20

14

6

× 60

7) 360 (51

35

10

7

3

= 0 – 42 – 51 शुक्र नैसर्गिक बल आया।

6. चन्द्र :

```
7) 6 (0 – 50 – 85
   0
  ───
   6
 × 60
 ) 360 (
   35
  ───
   10
 × 60
 ) 600 (
   56
  ───
   40
   35
  ───
    5
  ───
```

= 0 – 50 – 85 चन्द्र नैसर्गिक बल आया।

7. सूर्य :

```
7) 7 (1°
   7
  ───
   0
  ───
```

= 60 – 00 – 00 सूर्य नैसर्गिक बल आया।

नैसर्गिक बल चक्र

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	
60	50	17	25	34	42	8	क०
0	85	9	43	17	51	34	वि०

दृष्टि साधन :- दृश्याद्विशोध्य द्रष्टारं षड्राशिभ्योऽधिका भवेत् ।

दिग्भ्यो विशोध्य द्वाभ्यां तु भागीकृत्य च दृष्टयः ।।[1]

ग्रहों की ग्रहों पर दृष्टि साधन विधि :- देखने वाले का नाम दृष्टा है, जो देखा जाऐ उसे दृश्य कहा जाता है । जैसे सूर्य, चन्द्रमा को देखता है । तो सूर्य दृष्टा और चन्द्र दृश्य है। दृश्य में दृष्टा को घटाना चाहिए ।

i) शेषांक 6 राशि से अधिक हो तो दश राशि में से घटाना जो शेष रहें उसके अंश करके 2 का भाग देना चाहिये यही स्पष्ट दृष्टि बल है ।

ii) शेषांक 5 से अधिक हो तो राशि अंक को त्याग कर अंशादि को दोगुणा करना तो दृष्टि होती है।

iii) शेषांक 4 से अधिक हो तो 5 में घटाना तो दृष्टि होती है ।

iv) शेषांक तीन से अधिक हो तो 4 में घटाकर आधा करना तथा 30 मिलाना तो दृष्टि होती है।

v) शेषांक 2 से अधिक हो तो राशि अंक छोड़कर अंश में 15 मिलाना तो दृष्टि होती है।

vi) शेषांक एक से अधिक तो राशि का त्याग कर अंशादि अंक का आधा करना तो दृष्टि स्पष्ट होती है ।

vii) शनि, गुरु, मंगल की दृष्टि का विशेष प्रकार है। पहले कही हुई रीति से यदि शनि की दृष्टि सिद्ध करना हो तो शनि से 3 और दशवें भाव की प्राप्त दृष्टि में 45 और मिलाना।

viii) यदि गुरु से पंचम, नवम् भाव की दृष्टि हो तो 30 और मिलाना तो स्पष्ट दृष्टि होती है।

सूर्य की सभी ग्रहों पर दृष्टि साधन

सूर्य की चन्द्रमा पर दृष्टि साधन :

8 – 0 – 33 – 3	चन्द्र दृश्य	
— 6 – 28 – 45 – 35	सूर्य दृष्टा	**सूत्र** : राशि छोड़कर अंश ÷ 2
1 – 01 – 47 – 28	÷ 2	
= 0 – 53 – 44 दृष्टि		

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 3, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

सूर्य की मंगल पर दृष्टि साधन :

	5	– 17	– 43	– 40	मंगल दृश्य
—	6	– 28	– 45	– 35	सूर्य दृष्टा
	10	– 18	– 58	– 05	

यहाँ 6 राशि से अधिक है और दस में से नहीं घटना तो 0 दृष्टि होगी ।

सूर्य की बुध पर दृष्टि साधन :

	7	– 20	– 24	– 32	बुध दृश्य
—	6	– 28	– 45	– 35	सूर्य दृष्टा
	0	– 21	– 38	– 57	

यहाँ 0 शेष है अतः 0 दृष्टि हुई क्योंकि उपरोक्त सूत्रों में कहीं भी 0 शेष का फल नहीं दिया है । [1]सचित्र ज्योतिष में भी यही सूत्र दिया है ।

सूर्य की गुरु पर दृष्टि साधन :

	9	– 16	– 18	– 45	गुरु दृश्य	
—	6	– 28	– 45	– 35	सूर्य दृष्टा	यहाँ सूत्र 5 के अनुसार शेष
	2	– 17	– 33	– 10		अंक 2 से अधिक है, राशि
		17	– 33	– 10		अंक छोड़कर 15 मिलाना
	+	15				
		32	– 33	– 10	दृष्टि	

सूर्य की शुक्र पर दृष्टि साधन :

	6	– 12	– 54	– 02	गुरु दृश्य
—	6	– 28	– 45	– 35	सूर्य दृष्टा
	9	– 14	– 08	– 27	

1. "सचित्र ज्योतिष शिक्षा", बाबूलाल ठाकुर, मोती लाल बनारसीदास, दिल्ली, पटना, मद्रास पेज 764 ।

	10	– 00	– 00	– 00
—	09	– 14	– 08	– 27
	0	– 15	– 51	– 33

0 शेष = 0 दृष्टि

सूर्य की शनि पर दृष्टि साधन :

	7	– 06	– 05	– 27	शनि दृश्य
—	6	– 28	– 45	– 35	सूर्य दृष्टा
	0	– 07	– 19	– 51	

0 शेष = 0 दृष्टि

चन्द्र की सभी ग्रहों पर दृष्टि साधन

चन्द्र की सूर्य पर दृष्टि साधन :

	6	– 28	– 45	– 35	सूर्य दृश्य
—	8	– 00	– 33	– 03	चन्द्र दृष्टा
	10	– 28	– 12	– 32	

0 शेष = 0 दृष्टि

चन्द्र की मंगल पर दृष्टि साधन :

	5	– 17	– 43	– 40	मंगल दृश्य
—	8	– 00	– 33	– 03	चन्द्र दृष्टा
	9	– 17	– 10	– 37	
	10	– 00	– 00	– 00	
—	9	17	– 10	– 37	
	0	– 12	– 49	– 23	

0 शेष = 0 दृष्टि

चन्द्र की बुध पर दृष्टि साधन :

	7 – 20 – 24 – 32	बुध दृश्य
—	8 – 00 – 33 – 03	चन्द्र दृष्टा
	11 – 19 – 51 – 29	

11 शेष = 0 दृष्टि

चन्द्र की गुरु पर दृष्टि साधन :

	9 – 16 – 18 – 45	गुरु दृश्य	
—	8 – 00 – 33 – 03	चन्द्र दृष्टा	राशि छोड़कर अंश ÷ 2
	1 – 15 – 45 – 42		

= 7 – 52 – 51 दृष्टि

चन्द्र की शुक्र पर दृष्टि साधन :

	6 – 12 – 54 – 02	शुक्र दृश्य
—	8 – 00 – 33 – 03	चन्द्र दृष्टा
	0 – 12 – 20 – 09	

11 शेष = 0 दृष्टि

चन्द्र की शनि पर दृष्टि साधन :

	7 – 06 – 05 – 27	शनि दृश्य
—	6 – 28 – 45 – 35	चन्द्र दृष्टा
	0 – 07 – 19 – 52	

0 शेष = 0 दृष्टि

मंगल की सभी ग्रहों पर दृष्टि साधन :

मंगल की सूर्य पर दृष्टि साधन :

6 – 28 – 45 – 35 सूर्य दृश्य

— 5 – 17 – 43 – 40 मंगल दृष्टा

1 – 11 – 01 – 55 **सूत्र** : राशि छोड़कर अंश ÷ 2

11 – 01 – 55 ÷ 2

= 5 – 15 – 57

मंगल की चन्द्रमा पर दृष्टि साधन :

8 – 00 – 33 – 3 चन्द्र दृश्य

— 5 – 17 – 43 – 40 मंगल दृष्टा

2 – 12 – 49 – 23

12 – 42 – 23

\+ 15 शेषांक 2 से अधिक है तो सूत्र=राशि

\+ 15 अंक छोड़कर 15 मिलाना । मंगल की

= 42 – 42 – 23 दृष्टि चतुर्थ विशेष दृष्टि है तो 15 ओर मिलाना।

मंगल की बुध पर दृष्टि साधन :

7 – 20 – 24 – 32 बुध दृश्य

— 5 – 17 – 43 – 40 मंगल दृष्टा

2 – 02 – 40 – 52 शेषांक 2 से अधिक है तो सूत्र=राशि अंक छोड़कर 15 मिलाना।

2 – 40 – 52

\+ 15

= 17 – 40 – 52 दृष्टि

मंगल की गुरु पर दृष्टि साधन :

	9 – 16 – 18 – 45	गुरु दृश्य
—	5 – 17 – 43 – 40	मंगल दृष्टा
	3 – 28 – 35 – 05	शेषांक 3 से अधिक है तो 4 में घटाकर आधा करना तथा 30 मिलाना।

	4 – 00 – 00 – 00	
—	3 – 28 – 35 – 05	
	0 – 01 – 24 – 55	÷ 2
=	0 – 42 – 27	
	+ 30	
	30 – 42 – 27	दृष्टि

मंगल की शुक्र पर दृष्टि साधन :

	6 – 12 – 54 – 02	शुक्र दृश्य
—	5 – 17 – 43 – 40	मंगल दृष्टा
	0 – 25 – 10 – 22	

0 शेष = 0 दृष्टि

मंगल की शनि पर दृष्टि साधन :

	7 – 6 – 5 – 27	शनि दृश्य
—	5 – 17 – 43 – 40	मंगल दृष्टा
	1 – 18 – 21 – 47	**सूत्र** :–शेषांक एक से अधिक है राशि अंक त्याग कर अंशादि का ½ = दृष्टि।

18 – 21 – 47 ÷ 2

= 9 – 10 – 53 दृष्टि

बुध की सभी ग्रहों पर दृष्टि साधन

बुध की सूर्य पर दृष्टि साधन :

	6	– 28	– 45	– 35	सूर्य दृश्य
—	7	– 20	– 24	– 32	बुध दृष्टा
	11	– 08	– 21	– 03	

11 शेष = 0 दृष्टि

बुध की चन्द्र पर दृष्टि साधन :

	8	– 00	– 33	– 03	चन्द्र दृश्य
—	7	– 20	– 24	– 32	बुध दृष्टा
	0	– 10	– 8	– 31	

0 शेष = 0 दृष्टि

बुध की मंगल पर दृष्टि साधन :

	5	– 17	– 43	– 40	मंगल दृश्य
—	7	– 20	– 24	– 32	बुध दृष्टा
	9	– 27	– 17	– 08	
	10	– 00	– 00	– 00	
—	9	– 27	– 17	– 08	सूत्र : 10 — शेष ÷ 2
	0	- 02	– 42	– 52	÷ 2

=1 – 21 – 24 दृष्टि

बुध की गुरु पर दृष्टि साधन :

	9	– 16	– 18	– 45	गुरु दृश्य
—	7	– 20	– 24	– 32	बुध दृष्टा
	1	– 15	– 54	– 13	

15 – 54 – 13 ÷ 2   शेषांक 1 अधिक है तो राशि त्यागकर

= 7 –57 – 6 दृष्टि   अंश का ½

बुध की शुक्र पर दृष्टि साधन :

	6 – 12 – 54 – 02	शुक्र दृश्य
—	7 – 20 – 24 – 32	बुध दृष्टा
	10 – 22 – 29 – 30	

10 शेष = 0 दृष्टि

बुध की शनि पर दृष्टि साधन :

	7 – 06 – 05 – 27	शनि दृश्य
—	7 – 20 – 24 – 32	बुध दृष्टा
	11 – 15 – 41 – 55	

11 शेष = 0 दृष्टि

गुरु की सभी ग्रहों पर दृष्टि साधन

गुरु की सूर्य पर दृष्टि साधन :

	6 – 28 – 45 – 35	सूर्य दृश्य
—	9 – 16 – 18 – 45	गुरु दृष्टा
	9 – 12 – 26 – 50	
	10 – 00 – 00 – 00	
—	9 – 12 – 26 – 50	**सूत्र** : 10 — शेष ÷ 2
	0 – 17 – 33 – 10	÷ 2

= 8 – 46 – 35 दृष्टि

गुरु की चन्द्र पर दृष्टि साधन :

	8	00	33	03	चन्द्र दृश्य
—	9	16	18	45	गुरु दृष्टा
	10	24	14	18	

= 10 शेष 0 दृष्टि

गुरु की मंगल पर दृष्टि साधन :

	5	17	43	40	मंगल दृश्य
—	9	16	18	45	गुरु दृष्टा
	8	01	24	55	
	10	00	00	00	
—	8	01	24	55	
	1	28	35	05	

सूत्र : 10 — शेष ÷ 2

58 – 35 – 05 ÷ 2

= 29– 17 – 32 दृष्टि

गुरु की बुध पर दृष्टि साधन :

	7	20	24	32	बुध दृश्य
--	9	16	18	45	गुरु दृष्टा
	9	04	05	47	
	10	00	00	00	
—	9	04	05	47	
	0	25	54	13	÷ 2

सूत्र : 10 — शेष ÷ 2

= 12 – 57 – 06 दृष्टि

गुरु की शुक्र पर दृष्टि साधन :

	6	–	12	–	54	–	02	शुक्र दृश्य
—	9	–	16	–	18	–	45	गुरु दृष्टा
	11	–	06	–	48	–	35	

= 11 शेष 0 दृष्टि

गुरु की शनि पर दृष्टि साधन :

	7	–	06	–	05	–	27	शनि दृश्य
—	9	–	16	–	18	–	45	गुरु दृष्टा
	9	–	19	–	48	–	42	
	10	–	00	–	00	–	00	
—	9	–	19	–	48	–	42	
	0	–	10	–	11	–	18	

सूत्र : 10 — शेष ÷ 2

=10 – 11– 58 ÷ 2

= 5 – 5 – 59 दृष्टि

गुरु की बुध पर दृष्टि साधन :

	7	–	20	–	24	–	32	बुध दृश्य
—	9	–	16	–	18	–	45	गुरु दृष्टा
	9	–	04	–	05	–	47	
	10	–	00	–	00	–	00	
—	9	–	04	–	05	–	47	
	0	–	25	–	54	–	13	÷ 2

सूत्र : 10 — शेष ÷ 2

= 12 – 57 – 06 दृष्टि

शुक्र की सभी ग्रहों पर दृष्टि साधन

शुक्र की सूर्य पर दृष्टि साधन :

	6 – 28 – 45 – 35	सूर्य दृश्य
—	6 – 12 – 54 – 02	शुक्र दृष्टा
	0 – 15 – 51 – 33	

= 0 शेष = 0 दृष्टि

शुक्र की चन्द्र पर दृष्टि साधन :

	8 – 00 – 33 – 03	चन्द्र दृश्य
—	6 – 12 – 54 – 02	शुक्र दृष्टा
	1 – 17 – 37 – 01	शेषांक ऐकाधिक हो तो राशि त्याग कर
	17 – 37 – 1 ÷ 2	अंश का ½

= 8 – 48 – 30 दृष्टि

शुक्र की मंगल पर दृष्टि साधन :

	5 – 17 – 43 – 40	मंगल दृश्य
—	6 – 12 – 54 – 02	शुक्र दृष्टा
	11 – 04 – 49 – 38	

11 शेष = 0 दृष्टि

शुक्र की बुध पर दृष्टि साधन :

	7 – 20 – 24 – 32	बुध दृश्य
—	6 – 12 – 54 – 02	शुक्र दृष्टा
	1 – 07 – 30 – 30	शेषांक एकाधिक हो तो राशि त्याग
	7 – 30 – 30 ÷ 2	कर अंशादि का ½

= 3 – 45 – 15 दृष्टि

शुक्र की गुरु पर दृष्टि साधन :

	9 – 16 – 18 – 45	गुरु दृश्य
—	6 – 12 – 54 – 02	शुक्र दृष्टा
	03 – 03 – 24 – 43	शेषांक तीन से ज्यादा है अतः 4 में घटाकर ½ में 30 जमा करना

	4 – 00 – 00 – 00
—	3 – 03 – 24 – 43
	0 – 26 – 35 –17 ÷ 2
	= 13 – 17 – 38
	+ 30
	43 – 17 – 38 दृष्टि

शुक्र की शनि पर दृष्टि साधन :

	7 – 06 – 05 – 27	शनि दृश्य
—	6 – 12 – 54 – 02	शुक्र दृष्टा
	0 – 23 – 11 – 25	

0 शेष = 0 दृष्टि

शनि की सभी ग्रहों पर दृष्टि साधन

शनि की सूर्य पर दृष्टि साधन :

	6 – 28 – 45 – 35	सूर्य दृश्य
—	7 – 06 – 05 – 27	शनि दृष्टा
	11 – 22 – 40 – 08	

= 11 शेष = 0 दृष्टि

शनि की चन्द्र पर दृष्टि साधन :

	8	00	33	03	चन्द्र दृश्य
—	7	06	05	27	शनि दृष्टा
	0	23	27	36	

0 शेष = 0 दृष्टि

शनि की मंगल पर दृष्टि साधन :

	5	17	43	40	मंगल दृश्य
—	7	06	05	27	शनि दृष्टा
	10	11	38	13	

10 शेष = 0 दृष्टि

शनि की बुध पर दृष्टि साधन :

	7	20	24	32	बुध दृश्य
—	7	06	05	27	शनि दृष्टा
	0	14	19	05	

0 शेष = 0 दृष्टि

शनि की गुरु पर दृष्टि साधन :

	9	16	18	15	गुरु दृश्य
—	7	06	05	27	शनि दृष्टा
	2	10	13	48	

शेषांक 2 से अधिक है अतः राशि अंक छोड़कर 15 मिलाना, शनि की विशेष दृष्टि है तो 45 और मिलाना

10 – 13 – 48
\+ 15
\+ 45

70 – 13 – 48 दृष्टि

शनि की शुक्र पर दृष्टि साधन :

	6	– 12	– 54	– 02	शुक्र दृश्य
—	7	– 06	– 05	– 27	शनि दृष्टा
	11	– 06	– 48	– 35	

11 शेष = 0 दृष्टि

ग्रहों व दृष्टि चक्र

	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
	0	0	0	0	32	0	0
सू०	0	53	0	0	33	0	0
	0	44	0	0	10	0	0
	0	0	0	0	7	0	0
चं०	0	0	0	0	52	0	0
	0	0	0	0	51	0	0
	5	42	0	17	30	0	9
मं०	15	42	0	40	42	0	10
	57	23	0	52	27	0	53
	0	0	1	0	7	0	0
बु०	0	0	21	0	57	0	0
	0	0	24	0	6	0	0
	8	0	29	12	0	0	5
गु०	46	0	17	57	0	0	5
	35	0	32	6	0	0	59

	0	8	0	3	43	0	0	
शु०	0	48	0	45	17	0	0	
	0	30	0	15	38	0	0	
	0	0	0	0	70	0	0	
श०	0	0	0	0	13	0	0	
	0	0	0	0	48	0	0	
	8	8	31	18	61	0	5	
शुभ दृष्टि	46	48	8	12	7	0	5	
	35	30	56	21	35	0	59	
	5	45	0	17	134	0	9	
पाप दृष्टि	15	16	0	40	29	0	10	
	57	7	0	52	25	0	53	
	3	36	31	0	73	0	4	
अन्तर	30	27	8	1	21	0	4	
	38	37	56	29	50	0	64	÷4
	+	—	+	—	—		—	
	0	9	7	0	18	0	1	
— +	30	6	47	0	12	0	1	
	9	54	14	22	57	0	13	
	+	—	+	+	—		—	

भाव दिग्बल :-

नक्तं पृष्ठोदयाश्चैव बलाधिक्य उदीरिताः ।

नृयुग्मजूकपाथानचापपूर्वार्द्धकुंभभात् ।।

मृगचापपरार्धाख्यमेषसिंहवृषादपति ।

अलेः कर्कट काच्चपि मृगांत्यार्धच्च मीनभात् ।।

अस्तं सुखं क्रमाल्लग्नं खं हित्वांगाधिके सति ।

चक्राद्विशोध्य रामैश्च भजेद्भगीकृतं बलात् ।।[1]

भाव दिग्बल साधन विधि : इसमें पुरूष, चतुष्पद, कीट, जलचर आदि राशियों में क्रमशः सप्तम, चतुर्थ, लग्न तथा दशम भाव घटा कर अन्तर करना । यदि अन्तर 6 राशि से अधिक है तो 12 राशि में से घटाकर षड़भाल्प करना। यदि 6 से कम हो तो घटाने की आवश्यकता नहीं। उपरान्त राशि के अंश बनाकर 3 का भाग देना तो भावदिग्बल प्राप्त होगा।

1. जो भाव पुरूष राशि का हो = पु० राशि – सप्तम भाव = अन्तर
2. जो भाव चतुष्पद राशि का हो = चतुष्पद राशि – चतुर्थ भाव = अन्तर
3. जो भाव कीट राशि का हो = कीट राशि – लग्न = अन्तर
4. जो भाव जलचर राशि का हो = जलचर राशि – दशम भाव = अन्तर

राशियों की संज्ञा :

1. मिथुन – तुला – कन्या – धनु का पूर्वभाग = नर राशि
2. मेष – वृष – सिंह – धनु का पश्चिम भाग = चतुष्पद राशि
3. कर्क – वृश्चिक – मकर का पूर्व भाग = कीट राशि
4. कुम्भ – मीन – मकर का पश्चिम भाग = जलचर राशि

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 36 से 38, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

लग्न दिग्बल साधन :

	4	–	26	–	6	–	39	चतुष्पद राशि
–	7	–	25	–	9	–	03	चतुर्थ भाव
	9	–	00	–	57	–	36	
	12	–	00	–	00	–	00	
–	9	–	00	–	57	–	36	
	3	–	29	–	02	–	24	

= 119 – 2 ÷ 3

= 39 – 0 भाव दिग्बल

धन भाव दिग्बल साधन :

	5	–	25	–	47	–	27	नर राशि
–	10		26	–	06	–	39	सप्तम् भाव
	6	–	29	–	40	–	48	
	12	–	00	–	00	–	00	
–	6	–	29	–	40	–	48	
	5	–	00	–	19	–	12	

= 150 – 19 – 12 ÷ 3

= 50 – 6 – 24 धन भाव दिग्बल

भ्रातृ भाव दिग्बल साधन :

	6	–	25	–	28	–	15	तुला नर राशि
–	10	–	26	–	06	–	39	सप्तम भाव
	7	–	29	–	21	–	36	
	12	–	00	–	00	–	00	
–	7	–	29	–	21	–	36	

4 – 00 – 38 – 24

= 120 – 38 – 24 ÷ 3

= 40 – 12 – 48 भ्रातृ भाव दिग्बल

सुख भाव दिग्बल साधन :

	7 –	25 –	09 –	03	वृश्चिक कीट राशि
–	4 –	26 –	6 –	39	लग्न
	2 –	29 –	02 –	24	

= 89 – 2 – 24 ÷ 3

= 29 – 40 – 48 = 30 सुख भाव दिग्बल

पुत्र भाव दिग्बल साधन :

	8 –	25 –	28 –	15	धनु पश्चिम भाग चतुष्पद राशि
–	7 –	25 –	9 –	03	चतुर्थ भाव
	1 –	00 –	19 –	12	

= 30 – 19 – 12 ÷ 3

= 10 – 6.24 पुत्र भाव दिग्बल

शत्रु भाव दिग्बल साधन :

	9 –	25 –	47 –	27	मकर पश्चिम जलचर राशि
–	1 –	25 –	09 –	03	दशम भाव
	8 –	00 –	38 –	24	
	12 –	00 –	00 –	00	
–	8 –	00 –	38 –	24	
	3 –	29 –	21 –	36	

= 119 – 21 – 36 ÷ 3

= 39 – 47 – 12 शत्रु भाव दिग्बल

स्त्री भाव दिग्बल साधन :

	10	–	26	–	06	–	39		कुम्भ चलचर राशि
–	1	–	25	–	09	–	03		दशम भाव
	9	–	00	–	57	–	36		
	12	–	00	–	00	–	00		
–	9	–	00	–	57	–	36		
	2	–	29	–	02	–	24		

= 89 – 02 – 24 ÷ 3

= 29 – 40 – 48 = 30 स्त्री भाव दिग्बल

आयु भाव दिग्बल साधन :

	11	–	25	–	47	–	27		मीन जलचर राशि
–	1	–	25	–	09	–	03		दशम भाव
	10	–	00	–	38	–	24		
	12	–	00	–	00	–	00		
–	10	–	00	–	38	–	24		
	1	–	29	–	21	–	36		

= 59 – 21 – 36 ÷ 3

= 19 – 47 – 12 आयु भाव दिग्बल

धर्म भाव दिग्बल साधन :

	0	–	25	–	28	–	15		मेष चतुष्पद राशि
–	7	–	25	–	09	–	03		चुतर्थ भाव
	4	–	00	–	19	–	12		

= 120 – 19 – 12 ÷ 3

= 40 – 06 – 24 धर्म भाव दिग्बल

कर्म भाव दिग्बल साधन :

	1	–	25	–	09	–	03	वृष चतुष्पद राशि
–	7	–	25	–	09	–	03	चतुर्थ भाव
	6	–	00	–	00	–	00	

= 180 ÷ 3 = 60 कर्म भाव दिग्बल

लाभ भाव दिग्बल साधन :

	2	–	25	–	28	–	15	मिथुन नर राशि
–	10	–	26	–	06	–	39	सप्तम् भाव
	3	–	29	–	11	–	36	

= 119 – 11 – 36 ÷ 3

= 39 – 43 – 52 = 40 लाभ भाव दिग्बल

व्यय भाव दिग्बल साधन :

	3	–	25	–	47	–	27	कर्क कीट राशि है
–	4	–	26	–	06	–	39	लग्न
	10	–	29	–	40	–	48	
	12	–	00	–	00	–	00	
–	10	–	20	–	40	–	48	
	2	–	00	–	19	–	12	

= 60 – 19 – 12 ÷ 3

= 20 – 6 – 24 व्यय भाव दिग्बल

भाव दिग्बल चक्र

तन	धन	भ्रातृ	सुख	पुत्र	शत्रु	स्त्री	आयु	धर्म	कर्म	लाभ	व्यय
39	50	40	30	10	39	30	19	40	60	40	20

भाव दृगबल साधन विधि : 'बृहत्पाराशर–होराशास्त्र'' उत्तराखण्ड अध्याय छः श्लोक 32 में तन धन आदि 12 भावों पर सूर्यादि सात ग्रहों की दृष्टि में शुभ ग्रह हो तथा पाप ग्रहों की दृष्टि का भिन्न – 2 योग करके परस्पर अन्तर करना बाद में आए हुए अन्तर का चर्तुचांश लेना। शुभ दृष्टि अधिक हो तो पूर्वोक्त पंचबल (स्थान बल, दिग्बल, काल बल, चेष्टा बल, नैसर्गिक बल) के योग में युक्त करना और पाप दृष्टि अधिक हो तो पंचबल में हीन करना। यह दृष्टि बल संस्कार है।

''सचित्र ज्योति~ शिक्षा'',[1] बी० एल० ठाकुर, ग्रन्थ में भाव दृग्बल साधन के लिए सूत्र निम्न प्रकार से दिया है :–

विधि :- भाव में स्पष्ट ग्रह घटाकर जो शेष राशि अंक प्राप्त हो तो उसका सूत्र क्रमशः निम्न प्रकार से है । इसमें मंगल, गुरु तथा शनि की विशेष दृष्टि होती है । इस संदर्भ में ''बृहत्पाराशर–होराशास्त्र'' में दृष्टि साधन के सूत्र को खोला नहीं गया है । अतः हम यह सूत्र ''सचित्र ज्योतिष'' शिक्षा से ले रहे हैं । जो निम्न प्रकार से हैं :–

शेष राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9
साधारण दृष्टि	$\frac{\text{अंश}}{2}$	अंश+15	45 – $\frac{\text{अंश}}{2}$	30–अंश	अंश×2	10–शेष राश्यादि = सबके अंश ÷ 2			
मंगल की विशेष दृष्टि	0	अंश× $\frac{3}{2}$ + 15	60–अंश	0	0	60' दृष्टि	60–अंश	0	0
गुरु की विशेष दृष्टि	0	0	$\frac{\text{अंश}}{2}$ +45	60–अंश × 2	0	$\frac{\text{अंश}}{2}$ +45	$\frac{\text{अंश}}{2}$ +45	60–(अंश× $\frac{3}{2}$)	शेष–10 ÷2
शनि की विशेष दृष्टि	अंश ×2	60 – $\frac{\text{अंश}}{2}$	0	0	0	0	0	अंश+30	60 – (अंश×2)

उपरोक्त सूत्र में जहाँ पर शून्य दिखाया गया है वहां पर साधारण दृष्टि का सूत्र प्रयोग होगा।

1. ''सचित्र ज्योतिष शिक्षा'', बाबूलाल ठाकुर, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पेज 291 ।

चन्द्रमा की सभी भावों पर दृष्टि साधन :

तन भाव :

		4	–	26	–	06	–	39	प्रथम भाव
सूत्र= शेष—10	—	8	–	00	–	33	–	03	चन्द्र
सबके अंश÷2		7	–	25	–	33	–	36	शेष
		10	–	00	–	00	–	00	
	—	7	–	25	–	33	–	36	
		2	–	04	–	26	–	24	

= 64 – 26 – 24 ÷ 2

= 32 – 13 – 12 तन दृष्टि

धन भाव :

		5	–	25	–	47	–	27	द्वितीय भाव
	—	8	–	00	–	33	–	03	चन्द्र
सूत्र= शेष—10		9	–	25	–	13	–	24	
सबके अंश÷2		10	–	00	–	00	–	00	
	—	9	–	25	–	13	–	24	
		0	–	04	–	46	–	36	

= 4 – 46 – 36 ÷ 2

= 2 – 23 – 18 धन दृष्टि

भ्रातृ भाव :

	6	–	25	–	28	–	18	तृतीय भाव
–	8	–	00	–	33	–	03	चन्द्र
	10	–	24	–	55	–	12	

= 10 शेष = 0 दृष्टि

मातृ भाव :

	7	–	25	–	09	–	03	चतुर्थ भाव
–	8	–	00	–	33	–	03	चन्द्र
	11	–	24	–	36	–	00	

= 11 शेष = 0 दृष्टि

पुत्र भाव :

	8	–	25	–	28	–	15	पंचम भाव
–	8	–	00	–	33	–	03	चन्द्र
	0	–	24	–	55	–	12	

= 0 शेष = 0 दृष्टि

शत्रु भाव :

		9	–	25	–	47	–	27	षष्ट भाव
सभी अंश ÷ 2	–	8	–	00	–	33	–	03	
		1	–	25	–	14	–	24	

= 85 – 14 – 24 ÷ 2 = 42 – 37 – 12 दृष्टि

स्त्री भाव :

		10	–	26	–	06	–	39	सप्तम् भाव
सूत्र = अंश + 15	–	8	–	00	–	33	–	03	चन्द्र
		2	–	25	–	33	–	36	

25 + 15 = अंशों में 15 जोड़ने पर

= 40 – 33 – 36 दृष्टि

आयु भाव :

		11 – 25 – 47 – 27	अष्टम् भाव
सूत्र = $45 - \frac{\text{अंश}}{2}$	–	8 – 00 – 33 – 03	चन्द्र
		3 – 25 – 14 – 24	

= 25 – 14 – 24 ÷ 2

= 12 – 37 – 12

  45 – 00 – 00

– 12 – 37 – 12

= 32 – 22 – 48 दृष्टि

धर्म भाव :

		0 – 25 – 28 – 15	नवम् भाव
सूत्र = $30 - \frac{\text{अंश}}{2}$	–	8 – 00 – 33 – 03	चन्द्र
		4 – 24 – 55 – 3	

  30 – 00 – 00

– 24 – 55 – 12

= 05 – 04 – 48 दृष्टि

कर्म भाव :

	1 – 25 – 09 – 03	दशम् भाव
सूत्र = अंश × 2	– 8 – 00 – 33 – 03	चन्द्र
	5 – 24 – 36 – 00	

	24	–	36	–	00
			×		2
=	42	–	12	–	00 दृष्टि

लाभ भाव :

		2	–	25	–	28	–	15 एकादश भाव
सूत्र=10 – अन्तराल के अंश ÷ 2	–	8	–	00	–	33	–	03 चन्द्र
		6	–	24	–	55	–	12
		10	–	00	–	00	–	00
	–	6	–	24	–	55	–	12
		3	–	05	–	04	–	48
	=	95	–	4	–	48 ÷ 2		
	=	47	–	32	–	24 दृष्टि		

व्यय भाव :

		3	–	25	–	47	–	27 द्वादश भाव
सूत्र = 10 – अन्तराल के अंश ÷ 2	–	8	–	00	–	33	–	03 चन्द्र
		7	–	25	–	14	–	24
		10	–	00	–	00	–	00
	–	7	–	25	–	14	–	24
		2	–	04	–	45	–	36
	=	64	–	45	–	36 ÷ 2		
	=	32	–	22	–	48 दृष्टि		

सूर्य की सभी भावों पर दृष्टि साधन :

तन भाव :

4 – 26 – 06 – 39 प्रथम भाव

सूत्र $= 10 - \frac{\text{सबके अंश}}{2}$ – 6 – 28 – 45 – 35 सूर्य

9 – 27 – 29 – 04

10 – 00 – 00 – 00

– 9 – 27 – 29 – 4

0 – 02 – 30 – 56

2 – 30 – 56 ÷ 2

= 1 – 15 – 28 दृष्टि

धन भाव :

5 – 25 – 47 – 27 द्वितीय भाव

– 6 – 28 – 45 – 35 सूर्य

10 – 27 – 0 – 52

10 शेष राशि = 0 दृष्टि

भ्रातृ भाव :

6 – 25 – 28 – 15 तृतीय भाव

– 6 – 28 – 45 – 35 सूर्य

11 – 26 – 42 – 40

11 शेष राशि = 0 दृष्टि

सुख भाव :

7 – 25 – 09 – 03 चतुर्थ भाव
– 6 – 28 – 45 – 35 सूर्य

0 – 26 – 23 – 28

0 शेष राशि = 0 दृष्टि

पुत्र भाव :

8 – 25 – 28 – 15 पंचम भाव

सूत्र = $\frac{\text{अंश}}{2}$ – 6 – 28 – 45 – 35 सूर्य

1 – 26 – 42 – 40

26 – 42 – 40 ÷ 2

= 13 – 21 – 20 दृष्टि

शत्रु भाव :

9 – 25 – 47 – **27 षष्टम् भाव**

सूत्र = अंश + 15 – 6 – 28 – 45 – 35 सूर्य

2 – 27 – 01 – 52

= 27 + 15 = 42 – 01 – 52 दृष्टि

स्त्री भाव :

10 – 26 – 06 – **39 सप्तम् भाव**

सूत्र = 45 – $\frac{\text{अंश}}{2}$ – 6 – 28 – 45 – 35 सूर्य

3 – 27 – 21 – 04

27 – 21 – 04 ÷ 2

= 13 – 40 – 32

45 – 00 – 00

13 – 40 – 32

= 31 – 19 – 28 दृष्टि

आयु भाव :

11 – 25 – 47 – 27 अष्टम् भाव

सूत्र = 30—अंश – 6 – 28 – 45 – 35 सूर्य

4 – 27 – 01 – 52

30 – 00 – 00

– 27 – 01 – 52

2 – 58 – 08 दृष्टि

धर्म भाव :

0 – 25 – 28 – 15 नवम् भाव

सूत्र = अंश × 2 – 6 – 28 – 45 – 35 सूर्य

5 – 26 – 42 – 40

26 – 42 – 40 × 2

= 53 – 25 = 20 दृष्टि

कर्म भाव : 1 – 25 – 09 – 03 दशम् भाव

सबके अंश ÷ 2 — 6 – 28 – 45 – 35 सूर्य

6 – 26 – 23 – 28

10 – 00 – 00 – 00

— 6 – 26 – 36 – 32

3 – 03 – 36 – 32

= 93 – 36 – 32 ÷ 2 = 46 – 48 – 16 दृष्टि

लाभ भाव :

		2 – 25 – 28 – 15	एकादश भाव
	–	6 – 28 – 45 – 35	सूर्य
		7 – 26 – 42 – 40	
सूत्र= सब के अंश ÷ 2		10 – 00 – 00 – 00	
	–	7 – 26 – 42 – 40	
		2 – 03 – 17 – 20	
		63 – 17 – 20 ÷ 2	
	=	31 – 38 – 40 दृष्टि	

व्यय भाव :

		3 – 25 – 47 – 27	
	–	6 – 28 – 45 – 35	
		8 – 27 – 01 – 52	
सूत्र = सब के अंश ÷ 2		10 – 00 – 00 – 00	
	–	8 – 27 – 01 – 52	
		1 – 2 – 58 – 08	
		32 – 58 – 8 ÷ 2	
	=	16 – 26 – 4 दृष्टि	

मंगल की सभी भावों पर दृष्टि साधन :

तन भाव :

	4 – 26 – 06 – 39	लग्न
–	5 – 17 – 43 – 40	मंगल
	11 – 08 – 22 – 59	

11 शेष = 0 दृष्टि

धन भाव :

5 – 25 – 47 – 27 द्वितीय
5 – 17 – 43 – 40 मंगल
0 – 08 – 03 – 47

0 शेष = 0 दृष्टि

भ्रातृ भाव :

6 – 25 – 28 – 15 तृतीय भाव
– 5 – 17 – 43 – 40 मंगल

सूत्र = अंश ÷ 2   1 – 07 – 44 – 35

7 – 44 – 35 ÷ 2
= 3 – 52 – 17 दृष्टि

सहज भाव :

7 – 25 – 09 – 03 चतुर्थ भाव
– 5 – 17 – 43 – 40 मंगल

सूत्र = अंश $\times \frac{3}{2}$ +15   2 – 08 – 25 – 23

8 – 25 – 23
× 3

25 – 16 – 09 ÷ 2
= 12 – 38 – 04
+ 15

27 – 38 – 4 दृष्टि

पुत्र भाव :

```
        8 – 25 – 28 – 15 पञ्चम भाव
     –  5 – 17 – 43 – 40 मंगल
     --------------------
        3 – 07 – 44 – 35
     --------------------
```

सूत्र = अंश – 60

```
      60 – 00 – 00
    –  7 – 44 – 35
    ---------------
    = 52 – 15 – 25 दृष्टि
```

शत्रु भाव :

```
        9 – 25 – 47 – 27 षष्ट भाव
     –  5 – 17 – 43 – 40 मंगल
     --------------------
        4 – 08 – 03 – 47
     --------------------
```

सूत्र = अंश – 30

```
      30 – 00 – 00
    –  8 –  3 – 47
    ---------------
    = 21 – 58 – 13 दृष्टि
```

स्त्री भाव :

```
       10 – 26 – 06 – 39 सप्तम् भाव
     –  5 – 17 – 43 – 40 मंगल
     --------------------
        5 – 08 – 22 – 59
     --------------------
```

सूत्र = अंश × 2

```
       8 – 29 – 59
              × 2
    ---------------
    = 16 – 45 – 58 दृष्टि
```

आयु भाव :

	11 –	25 –	47 –	27 अष्टम् भाव
–	7 –	17 –	43 –	40 मंगल
	6 –	08 –	03 –	47

6 शेष = 60 दृष्टि

धर्म भाव :

	0 –	25 –	28 –	15 नवम् भाव
–	5 –	17 –	43 –	40 मंगल
	7 –	07 –	44 –	35

सूत्र = अंश – 60

	60 –	00 –	00
–	7 –	44 –	35
=	52 –	15 –	25 दृष्टि

कर्म भाव :

	1 –	25 –	09 –	03 दशम् भाव
–	5 –	17 –	43 –	40 मंगल
	8 –	08 –	25 –	23

सूत्र = सब के अंश ÷ 2

	10 –	00 –	00 –	00
–	8 –	08 –	25 –	23
	2 –	21 –	34 –	37

81 – 34 – 37 ÷ 2

= 40 – 47 – 18 दृष्टि

लाभ भाव :

	2	–	25	–	28	–	15	एकादश भाव
–	5	–	17	–	43	–	40	मंगल
	9	–	07	–	44	–	35	

सूत्र = अंश ÷ 2

	10	–	00	–	00	–	00
–	9	–	07	–	44	–	35
	0	–	22	–	15	–	25

22 – 15 – 25 ÷ 2

= 11 – 7 – 42 दृष्टि

व्यय भाव :

	3	–	25	–	47	–	27	द्वादश भाव
–	5	–	17	–	43	–	40	मंगल
	10	–	08	–	03	–	47	

10 शेष 0 दृष्टि

बुध की सभी भावों पर दृष्टि साधन :

तन भाव :

	4	–	26	–	06	–	39	प्रथम भाव
–	7	–	20	–	24	–	32	बुध
	9	–	05	–	42	–	07	

सब के अंश ÷ 2

	10	–	00	–	00	–	00
–	9	–	05	–	42	–	07
	1	–	24	–	17	–	53

54 – 17 – 53 ÷ 2

= 27 – 8 – 56 दृष्टि

धन भाव :

	5 –	25 –	47 –	27 द्वितीय भाव
–	7 –	20 –	24 –	32 बुध
	10 –	05 –	22 –	55

10 शेष = 0 दृष्टि

भ्रातृ भाव :

	6 –	25 –	28 –	15 द्वितीय भाव
	7 –	20 –	24 –	32 बुध
	10 –	05 –	03 –	43

11 शेष = 0 दृष्टि

सहज भाव :

	7 –	25 –	09 –	03 चतुर्थ भाव
–	7 –	20 –	24 –	32 बुध
	0 –	04 –	44 –	31

0 शेष = 0 दृष्टि

पुत्र भाव :

	8 –	25 –	28 –	15 पंचम भाव
–	7 –	20 –	24 –	32 बुध
	1 –	05 –	03 –	43

सूत्र = अंश ÷ 2   5 – 03 – 43÷2

= 2 – 31 – 51 दृष्टि

शत्रु भाव :

$$
\begin{array}{rrrrl}
 & 9 - & 25 - & 47 - & 27 \text{ षष्ट भाव} \\
- & 7 - & 20 - & 24 - & 32 \text{ बुध} \\
\hline
 & 2 - & 05 - & 22 - & 53 \\
\hline
\end{array}
$$

सूत्र = अंश + 15

$$
\begin{array}{rrrl}
 & 5 - & 22 - & 55 \\
+ & 15 & & \\
\hline
 & 20 - & 22 - & 55 \text{ दृष्टि}
\end{array}
$$

स्त्री भाव :

$$
\begin{array}{rrrrl}
 & 10 - & 26 - & 06 - & 39 \text{ सप्तम् भाव} \\
- & 7 - & 20 - & 24 - & 32 \text{ बुध} \\
\hline
 & 3 - & 06 - & 42 - & 07 \\
\hline
\end{array}
$$

सूत्र = 45 – अंश ÷ 2

$$
\begin{array}{rrrl}
 & 6 - & 42 - & 07 \div 2 \\
= & 3 - & 21 - & 03 \\
\hline
 & 45 - & 00 - & 00 \\
- & 3 - & 21 - & 03 \\
\hline
= & 41 - & 38 - & 57 \text{ दृष्टि}
\end{array}
$$

आयु भाव :

$$
\begin{array}{rrrrl}
 & 11 - & 25 - & 47 - & 27 \text{ अष्टम् भाव} \\
- & 7 - & 20 - & 24 - & 32 \text{ बुध} \\
\hline
 & 4 - & 05 - & 22 - & 55 \\
\hline
\end{array}
$$

सूत्र = अंश – 30

$$
\begin{array}{rrrl}
 & 30 - & 00 - & 00 \\
- & 5 - & 22 - & 55 \\
\hline
= & 24 - & 37 - & 05 \text{ दृष्टि} \\
\hline
\end{array}
$$

धर्म भाव :

```
      0 – 25 – 28 – 15  नवम् भाव
    – 7 – 20 – 24 – 32  बुध
    ___________________
      5 – 05 – 03 – 43
```

सूत्र = अंश × 2

```
        5 – 03 – 43
                × 2
    ___________________
    = 10 – 07 – 26 दृष्टि
```

कर्म भाव :

```
      1 – 25 – 09 – 03  दशम भाव
    – 7 – 20 – 24 – 32  बुध
    ___________________
      6 – 04 – 44 – 31
```

सूत्र = सब के अंश ÷ 2

```
      10 – 00 – 00 – 00
    –  6 – 04 – 44 – 31
    ___________________
       3 – 25 – 15 – 29
    ___________________
     115 – 15 – 29 ÷ 2
    =  57 – 37 – 44 दृष्टि
```

लाभ भाव :

```
      2 – 25 – 28 – 15 एकादश भाव
    – 7 – 20 – 24 – 32 बुध
    ___________________
      7 – 05 – 03 – 43
```

सूत्र = सब के अंश ÷ 2

```
      10 – 00 – 00 – 00
    –  7 – 05 – 03 – 43
    ___________________
       2 – 24 – 56 – 17
    ___________________
      84 – 56 – 17 ÷ 2
    = 42 – 28 = 8 दृष्टि
```

व्यय भाव : 3 – 25 – 47 – 27 द्वाद्वश भाव

– 7 – 20 – 24 – 32 बुध

8 – 05 – 22 – 55

सब के अंश ÷ 2 ∴ 10 – 00 – 00 – 00

– 8 – 05 – 22 – 55

1 – 24 – 37 – 05

54 – 37 – 05 ÷ 2

= 27 – 18 – 32

गुरू की सभी भावों पर दृष्टि साधन :

तन भाव : 4 – 26 – 06 – 39 प्रथम भाव

– 9 – 16 – 18 – 45 गुरू

7 – 09 – 57 – 54

सूत्र = अंश ÷ 2 + 45 9 – 57 – 45 ÷ 2

= 4 – 58 – 52

+ 45

= 49 – 58 – 52 दृष्टि

धन भाव : 5 – 25 – 47 – 27 द्वितीय भाव

– 9 – 16 – 18 – 45 गुरू

सूत्र = 60 – अंश $\times \frac{3}{2}$ 8 – 09 – 28 – 42

9 – 28 – 42

× 3

28 – 26 – 06 ÷ 2

= 14 – 13 – 03 ऋण 60 = 45 – 46 – 57 दृष्टि

भ्रातृ भाव :

```
     6  –  25  –  28  –  15 तृतीय भाव
  –  9  –  16  –  18  –  45 गुरू
  ------------------------------
     9  –  09  –  09  –  30
सूत्र = अंश ÷ 2
    10  –  00  –  00  –  00
     9  –   9  –   9  –  30
  ------------------------------
     0  –  50  –  50  –  30
  ------------------------------
    50  –  50  –  30 ÷ 2
  = 25  –  25  =  15 दृष्टि
```

सहज भाव :

```
     7  –  25  –  09  –  03 चतुर्थ भाव
  –  9  –  16  –  18  –  45 गुरू
  ------------------------------
    10  –  09  –  50  –  18
  ------------------------------
    10 शेष = 0 दृष्टि
```

पुत्र भाव :

```
     9  –  25  –  47  –  27 पंचम भाव
  –  9  –  16  –  18  –  45 गुरू
  ------------------------------
    11  –  09  –  09  –  30
  ------------------------------
    11 शेष = 0 दृष्टि
```

शत्रु भाव :

```
     9  –  25  –  47  –  27 षष्टम् भाव
  –  9  –  16  –  18  –  45 गुरू
  ------------------------------
     0  –  09  –  28  –  42
  ------------------------------
     0 शेष = 0 दृष्टि
```

स्त्री भाव :

```
              10  –  26  –  6  –  39 सप्तम भाव
          –    9  –  16  –  18  –  45  गुरू
              ------------------------------
सूत्र = अंश ÷ 2    1  –  09  –  49  –  54
              ------------------------------
               9  –  49  –  54 ÷ 2
          =    4  –  53  –  52 दृष्टि
```

आयु भाव :

```
              11  –  25  –  47  –  27 अष्टम् भाव
          –    9  –  16  –  18  –  45 गुरू
              ------------------------------
सूत्र = अंश + 15   2  –  09  –  28  –  42
              ------------------------------
               9  –  28  –  42
          +   15
              -----------------------
              24  –  28  –  42 दृष्टि
```

धर्म भाव :

```
                    0  –  25  –  28  –  15 नवम् भाव
                –   9  –  16  –  18  –  45 गुरू
                    ------------------------------
सूत्र = अंश ÷ 2 + 45   3  –  09  –  09  –  30
                    ------------------------------
                    9  –  9  –  30 ÷ 2
                    4  –  34  –  45
                +  45
                    -----------------------
                   49  –  34  –  45 दृष्टि
```

कर्म भाव :

	1 –	25 –	09 –	03 दशम् भाव
–	9 –	10 –	18 –	45 गुरू
सूत्र = अंश ×2 – 60	4 –	8 –	40 –	18
	8 –	40 –	18	
		×	2	
	17 –	20 –	36	
	60 –	00 –	00	
–	17 –	20 –	36	
	49 –	39 –	24 दृष्टि	

लाभ भाव :

	2 –	25 –	28 –	15 एकादश भाव
–	9 –	16 –	18 –	45 गुरू
सूत्र = अंश × 2	5 –	09 –	09 –	30
	9 –	9 –	30	
		×	2	
=	18 –	19 –	00 दृष्टि	

व्यय भाव :

	3 –	25 –	47 –	27 द्वाद्वश् भाव
–	9 –	16 –	18 –	45 गुरू
सूत्र = अंश ÷ 2 + 45	6 –	09 –	28 –	42
	9 –	28 –	42 ÷ 2	
=	4 –	45 –	21	
+	45			
	49 –	45 –	21 दृष्टि	

शुक्र की सभी भावों पर दृष्टि साधन :

तन भाव :

```
     4  –  26  –   6  –  39  प्रथम भाव
–    6  –  12  –  54  –  02  शुक्र
    10  –  13  –  12  –  37
    10 शेष = 0 दृष्टि
```

धन भाव :

```
     5  –  25  –  47  –  27  द्वितीय भाव
–    6  –  12  –  54  –  02  शुक्र
    11  –  13  –  53  –  25
    11 शेष = 0 दृष्टि
```

भ्रातृ भाव :

```
     6  –  25  –  28  –  15  तृतीय भाव
–    6  –  12  –  54  –  02  शुक्र
     0  –  12  –  34  –  13
     0 शेष = 0 दृष्टि
```

सहज भाव :

```
                     7  –  25  –  09  –  03 चतुर्थ भाव
                –    6  –  12  –  54  –  02 शुक्र
सूत्र = अंश ÷ 2      1  –  13  –  15  –  01
                    13  –  15  –  01 ÷ 2
                =    6  –  37  –  30 दृष्टि
```

पुत्र भाव :

```
          8  –  25 –  28 –  15 पंचम् भाव
     –    6  –  12 –  54 –  02 शुक्र
          ----------------------------
सूत्र = अंश + 15    2  –  13 –  34 –  13
          ----------------------------
          13 –  34 –  13
     +    15
          --------------
     =    28 –  34 –  13 दृष्टि
```

शत्रु भाव :

```
          9  –  25 –  47 –  27 षष्टम् भाव
     –    6  –  12 –  54 –  02 शुक्र
          ----------------------------
सूत्र = 45 – अंश ÷ 2    3  –  12 –  53 –  25
          ----------------------------
          12 –  53 –  25 ÷ 2
     –    6  –  26 –  42
          --------------
          45 –  00 –  00
          --------------
          6  –  26 –  42
     =    38 –  33 –  18 दृष्टि
```

स्त्री भाव :

```
          10 –  26 –  06 –  39 सप्तम् भाव
     –    6  –  12 –  54 –  02 शुक्र
          ----------------------------
सूत्र = 30 – अंश    4  –  13 –  12 –  37
          ----------------------------
          30 –  00 –  00
     —    13 –  12 –  37
          --------------
     =    16 –  47 –  23 दृष्टि
```

आयु भाव :

		11 –	25 –	47 –	27 अष्टम् भाव
	–	6 –	12 –	54 –	02 शुक्र
सूत्र = अंश × 2		5 –	12 –	53 –	25
		12 –	53 –	25	
			×	2	
	=	25 –	46 –	50 दृष्टि	

धर्म भाव :

		0 –	25 –	28 –	15 नवम् भाव
	–	6 –	12 –	54 –	02 शुक्र
सब के अंश ÷ 2		10 –	00 –	00 –	00
		6 –	12 –	34 –	13
		3 –	17 –	25 –	47
		107 –	25 –	47 ÷ 2	
	=	53 –	42 –	53 दृष्टि	

कर्म भाव :

		1 –	25 –	09 –	03 दशम् भाव	
	––	6 –	12 –	54 –	02 शुक्र	
		7 –	12 –	15 –	01	
सूत्र = सब के अंश ÷ 2			10 –	00 –	00 –	00
			7 –	12 –	15 –	01
			2 –	17 –	44 –	59
			77 –	44 –	59 ÷ 2	
		=	38 –	52 –	29 दृष्टि	

लाभ भाव :

	2 – 25 – 28 – 15 एकादश भाव
	– 6 – 12 – 54 – 02 शुक्र
	8 – 12 – 34 – 13
सूत्र = सब के अंश ÷ 2	10 – 00 – 00 – 00
	8 – 12 – 34 – 13
	1 – 17 – 26 – 00
	47 – 26 – 00 ÷ 2
	= 23 – 43 – 00 दृष्टि

व्यय भाव :

	3 – 25 – 47 – 27 द्वाद्वश भाव
	– 6 – 12 – 54 – 02 शुक्र
	9 – 12 – 53 – 25
सूत्र = सब के अंश ÷ 2	10 – 00 – 00 – 00
	– 9 – 12 – 53 – 25
	0 – 17 – 06 – 35
	17 – 06 – 35 ÷ 2
	= 8 – 33 – 17 दृष्टि

शनि की सभी भावों पर दृष्टि साधन :

तन भाव :

	4 – 26 – 06 – 39 प्रथम भाव
	– 7 – 06 – 05 – 23 शनि
सूत्र = 60 – अंश ÷ 2	9 – 20 – 01 – 16

20 – 01 – 16

× 2

— 40 – 02 – 32

60 – 00 – 00

40 – 02 – 32

= 19 – 57 – 28 दृष्टि

तन भाव : 4 – 26 – 06 – 39 प्रथम भाव

सूत्र = 60 – अंश ÷ 2 – 7 – 06 – 05 – 23 शनि

9 – 20 – 01 – 16

20 – 01 – 16

× 2

40 – 02 – 32

60 – 00 – 00

— 40 – 02 – 32

= 19 – 57 – 28 दृष्टि

धन भाव : 5 – 25 – 47 – 27 द्वितीय भाव

– 7 – 06 – 05 – 23 शनि

10 – 19 – 42 – 04

10 शेष = 0 दृष्टि

भ्रातृ भाव :

6 – 25 – 28 – 15 तृतीय भाव

– 7 – 06 – 05 – 04 शनि

11 – 19 – 22 – 52

11 शेष = 0 दृष्टि

सहज भाव :

	7 –	25 –	09 –	03 चतुर्थ भाव
–	7 –	06 –	05 –	23 शनि
	0 –	19 –	03 –	40

0 शेष = 0 दृष्टि

पुत्र भाव :

	8 –	25 –	28 –	15 पंचम् भाव
–	7 –	06 –	05 –	**23 शनि**
सूत्र = अंश × 2	1 –	19 –	22 –	52
	19 –	22 –	52	
		×	2	
=	38 –	45 –	44 दृष्टि	

शत्रु भाव :

	9 –	25 –	47 –	27 षष्टम् भाव
–	7 –	06 –	05 –	23 शनि
सूत्र = अंश ÷ 2 – 60	2 –	19 –	42 –	04
	19 –	42 –	04 ÷ 2	
=	9 –	51 –	02	
	60 –	00 –	00	
	9 –	51 –	02	
=	50 –	08 –	52 दृष्टि	

स्त्री भाव :

```
                         10 – 26 – 06 – 39 सप्तम् भाव
                     –    7 – 06 – 05 – 23 शनि
                         ____________________
सूत्र = 45 – अंश ÷ 2      3 – 20 – 01 – 16
                         ____________________
                         20 – 01 – 16 ÷ 2
                         = 10 – 0 – 38
                         45 – 00 – 00
                         10 – 00 – 38
                         ______________
                     =   34 – 59 – 22 दृष्टि
```

आयु भाव :

```
                         11 – 25 – 47 – 27 अष्टम् भाव
                     –    7 – 06 – 05 – 23 शनि
                         ____________________
सूत्र = 30 – अंश          4 – 19 – 42 – 04
                         ____________________
                         30 – 00 – 00
                         19 – 42 – 04
                         ______________
                     =   10 – 17 – 56 दृष्टि
```

धर्म भाव :

```
                          0 – 25 – 28 – 15 नवम् भाव
                     –    7 – 06 – 05 – 23 शनि
                         ____________________
सूत्र = अंश × 2           5 – 19 – 22 – 52
                         ____________________
                         19 – 22 – 52 × 2
                     =   38 – 45 – 44 दृष्टि
```

कर्म भाव :

	1 –	25 –	09 –	03 दशम् भाव
–	7 –	06 –	05 –	23 शनि
	6 –	19 –	03 –	40
सूत्र = अंश ÷ 2	10 –	00 –	00 –	00
–	6 –	19 –	03 –	40
	3 –	10 –	56 –	20
	100 –	56 –	20 ÷ 2	
=	50 –	28 –	10 दृष्टि	

लाभ भाव :

	2 –	25 –	28 –	15 एकादश भाव
–	7 –	06 –	05 –	23 शनि
	7 –	19 –	25 –	52
सूत्र = सब अंश ÷ 2	10 –	00 –	00 –	00
–	7 –	19 –	25 –	52
	2 –	10 –	24 –	08
	70 –	24 –	08 ÷ 2	
=	35 –	12 –	04 दृष्टि	

व्यय भाव :

	3 –	25 –	47 –	27 द्वाद्वश भाव
–	7 –	06 –	05 –	23 शनि
सूत्र = अंश + 30	8 –	19 –	42 –	04
	19 –	42 –	04	
+	30			
=	49 –	42 –	04 दृष्टि	

भाव दृग्बल चक्र

	तन	धन	भ्रातृ	माता	पुत्र	रिपु	स्त्री	आयु	धर्म	कर्म	लाभ	व्यय
	1	0	0	0	13	42	31	2	53	46	31	16
सू०	15	0	0	0	21	1	19	58	25	48	38	59
	28	0	0	0	20	52	28	8	20	16	40	4
	32	2	0	0	0	42	40	32	5	49	47	32
चं०	13	23	0	0	0	37	33	22	4	12	32	22
	12	18	0	0	0	12	36	48	48	0	24	48
	0	0	3	27	52	21	16	60	52	40	11	0
मं०	0	0	52	38	15	56	45	0	15	47	7	0
	0	0	17	4	25	13	58	0	25	18	42	0
	27	0	0	0	2	20	41	24	10	57	42	27
बु०	8	0	0	0	31	22	38	37	7	37	28	18
	56	0	0	0	51	55	57	5	26	44	8	32
	49	45	25	0	0	0	4	24	49	42	18	49
गु०	58	46	25	0	0	0	53	28	34	49	19	45
	52	57	15	0	0	0	52	42	45	24	0	21
	0	0	0	6	28	38	16	25	53	38	23	8
शु०	0	0	0	37	34	33	47	46	42	51	43	33
	0	0	0	30	13	18	23	50	53	29	0	17
	19	0	0	0	38	50	34	10	38	50	35	49
श०	57	0	0	0	45	8	59	17	45	28	12	42
	28	0	0	0	44	58	22	56	44	10	4	4

	109	48	25	6	31	101	103	107	118	188	132	117	
शुभ दृष्टि	20	22	25	37	6	33	53	15	29	20	2	59	
	50	10	15	30	4	25	28	24	52	37	32	58	
	21	0	3	27	104	114	82	73	144	138	77	66	
पाप दृष्टि	12	0	52	38	22	7	54	16	26	3	58	11	
	56	0	17	4	29	3	48	04	29	44	26	8	
	88	48	21	21	73	12	20	33	25	50	54	51	
अन्तर	7	22	32	0	16	33	58	59	56	16	4	48	÷4
	54	10	58	34	25	8	40	20	37	53	6	50	
	22	12	5	5	18	3	5	8	6	12	13	12	
भा०दृग्बल	1	5	23	15	18	8	14	44	29	34	31	57	
	58	32	13	8	36	17	40	50	9	13	1	12	
+ —	+	+	+	–	–	–	+	+	–	+	+	+	

ग्रहों का इष्ट कष्ट साधन : "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 7 श्लोक 1–18 तक ग्रहों का इष्ट कष्ट साधन दिया हैं । इस अध्याय में उच्च रश्मि तथा चेष्टा रश्मि साधन कर ग्रहों का इष्ट तथा कष्ट फल का निरूपण किया है।

उच्च रश्मि साधन विधि :- श्लोक एक में उच्च रश्मि साधन दिया है : – ग्रहों में उसके नीच को घटा देना शेष 6 राशि से अधिक हो तो उसे 12 राशि में घटा कर राशि में एक जोड़ना तथा अंशादि को दोगुणा कर राशि में जोड़ देना तो उच्च रश्मि होती है।

सूर्य उच्च रश्मि साधन :

6 – 28 – 45 – 35 सूर्य
– 6 – 10 सूर्य नीच
0 – 18 – 45 – 35 केवल राशि में +1, अंशादि का दो गुणा
+ 1 × 2
2 – 07 – 3 – 10 उच्च राश्मि सूर्य

चन्द्र उच्च रश्मि साधन :

8 – 0 – 33 – 03 चन्द्र
– 7 – 3 चन्द्र नीच
0 – 27 – 33 – 03 राशि +1, अंशादि का दुगना
+ 1 × 2
2 – 07 – 3 – 10 चन्द्र उच्च रश्मि

मंगल उच्च रश्मि साधन :

5 – 17 – 43 – 40 मंगल
– 3 – 28 मंगल नीच
0 – 19 – 43 – 40 राशि +1, अंशादि का दुगना
+ 1 × 2
3 – 09 – 27 – 20 मंगल उच्च रश्मि

बुध उच्च रश्मि साधन :

	7	20	24	32	बुध
−	11	15			बुध नीच
	8	05	24	32	
	12	00	00	00	
−	8	05	24	32	
	3	24	35	28	
+	1			× 2	राशि +1, अंशादि का दो गुणा
	5	18	10	15	बुध उच्च रश्मि

गुरू उच्च रश्मि साधन :

	9	16	18	45	गुरू
−	9	05			गुरू नीच
	0	11	18	45	
+	1			× 2	राशि +1, अंशादि का दुगना
	1	22	37	30	गुरू उच्च रश्मि

शुक्र उच्च रश्मि साधन :

	6	12	54	02	शुक्र
−	5	27			शुक्र नीच
	0	15	54	02	
+	1			× 2	राशि +1, अंशादि का दुगना
	1	31	48	4	शुक्र उच्च रश्मि

शनि उच्च रश्मि साधन :

	7	–	6	–	5	–	23	शनि
–	0	–	20					शनि नीच
	6	–	16	–	05	–	23	
	12	–	00	–	00	–	00	
–	6	–	16	–	05	–	23	
	5	–	13	–	54	–	37	
+	1					×	2	राशि +1, अंशादि का दो गुणा
	6	–	27	–	49	–	14	शनि उच्च रश्मि

उच्च रश्मि चक्र

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	योग
2	2	3	5	1	2	6	25
7	25	9	18	22	01	27	22
31	6	27	10	37	48	49	30
10	6	20	56	30	04	14	20

चेष्टा रश्मि साधन विधि : चेष्टा केन्द्र पर से उच्च **रश्मि साधन की तरह चेष्टा रश्मि** का साधन कर दोनो (उच्च रश्मि और चेष्ट रश्मि) का योग कर आधा करने से जो आवे वह शुभ रश्मि होती है। इसे 8 में घटाने से अशुभ रश्मि होती है।

सूर्य में अयनांश जोड़कर, उसमें तीन राशि जोड़ने से सूर्य का चेष्ट केन्द्र होता है। चन्द्रमा में सूर्य को घटाने से चन्द्रमा का चेष्टा केन्द्र होता है।

सूर्य चेष्टा केन्द्र साधन :

	6	–	28	–	45	–	35	सूर्य
+			24	–	45	–	35	अयनांश
	7	–	23	–	09	–	10	
+	3							राशि
	10	–	23	–	09	–	10	सूर्य चेष्टा केन्द्र

चन्द्र चेष्टा केन्द्र साधन :

	8	–	00	–	33	–	03	चन्द्र
–	6	–	28	–	45	–	35	सूर्य
	1	–	01	–	47	–	28	चन्द्र चेष्टा केन्द्र

बाकी ग्रहों का चेष्टा केन्द्र पहले निकाल चुके हैं।

सूर्य चेष्टा रश्मि साधन :

	10	–	23	–	9	–	10	चेष्टा केन्द्र सूर्य
–	6	–	10					सूर्य नीच
	4	–	13	–	9	–	10	
+	1					×	2	राशि +1, अंशों का दुगना
	5	–	26	–	18	–	20	चेष्टा रश्मि सूर्य

चन्द्र चेष्टा रश्मि साधन :

	1	–	1	–	47	–	28	चन्द्र चेष्टा केन्द्र
–	7	–	3					चन्द्र नीच
	5	–	28	–	47	–	28	
+	1					×	2	राशि +1, अंशों का दुगना
	7	–	27	–	34	–	56	चेष्टा रश्मि चन्द्र

मंगल चेष्टा रश्मि साधन :

	2	22	18	50	चेष्टा केन्द्र मंगल
−	3	28			मंगल नीच
	10	24	18	50	
	12	00	00	00	
−	10	24	18	50	
	1	05	41	10	
+	1			× 2	राशि +1, अंशों का दुगना
	2	11	22	20	चेष्टा रश्मि मंगल

बुध चेष्ट रश्मि साधन :

	5	3	54	09	बुध चेष्टा केन्द्र
−	11	15			बुध नीच
	5	18	54	09	
+	1			× 2	राशि +1, अंशों का दुगना
	7	07	48	18	चेष्टा रश्मि बुध

शुक्र चेष्टा रश्मि साधन :

	0	29	59	49	शुक्र चेष्टा केन्द्र
−	5	27			शुक्र नीच
	7	02	59	49	
	12	00	00	00	
−	7	02	59	49	
	4	27	00	11	
+	1			× 12	राशि +1, अंशों का दुगना
	6	24	00	22	चेष्टा रश्मि शुक्र

शनि इष्ट रश्मि साधन :

	0	–	01	–	10	–	12	शनि चेष्टा केन्द्र
–	0	–	20					शनि नीच
	11	–	11	–	10	–	12	
	12	–	00	–	00	–	00	
–	11	–	11	–	10	–	12	
	0	–	18	–	49	–	48	
+	1					×	2	राशि +1, अंशों का दुगना
	2	–	07	–	39	–	36	चेष्टा रश्मि शनि

चेष्टा रश्मि चक्र

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
5	7	2	7	6	6	2
26	27	11	7	4	24	7
18	34	22	48	24	0	39
20	56	20	18	14	22	36

शुभ रश्मि व अशुभ रश्मि साधन विधि :

(उच्च रश्मि + चेष्टा रश्मि) ÷ 2 = शुभ रश्मि

शुभ रश्मि – 8 = अशुभ रश्मि

सूर्य शुभाशुभ रश्मि साधन :

	2	–	07	–	31	–	10	उच्च रश्मि सूर्य
+	5	–	26	–	18	–	20	चेष्टा रश्मि सूर्य
	8	–	03	–	49	–	30 ÷ 2	
=	4	–	1	–	54	–	45	शुभ रश्मि सूर्य

$$\begin{array}{r} 8 - 00 - 00 - 00 \\ -\ 4 - 01 - 54 - 45 \\ \hline 3 - 28 - 05 - 15 \end{array}$$ अशुभ रश्मि सूर्य

चन्द्र शुभाशुभ रश्मि साधन :

2 – 25 – 6 – 6 चन्द्र उच्च रश्मि

\+ 7 – 27 – 34 – 56 **चेष्टा रश्मि चन्द्र**

10 – 32 – 41 – 02 ÷ 2

= 5 – 16 – 20 – 31 शुभ रश्मि चन्द्र

8 – 00 – 00 – 00

– 5 – 16 – 20 – 31

2 – 13 – 39 – 29 **अशुभ रश्मि चन्द्र**

मंगल शुभाशुभ रश्मि साधन :

3 – 9 – 27 – 20 मंगल उच्च रश्मि

\+ 2 – 11 – 22 – 20 चेष्टा रश्मि

5 – 20 – 49 – 40 ÷ 2

= 3 – 10 – 12 – 50 **शुभ रश्मि मंगल**

8 – 00 – 00 – 00

– 3 – 10 – 12 – 50

4 – 19 – 47 – 10 अशुभ रश्मि मंगल

बुध शुभाशुभ रश्मि साधन :

5 – 18 – 10 – 50 उच्च रश्मि बुध

\+ 7 – 07 – 48 – 18 **चेष्टा रश्मि बुध**

12 – 26 – 09 – 08 ÷ 2

= 6 – 13 – 4 – 34 शुभ रश्मि बुध

8 – 00 – 00 – 00

– 6 – 13 – 04 – 34

1 – 16 – 55 – 26 **अशुभ रश्मि बुध**

गुरू शुभाशुभ रश्मि साधन :

1 – 22 – 37 – 30 उच्च रश्मि गुरू

\+ 6 – 04 – 24 – 14 चेष्टा रश्मि गुरू

8 – 07 – 01 – 44 ÷ 2

= [illegible] – 3 – 30 – 52 शुभ रश्मि गुरू

8 – 00 – 00 – 00

– 4 – 03 – 30 – 52

3 – 26 – 29 – 08 अशुभ रश्मि गुरू

शुक्र शुभाशुभ रश्मि साधन :

2 – 01 – 48 – 04 उच्च रश्मि शुक्र

\+ 6 – 24 – 00 – 22 चेष्टा रश्मि शुक्र

8 – 25 – 48 – 26 ÷ 2

= 4 – 12 – 54 – 13 शुभ रश्मि शुक्र

8 – 00 – 00 – 00

— 4 – 12 – 54 – 13

3 – 17 – 05 – 47 अशुभ रश्मि शुक्र

शनि शुभाशुभ रश्मि साधन :

	6	27	49	14	उच्च रश्मि शनि
+	2	07	39	36	चेष्टा रश्मि शनि
	9	05	28	50 ÷ 2	
=	5	02	44	25	शुभ रश्मि शनि
	8	00	00	00	
–	5	02	44	25	
	2	27	15	35	अशुभ रश्मि शनि

शुभाशुभ रश्मि चक्र

सू०	च०	म०	बु०	गु०	शु०	श०	योग		
4	5	3	6	4	4	5	33	रा०	
1	16	10	13	3	12	2	0	अं०	शुभ रश्मि
54	20	12	4	30	54	44	42	क०	
45	31	50	34	52	13	25	10	वि०	
3	2	4	1	3	3	2	22	रा०	
28	13	19	16	26	17	27	29	अं०	
5	39	47	55	29	5	15	17	क०	अशुभ रश्मि
15	29	10	26	8	45	35	48	वि०	

इष्ट कष्ट साधन विधि : ग्रहों के उच्च रश्मि और चेष्टा रश्मि में एक–एक घटाकर 10 से गुणा कर दोनों का योग कर आधा करने से इष्ट होता है। इसे 60 में से घटाने पर कष्ट प्राप्त होता है।

सूर्य इष्ट कष्ट साधन :

```
     2  –  7  –  31  –  10      उच्च रश्मि सूर्य
–    1
   ____________________
     1  –  7  –  31  –  10
                   ×  10
   ____________________
    11  – 15  –  11  –  40
   ____________________
     5  – 26  –  18  –  20      चेष्टा रश्मि सूर्य
–    1
   ____________________
     4  – 26  –  18  –  20
                   ×  10
   ____________________
    44  – 23  –  03  –  20
+   11  – 15  –  11  –  40
   ____________________
    56  – 18  –  15  –  00 ÷ 2
   ____________________
        = 28  –  9  –  7  –  30      इष्ट फल
    60  – 00  –  00  –  00
–   29  – 07  –  07  –  30
   ____________________
    30  – 22  –  53  –  30      कष्ट फल
   ____________________
```

चन्द्र इष्ट कष्ट साधन :

```
     2  –  25  –  6  –  6      उच्च रश्मि चन्द्र
–    1
   ____________________
     1  –  25  –  6  –  6
                   ×  10
   ____________________
    18  –  11  –  01  –  00
   ____________________
```

7 – 27 – 34 – 56 चेष्टा रश्मि चन्द्र
– 1

6 – 27 – 34 – 56
× 10

65 – 5 – 49 – 20
+ 18 – 11 – 01 – 00

83 – 16 – 50 – 20 ÷ 2

= 42 – 08 – 25 – 10 इष्ट फल चन्द्र

60 – 00 – 00 – 00
– 42 – 08 – 25 – 10

17 – 21 – 34 – 50 कष्ट फल चन्द्र

मंगल इष्ट कष्ट साधन :

3 – 9 – 27 – 20 उच्च रश्मि मंगल
– 1

2 – 9 – 27 – 20
× 10
23 – 04 – 33 – 20

2 – 11 – 22 – 22 चेष्ट रश्मि मंगल
– 1

1 – 11 – 22 – 20
× 10

13 – 23 – 43 – 20
+ 23 – 04 – 33 – 20

36 – 28 – 16 – 40 ÷ 2

=	18 –	14 –	8 –	20	इष्ट फल मंगल
	60 –	00 –	00 –	00	
–	18 –	14 –	08 –	20	
	41 –	15 –	51 –	40	कष्ट फल मंगल

बुध इष्ट कष्ट साधन :

	5 –	18 –	10 –	56	उच्च रश्मि बुध
–	1				
	4 –	18 –	10 –	56	
			×	10	
	46 –	01 –	46 –	20	
	7 –	7 –	48 –	18	चेष्टा रश्मि बुध
–	1				
	6 –	7 –	48 –	18	
			×	10	
	62 –	16 –	06 –	00	
+	46 –	01 –	46 –	20	
	108 –	17 –	52 –	20 ÷ 2	
=	54 –	08 –	56 –	10	इष्ट फल बुध
	60 –	00 –	00 –	00	
–	54 –	08 –	56 –	10	
	05 –	51 –	03 –	50	कष्ट फल बुध

गुरू इष्ट कष्ट साधन :

```
    1  -  22 -  37 -  30     उच्च रश्मि गुरू
 -  1
 ----------------------
    0  -  22 -  37 -  30
                   ×  10
 ----------------------
    7  -  16 -  15 -  00
 ----------------------
    6  -  4  -  24 -  14     चेष्टा रश्मि गुरू
 -  1
 ----------------------
    5  -  4  -  24 -  14
                   ×  10
 ----------------------
    51 -  14 -  02 -  20
 +  7  -  16 -  15 -  00
 ----------------------
    59 -  00 -  17 -  20 ÷ 2
 ----------------------
 =  29 -  30 -  08 -  40     इष्ट फल गुरू
    60 -  00 -  00 -  00
 -  29 -  30 -  08 -  40
 ----------------------
    30 -  29 -  51 -  20     कष्ट फल गुरू
```

शुक्र इष्ट कष्ट साधन :

```
    2  -  01 -  48 -  04     उच्च रश्मि शुक्र
 -  1
 ----------------------
    1  -  01 -  48 -  04
                   ×  10
 ----------------------
    10 -  18 -  00 -  40
```

```
     6  – 24 – 00 – 22        चेष्टा रश्मि शुक्र
–    1
     5  – 24 – 00 – 22
                   × 10
     54 – 00 – 03 – 40
+    10 – 18 – 00 – 40
     64 – 18 – 04 – 20 ÷ 2
     = 32 – 9 – 02 – 10      इष्ट फल शुक्र
     60 – 00 – 00 – 00
–    32 – 09 – 02 – 10
     27 – 20 – 57 – 50       कष्ट फल शुक्र
```

शनि इष्ट कष्ट साधन :

```
     6  – 27 – 49 – 14       उच्च रश्मि शनि
–    1
     5  – 27 – 49 – 14
                   × 10
     59 – 08 – 12 – 20
     2  – 7  – 39 – 36       चेष्टा रश्मि सूर्य
–    1
     1  – 7  – 39 – 36
                   × 10
     12 – 16 – 36 – 00
+    59 – 08 – 12 – 20
     71 – 24 – 48 – 20 ÷ 2
```

= 35 – 42 – 24 – 10 इष्ट फल शनि

60 – 00 – 00 – 00

– 35 – 42 – 24 – 10

23 – 17 – 35 – 50 कष्ट फल शनि

सू०	च०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	
29–7	42–08	18–14	54–08	29–30	32–9	35–42	इष्ट फल
30–22	17–21	41–15	5–51	30–29	27–20	23–17	कष्ट फल

षडबल तथा भावबल चक्र

षडबल

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
1. कुल स्थान बल	135.15	149.11	191.34	196.11	133.46	147.18	230.21
2. कुल दिग्बल	8.47	58.32	22.29	31.54	13.15	45.55	23.19
3. कुल काल बल	86.44	180.36	124.23	128.33	132.48	92.12	186.10
4. कुल चेष्टा बल	13.01	10.35	26.09	51.18	22.24	9.59	0.23
5. कुल नैसर्गिक बल	60.00	50.85	17.09	25.43	34.17	42.51	8.34
योग	303.47	450.19	381.44	433.39	336.30	338.15	451.47
धनात्मक ऋणात्मक दृष्टि बल	+ 0.42	– 8.42	+ 15.9	– 0.14	– 18.37	0	— 1.1
कुल षडबल	304.29	441.37	396.53	433.25	316.53	381.15	450.46
रूप षडबल	5.4	7.21	6.36	7.13	5.16	6.34	7.30

न्यूनतम आवश्यकता	5.00	6.00	5.00	7.00	6.50	5.50	5.00
संबंधित पद	7	2	4	3	6	5	1
इष्ट फल	29.7	42.8	18.14	54.08	29.30	32.9	35.42
कष्ट फल	30.22	17.21	41.15	5.51	30.29	27.20	23.17

भाव बल

	तनु	धन	भ्रातृ	सुख	पुत्र	शत्रु	स्त्री	आयु	धर्म	कर्म	लाभ	व्यय	
1.भावाधिपति बल	304	433	388	396	316	450	450	316	396	388	433	441	
2.भाव दिग्बल	39	50	40	29	10	39	29	19	40	60	39	20	
3.भावदृष्टि बल	+ 22	+ 12	+ 5	– 5	– 18	– 3	+ 5	+ 8	– 6	+ 12	+ 13	+ 12	
कुल भाव बल	365	495	433	420	308	486	487	343	430	460	485	473	÷60
रूप भाव बल	6.05	8.15	7.13	7.00	5.8	8.6	8.07	5.43	7.10	7.40	8.5	7.21	
संबंधित पद	10	1	7	9	12	3	2	11	8	5	4	6	

* * *

अध्याय-6

विभिन्न दशा साधन

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 31 में दशाओं के भेद दिये है। यहाँ भगवान पाराशर ने अपने शिष्य मैत्रेय जी को 42 प्रकार की दशाओं का ज्ञान दिया। श्लोक 1 से 11 तक केवल 35 दशायें ही लिखी है। बाकी सात दशाओं का ग्रन्थ में उल्लेख नहीं मिलता। बृहत्पाराशर–होराशास्त्र, चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी की पुस्तक में 33 दशाओं का उल्लेख मिलता है। परन्तु इनमें सभी दशायें सर्वमान्य नहीं कही गई हैं। लेकिन मूल ग्रन्थ में ऐसा उल्लेख नहीं है कि सभी दशायें सर्वमान्य नहीं है। कुछ दशाओं का फलादेश आगे दिया है। बाकी का फलादेश नहीं है। उसका तात्पर्य यह है कि मूल ग्रन्थ की पूरी लिपी ग्रन्थ छापने तक उपलब्ध नहीं हुई होंगी। क्योंकि 42 प्रकार की दशाओं को लगाने का आशय फलादेश के लिये कुछ तो जरूर रहा होगा। जिसका प्रयास फलित खण्ड में खोजने का प्रयत्न करेंगे। चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाली पुस्तक में केवल नक्षत्राश्रित दशाओं को फलादेश के लिये बतलाया है। इसके साथ–2 "बृहत्पाराशर–होराशास्त्रम्" ज्योतिष प्रकाशन, वाराणसी, दशाअध्याय में पेज– 342–43 पर 37 दशाओं का उल्लेख मिलता है। लेकिन उपरोक्त तीनों ग्रन्थों में 42 प्रकार की दशाओं को एक मत से स्वीकारा है। यह भी संम्भावना है कि नवमांश नव दशा के भेदों को मिलाकर 42 प्रकार की दशायें मानी गई हों।

दशाओं का जातक की कुण्डली का फलादेश करने में बड़ा भारी महत्व है। क्योंकि दशा जाने बिना अच्छे व बुरे समय का ज्ञान नहीं हो सकता। दशा, अन्तर दशा व प्राण दशा जान कर ही छोटी से छोटी व बड़ी से बड़ी घटनाओं का ज्ञान प्राप्त होता है।

विभिन्न प्रकार की दशा साधन निम्न प्रकार से कर रहे है। दशा साधन के लिये नक्षत्र का भयात्, भभोग जानना जरूरी है। जोकि हम ग्रह साधन अध्याय में निकाल चुके हैं।

	घ०		प०		घ०		प०
मूल भभोग =	54	–	27	भयात् =	2	–	15

विंशोतरी दशा साधन :- विंशोतरी दशा कुल 120 वर्ष की होती है। इसमें दशाक्रम इस प्रकार हैं :– सू०, चं०, मं०, रा०, गु०, श०, बु०, के०, शु०। दशा वर्ष क्रमशः 6, 10, 7, 18, 16, 19, 17, 7, 20। कुल 120 वर्ष होते हैं। पहली दशा सूर्य की होती है। सूर्य का पहला नक्षत्र कृतिका है। अतः कृतिका नक्षत्र से जन्म नक्षत्र गिनने पर जो नक्षत्र आये उसी ग्रह की दशा होगी।

आनयनप्रकारं च श्रृणुष्व द्विजपुंगव ।
नामनक्षत्रपर्यंतमाधारः कृत्तिकादितः ।।
दहनात्स्वर्क्षपर्यन्तं गण्येन्नवभिर्हरेत् ।।
सूर्येन्दुक्ष्माजतमसो वाक्पतिर्मंदचंद्रजौ ।
केतुशुक्रौ क्रमादेते विज्ञेयाश्च दशाधिपाः।।
रसाशामुनिधृत्यब्दा भूपतिर्धृतिवत्सराः ।
सप्तेंदवो नगा व्योमबाहवो भास्करादितः ।[1]

विंशोतरी दशा साधन विधि :- मानक उदाहरण में मूल नक्षत्र का जन्म हैं। कृतिका से गिनने पर 17 नक्षत्र हुए इसे नौ का भाग देने पर 17 ÷ 9 = 1लब्धि, 8 शेष आये। उपरोक्त दशाक्रम में देखा तो आठवी दशा केतु की आती है। अर्थात जातक का जन्म केतु की दशा में हुआ। इसके दशावर्ष 7 होते हैं। दशा का भुक्त भोग्य निकालने के लिये पलात्मक भयात को दशा वर्ष से गुणा कर भभोग का भाग देने पर वर्ष, मास, दिन, घटी, पलादि भुक्त दशा प्राप्त होगी।

$$= \frac{\text{भयात}\times\text{दशावर्ष}}{\text{भभोग}} = \frac{135\times7}{3267} = \frac{35}{121}$$

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 12 से 15, खेमराज श्रीकृष्णदास, वेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

121) 35 (0 वर्ष

× 12

121) 420 (3 मा०

363

57

× 30

121) 1710 (14 दि०

121

500

484

16

× 60

121) 960 (8 ध

847

113

	वर्ष		मा०		दि०		ध	
	7	–	00	–	00	–	00	केतु दशा
–	0	–	3	–	14	–	8	भुक्त दशा
	6	–	8	–	15	–	52	केतु भोग्य दशा

अग्रेंजी तारीख के लिये सूर्य राशि, अंश, कला, विकला पर आयेगा तब दशा समाप्त होगी।

	2042	–	6	–	28	–	45	–	35	
+	6	–	8	–	15	–	52	–	00	केतु भोग्य दशा
	2049	–	3	–	14	–	37	–	35	

विंशोतरी महादशा चक्र

भुक्त	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	ग्रह
0	6	20	6	10	7	18	16	19	17	व०
3	8	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
14	15	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
8	52	0	0	0	0	0	0	0	0	घ०
2042	2049	2069	2075	2085	2092	2110	2126	2145	2162	सम्वत्
6	3	3	3	3	3	3	3	3	3	रा०
28	14	14	14	14	14	14	14	14	14	अं०
45	37	37	37	37	37	37	37	37	37	क०
35	35	35	35	35	35	35	35	35	35	वि०
15-11-1985	1-8-1992	1-8-2012	1-8-2018	1-8-2028	1-8-2035	1-8-2053	1-8-2069	1-8-2088	1-8-2105	अ० तारीख

अन्तर्दशा ज्ञान :

दशा दशाहता कार्या दशभिर्भागमाहरेत् ।

लब्धांकाश्च भवेन्मासास्त्रिंशघ्ने च दिनानि च ।।[1]

अन्तर्दशा साधन विधि :- जिस ग्रह की दशा में अन्तर निकालना हो दोनों को परस्पर गुणा कर गुणितांक को 10 का भाग देने से मास, शेष को 30 से गुणा कर 10 का भाग देने से दिन, फिर शेष को 60 से गुणा कर दस का भाग देने से घटी आदि अन्तर प्राप्त होते हैं। फलित में अन्तर्दशा का ही महत्व होता है। उदाहरण जैसे :– जातक का जन्म केतु दशा में हुआ केतु को दशा वर्ष 7 है। अतः $7 \times 7 = 49 \div 10 =$ ल 4 मास शेष $9 \times 30 = 270 \div 10 = 27$ दिन अतः केतु का केतु में अन्तर 4 मा० 27 दिन का हुआ।

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 33, श्लोक 1, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

अब हमारी केतु की दशा 6 वर्ष 8 मास 15 दिन 52 घटी योग्य है। इस दशा में केतु की अन्तर दशा निकालने के लिये एकिक नियम का तरीका प्रयोग में लाने पर अन्तरदशा आयेगी। जैसे :–

120 वर्ष में केतु दशा है $= 7$ वर्ष

1 वर्ष में केतु दशा है $= \frac{7}{120}$

6 वर्ष 8 मास 16 दिन कितनी $= \frac{7}{120} \times$ 6 (व०) – 8 (मा०) – 16 (दि०)

उपरोक्त को एकरस कर दिन बनाओ तथा जो भाजक से भाज्य का भाग करने पर दिनादि आयेंगे इनको 30 का भाग देने पर मास प्राप्त होगें। उपरोक्त भाजक का जो शेष होगा उसे 60 से गुणा कर भाजक से भाग देने वर घटी प्राप्त होगी।

$$\frac{2520 \times 2416}{43200} = \frac{6088320}{43200}$$

43200) 6088320 (140 दिन

43200
176832
172800
40320
× 60

30) 140 (4 मास
120
20 दिन

43200) 2419200 (56 घटी

216000
259200
599200
×

= 4 मा० 20 दिन 56 घटी
= 4 मा० 21 दिन

56 घटी का एक दिन मान लिया।

केतु अन्तर दशा 7 वर्ष

भुक्त	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	ग्रह
0	0	1	0	0	0	1	0	1	0	वं०
0	4	2	4	7	4	0	11	1	11	मा०
6	21	0	6	0	27	18	6	9	27	दि०
2042	2042	2044	2044	2044	2045	2046	2047	2048	2049	सम्वत्
6	11	1	5	12	5	6	5	6	6	रा०
28	19	19	25	25	22	10	16	25	22	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
35	35	35	35	35	35	35	35	35	35	वि०
1985	1986	1987	1987	1988	1988	1989	1990	1991	1992	सन्
11	4	6	10	5	10	10	10	11	11	मा०
15	6	6	12	12	9	27	3	12	9	ता०

शुक्रान्तर दशा 20 वर्ष

	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	ग्रह
	3	1	1	1	3	2	3	2	1	व०
	4	0	8	2	0	8	2	10	2	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2049	2052	2053	2055	2056	2059	2062	2065	2068	2069	सम्वत्
6	10	10	6	8	8	4	6	4	6	रा०
22	22	22	22	22	22	22	22	22	22	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
35	35	35	35	35	35	35	35	35	35	वि०
1992	1996	1997	1998	2000	2003	2005	2008	2011	2012	सन्
11	3	3	11	1	1	9	11	9	11	मा०
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	ता०

मंगलान्तर दशा 7 वर्ष

	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	ग्रह
	0	1	0	1	6	0	1	0	0	व०
	4	0	11	1	11	4	2	4	7	मा०
	27	18	6	9	27	27	0	6	0	दि०
2083	2083	2084	2085	2087	2088	2089	2089	2089	2090	सम्वत्
6	11	12	11	12	12	5	7	11	6	रा०
22	19	7	13	22	19	16	16	12	22	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
35	35	35	35	35	35	35	35	35	35	वि०
2028	2029	2030	2031	2032	2033	2034	2034	2035	2035	सन्
11	4	4	3	5	5	10	12	4	11	मा०
9	6	24	30	9	6	3	3	9	9	ता०

राहूअन्तर दशा 18 वर्ष

	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	ग्रह
	2	2	2	2	1	3	0	1	1	व०
	8	4	10	6	0	0	10	6	0	मा०
	12	24	6	18	18	0	24	0	0	दि०
2090	2093	2095	2098	2100	2102	2105	2105	2107	2108	सम्वत्
6	3	7	6	12	1	1	12	6	6	रा०
22	4	28	4	22	10	10	4	4	22	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
35	35	35	35	35	35	35	35	35	35	वि०
2035	2038	2040	2043	2046	2047	2050	2051	2052	2053	सन्
11	7	12	10	5	5	5	4	10	11	मा०
9	21	15	21	9	27	27	21	21	9	ता०

सूर्यान्तर दशा 6 वर्ष

	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	ग्रह
	0	0	0	0	0	0	0	0	1	व०
	3	6	4	10	9	11	10	4	0	मा०
	18	0	6	24	18	12	6	6	0	दि०
2069	2069	2070	2070	2071	2072	2072	2073	2073	2074	सम्वत्
6	10	4	8	7	4	4	2	6	6	रा०
22	10	10	16	10	28	10	16	22	22	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
35	35	35	35	35	35	35	35	35	35	वि०
2012	2013	2013	2014	2014	2015	2016	2017	2017	2018	सन्
11	2	8	1	11	9	8	7	11	11	मा०
9	27	27	3	27	15	27	3	9	9	ता०

चन्द्रांतर दशा 10 वर्ष

	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	ग्रह
	0	0	1	1	1	1	6	1	0	व०
	10	7	6	4	7	5	7	8	6	मा०
	0	0	6	0	0	0	0	0	0	दि०
2074	2075	2075	2076	2077	2079	2080	2081	2082	2083	सम्वत्
6	4	11	5	9	4	9	4	12	6	रा०
22	22	22	22	22	22	22	22	22	22	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
35	35	35	35	35	35	35	35	35	35	वि०
2018	2019	2020	2021	2023	2024	2026	2026	2028	2028	सन्
11	9	4	10	2	9	2	9	5	11	मा०
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	ता०

गुरुअन्तर दशा 16 वर्ष

	गु०	रा०	बु०	कं०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ग्रह
	2	2	2	0	2	0	1	0	2	व०
	1	6	3	11	8	9	4	11	4	मा०
	18	12	6	6	0	18	0	6	24	दि०
2108	2110	2113	2115	2116	2118	2119	2121	2122	2144	सम्वत्
6	8	2	5	5	1	10	2	1	6	रा०
22	10	22	28	4	4	22	22	28	22	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
35	35	35	35	35	35	35	35	35	35	वि०
2053	2055	2058	2060	2061	2064	2065	2067	2067	2069	सन्
11	12	7	10	9	5	3	7	6	11	मा०
9	27	9	15	21	21	9	9	15	9	ता०

शनिअन्तर दशा 19 वर्ष

	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	ग्रह
	3	2	1	3	0	1	1	2	2	व०
	0	8	1	2	11	7	1	10	6	मा०
	3	9	9	0	12	0	9	6	12	दि०
2144	2147	2150	2151	2154	2155	2156	2158	2160	2163	सम्वत्
6	6	3	4	6	5	12	2	12	6	रा०
22	25	4	13	13	25	25	4	10	22	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
35	35	35	35	35	35	35	35	35	35	वि०
2069	2072	2075	2076	2079	2080	2082	2083	2086	2088	सन्
11	11	7	8	10	10	5	6	4	11	मा०
9	12	21	30	30	12	12	21	27	9	ता०

बुधान्तर दशा 17 वर्ष

	बु०	के०	शु०	सू०	च०	मं०	रा०	गु०	श०	ग्रह
	2	0	2	0	1	0	2	2	2	व०
	4	11	10	10	5	11	6	3	8	मा०
	27	27	0	6	0	27	18	6	9	दि०
2163	2165	2166	2169	2170	2171	2172	2175	2177	2180	सम्वत्
6.	11	11	9	7	12	12	7	10	6	रा०
22	19	16	16	22	22	19	7	13	22	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
35	35	35	35	35	35	35	35	35	35	वि०
2088	2091	2092	2095	2095	2097	2098	2100	2103	2105	सन्
11	4	4	2	12	5	5	11	2	11	मा०
9	6	3	3	9	9	6	24	30	9	ता०

प्रत्यन्तर दशा :-

स्वांतर्दशाब्दवृंदं च हन्यात्स्वाब्दैगृर्हस्य च ।

विंशोत्तरशतेनाप्तं घस्राः शेषं कलादिकम् ।।[1]

प्रत्यन्तर दशा साधन विधि :- इसमें ग्रह के अन्तर दशा के वर्ष, मास, दिन को एकरस (अर्थात दिन संख्या) करके जिस ग्रह का अन्तर निकालना हो उसकी वर्ष संख्या से गुणा करके 120 का भाग देकर दि० घ० प० अंक लेकर दिनों में 30 का भाग देने पर मास प्राप्त होंगे।

प्रत्यन्तर दशा साधन :- मानक उदाहरण में केतु की अन्तर दशा 4 मास 21 दिन बची हुई पहले प्राप्त कर चुके है। अब इसमें केतु का प्रत्यन्तर निम्न प्रकार से निकाल कर प्रत्यन्तर दशा चक्र में स्थापित कर देंगे।

4 मास 21 दिन = 141 दिन

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 42, श्लोक 1, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

सूत्र :-

120 वर्ष में दशा भुक्ति है $= 7$

1 वर्ष में दशा भुक्ति है $= \frac{7}{120}$

141 दिन में दशा भुक्ति कितनी $= \frac{7}{120} \times 141 = \frac{987}{120}$

120) 987(8 दिन
960
―――
27
× 60

120) 1620(13 घटी
120
―――
420
360
―――
60
× 60

120) 3600(30 पल
360
―――
0
―――

	दि०		घ०		प०
= केतु की प्रत्यन्तर दशा =	8	–	13	–	30

	दि०		घ०		प०	
	8	–	34	–	30	केतु का पूर्ण प्रत्यन्तर
–	8	–	13	–	30	केतु का बचा हुआ प्रत्यन्तर
	0	–	21	–	00	केतु का भुक्त प्रत्यन्तर

केतु दशा में केतु अन्तर में केतु प्रत्यन्तर

भुक्त	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
0	8	24	7	12	8	22	19	23	20	दि०
21	13	30	21	15	34	3	36	16	49	घ०
0	30	0	0	0	30	0	0	30	30	प०
2042	2042	2042	2042	2042	2042	2042	2042	2042	2042	सम्वत्
6	7	8	8	8	8	9	10	11	11	रा०
28	6	01	08	11	29	21	11	4	25	अं०
45	59	29	50	05	39	42	18	35	24	क०
35	05	05	05	05	35	35	35	05	35	वि०
1985	1985	1985	1985	1986	1986	1986	1986	1986	1986	सन्
11	11	12	12	1	1	2	2	3	4	मा०
15	23	17	25	7	15	7	27	20	11	ता०
0	13	43	4	19	54	57	35	49	39	घ०
0	30	30	30	30	0	0	0	30	0	प०

केतु दशा में शुक्र अन्तर में प्रत्यन्तर

भुक्त	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	ग्रह
	2	0	1	0	2	1	2	1	0	मा०
	10	21	5	24	3	26	6	29	24	दि०
	0	0	0	30	0	0	30	30	30	घ०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	प०
2042	2043	2043	2043	2043	2043	2043	2043	2043	2044	सम्वत्
11	2	2	4	4	6	8	11	12	1	रा०
25	5	26	1	25	28	24	1	30	25	अं०
24	24	24	24	54	54	54	24	54	24	क०
35	35	35	35	35	35	35	35	35	35	वि०
1986	1986	1986	1986	1986	1986	1987	1987	1987	1987	सन्
4	6	7	8	9	11	1	3	5	6	मा०
11	21	12	17	12	15	11	17	17	11	ता०
39	39	39	39	9	9	9	39	9	39	घ०
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	प०

केतु दशा में चन्द्र अन्तर में प्रत्यन्तर

	च०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	ग्रह
	0	0	1	0	1	0	0	1	0	मा०
	17	12	1	28	3	29	12	5	10	दि०
	30	15	30	0	15	45	15	0	30	घ०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	प०
2044	2044	2044	2044	2044	2044	2044	2044	2044	2045	सम्वत्
6	6	7	8	8	10	11	11	12	1	रा०
1	18	1	2	30	3	3	15	20	1	अं०
24	54	9	39	39	54	39	54	54	24	क०
35	35	35	35	35	35	35	35	35	35	वि०
1987	1987	1987	1987	1988	1988	1988	1988	1988	1988	सन्
10	11	11	12	1	2	3	4	5	5	मा०
17	5	17	18	16	20	19	2	7	17	ता०
39	9	24	54	54	9	54	9	9	39	घ०
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	प०

केतु दशा में मंगल अन्तर में प्रत्यन्तर

	म०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	ग्रह
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	8	22	19	23	20	8	24	7	12	दि०
	34	3	36	16	49	34	30	21	15	घ०
	30	0	0	30	30	30	0	0	0	प०
2045	2045	2045	2045	2045	2045	2045	2045	2045	2045	सम्वत्
1	1	2	2	3	4	4	5	5	5	रा०
1	9	2	21	14	5	14	8	16	28	अं०
24	59	2	38	54	44	18	48	9	24	क०
35	05	5	5	35	5	35	35	35	35	वि०
1988	1988	1988	1988	1988	1988	1988	1988	1988	1988	सन्
5	5	6	7	8	8	8	9	10	10	मा०
17	26	18	7	1	21	30	25	2	14	ता०
39	13	16	52	9	58	33	3	24	39	घ०
0	30	30	30	0	30	0	0	0	30	प०

केतु दशा में राहू के अन्तर में प्रत्यन्तर

	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	ग्रह
	1	1	1	1	0	2	0	1	0	मा०
	26	20	29	23	22	3	18	1	22	दि०
	42	24	51	33	3	0	54	30	3	घ०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	प०
2045	2045	2045	2045	2046	2046	2046	2046	2046	2046	सम्वत्
5	7	9	11	1	1	4	4	5	6	रा०
28	25	15	15	8	30	3	22	24	16	अं०
24	6	30	21	54	57	57	51	21	24	क०
35	35	35	35	35	35	35	35	35	35	वि०
1988	1988	1989	1989	1989	1989	1989	1989	1989	1989	सन्
10	12	2	4	5	6	8	9	10	11	मा०
14	11	1	1	25	17	20	9	10	2	ता०
39	21	45	36	9	12	12	6	36	39	घ०
35	0	0	0	0	0	0	0	0	0	प०

केतु दशा में गुरु अन्तर में प्रत्यन्तर

	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ग्रह
	1	1	1	0	1	0	0	0	1	मा०
	14	23	17	19	26	16	28	19	20	दि०
	48	12	36	36	0	48	0	36	24	घ०
	0	0	0	0	0	0	6	0	0	प०
2046	2046	2046	2046	2046	2047	2047	2047	2047	2047	सम्वत्
6	8	9	11	12	1	2	3	4	5	रा०
16	1	24	12	1	27	14	12	2	22	अं०
24	12	24	0	36	36	24	24	0	24	क०
35	35	35	35	35	35	35	35	35	35	वि०
1989	1989	1990	1990	1990	1990	1990	1990	1990	1990	सन्
11	12	2	3	4	6	6	7	8	10	मा०
2	17	10	28	17	13	30	28	18	8	ता०
39	27	39	15	51	51	39	39	15	39	घ०
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	प०

केतु दशा में शनि अन्तर में प्रत्यन्तर

	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	ग्रह
	2	1	0	2	0	1	0	1	1	मा०
	3	26	23	6	19	3	23	29	23	दि०
	10	31	16	30	57	15	16	51	12	घ०
	30	30	30	0	0	0	30	0	0	प०
2047	2047	2047	2047	2047	2048	2048	2048	2048	2048	सम्वत्
5	7	9	10	12	1	2	3	5	7	रा०
22	25	22	15	21	11	15	8	8	1	अं०
24	35	6	23	53	50	5	21	12	24	क०
35	5	35	5	5	5	5	35	35	35	वि०
1990	1990	1991	1991	1991	1991	1991	1991	1991	1991	सन्
10	12	2	3	5	5	7	7	9	11	मा०
8	11	8	1	8	28	1	24	24	17	ता०
39	49	21	37	7	4	19	36	27	39	घ०
0	30	0	30	30	30	30	0	0	0	प०

केतु दशा में बुध अन्तर में प्रत्यन्तर

	बु०	के०	शु०	सू०	च०	मं०	रा०	गु०	रा०	ग्रह
	1	0	1	0	0	0	1	1	1	मा०
	20	20	29	17	29	20	23	17	26	दि०
	34	49	30	51	45	49	33	36	31	घ०
	30	30	0	0	0	30	0	0	30	प०
2048	2048	2048	2048	2048	2048	2049	2049	2049	2049	सम्वत्
7	8	9	11	11	12	1	3	5	6	रा०
1	21	12	12	30	29	20	14	1	28	अं०
24	59	48	18	9	54	44	17	56	24	क०
35	5	35	35	35	35	5	5	5	35	वि०
1991	1992	1992	1992	1992	1992	1992	1992	1992	1992	सन्
11	1	1	3	4	5	6	7	9	11	मा०
17	8	29	28	16	16	6	30	18	14	ता०
39	13	3	33	24	9	58	31	7	39	घ०
0	30	0	0	0	0	30	30	30	0	प०

सूक्ष्म दशा :-

स्वोपदशाघटीवृन्दं हतं स्वाब्दग्रहेण च ।

विंशोत्तरशतेनाप्तं (120) लिप्ता शेषं कलादिकम् ।।[1]

सूक्ष्म साधन विधि :- सूत्र में पूर्व कथित ग्रह की विदशा अर्थात प्रत्यन्तर दशा को घटीरूप एक रस करके जिस ग्रह की सूक्ष्म दशा देखनी हो उसके दशा वर्ष से गुणा कर 120 का भाग देने से सूक्ष्म दशा (घटयादि) प्राप्त होंगे।

सूक्ष्म दशा साधन :- मानक उदाहरण में केतु के प्रत्यन्तर में सूक्ष्म दशा निकालनी है । केतु महादशा में केतु की अन्तरदशा में केतु का प्रत्यन्तर 8 दिन– 34 घटी – 30 पल होता है। जोकि पहले निकाल चुके है। लेकिन भोग्य प्रत्यन्तर 8 दिन 13 घटी 30 पल है। तो उपरोक्त दोनों की नियमानुसार सूक्ष्म निकाल कर आपस में घटाने से केतु की भोग्य सूक्ष्म दशा आयेगी। इसके बाद सभी ग्रहों की इसी सूत्रानुसार सूक्ष्म निकाल कर चक्र बनाने के बाद जन्म के वर्ष, तिथि, मास, दिन घटयादि में जोड़ने से सूक्ष्म दशा चक्र बनेगा। जो निम्न प्रकार से है :–

उपरोक्त केतु के प्रत्यन्तर – 8 दि० – 34 घ– 30 प० को घटायदि एक रस किया।

$8\times 6 = 480 + 34 = 514 \times 60 = 30840 + 30 = 30870$ पल

120 वर्ष में दशा भुक्ति होती है $= 7$ वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति होती है $= \frac{7}{120}$

70870 में पल में कितनी होगी $= \frac{7}{120} \times 30871 = \frac{21609}{12} = \frac{7203}{4}$

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 43, श्लोक 1, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

4) 7203(1800 पल

4

32

32

03

× 60

4) 180(45 वि०

16

20

60) 1800(30 घटी

1800

0

घ० प० वि०

= 30 – 0 – 45 पूर्ण सूक्ष्म दशा केतु

अब केतु का भोग्य प्रत्यन्तर 8 दि० 13 घटी 30 पल बचा हुआ है। इसको घटयादि एकरस कर सूक्ष्म निम्न प्रकार से है। 8 × 60=480+13=493× 60 = 20580 + 30 = 29610 पल

120 वर्ष में दशा भुक्ति होती है = 7

1 वर्ष में दशा भुक्ति होती है $= \frac{7}{120}$

29610 पल में कितनी $= \frac{7}{120} \times \frac{29610}{1} = \frac{20727}{12} = \frac{6909}{4}$

4) 6909(1727 पल

4

29

28

10

8

29

28

60) 1727(28 घटी

120

527

480

47 पल

1 घ० प० वि०

× 60 = 28 – 47 – 15

4) 60(15 विपल

4

20

घ०	प०	वि०	
30 –	0 –	45	केतु का पूर्ण सूक्ष्म
– 28 –	47 –	15	केतु का भोग्य सूक्ष्म
1 –	13 –	30	केतु का भुक्त सूक्ष्म आया।

राहू सूक्ष्म साधन :-

120 वर्ष में दशा भुक्ति = 18 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति $= \frac{18}{120}$

30870 पल में कितनी $= \frac{18}{120} \times 30870 = \frac{9261}{2} = 4630 - \frac{1}{2} \times 60 = 30$ विपल

60) 4630(77

420

430

420

10

	घ०	प०	वि०		दि०	घ०	प०	वि०
=	77 –	10 –	30	=	1 –	17 –	10 –	30

गुरु सूक्ष्म साधन :-

120 वर्ष में दशा भुक्ति = 16 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति $= \frac{18}{120}$

30870 पल में कितनी $= \frac{18}{120} \times 30870 = 4116$ पल

60) 4116 (68
360
516
480
36

		दि०	घ०	प०
= 68 – 36	=	1 –	8 –	36

शनि सूक्ष्म साधन :-

120 वर्ष में दशा भुक्ति = 19 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति $= \frac{19}{120}$

30870 पल में कितनी $= \frac{19}{120} \times 30870 = \frac{19551}{4} = 4887 - - \frac{1}{4} \times 60 = 45$ विपल

60) 4887 (81
480
87
60
27

घ०	प०	वि०		दि०	घ०	प०	वि०
= 81 –	27 –	45	=	1 –	21 –	27 –	45

शुक्र का सूक्ष्म साधन :-

120 वर्ष में दशा भुक्ति = 20 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति $= \frac{20}{120}$

30870 पल में कितनी $= \frac{20}{120} \times \frac{30870}{1} = \frac{5145}{1}$ पल

60) 5145(85 घटी
480
345
300
45 पल

	दि०	घ०	प०
= 85 घटे 45 पल =	1 –	25 –	45

सूर्य का सूक्ष्म साधन :-

120 वर्ष में दशा भुक्ति = 6 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति $= \frac{6}{120}$

30870 पल में कितनी $= \frac{6}{120} \times 30870 = \frac{3087}{2} = 1543 - \frac{1}{2} \times 60 = 30$ विपल

60) 1543(25 घटी
120
343
300
43 पल

	घ०	प०	वि०
=	25 –	43 –	30

चन्द्र का सूक्ष्म साधन :-

120 वर्ष में दशा भुक्ति = 10 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति $= \frac{10}{120}$

30870 पल में कितनी $= \frac{10}{120} \times 30870 = \frac{5145}{2} = 2572 - \frac{1}{2} \times 60 = 30$ विपल

60) 2572 (42 घटी
240
172
120
52 पल

	घ०	प०	वि०
=	42 –	52 –	30

	घ०	प०	वि०
मंगल सूक्ष्म केतु के समान =	30 –	0 –	45

बुध सूक्ष्म साधन :-

120 वर्ष में दशा भुक्ति = 17 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति $= \frac{17}{120}$

30870 पल में कितनी $= \frac{17}{120} \times 30870 = \frac{17493}{4} = 4373 - \frac{1}{4} \times 60 = 15$ विपल

60) 4373 (72 घ०
420
173
120
53 पल

	घ०	प०	वि०		दि०	घ०	प०	वि०
=	72 –	53 –	15	=	1 –	12 –	53 –	15

केतु महादशा में केतु के अन्तर में केतु के प्रत्यन्तर में सभी का सूक्ष्म

ग्रह	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	योग	
	0	1	0	0	0	1	1	1	1	8	दि०
	30	25	25	42	30	17	8	21	12	34	घ०
	0	45	43	52	0	10	36	27	53	30	प०
	45	0	30	30	45	30	0	45	15	0	वि०

केतु महादशा में केतु के अन्तर में केतु के प्रत्यन्तर में सभी का सूक्ष्म

	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	ग्रह
0	0	1	0	0	0	1	1	1	1	दि०
1	28	25	25	42	30	17	8	21	12	घ०
13	47	45	45	52	0	10	36	27	52	प०
30	15	0	30	30	45	30	0	45	15	वि०
2042	2042	2042	2042	2042	2042	2042	2042	2042	2042	सम्वत्
6	6	6	7	7	7	7	7	7	7	रा०
28	29	30	1	1	2	3	4	6	7	अं०
45	14	40	5	48	18	35	44	5	18	क०
35	22	7	50	43	44	54	30	58	51	वि०
0	15	15	45	15	0	30	30	15	30	प्र०वि०
1985	1985	1985	1985	1985	1985	1985	1985	1985	1985	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	16	17	18	18	19	20	22	30	ता०
0	28	54	20	30	33	50	58	20	33	घ०
0	47	32	15	8	9	19	55	30	16	प०
0	15	15	45	15	0	30	30	15	30	वि०

उपरोक्त रीति से सभी ग्रहों की सूक्ष्म दशा लगाई जा सकती है।

प्राण दशा :-

स्वसूक्ष्माख्यदशायाश्च पिंडे विघटिकात्मके ।

स्वाब्देरत्तष्टे पुनरत्तष्टे विंशोत्तरशतेन च ।

लब्धं विघटिका ज्ञेया विपलानि ततः परम् ।।[1]

प्राण दशा साधन विधि :– इसमें सूक्ष्म दशा की घटी पल संख्या को पलात्मक पिण्ड (एकरस) कर के जिस ग्रह की प्राण दशा देखना हो उसके दशा वर्ष से गुणा कर 120 का भाग देने से लब्ध पल, विपल प्राप्त होगें। पलांक 60 से अधिक होने पर 60 का भाग देने से घटी, पल, विपल तीन अंक प्राप्त होंगे ।

प्राण दशा साधन :- मानक उदाहरण में केतु की सूक्ष्म दशा 0 दिन 28 घटी 47 पल 15 विपल बची है। जबकि केतु की पूर्ण सूक्ष्म दशा 0 दिन 30 घटी 0 पल 45 विपल होती है। इसका भुक्त भोग्य निकालने के लिये दोनों की दशा उपरोक्त रीति से लगाकर आपस में घटाने से भुक्त भोग्य प्राप्त होगें । जो निम्न प्रकार से है :–

केतु की सूक्ष्म दशा को एकरस किया $0 \times 60 = 0 + 30 = 30 \times 60 = 1800 + 0$ $= 1800 \times 60 = 108000 + 45 = 108045$ विपल एक रस।

सूत्र :-

120 वर्ष में दशा भुक्ति है = 7 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति है $= \frac{7}{120}$

108045 विपल में कितनी $= \frac{7}{120} \times 108045 = \frac{50421}{8}$

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 44, श्लोक 1, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

```
8)50421(6302              60)6302(105
  48                         60
  --                         ---
  24                          302
  24                          300
  --                         ---
  21                            2  विपल
  16                      60)105(1 घटी
  --                         60
   5                         --
  --                         45  पल
```

$\frac{5}{8} \times \frac{60}{1} = \frac{75}{2} = 37$ प्र० वि० $\frac{1}{2}$

$\frac{1}{2} \times 60 = 30$ प्र० प्र० वि०

	घ०		प०		वि०		प॰वि०		प्र०प्र०वि०	
=	1	–	45	–	2	–	37	–	30	पूर्ण प्राण दशा केतु

केतु भोग्य सूक्ष्म :

घ०		प०		वि०
28	–	47	–	15

एक रस किया $28 \times 60 = 1680 + 47 = 1727 \times 60 = 103620 + 15 = 103635$ विपल

120 वर्ष में भुक्ति है = 7 वर्ष

1 वर्ष में भुक्ति है $= \frac{7}{120}$

103635 विपल में कितनी $= \frac{7}{120} \times 103635 = \frac{48363}{8} =$

```
8) 48363 (6045
   48
   --
    36
    32
    --
     43
     40
     --
      3
```

$$= \frac{3}{8} \times 60 = \frac{45}{2} = 22 \text{ प्र०वि०} \quad \frac{1}{2} \times 60 = 30 \text{ प्र०प्र०वि०}$$

```
60) 6045 (100
    60
    --
     45 वि०

60) 100 (1घ०
    60
    --
    40 प०
```

	घ०		प०		वि०		प्र०वि०		प्र०प्र०वि०	
=	1	–	40	–	45	–	22	–	30	पूर्ण प्राण दशा केतु

	घ०		प०		वि०		प्र०वि०		प्र०प्र०वि०	
	1	–	45	–	02	–	37	–	30	केतु पूर्ण प्राण दशा
–	1	–	40	–	45	–	22	–	30	केतु भुक्त प्राण दशा
	0	–	04	–	17	–	15	–	00	केतु भोग्य प्राण दशा

शुक्र :-

120 में दशा भुक्ति होती है = 20 वर्ष

1 में दशा भुक्ति होती है $= \frac{20}{120}$

108045 विपल में कितनी $= \frac{20}{120} \times 108045 = \frac{36015}{2} = 18007\frac{1}{2} = \frac{1}{2} \times 60 = 30$ प्र०वि०

$60\overline{)18007}(300$

180

07 विपल

$60\overline{)300}(5$ घ०

300

× प०

	घ०		प०		वि०		प्र०वि०		प्र०प्र०वि०
=	5	–	0	–	7	–	30	–	00

सू० प्राण दशा :-

120 में दशा भुक्ति होती है = 6 वर्ष

1 में दशा भुक्ति होती है $= \frac{6}{120}$

108045 विपल में कितनी $= \frac{6}{120} \times 108045 = \frac{21609}{4} = 5402 \quad \frac{1}{4} \times 60 = 15$ प्र० वि०

$60\overline{)5402}(90$ पल

540

02 विपल

$60\overline{)90}(1$ ध

60

30 प

	घ०		प०		वि०		प्र०वि०		प्र०प्र०वि०
=	1	–	30	–	2	–	15	–	00

चन्द्र प्राण दशा :-

120 में दशा भुक्ति होती है = 10 वर्ष

1 में दशा भुक्ति होती है $= \frac{10}{120}$

108045 विपल में कितनी $= \frac{10}{120} \times 108045 = \frac{36015}{4} = \frac{9003}{4}$ $\frac{3}{4} \times 60 = 45$ प्र० वि०

$60\overline{)9003}(150$ पल

60
———
300
300
———
3 विपल

$60\overline{)150}(2$ घ०

120
———
30 प०

	घ०		प०		वि०		प्र०वि०		प्र०प्र०वि०
=	2	–	30	–	3	–	45	–	00

मं० प्राण दशा केतु की प्राण दशा के समान :

	घ०		प०		वि०		प्र०वि०		प्र०प्र०वि०
=	1	–	45	–	2	–	37	–	30

राहू प्राण दशा :-

120 में दशा भुक्ति होती है = 18 वर्ष

1 में दशा भुक्ति होती है $= \frac{18}{120}$

108045 विपल में कितनी $= \frac{18}{120} \times 108045 = \frac{64827}{4} = 16206 \quad \frac{3}{4} \times 60 = 45$ प्र० वि०

60) 16206(270 पल
120
420
420
06 विपल

60) 270(4 घ
240
30 पल

	घ०		प०		वि०		प्र०वि०		प्र०प्र०वि०
=	4	–	30	–	6	–	45	–	00

शुक्र प्राण दशा :-

120 में दशा भुक्ति होती है = 16 वर्ष

1 में दशा भुक्ति होती है $= \frac{16}{120}$

108045 विपल में कितनी $= \frac{16}{120} \times \frac{108045}{1} = 14406$

```
60) 14406(240
    120
   -----
    240
    240
   -----
     06 विपल
```

```
60) 240(4 घ०
    240
   -----
     0 पल
```

	घ०		प०		वि०		प्र०वि०		प्र०प्र०वि०
=	4	–	0	–	6	–	00	–	00

शनि प्राण दशा :-

120 में दशा भुक्ति होती है = 19 वर्ष

1 में दशा भुक्ति होती है $= \frac{19}{120}$

108045 विपल में कितनी $= \frac{19}{120} \times 108045 = \frac{136857}{8} = 17107\ \frac{1}{8} \times 60 = \frac{15}{2}$

```
60) 17107(285        2) 15(7 प्र०पल
    120                 14
   -----               ----
    510                  1
    480
   -----
    307
    300
   -----
      7 विपल
```

$\frac{1}{2} \times 60 = 30$ प्र० प्र० पल

$$60\overline{)285}(4 \text{ घ०}$$

240

45 पल

	घ०		प०		वि०		प्र०वि०		प्र०प्र०वि०
=	4	–	45	–	7	–	7	–	30

बुध प्राण दशा :-

120 में दशा भुक्ति होती है = 17 वर्ष

1 में दशा भुक्ति होती है $= \frac{17}{120}$

108045 विपल में कितनी $= \frac{17}{120} \times \frac{108045}{1} = \frac{122451}{8} = 15306 = \frac{3}{8} \times \frac{60}{1} = \frac{45}{2}$

$$60\overline{)15306}(255$$

प्र० वि० प्र०प्र०वि०
$= 22 \frac{1}{2} \times 60 = 30$

120

330

300

306

300

06 विपल

$$60\overline{)255}(4 \text{ घ०}$$

प्र० वि० = 22, प्र०प्र०वि० = 30

240

15 पल

	घ०		प०		वि०		प्र०वि०		प्र०प्र०वि०
=	4	–	15	–	6	–	22	–	30

केतु महादशा मे केतु अन्तर में केतु प्रत्यन्तर में केतु सूक्ष्म में प्राण दशा

कुल	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	ग्रह
30	1	5	1	2	1	4	4	4	4	घ०
0	45	0	30	30	45	30	0	45	15	प०
45	2	7	2	3	2	6	6	7	6	वि०
0	37	30	15	45	37	45	0	7	22	प्र०वि०
0	30	0	0	0	30	0	0	30	30	प्र०प०वि०

केतु महादशा में के अन्तर में केतु प्रत्यन्तर में केतु सूक्ष्म में प्राण दशा

भुक्त	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
0	0	0	0	0	01	0	0	0	0	दि०
0	1	5	1	2	45	4	4	4	4	घ०
4	40	0	30	30	2	30	0	45	15	प०
17	45	7	2	3	37	6	6	7	6	वि०
15	22	30	15	45		45	0	7	22	प्र०वि०
0	30	0	0	0	30	0	0	30	30	प्र०प्र०वि०
2042	2042	2042	2042	2042	2042	2042	2042	2042	2042	सम्वत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	29	29	29	29	अं०
45	47	52	53	56	58	2	6	11	15	क०
35	15	15	45	15	1	31	31	16	31	वि०
0	45	52	55	58	1	8	14	21	27	प्र०वि०
0	22	52	7	52	30	15	15	22	45	प्र०प्र०वि०
0	30	30	30	30	0	0	0	30	0	
1985	1985	1985	1985	1985	1985	1985	1985	1985	1985	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	दि०
0	1	6	8	10	12	16	20	25	29	घ०
0	40	40	10	40	26	56	56	41	56	प०
0	45	52	55	58	1	8	14	21	27	वि०
0	22	52	7	52	30	15	15	22	45	प्र०वि०
0	30	30	30	30	0	0	0	30	0	प्र०प्र०वि०

षोडशोत्तरी दशा :-

एकः पंचयुतौ रुद्राधृत्यंतं वत्सराःक्रमात् ।
रविर्भौमोगुरुमन्दःकेतुश्चन्द्रो बुधो भृगुः ।।
अष्टौ दशाधिपाः प्रोक्ता राहुहीना नवग्रहाः ।
पुष्यभाज्जन्मभं यावद्गणयेद्वसुभिर्हरेत् ।।
सूर्यहोरागते शुक्ले चन्द्रस्य कृष्णपक्षके ।
तदा नृणं फलार्थाय विचिंत्या षोडशोत्तरी ।।[1]

षोडशोत्तरी दशा साधन विधि :- यह दशा 116 वर्ष होती है। इसमें सू० से गणना कर क्रमशः एक–एक वर्ष शुक्र तक बढ़ाते जाने से दशा पूर्ण होती है। दशा क्रम इस प्रकार है :– सू०, मं०, गु०, श०, के०, चं०, बु० तथा शु०। इसमें सूर्य के दशा वर्ष 11, मं० के 12, गु० के 13, श० के 14, के० के 15, चं० के 16, बु० के 17, शु० के 18 वर्ष होते हैं।

दशा निकालने के लिये पुष्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनकर आठ का भाग देने से जो शेष आये उससे दशा क्रम लिया जाता है।

षोडशोत्तरी दशा साधन :- मानक उदाहरण में जातक का जन्म मूल नक्षत्र में है। पुष्य से गिनने पर 12 आया, इसे आठ से भाग दिया तो 4 शेष बचा। उपरोक्त दशा क्रम से चौथी दशा शनि की 14 वर्ष आई। अब इसे भुक्त नक्षत्र के भयात् से गुणा कर भभोग का भाग देने से वर्ष, मास, दिन, घटी, आदि भुक्त दशा प्राप्त होगी। इसका पूर्ण दशा 14 वर्ष में घटाने से शनि की भोग्य दशा होगी।

जैसे :– भयात् = 135× 14 = 1890

भयात् 135s, भभोग 3267 पहले निकाल चुके है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 16 से 18, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

3267) 1890(0 वर्ष

× 12

) 22680(6 मास

19602

3078

× 30

) 92340(28 दिन

6534

27000

21136

864

× 60

) 51840(15 = 16 घटी

3267

19170

16335

2835 शेष आधे से ज्यादा है अतः 15 का 16 मान लिया

	व०	मा०	दि०	घ०
कुल दशा शनि=	14 –	0 –	0 –	0
भुक्त दशा =	0 –	6 –	28 –	16
भोग्य दशा शनि =	13 –	5 –	01 –	.44

	व०	मा०	दि०	घ०	
=	0 –	6 –	28 –	16	भुक्त दशा

षोडशोतरी दशा चक्र

भुक्त	श०	के०	चं०	बु०	शु०	सू०	मं०	गु०	ग्रह
0	13	15	16	17	18	11	12	13	व०
6	5	0	0	0	0	0	0	0	मा०
28	1	0	0	0	0	0	0	0	दि०
16	44	0	0	0	0	0	0	0	घ०
2042	2056	2071	2087	2104	2122	2133	2145	2188	संवत्
6	0	0	0	0	0	0	0	0	रा०
28	0	0	0	0	0	0	0	0	अं०
45	29	29	29	29	29	29	29	29	क०
1985	1999	2014	2030	2047	2065	2076	2088	2101	सन्
11	4	4	4	4	4	4	4	4	मा०
15	17	17	17	17	17	17	17	17	ता०

द्वाद्वशोतरी दशा :-

सूर्यो गुरुः शिखी ज्ञोऽगुः कुजो मंदो निशाकरः ।

शुक्रहीना दशा ह्येतद्द्वि चयात्सप्तमात्समाः ।।

जन्मभात्पौष्णपर्यन्तं गणयेष्टभिर्भजेत् ।

नवमांशे यदा जाता शुक्रस्य द्वादशोत्तरी ।।[1]

द्वाद्वशोतरी दशा साधन विधि :– यदि शुक्र के नवमांश में जन्म हो तो द्वादशोतरी दशा फलप्रद होती है। अर्थात नवांश वृष या तुला का हो तब यह दशा फल देने वाली है। इसमें दशा क्रम इस प्रकार हैं – सू०–7, गु०–9, के०–11, बु०–13, रा०–15, मं०–17, श०–9,

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 19-20, खेमराज श्रीकृष्णदास, वेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

चं० के 21 वर्ष होते है। इस दशा में शुक्र की गिनती नहीं होती।

दशा निकालने के लिये जन्म नक्षत्र से रेवती नक्षत्र तक गिन कर 8 का भाग देने से शेष तुल्य ग्रह दशा स्वामी होता है। भयात्, भभोग से पूर्ववत् जैसे षोडशोत्तरी दशा लगाई थी उसी प्रकार लगानी है।

द्वाद्वशोतरी दशा साधन :- मानक उदाहरण में मूल नक्षत्र का जन्म है। रेवती नक्षत्र तक गिने तो 9 हुअे 8 का भाग दिया तो एक शेष बचा अतः सूर्य की दशा 7 वर्ष हुई इसको भयात् 135 से गुणा कर भभोग 3267 का भाग देने से निम्न प्रकार से व० मा० दि० घ० प्राप्त होगें। इनका दशा वर्षो में घटा देने पर योग्य दशा होगी।

	व०	मा०	दि०	घ०
135 भयात् × 7 वर्ष सू० 945 ÷ 3267 =	0 –	3 –	14 –	8 भुक्त दशा

3267) 945 (0

× 12

) 11340 (3

9801

1539

× 30

) 46170 (14

3267

13500

13068

432

× 60

) 25920 (7 = 8

22869

3051 शेष आधे से ज्यादा है अतः 7 का 8 मान लिया

	व०	मा०	दि०	घ०
दशा वर्ष सू० =	7 –	00 –	00 –	00
भुक्त दशा सू० =	0 –	3 –	14 –	08
भोग्य दशा सू० =	6 –	8 –	15 –	52

द्वादशोतरी दशा चक्र

भुक्त	सू०	गु०	के०	बु०	रा०	म०	श०	च०	ग्रह
0	6	9	11	13	15	17	19	21	व०
3	8	0	0	0	0	0	0	0	मा०
14	15	0	0	0	0	0	0	0	दि०
8	52	0	0	0	0	0	0	0	घ०
2042	2049	2058	2069	2082	2097	2114	2133	2154	संवत्
6	3	3	3	3	3	3	3	3	रा०
28	4	4	4	4	4	4	4	4	अं०
45	37	37	37	37	37	37	37	37	क०
1985	1992	2001	2112	2125	2140	2157	2176	2197	सन्
11	8	8	8	8	8	8	8	8	मा०
15	1	1	1	1	1	1	1	1	ता०

अष्टोत्तरी दशा :

सूर्यश्चंद्रः कुजः सौम्यः शनिर्जीवस्तमो भृगुः ।

एते दशाधिपाः प्रोक्ता विना केतुं नवग्रहाः ।।

रसाः पंचेन्दवो नागाः शैलचंद्रा नभेन्दवः ।

गोब्जाः सूर्यकुनेत्राश्च समाः प्रद्योतनादयः ।।

लग्नेशात्केन्द्रकोणस्थे राहौ लग्ने स्थितं विना ।

अष्टोत्तरी द्विधा प्रोक्त शिवाद्या कृतिकादितः ।।

चतुष्कं त्रितयं तस्माच्चतुष्कं त्रितयं पुनः ।

यावत्स्वजन्मभं तावद्गणयेच्च यथाक्रमम् ।।[1]

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 21से 24, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

अष्टोत्तरी दशा साधन विधि :– अष्टोतरी दशा केवल 8 ग्रहों की होती है। कुल वर्ष 108 होते है। ग्रहों का दशा क्रम वर्षों सहित इस प्रकार है। सू०–6, चं०–15, मं०–8, बु०–17, श०–10, गु०–19, रा०–12, शु०–21 वर्ष है। इसमें आर्द्रा से जन्म नक्षत्र तक अभिजित नक्षत्र सहित गिनना चाहिये। पाप ग्रहों के चार–चार नक्षत्र शुभ ग्रहों के तीन–तीन नक्षत्र होते है। जन्म नक्षत्र जिस ग्रह के अन्तर्गत आ रहा होगा उस ग्रह के दशा वर्षों से नक्षत्र के भयात् पलों से गुणा कर भभोंग का भाग देने से ग्रह की भुक्त दशा आयेगी। कुल दशा में कम करने पर भोग्य दशा होगी। उपरोक्त रीति अनुसार ग्रहों की दशा नक्षत्रों सहित निम्न प्रकार से होगी।

जन्म नक्षत्र से दशा ज्ञान चक्र

सू०	चं०	मं०	बु०	श०	गु०	रा०	शु०	ग्रह
6	15	8	17	10	19	12	21	वर्ष
आर्द्रा	मघा	हस्त	अनुराधा	पू० षा०	घनिष्ठा	उ० भा०	कृतिका	
पुनर्वसु	पू०फा	चित्रा	ज्येष्ठा	उ० षा०	शतभिषा	रेवती	रोहणी	नक्षत्र
पुष्य	उ०फा०	स्वाति	मूला	अभिजित	पू० भा०	अश्विनि	मृगशिरा	
आश्लेषा		विशाखा		श्रावण		भरणी		

अष्टोत्तरी दशा साधन : मानक उदाहरण जन्म मूल नक्षत्र में है तो उपरोक्त चक्र में देखा तो बुध की दशा में जन्म है। अतः इसके दशा वर्षों को भयात् के 135 पल से गुणा कर भभोग 3267 का भाग देने पर भुक्त दशा व० मा० दि० घ० आदि प्राप्त होंगे।

	व०	मा०	दि०	घ०	
135 × 17 = 2295 ÷ 3267 =	0 –	8 –	12 –	54	भुक्त दशा

	व०	मा०	दि०	घ०
पूर्ण दशा बुध =	17 –	00 –	00 –	00
भुक्त दशा बुध =	0 –	8 –	12 –	54
भोग्य दशा बुध =	16 –	3 –	17 –	6

अष्टोत्तरी दशा चक्र

भुक्त	बु०	श०	गु०	रा०	शु०	सू०	चं०	मं०	ग्रह
0	16	10	19	12	21	6	15	8	व०
8	13	0	0	0	0	0	0	0	मा०
12	17	0	0	0	0	0	0	0	दि०
54	6	0	0	0	0	0	0	0	घ०
2042	2058	2068	2087	2099	2120	2126	2141	2149	संवत्
6	10	10	10	10	10	10	10	10	रा०
28	15	15	15	15	15	15	15	15	अं०
45	51	51	51	51	51	51	51	51	क०
1985	2002	2012	2031	2043	2064	2070	2085	2093	सन्
11	3	3	3	3	3	3	3	3	मा०
15	2	2	2	2	2	2	2	2	ता०

पंचोत्तरी दशा :-

तमो विनानुराधादि विज्ञेयं जन्मभावधि ।

गणयेत्सप्तभिर्भक्ते शेषे कल्प्या दशाः शुभाः ।।

रविर्ज्ञार्कमुतौ भौमो भार्गवो रजनीकरः ।

वाचस्पतिश्च कर्कांगे तस्यैव द्वादशांगके ।।

पंचोत्तरी दशा चिंत्या द्वादशाद्याः क्रमात्समाः ।

बलाबलविवेकेन यथान्यायेन योजयेत् ।।[1]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 25 से 27, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

पंचोत्तरी दशा साधन विधि :- यदि जन्मकालिक बृहस्पति कर्क राशि का हो तथा कर्क के द्वादशांश में हो तो उसके लिये पंचोत्तरी दशा का विचार करना चाहिए। अनुराधा नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गणना करना सात का भाग देना। शेष अंक हो वह दशा जानना । क्रमशः इस प्रकार हैः– सू०–12, बु०–13, श०–14, मं०–15, शु०–16, चं०–17, गु०–18 वर्ष होते है। यही सात ग्रह दशाधिपति होते हैं। इसमें राहू केतु को नहीं लिया जाता। जन्म नक्षत्र के भयात् भभोग से विंशोतरी दशानुसार ही दशा लगानी चाहिये। नक्षत्रानुसार दशा ज्ञान चक्र निम्न प्रकार से हैं :–

पंचोत्तरी दशायन्त्र 105 वर्ष

सू०	बु०	श०	मं०	शु०	चं०	गु०	ग्रह
12	13	14	15	16	17	18	दशा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूला	पू०षा०	उ०षा०	श्रावण	धनिष्ठा	नक्षत्र
शतभिषा	पू०भा०	उ०भा०	रेवती	अश्वनि	भरणी	कृतिका	
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	
पू० फा०	उ० फा०	हस्ता	चित्रा	स्वाति	विशाखा	×	

पंचोत्तरी दशा साधन :- अनुराधा नक्षत्र से गिनने पर तीसरा नक्षत्र मूला आया, 7 का भाग दिया लब्धि शून्य तीन शेष रहा। अतः शनि की दशा 14 वर्ष हुई। मूला के भयात् – 135 से 14 वर्षों की गुणा कर भभोग 3267 का भाग देने पर व० मा० दि० घ० भुक्त दशा शनि की होगी। इसको 14 वर्षों में घटाने पर भोग्य दशा आयेगी।

	व०	मा०	दि०	घ०	
$135 \times 14 = 1890 \div 3267 =$	0 –	6 –	28 –	28	भुक्त दशा शनि

	व०	म०	दि०
पूर्ण दशा शनि =	14 –	00 –	00
भुक्त दशा शनि =	0 –	06 –	28
भोग्य दशा शनि =	13 –	05 –	02

पंचोतरी दशा चक्र 105 वर्ष

भुक्त	श०	मं०	शु०	चं०	गु०	सू०	बु०	ग्रह
0	13	15	16	17	18	12	13	व०
6	5	0	0	0	0	0	0	मा०
28	2	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2056	2071	2087	2104	2122	2134	2147	संवत्
6	12	12	12	12	12	12	12	रा०
28	1	1	1	1	1	1	1	अं०
45	1	1	1	1	1	1	1	क०
1985	1999	2004	2020	2037	2055	2067	2080	सन्
11	4	4	4	4	4	4	4	मा०
15	17	17	17	17	17	17	17	ता०

शताब्दिका दशा :-

रविश्चंद्रो भृगुश्चांद्रिर्जीवो विश्चंभरात्मजः ।

दैवाकरिः क्रमादेते बाणा बाणा दिशो दश ।।

नखा नखाः खरामाश्च वर्षाणि दिनपादितः ।

वर्गोत्तमगते लग्ने दशा चिंत्या शताब्दिका ।।

पौष्णाज्जन्मर्क्षपर्यन्तं गणयेत्सप्तभिर्हरेत् ।

शेषांके रवितो ज्ञेया दशा शतसमात्वियम् ।।[1]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 28 से 30, खेमराज श्रीकृष्णदास, वेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

शताब्दिका दशा साधन विधि :- जन्म लग्न वर्गोत्म नवांशगत हो अर्थात जो लग्न जन्म कुण्डली की है वही लग्न नवांश कुण्डली की भी हो तो वर्गोतम लग्न हुई तो शताब्दिका दशा मान्य होगी। इसी से फलादेश करेंगे। अन्य दशा से नहीं। इसमें दशा निकालने के लिये रेवती नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिन कर 7 का भाग देंगे। एकाधि शेष रहने पर दशावर्ष सहित = सू०– 5, चं०–5, शु०–10, बु०–10, गु०–20, मं०–20, श०–30 वर्षादि होते हैं।

शताब्दिका दशा साधन :- मानक उदाहरण में जातक का जन्म मूला नक्षत्र का है। अतः रेवती से मूला तक गिनने पर 20 हुए इन्हें 7 का भाग दिया तो लब्धि – 2, शेष 6 बचे अतः दशा क्रम में सूर्य से गिनने पर मंगल की दशा 20 वर्ष आई। पूर्वोक्त रीति से दशा का भुक्त भोग्य इस प्रकार होगा।

		व०		मा०		दि०	
मूल भयात् = 135 × 20 वर्ष = 2700 ÷ 3267	=	0	–	9	–	27	भुक्त दशा

मं० पूर्ण दशा	=	20	–	00	–	00
भुक्त मं०	=	0	–	9	–	27
भोग्य दशा मं०	=	19	–	2	–	3

नक्षत्रानुसार दशा ज्ञान चक्र 100 वर्ष

सू०	चं०	शु०	बु०	गु०	मं०	श०	ग्रह
5	5	10	10	20	20	30	दशा
रेवती	अश्विनि	भरणी	कृतिका	रोहणी	मृगशिरा	आर्द्रा	
पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पू०फा	उतराषाढ़	हस्ता	
चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूला	पू० षा०	नक्षत्र
उ० षा०	श्रावण	घनिष्ठा	शतभिषा	पू० भा०	उ० भा०	×	

शताब्दिकादशा चक्र 100 वर्ष

भुक्त	मं०	श०	सू०	चं०	शु०	बु०	गु०	ग्रह
0	19	30	5	5	10	10	20	व०
9	2	0	0	0	0	0	0	मा०
27	3	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2061	2091	2096	2101	2111	2121	2141	संवत्
6	9	9	9	9	9	9	9	रा०
28	1	1	1	1	1	1	1	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	2005	2035	2040	2045	2055	2065	2085	सन्
11	1	1	1	1	1	1	1	मा०
15	18	18	18	18	18	18	18	ता०

चतुरशीति दशा :-

रविश्चंद्रः कुजः सौम्यो जीवः शुक्रः शनैश्चरः ।

तमध्वजौ विना सर्वे ग्रहा द्वादश हायनाः ।।

पवनाज्जन्मभं यावत्सप्ततष्टे दशा भवेत् ।

चतुर शीतिका ज्ञेया कर्मेशे कर्मसंस्थिते ।।[1]

चतुरशीति दशा साधन विधि :- इसमें सू०, चं०, मं०, बु०, शु०, श० ये सात ग्रहों की दशा होती है। राहू केतु का ग्रहण नहीं किया गया है। सभी ग्रहों के दशा वर्ष 12–12 वर्ष दिये है। स्वाती नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिन कर सात का भाग देने से जो शेष रहे वह दशा जानना। जिस जातक का दशमेश (कर्मेश) दशम भाव में हो उसको इस दशा का फलाफल

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 31-32, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

करना चाहिये। पहले दशा साधनानुसार ही दशा लगाई जाती है।

चतुरशीति दशा साधन :- मानक उदाहरण में मूला नक्षत्र का जन्म है। स्वाति से गणना करने पर 5 आया इसे सात से भाग देने पर 5 शेष रहा तो गुरु की दशा हुई।

135 भयात् 3267 भभोग

		व०	मा०	दि०
$135 \times 12 = 1620 \div 3267 =$		0 –	5 –	28
गुरु कुल दशा	=	12 –	00 –	00
गुरु भुक्त दशा	=	0 –	5 –	28
गुरु भोग्य दशा	=	11 –	6 –	2

चर्तुशीतिशमा दशा चक्र 84 वर्ष

भुक्त	गु०	शु०	श०	सू०	चं०	मं०	बु०	ग्रह
0	11	12	12	12	12	12	12	व०
5	6	0	0	0	0	0	0	मा०
28	2	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2053	2065	2077	2089	2001	2013	2025	संवत्
6	12	12	12	12	12	12	12	रा०
28	30	30	30	30	30	30	30	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1997	2009	2021	2033	2045	2057	2069	सन्
11	5	5	5	5	5	5	5	मा०
15	17	17	17	17	17	17	17	ता०

द्विसप्ततिका दशा :-

लग्नेशे सप्तमे यत्र लग्ने वै मदनाधिपे ।

चिंतनीया दशा तत्र द्व्यधिकाः सप्ततिः समाः ।।

नव वर्षाणि सर्वेषां विकेतूनां ग्रहात्मनाम् ।

मूलाज्जन्मर्क्षपर्यन्तं गणयेदष्टभिर्हरेत् ।

शेषा दशा विंचित्या च वदेच्चैव महामुने ।।[1]

द्विसप्ततिका दशा साधन विधि :- जिस जातक का लग्नेश सप्तभाव में अथवा सप्तमेश लग्न में हो तो उसके लिये 72 वर्ष की दशा का विचार करना चाहिए। केतु को छोड़कर क्रम से सूर्यादि ग्रह दशास्वामी होते हैं। सबके 9–9 वर्ष है। गणना मूला नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक कर 8 का भाग देने से शेष संख्या दशा जानना है।

द्विसप्ततिका दशा साधन :- मानक उदाहरण में मूला नक्षत्र का जन्म है। अतः सूर्य की दशा हुई। विंशोतरी के अनुसार ही भयात् भभोग से भुक्त भोग्य निम्न प्रकार से निकाला जायेगा।

135 भयात् 3267 भभोग

		व०		मा०		दि०	
$135 \times 9 = 1215 \div 3267$	=	0	–	4	–	14	भुक्त दशा
सू० की पूर्ण दशा	=	9	--	00	–	00	
सू० की भुक्त दशा	=	0	–	04	–	14	
सू० की भोग्य दशा	=	8	–	7	–	16	

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 33, श्लोक 12 से 15, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

द्विसप्ततिका दशा चक्र 72 वर्ष

भुक्त	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	ग्रह
0	8	9	9	9	9	9	9	9	व०
4	7	0	0	0	0	0	0	0	मा०
14	16	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2051	2060	2069	2078	2087	2096	2105	2114	संवत्
6	2	2	2	2	2	2	2	2	रा०
28	14	14	14	14	14	14	14	14	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1994	2003	2012	2021	2030	2039	2048	2057	सन्
11	7	7	7	7	7	7	7	7	मा०
15	1	1	1	1	1	1	1	1	ता०

षष्टिहायनी दशा :-

गुर्वर्कभूसुतानां च वर्षाणि दशकानि च ।

ततः शशिज्ञशुक्रार्कपुत्रागूनां समाश्च षट् ।।

दास्रात्त्रयं चतुष्कं च त्रयं वेदं पुनः पुनः ।

यदैको लग्नाराशीशश्चिन्त्या षष्टिसमा तदा ।।[1]

षष्टिहायनी दशा साधन विधि :– दशा क्रम गु०–10, सू०–10, मं०–10, चं०–6, बु०–6, शु०–6, श०–6, राहू–6 ये दशा स्वामी तथा वर्ष संख्या है। अश्विनि नक्षत्र से 3–4–3–4

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 35-36, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

आदि क्रम से पुनः पुनः गणना की जाती है। लग्न की राशि और चन्द्र एक ही तो दशा उपयोगी होती है। दशा यन्त्र निम्न प्रकार से है।

षष्टीहायनी दशा यंत्र - 60 वर्ष

गु०	सू०	मं०	चं०	बु०	शु०	श०	रा०	ग्रह
10	10	10	6	6	6	6	6	वर्ष
अश्विनी	रोहिणी	पुष्य	पू०फा०	स्वाती	ज्येष्ठा	अभिजित	शतभिषा	
भरणी	मृगशिरा	आश्लेषा	उ०फा०	विशाखा	मूला	श्रावण	पू०भा०	नक्षत्र
कृतिका	आर्द्रा		हस्ता	अनुराधा	पूर्वाषाड	धनिष्ठा	उ०भा०	
	पुर्नवसु	मघा	चित्रा		उतराषाड़			

षष्टिहायनी दशा साधन :-

उपरोक्त रीति अनुसार मूला नक्षत्र शुक्र की दशा में आता है। अतः दशा वर्ष 6 हुये।

135 भयात् 3267 भभोग

	व०		मा०		दि०		व०		मा०		दि०
$135 \times 6 = 810 \div 3267 =$	0	–	2	–	29	=	0	–	3	–	0

29 का एक बढ़ाकर 2 का 3 का मान लिया।

पूर्ण दशा शु० = 6 – 00 – 00

भुक्त दशा शु० = 0 – 3 – 00

भोग्य दशा शु० = 5 – 9 – 00

षष्टीहायनी दशा चक्र 60 वर्ष

भुक्त	शु०	श०	रा०	गु०	सू०	मं०	चं०	बु०	ग्रह
0	5	6	6	10	10	10	6	6	व०
3	9	0	0	0	0	0	0	0	मा०
0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2048	2054	2060	2070	2080	2090	2096	2102	संवत्
6	3	3	3	3	3	3	3	3	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1991	1997	2003	2013	2023	2033	2039	2045	सन्
11	8	8	8	8	8	8	8	8	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

षटत्रिंशत्याब्दिका दशा :-

> **श्रवणाज्जन्मभं यावद्गणयेदष्टभिर्भजेत् ।**
>
> **शशांकाऽर्कसुरेज्यारज्ञाऽर्कजौ शुक्रराहवः ।।**
>
> **एकोयं च यतश्चैकाद्वर्षाण्येषां क्रमात्स्मृताः।**
>
> **दिवसे सूर्यहोरायां चिंत्या वै षड्गुणाब्दिका ।।**
>
> **रात्रौ चांद्रादष्टतष्टाद्रेकात्सं नृपजन्मभात् ।**
>
> **सूर्येन्दुभूमिजनिशाधीशपुत्रसुरेज्यकाः ।।**
>
> **भृगुमंदागुशिखिनो लग्नस्थाच्चिन्तिता दशा ।**
>
> **खेटक्रमाद्दशा चिंत्या यदा लग्ने शनिः स्थितः ।**
>
> **क्वचिद्ग्रहस्तदानीं च न चिंत्या बहुतो बलात् ।।**[1]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 37 से 41, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

षटत्रिंशत्याब्दिका दशा साधन विधि :- इसमें श्रावण नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिन कर 8 से भाग दें। एकादिशेष रहने पर दशा क्रमशः चं०, सू०, गु०, मं०, बु०, श०, शु०, रा० ये दशेश होते हैं। इनके दशा वर्ष क्रमशः 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 हैं। दिन के लग्न में सू० की होरा रात्रि के लग्न में चन्द्र की होरा हो तो इस दशा का ग्रहण करें।

षटत्रिंशत्याब्दिका दशा साधन :- मानक उदाहरण में जनक भुक्त नक्षत्र का है। अतः श्रावण से मूला तक संख्या 25 हुई। 8 का भाग दिया तो एक शेष रहा। अतः हमारी दशा चन्द्र की हुई। दशा यन्त्र निम्न प्रकार से है।

षट्त्रिशत्यब्दिका दश यन्त्र 36 वर्ष

1	2	3	4	5	6	7	8	वर्ष
चं०	सू०	गु०	मं०	बु०	श०	शु०	रा०	ग्रह
श्रावण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भा०	उ०भा०	रेवती	अश्विनी	भरणी	
कृतिका	रोहणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	नक्षत्र
पू०फा०	उ०फा०	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	
मूला	पू०षा०	उ०षा०	0	0	0	0	0	

135 भयात्   3267 भभोग

		व०		मा०		दि०	
$135 \times 1 = 135 \div 3267$	=	0	–	0	–	14	भुक्त दशा
पूर्ण दशा चन्द्र	=	1	–	0	–	0	
भुक्त दशा चन्द्र	=	0	–	0	–	14	
भोग्य दशा चन्द्र	=	0	–	11	–	26	

षटत्रिशतब्दिका दशा चक्र 36 वर्ष

भुक्त	च०	सू०	गु०	म०	बु०	श०	शु०	रा०	ग्रह
0	0	2	3	4	5	6	7	8	व०
0	11	0	0	0	0	0	0	0	मा०
14	26	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2043	2045	2048	2052	2057	2063	2070	2078	संवत्
6	7	7	7	7	7	7	7	7	रा०
28	12	12	12	12	12	12	12	12	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1986	1987	1990	1994	1999	2005	2012	2020	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	10	10	10	10	10	10	10	10	ता०

नवमांशनव दशा :-

अथ राशिक्रमं वक्ष्ये श्रृणुस्व द्विजपुंगव ।

ग्रहे राश्यादिके चाल्पे दशा तस्यादिमा भवेत् ।।

ततस्तदधिकस्यैवं तुल्ये नैसर्गिकाद्बलात् ।

राशीशात्सप्तमांगेशाच्चिंत्या राशिक्रमाद्दशा ।।

यस्मिन्नवांशकस्थेंके दशा तस्यादिमा मता ।

अग्रादब्जाच्च ये खेटाः केत्वंताः संस्थिता क्रमात् ।।

दशामानं प्रवक्ष्यामि यथोक्तं ब्रह्मणा पुरा ।

लिप्तीकृत्वा ग्रहं सोमंखाश्विभिर्भाजिते फलम् ।।

पुनः सूर्ये हृते लब्धं समाद्यांशकला दशा ।

सर्वेषां मानवानां च दशास्त्वेता विचिंतयेत् ।।[1]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 42 से 46, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

नवमांशनव दशा साधन विधि :- यह दशा नौ प्रकार से लगाई गई है। इसमें अंश, राशि, नैसर्गिक बल, जन्म राशि स्वामी, सप्तमेश, लग्नेश, नवांशेश, लग्न में जो नवमांश हो तथा चन्द्रमा से दशा लगाई जाती है। अतः इस दशा में ग्रह स्पष्ट, जन्म कुण्डली तथा नवमांश कुण्डली की आवश्यकता होती है जो निम्न प्रकार से हैं :—

ग्रह स्पष्ट

रा०	मं०	शु०	के०	सू०	श०	बु०	च०	गु०	ग्रह
0	5	6	6	6	7	7	8	9	रा०
14	17	12	14	28	6	20	0	16	अं०
39	43	54	39	45	5	24	33	18	क०
51	40	2	51	35	23	32	3	45	वि०

लग्न

मं० 6
4
सू० 7 शु० के०
5
3
8
2
शा० बु०
9 चं०
11
1 रा०
10 गु०
12

नवमांश

9
7
बु० 10 शु०
8
6
11 के०
रा० 5 श०
12
2 गु०
4
1 चं०
मं० 3 सू०

इस दशा में भुक्त भोग्य नहीं निकाला जाता क्योंकि यह दशा पूर्ण 108 वर्ष की मानी गई है। इसी के आधार पर श्लोक 45–46 में आयु स्पष्ट दी गई है। जो इन दशाओं के अन्त में स्पष्ट करेंगे।

प्रथम प्रकार साधन :- जो ग्रह राशि, अंश, कला, विकला में सबसे कम होगा पहली दशा उसकी होगी तथा बाद में उससे अधिक अंश वाले ग्रह की होगी। इसी क्रम से दशा लगेंगी। इसमें दशा वर्ष 12–12 वर्ष की होती है। राहू के सबसे कम अंश है अतः यही दशा लगेगी।

प्रथम प्रकार नवमांश नव दशा चक्र 108 वर्ष

भुक्त	रा०	मं०	शु०	के०	सू०	श०	बु०	चं०	गु०	ग्रह
	12	12	12	12	12	12	12	12	12	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2054	2066	2078	2090	2102	2114	2126	2138	2140	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1991	2009	2021	2033	2045	2051	2069	2081	2093	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

द्वितीय प्रकार साधन :- जो ग्रह सबसे अधिक राश्यादि हो पहले उसकी दशा होगी। बाद में उससे कम इस क्रम से दशा लगेगी। गुरु सबसे अधिक राशि पर है अतः यही दशा लगेगी। दशा 12–12 वर्ष की होगी।

द्वितीय प्रकार नवमांश नव दशा चक्र 108 वर्ष

भुक्त	गु०	चं०	बु०	श०	सू०	के०	शु०	मं०	रा०	ग्रह
	12	12	12	12	12	12	12	12	12	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0		0	0	0	दि०
2042	2054	2066	2078	2090	2102	2114	2126	2138	2140	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1997	2009	2021	2033	2045	2051	2069	2081	2093	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

तृतीय प्रकार साधन :- जिस ग्रह का नैसर्गिक बल कम हो सबसे प्रथम उस ग्रह की दशा लगेगी। दशा वर्ष 12–12 वर्ष होंगे। उदाहरण कुण्डली में शनि का नैसर्गिक बल सबसे कम है अतः शनि से दशा लगा कर उसी क्रम से बाकी ग्रहों की दशा होगी।

तृतीय प्रकार नवमांश नव दशा चक्र 108 वर्ष

भुक्त	श०	मं०	बु०	गु०	शु०	चं०	सू०	रा०	के०	ग्रह
	12	12	12	12	12	12	12	12	12	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0		0	0	0	दि०
2042	2054	2066	2078	2090	2102	2114	2126	2138	2140	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1997	2009	2021	2033	2045	2057	2069	2081	2093	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

चतुर्थ प्रकार साधन :- जन्म राशि के स्वामी की प्रथम दशा बाद में क्रम से सभी राशियों की दशा लगेगी। दशा वर्ष 9–9 होंगे। धनु राशि का जन्म है। अतः धन, मकर, कुम्भादि क्रम होगा।

चतुर्थ प्रकार नवमांश नव दशा चक्र 108 वर्ष

भुक्त	ध०	म०	कु०	मी०	मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ग्रह
	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2056	2065	2074	2083	2092	2101	2110	2119	2128	2137	2146	2155	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1994	2003	2012	2021	2030	2039	2048	2057	2066	2075	2084	2093	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

पंचम प्रकार साधन :- लग्न से सप्तम की राशि से दशा जानना फिर क्रम से लगेगी। मानक उदाहरण में सप्तम कुम्भ राशि है अतः कुम्भ, मीन, मेषादि क्रम से दशा लगेगी। दशा वर्ष 9–9 होंगे।

पंचम प्रकार नवमांश नव दशा चक्र 108 वर्ष

भुक्त	कु०	मी०	मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	ग्रह
	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2056	2065	2074	2083	2092	2101	2110	2119	2128	2137	2146	2155	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1994	2003	2012	2021	2030	2039	2048	2057	2066	2075	2084	2093	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

षष्ठ प्रकार साधन :- लग्नेश की प्रथम दशा बाद मे द्वितियेश भी इस क्रम से दशा लगेंगी। राहू, केतु की दशा में नहीं लिये गये है। दशा वर्ष 9–9 होंगे।

षष्ठ प्रकार नवमांश नव दशा चक्र 108 वर्ष

भुक्त	सू०	बु०	शु०	मं०	गु०	शु०	श०	गु०	मं०	शु०	बु०	चं०	ग्रह
	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2056	2065	2074	2083	2092	2101	2110	2119	2128	2137	2146	2155	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1994	2003	2012	2021	2030	2039	2048	2057	2066	2075	2084	2093	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

सप्तम् प्रकार साधन :- लग्न में जो नवमांश हो उसके स्वामी से आरम्भ करके राहू केतु सहित सूर्यादि ग्रहों के नैसर्गिक क्रम से 9 ग्रहों की दशा लगेगी। दशा वर्ष 12–12 होंगे। मानक उदाहरण में वृश्चिक का नवमांश है। अतः मं० से दशा लगाकर बु०, गु०, शु० आदि क्रम से होगी।

सप्तम् प्रकार नवमांश नव दशा चक्र 108 वर्ष

भुक्त	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०	सू०	चं०	ग्रह
	12	12	12	12	12	12	12	12	12	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0		0	0	0	दि०
2042	2054	2066	2078	2090	2102	2114	2126	2138	2140	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1997	2009	2021	2033	2045	2057	2069	2081	2093	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	45	45	45	45	45	45	45	45	45	ता०

अष्टम प्रकार साधन :- सप्तम भेद में जो नवांशेश से दशा ली है उससे नवम नवांश के स्वामी से यथाक्रम दशा जानना, ग्रहों की गणना नैसर्गिक क्रम से तथा दशा वर्ष 12–12 होंगे। उदाहरण कुण्डली में नवमांश वृश्चिक का है। इससे नवम कर्क है, अतः चंद्र से दशा होगी।

अष्टम प्रकार नवमांश नव दशा चक्र 108 वर्ष

भुक्त	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०	सू०	ग्रह
	12	12	12	12	12	12	12	12	12	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2054	2066	2078	2090	2102	2114	2126	2138	2140	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1997	2009	2021	2033	2045	2057	2069	2081	2093	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

नवम् प्रकार साधन :- चन्द्रमा से दशा जानना। शेष पूर्ववत्। दशा वर्ष 12—12 होंगे।

नवम् प्रकार नवमांश नव दशा चक्र 108 वर्ष

भुक्त	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०	सू०	ग्रह
	12	12	12	12	12	12	12	12	12	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2054	2066	2078	2090	2102	2114	2126	2138	2140	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1997	2009	2021	2033	2045	2057	2069	2081	2093	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

राश्यंशक दशा :-

तन्वादिभावाः संस्पष्टाः प्रोक्तमार्गेण चानयेत् ।

लग्नेशांशस्थितो यत्र दशास्तस्य इमाः स्मृता ।।

द्वितीयेशादितश्चाग्रे ज्ञेया राश्यंशका दशा ।

चिंत्या लग्ने बलवति लग्नेशे वा बलान्विते ।।[1]

राश्यंशक दशा साधन विधि :- लग्नेश का नवमांश जिस भाव में स्थित हो वहाँ से प्रारम्भ कर क्रम से दशा लगानी है। दशा वर्ष 9–9 होंगे। भुक्त भोग्य विंशोतरी के समान रहेगा।

राश्यंशक दशा साधन :- मानक उदाहरण मे नवमाश वृश्चिक राशि का है अतः यही से दशा जानना।

135 भयात् 3267 भभोग

		व०		मा०		दि०	
$135 \times 9 = 1215 \div 3267$	=	0	--	4	–	13	भुक्त दशा
पूर्ण दशा वृश्चिक	=	9	--	0	–	0	
भुक्त दशा वृश्चिक	=	0	–	4	–	13	
भोग्य दशा वृश्चिक	=	8	–	7	–	17	

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 49 से 54, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

राश्यंशक दशा चक्र-108 वर्ष

भुक्त	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०	मे०	वृष	मि०	क०	सि०	क०	तु०	राशि
0	7	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	व०
4	8	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
13	17	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2051	2060	2069	2078	2087	2096	2105	2114	2123	2132	2141	2150	संवत्
2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	रा०
28	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1994	2003	2012	2021	2030	2039	2048	2057	2066	2075	2084	2093	सन्
11	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	मा०
15	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	ता०

काल (होरा) दशा :-

संध्या पंचघटी प्रोक्ता दिनषष्ठ्यंशनाडिका ।
सूर्यबिंबार्द्धतःपूर्वे परस्तादुदयादपि ।।
संध्याद्वयं च विंशत्या घटिकाभिः प्रकीर्तितम् ।
दिनस्य विंशतिर्घट्यः पूर्णसंज्ञा उदाहृताः ।।
निशाया मुग्धसंज्ञाश्च घटिका विंशतिश्च याः ।
सूर्योदयस्य या संध्या खण्डाख्या दशनाडिकाः ।।
अस्तकालस्य या संध्या सुधाख्या दश नाडिकाः ।
पूर्णमुग्धे गतघटी षड्गुणे नवधा लिखेत् ।।
तथा खण्डसुधासूर्ये हते तु नवद्या लिखेत् ।
विभक्तार्नीद्रिययुगैर्मानाख्यानफलानि च ।।
क्रमात्सूर्यादिकानां वै मानमुक्तं मुनीश्वरैः ।
स्वस्वमानं स्वसंख्याभिर्गुणिते स्युः समादयः ।।[1]

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 49 से 54, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

काल (होरा) दशा साधन विधि :- यहाँ दिन शब्द का अहोरात्र का ग्रहण करना है। अहोरात्र का मान 60 घटी होता है। उसमें सूर्य के अर्द्धोदय काल से 5 घटी तक संध्या (औदयिक संध्या) होती है और उसकी खण्डा संज्ञा होती है। इसी तरह सूर्यास्त से पूर्व की भी 5 घटी संध्या काल है और इनकी मुग्धा संज्ञा होती है। इसी प्रकार सूर्यास्त से पहले की तथा बाद की पाँच–पाँच घटी संध्या काल है। इस प्रकार प्रातः की 10 घटी पूर्वापर की 'खण्डा' संज्ञा तथा अस्तकाल की पूर्वापर की 10 घटी 'सुधा' संज्ञा। बाकी दिन की 20 घटी की पूर्णा संज्ञा होती है। तथा रात्रि की बाकी 20घटी की –मुग्धा' संज्ञा होती हैं। इनमें जन्म हो तो दो से गुणा कर 15 का भाग देने से वर्ष, मास, दिन प्राप्त होंगे। पद दशा का ध्रुवांक प्राप्त होगा। इसको ग्रह गुणक से गुणा करने पर दशा प्राप्त होगी। ग्रह गुणक इस प्रकार हैं। सू०–1, चं०–2, मं०–3, बु०–4, गु०–5,शु०–6, श०–7, रा०–8, के०–9 हैं। यदि खण्डा या सुधा नाम की संध्या में जन्म हो तो इष्ट घटी को 12 से गुणा कर 15 का भाग दे कर नौ स्थान पर रख सूर्यादि ग्रह गुणक से गुणा कर वर्ष मास दिनादि प्राप्त करेंगे।

काल (होरा) दशा साधन :- मानक उदाहरण में जन्म 47 घटी 55 पल पर है। दिन मान–26 घटी 32 पल है, रात्रिमान 33 घटी 28 पल है। इसमें से 10 घटी प्रातः संध्या की घटा कर दो से गुणा किया तथा 15 से भाग देने पर 3 वर्ष 4 मास 11 दिन ध्रुवांक प्राप्त हुआ। (छः से गुणा कर 45 का भाग देने पर वही उत्तर होगा जो 2 से गुणा कर 15 से भाग देने पर)

रात्रिमान	33	–	28	व०		मा०		दि०	
संध्या घटी	10	–	00	3	–	4	–	16	ध्रुवांक
	23	–	28				×	2	चन्द्र गुणक
		×	2	6	–	9	–	02	चन्द्र दशा
	46	–	56						

15) 46 – 56(3 वर्ष
45
1
× 12
12
56
15) 68 (4 मा
60
8
× 30
15) 240 (16 दिन
15
90
90
×

व०		मा०		दि०	
3	–	4	–	16	ध्रुवांक
			×	3	मं० गुणक
10	–	1	–	18	मं० दशा
3	–	4	–	16	ध्रुवांक
			×	4	बुं० गुणक
13	–	6	–	4	बु० दशा
3	–	4	–	16	ध्रुवांक
			×	5	गु० गुणक
16	–	10	–	20	गु० दशा
3	–	4	–	16	ध्रुवांक
			×	6	शु० गुणक
20	–	3	–	6	शु० दशा
3	–	4	–	16	ध्रुवांक
			×	7	श० गुणक
23	–	7	–	27	श० दशा

3	–	4	–	16 ध्रुवांक
			×	8 रा० गुणक
27	–	6	–	8 रा० दशा
3	–	4	–	16 ध्रुवांक
			×	9 के० गुणक
30	–	4	–	24 के० दशा

काल होरा दशा चक्र

भुक्त	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०	ग्रह
	3	6	10	13	16	20	23	27	30	व०
	4	9	1	6	10	3	7	0	4	मा०
	16	2	18	4	20	6	27	8	24	दि०
2042	2045	2052	2062	2076	2093	2113	2137	2164	2195	संवत्
6	11	8	10	4	2	6	2	2	7	रा०
28	14	16	4	8	28	4	1	9	3	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1989	1996	2006	2019	2036	2056	2080	2107	2137	सन्
11	4	1	2	8	7	10	6	6	11	मा०
15	1	3	21	25	15	21	18	26	20	ता०

काल चक्र दशा :-

कालचक्रं प्रवक्ष्यामि नराणां हितकाम्यया ।
यावद्देहादिजीवांतमिति चक्रस्य निर्णयः ।।
सप्तविंशतिऋक्षाणि अनुलोमविलोमतः ।
वक्ष्येऽहं वै तवाग्रे च अश्विंन्यादि यथाक्रमम् ।।
द्वे द्वे रेखात्मके चक्रे चतुष्कोणं लिखेत् क्रमात् ।
द्वादशग्रहनिर्माणं मेषादिद्वदशं न्यसेत् ।।
ईशान्यादिक्रमेणैव मीनांतं द्वादशं न्यसेत् ।
एवं क्रमेण चक्रं तद्विलिखेद्द्विजनंदन ।।
द्वादशारं लिखेच्चक्रं तिर्यगूर्ध्वं समानकम् ।
गृहाणि द्वादशैवं स्युस्सव्येषु च यथाक्रमम् ।।
द्वितीयादिषु कोष्ठेषु राशीन्मेषादिकान्न्यसेत् ।
एवं द्वादशराश्याख्यं कालचक्रमुदिरितम् ।।
अश्विन्यादित्रयं चैव सव्यमार्गं प्रतिष्ठितम् ।
तिस्राऽपसव्यास्स्युस्तारा रोहिण्याद्या यथाक्रमम् ।।
कालचक्रदशासव्यापसव्यमार्गमग्रे स्फुटं वक्ष्यति ।[1]

काल चक्र दशा साधन विधि :- मूल ग्रन्थ अध्याय 31, में काल चक्रदशा का उल्लेख कर आगे कहने की बात कही गई है। आगे अध्याय 45 श्लोक 1 से 42 तक काल चक्र दशा का

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 55 से 61, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

उल्लेख दिया है। यह दशा नक्षत्रों पर आधारित है। इसमें 27 नक्षत्र लिये गये है। जिनमें 15 नक्षत्र सव्य मार्ग के तथा 12 नक्षत्र अपसव्य मार्ग के दिये है। इनमें नक्षत्र के चरणानुसार दशायें लगाई गई है। इन नक्षत्रों को 6 भागों में बाँटा गया है। इनकी देह राशि और जीव राशि नक्षत्र के चरण के अनुसार सभी की अलग अलग बताई गई है तथा दशा वर्ष चरणानुसार सव्य मार्ग में 100, 85, 83, 86 वर्ष की है। अपसव्य नक्षत्रों में इसके विपरीत 86, 83, 85, 100 वर्ष लगाई गई है। नक्षत्र के चरण के हिसाब से सव्य नक्षत्र प्रथम चरण–100, द्वितीय चरण–85, तृतीय चरण–83 चतुर्थ चरण की– 86 वर्ष दशा है। इनमें अपसव्य नक्षत्र की विपरीत क्रम से दशा 86, 83, 85, 100 वर्ष दशा मान है। सव्य नक्षत्रों की पहले देह राशि की दशा प्रारम्भ होती है, जीव राशि पर समाप्त होती है। अपसव्य मार्ग के नक्षत्रों में पहले जीव राशि से प्रारम्भ कर देह राशि पर दशा समाप्त होती है।

यहाँ भगवान पराशर ने गणेश, शारदा तथा भगवान श्री विष्णु की वन्दना करते हैं तथा भगवान शंकर जी ने श्री पार्वती जी को कही गई काल चक्र दशा का सारांश कहा। क्योंकि यह दशा अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें भूत, वर्तमान तथा भविष्य का शुभ अशुभ की ज्ञापक यह कालचक्र दशा बतलाई गई है। इस दशा में सूक्ष्मता से जीव राशि व देह राशि की स्थापना की गई हैं।

इस दशा में नक्षत्र के एक–एक चरण की दशा तथा देह, जीव राशि बनाई गई है। यदि नक्षत्र के एक चरण की दशा समाप्त होकर दूसरे चरण की दशा प्रारम्भ होती है तो देह जीव राशि बदल जाती है। इस दशा का जन्म नक्षत्र के चरण से लगाया जाता है।

दशा को सरलता पूर्वक समझने के लिये सव्य तथा अपसव्य नक्षत्रों का कालचक्र राशि, वर्ष, नक्षत्र, संख्या सहित चक्र निम्न प्रकार से है :–

सव्य कालचक्र

सव्य नक्षत्र 1 : 2 : 3 : 7 : 8 : 9 : 13 : 14 : 15 : 19 : 20 : 21 : 25 : 26 : 27 = 15 नक्षत्र

सव्य नक्षत्र व संख्या	चरण	देहाधिप	देह	राशि एवं राशि वर्ष								जीव	जीवाधिप	अंश	दशा वर्ष
अश्विनी 1 पुनर्वसु 7 हस्त 13 मूल 19 पूर्वभाद्रपद 25	1	मं०	मे०7	वृ०16	मि०9	क०21	सिं०5	क०9	तु०16	वृ०7	ध०10	गुरु	मेषांश	100
	2	श०	म०4	कु०4	मी०10	वृ०7	तु०16	क०9	क०21	सिं०5	मि०9	बुध	वृषांश	85
	3	शु०	वृ०16	मे०7	मी०10	कु०4	म०4	ध०10	मे०7	वृ०16	मि०9	बुध	मिथुनांश	83
	4	चं०	क०21	सिं०5	क०9	तु०16	वृ०7	ध०10	म०5	कुं०4	मी०10	गुरु	कर्कांश	86
भरणी 2 पुष्य 8 चित्रा 14 पूर्वाषाढ.20 उत्तरभाद्रपद 26	1	म०	वृ०7	तु०16	क०9	क०21	सिं०5	मि०9	वृ०16	मे०7	मी०10	गुरु	सिंहांश	100
	2	श०	कुं०4	म०4	ध०10	मे०7	वृ०16	मि०9	क०21	सिं०5	क०9	बुध	कन्यांश	85
	3	शु०	तु०16	वृ०7	ध०10	म०4	कु०4	मी०10	वृ०7	तु16	क०9	बुध	तुलांश	83
	4	चं०	क०21	सिं०5	मे०9	वृ०16	मे०7	मी०10	कु०4	म०4	ध०10	गुरु	वृश्चिकांश	86
कृत्तिका 3 आश्लेषा 9 स्वाती 15 उत्तरषाढ़ 21 रेवती 27	1	म०	मे०7	वृ०16	मि०9	क21	सिं०5	क०5	तु०16	वृ०7	ध०10	गुरु	धनुरंश	100
	2	श०	म०4	कु०4	मी०10	वृ०7	तु०16	क०9	कं०21	सिं०5	मि०9	बुध	मकरांश	75
	3	शु०	वृ०16	मे०7	मी०10	कु०4	म०4	ध०10	मे०7	वृ०16	मि०8	बुध	कुम्भांश	83
	4	चं०	क०21	सिं०5	क०9	तु०16	वृ०7	ध०10	म०4	कु०4	मी०10	गुरु	मीनांश	86

असव्य नक्षत्र व संख्या	असव्य कालचक्र — असव्य नक्षत्र 4 : 5 : 6 : 10 : 11 : 12 : 16 : 17 : 18 : 22 : 23 : 24 = 12 नक्षत्र															
		जीवाधिप	जीव	राशि एवं राशि वर्ष									जीव	जीवाधिप	अंश	दशा घर्षयो
रोहिणी 4, मघा 10, विशाखा 16, श्रवण 22	1	गु०	ध०10	म०4	कुं०4	मी०10	मे०7	वृ०16	मि०9	सिं०5	क०21	चं०	वृश्चिकांश	86
	2	बु०	क०9	तु०16	वृ०7	मी०10	कु०4	म०5	ध०10	वृ०7	तु०16	शु०	तुलांश	83
	3	बु०	क०9	सिं०5	क०21	मि०9	वृ०16	मे०7	ध०10	मं०4	कुं०4	श०	कन्यांश	85
	4	गु०	मी०10	मे०7	वृ०16	मि०9	सिं4	क०21	क०6	तु०16	वृ०7	मं०	सिंहांश	100
मृगशिरा 5, पूर्वफाल्गुनी 11, अनुराधा 17, धनिष्ठा 23	1	गु०	मी०10	कु०4	म०4	ध०10	वृ०7	तु०16	क०8	सिं०5	क०21	चं०	कर्कांश	86
	2	बु०	मि०9	वृ०2	मे०7	ध०10	म०4	कु०4	मी०10	मे०7	वृ०16	शु०	मिथुनांश	83
	3	बु०	मि०9	सिं०5	क०21	क०8	तु०16	वृ०7	मी०10	कु०4	मं०4	श०	वृषांश	75
	4	गु०	ध०10	वृ०7	तु०16	क०9	सिं०5	क०21	मि०9	वृ०16	मे०7	मं०	मेषांश	100
आर्द्रा 6, उत्तरफाल्गुनी 12, ज्येष्ठा 18, शतभिषा 24	1	गु०	मी०10	कुं०4	मं०4	धं०10	व०7	तु०16	क०8	सिं०5	क०21	चं०	मीनांश	86
	2	बु०	मि०9	वृ०16	मे०7	ध०10	म०4	कुं०7	मी०10	मे०7	वृ16	शु०	कुम्भांश	83
	3	बु०	मि०9	सि०5	क०21	क०9	तु०16	वृ०7	मी०10	कु०4	म०4	श०	मकरांश	85
	4	गु०	ध०10	वृ०7	तु०16	क०9	सिं०5	क०21	मि०9	वृ०16	मे०7	मं०	धनुरंश	100

काल चक्र दशा साधन तथा विधि :- मानक उदाहरण में मूल नक्षत्र का जन्म है। इसका भभोग 54–27 तथा भयात् 2–54 एक चरण का मान = 54 – 27 ÷ 4 = 13घ–37 प = 817 पल हुआ। मूला सव्य मार्ग नक्षत्र है इसका प्रथम चरण का आयुमान 100 वर्ष है।

$$\text{सूत्र} = \frac{\text{भयात} \times \text{दशावर्ष}}{\text{एकचरणकापलात्मकमान}} = \text{भुक्तदशा} \qquad \frac{135 \times 100}{817} = \frac{13500}{817} =$$

817) 13500 (16 वर्ष

817

5330

4902

428

× 12

817) 5136 (6 मा०

4902

234

× 30

817) 7020 (8 = 9 दि०

6536

484 आधे से ज्यादा है। अतः 8 का 9 मान लिया है।

		व०		मा०		दि०
मूला नक्षत्र प्रथम चरण की पूर्ण आयु	=	100	–	00	–	00
मूला नक्षत्र की भुक्त दशा	=	16	–	6	–	9
मूला नक्षत्र की भोग्य दशा	=	83	–	5	–	21

मू० नक्षत्र सव्य दशा क्रम

मे० वृ० मि० क० सि० क० तु० वृ० ध०

= 7 – 16 – 9 – 21 – 5 – 9 – 16 – 7 – 10

इसमें मेष राशि देह तथा धनु राशि जीव है। अब ये देखना है कि किस राशि की दशा चल रही है। अतः 83 वर्ष – 5 मास – 21 दिन में से मेष, वृष, मिथुन आदि राशियों को घटाना शुरू किया।

व० मा० दि०

83 – 5 – 21 मे०

– 7

76 – 5 – 21

– 16 वृ०

60 – 5 – 21

– 9 मि०

51 – 5 – 21

– 27 कर्क

30 – 5 – 21

– 5 सिं०

25 – 5 – 21

– 9 कं०

16 – 5 – 21

16 – 0 – 0 तु०

0 – 5 – 21

– 7 वृश्चिक नहीं घटी ।

अतः वृश्चिक के 7 वर्ष में से 5 मा० 21 दि० घटायें

व० मा० दि०

7 – 00 – 00

– 0 – 5 – 21 वृश्चिक की भुक्त दशा आई।

6 – 6 – 9 वृश्चिक की भोग्य दशा आई।

वृश्चिक राशि में मेष राशि 7 वर्ष का अन्तर :-

100 वर्ष में दशा भुक्ति है = 7 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति है = $\frac{7}{100}$

7 वर्ष में दशा भुक्ति कितनी = $\frac{7 \times 7}{100} = \frac{49}{100}$ = 100) 49 (0 वर्ष

× 12

100) 588 (5 मास

500

88

× 30

100) 2640 (26 दिन

200

640

600

40

× 60

100) 2400 (24 घटी

200

400

400

×

व०	मा०	दि०	घ०
= 0 –	5 –	26 –	24

वृश्चिक राशि में वृष राशि 16 वर्ष का अन्तर :-

100 वर्ष में दशा भुक्ति है = 7 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति है $= \frac{7}{100}$

16 वर्ष में दशा भुक्ति कितनी $= \frac{7 \times 16}{100} = \frac{28}{25} =$ 25) 28 (1 वर्ष

25
―――
3
×12
25) 36 (1मास
25
―――
11
× 30
25) 330 (13 दिन
25
―――
80
75
―――
5
× 60
25) 300 (12 घटी
25
―――
50
50
―――
×

	व०	मा०	दि०	घ०
=	1 –	1 –	13 –	12

काल चक्र दशा चक्र

भुक्त	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	राशि
0	6	10	4	4	10	7	16	9	21	व०
5	6	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
21	9	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2049	2059	2063	2067	2077	2084	2100	2109	2130	संवत्
6	1	1	1	1	1	1	1	1	1	रा०
28	7	7	7	7	7	7	7	7	7	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1992	2002	2006	2110	2020	2027	2043	2052	2073	सन्
11	5	5	5	5	5	5	5	5	5	मा०
15	24	24	24	24	24	24	24	24	24	ता०
	धनु	धनु	मिथुन	मिथुन	मिथुन	मिथुन	मिथुन	मिथुन	मिथुन	जीव
	मेष	मेष	मकर	मकर	मकर	मकर	मकर	मकर	मकर	देह

इस दशा में 24 – 5 – 2002 तक मूल नक्षत्र के पहले चरण की दशा पूरी होने पर दूसरे चरण की दशा प्रारम्भ हुई अतः इसकी जीव और देह राशि पलट गई। अर्थात मूल के दूसरे चरण में जीव मिथुन तथा देह मकर राशि हुई।

काल चक्र दशा अन्तर साधन विधि :- उपरोक्त दशा में राशियों का अन्तर निकालने के लिये विंशोत्तरी दशा अन्तरदशा साधन का ही तरीका प्रयोग में लायेंगे। मानक उदाहरण में वृश्चिक का भोग्य 6 व० 6 मा० 9 दि० है। जबकि यह दशा पूरी सात वर्ष की होती है। सव्य चक्र में मूल नक्षत्र के प्रथम चरण की दशा चक्र इस प्रकार है। मेष – 7, वृष–16, मिथुन–9, कर्क–21, सिंह–5, कन्या–9, तुला–16, वृश्चिक–7, धनु–10 वर्ष दशामान है। अब इन्हीं में

कुल दशा 100 वर्ष के अनुसार अन्तर साधन निम्न प्रकार से होगा :–

वृश्चिक राशि में मिथुन राशि 9 वर्ष का अन्तर :–

100 वर्ष में दशा भुक्ति है = 7 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति है = $\frac{7}{100}$

9 वर्ष में दशा भुक्ति कितनी = $\frac{7 \times 9}{100} = \frac{63}{100}$ = 100) 63 (0 वर्ष

× 12

100) 756 (7 मास

700

56

× 30

100) 1680 (16 दिन

100

680

600

80

× 60

100) 4800 (48 घटी

400

800

800

×

व०	मा०	दि०	घ०
= 0 –	7 –	16 –	48

वृश्चिक राशि में कर्क राशि 21 वर्ष का अन्तर :-

100 वर्ष में दशा भुक्ति है = 7 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति है $= \frac{7}{100}$

21 वर्ष में दशा भुक्ति कितनी= $\frac{7 \times 21}{100} = \frac{147}{100}$ = 100) 147 (1 वर्ष

100
―――
47
×12

100) 564 (5 मास
500
―――
64
× 30

100) 1920 (19 दिन
100
―――
920
900
―――
20
× 60

100) 1200 (12 घटी
100
―――
200
200
―――
×

	व०	मा०	दि०	घ०
=	1 –	5 –	19 –	12

वृश्चिक राशि में सिंह राशि 5 वर्ष का अन्तर :-

100 वर्ष में दशा भुक्ति है $= 7$ वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति है $= \frac{7}{100}$

5 वर्ष में दशा भुक्ति कितनी $= \frac{7 \times 5}{100} = \frac{7}{20}$ $= 20\overline{)7}$ (0 वर्ष

$\times 12$

$20\overline{)84}$ (4 मास

80

4

$\times 30$

$20\overline{)120}$ (6 दिन

120

×

	व०	मा०	दि०	घ०
=	0 –	4 –	6 –	0

वृश्चिक राशि में कन्या राशि 9 वर्ष का अन्तर :-

100 वर्ष में दशा भुक्ति है $= 7$ वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति है $= \frac{7}{100}$

7 वर्ष में दशा भुक्ति कितनी $= \frac{7 \times 9}{100} = \frac{63}{100}$ $= 100\overline{)63}$ (0 वर्ष

$\times 12$

$100\overline{)756}$(7 मास

700

56

$\times 30$

100) 1680 (16 दिन

100

680

600

80

× 60

100) 4800 (48 घटी

400

800

800

×

व०	मा०	दि०	घ०
= 0 –	7 –	16 –	48

वृश्चिक राशि में तुला राशि 16 वर्ष का अन्तर :-

100 वर्ष में दशा भुक्ति है = 7 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति है = $\frac{7}{100}$

16 वर्ष में दशा भुक्ति कितनी = $\frac{7 \times 16}{100} = \frac{28}{25}$ = 25) 28 (1 वर्ष

25

3

× 12

25) 36 (1 मास

25

11

× 30

25) 330 (13 दिन

25

80

75

5

× 60

25) 300 (12 घटी

25

50

50

×

व०	मा०	दि०	घ०
= 1 –	1 –	13 –	12

वृश्चिक राशि में वृश्चिक राशि 7 वर्ष का अन्तर :-

100 वर्ष में दशा भुक्ति है = 7 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति है $= \frac{7}{100}$

7 वर्ष में दशा भुक्ति कितनी $= \frac{7 \times 7}{100} = \frac{49}{100}$ = 100) 49 (0 वर्ष

× 12

100) 588(5 मास

500

88

× 30

100) 2640 (26 दिन

200

	व०	मा०	दि०	घ०
=	0 –	5 –	26 –	24

640
600
———
40
× 60
100) 2400 (24 घटी
200
———
400
400
———
×

अब वृश्चिक राशि में वृश्चिक राशि का भोग्य अन्तर 6 वर्ष 6 मास 9 दिन का अन्तर एक रस करके निकालेगें :–

$6 \times 12 = 72 + 6 = 78 \times 30 = 2340 + 9 = 2349$

100 वर्ष में दशा भुक्ति है $= 7$ वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति है $= \frac{7}{100}$

2349 दिन में दशा भुक्ति कितनी $= \frac{7 \times 2349}{100} = \frac{16443}{100}$ = 100) 16443 (164 दिन

100
———
644
600
———
443
400
———
43
× 60
———

30) 164 (5 मास
150
———
14 दिन

व० मा० दि० घ०

भोग्य अन्तर = 0 – 5 – 14 – 26

48 पल का एक घटी मानकर 25 का 26 घटी की

100) 2580 (25 घटी
200
580
500
80
× 60
100) 4800 (48 पल
400
800
800
×

वृश्चिक राशि में धनु राशि 10 वर्ष का अन्तर :-

100 वर्ष में दशा भुक्ति है = 7 वर्ष

1 वर्ष में दशा भुक्ति है = $\frac{7}{100}$

10 वर्ष में दशा भुक्ति कितनी= $\frac{7 \times 10}{100} = \frac{7}{10}$ = 10) 7 (0 वर्ष

× 12
10) 84 (8 मास
80
4
× 30
10) 120 (12 दिन
120
×

व० मा० दि० घ०

= 0 – 8 – 12 – 0

वृश्चिक राशि में सभी का अन्तर 7 वर्ष

मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	कुल	राशि
0	1	0	1	0	0	1	0	0	7	व०
5	1	7	5	4	7	1	5	8	0	मा०
26	13	16	19	6	16	13	26	12	0	दि०
24	12	48	12	0	48	12	24	0	0	घ०

भुक्त भोग्य दशा : व० मा० दि० घ०

वृश्चिक का पूरा अन्तर = 0 – 5 – 26 – 24

वृश्चिक का भुक्त अन्तर = – 0 – 5 – 14 – 48

वृश्चिक का भोग्य अन्तर = 0 – 0 – 11 – 30

वृश्चिक राशि में सभी का अन्तर 7 वर्ष

भुक्त	वृश्चिक	धन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	राशि
0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	व०
0	5	8	5	1	7	5	4	7	1	मा०
11	14	12	26	13	16	19	6	16	13	दि०
36	48	0	24	12	48	12	0	48	12	घ०
2042	2042	2043	2044	2045	2045	2047	2047	2048	2049	संवत्
6	12	8	2	4	11	5	9	5	6	रा०
28	13	25	21	5	21	11	17	3	17	अं०
45	33	33	57	9	59	09	9	57	9	क०
1985	1986	1987	1987	1988	1989	1990	1991	1991	1992	सन्
11	4	1	7	8	4	9	2	9	11	मा०
0	48	48	12	24	12	24	24	12	24	ता०

इसी प्रकार सभी राशियों का अन्तर निकाल लेंगे।

मण्डूक दशा साधन :-

प्रथमे गतिर्मंडूकी द्वितीये मर्कटी तथा ।

बाणायनवपर्यंत गतिः सिंहावलोकनम् ।।[1]

मण्डूक दशा साधन विधि :– प्रथम 'मांडुकी' और दूसरी 'मर्कटी' तथा तीसरी 5–9–11 तक की सिंहावलोकन गति कही है। यहाँ मूल ग्रन्थ में इसकी दशाओं के बारे में नहीं लिखा गया है। पण्डित श्री गणेशदत्त पाठक[2] की पुस्तक में दशाध्यायः पेज 375 पर चर राशियों की 7 वर्ष, स्थिर राशियों की 8 वर्ष और द्विस्वभाव राशियों की 9 वर्ष दशा मान दिया है। इस दशा को निकालने के लिये 4 त्रिकोण कुण्डली में होते है तथा चर स्थिर द्विस्वभाव राशियों के अनुसार दशा वर्ष का ज्ञान कर भयात् भभोग के विंशोत्तरी दशानुसार दशा लगाई जाती है।

मण्डूक दशा साधन :- मानक उदाहरण में सिंह लग्न है। अतः त्रिकोण इस प्रकार होंगे :–

पहला त्रिकोण	=	सिंह	–	धन	–	मेष
दूसरा त्रिकोण	=	कन्या	–	मकर	–	वृष
तीसरा त्रिकोण	=	तुला	–	कुम्भ	–	मथुन
चौथा त्रिकोण	=	वृश्चिक	–	मीन	–	कर्क

इन्हीं त्रिकोणों के क्रम से दशायें लगेंगी। चरस्थिरादि राशियाँ दशानुसार निम्न प्रकार से है :–

चर	=	मेष	–	कर्क	–	तुला	–	मकर	=	7 वर्ष
स्थिर	=	वृष	–	सिंह	–	वृश्चिक	–	कुम्भ	=	8 वर्ष
दिस्वभाव	=	मिथुन	–	कन्या	–	धन	–	मीन	=	9 वर्ष

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 45, श्लोक 53, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं० श्रीगणेश दत्त पाठक, दशाध्याय, पेज 375, ज्योतिष प्रकाशन चौक, वाराणसी ।

इस उदाहरण में दशा क्रम इस प्रकार होगा :-- सिंह – 8 वर्ष, धन– 9, मेष – 7, कन्या – 9, मकर – 7, वृष – 8, तुला – 7, कुम्भ–8, मिथुन – 9, वृश्चिक – 8, मीन – 9, कर्क – 7 वर्ष दशा वर्ष होगें। अब सिंह के 8 वर्ष में भुक्त योग्य दशा निकालने के लिये भयात् को दशा वर्ष से गुणा कर भभोग का भाग देने से भुक्त दशा प्राप्त होगी। इसे पूर्ण दशा 8 वर्ष से कम करने से सिंह राशि की भोग्य दशा होगी। फिर क्रमानुसार दशा लगेंगी।

$$\frac{\text{भयात्} \times \text{दशावर्ष}}{\text{भभोग}} = \frac{135 \times 8}{3267}$$

135
× 8

3267)1080(0 वर्ष
× 12

3267) 12960(3 मास
9801
3159
× 30
94770

3267) 94770(29 दिन
6534
29430
29403
27

	वर्ष		मास		दिन
=	0	–	3	–	29

पूर्ण दशा सिंह =	8	–	00	–	00
भुक्त दशा सिंह =	0	–	3	–	29
भोग्य दशा सिंह =	7	–	8	–	1

मण्डूक दशा चक्र

भुक्त	सिंह	धन	मेष	कन्या	मकर	वृष	तुला	कुम्भ	मिथुन	वृश्चिक	मीन	कर्क	राशि
0	7	9	7	9	7	8	7	8	9	8	9	7	व०
3	8	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
29	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2050	2059	2066	2075	2082	2090	2097	2105	2114	2122	2131	2138	संवत्
6	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	रा०
28	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1993	2002	2009	2018	2025	2033	2040	2048	2057	2065	2074	2081	सन्
11	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	मा०
15	16	16	16	16	16	16	16	16	16	16	16	16	ता०

चरपर्या दशा साधन विधि :– "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 31 श्लोक 66 से 87 तक चरपर्या दशा का उल्लेख है। इस दशा से जातक की आयु का निर्णय बतलाया है। इस दशा में लग्न से व्यय भाव तक की 12 दशायें लगाई जाती हैं। भाव से भावेश तक गिनने पर जितने भाव आते हैं वह दशा वर्ष होते है। इसमें जिस भाव की दशा लगानी है उसको नहीं गिना जाता। जैसे हमारा मानक उदाहरण में सिंह लग्न है तो सिंह को छोड़कर कन्या राशि से गिनेंगे । लग्न से नौवीं राशि अर्थात् नौवें भाव में विषमपद राशि हो तो सिधे क्रम से गिनेंगे अर्थात लग्न, द्वितिय, तृतीय आदि। यदि नवम भाव में सम पद राशि हो तो विलोम (उल्टे क्रम) से गिनेंगे जैसे लग्न, द्वाद्वश, एकादशादि।

मेष वृष मिथुन
तुला वृश्चिक धन] ये विषम पद राशि है इनको सीधे क्रम से गिनेंगे

कर्क सिंह कन्या
मकर कुम्भ मीन] ये सम पद राशि है इनको विलोम (उल्टे) क्रम में गिनेंगे।

यह दशा लगाने के लिये कुण्डली सामने चाहिए जो निम्न प्रकार से हैं।

मं० 6
4
सू० 7 शु० के०
5
3
8
2
श० बु०
9 चं०
11
1 रा०
10 गु०
12
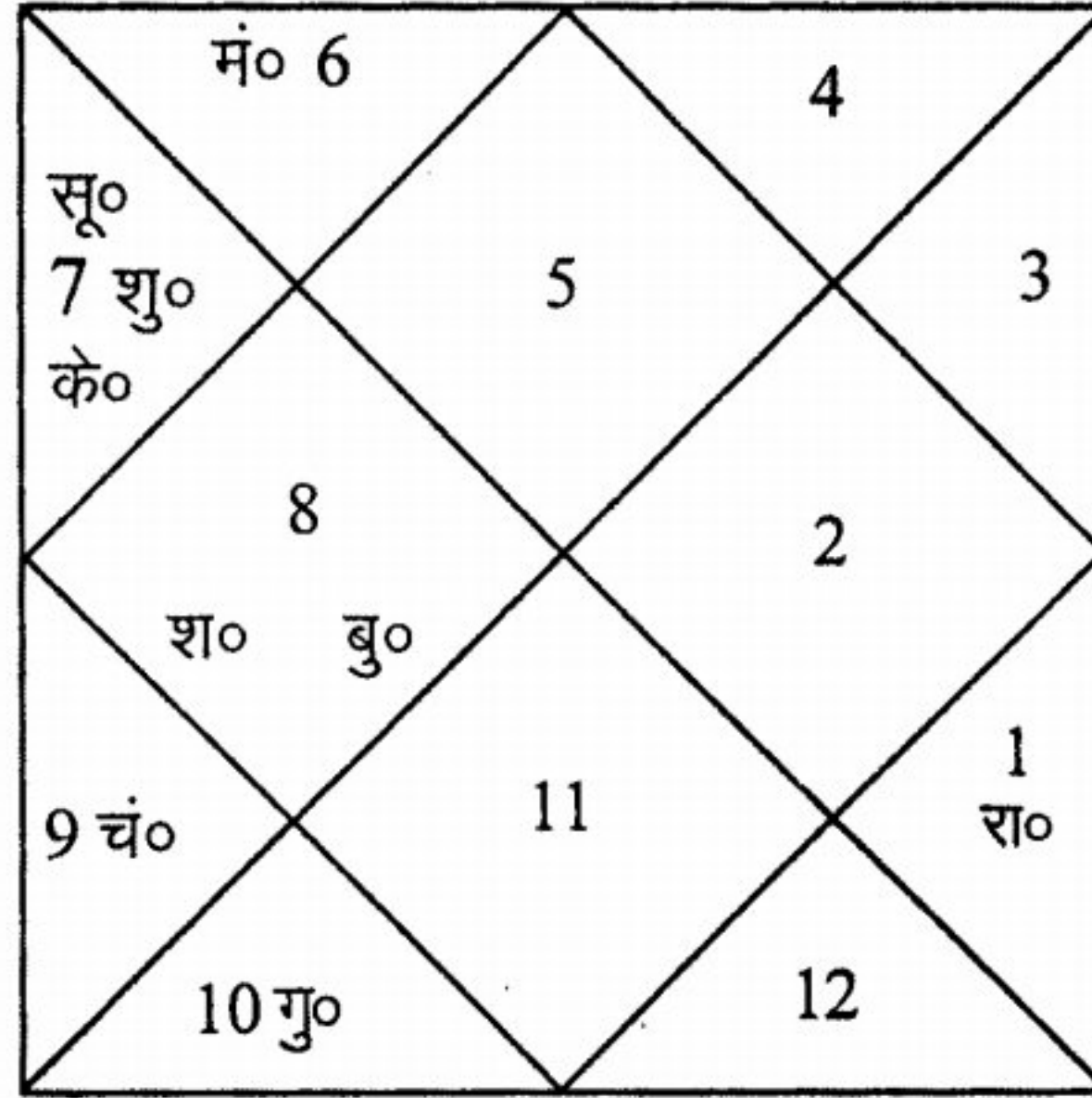
चरपर्या दशा साधन :-

स्वराशि में ग्रह होने से राशि की दशा 12 वर्ष होती है। दो राशियों में दशा वर्ष एक का स्वामी स्वक्षेत्री हो और दूसरा अन्य में हो तो स्वक्षेत्री ग्रह की दशा 12 वर्ष लेंगे। दोनों अन्य राशि पर हों तो जो ग्रह बल में अधिक होगा उसकी दशा लेंगे। या उच्च स्थान में हो उसकी दशा लेंगे। उच्च स्थानगत होने पर एक वर्ष अधिक जोड़ देंगे और नीचस्थ होने पर एक वर्ष कम करके दशा लेंगे।

1. उदाहरण कुण्डली में सिंह लग्न है। इसके नवम भाव में मेष राशि विषम पद है अतः लग्न से जिस भाव में सूर्य बैठा है वहाँ तक लग्न को छोड़कर उल्टे क्रम से गिनने पर 10 वर्ष लग्न की दशा आई। लेकिन सूर्य नीच राशि का होने से एक वर्ष कम कर 9 वर्ष दशा लेंगें।
2. द्वितिय भाव कन्या का है उसका नवम भाव वृष राशि विषम पद में आता है अतः उल्टे क्रम से बुध ग्रह तक गिनने से 10 वर्ष दशा प्राप्त हुई।

3. तृतीय भाव में तुला राशि है इसे नवम भाव में मिथुन विषमपद राशि है अतः नियमानुसार उल्टे क्रम से गिनने पर 11 वर्ष दशा प्राप्त होती है। लेकिन शुक्र स्वक्षेत्री है तो इसकी दशा 12 वर्ष लेंगे।
4. चतुर्थभाव वृश्चिक का है इसका नवम् कर्क राशि समपद का है अतः सीधे क्रम धनु से दशा गिनने पर 10 वर्ष प्राप्त होते हैं।
5. पंचम् भाव धनुराशि है इसका नवम् सिंह राशि विषम पद है। अतः सीधे क्रम से गिनेंगे। गुरु मकर में है अतः एक वर्ष दशा प्राप्त हुई। लेकिन गुरु नीचस्थ होने से एक वर्ष कम किया तो शून्य वर्ष दशा प्राप्त हुई।
6. षष्ट भाव मकर राशि का है नवम भाव कन्या समपद राशि का है अतः विलोम क्रम से गिनने पर 2 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
7. सप्तम् भाव कुम्भ राशि का है इसका नवम् भाव तुला राशि विषम पद है अतः सिधे क्रम से गिनेंगे पर 9 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
8. अष्टम् भाव मीन राशि का है इसका नवम भाव वृश्चिक राशि विषम पद है अतः सीधे क्रम से गिनने पर 10 वर्ष प्राप्त होते हैं। लेकिन गुरु नीचस्थ होने पर एक वर्ष कम किया तो 9 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
9. नवम् भाव मेष राशि का है इसका नवम् भाव धनु राशि विषम पद का है अतः सीधे क्रम से गिनने पर 6 वर्ष प्राप्त होते हैं। लेकिन शुक्र स्वक्षेत्री है अतः इसकी दशा 12 वर्ष लेंगे।
10. दशम् भाव वृष राशि का है इसका नवम् भाव मकर राशि समपद का है अतः विलोम क्रम से गिनने पर 7 वर्ष प्राप्त होते हैं। लेकिन शुक्र स्वक्षेत्री है अतः इसकी दशा 12 वर्ष लेंगे।
11. एकादश भाव मिथुन राशि है इसका नवम् भाव कुम्भ राशि समपद है अतः विलोम क्रम से गिनने पर 7 वर्ष दशा प्राप्त होती है।

12. द्वाद्वश भाव कर्क का है इसका नवम् भाव मीन राशि समपद है अतः विलोम क्रम से गिनने पर 7 वर्ष दशा प्राप्त हुई। दशा क्रम इस प्रकार हुआ :– सिंह – 9, कन्या – 10, तुला–12, वृश्चिक–10, धन–0, मकर–20, कुम्भ–9, मीन–9, मेष–5, वृष–12,मिथुन–7, कर्क–7 वर्ष दशा प्राप्त हुई। अब विंशोत्तरी दशानुसार नक्षत्र के भयात् भभोग से भुक्त भोग्य दशा लगा लेगें

भयात् = 135 भभोग = 3267 पल हैं

सूत्र $= \frac{\text{भयात्} \times \text{दशा वर्ष}}{\text{भभोग}} = \frac{135 \times 9}{3267}$

```
        135
        × 9
3267) 1215(0
        × 12
3267) 14580(4
       13068
        1512
        × 30
3267) 45360(13
       3267
       12690
        9801
```

		व०		मा०		दि०
3267) 45360(13	=	0	–	4	–	14 भुक्त दशा

2889 शेष आधे से ज्यादा है अतः 13 के स्थान पर 14 लिया।

सिंह राशि की पूर्ण दशा	=	9	–	00	–	00
सिंह राशि की भुक्त दशा	=	0	–	4	–	14
सिंह राशि की भोग्य दशा	=	8	–	7	–	16

चरपर्यादशा चक्र

भुक्त	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	राशि
0	8	10	12	10	0	2	9	9	6	12	7	7	व०
4	7	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
14	16	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2051	2061	2073	2083	2083	2085	2094	2103	2109	2121	2128	2135	संवत्
6	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	रा०
28	14	14	14	14	14	14	14	14	14	14	14	14	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1994	2004	2016	2026	2026	2028	2037	2046	2057	2063	2070	2077	सन्
11	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	मा०
15	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	ता०

नवमांश स्थिर दशा साधन विधि :- मूल ग्रन्थ अध्याय 31 श्लोक 88 से 105 तक नवमांश स्थिर दशा दी गई है। नवांश दशा जिसका जन्म विषम राशि लग्न हो उसकी नवांश दशा लग्न से क्रम गणना के अनुसार होती है। जिसका जन्म लग्न समराशि हो, उसकी गणना उत्क्रम से होती है। प्रत्येक राशि की दशा 9 वर्ष होती है। कुल दशा 108 वर्ष होती है। विषम पद लग्न में हो तो लग्न से तथा समपद में जन्म हो तो जातक की राशि से दशा प्रारम्भ होती है।

मेष वृष मिथुन
तुला वृश्चिक धन] ये विषम पद राशि है ।

कर्क सिंह कन्या
मकर कुंभ मीन] ये समपद राशि है ।

नवमांश स्थिर दशा साधन :- मानक उदाहरण में सिंह लग्न का जन्म है। यह समपद राशि है अतः उत्क्रम से गणना होगी जैसे सिंह कर्क मिथुनादि। अब सम पद होने से राशि से दशा उत्क्रम से लगेगी। जन्म राशि धनु है अतः धनु, वृश्चि, तुलादि।

नवमांश स्थिर दशा चक्र 108 वर्ष

	धन	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुम्भ	मकर	राशि
	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2051	2060	2069	2078	2087	2096	2145	2114	2123	2132	2141	2150	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1994	2003	2012	2021	2030	2039	2048	2057	2066	2075	2084	2093	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

स्थिर दशा :-

अधुना संप्रवक्ष्यामि स्थिरदशां द्विजोत्तम् ।

प्रकारद्वितयं वक्ष्ये यथा शंभुप्रणोदितम् ।।

चरस्थिरिद्विस्वभावा राशयस्त्रिविधाः क्रमात् ।

सप्ताष्टमनवाब्दां च आनयीत दशां स्थिराम् ।।

मेषे सप्ताब्दविज्ञेया वृषे वसु समा द्विज ।

मिथुने नव वर्षाणि कर्कात्यादि यथाक्रमम् ।।

द्वादशराशिपर्यन्तं ज्ञायतेऽब्दादिद्विजोत्तम् ।

षण्णवतिसमा संख्या तामारभ्य वदाम्यहम् ।।

एषा स्थिरा सिद्धदशा तस्या यदिप्रवर्तम् ।

बह्मग्रहाश्रितारंभस्तदग्रे पूर्ववत्क्रमः ।[1]

स्थिर दशा साधन विधि :– भगवान शंभु ने इसे दो रीति ने बतलाया है। इसने दशा वर्ष चर–7, स्थिर–8, द्विस्वभाव राशि के 9 वर्ष कहे हैं। यह कुल दशा 96 वर्ष की होती है। इसमे जो ग्रह ब्रह्मसंज्ञक होता है इससे दशा लगाई जाती है।

ब्रह्म ग्रह का निर्धारण :– 6 – 8 – 12 भावों के स्वामियों में जो ग्रह विषम राशि में हो वह ब्रह्मसंज्ञक होता है। यह लग्न तथा सप्तम दोनों भावों से देखना चाहिए। आत्मकारक ग्रह से भी अष्टमेष या अष्टम् भावस्थ ग्रह ब्रह्म होता है। शनि, राहू या केतु से ब्रह्मत्व प्राप्त हो जाये तो उससे छठा ग्रह ब्रह्म होता है। जब कई ग्रह ब्रह्म हो जायें तो उनमें जो ग्रह अधिक बली होगा वही ब्रह्म होगा।

मेष	वृष	मिथुन	विषम राशि हैं।
तुला	वृश्चिक	धन	

कर्क	सिंह	कन्या	समपद राशि है।
मकर	कुम्भ	मी०	

स्थिर दशा साधन :- प्रस्तुत उदाहरण में 6–8–12 भावों के स्वामियों में से चन्द्र धनु विषम राशि में है और आत्मकारक ग्रह सूर्य से अष्टम में कोई ग्रह नहीं है। अतः चन्द्र को ब्रह्म माना। ब्रह्मश्रित राशि धनु है। अतः दशा धनु राशि से प्रारम्भ होगी। इसका क्रम सिधा धन, मकर, कुम्भादि होगा। विंशोत्तरी अनुसार ही इसका भुक्त योग्य निकाला जायेगा।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 106 से 110, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

	व०	मा०	दि०
$= \frac{\text{भयात} \times \text{दशा वर्ष}}{\text{भभोग}} = \frac{135 \times 9}{3267}$ =	0 –	4 –	13

9 –	00 –	00	कुल दशा धनु की
– 0 –	4 –	14	भुक्त दशा धनु की
8 –	7 –	17	भोग्य दशा धनु की

स्थिर दशा चक्र 96 वर्ष

भुक्त	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	राशि
0	8	7	8	9	7	8	9	7	8	9	7	8	व०
4	7	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
13	17	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2051	2058	2066	2075	2082	2090	2099	2106	2114	2123	2130	2138	संवत्
6	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	रा०
28	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1994	2001	2009	2018	2025	2033	2042	2049	2057	2066	2073	2081	सन्
11	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	मा०
15	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	ता०

चतुर्विध प्राण दशा (उत्तर दशा) साधन :- मूल ग्रन्थ अध्याय 31, श्लोक 111 से 131 तक चतुर्विध प्राण दशा का उल्लेख है। इसमें चार प्रकार का प्राण बलताया गया है। पहला आत्मकारक ग्रह से। दूसरा स्वग्रही ग्रह से। तीसरा उच्च राशिस्थ ग्रह या वेशि संज्ञा वाली राशि से। चौथा प्राण वह बतलाया कि जिस राशि पर पाप ग्रहों जैसे सू०, मं०, श०, रा०,

के० की दृष्टि न हो वह राशि प्राण बल से बली होती है तथा इसके दशा वर्ष चर दशा के समान लगाना बतलाया है। चर दशा में विषम संज्ञा वाली राशि में भाव से भावेश तक एक भाव छोड़कर सीधे क्रम से गणना की जाती है तथा समसंज्ञा वाली राशि से भाव से भावेश तक व्युत्क्रम से एक राशि छोड़कर गणना की जाती है। उच्च राशि में एक वर्ष जोड़ना नीच में एक वर्ष कम करना। स्वग्रही के 12 वर्ष होते हैं। विषम सम राशि इस प्रकार हैं :–

विषम	सम	विषम	सम
1	4	7	10
2	5	8	11
3	6	9	12

लग्न कुण्डली

मं० 6
4
सू०
7 शु०
के०
5
3
8
2
श० बु०
9 चं०
11
1
रा०
10 गु०
12
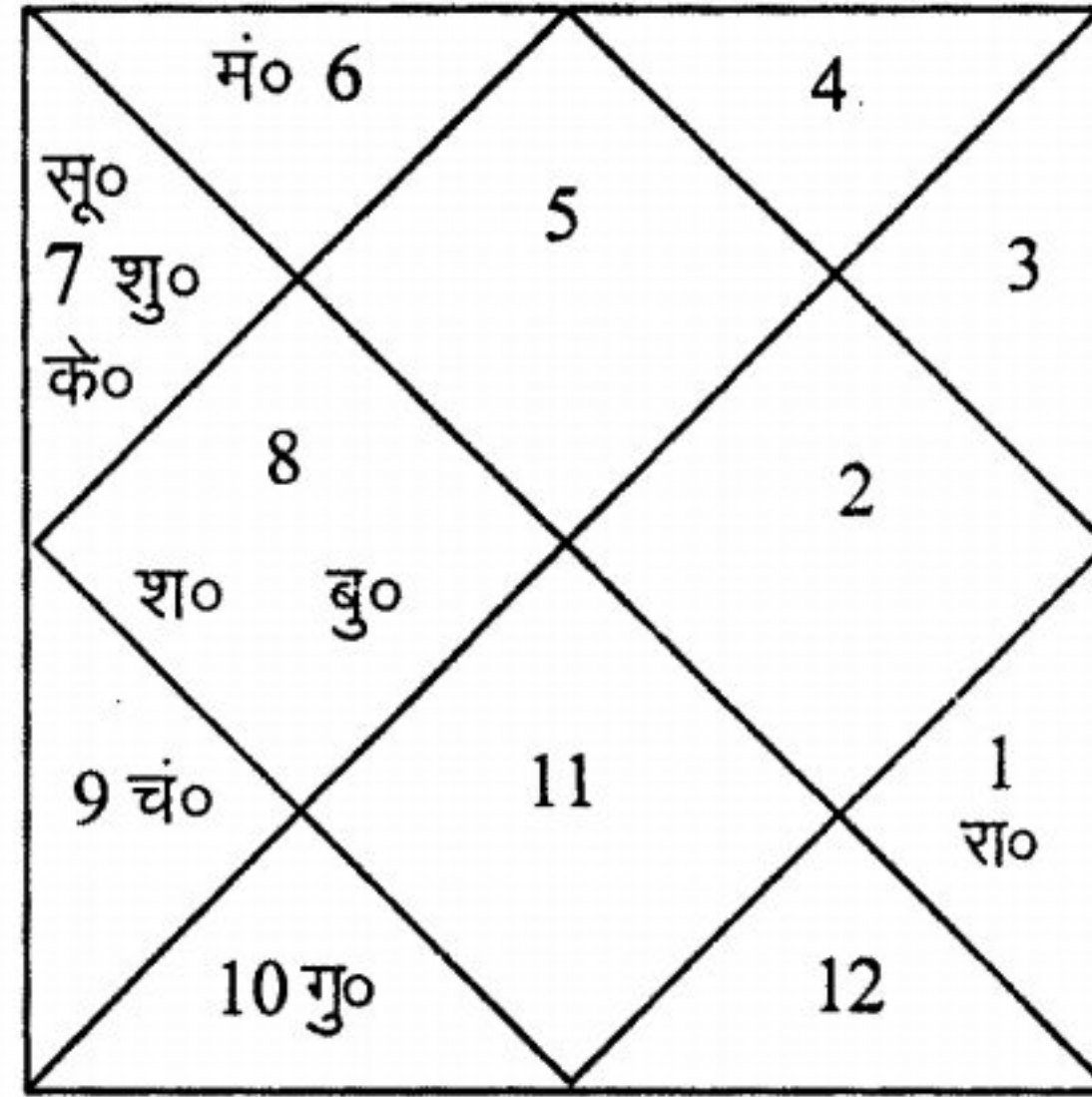
पहला प्राण :-

1. कारक ग्रह होता है। उदाहरण कुण्डली में सू० 28° सबसे ज्यादा है। अतः आत्मकारक सूर्य पहला प्राण हुआ। यह तुला विषम पद संज्ञक राशि है अतः एक भाव छोड़कर सीधे क्रम से गणना करने पर 11 वर्ष दशा प्राप्त हुई लेकिन शुक्र स्व राशि में है अतः 12 वर्ष की दशा हुई। इसके बाद इससे अगले दो भाव लिये जाते हैं।
2. इससे अगली राशि वृश्चिक है। यह विषम राशि है। अतः वृश्चिक राशि से मंगल तक एक भाव छोड़कर गणना करने पर 10 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
3. फिर धनु राशि ली। यह राशि भी विषम संज्ञक है। इस का स्वामी गुरु मकर नीच राशि है। सीधे क्रम से गणना करने पर एक वर्ष दशा प्राप्त हुई। गुरु नीच मे रहने से एक कम किया तो शून्य वर्ष दशा प्राप्त हुई।

दूसरा प्राण :-

1. ग्रह बल से है। जिस राशि का स्वामी स्वगृही या उच्च राशिस्थ या मित्र गृही तो वह

राशि दूसरे प्राण बल से युक्त होती है। उदाहरंण कुण्डली में शुक्र, तृतीय भाव में स्वगृही है। अतः शुक्र कुण्डली का दूसरा प्राण बल है। यहाँ पहले की तरह तुला, वृश्चिक, धनु राशि लेंगे। तुला में शुक्र अपने घर में हैं अतः 12 वर्ष दशा लेंगें।

2. इससे अगली राशि वृश्चिक विषम राशि है। अतः भाव से भावेश तक एक राशि छोड़कर गणना कन्या राशि तक की क्योंकि वहाँ मंगल है तो 10 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
3. फिर धनु राशि विषम पद है। उसका स्वामी गुरु मकर राशि में नीच का है। अतः सीधे क्रम से गिनने पर 1 वर्ष दशा प्राप्त हुई। निचस्थ गुरु होने से एक वर्ष कम किया तो शून्य वर्ष दशा प्राप्त हुई।

तीसरा प्राण :-

1. राशि बल से हैं। अधिक अंश वाली राशि अधिक बली कम अंश वाली न्यून बली होती है। वेशि संज्ञा वाली राशि पूर्ण बली होती है। उदाहरण कुण्डली में धनु राशि 25° पर तथा वेशि संज्ञा वाली है। यहाँ चन्द्र बैठा है इसके पिछे बुध शुभ ग्रह है तथा आगे गुरु है। दोनों ग्रह धनु राशि को बल प्रदान कर रहे हैं। अतः तीसरा प्राण बल धनु राशि है। इसके बाद मकर, कुम्भ राशि की दशा लेंगे। धनु राशि विषम संज्ञक है। अतः भाव से भावेश तक एक पद छोड़कर गणना करने पर 1 वर्ष दशा गुरु तक प्राप्त हुई। गुरु नीचस्थ होने से एक वर्ष कम किया तो शून्य वर्ष प्राप्त हुई।
2. इसके बाद मकर राशि सम संज्ञक आई। अतः भाव से भावेश तक उल्टे क्रम से गिनने पर शनि तक दो वर्ष दशा प्राप्त हुई।
3. इसके बाद कुम्भ राशि सम संज्ञ आई। अतः भाव से भावेश तक एक राशि छोड़कर उल्टे क्रम से गिनने पर 3 वर्ष दशा प्राप्त हुई।

चौथा प्राण :-

1. जिस राशि पर पाप ग्रह की दृष्टी न हो वह राशि चौथे प्राण बल से बली होती है। इसमें केन्द्र से त्रिकोण, पणफर, आपोक्लिम भाव क्रम से एक एक विश्वाबल से कमोजर

होते जाते है। जो भाव बली होगा वह चौथा प्राण होगा। उदाहरण कुण्डली में 1, 7 वाँ, 11 वाँ, 12 वाँ, भाव दृष्टीविहीन है। बाकी भावों पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि है। इन तीनों में 7 वाँ भाव कुम्भ राशि बलवान है। क्योंकि इस भाव से 11 वाँ तथा 12 वाँ भाव विश्वाबल से कमजोर है। अतः चौथा प्राण कुम्भ राशि सप्तम भाव हुआ। अब कुम्भ राशि समसंज्ञक है। अतः कुम्भ से एक भाव छोड़कर उल्टे क्रम से शनि तक गिनने पर 3 वर्ष दशा प्राप्त हुई।

2. इसके बाद मीन राशि की दशा आई। यह राशि समसंज्ञक है। एक भाव छोड़कर उल्टे क्रम से गुरु तक गिना तो दो वर्ष दशा प्राप्त हुई। लेकिन गुरु नीचराशिस्थ है। अतः एक वर्ष दशा कम की तो एक वर्ष दशा प्राप्त हुई।

3. इसके बाद मेष राशि ली यह विषम संज्ञक राशि है। सीधे क्रम से मंगल तक गिनने पर 5 वर्ष दशा प्राप्त हुई।

चतुर्विध प्राण दशा चक्र (उत्तर दशा)

	7 सू०	8	9	7 शु०	8	9	9 चं०	10	11	11 प्राण	12	1	भाव प्राण
	12	10	0	12	10	0	0	2	3	3	1	5	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
2042	2054	2064	2064	2076	2086	2086	2086	2086	2088	2091	2094	2100	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1997	2007	2007	2019	2029	2029	2029	2031	2034	2037	2038	2043	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

ब्रह्माग्रहाश्रित् दशा :- मूल ग्रन्थ अध्याय 31 श्लोक 32 से 42 तक ब्रह्माश्रित दशा का उल्लेख है। ब्रह्म ग्रह का निर्धारण पहले स्थिर दशा साधन में कर चुके है। 6 –8–12 भाव के स्वामियों में जो ग्रह विषम राशि में हो वह ब्रह्म संज्ञक होता है। यह लग्न व सप्तम दोनों भावों से देखना चाहिए। आत्मकारक ग्रह से अष्टमेष या अष्टम भावस्थ ग्रह भी ब्रह्म होता है। जब कई ग्रह ब्रह्म हो तो बलवान ग्रह ब्रह्म मानेंगे। ब्रह्म ग्रह जिस राशि में हो उसे छठे ग्रह की राशि से (फल विचार) करना चाहिए। छठी राशि स्वामी की गणना इस प्रकार है जैसे :– सूर्य का छठा शुक्र है आगे शनि रहू केतु आदि। इस दशा में एक दूसरा पक्ष यह है कि ब्रह्माश्रित राशि से ही दशा प्रारम्भ करनी चाहिए। यह भी बतलाया गया उस दशा को वहाँ तक लेना जहाँ तक अल्प, मध्य, दीर्घ आयु की अवधि हो। इस दशा में सभी के 6–6 वर्ष दशा मान लिये गये हैं।

ब्रह्माग्रहाश्रित् दशा साधन :-मानक उदाहरण में 6–8–12 भावों के स्वामियों में चन्द्र धनु विषम राशि में है और आत्मकारक ग्रह सूर्य से अष्टम में कोई ग्रह नहीं है। अतः चन्द्र को ब्रह्म् माना। ब्रह्माश्रित राशि धनु हुई। अब चन्द्र से छठा ग्रह राहू आता है। राहू कुण्डली में नवम् भाव मेष राशि में है। अतः मेष राशि से दशा प्रारम्भ करेंगे। भुक्त भोग्य पूर्ववत् करेंगे ।

भुक्त योग्य = $\frac{\text{भयात} \times \text{दशावर्ष}}{\text{भभोग}} = \frac{135\times 6}{3267} = \frac{810}{3267} =$

```
3267)810(0
     × 12
3267)9720(2
      6534
      ----
      3186
      × 30
      ----
```

3267) 95580 (29 दिन

6534

30240

29403

837

	वर्ष		मास		दिन
=	0	–	2	–	29

6	–	00	–	00	=कुल दशा वर्ष मेष राशि की
– 0	–	2	–	29	=भुक्त दशा मेष की
5	–	9	–	01	=भोग्य दशा मेष की

ब्रह्माश्रित दशा चक्र 72 वर्ष

भुक्त	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	राशि
0	5	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	व०
2	9	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
29	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2048	2054	2060	2066	2072	2078	2084	2090	2096	2102	2108	2114	संवत्
6	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	रा०
28	29	29	29	29	29	29	29	29	29	29	29	29	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1991	1997	2003	2009	2015	2021	2027	2033	2039	2045	2051	2057	सन्
11	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	मा०
15	16	16	16	16	16	16	16	16	16	16	16	16	ता०

केन्द्रादि दशा साधन विधि :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 31, श्लोक 83 से 91 तक केन्द्रादि दशा का उल्लेख है। इसके चर, स्थिर तथा द्विस्वभाव से भेद कहे है। प्रथम दशा में लग्न में चर राशि हो तो लग्न और सप्तम में जो बलवान राशि हो तो उससे दशा प्रारम्भ करे। इनमें यदि विषम राशि हो तो क्रम से और सम राशि हो तो विपरीतक्रम से दूसरी तीसरी आदि 12 राशियों की दशा होती है। दूसरे प्रकार में यदि लग्न स्थिर राशि हो तो लग्न या सप्तम जो बलवान हो, लग्न से दशा का प्रारम्भ कर बाद में छठे भाव की दशा होती है। पहले कही हुई रीति से उल्टे और सीधे क्रम से दशा रखना। वृष और वृश्चिक में क्रम से तथा सिंह कुम्भ में उल्टे क्रम से दशा की गणना करना।

द्विस्वभाव राशि यदि लग्न में हो तो लग्न सप्तम में जो बलवान हो उससे रखना। केन्द्र के चार भावों की दशा इस प्रकार रखना कि प्रथम लग्नादि चारों केन्द्र भावो की बाद में पणफर स्थानों में से केवल पंचम की उसके बाद पड़ने वाले तीन केन्द्रों की बाद मे आपोक्लिम स्थानों में प्रथम नवभाव की बाद में पड़ने वाले तीन केन्द्रों के (केन्द्र 1–4–7–10, त्रिकोण 1–5–9, पणफर 8–11–2–5, आपोक्लिम 9–12–3–6 होते हैं)

केन्द्रादि दशा साधन :- मानक उदाहरण में स्थिर लग्न सिंह है। यहाँ सप्तम भाव में कुम्भ राशि है। यहाँ सूर्य से शनि बलवान है। क्योंकि सूर्य नीच मे तृप्तिभाव में तथा शत्रु के घर में है। शनि केन्द्र में तथा सम के घर में है। अतः कुण्डली में शनि बलवान हुआ तो शनि से दशा उल्टे क्रम से लगेगी। सप्तम से विपरीत क्रम से छठा कन्या राशि हुई फिर कन्या से छठा मेष राशि हुई। अतः दशा क्रम इस प्रकार होगा। कुम्भ, कन्या, मेष, वृश्चिक, मिथुन, मकर, सिंह, मीन, तुला, वृष, धनु, कर्क उपरोक्त दशा क्रम छठे से छठा लगाई गई है। इन सभी के 9–9 वर्ष मान है।

केन्द्रादि दशा चक्र 108 वर्ष

भुक्त	कुम्भ	कन्या	मेष	वृश्चिक	मिथुन	मकर	सिंह	मीन	तुला	वृष	धनु	कर्क	ग्रह
	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2051	2060	2069	2078	2087	2096	2105	2114	2123	2132	2141	2150	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1994	2003	2012	2021	2030	2039	2048	2057	2066	2075	2084	2093	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

उपरोक्त दशा में भुक्त योग्य निकालने का निर्देश नहीं है।

कारक केन्द्र दशा साधन विधि :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 31, श्लोक 92 से 210 तक दशा का उल्लेख दिया है। सूर्यादि ग्रह इस कारकेन्द्र दशा में 9–9 वर्ष की आयुरूप दशा नवांश रूप से अन्तर्दशा देने वाले है। इस दशा में तीन कारकेन्द्र है। एक लग्न से केन्द्र, दूसरा द्वितीय भाव से केन्द्र, तीसरा तृतीय भाव से केन्द्र, गणना क्रम से 9–9 वर्ष दशा होती है तथा प्रत्येक ग्रह वा राशि की दशा में एक–एक वर्ष इसी क्रमानुसार अन्तर्दशा होती है।

कारक केन्द्र दशा साधन :- मानक उदाहरण में सिंह लग्न है अतः पहला केन्द्र 5–8–11–2 हुआ, दूसरा 6–9–12–3 हुआ, तीसरा 7–10–1–4 हुआ । अतः इसी क्रम से दशा लगेगी क्योंकि पहला केन्द्र क्रम बलवान होता है। इसके बाद दूसरा इसके बाद तीसरा सबसे निर्बल

केन्द्र होता है। सब के दशा वर्ष 9–9 वर्ष रखे हैं।

	कारकेन्द्र दशा चक्र 108 वर्ष												
भुक्त	कुम्भ	कन्या	मेष	वृश्चिक	मिथुन	मकर	सिंह	मीन	तुला	वृष	धनु	कर्क	ग्रह
	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0		0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2051	2060	2069	2078	2087	2096	2105	2114	2123	2132	2141	2150	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1994	2003	2012	2021	2030	2039	2048	2057	2066	2075	2084	2093	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

कारक ग्रह दशा साधन विधि :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 31, श्लोक 211 से 218 तक कारक ग्रह दशा दी है। इस दशा में पहले ग्रहों का कारकत्व प्राप्त किया जाता है, जो हम पहले प्राप्त कर चुके हैं सो यहाँ देना आवश्यक है। सूर्य–आत्मकारक, बुध–आमात्य कारक, मंगल–भ्रातृ कारक, गुरु–मातृ कारक, शुक्र–पुत्र कारक, शनि–जाति कारक तथा चन्द्र–स्त्री कारक ग्रह हैं।

लग्न व सप्तम में सम व विषम पद राशि हो तो उल्टे व सीधे क्रम से दशा लगेगी। अब हमारा लग्न सिंह विषम पद व सप्तम कुम्भ विषम पद राशि आती है। अतः लग्न से लेकर कारक ग्रह जहाँ बैठा है वहाँ तक गणना करने पर दशा वर्ष प्राप्त होते है। विषम पद होने से सीधे क्रम से दशा प्राप्त करेंगे। लग्न से सूर्य तीसरे भाव में है अतः सूर्य आत्म कारक ग्रह

की दशा 3 वर्ष हुई। बुध लग्न से चौथे घर में है अतः अमात्य कारक बुध की दशा 4 वर्ष हुई। लग्न से मंगल दूसरे घर में है तो भ्रातृ कारक मंगल की दशा 2 वर्ष हुई। लग्न में गुरु छठे भाव में है तो मातृ कारक गुरु की दशा 6 वर्ष हुई। शुक्र आत्मकारक सूर्य के साथ है अतः सूर्य के समान दशा 3 वर्ष हुई। लग्न से शनि चौथे घर में है अतः शनि जातिकारक की दशा 4 वर्ष हुई। लग्न से चन्द्र पाँचवे घर में है तो चन्द्र स्त्रि कारक की दशा 5 वर्ष हुई।

			कारक ग्रह				
सू०	बु०	मं०	गु०	शु०	श०	चं०	ग्रह
आत्मकारक	आमात्म	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	जाति	स्त्रि	कारकत्व

			कारक ग्रह दशा चक्र					
भुक्त	सू०	बु०	मं०	गु०	शु०	श०	चं०	ग्रह
	3	4	2	6	3	4	5	व०
	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0		0	दि०
2042	2045	2049	2051	2057	2060	2064	2069	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1987	1991	1993	1999	2002	2006	2011	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

मण्डुक (त्रिकुट) दशा साधन विधि :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 31, श्लोक 219 से 229 तक त्रिकुट तथा मण्डुक दशा साधन दिया है। चर, स्थिर, द्विस्वभाव राशियों मे

7–8–9 वर्ष संख्या दी गई है। लग्न, सप्तम् में जो बलवान हो वहीं से दशा। सम तथा विषम पद राशि लग्न होने पर विपरीत तथा सीधे क्रम से दशा लगनी होती है। तीन समूह वाली अर्थात प्रथम केन्द्र से द्वितीय पयार्य में पणफर से, तृतीय पर्याय में आपोक्लिम से होने वाली त्रिकुट नाम की दशा है। इस दशा में पुरूष जातक की कुण्डली में लग्न वा सप्तम में जो बलवान हो उसमें दशा लगानी है। स्त्री जातक की कुण्डली में सप्तम से दशा लगानी है। जिस जातक की कुण्डली में शुक्र व चन्द्र बलवान हो उस पर यह दशा प्रभावकारी है।

मण्डुक (त्रिकुट) दशा साधन :- उदाहरण में त्रिकोण इस प्रकार है :–

पहला त्रिकोण	=	सिंह	धन	मेष
दूसरा त्रिकोण	=	कन्या	मकर	वृष
तीसरा त्रिकोण	=	तुला	कुम्भ	मिथुन

दशा वर्ष :-

चर	=	मेष	कर्क	तुला	मकर	=	7 वर्ष
स्थिर	=	वृष	सिंह	वृश्चिक	कुम्भ	=	8 वर्ष
द्विस्वभाव	=	मिथुन	कन्या	धनु	मीन	=	9 वर्ष

उदाहरण में राशियों के दशा इस प्रकार हुए।

सिंह – 8, धन – 9, मेष – 7, कन्या – 9, मकर – 7, वृष – 8, तुला – 7, कुम्भ – 8 , मिथुन–9, वृश्चिक – 8, मीन–9,कर्क–7, वर्ष दशा हुई।

भयात् = 135 भभोग = 3267

		व०	मा०	दि०	
$135 \times 8 \div 3267$	=	0 –	3 –	29	
		व०	मा०	दि०	
		8 –	00 –	00	पूर्ण दशा
		0 –	3 –	29	भुक्त दशा

7 – 8 – 1 भोग्य दशा

	मण्डुक (त्रिकुट) दशा चक्र												
भुक्त	सिंह	धन	मेष	कन्या	मकर	वृष	तुला	कुम्भ	मिथुन	वृश्चिक	मीन	कर्क	राशि
0	7	9	7	9	7	8	7	8	9	8	9	7	व०
3	8	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
29	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2050	2059	2066	2075	2082	2090	2097	2105	2114	2122	2131	2138	संवत्
6	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	रा०
28	29	29	29	29	29	29	29	29	29	29	29	29	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1993	2002	2009	2018	2025	2033	2040	2048	2057	2065	2074	2081	सन्
11	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	मा०

15 16 16 16 16 16 16 16 16 16 16 16 16 ता०

शूल दशा :-

दशा शूलं प्रवक्तव्यं फलं निर्याणराशितः ।

प्रवक्ति सप्तमाद्विप्र निर्देशे शूलमात्रतः ।।

माहेश्वरर्क्षादिदशानिर्याणस्थानशूलभम् ।

बलेन शूलं संग्रह्यं मृत्युश्चाथ द्विजोत्तम ।

दशानेकविध विप्र सप्ताष्टनवभिः सदा ।।

अत्र ग्राह्या महाप्राज्ञ शूले निर्याणनिश्चतम् ।।

सर्वायुःपाकमारभ्य राशौ च विषमे द्विज ।

लग्नात्प्रवृत्ति विज्ञेया सप्ताष्टनवभिः समाः ।।

समे तु सप्तमाद्विप्र नग नाग नवाब्दिकाः ।।

दशामरभ्य संग्राह्यं निर्विशंकमिदं क्रमात् ।।[1]

शूल दशा साधन विधि :-

इसमें लग्न तथा सप्तम में जो बलवान हो उससे दशा लगेगी। दशा वर्ष 7–8–9 रहेंगे। विषम लग्न में क्रम से सम राशि उल्टे क्रम से दशा लगाई जाती है। इसमें महेश्वर अथवा रूद्रग्रह की राशि से निश्चित हुआ जो मृत्यु स्थान है उससे शूल राशि जानी जाती है। बलाबल विचार से इस शूलदशा में मृत्यु का विचार किया जाता है। शूल दशा के अनेक प्रकार है लेकिन मृत्यु निर्णाय के बारे में 7–8–9 वर्ष वाली दशा ही ग्रहण की जाती है।

शूल दशा साधन :-

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 230 से 234, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

मानक उदाहरण में सिंह लग्न बलवान है अतः दशा यहीं से लगेगी।

					शूलदशा चक्र 96 वर्ष								
भुक्त	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	राशि
	8	9	7	8	9	7	8	9	7	8	9	7	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2050	2059	2066	2074	2083	2090	2098	2107	2114	2122	2131	2138	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1993	2002	2009	2017	2026	2033	2041	2050	2057	2065	2074	2081	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

नक्षत्र दशा साधन विधि :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 31, श्लोक 235–236 में बतलाया गया है। यह दशा पाँच प्रकार की नक्षत्र से प्राप्त होती है। इसमें विंशोत्तरी दशा–अन्तर्दशा, प्रत्यन्त दशा, सुक्ष्म दशा, प्राण दशा भेद से तथा अष्टोत्तरी के दो प्रकार एक आर्द्रा नक्षत्र से तथा दूसरी कृतिका नक्षत्र से प्राप्त होने वाली हैं। जोकि हम पहले निकाल चुके हैं।

योगार्द्धदशा साधन :-

चरस्थिरदशा विप्र यं च योगं समाचरेत् ।
तस्यार्धं च समायुर्दा योगार्द्धाख्या तु सा दशा ।।
लग्नसप्तमयोर्मध्ये चिंतयेत्तु बलाश्रयम् ।
लग्ने बलयुते लग्नाद्दशारंभ प्रकाशयेत् ।।
तस्मात्सप्तमवीर्याढ्यं । दशारंभं प्रकल्पयेत् ।
पुंसां स्त्रीजातकं वक्ष्ये क्रमव्युतक्रमभेदतः ।।

बलिनस्तु दशाऽऽनेया राशेर्हि शशिशुक्रयोः ।

स्त्रीचेद्दर्पणतो नेया पुरुषश्च ततो नयेत् ।[1]

योगार्द्धशा साधन विधि :- इस दशा में चर दशा तथा स्थिर दशा को जोड़कर आधा मान योगार्द्धदशा का होता है। यह लग्न व सप्तम में जो बलवान है उससे दशा शुरू होगी। विषम पद राशि में क्रम से, सम पद में उल्टे क्रम से दशा की गणना की गई है।

योगार्द्धशा साधन :- ये दोनो दशायें हम पहले निकाल चुके हैं । इन दोनों दशाओं को जोड़कर आधा करने से यह दशा प्राप्त हुई। जो निम्न प्रकार से है :-

योगार्द्धदशा चक्र

भुक्त	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	राशि
	8	9	9	9	4	4	5	5	6	10	7	7	व०
	6	6	6	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2051	2060	2070	2079	2083	2087	2093	2098	2104	2114	2121	2128	संवत्
6	6	0	0	0	0	6	0	0	0	0	0	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1994	2003	2013	2022	2026	2030	2036	2041	2047	2057	2064	2071	सन्
11	5	11	5	5	5	11	5	5	5	5	5	5	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 237 से 240, खेमराज श्रीकृष्णदास, वेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

दृग्दशा साधन विधि :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 31, श्लोक 41 से 49 तक दृग्दशा का उल्लेख है। यह भाव दृष्टि से लगाई जाती है। किस भाव की कहाँ कहाँ दृष्टी है इसी के अनुसार दशा लगाई जाती है। इस दशा में भी विषम पद राशि तथा सम पद राशि अनुसार क्रम तथा व्युत्क्रम से दशा लगाई जाती है। विषम, समपद राशि चक्र इस प्रकार है।

विषमपद	समपद	विषमपद	समपद	पद
9	4	7	10	
2	5	8	11	राशि
3	6	9	12	

इस दशा में 9–10–11 भावों की दशा ली जाती है। इसमें चर राशि की दृष्टी 5–7–11 होती है। द्विस्वभाव राशि की दृष्टी 4–7–10 होती है। स्थिर राशि की दृष्टी 3–7–10 होती है। पुरूष जातक की कुण्डली में लग्न में द्विस्वभाव राशि हो तो पार्श्व राशि, पंचम्, एकादश नहीं होती, द्विस्वभाव राशि की दृष्टी में चतुर्थ, दशम चर होती है। स्त्रि जातक में वे ही दशा विपरीत क्रम–चतुर्थ, दशम ग्रहण करती है। दृष्टि चक्र अध्याय 4 के अनुसार दिया जा रहा है। जिससे दृष्टि रेखा चिन्ह दिया है। इसको समझने में कठिनाई नहीं होगी।

दृष्टि चक्र

12 1 2 3

11 4

10 5

9 8 7 6
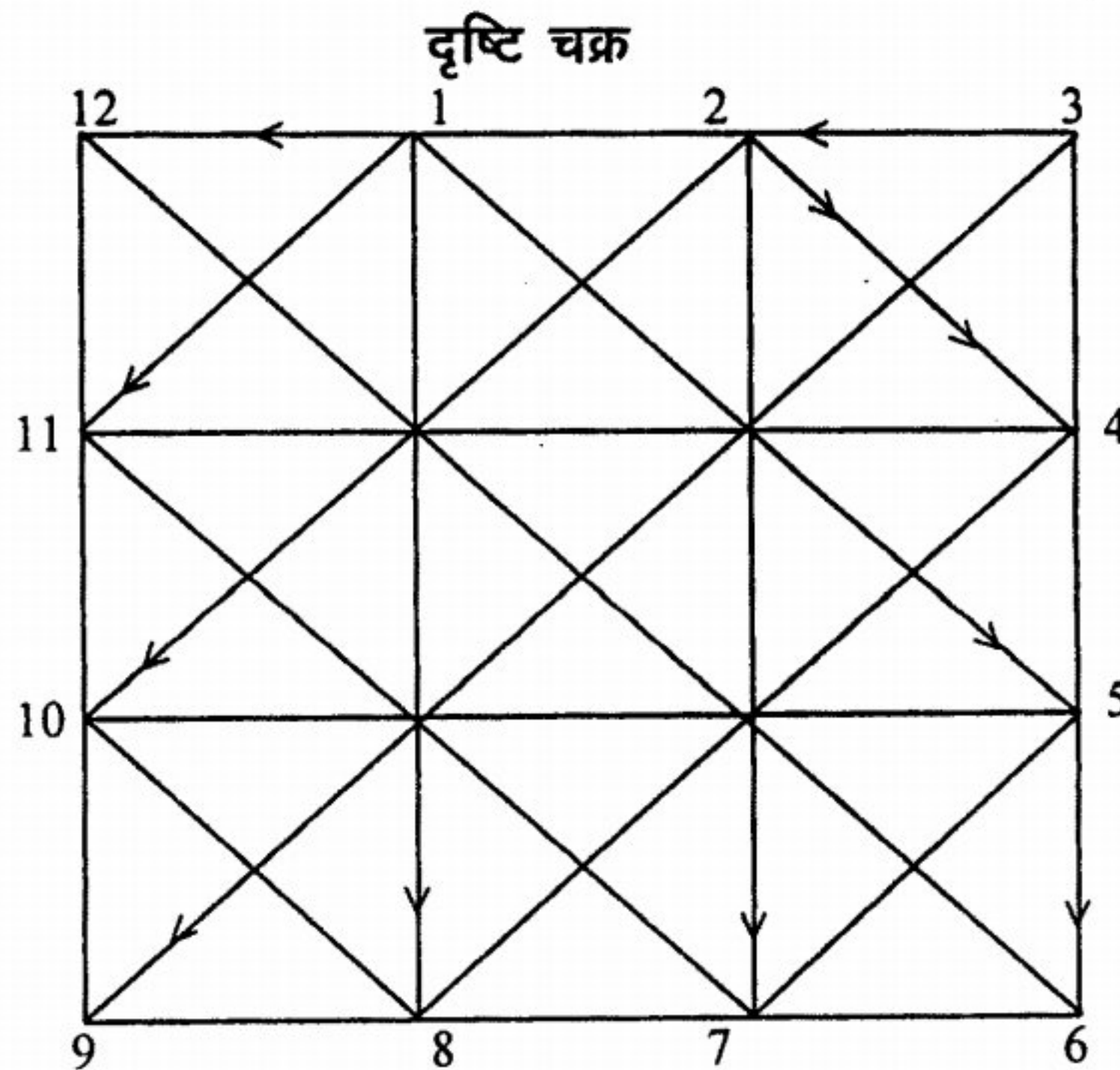
दृग्दशा साधन :- उपरोक्त दृष्टि चक्र में हमारी मानक कुण्डली में नवम भाव मेष राशि है। मेष चर राशि है अतः चक्र में 5–7–11 देखा तो सिंह, वृश्चिक तथा कुम्भ राशि आती है। मेष राशि विषमपद है अतः सीधे क्रम से गिनेगें तो कुम्भ वृश्चिक और सिंह राशि की दशा होगी। अब दशम भाव वृष स्थिर राशि है इसकी दृष्टि पहले बताई जा चुकी 3–7–10 दृष्टि होती है। चक्र में व्युतक्रम देखा तो कर्क, तुला तथा मकर राशि पर दृष्टि है। अब एकादश भाव मिथुन द्विस्वभाव राशि है। इसकी दृष्टी 4–7–10 है। चक्र व्युतक्रम से कन्या, धनु तथा मीन राशि पर दृष्टी है। इस दशा में प्रत्येक राशि के 9–9 वर्ष होते है।

दृग्दशा चक्र 108 वर्ष

भुक्त	मेष	कुम्भ	वृश्चिक	सिंह	वृष	कर्क	तुला	मकर	मिथुन	कन्या	धन	मीन	राशि
	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2051	2060	2069	2078	2087	2096	2005	2014	2033	2032	2041	2050	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1994	2003	2012	2021	2030	2039	2048	2057	2066	2075	2084	2093	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

उपरोक्त दशा में भुक्त भोग्य नहीं निकाला जाता।

त्रिकोण दशा :-

दशा त्रिकोणनाम्ना या यथान्यायप्रकल्पना ।

चरपर्यायरीत्यादिश्लोकोक्तेन प्रदिर्शितः ।।

लग्नात्त्रिकोणेयो राशिर्बलवानुक्तहेतुभिः ।

तदारभ्यानयेच्छ्रीमँश्चरपर्यायवद्दशा ।।

युग्मराशिभवां पुंसामोजे गृह्णीत संमुखः ।

ओजराशिभुवां स्त्रीणां युग्मे चैव समाश्रयेत् ।।

क्रमोत्क्रमेण गणयेदाजयुग्मेषु राशिषु ।

संपन्नचरपर्यायदयामिति प्रकल्पयेत् ।।

ततोपि द्वारबाह्याभ्यां फलमेवं विचिंतयेत् ।

पाकभोगद्वयं विप्र पापयोगेन सौख्यदाम् ।।

तदिदं चरपर्यायस्थिरपर्यायकं द्विज ।

त्रिकोणख्यदशायां च पापभोगप्रकल्पनम् ।।[1]

त्रिकोण दशा साधन विधि :- यह दशा चरपर्या दशा के समान विषम तथा सम पद राशि से क्रम तथा व्युत्क्रम से लगाई जाती है। इसमें में चार त्रिकोण लग्न से द्वितीय से तृतीय तथा चतुर्थ भाव से प्राप्त करने पर दशा क्रम बनाया जाता है। इसके बाद चरपर्या दशानुसार वर्ष प्राप्त किये जाते है। इस दशा में स्वराशि ग्रह होने से 12 वर्ष दशा लेनी है। दो राशियों के दशा वर्ष एक का स्वामी होने से दूसरी राशि की भी दशा 12 वर्ष होती है। उच्च स्थान में ग्रह हो तो एक वर्ष जोड़ देंगे, यदि नीच स्थान में हो तो एक वर्ष कम कर देंगे। इस दशा को लगाने के लिये सम, विषम पद राशि तथा गणना क्रम इस प्रकार है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 62 से 67, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

मेष	वृष	मिथुन	ये विषम पद राशि हैं इनको सीधे क्रम से गिनेंगे।
तुला	वृश्चिक	धन	
कर्क	सिंह	कन्या	ये समपद राशि है इनकी विलोम (उल्टे) क्रम से गिनेंगे।
मकर	कुम्भ	मी०	

यह दशा लगाने के लिये कुण्डली आवश्यक है। जो निम्न प्रकार से है।

मं० 6
4
सू०
7 शु०
के०
5
3
8
2
श० बु०
1
रा०
9 चं०
11
10 गु०
12
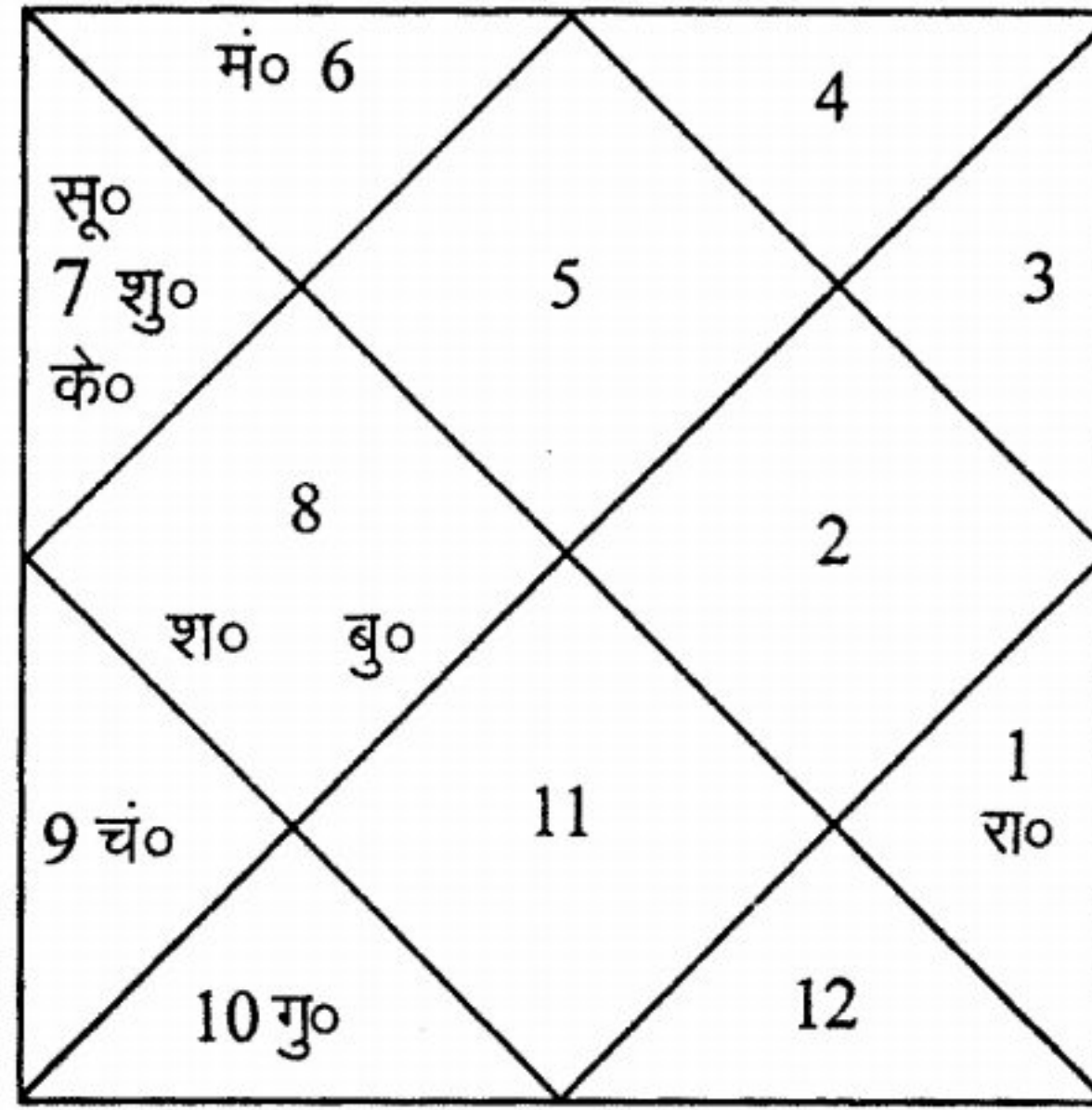
त्रिकोण दशा साधन :- त्रिकोण इस प्रकार है – 1, 5, 9 पहला त्रिकोण 2, 6, 10 दूसरा त्रिकोण 3,7,11 तीसरा त्रिकोण, 4, 8, 12 चौथा त्रिकोण होता है। हमारी उदाहरण कुण्डली में त्रिकोण राशि अनुसार इस प्रकार है।

पहला त्रिकोण	=	सिंह	–	धन	–	मेष
दूसरा त्रिकोण	=	कन्या	–	मकर	–	वृष
तीसरा त्रिकोण	=	तुला	–	कुम्भ	–	मिथुन
चौथा त्रिकोण	=	वृश्चिक	–	मीन	–	कर्क

अतः दशा क्रम इस प्रकार हुआ सिंह, धन, मेष, कन्या, मकर, वृष, तुला, कुम्भ, मिथुन, वृश्चिक, मीन, कर्क।

1. पहले त्रिकोण में सिंह राशि है। इसका नवम् भाव मेष विषमपद राशि है। भाव से भावेश तक सीधे क्रम से एक राशि छोड़ कर गिना तो 2 वर्ष दशा प्राप्त हुई अब सूर्य तुला में नीच का है। अतः सूत्रानुसार एक वर्ष कम किया तो एक वर्ष दशा प्राप्त हुई।
2. दूसरा त्रिकोण धनु का है। इसका नवम् सिंह राशि लग्न समपद हुई अतः भाव से भावेश तक उल्टे क्रम से गिनने पर 11 वर्ष दशा प्राप्त हुई। अब गुरु नीचस्थ है। अतः एक वर्ष कम किया तो 10 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
3. तीसरा त्रिकोण मेष राशि का है। इसका नवम् धनु राशि विषम पद है। अतः भाव से भावेश तक सीधे क्रम से गिना तो 5 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
4. चौथा त्रिकोण कन्या का है। इसका नवम भाव वृष राशि विषम पद है। अतः भाव से भावेश तक सीधे क्रम से गिना तो 2 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
5. पाँचवा त्रिकोण मकर का है। इसका नवम भाव कन्या राशि समपद है। अतः उल्टे क्रम से गिनने पर 2 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
6. छठा त्रिकोण वृष राशि का है। इसका नवम् भाव मकर राशि सम पद है। अतः उल्टे क्रम से गिनने पर 7 वर्ष दशा प्राप्त होती है। लेकिन शुक्र स्वगृही होने से इसकी दशा 12 वर्ष लेंगे।
7. सातवाँ त्रिकोण तुला राशि का है। इसका नवम् भाव मिथुन राशि विषम पद है। सीधे क्रम से गिनने पर 12 वर्ष दशा प्राप्त होती है। शुक्र स्वगृही होने पर भी 12 वर्ष दशा प्राप्त होती है।
8. आठवां त्रिकोण कुम्भ राशि का है। इसका नवम् भाव तुला राशि विषम पद है। भाव से भावेश तक सीधे क्रम से गिनने पर 9 वर्ष दशा प्राप्त होती है।
9. नौवां त्रिकोण मिथुन राशि का है। इसका नवम भाव कुम्भ समपद राशि का है अतः उल्टे क्रम से गिनने पर 7 वर्ष दशा प्राप्त होती है।

10. दशवां त्रिकोण वृश्चिक राशि का है। इसका नवम् भाव कर्क समपद राशि है। अतः उल्टे क्रम से गिनने पर 2 वर्ष दशा प्राप्त होती है।

11. ग्यारहवां त्रिकोण मीन राशि का है। इसका नवम भाव वृश्चिक विषमपद राशि का है। अतः सीधे क्रम से गिनने पर 10 वर्ष दशा प्राप्त होती है। लेकिन गुरु नीचस्थ होने से एक वर्ष कम किया तो 9 वर्ष दशा प्राप्त हुई।

12. बारहवां त्रिकोण कर्क राशि का है। इसका नवम् भाव मीन राशि समपद का है। अतः उल्टे क्रम से गिनने पर 7 वर्ष दशा प्राप्त होती है।

त्रिकोण दशा चक्र

	सिंह	धन	मेष	कन्या	मकर	वृष	तुला	कुम्भ	मिथुन	वृश्चिक	मीन	कर्क	राशि
	1	10	5	2	2	12	12	9	7	2	9	7	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2043	2053	2058	2060	2062	2074	2086	2095	2002	2004	2013	2020	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1986	1996	2001	2003	2005	2017	2029	2038	2045	2047	2056	2063	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

नक्षत्र दशा :-

जन्मादौ चंद्रनक्षत्रे सर्वत्र घटिकौघके ।
भानुना दीयते भागंशेषनाड़ः प्रकल्पयेत् ।।
प्रथमं खण्डमारभ्य द्वादशे खंडके द्विज ।
लग्नाद्द्वादशराशीनां गणनीयं क्रमेण च ।
या घटी कर्मवत्खण्डे जन्मखण्डश्च आदितः ।।
आरभ्य गणनायां च जन्मताग्नादितो द्विज ।।
लग्नाद्द्वादशराशीशमारभ्य द्विजसत्तम् ।
क्रमव्युत्क्रमभेदेन द्वादशर्क्षदशा मता ।।[1]

नक्षत्र दशा साधन विधि :- इसमें नक्षत्र के भभोग में 12 से भाग देने से जो घटयादि फल आवे उस खण्ड से प्रारम्भ कर 12 खण्डों में बारह राशियों की दशा होती है। अथवा भभोग को 12 से भाग देने से घटयादि लब्धि हो तो उसमें भयात् से भाग देने से जो राश्यादि फल आवे उसमें जन्म लग्न को जोड़ देने से राश्यादि आवे वही से (विषम– सम) अनुसार क्रम–उत्क्रम से दशा लगाना :–

नक्षत्र दशा साधन :- मानक उदाहरण में भयात् 135, भभोग 3267 है ।

```
12)3267(272
   24
   ---
   86
   84              135)272(2
   ---                 270
    27                 ---
    24                   2
   ---                 × 60
     3                 ----
```

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 71 से 74, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

135)120(0

× 60

135)2400(17 | रा | अं | कं
135 | 2 – 0 – 17
1050 + | 4 – 26 – 6
945 | 6 – 26 – 23 तुला राशि विषम पद
105 | आई अतः क्रम से दशा लगेगी।

इसके दशा वर्ष 9–9 होगें । लेकिन ज्योतिष प्रकाशन, वाराणसी, पण्डित गणेश दत्त की पुस्तक से उस दशा के वर्ष 7, 8, 9 दिये हैं। हम अपने मूल ग्रन्थानुसार 9–9 मान कर ही दशा लगा रहे है। $\frac{135 \times 9}{3267}$

135

× 9

3267)1215(0 रा

× 12

3267)14580(4 अं

13068

1512

× 30

3267)45360(13 = 14 कला

3267

12690

9801

2889

	रा		अं		क		विं	
	9	–	00	–	00	–	00	= पूर्ण दशा
–	0	–	4	–	14	–	00	= भुक्त दशा
	8	–	7	–	16	–	00	= भोग्य दशा

नक्षत्रदशा चक्र

भुक्त	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	राशि
0	8	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	व०
4	7	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
14	16	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2051	2060	2069	2078	2087	2096	2105	2114	2123	2132	2141	2150	संवत्
6	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	रा०
28	14	14	14	14	14	14	14	14	14	14	14	14	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1994	2003	2012	2021	2030	2039	2048	2057	2066	2075	2084	2093	सन्
11	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	मा०
15	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	ता०

तारा दशा साधन :-

जन्मसंपद्विपत्क्षेमप्रत्यरीसाधको वधः ।

मैत्रातिमैत्रमित्येवं दशा ज्ञेया द्विजोत्तम ।।

विंशोत्तर्याःक्रमेणैवमब्दानिह विजानत ।

आदौ केंद्रग्रहा यस्य विज्ञेया तारका दशा ।[1]

तारा दशा साधन विधि :- मूल ग्रन्थ अध्याय 31, श्लोक 75 तारा दशा का उल्लेख है। इसमें नौ तारे दिये है जो इस प्रकार है। जन्म, सम्पत, विपत, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र,

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 75, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

अतिमैत्र ये नौ तारे हैं। इनमें जन्म नक्षत्र का पहला तारा होगा उसके बाद अगला नक्षत्र इसी क्रम से नौ नक्षत्र तक रखेंगे तो 27 नक्षत्र होते है। इनके ग्रह स्वामी दशा वर्ष विंशोतरी के समान है। जो इस प्रकार है :–

तारा चक्र

संज्ञा =	जन्म	सम्पत्	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मैत्र	अतिमैत्र
नक्षत्र =	मूला	पू० षा०	उ० षा०	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भा०	उ०भा०	रेवती
	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
	मघा	पू० फा०	उ०फा०	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
स्वामी ग्रह=	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०
दशा वर्ष =	7	20	8	10	7	18	16	19	17

तारा दशा साधन :- मानक उदाहरण में केन्द्र में शनि बुध है। इनमें बुध मित्र ग्रह की राशि में है और शनि सम ग्रह की राशि में है अतः बुध अधिक बलवान है। इसलिये बुध से ही दशा प्रारम्भ करेंगे। अब उपरोक्त चक्र में देखा तो बुध अतिमित्र के तारे में है। अतः अतिमित्र से दशा शुरू करेंगे जो 17 वर्ष है। इसका भुक्त भोग्य इस प्रकार है।

भयात् = 135 भभोग = 3267 $= \frac{\text{भयात} \times \text{दशा वर्ष}}{\text{भभोग}}$

	व०	मा०	दि०
$= \frac{135 \times 17}{3267} =$	0 –	8 –	13

व	मा	दि	
17 –	00 –	00	पूर्ण दशा
0 –	8 –	13	भुक्त दशा
16 –	3 –	17	भोग्य दशा

तारा दशा चक्र

	अतिमित्र	जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	तारा
भुक्त	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	ग्रह
0	16	7	20	6	10	7	18	16	मित्र	व०
8	3	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
13	17	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2058	2065	2085	2091	2101	2108	2126	2142	2161	संवत्
6	3	3	3	3	3	3	3	3	3	रा०
28	17	17	17	17	17	17	17	17	17	अं०
45	0	0	0	0	0	0	0	0	0	क०
1985	2002	2009	2029	2035	2045	2052	2070	2086	2105	सन्
11	3	3	3	3	3	3	3	3	3	मा०
15	2	2	2	2	2	2	2	2	2	ता०

वर्णद दशा :-

जन्महोरर्क्षलग्नर्क्षसंख्या ग्राह्या पृथक् पृथक् !
ओजलग्ने च युग्मे तु चक्रशुद्धैकसंयुता ।।
युग्मौजसाम्ये संयोज्य वियोज्यान्योन्यमन्यथा ।
मेषादितः क्रमादोजे मीनादेरुत्क्रमात्समे ।।
एवं यल्लग्नमायातं वर्णदं तत्प्रकीर्तितम् ।
एवं द्वादशभावानां वर्णदं तत्प्रकीर्तितम् ।।
एवं द्वादशभावानां वर्णदं लग्नामनयेत् ।
ग्रहाणां वर्णदा नैव राशीनां वर्णदा दशा ।।
वर्षसंख्या विजानीयाच्चर पर्याप्रमाणतः ।।[1]

वर्णद दशा साधन विधि :- इसमें जन्म लग्न और होरा लग्न का योग करने से योग विषम हो तो वही वर्णद राशि होती है। यदि योग सम हो तो 12 में से घटाने पर वर्णद राशि होती है। इसी तरह 12 भावों के वर्णद ज्ञात किये जाते है। होरा लग्न और जन्म लग्न दोनों में जो बली हो और विषम हो तो क्रम से, यदि सम हो तो उत्क्रम गणना से वर्णद दशा होती है। राशियों के वर्ष चर दशा के समान होते है। हमारी कुण्डली में होरा लग्न बलवान है।
वर्णद दशा साधन :- मानक उदाहरण में लग्न 4–26–6–39 है। होरा लग्न 2–7–56–8 है। दोनों का योग किया।

	रा०	अ०	क०	वि०	
	2	7	56	8	होरा लग्न
+	4	26	6	39	जन्म लग्न
	7	4	2	47	यह राशि सम आई अतः 12 राशि में से घटाया।

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 31, श्लोक 76 से 80, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

12 – 00 – 00 – 00
– 7 – 4 – 2 – 47
4 – 25 – 57 – 13 यह वर्णद राशि हुई।

भावों के वर्णद ज्ञात करना :- 4–25–57–13 में छठे भाव तक 2–2 राशि जोड़ते जायेंगे।

i)	4 – 25 – 57 – 13	vii)	4 – 25 – 57 – 13
	+ 2		
ii)	6 – 25 – 57 – 13	viii)	6 – 25 – 57 – 13
	+ 2		
iii)	8 – 25 – 57 – 13	ix)	8 – 25 – 57 – 13
	+ 2		
iv)	10 – 25 – 57 – 13	x)	10 – 25 – 57 – 13
	+ 2		
v)	0 – 25 – 57 – 13	xi)	0 – 25 – 57 – 13
	+ 2		
vi)	2 – 25 – 57 – 13	xii)	2 – 25 – 57 – 13

ये वर्णद राशि हुई।

मं० 6
4
सू० 7 शु० के०
5
3
8
2
श० बु०
9 चं०
11
1 रा०
10 गु०
12
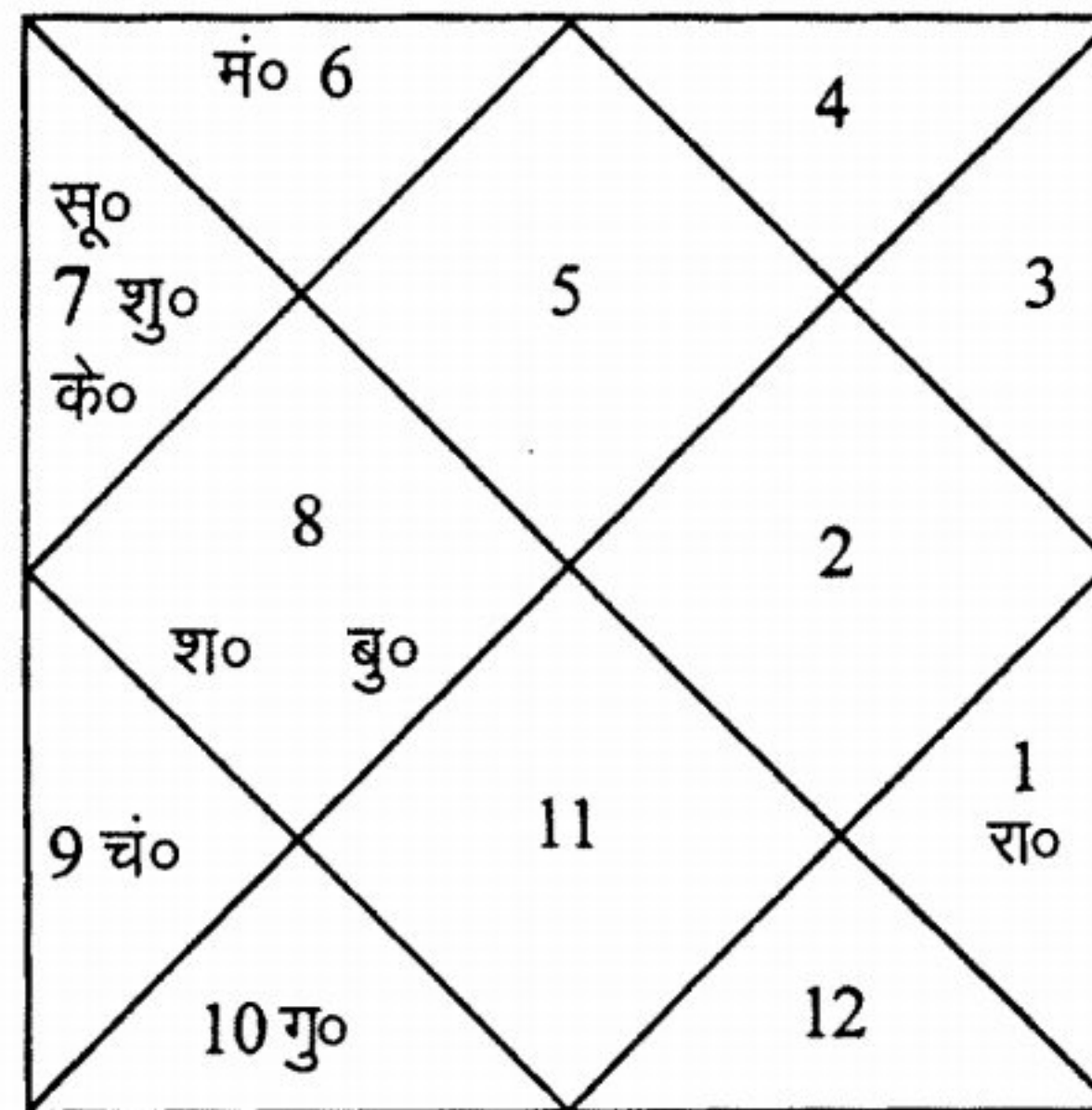
अब मिथुन लग्न विषम है अतः क्रम से गणना करेंगे तो मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला,

वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष राशियों की दशा क्रम होगा। दशा वर्ष लाने के लिये :–

1. अब मिथुन से वर्णद लग्न सिंह तक गिनने पर 3 वर्ष आये।
2. होरा लग्न के दूसरे भाव की वर्णद राशि तुला तक उल्टे क्रम से गिना तो तुला तक 10 वर्ष दशा कर्क राशि की प्राप्त हुई।
3. होरा लग्न से तीसरे भाव सिंह विषम राशि की दशा सीधे क्रम से वर्णद राशि धनु तक 5 वर्ष दश प्राप्त हुई।
4. होरा लग्न से चौथे भाव कन्या राशि सम है और वर्णद राशि कुम्भ है अतः कुम्भ तक उल्टे क्रम से गिना तो 8 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
5. होरा लग्न से पाँचवा भाव तुला विषम राशि है। इसकी वर्णद राशि मेष है अतः सीधे क्रम से गिनने पर 7 वर्ष प्राप्त हुई।
6. होरा लग्न के छठे भाव वृश्चिक सम राशि है। इसकी वर्णद राशि मिथुन है। अतः वृश्चिक सम होने से उल्टे क्रम से मिथुन तक गिना तो 6 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
7. होरा लग्न का सातवां भाव धनु विषम पद है। इसकी वर्णद राशि सिंह है अतः धनु राशि से इसकी वर्णद राशि सिंह तक सीधे क्रम से गिनने पर 9 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
8. होरा लग्न से आठवीं राशि मकर राशि है। इसकी वर्णद राशि तुला है। अतः मकर से तुला तक उल्टे क्रम से गिनने पर 4 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
9. होरा लग्न से नौवी राशि कुम्भ विषम है। इसकी वर्णद राशि धनु है। अतः कुम्भ से धनु तक सीधे क्रम से गिनने पर 11 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
10. होरा लग्न की दसवीं राशि मीन सम राशि है। इसकी वर्णद राशि कुम्भ है अतः उल्टे क्रम से गिनने पर 2 वर्ष दशा प्राप्त हुई।
11. होरा लग्न से ग्याहरवीं राशि मेष विषम है। उसकी वर्णद राशि मेष ही है। अतः मेष ही

वर्णद होने से एक वर्ष दशा प्राप्त हुई।

12. होरा लग्न से बाहरवीं राशि वृष सम राशि है। इसकी वर्णद राशि मिथुन है। अतः होरा राशि मिथुन से वर्णद राशि वृष तक सीधे क्रमसे गिनने पर 12 वर्ष दशा प्राप्त हुई।

नोट :– इस दशा में जो राशि दो से भाग हो वह सम तथा जो भाग न हो वह विषम मान कर दशा लगाई जाती है।

वर्णद दशा चक्र

भुक्त	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	राशि
	3	10	5	8	7	6	9	4	11	2	1	12	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2045	2055	2060	2068	2075	2081	2090	2094	2105	2107	2108	2120	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1988	1998	2003	2011	2018	2024	2033	2037	2098	2050	2051	2063	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

पंचस्वर दशा साधन विधि :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 31, श्लोक 81 से 98 तक पंचस्वर दशा का उल्लेख दिया है। इसमें अ, इ, उ, ए, ओ स्वरों के कोष्टक बनाकर उनके नीचे क से ह तक वर्णों का न्याश ङ, ञ, ण इनको छोड़कर करते हैं। क्योंकि इन वर्णों के नाम अक्षर नहीं होते। इनके स्थान पर ग, ज, ड वर्णों को माना जाता है। पाँच–2 अक्षरों (स्वरों) की दशा

होती है। इसलिये इसे पंचस्वर दशा कहते हैं। कथनानुसार जो इस प्रकार है।

अ	ई	उ	ए	ओ
क	ख	ग	घ	च
छ	ज	झ	ट	ठ
ड	ढ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह

पंचस्वर दशा साधन :- मानक उदाहरण में जातक का जन्म मूला नक्षत्र के प्रथम चरण में हैं। जिसका नाम अक्षर ये है अतः उ स्वर से दशा प्रारम्भ होगी। उ, ए, ओ, अ, ई, दशा क्रम हुआ। इनके सभी के दशा वर्ष 12–12 होंगे। इस दशा में पाँच स्वरों के पाँच देवता (ब्रह्म, विष्णु, शंकर, गणेश, सूर्य) हैं। पाँच निवृति (निवृति, उपेक्षा, आदान, उपादान, प्रवृति) हैं। पाँच कलायें (इच्छा, राग, द्वेष, अभिनिवेश, अहंकार) हैं। पाँच शक्तियाँ (माया, अविद्या, तामिस्र, अंधतामिस्र, मोह) हैं। पाँच चक्र (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) ये पञ्च महाभूत है। पाँच विषय (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध) हैं। ये सभी विषम काम के बाण बतलाये है। उपरोक्त सभी को इस दशा में न्यास करना चाहिए। इन दशाओं में 2 मास 12 दिन का अन्तर वर्ष प्रयन्तर होता है। जैसे पाँच स्वरों के दो मास के हिसाब से 10 मास तथा $12 \times 5 = 60$ दिन = 2 मास अतः 1 वर्ष में 2 मास 12 दिन अर्न्तर दशा सभी स्वरों में होती है। प्रतिपदा आदि 3–3 तिथियों के क्रम से अकारादि स्वरों की नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णादि दशा होती है। इनके वर्ष क्रमशः 81–87–93–91–105 होते है। इसी प्रकार राशियों का न्यास अकारादि क्रम से 8–5–1, 3–4–6, 9–12, 2–7, 10–11 करें।

पंचस्वर दशा चक्र

	उ	ए	ओ	अ	ई	स्वर
	जया	रिक्ता	पूर्णा	नन्दा	भद्रा	तिथि संज्ञा
	3	4	5	1	2	तिथि
	8	9	10	6	7	
	13	14	15	11	12	
	93	91	105	81	87	वर्ष
	9	2	10	8	3	
	12	7	11	5	4	राशि
				1	6	
	12	12	12	12	12	व०
	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	दि०
2042	2054	2066	2078	2090	2102	संवत्
6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	क०
1985	1997	2009	2021	2033	2045	सन्
11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	ता०

देवता	शंकर	गणेश	सूर्य	ब्रह्म	विष्णु
निवृति	आदान	उपादान	प्रवृति	निवृति	उपेक्षा
कला	द्वेष	अभिनेवेषे	अहंकार	इच्छा	राग
शलि	तामिस्र	अंधतामिस्र	मोह	माया	अविद्या
चक्र	तेज	वायु	आकाश	पृथ्वी	जल
विषय	रूप	रस	गन्ध	शब्द	स्पर्श
वार	गु०	शु०	श०	मं०	बु०
				रवि	सोम

पंचस्वर अंतर दशा चक्र 12 वर्ष

भुक्त	उ	ए	ओ	अ	ई	स्वर
	2	2	2	2	2	व०
	4	4	4	4	4	मा०
	24	24	24	24	24	दि०
2042	2044	2047	2049	2054	2056	संवत्
6	11	4	9	6	11	रा०
28	22	16	10	28	22	अं०
45	45	45	45	45	45	क०
1985	1988	1990	1993	1995	1997	सन्
11	4	9	1	6	11	मा०
15	9	3	27	21	15	ता०

इस रीति से सभी स्वरों का अन्तर निकाला जा सकता है ।

संध्यादशा साधन :-

परायुर्द्वादशोभागः स्फुटं संध्या भवेत्ततः ।

स्वलग्नस्यदशाचादौ ततोऽन्येषु गृहेषु च ।।[1]

संध्यादशा साधन विधि :- इसमें 12 राशियों की दशा दी है। कुल वर्ष 120 माने गये है। 10 वर्ष प्रत्येक राशि की दशा होती है। यह दशा लग्न से लगाई जाती है।

संध्यादशा साधन :- मानक उदाहरण में सिंह लग्न है अतः सिंह कन्या तुलादि क्रम से दशा इस प्रकार होगी :–

संध्यादशा चक्र 120 वर्ष

भुक्त	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	
	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	व०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मा०
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दि०
2042	2052	2062	2072	2082	2092	2102	2112	2122	2132	2142	2152	2162	संवत्
6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	रा०
28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	28	अं०
45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	45	क०
1985	1995	2005	2015	2025	2035	2045	2055	2065	2075	2085	2095	2105	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा०
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 32, श्लोक 6, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

पाचक दशा साधन :-

संध्या रसगुणाकार्या चंद्रवह्निहृता फलम् ।

संस्थाप्य प्रथमे कोष्ठे ह्यर्द्ध त्रिकोष्ठके ।।

त्रिभागं वसुकोष्ठेषु लिखेद्विद्वान्प्रयत्नतः ।

एवं द्वादशभावेषु पांचकानि प्रकल्पयेत् ।।[1]

पाचक दशा साधन विधि :- संध्या दशा के दश वर्ष को 6 से गुणा कर 31 का भाग देने से जो वर्ष मास आदि होते हैं। वह प्रथम भाव में लिखें। फिर इसी लब्धी को दो से भाग देकर घनादि तीन भावों में **लिखें**। फिर उसका आधा भाग व्यय भाग तक लिखने से लग्न की पाचक दशा होती है। इसी प्रकार अन्य भावों की भी पाचक दशा होती है।

पाचक दशा साधन :-

वo माo दिo घo पo

10 × 6 = 60 ÷ 31 = 1 – 11 – 6 – 46 – 27 ये लग्न की दशा हुई ।

वo माo दिo घo पo

1 – 11 – 6 – 46 – 27 ÷ 2 = 0 – 11 – 18 – 23 – 13

ये अगले तीन भाव की दशा हुई ।

1 – 11 – 6 – 46 – 27 ÷ 3 =

वo माo दिo घo पo

= 0 – 7 – 22 – 15 – 29 ये व्यय भाव तक की दशा हुई।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 32, श्लोक 7-8, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

पाचक दशा चक्र

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	भाव
	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	व०
	11	11	11	11	7	7	7	7	7	7	7	7	मा०
	6	18	18	18	22	22	22	22	22	22	22	22	दि०
	46	23	23	23	15	15	15	15	15	15	15	15	घ०
	27	13	13	13	29	29	29	29	29	29	29	29	प०
2042	2044	2045	2046	2047	2048	2048	2049	2049	2050	2051	2051	2052	संवत्
6	7	6	6	6	1	9	5	12	8	4	12	8	रा०
28	5	23	12	0	22	15	7	29	21	24	16	8	अं०
45	22	45	08	33	42	4	20	35	51	6	22	37	क०
35	02	15	28	41	10	39	8	37	6	35	4	33	प्र०वि०
1985	1987	1988	1989	1990	1991	1992	1992	1993	1993	1994	1995	1995	सन्
11	10	10	9	9	5	1	8	4	12	7	3	11	मा०
15	21	10	28	16	9	1	23	15	8	30	23	25	ता०
0	46	9	32	56	11	27	42	58	13	29	4	19	घ०
0	27	40	53	6	35	4	30	2	31	0	29	58	प०

* * *

अध्याय-7

आयुर्दाय

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तर खण्ड, अध्याय 14 श्लोक 1 से 7 तक आयु निर्णय बतलाया गया है। प्रधानतयः इसके 32 भेद हैं। इसमें पिण्ड आयुर्दाय 12 प्रकार का है। अंश आयु, ध्रुवायु, निसर्गायु, रश्मिआयु, स्वरांशांयु, अष्टक वर्गआयु इनके चार–चार भेद हैं। नक्षत्रायु, अंशायु को काल चक्र आयु भी कहते हैं। इसके दो– 2 भेद है। इस प्रकार 32 भेद बताए गए हैं। सभी भेद छः भेद के अन्तर्गत ही आते हैं ।

पिण्डायु साधन विधि : पिण्डायु, ध्रुवायु, रश्मि आयुर्दाय तीनों के वष आदि लाने की रीति सूर्य आदि स्पष्ट ग्रह की कला करके 2400 से भाग देकर शेष में 200 का भाग देना लब्धि वर्ष होते हैं। अब जो शेष रहें उसको पिण्ड आयु में कहें गए ग्रह के ध्रुवांक से गुणा कर 200 का भाग देकर प्राप्त लब्धि अंक वर्ष संख्या में युक्त करें। शेष अंक को 12 से गुणा कर 200 से भाग देने से मासांक मिलेगा। शेषांक को 30 से गुणा कर 200 से भाग देने पर दिनांक प्राप्त होगा। शेषांक को 60 से गुणा कर 200 से भाग देने पर घटी और इसी प्रकार पल प्राप्त करना उस रीति से सूर्य आदि 7 ग्रहों की पिण्ड आयु, ध्रुवायु तथा रश्म्यायु स्पष्ट करना।

पिण्डायु ध्रुवांक : सूर्य – 9, चंद्र–25, मंगल–15, बुद्ध–12, गुरु–15, शुक्र–21, शनि–20 ये ध्रुवांक परमौच्च ग्रह के जानना। परम नीच में अर्द्ध भाग लेना, मध्य में त्रैराशिक से समझना यह शतायु अथवा 120 वर्ष की आयु के लिए कहा गया है।

आयु हरण : "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उतराखण्ड अध्याय–15 श्लोक 8–9 में उक्त आयु योगों में कमी कारक योग बताए हैं। जिसको दो भागों में बाँटा गया है।

(अ) **चक्रार्द्ध हानि :** "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", में 12 से 7 घर तक हारक योग बतलाया है लेकिन ये नहीं बतलाया कि किस भाव में कितनी हानि होगी। यह

हानि हम 'सचित्र ज्योति शिक्षा'[1] से ले रहे हैं ।

भाव	12	11	10	9	8	7
पाप ग्रह हानि	पूरी	$\frac{1}{2}$	$\frac{1}{3}$	$\frac{1}{4}$	$\frac{1}{5}$	$\frac{1}{6}$
शुभ ग्रह हानि	$\frac{1}{2}$	$\frac{1}{4}$	$\frac{1}{6}$	$\frac{1}{8}$	$\frac{1}{10}$	$\frac{1}{12}$

(ब) दूसरी हानि :

शत्रु ग्रह	अस्त में	शुक्र–शनि अस्त में	वक्री शत्रु ग्रह
$\frac{1}{2}$	$\frac{1}{3}$	हानि नहीं	हानि नहीं

नोट : यहाँ नैसर्गिक मैत्री आदि से शत्रु का विचार करना पड़ेगा। आयु स्पष्ट करने में साथ–2 प्रत्येक ग्रह का हानि संस्कार कारण सहित करेगें।

सूर्य पिण्डआयु साधन :

6 – 28 – 45 – 35 सूर्य

$$\begin{array}{r} 6 \\ \times 30 \\ \hline 180 \\ +\ 28 \\ \hline 208 \\ \times 60 \\ \hline 12480 \\ +\ 45 \end{array}$$

$$2400)\overline{12525}(5$$
$$12000$$
$$200)\overline{525}(2 \text{ वर्ष}$$
$$\underline{400}$$

---

1. "सचित्र ज्योतिष शिक्षा", बाबूलाल ठाकुर, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली वाराणसी, पटना, मद्रास पेज–678

125

× 19 ध्रुव पिण्ड

200) 2375(11 शेष

200

375

200

175

× 12

200) 2100(10 मा०

200

100

× 30

200) 3000(15 दि०

3000

×

सूर्य अपने शत्रु के घर शुक्र की राशि में है। अतः $\frac{1}{3}$ हानि होगी।

	वर्ष	मा०	दि०	घ०	प०	
	13	10	15	00	00	÷ 3
–	4	07	15	00	00	
=	9	03	00	00	00	सूर्यपिण्डायु

चन्द्र पिण्ड आयु साधन :

रा०	अं०	क०	वि०
8	0	33	3

× 30

240

60

14400

+ 33

2400) 14433(6

14400

200) 33(0 वर्ष

× 25 पिण्ड

200) 825(4

800

25

× 12

200)300(1 मा०

200

100

× 30

200)3000(15 दि०

200

1000

1000

×

चन्द्र धनु राशि सम क्षेत्र में है अतः कोई हानि नहीं।

वर्ष	मा०	दि०	घ०	प०
4	1	15	00	00

मंगल पिण्ड आयु साधन :

रा०	अं०	क०	वि०
5	17	43	40

× 30

150

+ 17

```
      10020
       + 43
2400) 10063(4
       9600
 200) 463(2 वर्ष
      400
      ---
       63
     × 15 पिण्ड
 200) 945(4
      800
      ---
      145
     × 12
 200) 1740(8 मा०
      1600
      ----
       140
      × 30
 200) 4200(21 दि०
      4200
      ----
        ×
```

मंगल कन्या राशि शत्रु क्षेत्र में हैं अतः $\frac{1}{3}$ हानि होगी।

```
  6 – 8 – 20 – 00 ÷ 3
— 2 – 2 – 27 – 00
-----------------
= 4 – 5 – 24 – 00 मंगल पिण्डायु
```

बुध पिण्ड आयु साधन :

```
रा० – अं० – क० – वि०
7   – 20  – 24  – 32
× 30
```

210
+ 20
230
× 60
13800
+ 24
2400) 13824(5
12000
200) 1824(9 वर्ष
1800
24
× 12 पिण्ड
200) 288(1
200
88
× 12 ध्रुव
200) 3456(17 मा०
200
1456
1400
56
× 30
200) 1680(8 दि०
1600

बुद्ध वृश्चिक राशि मंगल के सम क्षेत्र में है। अतः कोई हानि नहीं।

वर्ष – मा० – दि० – घ०
= 11 – 5 – 8 – 24

80

60

200) 4800(24 घ०

4800

×

गुरु पिण्ड आयु साधन :

रा०	–	अं०	–	क०	–	वि०
9	–	16	–	18	–	45

× 30

270

\+ 16

286

× 60

17160

\+ 18 गुरु मकर राशि शनि सम क्षेत्र में है। अतः कोई हानि नहीं।

2400) 17178(7

16800

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०
=	14	–	4	–	6	–	00

200) 378(1 वर्ष

200

178

× 15 ध्रुव

200) 2670(13 वर्ष

200

```
     670
     600
    -----
      70
    × 12
200)840 (4 मा०
    800
   -----
     40
   × 30
200) 1200(6 दि०
     1200
    ------
      ×
    ------
```

शुक्र पिण्ड आयु साधन :

रा०	–	अं०	–	क०	–	वि०
6	–	12	–	54	–	02

```
    × 30
   ------
     180
    + 12
   ------
     192
    × 60
   ------
   11520
    + 54
2400) 11574(4
     9600
    ------
```

शुक्र स्व क्षेत्र में अस्तंगत है अतः कोई हानि नहीं।

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०	–	प०
=	27	–	3	–	7	–	12	–	00

200) 1974(9

1800

174

× 21 ध्रुव

200) 3654(18 वर्ष

200

1654

1600

54

× 12

200) 648(3 मा०

600

48

× 30

200) 1440(7 दि०

1400

40

× 60

200) 2400(12 घ०

2400

×

शनि पिण्ड आयु साधन :

रा० – अं० – क० – वि०

7 – 6 – 5 – 23

× 30

210

\+ 6

216

× 60

12960

\+ 5

2400) 12965(5

12000

200) 965(4

800

165

× 20 ध्रुव

200) 3300(16

3200

100

× 12

200) 1200(6

1200

×

शनि वृश्चिक राशि मंगल के घर सम क्षेत्र में है। अतः कोई हानि नहीं।

वर्ष – मा० – दि० – घ० – प०

= 20 – 6 – 00 – 00 – 00

पिण्डायु चक्र :

		वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०
1.	सूर्य	9	–	03	–	00	–	00
2.	चन्द्र	4	–	01	–	15	–	00
3.	मंगल	4	–	05	–	24	–	00
4.	बुद्ध	11	–	05	–	08	–	24
5.	गुरु	14	–	04	–	06	–	00
6.	शुक्र	27	–	03	–	07	–	12
7.	शनि	20	–	06	–	00	–	00
		91	–	05	–	00	–	36

ध्रुवायु/ निसर्गायु/स्वाभाविक आयु साधन :-

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तर खण्ड अध्याय–14 श्लोक–6 में ध्रुवायु के ध्रुवांक इस प्रकार है : सूर्य –20,चंद्र–1, मंगल–2, बुद्ध–9, गुरु–18, शुक्र–20, शनि–50। इन ध्रुवों से पिण्डायु रीति से ध्रुवायु गृहण करेगें।

सूर्य ध्रुवायु साधन :

6 – 28 – 45

$$
\begin{array}{r}
6 \\
\times 30 \\
\hline
180 \\
+ 28 \\
\hline
208 \\
\times 60 \\
\hline
12480 \\
+ 45 \\
\hline
\end{array}
$$

2400) 12525(5

12000

200) 525(2

400

125

× 20 ध्रुव

200) 2500(12 वर्ष

2400

100

× 12

200) 1200(6 मा०

1200

×

सूर्य शत्रु क्षेत्र में है अतः $\frac{1}{3}$ हानि

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०
=	14	–	06	–	00	–	00 ÷ 3
—	4	–	10	–	00	–	00
=	9	–	08	–	00	–	00

चन्द्र ध्रुवायु साधन :

8 – 0 – 33

× 30

240

× 60

14400

+ 33

2400) 14433(6

14400

200) 33(0

× 12

चंद्र सम क्षेत्र में है अतः कोई हानि नहीं।

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०
=	0	–	1	–	29	–	24

200) 396(1 मा०

200

96

× 30

200) 5880(29 दि०

400

1880

1800

80

60

200) 4800(24 घ०

4800

×

मंगल ध्रुवायु साधन :

5 – 17 – 43

× 30

150

+ 17

167

× 60

10020

+ 43

2400) 10063(4

9600

210
+ 20
230
× 60
13800
+ 24
2400) 13824(5
12000
200) 1824(9 वर्ष
1800
24
× 9 ध्रुव
200) 216(1 वर्ष
200
16
× 12
200) 192(0 मा०
× 30
200) 5760(28 दि०
5600
60
× 60
200) 9600(48 घ०
9600
×

बुद्ध सम क्षेत्र में हैं अतः कोई हानि नहीं।

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०
=	10	–	0	–	28	–	48

200) 463(2

400

63

× 2 ध्रुव

200) 126(0 वर्ष

× 12

200) 1512(7 मा०

1400

112

× 30

200) 3360(16 दि०

200

1360

1200

160

60

200) 9600(48 घ०

9600

×

मंगल शत्रु क्षेत्र में है अतः $\frac{1}{3}$ हानि

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०
	0	–	7	–	16	–	48 ÷ 3
–	0	–	2	–	15	–	36
=	0	–	5	–	01	–	12

बुद्ध ध्रुवायु साधन :

7 – 20 – 24

× 30

गुरु ध्रुवायु साधन :

9 – 16 – 18

× 30

270

+ 16

286

× 60

17160

+ 18

2400) 17178(7

16800

200) 378(1 वर्ष

200

178

× 18

200)3204(16 वर्ष

3200

4

× 12

200) 48(0 मा०

× 30

200) 1440(7 दि०

1400

गुरु मकर राशि सम मैत्री में है। अतः कोई हानि नहीं।

	वर्ष	मा०	दि०	घ०
=	17	0	7	12

40
× 60
200) 2400(12 घ०
2400
———
×
———

शुक्र ध्रुवायु साधन :

6 – 12 – 54
× 30
———
180
+ 20
———
192
× 60
———
11520
+ 54
———
2400) 11574(4
9600
200) 1974(9 वर्ष
1800
———
174
× 20 ध्रुव
200) 3480(17 वर्ष
3400
———
80
× 12
———

शुक्र स्व क्षेत्र में अस्तंगत् हैं अतः कोई हानि नहीं है।

	वर्ष	मा०	दि०	घ०
=	26	4	24	00

200) 960 (4 मा०

800

160

× 30

200) 4800 (24 दि०

4800

×

शनि ध्रुवायु साधन :

7 – 6 – 5

× 30

210

× 60

12960

+ 5

2400) 12965 (5

12000

200) 965 (4

800

65

× 50 ध्रुव

200) 8250 (41 वर्ष

8200

शनि मंगल शत्रु क्षेत्र में है अतः $\frac{1}{3}$ हानि

	वर्ष		मा०		दि०		घ०
	45	–	3	–	00	–	00 ÷ 3
—	15	–	1	–	00	–	00
=	30	–	2	–	00	–	00

50

× 12

200)600(3 मा०

600

×

ध्रुवायु चक्र :

		वर्ष	मा०	दि०	घ०
1.	सूर्य	9	08	00	00
2.	चन्द्र	0	01	29	24
3.	मंगल	0	05	01	12
4.	बुद्ध	10	00	28	48
5.	गुरु	17	00	07	12
6.	शुक्र	26	04	24	00
7.	शनि	30	02	00	00
		93	11	00	36

रश्म्यायु साधन : रश्म्यायु के उच्च के ध्रुवांक निम्न प्रकार से हैं :–

षोडश विंशतिरेको नवाष्टनवपंचविंशतिः क्रमशः।

षडविंशतिस्तथोच्चे नीचे चार्धं त्विमेऽथ इतरे वा।।[1]

ध्रुवांक : सूर्य – 16, चन्द्र–20, मंगल–1, बुध–9, गुरु–8, शुक्र–9, शनि–25 अथवा –26। ये ध्रुवांक नीच में आया मध्य में अनुपात से जानना। पिण्डायु में स्पष्ट की रीति से आयु अग्रलिखित प्रकार से हैं :–

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड अध्याय 15, श्लोक 7, खेमराज श्रीकृष्ण दास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम प्रैस, मुम्बई ।

सूर्य रश्म्यायु साधन :

6 – 28 – 45 सूर्य

× 30

180

+ 28

208

× 60

12480

+ 45

2400) 12525(5

12000

200) 525(2 वर्ष

400

125

× 16 ध्रुवांक

00) 2000(10 वर्ष

2000

×

सूर्य तुला राशि शत्रु क्षेत्र में है अतः $\frac{1}{3}$ हानि ।

वर्ष –	मा० –	दि० –	घ०
12 –	00 –	00 –	00 ÷ 3
— 4 –	00 –	00 –	00
= 8 –	00 –	00 –	00 सूर्य रश्म्यायु

चन्द्र रश्मयायु साधन :

8 – 00 – 35 चन्द्र

× 30

240

× 60

14400 चन्द्र धनु राशि गुरु के सम क्षेत्र में अतः कोई हानि नहीं।

+ 33 वर्ष – मा० – दि० – घ०

2400)14433(6 = 3 – 3 – 6 – 30

14400

200) 33(0 वर्ष

× 20 ध्रुव

200) 660(3 वर्ष

600

60

× 12

200) 720(3 मा०

600

120

× 30

200)1300(6 दिन

1200

100

× 60

200) 6000(30 घटी

6000

×

मंगल रश्म्यायु साधन :

5 – 17 – 43 मंगल

× 30

150

+ 17

167

× 60

10020

+ 43

2400) 10063(4

9600

200) 463(2 वर्ष

400

63

× 1 ध्रुवांक

200) 63(0 वर्ष

× 12

200) 756(3

600

156

× 30

200) 4680(23

400

680

600

80

× 60

मंगल कन्या राशि शत्रु क्षेत्र में है अतः $\frac{1}{3}$ हानि

वर्ष	मा०	दि०	घ०
2	3	23	24 ÷ 3
— 0	9	7	28
= 1	6	15	56 मंगल रश्म्यायु

200)4800(24

4800

×

बुध रश्म्यायु साधन :

7 – 20 – 24 बुध

× 30

210

+ 20

230

× 60 बुध वृश्चिक राशि सम क्षेत्र में है अतः कोई हानि नहीं है।

13800

+ 24

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०
=	10	–	0	–	23	–	48

2400) 13824(5

12000

200) 1824(9 वर्ष

1800

24

× 9 ध्रुव

200) 216(1 वर्ष

200

16

× 12

200) 192(0 मा०

× 30

200) 5160(2

400

160

× 60

200) 9600(48

9600

×

गुरु रश्म्यायु साधन :

9 – 16 – 18 गुरु

× 30

270

+ 16

286

× 60

17160

+ 18

2400)17178 (7

16800

200) 378(1 वर्ष

200

178

× 8 ध्रुवांक

200) 1424(7 वर्ष

1400

गुरु मकर राशि सम क्षेत्र में है अतः कोई हानि नहीं।

	वर्ष		मा०		दि०		घ०
=	8	–	1	–	13	–	12

24

× 12

200) 288(1 मा०

200

88

× 30

200)2640(13 दि०

200

640

600

40

× 60

200) 2400(12 घ०

2400

×

शुक्र रश्म्यायु साधन :

6 – 12 – 54 शुक्र

× 30

180

+ 12

192

× 60

11520

+ 54

2400) 11574(4

9600

174

× 9 ध्रुवांक

200) 1566(7 वर्ष

1400

166

× 12

200) 1992(9 मा०

1800

192

× 30

200)5760(28 दि०

400

1760

1600

160

× 60

200) 9600(43 घ०

9600

×

शुक्र अपने क्षेत्र में अस्तंगत् कोई हानि नहीं है।

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०
=	14	–	9	–	28	–	43

शनि रश्म्यायु साधन :

7 – 6 – 5 शनि

× 30

```
      210
     + 6
    -----
      216
    × 60
    -------
    12960
       + 5
2400) 12965(5
      12000
  200) 965(4 वर्ष
       800
      -----
       165
   × 25 ध्रुवांक
 200) 4125(20 वर्ष
       400
      -----
       125
     × 12
 200) 1500(7
      1400
     ------
      100
     × 30
200) 3000(15
     3000
    ------
      ×
    ------
```

शनि वृश्चिक राशि शत्रु क्षेत्र में है अतः $\frac{1}{3}$ हानि।

	वर्ष		मा०		दि०		घ०
	24	–	7	–	15	–	00 ÷ 3
—	8	–	2	–	25	–	00
=	16	–	4	–	20	–	00 शनि रश्म्यायु

रश्म्यायु साधन चक्र :

		वर्ष	मा०	दि०	घ०
1.	सूर्य	8	00	00	00
2.	चन्द्र	3	3	6	30
3.	मंगल	1	6	15	56
4.	बुद्ध	10	00	23	48
5.	गुरु	8	1	13	12
6.	शुक्र	14	9	28	43
7.	शनि	16	4	20	00
		64	2	18	9 कुल रश्म्यायु

नवांशायु :

सूर्यादिगुणिताच्छेषाद्वृद्धिं कुर्याद्यथोत्तरम्।
स्वोच्चहीनं ग्रहं ज्ञात्वा कर्कादि च मृगादि च।।
गृहीत्वा तु भुजं कोटिं कृत्वा लिप्तीकृतं तु तम्।
हत्वा नवांशदायेन भजेदभत्रयलिप्तिभिः।।
वत्सराद्य भवंत्येते वर्जयेन्मकादिके।
केन्द्रे नवमांशदाये स्वे त्रिघ्ने कर्कटकादिके।।[1]

नवांशयु साधन विधि : शुक्रादि ग्रहों को स्वोच्चहीन करना, भुज करना कोटि करना जो शेष बचे उसकी कला करना। नवांश के ध्रुवांक से गुणा करना । 5400 का भाग देना।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड अध्याय 14 श्लोक 9 से 11, खेमराज श्रीकृष्ण दास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रैस, मुम्बई ।

जो लब्धि हो वह वर्ष संख्या होगी। शेष को 12 से गुणा कर 5400 का भाग देना तो लब्धि मास होगी। शेष को 30 से गुणा कर 5400 का भाग देना तो लब्धि दिन होगी। शेष को 60 से गुणा कर 5400 का भाग देना तो लब्धि घटी होगी। शेष को 60 से गुणा कर 5400 का भाग देना तो लब्धि पल होगें। अब जो प्राप्त हुआ वर्ष, मास, दिन, घटी, पल इसको ग्रह यदि मकर आदि 6 राशियों में हो तो ध्रुवांक को 3 गुणा करके वर्ष संख्या में घटाना और कर्कादि केन्द्र हो तो ध्रुवांक का आधा कर वर्ष संख्या में जोड़ना तो नवांश आयु होगी।

विशेष : उपरोक्त विधि में केन्द्र, भुज तथा कोटि का उल्लेख है लेकिन ये नहीं बताया गया है कि ये क्या है सो ये आर्युनिर्णय[1] अनुसार निम्न प्रकार से हैं :–

1. **केन्द्र :** स्पष्ट ग्रह में से उसकी उच्च घटाने से जो बचे उसकी केन्द्र संज्ञा होती है। यह केन्द्र दो प्रकार का होता है। एक कर्कादि दूसरा मकरादि जो निम्न प्रकार से है।

क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	कर्कादि केन्द्र
म०	कु०	मी०	मे०	वृ०	मि०	मकरादि केन्द्र

2. **भुज :** सायण ग्रह यदि 3 राशि से अधिक हो तो 6 राशि में घटाने से, 6 राशि से अधिक हो तो 9 राशि में घटाने से, 9 राशि से अधिक हो तो 12 राशि में घटाने से भुज प्राप्त होता है।

3. **कोटि :** भुज को 3 राशि में घटाने से कोटि होती है। यह भी 90^0 से कम होती है।

4. **ध्रुवांक :** ये ध्रुवांक इस प्रकार है : सू०–5, चं०–21, मं०–7, बु०–9, गु०–10, शु०–16, शनि–4, ध्रुवांक है।

---

1. "आयुनिर्णय", आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ पर्वतीय, रंजन पब्लिकेशन, दिल्ली, पेज 334 ।

जो लब्धि हो वह वर्ष संख्या होगी। शेष को 12 से गुणा कर 5400 का भाग देना तो लब्धि मास होगी। शेष को 30 से गुणा कर 5400 का भाग देना तो लब्धि दिन होगी। शेष को 60 से गुणा कर 5400 का भाग देना तो लब्धि घटी होगी। शेष को 60 से गुणा कर 5400 का भाग देना तो लब्धि पल होगें। अब जो प्राप्त हुआ वर्ष, मास, दिन, घटी, पल इसको ग्रह यदि मकर आदि 6 राशियों में हो तो ध्रुवांक को 3 गुणा करके वर्ष संख्या में घटाना और कर्कादि केन्द्र हो तो ध्रुवांक का आधा कर वर्ष संख्या में जोड़ना तो नवांश आयु होगी।

विशेष : उपरोक्त विधि में केन्द्र, भुज तथा कोटि का उल्लेख है लेकिन ये नहीं बताया गया है कि ये क्या है सो ये आर्युनिर्णय[1] अनुसार निम्न प्रकार से हैं :–

1. **केन्द्र :** स्पष्ट ग्रह में से उसकी उच्च घटाने से जो बचे उसकी केन्द्र संज्ञा होती है। यह केन्द्र दो प्रकार का होता है। एक कर्कादि दूसरा मकरादि जो निम्न प्रकार से है।

क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	कर्कादि केन्द्र
म०	कु०	मी०	मे०	वृ०	मि०	मकरादि केन्द्र

2. **भुज :** सायण ग्रह यदि 3 राशि से अधिक हो तो 6 राशि में घटाने से, 6 राशि से अधिक हो तो 9 राशि में घटाने से, 9 राशि से अधिक हो तो 12 राशि में घटाने से भुज प्राप्त होता है।

3. **कोटि :** भुज को 3 राशि में घटाने से कोटि होती है। यह भी 90^0 से कम होती है।

4. **ध्रुवांक :** ये ध्रुवांक इस प्रकार है : सू०–5, चं०–21, मं०–7, बु०–9, गु०–10, शु०–16, शनि–4, ध्रुवांक है।

---

1. "आयुनिर्णय", आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ पर्वतीय, रंजन पब्लिकेशन, दिल्ली, पेज 334 ।

सूर्य नवांशायु साधन :

	रा०	अ०	क०	
	6	28	45	सूर्य
−	0	10	00	सूर्य उच्च
	6	18	45	केन्द्र कर्कादि है
+		24	23	अयनांश
	7	13	08	सायण ग्रह
	9	00	00	
−	7	13	8	
	1	16	52	भुज
	3	00	00	
	1	16	52	
	1	13	08	कोटि

× 30

30

+ 13

43

× 60

2580

+ 8

		व०	मा०	दि०	घ०
2588 कोटि अंश	=	2	4	22	40

× 5 ध्रुवांक

5400)12940(2 वर्ष

10800

अब केन्द्र कर्कादि है तो ध्रुवांक का $\frac{1}{2}$ जोड़ेगें ।

2140 × 12

5400) 25680 (4 मा०
21600
4080
× 30

5400) 122400 (22 दि०
10800
14400
10800
3600
× 60

5400) 216000 (40 घ०
216000
0

व० – मा०

$5 \div \frac{1}{2}$ = 2 – 6 ध्रुवांक का आधा

	2 –	4 –	22 –	40
+	2 –	6		
	4 –	10 –	22 –	40

अब सूर्य तुला राशि शत्रु के क्षेत्र में अतः $\frac{1}{3}$ हानि होगी।

	4 –	10 –	22 –	40 ÷ 3	
–	1 –	7 –	17 –	20	
=	3 –	3 –	05 –	40	सूर्य नवांशायु

चन्द्र नवांशायु साधन :

	8 –	0 –	33	चन्द्र
–	1 –	3		
	6 –	27 –	33	केन्द्र कर्कादि
+		24 –	23	अयनांश
	7 –	21 –	56	सायण ग्रह
	9 –	00 –	00	
–	7 –	21 –	56	
	1 –	08 –	04	भुज

3 – 00 – 00
1 – 8 – 04

1 – 21 – 56 कोटि

× 30

30
+ 21

51
× 60

3060
+ 56

3116

	व०	मा०	दि०	घ०
=	12	1	12	24

× 21 ध्रुवांक

5400) 65436 (12 वर्ष
5400

11436
10800

636
× 12

5400) 7362 (1 मा०
5400

2232
× 30

5400) 66960 (12 दि०
5400

अब केन्द्र कर्कादि है तो ध्रुवांक का $\frac{1}{2}$ जोड़गें।

	व०	मा०
21÷2 =	10	6 ध्रुवांक

	12	1	12	24
+	10	6		
	22	7	12	24

चन्द्र गुरु के सम क्षेत्र में अतः कोई हानि नहीं।

$$
\begin{array}{r}
12960 \\
10800 \\
\hline
2160 \\
\times 60
\end{array}
$$

5400) 129600 (24 घ०

$$
\begin{array}{r}
129600 \\
\hline
\times
\end{array}
$$

मंगल नवांशायु साधन :

	5	–	17	–	43	मंगल
–	9	–	28			मंगल उच्च
	7	–	19	–	43	केन्द्र कर्कादि
+			24	–	23	अयनांश
	8	–	14	–	06	सायण ग्रह
	9	–	00	–	00	
–	8	–	14	–	6	
	0	–	15	–	54	भुज
	3	–	00	–	00	
–	0	–	15	–	54	
	2	–	14	–	06	कोटि

$$
\begin{array}{r}
\times 30 \\
\hline
60 \\
+ 14 \\
\hline
74 \\
\times 60 \\
\hline
\end{array}
$$

4440

+ 6

4446

× 7 ध्रुवांक

5400) 31122 (5 वर्ष

27000

4122

× 12

5400) 49464 (4 मा०

48600

864

× 30

5400) 25920 (4 दि०

21600

4320

× 60

5400) 259200 (48 घ०

259200

×

व० – मा० – दि० – घ०

= 5 – 9 – 4 – 48

अब केन्द्र कर्कादि है तो ध्रुवांक का $\frac{1}{2}$ जोड़गें

व० – मा०

$5 \div \frac{1}{2}$ = 3 – 6 ध्रुव का आधा

5 – 9 – 4 – 48

+ 3 – 6

9 – 3 – 4 – 48

अतः मंगल कन्या राशि शत्रु के क्षेत्र में अतः $\frac{1}{3}$ हानि होगी।

9 – 3 – 4 – 48 ÷ 3

= – 3 – 1 – 1 – 36

6 – 2 – 3 – 12 नवांशायु मंगल

बुध नवांशायु साधन :

7 – 20 – 24 बुध

– 5 – 15 (उच्च)

	2	–	05	–	24	केन्द्र मकरादि
+			24	–	23	अयनांश
	2	–	29	–	47	सायण ग्रह/भुज यही रहा

	3	–	00	–	00	
–	2	–	29	–	47	
	1	–	00	–	13	भुज

× 30

30

+ 00

30

× 60

1800

+ 13

1813

× 9 ध्रुवांक

5400) 16317 (3 वर्ष

16200

117

× 12

5400) 1404 (0 मा०

× 30

5400) 42120 (7 दि०

37800

=	3	–	0	–	7	–	48

केन्द्र मकरादि होने से ध्रुव × 3 – आयु ।

=	27	–	00	–	00	–	00
–	3	–	0	–	7	–	48
=	25	–	29	–	52	–	12

बुध वृश्चिक राशि सम क्षेत्र में है अतः कोई हानि नहीं है।

4320

× 60

5400) 259200 (48 घ०

259200

×

गुरु नवांशायु साधन :

	9	–	16	–	18	गुरु
–	3	–	5			उच्च गुरु
	6	–	11	–	18	केन्द्र कर्कादि
+			24	–	23	अयनांश
	7	–	05	–	41	सायण ग्रह

	9	–	00	–	00
–	7	–	5	–	41
	1	–	24	–	19 भुज

3	–	00	–	00	
1	–	24	–	19	
1	–	05	–	41	कोटि

× 30

30

+ 5

35

× 60

2100

+ 41   व० – मा० – दि० – घ० – प०

2141 = 3 – 11 – 18 – 26 – 40

× 10 ध्रुवांक

5400) 21410 (3 वर्ष   केन्द्र कर्कादि है तो ध्रुवांक का $\frac{1}{2}$ जोड़गें ।

16200

5210 $10 \div \frac{1}{2} = 5$ ध्रुव का आधा

× 12

5400) 62520 (11 मा०

59400

3320

× 30

	व०	मा०	दि०	घ०	प०
	3	11	18	26	40
+	5				
	8	11	18	26	40

5400) 99600 (18 दि०   गुरु मकर राशि सम क्षेत्र में है। अतः कोई हानि नहीं।

97200

2400

× 60

5400)144000(26 घ०

140400

3600

× 60

5400) 216000 (40 प०

216000

×

```
  272                          16 ÷ 2  =  8   ध्रुव का आधा
  × 12                         8  –  0  –  18  –  8
5400) 3264 (0 मा०          +   8
  × 30                         ―――――――――――――――――――
5400) 97920 (18 दि०            16  –  0  –  18  –  8
  97200                          शुक्र स्वक्षेत्र में है अतः कोई हानि नहीं।
  ―――――
   720
  × 60
5400) 43200(8 घ०
  43200
  ―――――
    ×
```

शनि नवांशायु साधन :

```
    7  –  6  –  5    शनि
–   6  –  20         (उच्च)
  ―――――――――――――
    0  –  16  –  5   केन्द्र मकरादि/भुज यही रहा

    3  –  00  –  00
–   0  –  16  –  5
  ―――――――――――――――
    2  –  13  –  55  कोटि
  × 30
  ――――
   60
  + 13
  ――――
   73
  × 60
  ――――
```

शुक्र नवांशायु साधन :

	6	–	12	–	54	शुक्र
–	11	–	27			उच्च शुक्र
	6	–	15	–	54	केन्द्र कर्कादि
+			24	–	23	अयनांश
	7	–	10	–	17	सायण ग्रह
	9	–	00	–	00	
–	7	–	10	–	17	
	1	–	19	–	43	भुज
	3	–	00	–	00	
–	1	–	19	–	43	
	1	–	10	–	17	कोटि

× 30

30

+ 10

40

× 60

2400

+ 17

2417   = व० – मा० – दि० – घ० = 8 – 0 – 18 – 8

× 16 ध्रुवांक

5400)43472(8 वर्ष   केन्द्र कर्कादि है तो ध्रुवांक का $\frac{1}{2}$ जोड़ेगें ।

43200

4380

+ 55

4435

× 4 ध्रुवांक

5400) 17740 (3 वर्ष

16200

1540

× 12

5400) 18480 (3 मा०

16200

2280

× 30

5400) 68400 (12 दि०

5400

14400

10800

3600

× 60

5400) 216000 (40 घ०

216000

×

	व०	मा०	दि०	घ०
=	3	0	7	48

केन्द्र मकरादि होने से ध्रुव × 3 – आयु

	12	00	00	00
—	3	3	12	40
=	8	8	07	20

शनि वृश्चिक राशि शत्रु के क्षेत्र में अतः $\frac{1}{3}$ हानि होगी।

	8	8	07	20÷3
–	2	10	22	26
=	5	9	14	54 शनि नवांशायु

नवांशायु चक्र :

		वर्ष	मा०	दि०	घ०	प०
1.	सूर्य =	3	03	05	40	00
2.	चन्द्र =	22	7	12	24	00
3.	मंगल =	6	1	1	36	00
4.	बुद्ध =	25	29	52	12	00
5.	गुरु =	8	11	18	26	40
6.	शुक्र =	16	0	18	08	00
7.	शनि =	5	9	14	54	00
		89	04	00	50	40

नक्षत्रायु :

रवींद्वराहिजीवार्किबुधकेतुसिताः क्रमात्।
आग्नेयाद्भगणेशाः स्युः स्वामिनो वत्सराः क्रमात्।।
षडाशाः सप्त धृतयो नृपो एकोनविशंतिः।
अत्यष्टिः सप्त च नख उच्चे नीचेऽर्धमुच्यते।।
अस्मिस्तु हरणं तस्मात्पूर्वस्मिस्तु द्वयं हितम्।
अनयोः पापदायादावंते स्युरपमृत्यवः।।[1]

नक्षत्रायु प्रकार : कृतिका के 3 बार आवृति करने से सूयादि ग्रहों के नक्षत्र होते हैं ग्रहों के वर्ष, सूर्य–6, चन्द्र–10, मंगल–7, राहू–18, गुरु–16, शनि–19, बुध–17, केतु–7, शुक्र–20 ये ध्रुव परमोच्च के है। नीच में पूर्वोक्त ध्रुवों का आधा लेना। बीच में त्रैराशिक से समझना।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड अध्याय 14, श्लोक 17 से 19, खेमराज श्री कृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रैस बुम्बई।

पाप ग्रहों की आयु में आदि या अन्त में अपमृत्यु होती है। शुभ ग्रहों की आयुर्दाय शुभ फल कारक है।

सू०-6	चं०-10	मं०-7	रा०-18	गु०-16	श०-19	बु०-17	के०-7	शु०-20
कृतिका	रोहणी	मृगशिरा	आद्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पू०फा०
उ०फा०	हस्त	चित्र	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	जेष्ठा	मूला	पू०षा०
उ०षा०	श्रावण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भा०	उ०भा०	रेंवती	अश्विनी	भरणी

उपरोक्त तालिका में ग्रहों के नक्षत्र दिये हैं। इन नक्षत्रों में जन्म होगा तो उस ग्रह की ही दशा होगी। नक्षत्रायु में विधि नहीं दी गई है। "आयुनिर्णिय ग्रन्थ"[1] में इसे पिण्डायु की तरह निकालना बतलाया है। अतः पिण्डायु की तरह से ही इस आयु का साधन करेंगे। इसमें में विंशोतरी दशा वाला क्रम ही ग्राह्य है तथा गुणक भी विंशोतरी दशा मान के ही हैं। मानक उदाहरण में मूला नक्षत्र का जन्म है जोकि केतु के अन्तर्गत आता है। अतः यहीं से ही आयु का ग्रहण करेंगे।

केतु नक्षत्रायु साधन :

6 – 14 – 39 – 51 केतु

$$\begin{array}{r} 6 \\ \times 30 \\ \hline 180 \\ +14 \\ \hline 194 \\ \times 60 \\ \hline 11640 \\ +39 \\ \hline 11679 \end{array}$$

1. "आयुनिर्णय", आचार्य मुकुन्द देवज्ञ, 'पर्वतीय' पेज 332, रंजन पब्लिकेशन, दिल्ली ।

2400)11679 (4

9600

200) 2079 (10 वर्ष

200

79

× 7 ध्रुव

200)533 (2 वर्ष

400

133

× 12

200) 1596 (7 मा०

1400

196

× 30

200) 5880(29 दि०

400

1880

1800

80

× 60

200) 4800(24 घ०

4800

×

	व०	–	मा०	–	दि०	–	घ०
=	12	–	7	–	29	–	24

शुक्र नक्षत्रायु साधन :

6 – 12 – 24 शुक्र

× 30

180

+ 12

192

× 60

11520

+ 24

11544

2400) 11544 (4

9600

200) 1944 (9 वर्ष

1800

144

× 20 ध्रुव

200) 2880 (14 वर्ष

200

880

800

80

× 12

200) 960 (4 मा०

800

शुक्र स्वक्षेत्री है अतः कोई हानि नहीं।

	व०		मा०		दि०		घ०
=	23	–	4	–	24	–	00 शुक्र नक्षत्रायु

160
× 30
200) 4800(24 दि०
4800
×

सूर्य नक्षत्रायु साधन :

6 – 28 – 45 सूर्य
× 30
180
+ 28
208
× 60
12480
+ 45
12525
2400) 12525 (5
12000
200) 525 (2 वर्ष
400
125
× 6 ध्रुव
200) 750 (3 वर्ष
600
150
× 12

सूर्य तुला राशि शत्रु क्षेत्र में है अतः $\frac{1}{3}$ हानि

व०	मा०	दि०	घ०
5	9	00	00 ÷ 3
– 1	11		
= 3	10	00	00 सूर्य नक्षत्रायु

200) 1800 (9 दि०

1800

×

चन्द्र नक्षत्रायु साधन :

8 – 00 – 33 चन्द्र

× 30

240

× 60

14400

+ 33

14433

2400) 14433 (6

14400

चन्द्र धनु राशि सम क्षेत्र में अतः कोई हानि नहीं।

200) 33 (0 वर्ष

× 12 ध्रुव

	व०		मा०		दि०		घ०	
=	1	–	7	–	24	–	00	चंद्र नक्षत्रायु

200)330 (1 वर्ष

200

130

× 12

200)1560 (7 मा०

1400

160

× 30

200)$\overline{4800}$(24 दि०

4800

×

मंगल नक्षत्रायु साधन :

5 – 17 – 43 मंगल

× 30

150

\+ 17

167

× 60

10020

\+ 43

10063

2400)$\overline{10063}$(4

9600

200)$\overline{463}$(2 वर्ष

400

63

× 7 ध्रुव

200)$\overline{441}$(2 वर्ष

400

41

× 12

मंगल कन्या राशि शत्रु क्षेत्र में है अतः $\frac{1}{3}$ हानि ।

व० – मा० – दि० – घ०

4 – 2 – 13 – 48 ÷ 3

– 1 – 4 – 24 – 36

= 2 – 9 – 19 – 12 मंगल नक्षत्रायु

200) 492 (2 मा०

400

92

× 30

200) 2760(13 दि०

200

760

600

160

× 60

200) 9600(48 घ०

800

1600

1600

×

राहू नक्षत्रायु साधन :

0 – 14 – 39 राहू

14

× 60

840

+ 39

2400) 879 (0

200) 879 (4 वर्ष

800

	व०	–	मा०	–	दि०	–	घ०
=	11	–	1	–	9	–	36 राहू नक्षत्रायु

79

× 18 ध्रुव

200) 1422 (7 वर्ष

1400

22

× 12

200) 264 (1 मा०

200

64

× 30

200) 1920(9 दि०

1800

120

× 60

200) 7200(36 घ०

600

1200

1200

×

गुरु नक्षत्रायु साधन :

9 – 16 – 18 गुरु

× 30

270

+ 16

286
× 60
17160
+ 18
17178

2400) 17178 (7
16800

200) 378 (1 वर्ष
200
178
× 16 ध्रुव

200) 2848 (14 वर्ष
200
848
800
48
× 12

200) 576 (2 मा०
400
176
× 30

200) 5280(26 दि०
400
1280
1200

गुरु मकर राशि सम क्षेत्र में अतः कोई हानि नहीं है।

	व०	–	मा०	–	दि०	–	घ०
=	15	–	2	–	26	–	24 गुरु नक्षत्रायु

80

× 60

200) 4800 (24 घ०

4800

×

शनि नक्षत्रायु साधन :

7 – 6 – 5 शनि

× 30

210

+ 6

216

× 60

12960

+ 5

12965

2400) 12965 (5

12000

200) 965 (4 वर्ष

800

165

× 19 ध्रुव

200) 3135 (15 वर्ष

200

1135

1000

शनि वृश्चिक राशि शत्रु क्षेत्र में है अतः $\frac{1}{3}$ हानि।

	व०	मा०	दि०	घ०	प०
	19 –	8 –	3 –	00 –	00 ÷ 3
–	6 –	6 –	21		
=	13 –	1 –	12 –	00 –	00 मंगल नक्षत्रायु

135

× 12

200) 1620 (8 मा०

1600

20

× 30

200) 600(3 दि०

600

×

बुध नक्षत्रायु साधन :

7 – 20 – 24 बुध

× 30

210

+ 20

230

× 60

13800

+ 24

13824

2400) 13824 (5

12000

200) 1824 (9 वर्ष

1800

24

× 17 ध्रुव

200) 408 (2 वर्ष

400

8

× 12

200) 96 (0 मा०

× 30

200) 2880(14 दि०

200

880

800

80

× 60

200) 4800(24 घ०

4800

×

बुध वृश्चिक राशि सम क्षेत्र में अतः कोई हानि नहीं है।

	व०	मा०	दि०	घ०	प०	
=	11	0	14	24	00	बुध नक्षत्रायु

नक्षत्रायु चक्र :		वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०	
1.	केतु =	12	–	7	–	29	–	24	
2.	शुक्र =	23	–	4	–	24	–	00	
3.	सूर्य =	3	–	10	–	00	–	00	
4.	चन्द्र =	1	–	7	–	24	–	00	
5.	मंगल =	2	–	9	–	19	–	12	
6.	राहू =	11	–	1	–	9	–	36	
7.	गुरु =	15	–	2	–	26	–	24	
8.	शनि =	13	–	1	–	12	–	00	
9.	बुध =	11	–	0	–	14	–	24	
		94	–	10	–	05	–	00	नक्षत्रायु

अंशायु : "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", मूल ग्रन्थ में पेज 59 पर केवल अंशायु का नाम दिया है। कहीं श्लोक या साधन नहीं दिया है। लेकिन बृहत्पाराशर–होराशास्त्र देवचन्द का वाली पुस्तक में अंशायु निम्न प्रकार से दी है।

अंशायुरधुना वच्मि सलग्नद्युषदां मुने ! ।
ग्रहोंऽशभसमान्येव हायनानि ददाति वै।।
भादिकं खेचरं हन्यान्नागाभ्रशशिभिस्तु यत्।
भगणादिं, तष्टमर्कैस्तदाब्दादिस्फुटं मतम्।।
पिण्डायुषि यथा ह्रासस्तथाऽत्रापि बुधैः स्मृता।
केचिद् वदन्ति विबुधा विशेषमपरं त्विह।।
ग्रह स्वोभोच्चे त्रिगुणं स्वनवांशे तथोत्तमे।
द्विगुणं, स्वदृकाणेऽपि, साधितायुः स्फुटं तदा।।

द्वयोर्यत्र गतः खेटस्तत्रापि त्रिगुणं मतम् ।

हासद्वयेऽधिको ग्राह्यस्तदायुः स्पष्टमीरितम्।।

इत्थं चेतरजन्तूनां हत्वा तत्परामायुषा।

भजेत् परायुषो नृणां तदायुः स्पष्टमीरितम्।।[1]

हे मुने ! अब में लग्न तथा ग्रहों का अंशायुर्दाय बतलाता हूँ। ग्रह राशि–नवांश तुल्य वर्ष देते हैं अर्थात् ग्रह जितनी राशि के नवांश पर रहते उतने वर्ष उनका आयुर्दाय होता है। राश्यादि ग्रह को 108 से गुणा कर, सवर्ण के द्वारा भगणादि बनावें, बारह से अधिक रहने पर 12 से तष्टित करें तो शेष भगणादि तुल्य वर्षादि इस ग्रह का स्पष्ट आयुर्दाय समझना पिण्डायु साधन में जैसा ह्रास कहा गया है वैसा ही अंशायुर्दाय में भी करना चाहिए जैसे : अस्तंगत में आधा, शत्रुगृह में तृतीयांश आदि कहा गया है। अंशायुर्दाय में कतिपय विद्वानों ने विशेष संस्कार कहा है – जैसे कि ग्रह स्वोच्च या स्वस्थान हो तो उसकी आगत आयु को त्रिगुणित स्वनवांश या स्वद्रेष्काण में हो तो आयु को द्विगुण करने पर वास्तविक आयु होती है। यदि दोनों स्थिति प्राप्त हों अर्थात् एक ही ग्रह स्वोच्चस्थ तथा स्वनंवाशंस्थ है तो त्रिगुणित मात्र करना चाहिये। इसी प्रकार आधा, तृतीयांश दोनों ह्रास प्राप्त हो तो अधिक ह्रास अर्थात् आधे को ग्रहण करें।

विधि : ग्रह × 108 लब्धांक का सवर्ण कर राशि अंक को 12 से भाग दें, फिर 12 से भाग दें तो वर्ष मास दिनादि प्राप्त होते हैं।

सूर्य अंशायु साधन :

6 –	28 –	45 –	35 × 108	
648 –	3024–	4860–	3780	सवर्ण किया

---

1. "बृहत्पाशर–होराशास्त्र", पं० देवचन्द्र झा, अध्याय 44, श्लोक 18 से 23, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

व० – मा० – दि० – घ० – प०

5 – 2 – 4 – 27 – 3 ÷ 3 सूर्य अपने शत्रु के क्षेत्र में है अतः $\frac{1}{3}$ हानि।

=– 1 – 8 – 21 – 25 – 41

3 – 3 – 13 – 01 – 22

अब सूर्य नवमांश व द्रेष्काण में अपने घर का या उच्च का नहीं है अतः आयु की वृद्धि नहीं होगी।

चन्द्र अंशायु साधन :

8 – 0 – 33 – 03 × 108

864 – 0 –3564 –324 सवर्ण किया

= 6 – 1 – 29 – 24

चन्द्र गुरु में सम क्षेत्र में है अतः कोई हानि नहीं लग्न, द्रेष्काण नवांश में भी को वृद्धि योग नहीं।

मंगल अंशायु साधन :

5 – 17 – 43 – 40 × 108

540 –1836 –4644 –4320 सवर्ण किया

व० – मा० –दि० –घ० – प०

= 4 – 5 – 24 – 36 – 00 ÷ 3 मंगल कन्या राशि शत्रु के क्षेत्र में है अतः $\frac{1}{3}$ हानि।

– 1 – 5 – 28 – 12 – 00

2 – 9 – 26 – 24 – 00 × 3 अब मंगल द्रेष्काण में उच्च का है अतः 3 गुणा वृद्धि।

= 8 – 15 – 19 – 12 – 00 अंशायु

बुध अंशायु साधन :

7 – 20 – 2432 × 108

756 – 2160 – 2592 – 3456 सवर्ण किया

= 5 – 10 – 14 – 9 – 36

बुध वृश्चिक राशि सम क्षेत्र में कोई हानि नहीं।

लग्न, द्रेष्काण, नवमांश में कोई वृद्धि योग नहीं।

गुरु अंशायु साधन :

9 – 16 – 18 – 45 × 108

972 – 1728 – 1944 – 4860 सवर्ण किया

= 7 – 11 – 21 – 45 – 00 गुरु शनि के सम क्षेत्र में है अतः कोई हानि नहीं, लग्न, द्रेष्काण, नवमांश में कोई वृद्धि योग नहीं।

शुक्र अंशायु साधन :

6 – 12 – 54 – 02× 108

648 – 1296 – 5832 – 216 सवर्ण किया

व० – मा० – दि० – घ० – प०

5 – 7 – 13 – 15 – 36 × 3 शुक्र लग्न में स्वक्षेत्र का है तो आयु × 3 वृद्धि।

= 16 – 10 – 9 – 46 – 48 शुक्र नवांशायु

शनि अंशायु साधन :

7 – 6 – 5 – 23 × 108

756 – 648 – 540 – 2484 सवर्ण किया

व० – मा० – दि० – घ० – प०

= 4 – 1 – 27 – 41 – 24 ÷ 3 शनि वृश्चिक राशि शत्रु के क्षेत्र में है अतः $\frac{1}{3}$ हानि।

=–1 – 4 – 19 – 13 – 48 वृद्धि योग नहीं है

2 – 9 – 08 – 26 – 36 शनि नवांशायु

राहू अंशायु साधन :

9 – 14 – 39 – 51 × 108

1512 – 4212 – 5508 सवर्ण किया

= 4 – 4 – 23 – 43 – 48 राहू की कोई हानि वृद्धि नहीं।

केतू अंशायु साधन :

6 – 14 – 39 – 51 × 108

648 – 1512 – 4212 – 5508 सवर्ण किया

= 5 – 2 – 23 – 43 – 48 केतु की कोई हानि वृद्धि नहीं।

लग्न अंशायु साधन :

4 – 26 – 6 – 39 × 108

432 – 2808– 648 – 4212 सवर्ण किया

= 4 – 4 – 29 – 58 – 12 लग्न की कोई हानि वृद्धि नहीं।

अंशायु चक्र :

		वर्ष	मा०	दि०	घ०	प०
1.	सूर्य =	3	3	13	01	22
2.	चन्द्र =	6	1	29	29	24
3.	मंगल =	8	5	19	12	00
4.	बुध =	5	10	14	9	36
5.	गुरु =	7	11	21	45	00
6.	शुक्र =	16	10	9	46	48
7.	शनि =	2	9	08	26	36
8.	राहू =	4	4	23	43	48
9.	केतु =	5	2	23	43	48
10.	लग्न =	4	4	29	58	12
		65	5	13	16	34 अंशायु

भावायु :

द्वात्रिंशद्भेदभिन्नोयमायुषो निर्णयः कृतः।
लोकयात्रापरिज्ञानहेतैव दायनिर्णयः।।
भावानां संप्रवक्ष्यामि शृणुष्व मुनिपुंगव।
आयुश्च परमं हत्वा स्वेन स्वेन बलेन च।।
विभजेद्दलयोगेन भावानां दाय एव सः।
अथ वांशर्क्षदायेन वर्गेशानां बलेन तु।।
स्थानाद्यश्च समुद्भूतः षड्विधो दाय उच्यते।।[1]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 14, श्लोक, 20 से 24 , खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेशर स्टीम प्रैस, मुम्बई।

यहां भगवान पाराशर कहते हैं :–

हे मैत्रेय ! मैंने लोक के सुख–दुःख को जानने के लिए 7 भेद से युक्त आयु का निर्णय कहा। इन 7 प्रकारों के बाद आठवां भावों का आयुर्दाय कहता हूँ। पूर्वोतम सात प्रकार के आयुर्दाय में से किसी एक लेकर से अपने–अपने भाव बल से गुणाकर । भाव बल समूह से भाग देने से जो लब्धि हो वही आयुर्दाय होती है। पुनः प्रकारांतर से नवमांशायुदार्य से परमायुष्य को गुणा कर षड्वर्गपतियों के बल से भाग देने से वर्षादि भावायुर्दाय होता है। इस प्रकार से भाव, नक्षत्र, नवांश, अष्टकवर्ग, अंश और पैण्डायु ये 6 प्रकार के आयुर्दाय भेद कहे है।

उपरोक्त में दो प्रकार का आयुष्य कहा है :–

1. पहले जो सात प्रकार के आयुर्दाय में से किसी एक को लेकर अपने–अपने भावबल गुणा कर भावबल समूह से भाग देना, लब्धि आयुर्दाय होता है।
2. नवमांशार्युदाय से परमायुष्य अर्थात 108 या 120 वर्ष से गुणा कर षडवर्ग पतियों के बल से भाग देने से वर्षादि भावायुदार्य होता है। लेकिन यह विधि किसी भी तरीके से निकालने पर ठीक नहीं बैठ रही है।

विधि :

$$\frac{\text{प्रथम प्रकार आयु} \times \text{भाव बल}}{\text{भावबल समूह (5185)}} = \text{आयुर्दाय}$$

तन भावायु साधन :

91 – 05 – 00 – 36 पिण्डायु

× 365 तन भाव बल

5185) 32215 – 180 – 00 – 13140 (6 वर्ष

31110

1105

× 12

13260

+ 180

5185) 13440(2 मास

10370

3070

× 30

5185) 92100(17 दिन

88145

3955

× 60

277300

× 13140

5185) 290440(56 घ०

290360

080

सूर्य शत्रु क्षेत्र मे है अतः $\frac{1}{3}$ हानि

वर्ष	मा०	दि०	घ०
6	2	17	56 ÷ 3
— 2	0	25	58
= 3	1	21	58 तनभावायु

धन भावायु साधन :

91 – 05 – 00 – 36 पिण्डायु

× 495 द्वितीय भाव बल

5185) 45045 – 2475 – 00 – 17820(8 वर्ष

41480

3565

× 12

42780

+ 2475

5185) 45255 (8 मास

41480

3775

× 30

5185) 113250 (21 दिन

108885

4365

× 60

261900

+ 17820

5185) 279720 (53 घ०

274805

4915

× 60

5185) 294900 (56 पल

290360

4540

धनेश वृश्चिक राशि सम क्षेत्र में कोई हानि नहीं।

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०	–	प०
=	8	–	8	–	21	–	53	–	56

भ्रातृ भावायु साधन :

91 – 05 – 00 – 36 पिण्डायु

× 433 तृतीय भाव बल

5185) 39403 – 2165 – 00 – 15588 (7 वर्ष

36295

3108

× 12

37296

+ 2165

5185) 39461 (7 मास

36295

3166

× 30 भ्रातृ भाव का स्वामी शुक्र स्वगृही है अतः कोई हानि नहीं।

5185) 94980 (18 दिन

	वर्ष	मा०	दि०	घ०	
=	7	7	18	22	भ्रातृ भावायु

93330

1650

× 60

99000

+ 15588

5185) 114588 (22 घ०

114070

518

मातृ भावायु साधन :

91 – 05 – 00 – 36 पिण्डायु

× 420 चतुर्थ भाव बल

5185) 38220 – 2102 – 00 – 15120 (7 वर्ष

36295

1935

× 12

23220

+ 2100

5185) 25320(4 मास
20740

4580
× 30

5185) 13740(2 दिन
10370

3370
× 60

5185) 202200(38 घ०
197030

5170
× 60

5185) 310200(59 प०
305915

4285

मातृ भाव का स्वामी बुध शत्रु क्षेत्र मे है अतः $\frac{1}{3}$ हानि ।

	वर्ष –	मा० –	दि० –	घ० –	प०
=	7 –	4 –	2 –	38 –	59 ÷ 3
	2 –	5 –	10 –	52 –	59
	4 –	10 –	21 –	46 –	00 मातृभावायु

पुत्र भावायु साधन :

91 – 05 – 00 – 36 पिण्डायु

× 308 पंचम भाव बल

5185) 28024 – 1540 – 00 – 11088(5 वर्ष
25925

2099
× 12

25188
+ 1540

5185)26728(5 मास

25925

803

× 30 पुत्र भाव का स्वामी गुरु सम क्षेत्र में है अतः कोई हानि नहीं।

5185) 24090(4 दिन

20740

3350

× 60

201000

+ 11088

5185) 212088(40 घ०

207400

4688

× 60

5185) 281280(54 पल

279990

1290

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०	–	प०
=	5	–	5	–	4	–	40	–	54

शत्रु भावायु साधन :

91 – 05 – 00 – 36 पिण्डायु

× 486 षष्ट भाव बल

5185) 44226 – 2430 – 00 – 17496(8 वर्ष

41480

2746

× 12

32956

+ 2430

5185) 35386 (6 मास

31110

4276

× 30

5185) 128280 (24 दिन

124440

3840

× 60

5185) 230400 (47 घ०

243695

4201

× 60

5185) 252060 (48 प०

248880

3180

शनि अपने शत्रु क्षेत्र में है अतः $\frac{1}{3}$ हानि ।

	वर्ष –	मा० –	दि० –	घ० –	प०
=	8 –	6 –	24 –	47 –	48 ÷ 3
	2 –	10 –	8 –	15 –	56
	5 –	8 –	16 –	31 –	52 शत्रुभावायु

स्त्री भावायु साधन :

91 – 05 – 00 – 36 पिण्डायु

× 487 सप्तम् भाव बल

5185) 44317 – 2435 – 00 – 17532 (8 वर्ष

41480

2437
× 12
29244
+ 2435
5185) 31679(6 मास
31110
569
× 30
5185) 17070(3 दिन
15555
1415
× 60
84900
+ 17532
5185) 102432(19 घ०
98515
3917
× 60
5185) 235020(45 प०
233325
1695

शनि अपने शत्रु मंगल के क्षेत्र मे है अतः $\frac{1}{3}$ हानि ।

	वर्ष	मा०	दि०	घ०	प०
=	8	6	3	19	45 ÷ 3
–	2	10	1	6	35
	5	8	2	13	10 स्त्रीभावायु

आयु भावायु साधन :

91 – 05 – 00 – 36 पिण्डायु

× 343 अष्टम भाव बल

5185) 31213 – 1715 – 00 – 12348 (6 वर्ष

31110

103

× 12

1326

+ 1715

5185) 3041(0 मास

× 30

5185) 91230(17 दिन

88145

3095

× 60

185700

+ 12348

5185) 198048(38 घ०

197030

1018

× 60

61080

5185) 61080(11 प०

57035

4045

गुरु शनि के सम क्षेत्र में अतः कोई हानि नहीं।

	वर्ष	मा०	दि०	घ०	प०
=	6	0	17	38	11 आयु भावायु

धर्म भावायु साधन :

91 – 05 – 00 – 36 पिण्डायु

× 430 नवम् भाव बल

5185) 39130 – 2150 – 00 – 15480 (7 वर्ष

36295

2835

× 12

34020

+ 2150

5185) 36170(6 मास

31110

5060

× 30

5185) 151800(29 दिन

150365

1435

× 60

86100

+ 15480

5185) 101580(19 घ०

98515

3065

× 60

धर्म भाव का मंगल अपने शत्रु मंगल के क्षेत्र में है अतः $\frac{1}{3}$ हानि।

	वर्ष	मा०	दि०	घ०	प०	
	7	6	29	19	35 ÷ 3	
–	2	6	09	46	31	
=	5	0	19	33	04	धर्मभावायु

5185) 183900(35 प०

181475

2475

कर्म भावायु साधन :

91 – 05 – 00 – 36 पिण्डायु

× 460 दशम् भाव बल

5185) 41860 – 2300 – 00 – 16560 (8 वर्ष

41480

380

× 12

4560

+ 2300

5185) 6860(1 मास

5185

1665

× 30

कर्म भाव का स्वामी शुक्र स्वगृही है अतः कोई हानि नहीं है।

5185) 49950(9 दिन

वर्ष – मा० – दि० – घ० – प०

= 8 – 1 – 9 – 41 – 13 कर्म भावायु

46665

3285

× 60

197100

+ 016560

5185) 213660(41 घ०

212585

1175

× 60

5185) 70500(13 प०

67405

3095

लाभ भावायु साधन :

91 – 05 – 00 – 36 पिण्डायु

× 485 एकादश भाव बल

5185) 44135 – 2425 – 00 – 17460 (8 वर्ष

41480

1655

× 12

19860

+ 2425

5185) 22285(4 मास

20740

1545

× 30

लाभेश बुध सम क्षेत्र में अतः कोई हानि नहीं है।

5185) 46350(8 दिन

वर्ष – मा० – दि० – घ० – प०

41480

= 8 – 4 – 8 – 59 – 43 लाभ भावायु

4870

× 60

292200

+ 17460

5185) 309660 (59 घ०

305915

3745

× 60

5185) 224700 (43 प०

222955

1745

व्यय भावायु साधन :

91 – 05 – 00 – 36

× 473

5185) 43043 – 2365 – 00 – 17028 (8 वर्ष

41480

1563

× 12

18756

+ 2365

5185) 21121 (4 मास

20740

381

× 30

5185) 11430 (2 दिन

10370

व्ययेश गुरु के सम क्षेत्र में हैं अतः हानि नहीं।

	वर्ष	मा०	दि०	घ०	प०
=	8	4	2	15	31

```
          1060
         × 60
        ------
         63600
       + 17028
      --------
5185) 80628(15 घ०
         77775
        ------
          2753
         × 60
5185) 165780( 31 प०
        160735
        ------
          5055
```

भावायु चक्र :

			वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०	–	प०
1.	तन	=	3	–	1	–	21	–	58	–	00
2.	धन	=	8	–	8	–	21	–	53	–	56
3.	भ्रात	=	7	–	7	–	18	–	22	–	00
4.	मातृ	=	4	–	10	–	21	–	46	–	00
5.	पुत्र	=	5	–	5	–	4	–	40	–	54
6.	शत्रु	=	5	–	8	–	16	–	31	–	52
7.	स्त्री	=	5	–	8	–	2	–	13	–	10
8.	आयु	=	6	–	0	–	17	–	38	–	11
9.	धर्म	=	5	–	0	–	19	–	33	–	04
10.	कर्म	=	8	–	1	–	9	–	41	–	13
11.	लाभ	=	8	–	4	–	8	–	59	–	43
12.	व्यय	=	8	–	4	–	2	–	15	–	31
			77	–	1	–	15	–	33	–	34 भावायु

मिश्रायु साधन और विधि : अंशायु, निसर्गायु व पिण्डायु का योग कर तीन का भाग देने से प्रत्येक ग्रह व लग्न की मिश्रायु होगी।[1]

वर्ष	मा०	दि०	घ०	प०	
65	5	13	16	34	अशांयु
93	11	00	36	00	निसर्गायु
91	5	00	36	00	पिण्डायु
250	9	14	18	34 ÷ 3	
वर्ष	मा०	दि०	घ०	प०	
= 84	7	4	46	11	मिश्रायु

अन्य रीति से आयु निर्णय : "बृहत्पाराशर–होराशास्त्रम्", पण्डित देवचन्द्र झा, वृहत्पाराशर होराशास्त्रम्, पण्डित श्री गणेश दत्त पाठक तथा जैमिनि सूत्रम् पण्डित श्री सीताराम शर्मा इन ग्रन्थों में उपरोक्त आयु का उल्लेख है। लेकिन यह सूत्र जैमिनि सूत्र नाम से जाना जाता है। जबकि जैमिनि सूत्र में आठ पंक्तियों की काररिका महर्षि पाराशर के नाम से उद्धृत है। जो निम्न प्रकार से है :–

"आदौ लग्नाष्ट मेशाभ्यां योगमेकं विचिन्तयेत्।
जन्म-होराविलग्नाभ्यां द्वितीयं परिचिन्तयेत्।।
तृतीयं शनिचन्द्राभ्यां चिन्तयेत्तु द्विजोत्तम !।
योगत्रयेण योगाभ्यां सिद्धं यद्ग्राह्यमेव तत्।।
योगत्रयविसंवादे लग्नहोराविलग्नतः।
लग्ने वा सप्तम चन्द्रे चिन्तयेन्मन्द चन्द्रतः ।।

1. "आयुर्निणयः", आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ, 'पर्वतीय' रंजन पब्लिकेशन, दिल्ली पेज–281 ।

स्पष्टार्थ – उपरोक्त दीर्घायु आदि योग समझने के लिए सरल प्रकार–

"चरे चरस्थिर द्वन्द्वाः, स्थिरे द्वन्द्व चर स्थिराः।

द्वन्द्वे स्थिरद्वन्द्व चरा दीर्घमध्याल्पकाः क्रमात् ।।[1]

उपरोक्त पंक्तियां महर्षि जैमिनि ने महर्षि पाराशर द्वारा रचित बताई गई हैं। महर्षि जैमिनि द्वारा प्रतिपादित आयु साधन का ही रूपान्तरण है। निःसन्दिग्ध रूप से कहना सम्भव नहीं है कि किसने किसका रूपान्तरण किया है। महर्षि पाराशर की शैली पौराणिक है। किन्तु महर्षि जैमिनि की सूत्र शैली है। इस प्रकार शैली में पृथकता होने पर भी विषय में एकरूपता ही है।

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्रम्", श्री गणेश दत्त पाठक आयुर्दाय अध्याय श्लोक 21 से 39 तक इस सूत्र का उल्लेख है। जो आर्युबोध चक्र में बतलाया गया है।

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्रम्", पं० देवचन्द्र झा आयुर्दायाध्या श्लोक 33 से 44 तक दिया है। सरलता के लिये आर्युबोध चक्र भी दर्शाया गया है।

आर्युबोधक चक्र

दीर्घायु	मध्यमायु	अल्पआयु
चर राशि– लग्नेश चर राशि–अष्टमेश	चर राशि –लग्नेश स्थिर राशि–अष्टमेश	चर राशि– लग्नेश द्विस्वभाव– अष्टमेश
स्थिर राशि–लग्नेश द्विस्वभाव – अष्टमेश	स्थिर राशि–लग्नेश चर राशि – अष्टमेश	स्थिर राशि – लग्नेश स्थिर राशि – अष्टमेश
द्विस्वभाव – लग्नेश स्थिर राशि – अष्टमेश	द्विस्वभाव – लग्नेश द्विस्वभाव – अष्टमेश	द्विस्वभाव – लग्नेश चरराशि – अष्टमेश

1. "जैमिनि सूत्रम्", पं० श्रीसीताराम शर्मा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, अध्याय–2, पेज–62।

उपरोक्त आयुबोधक चक्र से

1. लग्नेश, अष्टमेश
2. शनि, चन्द्र
3. लग्न, होरा लग्न

से एक महर्षि ने आयु का साधन किया है।

1. दोनो चर राशिस्थि हों तो दीर्घायु
2. एक स्थिर तथा दूसरे द्विस्वभाव हो तो दीर्घायु
3. एक चर तथा दूसरा स्थिर हो तो मध्यायु
4. दोनो द्विस्वभाव राशिगत हों तो भी मध्यायु
5. एक चर, दूसरा द्विस्वभाव में हो तो अल्पायु
6. दोनों स्थिर राशिगत हों तो निसन्देह अल्पायु

ये तीनों योग से निष्पन आयु ही मान्य होती है। तीनों योगों में विषमता हो अर्थात तीनों से तीन प्रकार की आयु आए तो लग्न तथा होरा लग्न से सिद्धि ही ग्राह्य है। लेकिन इस सिथित में लग्न या सप्तम् में चन्द्र हो तो द्वितीय योग (शनि, चन्द्र) से सिद्ध आयु माननी चाहिए। कक्षा के ह्रास तथा वृद्धि का भी विचार करना चाहिए।

दीर्घायु :

1. तीन प्रकार से प्राप्त आयु होने पर 120 वर्ष
2. दो प्रकार से दीर्घायु होने पर 108 वर्ष
3. एक प्रकार से दीर्घायु होने पर 96 वर्ष समझना चाहिए।

मध्यमायु :

1. इस तरह तीनों प्रकार से मध्यम आयु होने पर 80 वर्ष
2. दो प्रकार से मध्यम आयु होने पर 72 वर्ष

3. एक प्रकार से मध्यमायु होने पर 64 वर्ष समझनी चाहिए।

अल्पायु :

1. तीनों प्रकार अल्पायु होने पर 32 वर्ष
2. दो प्रकार से अल्पायु होने पर 36 वर्ष
3. एक प्रकार से अल्पायु हो तो 40 वर्ष समझना चाहिए।

इस प्रकार से प्राप्त दीर्घायु में 40, 36, 32 खण्ड होते हैं जिनके द्वारा स्पष्ट आयु साधन करना चाहिए ।

स्पष्टार्थ - चक्र

दीर्घायुः	एकयोगे – 96	योगद्वये – 108	योगत्रये – 120
मध्यायुः	एकयोगे – 64	योगद्वये – 72	योगत्रये – 80
अल्पायुः	योगत्रये – 32	योगद्वये – 36	एकयोगे – 40
खण्डानि	32	36	40

मानक उदाहरण में आयु साधन :-

1. **लग्नेश-अष्टमेश :**

क) मानक उदाहरण में सिंह लग्न है। इसका स्वामी सूर्य चर राशि में है।

ख) तथा अष्टमेश गुरु मकर स्थिर राशि में है। उक्त योग से मध्यम आयु हुई।

2. **शनि, चन्द्र :** शनि वृश्चिक स्थिर राशि में है तथा चन्द्र धनु द्विस्वभाव राशि में है तो आयुबोधक चक्र में देखने पर दीर्घ आयु प्राप्त होती है।

3. **लग्न - होरा लग्न :** मानक उदाहरण में सिंह स्थिर लग्न है तथा होरा लग्न मिथुन राशि द्विस्वभाव है जो हम प्रथम अध्याय में स्पष्ट कर चुके हैं। अतः दीर्घ आयु प्राप्त होती है। अतः 108 वर्ष आयु प्राप्त होती है।

अष्टक वर्ग आयु साधन : "बृहत्पाराशर–होराशास्त्रम्", दैवज्ञ पं० देवचन्द्र झा वाली पुस्तक

के अष्टक वर्गायु साधन के चार श्लोक दिए है। जो निम्न प्रकार हैं :–

अथायुरष्टवर्गोत्थं वच्मि ते श्रृणुं तन्मुने।

रेखाभावे दिनं युग्मं सार्धैकं रेखया स्मृतम्।।

रेखाभ्यां दिनमेकं तु दिनार्धं तिसृभिर्मतम्।

अह्नां सप्त दिनार्ध च वेदरेखाभिरादिशेत्।।

पञ्चभिर्युग्मवर्षं च षड्भिरब्दचतुष्टयम्।

सप्तमी रसवर्षं चाष्टामिरष्टाब्दकं स्मृतम्।।

इत्थं समस्तग्रहजं मुने ! यच्चायुरागतम्।

तस्यार्धं विदितं स्पष्टमायुरष्टकवर्गजम्।।[1]

उपरोक्त श्लाकों में बताया गया है कि जिस राशि में रेखा न हों तो 2 दिन, जिसमें एक रेखा हो तो $1\frac{1}{2}$ दिन, दो रेखा वाली राशि का 1 दिन, तीन रेखा वाली राशि का $\frac{1}{2}$ दिन, चार रेखा वाली राशि का $7\frac{1}{2}$ दिन, पाँच रेखा वाली राशि का 2 वर्ष, 6 रेखा वाली राशि का 4 वर्ष आयु होती है। इस प्रकार सभी राशियों के आयु का योग करें, उसका आधा स्फुट अष्टकवर्गज आयु होती है।

विशेष : उपरोक्त में सभी ग्रहों के अष्टक वर्ग आयु का उल्लेख दिया है। लेकिन लग्नाष्टकवर्गायु का उल्लेख नहीं दिया गया। यहाँ लग्नाष्टकवर्गायु भी लिया जाना चाहिए क्योंकि अन्यत्र भी लग्नायु का उल्लेख है। अतः हम अपने मानक उदाहरण में लग्नाष्टकवर्गायु को भी ग्रहण करेगें जो नियमानुसार भी है। बी० एल० ठाकुर ने भी लग्न पिण्ड को आयुर्दाय में ग्रहण किया है। इसके साथ–2 "आयुनिर्णय"[2] ग्रन्थ में भी लग्नायु ग्रहण करने का उल्लेख दिया है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्रम्", दैवज्ञ पं० देवचन्द्र झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी पेज 563।
2. "आयुनिर्णय", आचार्य मुकन्द दैवज्ञ 'पर्वतीय' रंजन पब्लिकेशन, दिल्ली, पेज 312।

सूर्याष्टक वर्गायु साधन : मानक उदाहरण में सूर्याष्टकवर्ग में मेष राशि में 4 रेखा हैं अतः 7 दिन 30 घटी आयु, वृष राशि में 2 रेखा हैं अतः 1 दिन आयु, मिथुन में 3 रेखा हैं तो 30 घटी आयु, कर्क में 3 रेखा हैं अतः 30 घटी आयु, सिंह में 5 रेखा हैं अतः 2 वर्ष आयु कन्या में 2 रेखा हैं। अतः 1 दिन आयु, तुला में 3 रेखा हैं अतः 30 घटी आयु, वृश्चिक में 4 रेखा हैं अतः 7 दिन 30 घटी आयु, धनु में 6 रेखा हैं अतः 4 वर्ष आयु, मकर में 5 रेखा हैं अतः 2 वर्ष कुम्भ में 6 रेखा हैं अतः 4 वर्ष आयु, मीन में 5 रेखा हैं अतः 2 वर्ष आयु प्राप्त होती है।

सूर्याष्टक वर्ग आयु :

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०	–	रेखा
मेष	00	–	00	–	7	–	30	=	4
वृष	00	–	00	–	1	–	00	=	2
मिथुन	00	–	00	–	00	–	30	=	3
कर्क	00	–	00	–	00	–	30	=	3
सिंह	2	–	00	–	00	–	00	=	5
कन्या	00	–	00	–	01	–	00	=	2
तुला	00	–	00	–	00	–	30	=	3
वृश्चिक	00	–	00	–	07	–	30	=	4
धन	04	–	00	–	00	–	00	=	6
मकर	2	–	00	–	00	–	00	=	5
कुम्भ	4	–	00	–	00	–	00	=	6
मीन	2	–	00	–	00	–	00	=	5
	14	–	00	–	18	–	30		

चन्द्राष्टकवर्ग आयु :

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०	=	रेखा
मेष	0	–	0	–	7	–	30	=	4
वृष	0	–	0	–	0	–	30	=	3
मिथुन	0	–	0	–	0	–	30	=	3
कर्क	0	–	0	–	7	–	30	=	4
सिंह	0	–	0	–	7	–	30	=	4
कन्या	2	–	0	–	0	–	0	=	5
तुला	0	–	0	–	7	–	30	=	4
वृश्चिक	2	–	0	–	0	–	0	=	5
धन	0	–	0	–	7	–	0	=	4
मकर	0	–	0	–	1	–	0	=	2
कुम्भ	0	–	0	–	7	–	30	=	4
मीन	2	–	0	–	0	–	0	=	5
	6	–	1	–	16	–	30		

मंगलाष्टकवर्ग आयु :

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०	–	रेखा
मेष	4	–	0	–	0	–	0	–	6
वृष	0	–	0	–	7	–	30	–	4
मिथुन	0	–	0	–	7	–	30	–	4
कर्क	2	–	0	–	0	–	0	–	5
सिंह	0	–	0	–	7	–	30	–	4
कन्या	0	–	0	–	7	–	30	–	4
तुला	0	–	0	–	7	–	0	–	4
वृश्चिक	4	–	0	–	0	–	0	–	6
धन	2	–	0	–	0	–	0	–	5
मकर	4	–	0	–	0	–	0	–	6
कुम्भ	2	–	0	–	0	–	0	–	5
मीन	0	–	0	–	9	–	30	–	4
	18	–	1	–	14	–	30		

बुधाष्टकवर्ग आयु :

	वर्ष		मा०		दि०		घ०		रेखा
मेष	4	–	0	–	0	–	0	–	6
वृष	0	–	0	–	0	–	30	–	3
मिथुन	0	–	0	–	1	–	0	–	2
कर्क	0	–	0	–	7	–	30	–	4
सिंह	0	–	0	–	1	–	0	–	2
कन्या	0	–	0	–	1	–	0	–	2
तुला	0	–	0	–	7	–	30	–	4
वृश्चिक	0	–	0	–	0	–	30	–	3
धन	0	–	0	–	7	–	30	–	4
मकर	0	–	0	–	7	–	30	–	4
कुम्भ	2	–	0	–	0	–	0	–	5
मीन	0	–	0	–	0	–	30	–	3
	6	–	01	–	04	–	30		

गुरुअष्टकवर्ग आयु :

	वर्ष		मा०		दि०		घ०		रेखा
मेष	0	–	0	–	1	–	30	–	1
वृष	4	–	0	–	0	–	0	–	6
मिथुन	0	–	0	–	0	–	30	–	3
कर्क	0	–	0	–	0	–	30	–	3
सिंह	0	–	0	–	1	–	0	–	2
कन्या	2	–	0	–	0	–	0	–	5
तुला	0	–	0	–	0	–	30	–	3
वृश्चिक	0	–	0	–	0	–	30	–	3
धन	0	–	0	–	7	–	30	–	4
मकर	0	–	0	–	0	–	30	–	3
कुम्भ	0	–	0	–	7	–	30	–	4
मीन	0	–	0	–	7	–	30	–	4
	6	–	00	–	27	–	30		

शुक्राष्टकवर्गायु :

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०	–	रेखा
मेष	2	–	0	–	0	–	0	–	5
वृष	0	–	0	–	7	–	30	–	4
मिथुन	2	–	0	–	0	–	0	–	5
कर्क	0	–	0	–	0	–	30	–	3
सिंह	0	–	0	–	1	–	30	–	1
कन्या	0	–	0	–	0	–	30	–	3
तुला	0	–	0	–	7	–	30	–	4
वृश्चिक	0	–	0	–	0	–	30	–	3
धन	2	–	0	–	0	–	0	–	5
मकर	0	–	0	–	0	–	30	–	3
कुम्भ	0	–	0	–	7	–	30	–	4
मीन	0	–	0	–	7	–	30	–	4
	6	–	01	–	01	–	30		

शनि अष्टकवर्गायु :–

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०	–	रेखा
मेष	2	–	0	–	0	–	0	–	5
वृष	0	–	0	–	7	–	30	–	4
मिथुन	0	–	0	–	7	–	30	–	4
कर्क	2	–	0	–	0	–	0	–	5
सिंह	0	–	0	–	0	–	30	–	3
कन्या	2	–	0	–	0	–	0	–	5
तुला	0	–	0	–	7	–	30	–	4
वृश्चिक	0	–	0	–	7	–	30	–	4
धन	6	–	0	–	0	–	0	–	7
मकर	0	–	0	–	7	–	30	–	4
कुम्भ	4	–	0	–	0	–	0	–	6
मीन	4	–	0	–	0	–	0	–	6
	21	–	01	–	08	–	00		

लग्नाष्टकवर्गायु :–

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०	–	रेखा
मेष	2	–	0	–	0	–	0	–	5
वृष	0	–	0	–	7	–	30	–	4
मिथुन	0	–	0	–	0	–	30	–	3
कर्क	2	–	0	–	0	–	0	–	5
सिंह	0	–	0	–	7	–	30	–	4
कन्या	0	–	0	–	1	–	0	–	2
तुला	0	–	0	–	7	–	30	–	4
वृश्चिक	0	–	0	–	0	–	30	–	3
धन	2	–	0	–	0	–	0	–	5
मकर	0	–	0	–	0	–	30	–	3
कुम्भ	0	–	0	–	1	–	30	–	2
मीन	6	–	0	–	0	–	0	–	7
	12	–	00	–	26	–	30		

अष्टकवर्गस्फुटायः :-

	वर्ष	–	मा०	–	दि०	–	घ०	
सूर्य	14	–	00	–	18	–	30	
चन्द्र	6	–	01	–	16	–	30	
मंगल	18	–	01	–	14	–	30	
बुध	6	–	01	–	04	–	30	
गुरु	6	–	00	–	27	–	30	
शनि	21	–	01	–	08	–	00	
लग्न	12	–	00	–	26	–	30	
	89	–	08	–	27	–	30	÷ 2

= 44 – 10 – 13 – 45 अष्टकवर्गस्फुटायुः

अष्टक वर्ग आयु साधन :-

द्विघ्ने त्वपनयेत्तस्मिन्युंज्यादेव दलीकृते।।

निक्षिप्याष्टकवर्गे तु राशिचक्रे तु पूर्ववत्।।

त्रिकोणकप शुद्धिं च कृत्वा तु गुणयेद्गुणैः।।

खवह्निभक्तमब्दाद्याः क्रमाद्भिन्नाष्टवर्गजाः।।

एवकृत्वा तु संयोज्य भाप्त मब्दादयः स्मृताः।।[1]

अष्टक वर्गायु प्रकार–प्रथम अष्टक वर्ग सिद्ध करके त्रिकोण शोधन और एकाधिपत्य शोधन करना और पूर्वोक्त रीति से प्रत्येक राशि गुणक से गुणाकर पिण्ड संख्या स्पष्ट करना। बाद 30 का भाग देना तो वर्षादिक भिन्नाष्टक वर्गायु होती है।

समुदायाष्टक वर्गायु की रीति–भिन्नाष्टक वर्गायु के अंक जोड़कर 27 का भाग देना तो वर्ष, मास, दिनादिक समुदायाष्टक वर्गायु होती है। कहे गये पिण्ड अष्टक वर्ग अध्याय में बना चुके हैं जो इस प्रकार हैं :–

सूर्य – 139, चन्द्र – 77, मंगल–105, बुध–130, गुरु–118, शुक्र–109, शनि–149, लग्न–142 है।

अब "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" अनुसार भिन्नाष्टक वर्ग आयु साधन करेंगे। इस आयु साधन में मण्डल 12 वर्ष का होता है। यदि आयु वर्ष 12 से अधिक आएँ तो 12 घटा कर आयु लेना।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 14, श्लोक 13-14, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम प्रैस, मुम्बई ।

सूर्यभिन्नाष्टक वर्गायु साधन :

30) 139 (4
120
―――
19
× 12
30) 228 (7
210
―――
18
× 30
30) 540 (18
540
―――
×

	वर्ग	–	मास	–	दिन
=	4	–	7	–	18

चन्द्रभिन्नाष्टक वर्गायु साधन :

30) 77 (2
60
―――
17
× 12
30) 204 (6
180
―――
24
× 30
30) 720 (24
60
―――
120
120
―――
×

	वर्ग	–	मास	–	दिन
=	2	–	6	–	24

मंगलभिन्नाष्टक वर्गायु साधन :

30) 105(3
90
15
× 12
30) 180(6
180
×

	वर्ग	–	मास	–	दिन
=	3	–	6	–	0

बुद्धभिन्नाष्टक वर्गायु साधन :

30) 130(4
120
10
× 12
30) 120(4
120
×

	वर्ग	–	मास	–	दिन
=	4	–	4	–	6

गुरुभिन्नाष्टक वर्गायु साधन :

30) 118(3
90
28
× 12
30) 336(11
30
36
30

	वर्ग	–	मास	–	दिन
=	3	–	11	–	6

6

× 30

30) 180(6

180

×

शुक्रभिन्नाष्टक वर्गायु साधन :

30) 109(3

90

19

× 12

30) 228(7

210

18

× 30

30) 540(18

540

×

	वर्ग	–	मास	–	दिन
=	3	–	7	–	18

शनिभिन्नाष्टक वर्गायु साधन :

30) 149(4

120

29

× 12

30) 348(11

330

18

× 30

	वर्ग	–	मास	–	दिन
=	4	–	11	–	18

$$30\overline{)540}(18$$

540

―――

×

लग्नभिन्नाष्टक वर्गायु साधन :

$$30\overline{)142}(4$$

120

―――

22 = 4 वर्ष – 8 मास – 24 दिन

× 12

$$30\overline{)264}(8$$

240

―――

24

× 30

$$30\overline{)720}(24$$

720

―――

×

	वर्ष	–	मा०	–	दि०
सूर्य	4	–	7	–	18
चन्द्र	2	–	6	–	24
मंगल	3	–	0	–	00
बुध	4	–	4	–	00
गुरु	3	–	11	–	06
शुक्र	3	–	7	–	18
शनि	4	–	11	–	18
लग्न	4	–	8	–	24
	32	–	3	–	08

सूर्यादि ग्रहों के पिण्ड को 27 का भाग देने से समुदायष्टक वर्ग आयु होती है।

सूर्य समुदायष्टक वर्गायु साधन :

27) 139 (5
135
4
× 12
27) 48 (1
27
21
× 30
27) 630 (23
54
90
81
9
× 60
27) 540 (20
540
×

वर्ष	मास	दिन	घटी	प०
= 5	1	23	20	00

चन्द्र समुदायष्टक वर्गायु साधन :

27) 77 (2
54
23
× 12

वर्ष	मास	दिन	घटी	प०
= 2	1	6	40	00

27) 276 (1

27

6

× 30

27) 180(6

162

18

× 60

27) 1080(40

1080

×

मंगल समुदायष्टक वर्गायु साधन :

27) 105 (3

81

24

× 12

27) 288 (1

27

18

× 30

27) 540(20

540

×

	वर्ष	–	मास	–	दिन
=	3	–	1	–	20

बुध समुदायष्टक वर्गायु साधन :

27) 130 (4
108
22
× 12
27) 264 (9
243
21
× 30
27) 630(23
54
90
81
9
× 60
27) 540(20
540
×

	वर्ष	–	मास	–	दिन	–	घटी
=	4	–	9	–	23	–	20

गुरु समुदायष्टक वर्गायु साधन :

27) 118 (4
108
10
× 12
27) 120 (4
108

	वर्ष	–	मास	–	दिन	–	घटी	–	प०
=	4	–	4	–	13	–	20	–	00

12
× 30
27) 360(13
27

90
81

9
× 60
27) 540(20
540

×

शुक्र समुदायष्टक वर्गायु साधन :

27) 109 (4
108

1
× 12
27) 12 (0
0

12
× 30
27) 360(13
27

90
81

	वर्ष	–	मास	–	दिन	–	घटी	–	प०
=	4	–	0	–	13	–	20	–	00

$$\begin{array}{r} 9 \\ \times 60 \\ 27\overline{)540}(20 \\ 540 \\ \hline \times \end{array}$$

शनि समुदायष्टक वर्गायु साधन :

$$\begin{array}{r} 27\overline{)149}(5 \\ 135 \\ \hline 14 \\ \times 12 \\ 27\overline{)168}(6 \\ 162 \\ \hline 6 \\ \times 30 \\ 27\overline{)180}(6 \\ 162 \\ \hline 18 \\ \times 60 \\ 27\overline{)1080}(40 \\ 1080 \\ \hline \times \end{array}$$

	वर्ष	–	मास	–	दिन	–	घटी	–	प०
=	5	–	6	–	6	–	40	–	00

लग्न समुदायष्टक वर्गायु साधन :

$$\begin{array}{r} 27\overline{)142}(5 \\ 135 \\ \hline \end{array}$$

7 वर्ष – मास – दिन – घटी

× 12 = 5 – 3 – 3 – 20

$$27\overline{)84}(3$$

81

3

× 30

$$27\overline{)90}(3$$

81

9

81

9

× 60

$$27\overline{)540}(20$$

540

×

समुदायष्टक वर्गायु :-	वर्ष		मा०		दि०		घ०		पल
सूर्य	5	–	1	–	21	–	1	–	28
चन्द्र	2	–	10	–	06	–	40	–	00
मंगल	3	–	10	–	20	–	00	–	00
बुध	4	–	09	–	23	–	20	–	00
गुरु	4	–	04	–	13	–	20	–	00
शुक्र	4	–	00	–	13	–	20	–	00
शनि	5	–	6	–	6	–	40	–	00
लग्न	5	–	3	–	3	–	20	–	00
	36	–	00	–	17	–	41	–	28

चन्द्र से आयु साधन :

अंशान् लिप्ताहतान् कृत्वा खखाक्षिम्यां समाहृताः।

शेषा मासादयः प्रोक्ता वर्तमानाब्देयोजने ।।[1]

विधि : लग्न में चन्द्रमा बलहीन हो या न हो तो अंशों को 60 से गुणा कर 200 से भाग देकर लब्ध वर्षादि आयु जानना।

चन्द्रायु साधन :

8 – 0 – 33 – 03 चन्द्र

× 30

240

× 60

200) 14400 (72

1400

400 = 72 वर्ष चन्द्रायु ।

400

×

मारक विचार :

आरार्की वक्रिणौ मृत्युश्चान्योन्यभवनस्थितौ ।

वेश्मषण्मृत्युरिःफस्थाः क्षीणेन्द्वत्पत्तिपाष्टमाः ।।

अष्टमास्था ग्रहाः सर्वे पापदृष्टियुतास्तु वा ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड अध्याय 15 श्लोक 19, खेमराज श्रीकृष्ण दास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रैस, मुम्बई ।

भौममंदर्क्षगाश्चेत्तु शुभदृष्टिविवर्जिताः ।।[1]

बतलाया गया है कि मारक योग से आयु की हानि तथा कारक योग से वृद्धि होती हैं। इन योगों में प्रथम मारक योग कहे जाते है।

1. शनि, मंगल वक्री होकर परस्पर एक दूसरे के भाव में हो, तो मृत्यु कारक होते हैं।
2. क्षीण चन्द्र, लग्नेश तथा अष्टमेश ये तीनों ग्रह 4, 6, 8, 12 स्थानों में हों तो मृत्युकारक होते हैं।
3. या सब ग्रह अष्टम भाव में हो तो मृत्युकारक होते हैं।
4. अथवा सब ग्रह मृत्युकारक ग्रह 1, 8, 10, 11 राशियों में हो तो मृत्युकारक होते है।

आयुर्दायक योग :

केन्द्रत्रिकोणे च शुभाश्च पापाः षष्ठे तृतीये न च मृत्युसंस्थाः ।

अष्टोत्तरं जीवति वर्षमायुर्नरो गुणाढ्यो नवतिः सुशीलः ।।

लग्ने गुरौ दैत्यगुरौ चतुर्थे बुधे सुते षष्ठगते च सूर्ये ।

स्थानं च शत्रोश्च मृतिं च हित्वा त्वन्ये स्थिताश्चेन्नवतिश्चा षट् च ।।[1]

1. शुभ ग्रह केन्द्रत्रिकोण में हो तो 108 वर्ष की आयु।
2. कोई भी पाप ग्रह 3–6–8 में न हो तो 90 वर्ष आयु तथा सुशीला सुस्वभाव एवं गुणसंपन्न हो।
4. लग्न में गुरु, चतुर्थभाव से शुक्र, पंचम् में बुध तथा षष्टभाव में सूर्य हो तो 90 वर्ष आयु होती है।
5. चन्द्र, मंगल शनि ये तीनों ग्रह शत्रु राशि तथा अष्टम भाव में न हो तो 96 वर्ष की आयु होती है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड अध्याय 15, श्लोक 1-2, खेमराज श्रीकृष्ण दास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम प्रैस, मुम्बई ।

6. लग्न से 4 भाव में गुरु हो, गुरु से पंचम बुध हो और छठे घर में शुक्र हो 76 वर्ष आयु होती है।
7. लग्न से सप्तमभाव में गुरु, गुरु से पंचम बुध और छठे शुक्र हो तो 88 वर्ष की आयु होती है।
8. अथवा लग्न से 10 भाव में गुरु और गुरु में पंचम् बुध और छठे शुक्र हो तो 81 वर्ष की आयु होती है।

केन्द्रादि भाववश से आयु निर्णय :

1. यदि सभी ग्रह केन्द्र में हो तो 100 वर्ष आयु होती है।
2. पण्फर में हो तो 90 वर्ष आयु।
3. आपोक्लिम में हो तो 80 वर्ष आयु जानना।
4. यदि केन्द्र, पणफर आदि दो स्थानों में हो तो दोनों आयु जोड़कर आधा करना तो आयु होती है।
5. तीन स्थानों में हो तो तीनों जोड़कर तृतीयांश आयु प्रमाण जानना।

मानक उदाहरण में ग्रह तीनों स्थानों में है अतः 100 + 90 + 80 = 270 ÷ 3 = 90 वर्ष आयु प्राप्त होती है।

लेकिन आयु कर्ता ग्रह शत्रु, नीच, सम आदि अंशों न हो तो पूर्ण आयु होती है नहीं तो उक्त योगों का भंग होता है। प्रायः कलियुग में शतायुहीन ही मनुष्य होते हैं।

कब कौन सी आयु का ग्रहण करना :

बृहत्पाराशर–होराशास्त्र, उत्तरखण्ड अध्याय 11, श्लोक 19 से 32 में पिण्डायु ग्रहण विचार दिया है :–

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड, अध्याय 15 श्लोक 3–4, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रैस, बुम्बई।

1. सूर्य उच्च का हो और ग्रह बलवान हों तथा शश योग, हंस योग, दीर्घायु योग, सुनफा योग, अनाफा, दुर्धरा, चन्द्र राजादि योग हो तथा चन्द्र बलवान् हो तो पिण्डायु ग्रहण करना, ऐसा पाराशर भगवान् कहते हैं।

मानक उदाहरण में दुर्धरा योग है अतः पिण्डायु ली जानी चाहिए ।

2. गुरु लग्न में, सूर्य 10, चन्द्र 4 अथवा 7, शुभ ग्रह त्रिकोण या त्रिषडाय में 1,2,7,8,12 में अथवा शुभ ग्रह केन्द्र, त्रिषडाय में, गुरु 12, मं० 8, चन्द्र 6 अथवा पाप ग्रह 1, 7, 8 शुभ ग्रह 6,10,12 इन भावों में नीच विर्जित हों तो पिण्डायु लेना।
3. जन्म लग्न में तुलादि राशि का शनि स्थित हो तो ध्रुवायु ग्रहण करना।

योग विशेष से आयु ग्रहण :

बृहत्पाराशर–होराशास्त्र, उ० खण्ड, अध्याय 11, श्लोक 24–25 में योग विशेष से आयु ग्रहण बतलाया है।

1. वीणा, कार्मुक, चक्र, गदा, अर्धचन्द्र योग हों सूर्य बलवान हो तो पिण्डायु लेना।
2. केवल सूर्य बलवान हो तो पिण्डायु लेना।
3. लग्न बलवान हो तो अंशायु लेना।
4. चन्द्र बलवान हो तो ध्रुवायु लेना।
5. मंगल बलवान हो तो भिन्नाष्टक वर्गायु लेना।
6. बुध, गुरु बली हों तो नक्षत्रायु लेना।
7. शुक्र बली हो तो क्रमानुगतायु लेना।
8. शनि बली हो तो समुदायष्टक वर्गायु ग्रहण करना चाहिए।

प्रकारान्तर से :

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उ० खण्ड, अध्याय 11 श्लोक 25–26 में से इस प्रकार दिया है।

1. वापी, पाश, शर, पद्म, समुद्र, इनमें से कोई योग हो तथा सूर्य बली हो तो नवांशायु ग्रहण करना।
2. चन्द्रमा में ध्रुवायु ।
3. मंगल में पिण्डायु ।
4. बुध में स्वरांशकायु ।
5. गुरु में भिन्नाष्टक वर्गायु ।
6. शुक्र में नक्षत्रायु लेना ।

अब मानक उदाहरण में पाश योग है तथा शनि षडबल में बलवान है अतः नक्षत्रायु ग्रहण करनी चाहिए।

"जब कुण्डली में सभी ग्रह पाँच घरों हों तो पाश योग कहलाता है।"

अन्य प्रकार से :

1. कुण्डली में रज्जु योग हो तो पिण्डायु ।
2. विहंग योग में ध्रुवायु ।
3. माला में पिण्डायु ।
4. नल योग में तो ध्रुवायु ।
5. मंगल योग में पिण्डायु ।
6. गण्ड योग में क्रमायु ।
7. शनि योग में रश्म्यायु ।
8. शकट के ध्रुवायु ।
9. यूप में अंशायु ।
10. केदार में भिन्नाष्टक वर्गायु ।
11. शूल में समुदायाष्टक वर्गायु तथा सूर्यादि की बलवत्ता भी होनी चाहिए।

12. नौका, छत्र, वज्र, दामयोग हो, सूर्यादि नीच के हो तो स्वरांशयु लेना।

मानक उदाहरण में उपरोक्त आयु ली जानी चाहिए ।

13. कूट योग में पिण्डायु ।

14. गण्ड योग में ध्रुवायु ।

15. शर योग में अष्टकवर्गायु।

16. नाग में प्रक्रमायु ।

17. गोल में अंशायु ।

18. श्रृंगाटक में स्वरांशायु ।

19. कालकूट में रश्म्यायु लेना चाहिए।

प्रकारान्तर से :

1. लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो पिण्डायु
2. दूसरा हो तो ध्रुवायु ।
3. तीसरा हो तो स्वरांशायु ।
4. नवांश में ध्रुवादिक क्रम से 9 आयु लेना।
5. द्वादशांश में अंशादि क्रम से लेना।
6. उच्चादिक 9 स्थानों में ग्रह हो तो भिनाष्टक, समुदायाष्टकायु लेना।

रश्मि भेद से आयु ग्रहण :

1. रश्मि योग की संख्या 21, 24, 26, 27 तथा 30 से 37 में पिण्डायु लेना।

मानक उदाहरण में 33 रश्मि प्राप्त है अतः पिण्डायु लेना ।

2. रश्मि योग 25, 29, 23, 39 में ध्रुवायु लेना।
3. रश्मि योग 1, 2, 3 हो तो समुदायष्टवर्गायु लेना।
4. रश्मि योग 4 हो तो भिन्नाष्टक वर्गायु लेना।

5. रश्मि योग 5 से 10 तक हो तो अंशायु लेना।
6. रश्मि योग 11, 12 में पिण्डायु लेना।
7. रश्मि योग 13,14 से स्वरांशायु लेना।
8. रश्मि योग 15 में नक्षत्रायु लेना।
9. रश्मि योग 16 से 19 तक पिण्डायु लेना।
10. रश्मि योग 20 में प्रक्रमायु लेना
11. रश्मि योग 38 में अष्टकवर्गायु लेना।
12. रश्मि योग 40, 41, 42 में पिण्डायु लेना।
13. रश्मि योग 43, 44, 45 में नक्षत्रायु लेना।
14. रश्मि योग 22, 28 तथा 46 में 49 में पिण्डायु लेना।

यह गर्ग ऋषि का कथन बतलाया गया है। महर्षि पराशर का नहीं ।

सारांश : आयुर्दाय अध्याय में भिन्न–2 प्रकार से आयु स्पष्ट कर दिखलाई गई है। जैसा शास्त्र में उल्लेख है तथा भिन्न–2 प्रकार से आयु ग्रहण के तरीके भी कहे गये है। लेकिन यह निर्णय करना कठिन है कि किस कुण्डली में कौन सी आयु ग्रहण करें। इतना अवश्य है कि ऋषियों ने आयु स्पष्ट करने की बहुत प्रयत्न किया है. लेकिन यह भगवान का खेल है इसे कोई नहीं जानता। ना ही आज तक इस बात की कहीं सटीकता है। कई बार अल्पआयु योग प्राणी दीर्घायु होते देखे गये हैं। कई दीर्घायु भी अल्पायु में चले जाते हैं। चरित्र, व्यवहार तथा शुभ कर्मों से अल्पायु को दीर्घायु में बदला जा सकता है। चरित्रहीनता, दुर्व्यवहार, भक्ष्य अभक्ष्य से मुनष्य अपनी आयु को हीन कर लेता है। अतः अन्त में कहा जाता है कि यह भगवान की खेती है उसे कच्ची काटे या पक्की। इसमें मनुष्य को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

* * *

अध्याय-8

अष्टवर्ग साधन

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड अध्याय प्रथम में श्लोक एक से अठारह तक गुरु शिष्य संवाद दिया है। इसमें भगवान पराशर के शिष्य मैत्रेय जी ने कलि काल में सुबोध एवं सरल विधि के बारें में पूछने पर भगवान पराशर ने अपने शिष्य मैत्रेय को अष्टक वर्ग की सरल रीति बतलाई जिससे कलि काल में अल्पायु तथा कम बुद्धि वाले प्राणी भी ज्योतिष का सही फलादेश करने में सक्षम हो जाते हैं । यह भी बतलाया गया है कि इस शास्त्र को गुरुमुख से अध्ययन करके परिशीलन करने से उत्तरोत्तर ज्ञान विशद् होगा । यहाँ यह बात सही सिद्ध होती है कि ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन गुरु मुख से पढ़ने पर ही परम कल्याणकारी होता है । जैसे वेद ज्ञान और कर्म का प्रतिपादन है इसी तरह यह शास्त्र भी है। यह शास्त्र संकीर्ण तथा निश्चय भेद से दो प्रकार का बतलाया गया है । प्रथम खण्ड संकीर्ण तथा द्वितीय खण्ड अष्टकवर्गादि निश्चय खण्ड है । ग्रहों के बलाबल अनुसार फल का निश्चय करना बतलाया है। अष्टक वर्ग साधन इस खण्ड के अध्याय पाँच में इसका फलादेश तथा रेखा शान्ति के उपाय दिये है ।

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड, अध्याय 1, श्लोक 19 से 74 सभी ग्रहों के भिन्न–भिन्न भावों में शुभ रेखा तथा बिन्दु के बारे में दिया है[1] जो निम्न प्रकार से है :–

लग्न व ग्रह अपने स्थान से जिन स्थानों में शुभ रेखा देते हैं वे निम्न प्रकार से हैं तथा बाकि बचे स्थानों में अशुभ बिन्दु माने जाते हैं । प्रत्येक ग्रह की अपने अष्टक वर्ग में कुल शुभ रेखा निर्धारित की गई है । जैसे सूर्य अपने अष्टक वर्ग में 48 शुभ रेखा देता है बाकी अशुभ बिन्दु रहेंगे । चन्द्र 49, मंगल 39, बुध 54, गुरु 56, शुक्र 52, शनि 39 तथा लग्न 49 शुभ रेखा देता है जो कि निम्न प्रकार से ग्रहों के रेखा स्थान दिए हैं :–

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड अध्याय 1, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई, श्लोक 19 से 74 ।

सूर्याष्टक वर्ग रेखास्थान (कुल 48)

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ल०
1	3	1	3	5	6	1	3
2	6	2	5	6	7	2	4
4	10	4	6	9	12	4	6
7	11	7	9	11		7	10
8		8	10			8	11
9		9	11			9	12
10		10	12			10	
11		11				11	

चन्द्राष्टवर्ग रेखास्थान (कुल 49)

चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ल०	सू०
1	2	1	1	3	3	3	3
3	3	3	4	4	5	6	6
6	5	4	7	5	6	10	7
7	6	5	8	7	11	11	8
10	9	7	10	9			10
11	10	8	11	10			11
	11	10	12	11			
		11					

मंगलाष्टवर्ग रेखास्थान (कुल 39)

मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ल०	सू०	चं०
1	3	6	6	1	1	3	3
2	5	10	8	4	3	5	6
				7	8	6	
4	6	11	11	8	10	10	11
7	11	12	12	9	11	11	
8				10			
10				11			
11							

बुधाष्टवर्ग रेखास्थान (कुल 54)

बु०	गु०	शु०	श०	ल०	सू०	चं०	मं०
1	6	1	1	1	5	2	1
3	8	2	2	2	6	4	2
5	11	3	4	4	9	6	4
6	12	4	7	6	11	8	7
9		5	8	8	12	10	8
10		8	9	10		11	9
11		9	10	11			10
12		11	11				11

गुरुअष्टवर्ग रेखास्थान (कुल 56)

गु०	शु०	श०	ल०	सू०	चं०	मं०	बु०
1	2	3	1	1	2	1	1
2	5	5	2	2	5	2	2
3	6	6	4	3	7	4	4
4	9	12	5	4	9	7	5
7	10		6	7	11	8	6
8	11		7	8		10	9
10			9	9		11	10
11			10	10			11
			11	11			

शुक्राष्टक वर्ग रेखास्थान (कुल 52)

शु०	श०	ल०	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०
1	3	1	8	1	3	3	5
2	4	2	11	2	5	5	8
3	5	3	12	3	6	6	9
4	8	4		4	9	9	10
5	9	5		5	11	11	11
8	10	8		8	12		
9	11	9		9			
10		11		11			
11				12			

शन्यष्ट वर्ग रेखास्थान (कुल 39)

श०	ल०	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०
3	1	1	3	3	6	5	6
5	3	2	6	5	8	6	11
6	4	4	11	6	9	11	12
11	6	7		10	10	12	
	10	8		11	11		
	11	10		12	12		
		11					

लग्नाष्ट वर्ग रेखास्थान (कुल 49)

ल०	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
3	3	3	1	1	1	1	1
6	4	6	3	2	2	2	3
10	6	10	6	4	4	3	4
11	10	11	10	6	5	4	6
	11	12	11	8	6	5	10
	12			10	7	8	11
				11	9	9	
					10		
					11		

अष्टक वर्ग साधन विधि :- लग्न व सभी ग्रह अपने अष्टवर्ग में उपरोक्त लिखित स्थानों में शुभ रेखा प्रद होते हैं। मानक उदाहरण में सिंह लग्न की कुण्डली है जिसमें सू०, शु० तुला में, चं० धनु में, श० बु० वृश्चिक में, तथा मंगल कन्या राशि पर स्थित है। अब हम सूर्याष्टक वर्ग में उपरोक्त बतलायें गये स्थानों के अनुसार रेखा अंकति करेंगे। सबसे पहले हम सूर्य को लेंगे। इसके लिए ऊपर हम 12 खाने राशियों के बनाकर तथा नीचे सात ग्रह तथा एक लग्न का खाना बनाकर दो खाने रेखा योग तथा बिन्दु योग के बनाने के उपरांत सूर्य को देखे तुला राशि में हैं तो बराबर में सूर्य के घर से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11, स्थानों में रेखा डाल देंगे बाकी में बिन्दु। सभी ग्रहों के अष्टक वर्ग पीछे दिखाई रेखानुसार इस प्रकार करेंगे।

सूर्याष्टक वर्ग

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
ग्रह						मं०	सू०शु०	श०बु०	चं०	गु०		
श०	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0
गु०	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0
मं०	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1
सू०	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	1
शु०	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	1
बु०	1	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1
चं०	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0
ल०	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0
रे० योग	4	6	5	5	3	6	5	4	2	3	2	3
बि०योग	4	2	3	3	5	2	3	4	6	5	6	5

चन्द्राष्टक वर्ग

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
ग्रह						मं०	सू०शु०	श०बु०	चं०	गु०		
श०	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1
गु०	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0
मं०	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0
सू०	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1
शु०	1	0	1	1	0	0	0	0	1	1	1	0
बु०	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1
चं०	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	0
ल०	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0
रे० योग	4	5	5	4	4	3	4	3	4	6	4	3
बि०योग	4	3	3	4	4	5	4	5	4	2	4	5

मंगलाष्टक वर्ग

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
ग्रह						मं०	सू०शु०	श०बु०	चं०	गु०		
श०	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0
गु०	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0
मं०	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1
सू०	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1
शु०	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1
बु०	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1
चं०	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0
ल०	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0
रे० योग	2	4	4	3	4	4	4	2	3	2	3	4
बि०योग	6	4	4	5	4	4	4	6	5	6	5	4

बुधाष्टक वर्ग

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
ग्रह						मं०	सू०शु०	श०बु०	चं०	गु०		
श०	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0
गु०	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0
मं०	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1
सू०	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	1
शु०	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0
बु०	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1
चं०	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1
ल०	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1
रे० योग	2	5	6	4	6	6	4	5	4	4	3	5
बि०योग	6	3	2	4	2	2	4	3	4	4	5	3

गुरुष्टक वर्ग

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
ग्रह						मं०	सू०शु०	श०बु०	चं०	गु०		
श०	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1
गु०	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	1
मं०	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1
सू०	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0
शु०	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1
बु०	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1
चं०	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0
ल०	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0
रे० योग	7	2	5	5	6	3	5	5	4	5	4	5
बि०योग	1	6	3	3	2	5	3	3	4	3	4	4

शुक्राष्टक वर्ग

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
ग्रह						मं०	सू०शु०	श०बु०	चं०	गु०		
श०	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1
गु०	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0
मं०	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0
सू०	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	0
शु०	0	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	0
बु०	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1
चं०	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1
ल०	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1
रे० योग	3	4	3	5	7	5	4	5	3	5	4	4
बि०योग	5	4	5	3	1	3	4	3	5	3	4	4

शनिष्टक वर्ग

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
ग्रह						मं०	सू०शु०	श०बु०	चं०	गु०		
श०	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1
गु०	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0
मं०	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0
सू०	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0
शु०	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1
बु०	1	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1
चं०	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0
ल०	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0
रे० योग	3	4	4	3	5	3	4	4	1	4	2	2
बि०योग	5	4	4	5	3	5	4	4	7	4	6	6

लग्नाष्टक वर्ग

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
ग्रह						मं०	सू०शु०	श०बु०	चं०	गु०		
श०	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0
गु०	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0
मं०	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0
सू०	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1
शु०	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0
बु०	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0
चं०	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0
ल०	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0
रे० योग	3	4	5	3	4	6	4	5	3	5	6	1
बि०योग	5	4	3	5	4	2	4	3	5	3	2	7

सर्वाष्टक वर्ग सारिणी

ग्रह राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
सू०	4	6	5	5	3	6	5	4	2	3	2	3
चं०	4	5	5	4	4	3	4	3	4	6	4	3
मं०	2	4	4	3	4	4	4	2	3	2	3	4
बु०	2	5	6	4	6	6	4	5	4	4	3	5
गु०	7	2	5	5	6	3	5	5	4	5	4	5
शु०	3	4	3	5	7	5	4	5	3	5	4	4
श०	3	4	4	3	5	3	4	4	1	4	2	2
ल०	3	4	5	3	4	6	4	5	3	5	6	1
रे० योग (शुभ)	28	34	37	32	39	36	34	33	24	34	28	27
बि०योग(अशुभ)	36	30	27	32	25	28	30	31	40	30	36	37

त्रिकोण शोधन :-

राशिचक्रं यथामार्गं निक्षिप्याष्टग्रहस्य च ।

त्रिकोणशोधनं कुर्यादादौ सर्वेषु राशिषु ।।[1]

सूर्य से शनि तक सात ग्रह और लग्न 8 इनका शून्य रेखात्मक 'अष्टक वर्ग' स्थापित करके त्रिकोण शोधन करना चाहिए ।

त्रिकोण राशियां :- 1. मेष, सिंह, धनु (1-5-9 राशि) पहला त्रिकोण

2. वृष, कन्या, मकर (2-6-10 राशि) दूसरा त्रिकोण

3. मिथुन, तुला, कुम्भ (3-7-11 राशि) तीसरा त्रिकोण

4. कर्क–वृश्चिक–मीन (4-8-12 राशि) चौथा त्रिकोण

त्रिकोण शोधन विधि :-

1. त्रिकोण शोधन में त्रिकोण राशियों में जो कम अंक हो वह अन्य दो राशियों में घटाने से शुद्ध फल प्राप्त होता है ।
2. यदि तीनों त्रिकोण राशियों में एक जैसा फल हो तो सभी के नीचे शून्य फल लेना पड़ेगा।
3. यदि त्रिकोण राशियों में एक का फल शून्य होगा तो अन्य दो का फल वही रहेगा ।

उपरोक्त नियमानुसार मानक उदाहरण पर घटित कर रहे हैं :–

सूर्याष्टक त्रिकोण शोधन

	मेष	सिंह	धनु
	4	3	2
—	2	2	2
	2	1	0

	वृष	कन्या	मकर
	6	6	3
—	3	3	3
	3	3	0

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 2, श्लोक 1, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

	मि०	तु०	कु०		क०	वृ०	मी०
	5	5	2		5	4	3
—	2	2	2	—	3	3	3
	3	3	0		2	1	0

मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
2	3	3	2	1	3	3	1	0	0	0	0	=	18

चन्द्राष्टक त्रिकोण शोधन

	मे०	सिं०	ध०		वृष	कन्या	मकर
	4	4	4		5	3	6
—	4	4	4	—	3	3	3
	0	0	0		2	0	3
	मि०	तु०	कु०		क०	वृ०	मी०
	5	4	4		4	3	3
—	4	4	4	—	3	3	3
	1	0	0		1	0	0

मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
0	2	1	1	0	0	0	0	0	3	0	0	=	7

मंगलाष्टक त्रिकोण शोधन

	मे०	सिं०	ध०		वृष	कन्या	मकर
	2	4	3		4	4	2
—	2	2	2	—	2	2	2
	0	2	1		2	2	0

	मि०	तु०	कु०			क०	वृ०	मी०
	4	4	3			3	2	4
—	3	3	3		—	2	2	2
	1	1	0			1	0	2

मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
0	2	1	1	2	2	1	0	1	0	0	2	=	12

बुधाष्टक त्रिकोण शोधन

	मे०	सिं०	ध०			वृष	कन्या	मकर
	2	6	4			5	6	4
—	2	2	2		—	4	4	4
	0	4	2			1	2	0

	मि०	तु०	कु०			क०	वृ०	मी०
	6	4	3			4	5	5
—	3	3	3		—	4	4	4
	3	1	0			0	1	1

मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
0	1	3	0	4	2	1	1	2	0	0	1	=	15

गुरुअष्टक त्रिकोण शोधन

	मे०	सिं०	ध०			वृष	कन्या	मकर
	7	6	4			2	3	5
—	2	2	2		—	2	2	2
	3	2	0			0	1	3

	मि०	तु०	कु०		क०	वृ०	मी०
	5	5	4		5	5	5
—	4	4	4	—	5	5	5
	1	1	0		0	0	0

मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
3	0	1	0	2	1	1	0	0	3	0	0	=	11

शुक्राष्टक त्रिकोण शोधन

	मे०	सिं०	ध०		वृष	कन्या	मकर
	3	7	3		4	5	5
—	3	3	3	—	4	4	4
	0	4	0		0	1	1

	मि०	तु०	कु०		क०	वृ०	मी०
	3	4	4		5	5	4
—	3	3	3	—	4	4	4
	0	1	1		1	1	0

मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
0	0	0	1	4	1	1	1	0	1	1	0	=	10

शनिअष्टक त्रिकोण शोधन

	मे०	सिं०	ध०		वृष	कन्या	मकर
	3	5	1		4	3	4
—	1	1	1	—	3	3	3
	2	4	0		1	0	1

	मि०	तु०	कु०			क०	वृ०	मी०
	4	4	2			3	4	2
—	2	2	2		—	2	2	2
	2	2	0			1	2	0

मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
2	1	2	1	4	0	2	2	0	1	0	0	=	15

लग्नाष्टक त्रिकोण शोधन

	मे०	सिं०	ध०			वृष	कन्या	मकर
	3	4	3			4	6	5
—	3	3	3		—	4	4	4
	0	1	0			0	2	1
	मि०	तु०	कु०			क०	वृ०	मी०
	5	4	6			3	5	1
—	4	4	4		—	1	1	1
	1	0	2			2	4	0

मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
0	0	1	2	1	2	0	4	0	1	2	0	=	13

त्रिकोण शोधन रेखा

राशि ग्रह	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०	रे०कुल
सू०	2	3	3	2	1	3	3	1	0	0	0	0	18
चं०	0	2	1	1	0	0	0	0	0	3	0	0	7
मं०	0	2	1	1	2	2	1	0	1	0	0	2	12
बु०	0	1	3	0	4	2	1	1	2	0	0	1	15

गु०	3	0	1	0	2	1	1	0	0	3	0	0	11
शु०	0	0	0	1	4	1	1	1	0	1	1	0	10
श०	2	1	2	1	4	0	2	2	0	1	0	0	15
ल०	0	0	1	2	1	2	0	4	0	1	2	0	13

एकाधिपत्य शोधन :-

एवं त्रिकोणं संशोध्य पश्चादेकाधिपत्यता ।
क्षेत्रद्वये फलानि स्युस्तदा संशोधयेद्बुधः ।।
क्षीणेन सह चान्यस्मिञ्छोधयेद्ग्रहवर्जिते ।
ग्रहयुक्ते फले हीने ग्रहाभावे फलाधिके ।।
अनेन सह चान्यस्मिञ्छोधयेद् ग्रहवर्जिते।
फलाधिके ग्रहैर्युक्ते चान्यस्मिन्सर्वमुत्सृजेत् ।।
उभयोर्ग्रहसंयुक्ते न संशोध्यः कदाचन ।
उभयत्रग्रहाभावे समत्वे सफलं त्यजेत् ।।
सग्रहाग्रहयोस्तुल्ये सर्वं संशोध्यमग्रहे ।
कुलीरसिंहयो राश्योःपृथक् क्षेत्रं पृथक् फलम् ।।[1]

एकाधिपत्य शोधन विधि :- त्रिकोण शोधन के उपरांत एकाधिपत्य शोधन किया जाता है । इसके सात नियम दिये गये हैं जो निम्न प्रकार से हैं ।

1. ग्रह की दोनो राशि ग्रह रहित होंगे तो अधिक में से न्यून को घटाना, अधिक–न्यून का शोधन करना। जैसे मं० की मेष वृश्चिक, बुध की मिथुन कन्या आदि इसमें सूर्य और चंद्र की राशि नहीं होगी।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 3, श्लोक 1 से 5, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

2. ग्रह की दोनो राशि सग्रह हो तो शोधन नहीं करना ।
3. ग्रह की ग्रहयुक्त राशि कम फल, अग्रह अधिक हो तो अधिक में अल्प घटाना, सग्रह का फल यथावत रखना ।
4. सग्रह राशि फलाधिक हो तो अग्रह राशि का फल शून्य होता है ।
5. दोनो राशि अग्रह हो, फल तुल्य हो तो दोनों में शून्य करना ।
6. यदि एक राशि सग्रह व दूसरी राशि अग्रह हो, फल समान हो तो अग्रह के फल का शून्य कर देना ।
7. कर्क व सिंह राशि का एक–एक स्वमी होने से शोधन नहीं होता ।

सूर्याष्टक ऐकाधिपत्य शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
ग्रह						मं०	सु०शु०	श०बु०	च०	गु०				
त्रि०शो०रेखा	2	3	3	2	1	3	3	1	0	0	0	0	=	18
ऐ०शो०रेखा	1	0	0	2	1	3	3	1	0	0	0	0	=	11

चन्द्राष्टक ऐकाधिपत्य शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
ग्रह						मं०	सु०शु०	श०बु०	च०	गु०				
त्रि०शो०रेखा	0	2	1	1	0	0	0	0	0	3	0	0	=	7
ऐ०शो०रेखा	0	2	1	1	0	0	0	0	0	3	0	0	=	7

मंगलाष्टक ऐकाधिपत्य शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
ग्रह						मं०	सु०शु०	श०बु०	च०	गु०				
त्रि०शो०रेखा	0	2	1	1	2	2	1	0	1	0	0	2	=	12
ऐ०शो०रेखा	0	1	0	1	2	2	1	0	1	0	0	1	=	9

बुधाष्टक ऐकाधिपत्य शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
ग्रह						मं०	सु०शु०	श०बु०	च०	गु०				
त्रि०शो०रेखा	0	1	3	0	4	2	1	1	2	0	0	1	=	15
ऐ०शो०रेखा	0	0	1	0	4	2	1	1	2	0	0	0	=	11

गुरुअष्टक ऐकाधिपत्य शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
ग्रह						मं०	सु०शु०	श०बु०	च०	गु०				
त्रि०शो०रेखा	3	0	1	0	2	1	1	0	0	3	0	0	=	11
ऐ०शो०रेखा	3	0	0	0	2	1	1	0	0	3	0	0	=	10

शुक्राष्टक ऐकाधिपत्य शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
ग्रह						मं०	सु०शु०	श०बु०	च०	गु०				
त्रि०शो०रेखा	0	0	0	1	4	1	1	1	0	1	1	0	=	10
ऐ०शो०रेखा	0	0	0	1	4	1	1	1	0	1	0	0	=	9

शनिअष्टक ऐकाधिपत्य शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
ग्रह						मं०	सु०शु०	श०बु०	च०	गु०				
त्रि०शो०रेखा	2	1	2	1	4	0	2	2	0	1	0	0	=	15
ऐ०शो०रेखा	0	0	2	1	4	0	2	2	0	1	0	0	=	12

लग्नाष्टक ऐकाधिपत्य शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
ग्रह						मं०	सु०शु०	श०बु०	च०	गु०				
त्रि०शो०रेखा	0	0	1	2	1	2	0	4	0	1	2	0	=	13
ऐ०शो०रेखा	0	0	0	2	1	2	0	4	0	1	1	0	=	11

पिंडोत्पत्ति :-

शोध्यावशेषं संस्थाप्य राशिमानेन वर्द्धयेत् ।

ग्रहयुक्तेऽपि तद्राशौ ग्रहमानेन वर्द्धयेत् ।।[1]

त्रिकोणशोधन के पश्चात् ऐकाधिपत्यशोधन द्वारा प्राप्त अंक को राशिगुणक और ग्रह गुणक से गुणा कर सबका योग करने से 'पिण्ड' (राशि संख्या) प्राप्त होती है ।

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय चार श्लोक 1-2 में पिंडोत्पत्ति तथा राशि ग्रह गुणक ध्रुवांक के बारे में बतलाया गया है । इसमें ग्रह पिंड व राशि पिंड कैसे बनाये तथा राशि व ग्रह के गुणक ध्रुवांक तथा शोध्य पिंड की रीति दी है । जो निम्न प्रकार से है :–

राशि गुणक ध्रुवांक

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
गुणक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12

ग्रह गुणक ध्रुवांक

ग्रह	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
गुणक	5	5	8	5	10	7	5

पिण्ड साधन विधि :- ऐकाधिपत्य शोधन के उपरांत जो अंक प्राप्त हों उनमें उपरोक्त राशि गुणक व ग्रह गुणक की गुणाकर अलग–अलग जोड़े। फिर दोनो को योग करने पर शोध्य पिंड

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तराखण्ड, अध्याय 4, श्लोक 1, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

आयेगा जिसका अष्टक वर्ग फलित में उपयोग होगा।

सू० पिण्ड शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
ऐ०शो० रेखा	1	0	0	2	1	3	3	1	0	0	0	0		
राशि गुणक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12		
राशि पिण्ड	7	0	0	8	10	15	21	8	0	0	0	0	=	69
ग्रह लग्न						मं०	सू०	श०	चं०	गु०				
							शु०	बु०						
ग्रह गुणक						8	5	5	5	10				
							7	5						
ग्रह गुणक						24	15	5						
							21	5					=	70

चन्द्र पिण्ड शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
ऐ०शो० रेखा	0	2	1	1	0	0	0	0	0	3	0	0		
राशि गुणक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12		
राशि पिण्ड		20	8	4						15			=	47
ग्रह लग्न						मं०	सू०	श०	चं०	गु०				
							शु०	बु०						
ग्रह गुणक						8	5	5	5	10				
							7	5						
ग्रह गुणक														

मंगल पिण्ड शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
ऐ०शो० रेखा	0	1	0	1	2	2	1	0	1	0	0	1		
राशि गुणक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12		
राशि पिण्ड		10		4	20	10	7		9			12	=	72
ग्रह लग्न						मं०	सू०	श०	चं०	गु०				
							शु०	बु०						
ग्रह गुणक						8	5	5	5	10				
							7	5						
ग्रह गुणक						16	5		5					
							7						=	33

बुध पिण्ड शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
ऐ०शो० रेखा	0	0	1	0	4	2	1	1	2	0	0	0		
राशि गुणक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12		
राशि पिण्ड			8		40	10	7	8	18				=	91
ग्रह लग्न						मं०	सू०	श०	चं०	गु०				
							शु०	बु०						
ग्रह गुणक						8	5	5	5	10				
							7	5						
ग्रह गुणक						16	5	5	10					
							7	7					=	39

गुरु पिण्ड शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
ऐ०शो० रेखा	3	0	0	0	2	1	1	0	0	3	0	0		
राशि गुणक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12		
राशि पिण्ड	21				20	5	7	0	0	15	0	0	=	68
ग्रह लग्न						मं०	सू०	श०	चं०	गु०				
							शु०	बु०						
ग्रह गुणक						8	5	5	5	10				
							7	5						
ग्रह गुणक						8	5			30				
							7						=	50

शुक्र पिण्ड शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०		
ऐ०शो० रेखा	0	0	0	1	4	1	1	1	0	1	0	0		
राशि गुणक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12		
राशि पिण्ड				4	40	5	7	8		5			=	69
ग्रह लग्न						मं०	सू०	श०	चं०	गु०				
							शु०	बु०						
ग्रह गुणक						8	5	5	5	10				
							7	5						
ग्रह गुणक						8	5	5		10				
							7	7					=	40

शनि पिण्ड शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०	
ऐ०शो० रेखा	0	0	2	1	4	0	2	2	0	1	0	0	
राशि गुणक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12	
राशि पिण्ड			16	4	40		14	16		5			= 95
ग्रह लग्न						मं०	सू०	श०	चं०	गु०			
							शु०	बु०					
ग्रह गुणक						8	5	5	5	10			
							7	5					
ग्रह गुणक						10	10			10			
						14	10						= 54

लग्न पिण्ड शोधन

राशि	मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०	
ऐ०शो० रेखा	0	0	0	2	1	2	0	4	0	1	1	0	
राशि गुणक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12	
राशि पिण्ड				8	10	10		32	5	11			= 76
ग्रह लग्न						मं०	सू०	श०	चं०	गु०			
							शु०	बु०					
ग्रह गुणक						8	5	5	5	10			
							7	5					
ग्रह गुणक						16		20		10			
								20					= 46

शोध्य पिण्ड

ल० ग्रह	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ल०
राशि पिण्ड	69	47	72	91	68	69	95	76
ग्रह पिण्ड	70	30	33	39	50	40	54	66
शोध्य पिण्ड	139	77	105	130	118	109	149	142

* * *

अध्याय-9

सुदर्शन चक्र

विश्वचक्रं कालचक्रं दिव्यचक्रं सुदर्शनम् ।

विष्णोः करांबुजावासमीडे तज्ज्ञनमद्भुतम् ।।

जो विश्व–संसार का चक्र समयफलसूचक है, देवता भी चाहें ऐसा सुदर्शन नामक चक्र के समान ज्योतिषशास्त्र का सारभूत चक्र है। अतः सर्वश्रेष्ठ होने पर इसकी प्रशंसा करते हैं। भगवान विष्णु के कर कमल में रहने वाले चक्र की वंदना करते हैं। समस्त ज्योतिषशास्त्र का तत्व कामधेनु के समान यह सुदर्शन चक्र है।

सुदर्शनं द्वादशारं जन्मभेंद्वर्कराशितः ।

केन्द्रकोणाष्टगो राहुः पापार्त्यै च शुभो मुदे ।।

तत्त्वाद्यैर्वर्षमासाद्यद्व्येकघस्रन्प्रवर्तयेत् ।

विरिष्फारिशुभैः पापैस्त्रिषडायेषु वै शुभम् ।।

तं तं भावं प्रकल्प्यांगं तत्तत्न्वादिजं फलम् ।

गुरूपदेशात्संवाच्यं भोजनं स्वप्नपूर्वकम् ।।

भावेशादिद्वादशानां दशवर्षेषु कल्पयेत् ।

तदाद्यंतर्दशास्तद्वन्मासादौ तद्वलैः शुभाः ।।

सुदर्शनं द्वादशारं वृत्तत्रयसमन्वितम् ।।

पूर्ववृत्ते जन्मलग्नाइद्भावाः खेचरसंयुताः ।।

तदूर्ध्ववृत्ते चंद्राच्च भावाः खेटसमन्विताः ।

तदूर्ध्ववृत्ते सूर्याच्च भावा लेख्याः सखेचराः ।।[1]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 47, श्लोक 14 से 20, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

विश्व–संसार का चक्र समयफल सूचक है । यह समय का चक्र है। इसके ज्ञान प्राप्त होने पर ज्योतिष शास्त्र के सार का ज्ञान होता है।

सुदर्शन चक्र साधन विधि :-

12 कोष्टक का चक्र बनायें । इसके तीन भाग करें । इसके अन्तर भाग में जन्म लग्न, मध्य भाग में चन्द्र कुण्डली तथा बाह्य चक्र में सूर्य कुण्डली स्थापित करें । सभी ग्रह तीनों कुण्डलियों में राशि अनुसार स्थापित करने से सुदर्शन चक्र तैयार होगा । इसके लिए लग्न कुण्डली का ज्ञान जरुरी है जो हम पहले निकाल चुके हैं । सुदर्शन चक्र निम्न प्रकार से हैं :–

सुदर्शन चक्र
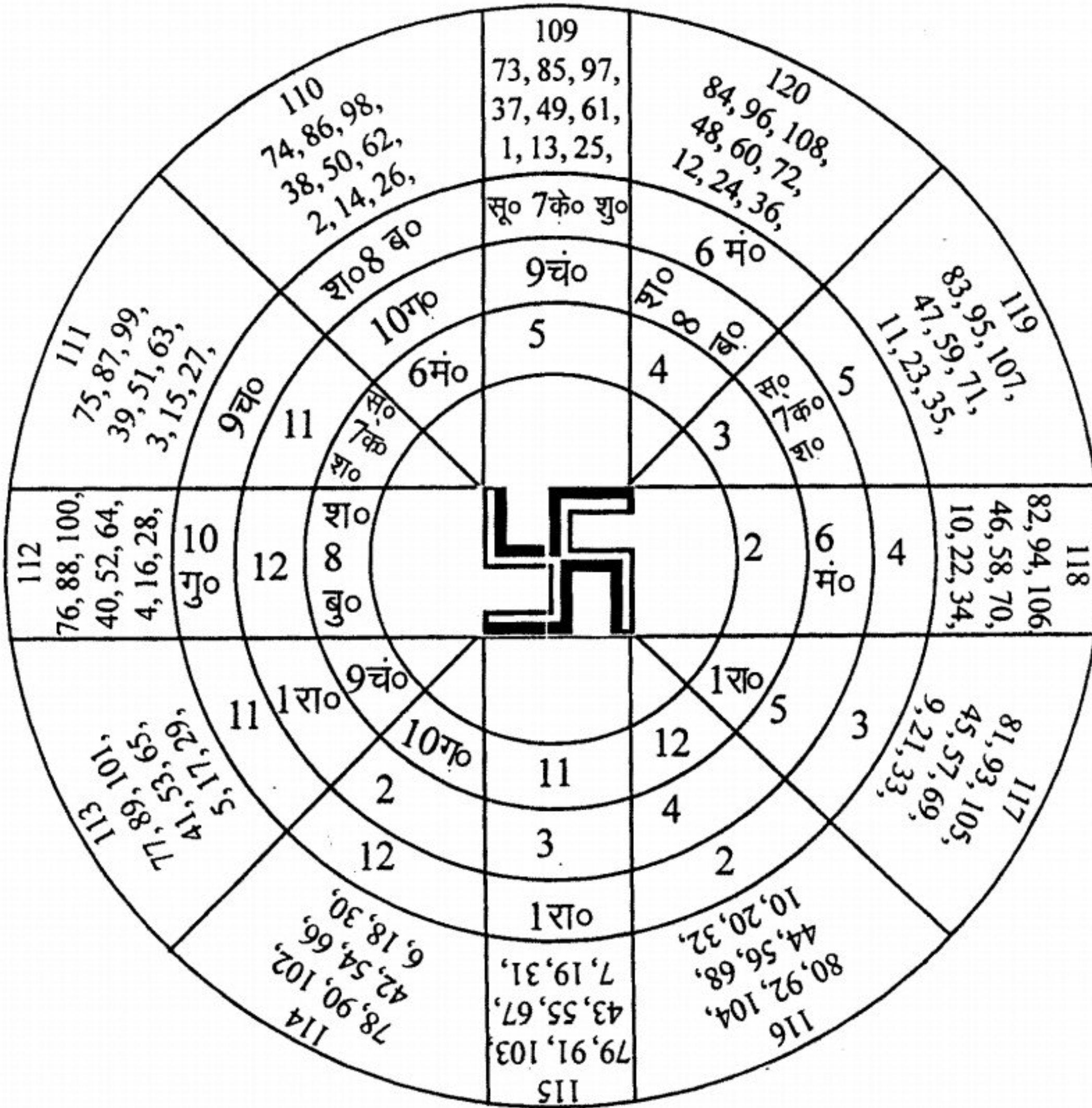
सुदर्शन चक्र में आयु के वर्षो की गणना भी दिखाई गई है । जिससे भविष्य फल जानने में आसानी होगी ।

प्रथम प्रकार की आयु 120 वर्ष की संख्या को 12 भागों में बाँट कर चक्र के एक–एक घर में 10-10 वर्ष की कल्पना करें । फिर उस भाव से 10-10 मास की अर्न्तदशा उस भाव से बारहवें भाव तक करें । यहाँ एक भाव की दशा में सभी भावों का 10-10 मास का अन्तर हैं । दशा निम्न प्रकार से हैं :–

भाव दशा चक्र 120 वर्ष

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
	10	10	10	10	90	10	10	10	10	10	0	10	वर्ष
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	मास
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
1985	1995	2005	2015	2025	2035	2045	2055	2065	2075	2085	2095	2105	सन्
11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	मा
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता

प्रत्येक भाव की दशा में दस–दस मास का अन्तर

प्रथम भाव की अन्तर दशा

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	भाव
	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	मास
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	घ०
1985	1986	1987	1988	1989	1990	1990	1991	1992	1993	1993	1995	1996	सन्
11	9	7	5	3	1	11	9	7	5	3	1	11	मा
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

द्वितीय भाव की अन्तर दशा

	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	भाव
	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	मास
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	घ०
1995	1996	1997	1998	1999	2000	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2005	सन्
11	9	7	5	3	1	11	9	7	5	3	1	11	मा
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

तृतीय भाव की अन्तर दशा

	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	भाव
	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	मास
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	घ०
2005	2006	2007	2008	2009	2010	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2015	सन्
11	9	7	5	3	1	11	9	7	5	3	1	11	मा
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

चतुर्थ भाव की अन्तर दशा

	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	भाव
	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	मास
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	घ०
2015	2016	2017	2018	2019	2020	2020	2021	2022	2023	2024	2025	2025	सन्
11	9	7	5	3	1	11	9	7	5	3	1	11	मा
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

पञ्चम भाव की अन्तर दशा

	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	भाव
	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	मास
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	घ०
2025	2026	2027	2028	2029	2030	2030	2031	2032	2033	2034	2035	2035	सन्
11	9	7	5	3	1	11	9	7	5	3	1	11	मा
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

षष्ट भाव की अन्तर दशा

	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	भाव
	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	मास
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	घ०
2035	2036	2037	2038	2039	2040	2040	2041	2042	2043	2044	2045	2045	सन्
11	9	7	5	3	1	11	9	7	5	3	1	11	मा
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

सप्तम भाव की अन्तर दशा

	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	भाव
	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	मास
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	घ०
2045	2046	2047	2048	2049	2050	2050	2051	2052	2053	2054	2055	2055	सन्
11	9	7	5	3	1	11	9	7	5	3	1	11	मा
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

अष्टम भाव की अन्तर दशा

	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	भाव
	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	मास
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	घ०
2055	2056	2057	2058	2059	2060	2060	2061	2062	2063	2064	2065	2065	सन्
11	9	7	5	3	1	11	9	7	5	3	1	11	मा
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

नवम भाव की अन्तर दशा

	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	भाव
	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	मास
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	घ०
2065	2066	2067	2068	2069	2070	2070	2071	2072	2073	2074	2075	2075	सन्
11	9	7	5	3	1	11	9	7	5	3	1	11	मा
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

दशम भाव की अन्तर दशा

	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	भाव
	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	मास
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	घ०
2075	2076	2077	2078	2079	2080	2080	2081	2082	2083	2084	2085	2085	सन्
11	9	7	5	3	1	11	9	7	5	3	1	11	मा
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

एकादश भाव की अन्तर दशा

	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	भाव
	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	मास
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	घ०
2085	2086	2087	2088	2089	2090	2090	2091	2092	2093	2094	2095	2095	सन्
11	9	7	5	3	1	11	9	7	5	3	1	11	मा
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

द्वादश भाव की अन्तर दशा

	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	भाव
	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	मास
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	घ०
2095	2096	2097	2098	2099	2100	2101	2101	2102	2103	2104	2105	2105	सन्
11	9	7	5	3	1	11	9	7	5	3	1	11	मा
15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	15	ता०

दूसरा प्रकार :- सुदर्शन चक्र के 12 भावों में जन्म लग्न से प्रत्येक भाव में एक–एक वर्ष की कल्पना करें । इस प्रकार दस आवृत्ति होने से 120 वर्ष पूरे होंगे । इसकी अन्तरदशा प्रत्येक भाव में एक–एक मास प्रत्येक भाव का समझना चाहिये । इसी प्रकार एक मास को 12 भाग में करने से 2½-2½ दिन होते हैं । इसका प्रत्यन्तर दशा के रूप में करना चाहिए । इसी प्रकार सूक्ष्मान्तर 2-30 को और प्राणान्तर एक–एक घटी का उसी–उसी भाव पर कल्पना करके उर्पयुक्त ग्रहयोगानुसार वर्ष, मास, दिन, घटी तक का निर्णन कर शुभाशुभ का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं । यह ज्योतिविदों के लिए काम धेनु के समान है ।

वृत्तत्रयेऽपि ये खेटा यत्र राशो व्यवस्थिताः ।

ते तत्र संलेख्यास्तस्माद्भावान्निरीक्षयेत् ।।

यद्यद्वृत्ते तु यद्भावात्केंद्रकोणाष्टगस्तमः ।

पापा वा यत्र बहवस्तत्तद्भावविनाशनम् ।।

यत्र भावे सैंहिकेयाऽवश्यं तद्भावहानिदः ।

यस्माद्भावात्केंद्रकोणाष्टमे सौम्याः शुभप्रदाः ।।

तदा तद्भाववृद्धिः स्यात्त्रिवृत्तेपि शुभा ग्रहाः ।

केंद्रादिस्थानगास्ते चेच्छुभाधिक्यफलप्रदाः ।।

तथा पापखगास्तत्र पापारिष्टफलप्रदाः ।

शुभेन वीक्षिताः सौम्यं फलं तद्भावजं समम् ।।[1]

तीनों वृत्तों में जो ग्रह जिस भाव में हों वहीं लिखे । पश्चात् देखे । जिस जिस वृत्त में जिस जिस भाव से केन्द्र, त्रिकोण तथा अष्टमभाव में राहु हो या बहुत पापग्रह हों तो उस उस भाव का नाश होता है । और जिस भाव में राहु हो उसका अवश्य ही नाश होता है। जिस भाव से केन्द्र, त्रिकोण तथा अष्टम में सौम्य ग्रह हों वह भाव श्रेष्ठ है । उस भाव की वृद्धि होती है । तीनों वृत्तों में यदि शुभग्रह केन्द्र, त्रिकोण भाव में हो तो अधिक शुभ फलप्रद होते हैं । यदि उन स्थानों में पापग्रह हों तो दुःख अरिष्ट फल देने वाले होते हैं ।

और यदि वे पापग्रह शुभग्रहों से दृष्ट हों तो समान फल होता है ।

राहु दृष्टि :-

सुतमदननवांते पूर्णदृष्टिं तमस्य युगलदशमगेहे चार्धदृष्टिं वदंति ।

सहजरिपुविश्यन्पाददृष्टिं मुनींद्रा निजभवनमुपेतो लोचनांधः प्रदिष्टः ।।[2]

राहु की दृष्टि पंचम, सप्तम, नवम पर पूर्ण दृष्टि 2-10 में अर्ध दृष्टि 3-6 में पाप दृष्टि । अपने

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 47, श्लोक 21 से 26, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. वही, श्लोक 27 ।

भाव में हीन दृष्टि ।

सूर्य की सप्तम दृष्टि, चन्द्र की सप्तम दृष्टि, मंगल की चतुर्थ, सप्तम तथा अष्टम दृष्टि। बुध की सप्तम दृष्टि । गुरु की पंचम्, सप्तम् व नवम् दृष्टि, शुक्र की सप्तम् दृष्टि, शनि की तृतीय, सप्तम् तथा दशम् दृष्टि का विचार करना चाहिए।

फलादेश :- फलादेश में सबसे पहले राहू पर विचार किया जाता है ।

1. मानक चक्र में राहू पंचम, सप्तम तथा नवम् भाव में स्थित है । पंचम में राहू के साथ चन्द्र स्थित है तथा शुक्र की सप्तम् दृष्टि है अतः इस भाव का फल समान रहेगा। जैसे शिक्षा, संतान, मन्त्र शक्ति आदि का ।

2. राहू की सप्तम पर पाप दृष्टि है लेकिन शुक्र तथा चन्द्र की सप्तम् सोम्य दृष्टि आने इस भाव का भी समान फल होगा, जैसे विवाह, वाणिज्यादि ।

3. राहू की दशम पर छटी पाप दृष्टि है । लेकिन गुरु तथा बुध की सोम्य दृष्टि से इस भाव का समान फल होगा ।

4. दो तथा दश पर अर्ध दृष्टि है । दो में गुरु स्थित है तथा बुध, मंगल तथा शनि की दृष्टि अतः समान फल होगा ।

5. नवम् पर राहू की पंचम दृष्टि है । वहाँ राहू बैठा है । चन्द्र, शुक्र तथा सूर्य की सप्तम दृष्टि भी है अतः समान फल होगा ।

6. जिस भाव से केन्द्र, त्रिकोण तथा अष्टम् में राहू हो तो उस भाव का नाश करता है। लेकिन जहाँ सौम्य ग्रह स्थित हो और सौम्य ग्रहों की दृष्टि हो तो समान फल कारक होता है।

अब देखें राहू प्रथम भाव से त्रिकोण पंचम दूसरा केन्द्र सप्तम तथा त्रिकोण नवम् में है । इन्हीं भावों पर सोम्य ग्रहों की दृष्टि भी है अतः समान फ़ल होगा ।

अतः सिद्धांत यह है कि राहू जिस स्थान पर हो या जिस स्थान से केन्द्र त्रिकोण में हो उस–उस स्थान पर सोम्य ग्रह हो या सोम्य ग्रहों की दृष्टि हो तो उस स्थान का समान फल होगा । क्रूर ग्रहों की दृष्टि हों तो अनिष्ट फल घटित होगा । राहू की सुदर्शन चक्र में पंचम्, सप्तम् तथा नवम् पर स्थिति है । इन तीनो भावों से ही उपरोक्त नियमानुसार फलादेश देखना चाहिए ।

दशा अन्तरदशा फलादेश :-

कुल दशा 120 वर्ष को 12 भावों मे विभक्त कर एक–एक भाव की 10 वर्ष दशा होगी। प्रत्येक भाव में 10-10 मास का अन्तर निकाल चुके हैं । उस अन्तर में जिस भाव पर राहू का समय होगा वह समय कष्ट कारक होगा । यहाँ पर इस बात का भी ध्यान देना होगा कि उस–उस भाव पर कितने शुभ व अशुभ ग्रहों की दृष्टि है । उसी के अनुसार फल घटित होगा ।

दूसरे नियमानुसार फलादेश में वर्ष, मास, दिन तथा घटी का फल का भी शुभ ग्रहों तथा क्रूर ग्रहों के अनुसार ज्ञात किया जा सकता है । जहाँ अन्तर, प्रत्यन्तर, सूक्ष्म तथा प्राण दशा ज्ञात कर शुभाशुभ फल का ज्ञान उपरोक्त नियमानुसार ही प्राप्त करें ।

* * *

द्वितीय
फलित खण्ड

अध्याय-10

भावाधीश के आधार पर फलादेश

जातक की जन्म कुण्डली में बारह भाव होते हैं जिनके अधिपति अलग–अलग होते हैं। सूर्य तथा चन्द्रमा एक–एक भाव के तथा मंगल, बुध, गुरू, शुक्र तथा शनि दो–दो भावों के अधिपति होंगे। प्रत्येक भाव का अधिपति कुण्डली के अलग–अलग भावों में विभिन्न प्रकार का फल प्रदान करता है। इसका विशद् विवरण अनेक ज्योतिष ग्रन्थों सहित "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" में भी मिलता है।[1]

लग्नेश का फल :- लग्नेश के प्रथम भाव में होने पर जातक के पास स्वयं अर्जित धन होता है, वह मनस्वी, चंचल तथा दो स्त्रीवाला होता है।[2] वह जातक दीर्घजीवी, शरीर से पुष्ट तथा भूमि लाभ प्राप्त करता है।[3] लग्नेश दूसरे भाव में होने पर लाभ प्राप्त, सुशील, धर्मात्मा तथा स्त्री जैसे स्वभाव वाला होता है। यदि लग्नेश तृतीय या पृष्ठ भाव में हो तो जातक सिंह के समान पराक्रमी, सर्वगुण सम्पन्न सम्मान प्राप्त परन्तु दो स्त्रियों वाला होता है। उसके मित्र अधिक होंगें । चतुर्थ भाव में लग्नेश रहने से जातक को माता–पिता का पूर्ण सुख मिलता है। वह कामी सुन्दर तथा गुणवान होगा। दशम् भाव का फल भी चतुर्थ के समान होता है।जबकि "मानसागरी" के अनुसार[4] लग्नेश चतुर्थ में होने पर जातक किसी का दत्तक पुत्र होता है तथा वह अधिक भोजन करने वाला होता है। लग्नेश के पंचम भाव में होने से संतान संख्या कम होती है तथा वह राज कार्य में निपुण होता है उसके दो विवाह होते है। सप्तम् भाव में लग्नेश के रहने से स्त्री सुख में कमी होती है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पेज 131–138, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
2. उपरोक्त, पूर्वखण्ड अध्याय 5, श्लोक 15 ।
3. "मानसागरी", श्री मधुकान्त झा, अध्याय 3, श्लोक 2, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
4. उपरोक्त, अध्याय 3, श्लोक 5।

जातक प्रवासी भी हो सकता है। वह राजा या दरिद्र होगा। अष्टम् या द्वादश भाव में लग्नेश होने से अनेक विद्याओं का ज्ञाता होता है परन्तु उसमें क्रोध, परनारी गमन, चोरी जैसे दुर्गुण होते हैं। नवम् भाव में लग्नेश जातक को भाग्यवान, धनी तथा धार्मिक बनाता है।[1]

धनेश का द्वादश भावों में फल :- धनेश के लग्न में होने से जातक कंजूस, व्यापारी, धनवान तथा अनेक भोग प्राप्त करता है।[2] दूसरे स्थान में धनवान, अभिमानी, अनेक स्त्रीवाला परन्तु पुत्रहीन बनाता है। तीसरे तथा चौथे भाव में धनेश जातक को विक्रमी गुणवान, लोभी परन्तु देवताओं का निन्दक बनाता है । मानक उदाहरण में उपरोक्त फल होगा। जबकि पष्ठ भाव में शत्रु से धन प्राप्त तथा धन नाश का भी योग बनाता है। "मानसागरी" के अनुसार धनेश यदि षष्ठ भाव में शुभ ग्रह हो तो भूमि लाभ देता है जबकि पाप ग्रह होने पर निर्धन बनाता है।[3] सप्तम् भाव में धनेश वैद्य बनाता है तथा अष्टम् में होने से भूमि में गढा धन प्राप्त होता है परन्तु स्त्री सुख में बाधक होता है।[4] यदि द्वितीयेश नवम् या एकादश भाव में हो तो जातक धनवान, चतुर, उद्यमी होता है। दशम् भाव में होने पर मान सम्मान् प्राप्त, धन, स्त्री, विद्या प्राप्त परन्तु संतानहीन होता है। यदि धनेश द्वादशभाव में हो तो साहसी, दरिद्र राजसेवक बनाता है परन्तु जातक का ज्येष्ठ पुत्र नहीं रहता है। "मानसागरी" के अनुसार यदि धनेश शुभ ग्रह हो तथा द्वादश में हो तो प्रसिद्ध व्यापारी बनाता है।

तृतीयेश का द्वादश भावों में फल :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" के अनुसार तृतीयेश लग्न में होने पर जातक स्वयं धन अर्जित करता है। वह दुर्बल, मूर्ख, रोगी तथा परसेवी होता

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड पंचम अध्याय, श्लोक 22, खेमराज श्रीकृष्णदास श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
2. "जातक संग्रह", काशीराम पाठक, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस कल्याण, मुम्बई, पेज 53।
3. "मानसागरी", 3.6 मधुकांत झा, अध्याय 3 से 6, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी
4. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय श्लोक 27, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।

है जबकि धन स्थान में जातक को मोटा तथा कम काम करने वाला बनाता है।[1] यदि तृतीयेश, तृतीय भाव में हो तो व्यक्ति को पराक्रमी, सबका मित्र राजा से लाभ प्राप्त बनाता है।[2] वह जातक धनी, सुखी एवं प्रसन्न रहता है। मानक उदाहरण में यह फल घटित होगा। यदि तृतीयेश चौथे, पांचवे या दशम भाव में हो तो जातक धनवान, सुखी, बुद्धिमान होगा परन्तु उसकी स्त्री, क्रूर स्वभाव की होगी।[3]

"सारावली" में लिखा है कि :-

माता सह वैरकरः पितृवितस्य भक्षकः पुरूषः ।

यदि तृतीयेश चतुर्थ भाव में हो तो वह जातक माता का शत्रु तथा पिता के धन का प्रयोग करने वाला होता है।[4] यदि तृतीयेश षष्ठ भाव में हो तो मामा का नाशंक, भ्राता से द्रोह करने वाला परन्तु धनवान बनाता है। तृतीयेश के नवम् तथा द्वादश में रहने से स्त्री के द्वारा भाग्योदय होता है जबकि जातक का पिता चोर बन जाता है।[5] यदि कुण्डली में तृतीयेश सप्तम अथवा अष्टम स्थान में हो तो चोर, परस्त्रीगामी तथा रोगी बनाता है तथा उसकी मृत्यु राजकार्य में होती है।

चतुर्थेश का द्वादश भावों में फल :- चतुर्थेश यदि प्रथम भाव में हो तो पिता पुत्र में प्रेम रहता है तथा वह पिता के नाम से ही प्रसिद्ध होता है।[6] जबकि धन भाव में होने पर सब

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 5, श्लोक 37–38, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
2. "जातक संग्रह", काशीराम पाठक, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस कल्याण, मुम्बई, पेज 71 ।
3. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 5 श्लोक 33, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
4. "मानसागरी", मधुकांत झा,चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी पेज 168 ।
5. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 5, श्लोक 35, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
6. "मानसागरी", मधुकांत झा,चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, पेज 170 ।

प्रकार की धन सम्पति प्राप्त करता है। वह सम्माननीय, साहसी, भोगी एवं कपटी होता है। चतुर्थ भाव में जातक सब प्रकार की सम्पदा प्राप्त, शीलवान, स्त्रीप्रिय होता है जबकि तृतीय भाव में रहने पर रोगी, गुणी, निज उपार्जित धनवाला होगा। "मानसागरी" के अनुसार वह माता पिता को अष्ट देने वाला होगा। महर्षि पराशर के अनुसार यदि चतुर्थेश पंचम या नवम भाव में हो तो धनवान, विष्णुभक्त, उद्योगी, सुखी सबसे प्रेम करने वाला बनाता है। षष्ठ भाव में होने पर जातक क्रोधी, चोर, यात्रा करने वाला तथा दुष्ट प्रवृति का होगा। सप्तम भाव में चतुर्येश जातक को विद्या युक्त, पिता की सम्पति का त्यागी तथा सभा में बोलने में असमर्थ बनाता है।

आठवें, बारहवें भाव में होने पर सुख विहीन बनाता है जबकि दशम् भाव में सभी प्रकार के सुख प्रदान करता है।[1]

पंचमेश का विभिन्न भावों में फल :- पंचमेश को सुतेश भी कहा जाता है महर्षि "पराशर" के अनुसार पंचमेश यदि प्रथम या तृतीय भाव में स्थित हो तो जातक कपटी, चुगलखोर तथा जीवन में किसी को कुछ भी न देने वाला होगा। जबकि "मानसागरी" के अनुसार वह विद्वान, अल्प संतान वाला तथा सत्कर्म करने वाला बनाएगा।[2] द्वितीय तथा चतुर्थ भाव में अनेक सुख देता है ।

इसके पंचम भाव में शुभ ग्रह होने से जातक पुत्रवान, मधुर वचन बोलने वाला धर्मात्मा तथा बुद्धिमान होता है। षष्ठ एवं द्वादश भाव में होने से जातक का पुत्र ही उसका शत्रु बन जाता है।[3] वह स्वयं रोगी तथा धनहीन होता है।[4] पुत्रेश के सप्तम भावस्थ होने पर जातक

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 5, श्लोक 37–38, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
2. "मानसागरी", मधुकांत झा,चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी पेज 172 ।
3. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 5 श्लोक 48, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
4. "मानसागरी", मधुकांत झा,चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, पेज 173 ।

तेजस्वी, भक्त, अभिमानी तथा लम्बे कद का होता है तथा शरीर गठीला होता है। जिसकी कुण्डली में पंचमेश अष्टम या नवम् भाव में हो तो वह जातक अनेक संतान वाला, श्वास रोगी तथ धनी होगा जबकि दशम् स्थान में रहने पर वह राजा के समान, विख्यात, लेखक तथा कुल का नाम उज्जवल करने वाला होता है। एकादश स्थान में अनेक लाभ देता है।

षष्ठेश का द्वादश भावों में फल :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" के अनुसार, "छठे भाव का स्वामी यदि लग्न या लाभ स्थान में हो तो वह जातक धनवान, कीर्तिवान, गुणवान तथा साहसी होता है परन्तु पुत्रहीन होता है।" "मानसागरी" के अनुसार, "वह स्वेच्छाचारी तथा परिवार को कष्ट देनेवाला होगा।"[1]

यदि षष्ठेश, षष्ठ स्थान में हो तो बन्धु शत्रु तथा पराए मित्र हो जाते हैं तथा व्यक्ति घमण्डी रहता है। अष्टम स्थान में जातक को षष्ठेश रोगी, द्वेषी, हिंसक तथा परदारागामी बनाता है।[2] भाग्य स्थान का षष्ठेश व्यापार में कभी लाभ कभी हानि प्रदान करता है। वह जातक लकड़ी पत्थर आदि का काम करने वाला होता है। "मानसागरी" के अनुसार, षष्ठेश तीसरे या चौथे स्थान में होने पर व्यक्ति चंचल धनवान, चुगलखोर तथा क्रोधी होता है। षष्ठेश के पंचम भाव में होने पर धन तथा मित्र अस्थायी होते है। जातक अपने आप में चतुर होता है।[3]

सप्तमेश का द्वादश भावों में फल :- अध्ययन ग्रन्थ के अनुसार यदि सप्तेश लग्न या सप्तम भाव में हो तो जातक पर स्त्रीगामी, दुष्टमती, वातरोगी, हृदयरोगी तथा चोर होता है।

---

1. "मानसागरी", मधुकांत झा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पेज 174 ।
2. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 5, श्लोक 57 खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
3. उपरोक्त श्लोक 61; "जातक संग्रह", काशीराम पाठक, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस कल्याण, मुम्बई, पेज 137 श्लोक 180 ।

सप्तमेशे तनौ चास्ते परजायासु लंपटः।

दुष्टो विचक्षणो धीरो वातरूक् स्थीयते हृदि।।[1]

यदि सप्तमेश षष्ठ या अष्टम् भाव में हो तो जातक का जीवन साथी रोगी, क्रोधी तथा दुःखी रहता है। अन्य मत से जातक के स्त्री–पुरुष से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते। वह परस्त्री गामी भी होता है।[2]

सप्तमेश के दूसरे तथा नौवें भाव में रहने से जातक अनेक स्त्रीभोगी, कोई भी कार्य पूरा न करने वाला होता है जबकि चतुर्थ तथा दशम् भाव में सप्तमेश जातक को धर्मात्मा, सत्यवादी तथा दंतरोगी बनाता है। परन्तु "मानसागरी" के अनुसार सप्तमेश का दशम् भाव में होना हानिकारक होता है।[3]

सप्तमेश के तीसरे तथा एकादश भाव में रहने से सन्तान हीनता या कन्या सन्तान होती हैं केवल यत्न करने से ही पुत्रसुख संभव होता है। सप्तमेश द्वादश में होने जातक को कंजूस, दरिद्र, सुन्दर स्त्रीवाला और व्यापारी बनाता है। सप्तमेश का पंचम में होना अत्यन्त शुभ माना गया है। इस प्रकार सार रूप में पाराशरी के अनुसार, सप्तमेश का चतुर्थ, पंचम एवं दशम् भाव में होना जातक के लिए सौभाग्यशाली होता है।

अष्टमेश का द्वादश भावों में फल :- अष्टमेश को सामान्यतः पाप माना गया है तथा "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" के अनुसार, अष्टमेश का फल सभी भावों में कुछ न कुछ बाध ाकारक होता है। यह अष्टम में व्यक्ति को जुआरी, चोर झूठा बनाता है। ग्यारहवें भाव में पापी नास्तिक, संतानहीन चौथे, दशवे भाव में चुगलखोर, डरपोक, मातापिता के सुख में कभी कारक होता है। पांच, ग्यारह भाव में परिवार की वृद्धि को रोकता है जबकि छठे तथा बारहवें

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 5 श्लोक 62, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
2. "वैदिक एस्ट्रोलोजी", के॰ एस. चरक, सिस्टम विजन, दिल्ली, पेज 246 ।
3. "मानसागरी", मधुकांत झा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पेज 179 ।

भाव में जातक को रोग, अपमृत्यु एवं कष्टदायक होता है।[1]

सप्तम में द्विभार्या योग बनाता है। "मानसागरी" के अनुसार अष्टमेश तृतीय भाव में भाई–बन्धु–मित्रों का विरोधी बनाता है जबकि नवम् भाव में होने पर हिंसक, बंधुरहित तथा शत्रुवर्ग में सम्मान पाने वाला होता है।[2]

भाग्येश का द्वादश भावों में फल :- भाग्येश यदि भाग्य में हो तो जातक गुणवान, रूपवान तथा बंधुओं से सुखी होता है। चतुर्थ या दशम् भाव में यह राजयोग कारक माना जाता है इससे जातक मंत्री, सेनापति, सुयश वाला, साहसी, पूजक तथा धर्मात्मा होता है। पंचम या एकादश में भी इसका फल उत्तम कहा गया है। इससे जातक भाग्यवान, गुरूभक्त, धीर, सम्माननीय, दीर्घआयु विख्यात एवं पुत्रवान होता है।[3]

भाग्येश बारहवे स्थान में जातक को भाग्यहीन, मामा तथा भ्राता सुख से वंचित करता है जबकि लग्न या सप्तम् में अनेक गुण उत्पन्न करता है। भाग्येश का दूसरे तथा तीसरे भाव में होना जातक को भविष्यचिंतक, गुणी धनी तथा कामी बनाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पाराशरी के अनुसार द्वादश भाव में ही नवमेश खराब फल देता है। जबकि मानसागरी के अनुसार छठे तथा बारहवें भाव में भी इसका फल अच्छा नहीं होता।[4]

दशामेश का द्वादश भावों में फल :- लग्न स्थित दशमेश जातक को हमेशा उन्नति की ओर अग्रसर करता है वह बाल्यवस्था में रोगी रहता है। वह दूर–दूर तक ख्याति प्राप्त

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 5, श्लोक 69–75, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
2. "मानसागरी", मधुकांत झा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पेज 181 ।
3. "मानसागरी", मधुकांत झा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पेज 184 तथा "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 5, श्लोक 76–78 खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
4. वही, पेज 185 ।

करता है। यदि दूसरे तीसरे या सप्तम भाव में हो तो जातक मनस्वी, चतुर वक्ता, गुणवान, सत्य बोलने वाला तथा सम्माननीय होता है। जिसकी कुंडली में दशमेश या कर्मेश चौथे या दशम् स्थान में हो तो वह व्यक्ति पराक्रमी, धर्मात्मा, सत्यवादी देवताओं व गुरू का आदर करने वाला होगा।[1]

पांचवे तथा ग्यारहवें भाव में भी सभी सुखदायक होता है। इसका छठे, आठवें बारहवे भाव में होना जातक के लिए कष्टदायक होता है। जिसका दशमेश नवम् भाव में रहता है वह राजपुरूष होता है । वह माता पिता का सम्मान करने वाला, धार्मिक तथा प्रसिद्ध होता है।[2]

एकादशेश का विभिन्न भावों में फल :- एकादशेश को लाभेश भी कहा जाता है। महर्षि पराशर के अनुसार इसकी स्थिति छठे, आठवें, बारहवें तथा सातवे भाव में अच्छी नहीं मानी गई हैं इस भावों में यह जातक को अनेक कष्ट तथा दुर्गुण प्रदान करता है जैसे बारहवें भाव में मलेच्छ, कामी, स्त्रीसंसर्गी, सप्तम भाव में भार्या विहीन तथा अष्टम में मूर्ख बनाता है।[3] जबकि "मानसागरी" के टीकाकार का मत है कि एकादशेश सप्तम् भाव में होने पर जातक की भार्या सुन्दर, सत्यवती, लक्ष्मीयुक्त एवं धार्मिक होगी।[4] "पाराशरी" के अनुसार लाभेश प्रथम, द्वितीय तथा पंचम भाव में जातक को धनवान, सात्विक, श्रेष्ठवक्ता सर्वसिद्धि सम्पन्न बनाता है जबकि तीसरे भाव में तीर्थ यात्रा का सौभाग्य दायक है। नवम् तथा दशम्

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 5, श्लोक 82–86, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
2. "मानसागरी", मधुकांत झा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पेज 183 ।
3. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 5, श्लोक 82–94, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
4. "मानसागरी", मधुकांत झा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पेज 183 ।

भाव में राजपुरूष चुतर, सत्यवादी तथा धर्मात्मा बनाता है। छठे भाव में जातक को नौकरी करने वाला बनाता है।

द्वादशेश का द्वादश भावों में फल :- द्वादशेश या व्ययेश लग्न या सप्तम में रहने से धन, स्त्री, विद्या रहित बनाता है। वह जातक दुर्बल कफ रोगी भी होता है। इसका छठे या बारहवे भाव में होना जातक को दुःख, कम संतान तथा क्रोध देता है । वह माता को मारने वाला हो सकता है। यदि यह दूसरे या अष्टम स्थान में हो तो शुभ माना गया है।

व्ययेशे द्वितीये रंध्रे विष्णु भक्ति समन्वितः।
धार्मिकः प्रियवादी च सम्पूर्ण गुण संयुतः।।[1]

इसका सहजभाव या भाग्य स्थान में होना पत्नी से प्रिय बंधुओं से तथा गुरू से द्वेष उत्पन्न करने वाला होता है। इसके धर्म तथा आय स्थान में रहने से पुत्र सुख में बाधा होती है। चतुर्थ मे रहने पर जातक की विद्या में बाधा, वाहन से कष्ट तथा पंचम भाव में संतान कष्ट प्रदायक है ।

* * *

---

1. ''बृहत्पाराशर–होराशास्त्र'', अध्याय 5, श्लोक 96, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।

अध्याय-11

ग्रहों का भावों तथा राशियों के आधार पर फलादेश

महर्षि पराशर के "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" ग्रन्थ में जहां ज्योतिष की अनेक विधाओं का वर्णन पाया जाता है वहीं ग्रहों का भावों तथा राशियों में फल न पाया जाना आश्चर्य जनक है। किसी भी प्रति में यह अध्याय नहीं है। प्राचीन काल में लिखने की सामग्री उपलब्ध न होने के कारण हजारों वर्षों तक ग्रन्थों का मौखिक रूप से एक पीढी से दूसरी में संचरण होता रहा। स्वाभाविक है कि इस प्रक्रिया में ग्रन्थों का रूप कुछ न कुछ बदलता गया। इसीलिए वेद, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों की विभिन्न पाण्डलिपियों में बहुत अधिक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारा अध्ययन ग्रन्थ भी इसका अपवाद नहीं है। महर्षि पराशर जैसे मूर्धन्य विद्वान इतने महत्वपूर्ण अध्याय का वर्णन न करे यह असम्भव लगता है। हमारी मान्यता है कि कालान्तर में यह अध्याय लुप्त हो गया। शोध कार्य की पूर्णता एवं फलित भाग को संतुलित करने के लिए इस अध्याय का आधार अन्य ग्रन्थों को बनाया गया है। जो स्वयं प्राचीन ग्रन्थों पर आधारित हैं।

सूर्य का विभिन्न भावों में फल :- कल्याण वर्मा विरचित "सारावली" के अनुसार प्रथम भाव में सूर्य होने पर जातक चौड़े माथे वाला, आलसी क्रोधी, लम्बा कद वाला क्षमा रहित, कठोर देहधारी होता है।[1] "जातक संग्रह" के अनुसार, 'उसके नेत्र में फूली या अंधा भी हो सकता है। उसे प्रहार से चोट लगती है।'[2] सूर्य के दूसरे भाव में रहने पर जातक को नौकर तथा चतुष्पदों का सुख मिलता है परन्तु राजा या चोर से धन हानि तथा सुख रहित होगा। तृतीय भाव का सूर्य होने से जातक पराक्रमी, बलवान, श्रेष्ठ तथा शत्रुनाशक होता है। परन्तु उसे भ्राता सुख नहीं मिलता।

---

1. "सारावली", मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, पेज 213।
2. "जातक संग्रह", कांशीराम, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, कल्याण, मुंबई, पेज 12 ।

विक्रान्तो बल युक्तो विनष्ट सहजस्तृतीय के सूर्ये।

लोके मतो अभिरामः प्राज्ञो जितदुष्ट पक्षश्च।।[1]

चतुर्थभाव का सूर्य जातक की माता के लिए कष्टपूर्ण, वाहन, भवन सुख रहित बनाता है तथा ह्रदयरोग भी उत्पन्न करता है। उसका मन अशांत रहता है। जबकि पंचम भाव में सूर्य होने पर पुत्र, धन तथा आयु को कम करता है परन्तु व्यक्ति बुद्धिमान होता है।[2] अन्य मत से पंचम भाव का सूर्य पूर्व जन्मों का प्रसाद माना जाता है ऐसे व्यक्ति चमत्कारी सफलताएं व सम्पति प्राप्त करते है।[3] यदि सूर्य षष्ट भाव में हो तो जातक को शत्रु पर विजय, राजदरबार में सम्मान, तेज प्रभाव सर्व सुख सम्पन्न बनाता है।[4] वह कामी होता है तथा उसे भूख अधिक लगती है।[5] सप्तम स्थान में सूर्य व्यक्ति को दुर्बल, स्त्री विरोधी राजभय युक्त बनाता है। वह कुरूप होता है तथा दूषित मार्ग पर चलता है। उसे व्यापार में कम लाभ होता है। अष्टम स्थान का सूर्य जातक को अल्पआयु, हीन दृष्टिवाला, चंचल नेत्रों वाला, कुटुम्ब का विरोधी बनाता है।[6] अष्टम भाव का सूर्य परदेश यात्रा कारक भी माना गया है। उसका धन चोरो द्वारा नष्ट होता है।[7] नवम् स्थान का सूर्य होने पर जातक धन, मित्र, पुत्र, भक्ति युक्त होता है परन्तु पिता तथा स्त्री से शत्रुता रखता है। उसे पैतृक सम्पति नहीं मिलती है वह कृषि कार्यनिपुण होगा।

---

1. "सारावली", मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, पेज 3 ।
2. "सारावली", उपरोक्त, पेज 214 ।
3. "ज्योतिष, हस्तरेखा व अंक विद्या में सूर्य की भूमिका", लक्ष्मी नारायण शर्मा, निरंजनी अखाड़ा हरिद्वार, पेज (ज) ।
4. उपरोक्त, पेज 41 ।
5. उपरोक्त, पेज 41 ।
6. "सारावली", पूर्वोक्त, पेज 214 ।
7. "चमत्कार चिंतामणी", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पेज 51।

दशम् स्थान का रवि व्यक्ति को धन संग्रह कर्ता, चतुर, साहसी, बुद्धिमान बनाता है। एकादश भाव में भास्कर होने पर जातक सभी सुख, सुविधा सम्पन्न, उच्च अधिकारी, वीर, अजित तथा उत्तम स्वभाव का होता है। जबकि द्वादश भाव में नेत्र रोगी, पिता का शत्रु, पतित, लोक विरोधी कार्य करने वाला होता है। यह अपव्यय कारक भी होता है।

चन्द्रमा द्वादश भावों में फल :- मेष, वृष, कर्क का चन्द्रमा प्रथम भाव में चतुर, धनी, भोगी बनाता है। अपशिष्ट राशियों में गूंगा, बहरा, अशांत बनाता है।[1] धन स्थान में चन्द्रमा अपरिमित धन सुख युक्त बनाता है। पूर्ण चन्द्रमा होने पर अत्यधिक सुन्दरता तथा स्थिर लक्ष्मी प्रदान करता है। तीसरे भाव में भाई बन्धुयुक्त, वीर, विद्यावान, धनसंग्रह तथा निपुणता देता है। चतुर्थ भाव में चन्द्रमा बाल्य अवस्था में सुख में कमी कारक परन्तु उत्तरार्द्ध में अधिक सुखी बनाता है। यह प्रतापी, भूमिपति, राज कोषाध्यक्ष भी बनाता है।[2] पंचम भाव में होने पर जातक डरपोक परन्तु विद्या, वस्त्र, अन्न का संग्रह कर्ता, अधिक पुत्रों, मित्रों से युक्त तथा बुद्धिमान होता है। जबकि षष्टभाव में अधिक शत्रु होते है। उसका शरीर सुन्दर होता है। वह कामी, शत्रु विजयी परन्तु माता से मतभेद वाला होता है। सप्तम् स्थान में चन्द्रमा जातक को सुशील, कामी, सुन्दर पत्नी वाला बनाता है। उसकी पत्नी को श्वास रोग होता है। वह अज्ञान होता है।[3] सारावली के अनुसार आठवें भाव में चन्द्रमा जातक को बुद्धिमान, तेजस्वी, रोगी तथा क्षीण चन्द्रमा होने पर अल्पायु करता है।[4] अन्य मत से भी उसके घर में वैद्यों की सभा लगी रहती है।[5] नवम् भाव में शशि जातक को देव पितृकार्य में तत्पर, धन, सुख, विद्या युक्त तथा

1. "सारावली", मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, पेज 215। तथा "चमत्कार चिंतामणी", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, वाराणसी, पेज 86।
2. "चमत्कार चिंतामणी", उपरोक्त, पेज 100 ।
3. "चमत्कार चिन्तामणी", उपरोक्त, पेज 104 ।
4. "सारावली", पूर्वोक्त, पेज 216 ।
5. "चमत्कार चिंतामणी" पेज 117 ।

उद्यमी बनाता है। "ज्योतिष रत्नाकार" के अनुसार 14 वें अथवा 20 वें वर्ष उसके पिता को अरिष्ट होता है।[1] दशम् में चन्द्रमा शूर वीर, पराक्रमी, कीर्तिवान, बुद्धिमान, सम्मानी, महत्वांकाक्षी, सज्जनों का आज्ञाकारी, चतुर तथा पवित्र कार्य करने वाला बनाता है। एकादश भाव में होने पर जातक धनवान, पुत्रवान, दीर्घआयु, सुन्दर, मनस्वी, वीर तथा कान्तिवान होता है। जबकि व्यय भाव में चन्द्रमा से जातक नीच स्वभाव, कृपण परन्तु बुरे काम में खर्च करने वाला, मित्रहीन, नेत्ररोगी, अविश्वसनीय होता है।

मंगल का द्वादश भावों में फल :- लग्न का मंगल साहसी, यात्रा–प्रिय,रक्तवर्ण, क्रोधी, मूर्ख, चंचल बनाता है। उसके पिता की आयु अल्प होती है। शरीर में रोग तथा चोट के निशान होते है।[2] "सारावली" के अनुसार वह पराक्रमी तथा कठोर शरीर वाला होता है।[3] धन भाव का मंगल जातक को निर्धन, अभोज्य वस्तुएं खाने वाला विकार युक्त, विद्या विहीन तथा दूषित मनुष्यों का आश्रय लेने वाला बना देता है जबकि तृतीय भावस्थ भौम से जातक सुखी, धनी राजकृपा प्राप्त, उदार, पराक्रमी, बुद्विमान बनाता है परन्तु भ्राता सुख में कमी कारक होता है।

सुख भाव में मंगल होने पर व्यक्ति को बन्धुहीन, सवारी सुख, मकार रहित बना देता है। उसे हमेशा कष्ट उठाना पड़ता है। "चमत्कार चिंतामणी" के अनुसार मंगल दूसरे ग्रहों के शुभ फल को भी नष्ट करता है।[4] यदि मंगल पंचम भाव में हो तो पाचन शक्ति अच्छी होती है। वह पाप कार्य करता है, संतान कष्ट होता है, बुद्धिमान होता है, धन संचय नहीं होता है। देश विदेश में यात्राएं होती हैं। षष्ठ भाव का मंगल शत्रुनाशक, राज पक्ष से पद दिलाने वाला, विजयी, क्रोधी, कामी, कुल में श्रेष्ठ होता है।[5] सप्तम भाव का मंगल स्त्री हन्ता कहलाता है। शत्रुओं

1. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 567।
2. उपरोक्त, पेज 569।
3. "सारावली", मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, पेज 217।
4. "चमत्कार चिंतामणि", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 162।
5. "चमत्कार चिंतामणि", पूर्वोक्त, पेज 173।

से हारता है, व्यर्थ की चिंता रहती है। जातक निर्धन, रोगी तथा पापी होता है। जन्म कुंडली में अष्टम भाव का मंगल नेत्र रोगी, अल्प आयु, कुरूप, दुर्बल, शोक से दुःखी बनाता है उसे शास्त्र तथा अग्नि से भय रहता है।[1] भाग्य स्थान का मंगल हिंसा प्रवृति, राजा से लाभ प्राप्त, शिक्षित, बुद्धिमान, धनहीन, सन्तति विशिष्ट बनाता है। "सारावली" के अनुसार ऐसे मंगल वाला चतुर कार्यकारी, अधर्मी, द्रोही, हिंसक तथा पापी होता है।[2] दशम का मंगल जातक को प्रतापी, उद्योगी, शूरवीर, पराक्रमी, साहसी, महत्वाकांक्षी, धार्मिक, शत्रु हन्ता, राजातुल्य सुखी तथा धनवान बनाता है। एकादश भाव का मंगल संतान के लिए हानिकारक होता है परन्तु जातक इसके प्रभाव से सत्य वक्ता, दृढ़ प्रतिज्ञ, पराक्रमी, सुशिक्षित, मानी राजानुग्रहीत, गानविद्या का प्रेमी, प्रियभाषी होता है। चोर तथा अग्नि द्वारा धन हानि संभव होती है। द्वादश में मंगल होने से जातक नेत्ररोगी, पतित, स्त्रीहन्ता, चुगलखोर, धर्महीन, पीड़ित तथा कारागार भोगने वाला होता है। वह खर्चीला भी होता है।

बुध का द्वादश भावों में फल :- लग्न में बुध से जातक शरीर से पुष्ट वाला गणित, कला का ज्ञाता, श्रेष्ठ वाणी बोलने वाला तथा दीर्घायु होता है।[3] "ज्योतिष रत्नाकार" के अनुसार उसके शरीर में त्वचा रोग फोडा, फुन्सी, मस्सा रहता है। वह उदार शांत प्रकृति तथा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता होता है। 21वां वर्ष शुभ होता है।[4]

द्वितीय भाव का बुध व्यक्ति को बुद्धि से धन अर्जित करने वाला, अन्न धन का भोक्ता, मधुर वाणी तथा न्याय का पक्षधर बनाता है। वह वेद ज्ञाता, विज्ञान कुशल, दृढ़ संकल्प वाला, पुत्रवान, गुरूवत्सत्ता तथा राजसम्मान प्राप्त करने वाला होता है। चन्द्रमा की दृष्टि पड़ने पर

---

1. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 572 ।
2. "सारावली", मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, पेज 219 ।
3. "सारावली", उपरोक्त पेज 219 ।
4. "ज्योतिष रत्नाकर", पूर्वोक्त, पेज 575 ।

धन नष्ट हो जाता है।[1] तृतीय भाव में बुध होने से जातक मायावी, चंचल, परिश्रमी, वेदज्ञाता कार्यकुशल मनमाना कार्य करने वाला होगा। उसे 27 वें वर्ष पुत्र से कष्ट होता है।[2] चतुर्थ भाव में बुध से व्यक्ति भवन, वाहन, विद्या, अच्छे बन्धुओं से युक्त तथा विद्वान होता है। पंचम भाव में मंत्रवेत्ता, तेज चतुर पुत्रवान, प्रसन्न, पराक्रमी तथा सुशील बनाता है।[3] शत्रु भाव में रहने से धूर्त, कलहकारी, आलसी, अर्धशिक्षित, कटुभाषी, रोगी, शत्रुओं वाला बनाता है परन्तु जातक को राज सम्मान मिलता है। सप्तम् भाव का बुध सुन्दर स्वभाव, सत्यवादी, धनी, धर्मज्ञ, न्यायकारी, स्वस्थ, स्त्री पुत्र से सुख आदि फल देता है। उसकी स्त्री विदुषी व सुन्दर होती है। अष्टम स्थान में रहने से जातक दीर्घजीवी, स्वदेश तथा प्रदेश में प्रसिद्ध, राजकार्य तथा व्यापार से धन प्राप्त तथा स्त्री से सुखी होता है।[4] नवम् भाव का बुध धर्मात्मा, बुद्धिमान, तांत्रिक, कुल प्रशासक, राजा से सम्मानित, प्रतापी तथा दुर्जनों को नष्ट करने वाला बनाता है। जबकि दशम भाव में बुध रहने पर जातक ज्ञानवान, श्रेष्ठ कर्म करने वाला बुद्धिमान, सात्विक, धार्मिक, धन संचयी, माननीय, भोगी होता है। एकादश भाव में बुध से जातक धनी आज्ञाकारी, सुखी, पण्डित भोगी, दीर्घायु तथा प्रसिद्धि प्राप्त होता है ।[5] व्यय भाव में बुध जातक को सुन्दर, दक्ष, स्वकार्य निपुण, बन्धुजनों का विरोधी धूर्त, क्रूर एवं मलीन चित बनाता है परन्तु वेदांत में रूचि होती है।[6]

गुरू का द्वादश भावों में फल :- प्रथम भाव में गुरू जातक को सुन्दर, बलवान, दीर्घायु,

---

1. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 575 ।
2. "ज्योतिष रत्नाकर", उपरोक्त, पेज 576 ।
3. "सारावली", मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, पेज 220 ।
4. "चमत्कार चिंतामणि", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 241 ।
5. "सारावली", पूर्वोक्त, पेज 221 ।
6. "ज्योतिष रत्नाकर", पूर्वोक्त, पेज 579 ।

विद्वान, धैर्यवान तथा श्रेष्ठ बनाता है। धन भाव में होने पर जातक धनी, मधुर वाणी वाला, विद्वान परोपकारी, राजसम्मान प्राप्त, कविता, कला, व्याकरण का ज्ञाता होता है।

तृतीय भाव का गुरू जातक को कृपण, कृतघ्न, स्त्री पुत्र से दुःखी, मंदाग्नि से पीड़ित, भाई बहनों से सुखी, कृषि कार्य में दक्ष बनाता है।[1] चतुर्थ का गुरू जातक को वस्त्र, सवारी, भवन, सुख, बुद्धि, भोग, धन से युक्त तथा श्रेष्ठ व शत्रुनाशक बनाता है जबकि पंचम भाव में रहने पर जातक सुख, पुत्र, मित्र से सम्पन्न, पीड़ित, धैर्यवान, धनवान तथा सब जगह सुखी होता है।[2] षष्ठ भाव में गुरू जातक को रोगी, शत्रुनाशक, अभिमानी, चौपाए से सुखी व लाभ प्राप्त बनाता है। उसकी माता को रोग रहता है तथा मामा भी सुखी नहीं रहता। स्त्री भाव में गुरू होने या जातक उच्च विचार बुद्धि वाला, धनवान, कुल में श्रेष्ठ, सुन्दर, अभिमानी स्त्री में कम आशक्ति वाला होता है।[3] अष्टम स्थान में गुरू हो तो जातक पीड़ित, दीर्घायु, वेतनभोगी, दीन, मलीन तथा स्त्री भोगी होगा। भाग्य स्थान में गुरू जातक को देव व पितृकार्यों में लीन, विद्वान सुंदर, भाग्यवान, राजमंत्री, नायक तथा सर्वसुख सम्पन्न बनाता है।[4] दशम में रहने पर जातक मित्र, पुत्र, धन से सुखी, धर्मात्मा, शुभकार्य करने वाला, चतुर, सफल, राज्याधिकारी, सत्यवादी, संपतिवान तथा संग्रहीत धन प्राप्त करने वाला होता है। एकादश का गुरू जातक को विद्वान, शास्त्र ज्ञाता, प्रतिष्ठित, धन कमाने में समर्थ, उच्चस्तरीय वाहनयुक्त, क्षमाशील, रोग रहित तथा राजानुगृहीत बनाता है।[5] यदि गुरू व्यय भाव में हो तो जातक आलसी, क्रोधी, अल्पसंतान वाला, दरिद्र बुद्धिमान, मानहीन, शुभ कार्य में व्यय करने वाला,

---

1. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 580 ।
2. "सारावली", मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, पेज 222 ।
3. "चमत्कार चिंतामणि", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 294।
4. "सारावली", पूर्वोक्त, पेज 223 ।
5. "ज्योतिष रत्नाकर", पूर्वोक्त, पेज 584 ।

गणित का जानने वाला होता है।

शुक्र का विभिन्न भावों में फल :- लग्न का शुक्र जातक को गौरवर्णा, सुन्दर कलाकार, विद्वान, वक्ता, विनयी, गणितज्ञ, स्त्री से प्रेम करने वाला तथा राजा से सम्मान प्राप्त करवाता है। द्वितीय स्थान में होने पर भी उपरोक्त फल देता है साथ ही वाहन सुख, बड़ा परिवार परन्तु स्त्री के साथ प्रेम का अभाव उत्पन्न करता है।[1] तृतीय भाव में शुक्र से जातक सुखी, धनवान, लोभी, सौभाग्यवान होता है।[2] परन्तु अन्य मत से जातक दुष्ट, दुरात्मा, कृपण, निर्धन तथा कामी होता है।[3] इस प्रकार शुक्र वास्तव में तृतीय स्थान में शुभ तथा अशुभ दोनों फल देता है। ब्रज बिहारी लाल का मत है कि अकेला शुक्र तृतीय भाव में अशुभ होता है। चतुर्थ का शुक्र बन्धु, मित्र, वाहन, आभूषण सौभाग्य प्रदान करता है। पंचम स्थान में होने पर जातक धनवान सुखी, न्यायकारी व मिष्ठान भोगी होता है। षष्ठ भाव का शुक्र स्त्री का शत्रु, धनरहित, दुष्ट, विकल बनाता है।[4] यह मामा के लिए भी अशुभ होता है। सप्तम भाव गें रहने पर पति या पत्नी सुन्दर होते है वह भोगी, धनवान, शांत, कुटुम्ब युक्त होता है। ज्योतिष रत्नाकार के अनुसार शुक्र के साथ सप्तम में अन्य ग्रह होने पर द्विविवाह योग होता है।[5] अष्टम भावस्थ शुक्र जातक को दीर्घआयु, सुख, धन, राजसम्मान, संतोष प्रदान करता है जबकि भाग्य स्थान में होने पर विशालकाय, धनी, उदार स्त्री वाला, सुखी मित्रों से युक्त, देवता, अतिथि तथा गुरू भक्त बनाता है। धर्म भाव में होने पर जातक भाग्यवान, कीर्तिवान तेजस्वी, बुद्धिमान धार्मिक, स्त्री

---

1. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 585 ।
2. "सारावली", मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, पेज 224 ।
3. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 586 ।
4. "चमत्कार चिंतामणि", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 342।
5. "ज्योतिष रत्नाकर", पूर्वोक्त, पेज 587 ।

पुत्र से प्रेम करने वाला होता है। जातक को एक बड़ा भाई व बहन होती है।[1]

एकादश में होने से जातक समस्त दुःखों से रहित तथा लाभवान, नौकर युक्त होता है।[2]

व्ययभाव में शुक्र की स्थिति जातक के लिए रोग, काम, चिंता, अश्रद्धा तथा दयाहीनता उत्पन्न करती है। वह नेत्ररोगी, कंजूस तथा विरोधी होता है।[3]

शनि का द्वादश भावों में फल :- लग्न में शनि चर्म रोग, वात रोग काम प्रकृति कारक होता है।इससे जातक कामी, मूर्ख, दरिद्र तथा राज पीड़ित होता है। धन स्थान में शनि होने पर जातक विकृत मुख वाला, भोगी, परदेशवासी, सवारी का सुख भोगने वाला तथा न्यायकर्ता होता है।[4] तृतीय का शनि भाग्य वर्धक माना जाता है। जातक, वीर, दानी, बुद्धिमान शत्रुनाशक, धनवान तथा सुख–विलास साधन सम्पन्न होता है।[5] परन्तु उसके भाई–बन्धुओं से विरोध रहता है या भाई सुख नहीं मिलता है। चतुर्थ भाव से शनि होने से जातक भ्रमणशील, मित्र, पुत्र, स्वजन सुख से वंचित, बाल्यवस्था में रोगी, पित्तवात युक्त, आलसी तथा झगड़ालू होता है।[6] सुत स्थान का शनि जातक को सुख, पुत्र, मित्र से रहित, बुद्धिहीन, अचेत, पागल तथा दीन बनाता है।[7] जातक संग्रह के अनुसार शत्रु राशि का शनि पुत्र नाशक तथा उच्च का होने पर एक तीक्षण पुत्र प्रदान करता है।[8] रिपु भाव में शनि जातक को दानी, श्रेष्ठ, शत्रुनाशक, राजपुरूष, गुण परीक्षक, अन्यों को आश्रय देने वाला बनाता है। सप्तम भाव में

1. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 588।
2. "सारावली", मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, पेज 225 ।
3. "ज्योतिष रत्नाकर", पूर्वोक्त, पेज 589 ।
4. "सारावली", पूर्वोक्त, पेज 226 ।
5. "सारावली", पूर्वोक्त, पेज 226 ।
6. "चमत्कार चिंतामणि", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 418।
7. "सारावली", पूर्वोक्त, पेज 226 ।
8. "जातक संग्रह", कांशीराम, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, कल्याण, मुंबई, पेज 91 ।

शनि गुप्तरोग, द्विविवाह, कलह प्रिय स्त्री प्रदान करता है। ज्योतिष रत्नाकार के अनुसार आयु के 37 वें वर्ष में स्त्री नाश संभव होता है।[1] आयु स्थान में शनि होने पर जातक कोढ़, भगन्दर रोगी, अल्पायु झगड़ालू, पापी, दरिद्र, कुटिल बुद्धि वाला होता है। भाग्य स्थान में यह जातक को अधर्मी, कुमार्गी, भ्राता पुत्रहीन, दूसरों का पीड़क तथा सुखरहित कर देता है। दशम् भाव में होने पर जातक धनवान, वीर विद्वान, न्यायधीश, राजा समान, (समुदाय, ग्राम नगर का अधिपति) शत्रुनाशक तथा भ्रमणशील होता है। एकादश भाव में भी शनि शुभ फल देता है। यह जातक को दीर्घ आयु, स्थिर लक्ष्मीवान, वीर निरोग, धन धान्य से सम्पन्न करता है। व्ययभाव में होने पर जातक दयाहीन, धनहीन, आलसी, कुसंगी, नीच कर्म निरत करता है। वह बुरे कामों में खर्च करता है।

द्वादश भावों में राहु का फला :- लग्न में राहु होने से जातक साहसी, चतुर, रोगी, अधर्मी, मित्रविरोधी, विवाद में विजयी तथा संतानहीन होता है। धन स्थान में राहू निन्दित वचन बोलने वाला, कठोर, भ्रमणशील, पुत्र चिन्ता तथा चोरी द्वारा धन पाने वाला बनाता है।[2] तृतीयस्थ राहु जातक को बलशाली, भेदभावरहित, धनवान, शत्रुनाशक बनाता है। परन्तु भ्राता सुख में कमी करता है। चतुर्थ में राहू होने से भ्रमणशील मित्र पुत्र रहित, भाग्यहीन बनाता है। कभी–कभी दो विवाह होते है।[3] पंचम भाव में राहु प्रथम संतान सुख में बाधा करता है। यह हृदय रोग कारक चिंता, संताप बढाने वाला होता है।[4] रिपु स्थान का राहु जातक को गंभीर सुखी, धनवान, विद्वान, राजा समान प्रतिष्ठित, शत्रुनाशक बनाता है उसके चचेरे–फुफेरे भाइयों की संख्या अधिक होती है। जाया स्थान में राहु होने पर गुप्तरोग, द्विविवाह, स्त्री से मतभेद

---

1. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 591।
2. "ज्योतिष रत्नाकर", उपरोक्त, पेज 594 ।
3. "ज्योतिष रत्नाकर", पूर्वोक्त पेज 595 ।
4. "चमत्कार चिंतामणि", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 486।

कारक होता है। अष्टम भाव में होने से जातक झगड़ालू पापी, गुदा, प्रमेह, अण्डवृद्धि, बवासीर आदि से रोगी होता है। आयु के 32वें, 45वें तथा 60वें वर्ष मृत्यु भय होता है।[1] भाग्य में राहु विद्वान, गुणी, सभ्य, सुहृदय, कृतज्ञ बनाता है। परन्तु अन्य मत से जातक नीच, धर्म–कर्म विहीन, मन्द बुद्धि तथा अल्प सुखभोगी होता है।[2] अतः राहु मिश्रित फल देता है। दशम में राहु होने से जातक उच्च पद प्राप्त न्यायधीश, विद्वान, धनी, प्रतिष्ठित, साहसी, सुखी होता है।[3] एकादश में इसके रहने पर मलेच्छों से धन पाने वाला, स्वदेशवासी, धनी बनाता है, जबकि द्वादश में जातक को नीच कर्म, प्रपंची, कपटी, घमण्डी, नेत्ररोगी, चर्मरोगी तथा प्रवासी बनाता है।

केतु का द्वादश भावों में फल :- लग्न में रहने पर केतु जातक को शरीर से दुर्बल, वात व्याधि युक्त, चिंतामग्न, मिथ्याभाषी, चंचल शत्रु युक्त बनाता है। धनस्थान में केतु होने पर जातक दुष्टात्मा, कुटुम्ब विरोधी, स्पष्ट वक्ता, नीच व्यक्तियों का मित्र, राजकोष से पीड़ित रहता है। जन्म कुण्डली में तृतीय भाव में केतु हो तो जातक शत्रुनाशक धनवान, भोगी, सुखी होता है परन्तु उसके भ्राता तथा मित्रों का नाश होता है। भुजाओं में पीड़ा, भय, चित भ्रम भी बना रहता है।[4] सुख भाव में केतु होने पर मातृ सुख में कमी, घर, पैतृक, सम्पति मिलने में कठिनाई चित में घबराहट उत्पन्न करता है।

सुत स्थान में केतु सगे भाइयों को शत्रु या वायुरोग से कष्ट देता है। जातक के एक या दो पुत्र होते हैं जिनसे मतभेद रहता है। जातक बलवान परन्तु पानी से डरने वाला होता है।[5]

---

1. "चमत्कार चिंतामणि", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 500।
2. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 596 ।
3. "जातक संग्रह", कांशीराम, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, कल्याण, मुंबई, पेज 226 ।
4. "चमत्कार चिंतामणि", पूर्वोक्त, पेज 519 ।
5. "चमत्कार चिंतामणि", पूर्वोक्त, पेज 524 ।

शत्रुभाव में केतु मामा से वैर, शत्रुओं का नाश, चौपायों से सुख, रोगहीन शरीर, विवाद संग्राम में विजय प्रदान करता है। उसे विद्या से यश प्राप्त होता है। स्त्री भाव का केतु शत्रुओं से धननाश, स्त्री को पीड़ा, क्रोधी स्त्री से सम्बन्ध, जलभय प्रदान करता है। जातक गुप्त रूप से पाप करता है।[1] अष्टम स्थान में रहने से जातक गुदा, बवासीर, भगन्दर का रोगी होता है। सवारी से भय, धन मिलने में रूकावट, लोभप्रवृति तथा अन्य स्त्री में आशक्ति उत्पन्न करता है। भाग्यस्थान में केतु क्लेश नाशक, संतान नाशक, भुजाओं में पीड़ा दायक, तप का दान का ढोंग बनाने वाला होता है। यह पिता को भी कष्ट देता है।[2] दशम् भाव में रहने से जातक पर स्त्री गामी, वायु कफ विकृति वाला सुखहीन, गुदारोगी व पिता के दुर्भाग्य का कारक बनता है। एकादश में जातक को मधुरभाषी, विद्वान, दर्शनीय, भोगी, तेजस्वी, धनी तथा सम्पन्न बनाता है जबकि द्वादश भाव में यह खर्चीला स्वभाव, चिंता युक्त, परदेशवासी, शत्रुहन्ता, नेत्र, पैर बस्ती तथा गुदा में रोग कारक है।[3] सभी ग्रहों का उपरोक्त वर्णित फल सामान्य है। यदि ग्रह के साथ अन्य ग्रह भी हो तो इसमें परिवर्तन आता है। सामान्यतः कूर ग्रह खराब प्रभाव को बढाते हैं जबकि शुभ सौम्य ग्रह खराब प्रभाव को कम करते है तथ अच्छे प्रभाव को बढाते है। सभी ग्रहों का प्रभाव भावेश की स्थिति, कौन कौन सा ग्रह किस भाव का अधिपति है, तथा मित्र स्थान, शत्रु स्थान, नीच, उच्च आदि पर भी निर्भर करता है। ग्रह जिस भाव में बैठा है उस स्थान का भाव बल कितना है, स्वयं ग्रह का बल कितना है आदि विषय भी ग्रहों के भावों में प्रभाव को बदलते हैं अतः सभी बातों पर विचार के उपरान्त ही निर्णय करना चाहिए।

---

1. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 598।
2. "चमत्कार चिंतामणि", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 529।
3. "ज्योतिष रत्नाकर", पूर्वोक्त, पेज 599।

ग्रहों का भिन्न-भिन्न राशियों में फल :-

सूर्य :- सूर्य मेष राशि में उच्च होता है। अतः मेष का सूर्य जातक को विद्वान, युद्धप्रिय, भ्रमणशील, साहसी तथा उद्यमी बनाता है। जातक पित्त तथा रक्त व्याधि पीड़ित होता है। वृष में मुख व नेत्र रोग से पीडित, व्यवहार कुशल, कलाकार क्लेश सहने वाला बनाता है।[1] बुध की राशि मिथुन में रवि जातक को मेधावी, मधुरभाषी, सदाचारी, विज्ञान में निपुण, धनवान, उदार बनाता है जबकि कन्या राशि में स्त्रीसमान देहवाला, देव, पिता, गुरु की आज्ञापालक वेद विद्या, गायन में निपुणता देता है। यदि सूर्य चन्द्रमा की राशि कर्क में हो तो जातक उग्र स्वभाव, दूसरों का काम करने वाला, रोगी, अल्पविद्यावान होता है। परन्तु "सारावली" के अनुसार वह चंचल, राजा के समान विख्यात होगा।[2] सिंह में सूर्य स्वराशि होता है अतः जातक कला कुशल, पराक्रमी चतुर, परोपकारी कीर्तिवान तथा स्थिर बुद्धि होता है।[3] तुलाराशि में साहसी, राज पीड़ित पाप कर्म निरत, पराये का कार्य करने वाला, धनहीन तथा मद्यपान करने वाला बनाता है। वृश्चिक में साहसी, क्रूर, अस्त्र–शस्त्र विक्रेता, माता पिता का विरोधी परन्तु आदरणीय बनाता है।[4] मकर व धनराशि का सूर्य जातक को धनी, विद्वान, देवभक्त, व्यवहार कुशल तथा शांत होता है जबकि मीन राशि में कृषि तथा व्यापार से धन पाने वाला व्यवहार कुशल तथा स्वजनों से कष्ट पाने वाला बना देता है। शनि की राशि मकर में सूर्य रहने से जातक लोभी, चरित्रहीन, डरपोक, बंधुरहित होता है जबकि कुंभ राशि का रवि जातक के लिए हृदय रोग, क्रोध, दुःख चंचलता, असत्यता आदि दोष उत्पन्न कारक होता है।

द्वादश राशियों में चन्द्रमा का फल :- चन्द्रमा सबसे निकट का ग्रह होने के कारण

---

1. "सारावली", मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, पेज 141 ।
2. "सारावली", उपरोक्त, पेज 143 ।
3. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 600।
4. "ज्योतिष रत्नाकर", उपरोक्त, पेज 601 ।

द्वादश राशियों से अधिक प्रभाव डालता है। चन्द्रमा व्यक्ति की जन्म राशि का निर्धारक है जिसका प्रयोग दैनिक जीवन में अत्यधिक होता है अतः इसका फल महत्वपूर्ण है।

मेष राशि का चन्द्रमा जातक को चंचल नेत्र रोगी, धर्मात्मा, धनी, राजपूजित स्त्रीप्रिय, शांत स्वभाव ऊपर से कठोर बनाता है। वृष राशि में जातक भोगी, दाता, चतुर, उदार, विज्ञान, प्रिय तथा मित्रों वाला होता है।[1] बुध की राशि मिथुन का चन्द्रमा कवि, भौतिक सुख प्राप्त, भोगी, सुन्दर, बुद्धिमान, गहरे विचारों को समझने वाला, मधुर भाषी बनाता है।[2] कर्क में चन्द्रमा स्वराशि होता है। इससे जातक उद्योगी, ज्योतिषी, नम्र, कृतज्ञ, सच्चा, प्रवासी, भाग्यवान होता है।[3] सिंह राशि का चन्द्र होने पर जातक क्षमायुक्त, कार्यशील, घुमक्कड़, शांत, विनीत, कभी–कभी अति क्रोधी होता है।[4] वह दानी होता है उसकी संतान कम होती है। कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विलासी, धनी, शीलवान कलाकार, लज्जावान, अधिक कन्याओं वाला होता है। वह मेधावि होता है।[5] तुला राशि का चन्द्रमा जातक को क्रोधी, दुःखी, चल संपति वान, व्यापार में चतुर, देव पूजक बनाता है। वृश्चिक में होने पर बचपन में रोगी कलाकार, धनवान, राज्य से धनहानि, चौडे मस्तक वाला बनाता है। गुरू की राशि धनु में चन्द्रमा मनुष्य को सात्विक, जनप्रिय, शिल्पज्ञ, सुन्दर स्त्री का स्वामी, मधुरभाषी, तेजस्वी तथा स्थूलकाय बनाता है। जबकि मीन में होने पर जातक कृपण, ज्ञानी, क्रोधी, कुलप्रिय, गंभीर तथा सूर होता है। शनि की राशि मकर का चन्द्र, विद्या तथा गायन विद्या का विद्वान, धार्मिक, दानी, सुन्दर पत्नी वाला बनाता है जबकि कुंभ राशि में जातक चतुर, दूसरों की स्त्री का लोलुप,

---

1. "चमत्कार चिंतामणि", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 76।
2. "वैदिक एस्ट्रोलोजी", के० एस० चरक, सिस्टम विजन, दिल्ली, पेज 274 ।
3. "सारावली", मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, पेज 152 ।
4. "चमत्कार चिंतामणि", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 76।
5. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 607 ।

पापी, क्रोधी तथा दूसरों का धनहर्ता बनता है।

मंगल का विभिन्न राशियों में फल :- मेष राशि मंगल की अपने राशि है इसमें यह जातक को प्रतापी, साहसी, युद्धप्रिय, ग्राम, जनपद का नेता, दानी तथा बहुस्त्री प्रेमी बनता है। वृषराशि में होने से जातक के शत्रु अधिक होंगें, वह कटुभाषी, पापी, गायक तथा स्त्री दुषक होता है। मिथुन राशि में होने से साध तथा शिल्प कला निपुण, धर्मात्मा, बुद्धिमान, अनेक कार्य करने वाला जातक होता है।[1] कर्क राशि में होने पर जातक दूसरे के घर में वास करने वाला, रोगी, कृषक, मृदुस्वभाव तथा दीन होता है। सिंह राशि का मंगल जातक को उग्र, धनहीन, अधार्मिक, स्त्रीहन्ता, शिकारी घृणित कार्य करने वाला बनाता है।[2] अन्य मत से वह पराए ध न व संतान को रखने वाला, पुत्रहीन, मांसभक्षी होता है।[3] कन्या राशि का मंगल खर्च बढाने वाला, डरपोक, शिल्पज्ञ, विद्वान, प्राचीन धर्म को मानने वाला बनाता है। तुला राशि होने पर जातक भ्रमणशील, बड़ाई करने वाला, दूसरे पर आधारित स्त्री, मित्र, गुरूजनों का प्रिय, शराब विक्रेता, छोटे परिवार वाला होता है। वृश्चिक राशि का मंगल जातक को विजयी, सच्चा, किसी सूमह का नेता, शत्रु नाशक बनाता है उसे शस्त्र, विष तथा अग्नि से भय रहता है।[4]

गुरू की राशि धनु में जातक को कठोर पापी बोलने वाला, पराधीन, दुष्ट, परिश्रमी, क्रोधी तथा गुरू द्रोही बनाता है। मकर राशि का मंगल जातक को सेना का नायक, राजपुरूष, साहसी, वीर क्रोधी, ईर्ष्यालु तथा भाग्यहीन बनाता है जबकि शनि की ही राशि कुंभ का मंगल होने पर जातक रोगी, सम्बन्धियों का विरोधी, भाग्यहीन, अधिक बालों वाला होता है। मीन राशि का भौम जातक को रोगी, अल्पआयु, प्रवासी, कपटी, चंचल, गुरूजनों का

---

1. "चमत्कार चिंतामणि", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 157।
2. "वैदिक एस्ट्रोलोजी", के० एस० चरक, सिस्टम विजन, दिल्ली, पेज 280 ।
3. "चमत्कार चिंतामणि", पूर्वोक्त, पेज 156 ।
4. "वैदिक एस्ट्रोलोजी", के० एस० चरक, सिस्टम विजन, दिल्ली, पेज 280 ।

अनादर करने वाला बना देता है। वह प्रशंसा सुनने को ललायित रहता है।

बुध का विभिन्न राशियों में फल :- वृष राशि का बुध जातक को चतुर, वाणी विख्यात, वेदशास्त्र का ज्ञाता, स्थिर विचार तथा कोमल वाणी बोलने वाला बनाता है। तुला राशि में वाक् चतुर, धन का व्यय करने वाला बड़ा व्यापारी, देशभक्त, चंचल तथा शिल्पज्ञ होता है। मंगल की राशि मेष में बुध झगड़ालू, नीच प्रकृति, बदलते विचारों का, कला का ज्ञानी, कामी तथा कैदी बनाता है। वृश्चिक में बुध होने पर जातक विद्वेषी, अधार्मिक मूर्ख, लोभी, दुष्ट स्त्री का पति तथा निंदक होता है।[1] अपनी राशि मिथुन तथा कन्या में यदि बुध हो तो जातक धनवान, वक्ता, वेदज्ञ, दानी, कर्मठ, लेखक, विनयी, श्रेष्ठ पुरूषों का सम्मान करने वाला तथा वाद विवाद में प्रवीण होता है।[2]

चन्द्रमा की राशि कर्क में बुध जातक विद्वान, परदेशवासी, स्त्रीरत, चंचल, बन्धु द्वेषी, कवि तथा पूर्वजों के यश से प्रसिद्व होता है। सूर्य की राशि सिंह में बुध मिथाभाषी, कमजोर स्मरण शक्ति वाला, निर्बल, स्त्री सुख विहीन तथा संतानहीन बना देता है। गुरू की राशि धनु तथा मीन में बुध रहने पर जातक विख्यात, उदार, शास्त्रवेता, यज्ञकर्ता, विद्वान, लेखक, युद्ध आचार वाला, धार्मिक तथा दरिद्र होता है। यदि बुध मकर में हो तो जातक मूर्ख, नपुसंक, गुणहीन, भ्रमणशील, भीरू तथा झूठा होगा जबकि कुंभ का बुध जातक को सद्बुद्धि तथा सत्कर्म हीन, दरिद्र, शत्रुओं से पराजित तथा दूसरे का नौकर बना देता है।[3]

गुरू का विभिन्न राशियों में फल :- मंगल की राशि मेष का गुरू जातक को पवित्र, विचारशील, तर्कशील, आभूषण एवं धनयुक्त, प्रसिद्ध, खर्चीला तथा दुर्घटना ग्रस्त बनाता है।[4]

---

1. "चमत्कार चिंतामणि", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 210।
2. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 604 ।
3. "चमत्कार चिंतामणि", पूर्वोक्त, पेज 210 ।
4. "वैदिक एस्ट्रोलोजी", के० एस० चरक, सिस्टम विजन, दिल्ली, पेज 287।

वृश्चिक राशि में अनेक लिपियां जानने वाला, पुस्तक समीक्षक, रोगी, शीघ्र क्रोध करने वाला तथा उत्तम महिलाओं का साथी बनाता है। शुक्र की राशि वृष में गुरू से जातक विशाल देह, भक्त, सदाचारी, कृषियुक्त, सद्बुद्धि वाला होता है। तुलाराशि का गुरू जातक को चतुर, शिक्षित, विदेश से लाभ प्राप्त, मधुर वक्ता, सुन्दर तथा व्यापार में दक्ष बनाता है।[1] बुध की राशि मिथुन में जातक वैज्ञानिक, सुन्दर नेत्रों वाला, वक्ता, धर्मशील, कवि तथा कार्य करने में दक्ष होता है जबकि कन्या का गुरू भी जातक को विद्वान,पवित्र, शत्रुनाशक, दृढ़ संकल्प वाला, सुशील, चतुर तथा धनवान बनाता है। गुरू की राशि धनु तथा मीन में यदि गुरू हो तो जातक धार्मिक, धनवान दानी, सहायता करने वाला, उच्चपद प्राप्त, यात्रा प्रिय तथा सुप्रसिद्ध होता है। शनि की राशि मकर में गुरू जातक निर्बल, क्लेश युक्त, नीच दूसरों का नौकर, प्रवासी, डरपोक तथा प्रेम व धर्महीन होता है। कुंभ का गुरू जातक को चुगलखौर, दुष्टस्वभाव, क्रूर लोभी, रोगी तथा बुद्धिहीन बनाता है। चन्द्रमा की राशि कर्क में गुरू उच्च होने के कारण शुभ माना जाता है। यह जातक को विद्वान, सुन्दर, धर्मात्मा, सुशील, कवि, यशस्वी, पुत्र स्त्री से सुखी तथा प्रेम करने वाला बनाता है।[2] सूर्य राशि सिंह का गुरू होने पर जातक मित्र स्नेही, सुशिक्षित, पवित्र, राजा के समान, सेना नायक, उग्र तथा जंगल पर्वतों का वासी होता है।[3]

शुक्र का विभिन्न राशियों में फल :- मेष राशि में शुक्र हो तो जातक दोषी, दुष्टस्वभाव, परस्त्री–वेश्यागामी, कठोर तथा ग्राम अधिपति होता है। वृष तथा तुला राशि का शुक्र स्वराशि होता है। इसमें शुक्र होने पर जातक स्त्री, धन, सम्पदा युक्त, उपकारी, सेवक, कृषक, वीर परदेश वासी कठिन कार्य में निपुण, देव–ब्राह्मण का भक्त तथा सुन्दर होता है। बुध की राशि

---

1. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 605 ।
2. "ज्योतिष रत्नाकर", उपरोक्त, पेज 605 ।
3. "वैदिक एस्ट्रोलोजी", के० एस० चरक, सिस्टम विजन, दिल्ली, पेज 287 ।
4. "चमत्कार चिंतामणि", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 327 ।

मिथुन तथा कन्या में शुक्र होने पर कला निपुण, शास्त्र ज्ञाता कामी, कवि कला से लाभ प्राप्त, चतुर, परोपकारी, अधिक कन्याओं वाला तथा तीर्थ यात्रा करने वाला होता है।[4] चन्द्रमा की राशि कर्क में शुक्र होने से जातक अच्छे कार्यों में लगा हुआ, शक्तिशाली, विद्वान, धार्मिक, सुन्दर, चतुर तथा न्यायकारी होता है। सूर्य की राशि का शुक्र स्त्री में आशक्ति, सुख, धनरहित, बंधुप्रिय, कभी–कभी दुःखी, परोपकारी तथा चिंतारहित होता है।[1] गुरू की राशि धनु तथा मीन में यदि शुक्र हो तो जातक धर्म, अर्थ, काम युक्त, लोकप्रिय, विद्वान, राजमंत्री, उदार, दानी, राजप्रिय, बुद्धिमान, साधु जनों पर खर्च करने वाला होता है। शनि की राशि मकर में यदि शुक्र हो तो जातक वृद्धा स्त्री में आशक्त, भोगी, धनलोभी, धूर्त, चतुर, नपुसंक, मूर्ख तथा दूसरों का कार्य करने वाला होता है। कुंभ राशि में शुक्र जातक को दुःखी, अधर्मी, गुरूनिंदक, कुरूप तथा सुविधा विहीन बनाता है।

शनि का द्वादश राशियों में फल :- मेष राशि में शनि नीच होता है। अत यह जातक को क्रोधी, व्यसनी, प्रपंची, ठीठ, कुरूप तथा परद्रोही बना देता है।[2] वृष राशि में निर्धन, सेवक, नीच मित्रों वाला, मूर्ख तथा व्यसनी बनाता है जबकि शुक्र की ही राशि तुला में रहने पर शनि के कारण जातक धन संग्रही, मृदुभाषी, विद्वान, धनवान, समाज में श्रेष्ठ तथा सम्माननीय होता है। कर्क राशि का शनि जातक को सुन्दर भाग्यवान, विद्वान, मातृहीन, विपरीत स्वभाव का, बचपन में रोगी परन्तु मध्य आयु में राजा के समान बनाता है।[3]

सूर्य राशि सिंह में होने पर इसके प्रभाव से जातक पढने में तत्पर, शीलरहित निन्दक, क्रोधी, भ्रमित, स्त्रीहीन तथा सेवक वृति का होता है। बुध की राशि मिथुन का शनि जातक

1. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 608 ।
2. "सारावली", मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, पेज 203 ।
3. "सारावली", उपरोक्त, पेज 204 ।
4. "सारावली", उपरोक्त, पेज 204 ।

को ऋणी, परिश्रमी, पाखडी, कामी, छलिया, क्रोधी, आलसी तथा धूर्त होता है।[4] जबकि कन्या राशि का शनि जातक में नपुसंकता, धूर्तता, वेश्यावृति के दुर्ग्रण उत्पन्न करता है। मंगल की राशि वृश्चिक में शनि हो तो जातक कुटिल, द्वेषी विष या शस्त्र से हत, घमण्डी, धनवान, चोरी से धनहरण कर्ता तथा रोगी होता है।[1] गुरू की राशि धन का शनि पुत्रवान, धनवान, स्त्री से सुखी, राजा का विश्वास पात्र, नगर का प्रधान पुरूष, सुन्दर तथा कीर्तिवान बनाता है।[2] मीन राशि में शनि हो तो जातक धन राशि समान ही फल देता है। वह धार्मिक, नम्र तथा बंधुप्रिय भी होता है। मकर राशिस्थ शनि जातक में अनेक गुण उत्पन्न करता है। वह विख्यात होता है परन्तु कुंभ का शनि भोगी, व्यसनी, शत्रु पीडित, धूर्त, ढंग अधर्मी तथा दूसरे की स्त्री में आसक्ति बढाने वाला होता है। इस प्रकार शनि का प्रभाव कर्क, तुला, धनु तथा मीन राशियों में अच्छा होता है।

राहु तथा केतु का अलग अलग राशियों में फल अधिकतर ज्योतिष ग्रन्थों यथा "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", "सारावली", "चमत्कार चिंतामणि", "मानसागरी", "ज्योतिषरत्नाकर" आदि में नहीं पाया जाता। कुछ ग्रन्थों ने केवल राहु तथा केतु की शुभ– अशुभ राशियों के विषय में बताया है। राहु के लिए मेष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु तथा कुंभ अशुभ तथा शेष राशियां शुभ बताई गई है।[3] केतु के लिए तुला स्वराशि, वृश्चिक तथा धन उच्चस्थान एवं वृष–मिथुन नीच राशि मानी गई हे। फल विचारने में यह ध्यान देना चाहिए कि राशि का स्वामी, बली होकर, बलयुक्त राशि में बैठा हो तो ऐसे स्थान में उपस्थित ग्रह अपना पूरा फल देगा। इसी प्रकार निर्दिष्ट राशि के स्वामी का उच्च, नीच एवं अस्त आदि गुण दोषानुसार फल मिलता है।

---

1. "चमत्कार चिंतामणि", बृजबिहारी लाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 395।
2. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, पेज 620 ।
3. "चमत्कारी चिंतामणि", पूर्वोक्त, पेज 468 ।

कारक-मारक विचार :

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 13, में कारक–मारक विचार दिया गया है।[1] यह फलति खण्ड का महत्वपूर्ण विषय है। इससे पता लगता है कि किसकी कुण्डली में कौन ग्रह मारक सिद्ध होंगे तथा कौन ग्रह कारक है। यह विचार विप्र को अवश्य ज्ञात करना चाहिए। यह बारह लग्नों का विचार निम्न प्रकार से है :–

1. मेष लग्न : शनि, बुध, शुक्र पापफलप्रद हैं । गुरु, सूर्य शुभ हैं । शनि और गुरु के कारक योग मात्र से शुभ फल नहीं हो सकता क्योंकि– (शनि के लाभेश होने) गुरु के व्ययेश होने से पाप भी हो गया है । शुक्र साक्षात् मारक हैं, 2-7 स्वामी का होने से शनि आदि भी (मारक के सम्बन्ध से) मारने वाले होते हैं । मेष जन्म वाले के ये शुभाशुभ ग्रह कहे ।

2. वृष लग्न : गुरु, शुक्र चन्द्रमा पापफलप्रद और शनि सूर्य शुभ हैं । एक शनि ही राजयोग कारक है । बुध, गुरु, पापी और मारक हैं । वृष लग्न में जन्म वाले के ये फल हैं।

3. मिथुन लग्न : मंगल, गुरु, सूर्य पापफल प्रद हैं । केवल एक शुक्र ही शुभ है। गुरु शनि का योग मेषलग्न के समान जानना। द्वितीयेश होने से चन्द्रमा मारक नहीं होता, इसका मारकत्व निष्फल है। मिथुन लग्न वाले के ये फल जानना ।

4. कर्क लग्न : शुक्र, चन्द्रमा पापफलप्रद हैं । मंगल, शनि शुभ हैं । एक मंगल ही योगकारक है । शनि मारक है । अन्य सूर्य, बुध, गुरु मध्यम हैं । कर्क लग्न वाले के ये फल मुनियों ने कहे हैं ।

5. कन्या लग्न : चन्द्रमा, मंगल, गुरु, पापफलप्रद हैं । केवल एक शुक्र शुभ है । शुक्र और बुध योग कारक हैं । शुक्र निहन्ता है, अन्य मंगल शनि, मारक हैं । (सूर्य मध्यम है) कन्या लग्न वाले के ये फल हैं ।

6. सिंह लग्न : बुध शुक्र शनि पापफलदाता और मंगल, गुरु, सूर्य, शुभफलप्रद हैं। गुरु

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 13, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।

शुक्र का सम्बन्ध (केन्द्र, त्रिकोण योग होने पर भी) शुभ नहीं हैं। मारकलक्षण युक्त शनि बुध कारक हैं। यह सिंह लग्न का फल है ।

मानक उदाहरण में सिंह लग्न है अतः उपरोक्त विचार करना चाहिए।

7. कन्या लग्न : चन्द्रमा, मंगल, गुरु, पापफलप्रद हैं । केवल एक शुक्र शुभ है । शुक्र और बुध योगकारक हैं । शुक्र निहन्ता है, अन्य मंगल, शनि, मारक है। (सूर्य मध्यम है) कन्या लग्न वाले के ये फल हैं ।

8. वृश्चिक लग्न : सूर्य, मंगल, गुरु पापफलदाता हैं । शनि, बुध शुभ हैं । चन्द्रमा, बुध, राजयोग कारक है। मंगल निहन्ता (मृत्युकारक) हैं । बाकी गुरु, शुक्र भी मारक हैं । तुला लग्न वाले के ये फल कहे गये हैं ।

9. धनु लग्न : शुक्र एक ही पूर्ण फलदाता है । सूर्य, बुध, राजयोग कारक हैं । शनि मृत्युकारक है । शुक्र आदि मारक के समान हैं । यह फल धनु लग्न का जानना ।

10. मकर लग्न : चन्द्रमा, मंगल, गुरु पापफल दाता हैं । बुध, शुक्र शुभ हैं । शनि स्वयं मृत्युकार है । शुक्र एक राजयोग कारक है । मंगल आदि बाकी मारक के समान है । यह फल मकर लग्न वाले का कहा गया है ।

11. कुम्भ लग्न : चन्द्र, मंगल, गुरु पाप फलप्रद हैं । एक शुक्र शुभ है। मंगल, शुक्र राजयोग कारक हैं । बृहस्पति मृत्युयोग कारक हैं । मंगल और बाकी ग्रह मारक के समान हैं । यह फल कुंभ लग्न वाले का कहा गया है ।

12. मीन लग्न : शनि, शुक्र, सूर्य और बुध पाप फलदाता हैं । मंगल, चन्द्रमा, शुभ हैं। मंगल, गुरु राजयोग कारक हैं । मंगल, मृत्युकारक नहीं है । शनि, बुध, सम्बन्ध से मारक हैं । मीन लग्न वाले के ये फल कहे गये हैं ।

* * *

अध्याय-12

अप्रकाश ग्रह तथा गुलिकादि के आधार पर फलादेश

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय छः श्लोक 1 से 72 तक अप्रकाश ग्रहों का फलादेश दिया है । इनकी संख्या पाँच बताई गई है।[1] जो हम अध्याय तीन में स्पष्ट कर आये हैं । लेकिन ये कोई ग्रह नहीं हैं । केवल ग्रहों की कल्पना मात्र हैं । इनका प्रचलन लोक में नहीं हैं । यदि इनका प्रचलन व्यवहार में लिया जाता है तो जन्म कुण्डली का एक बड़ा हिस्सा इनके फलादेशानुसार प्रभावित होता है। ये ग्रह अनिष्ट कारक हैं । इन ग्रहों का भावानुसार शुभ तथा अनिष्ट फल घटित होता है । इनके आधार पर फलादेश निम्न प्रकार से है :–

अप्रकाश ग्रह चक्र

इन्द्र चाप 6 केतु
4
परिधि प्राणपद 7
5
3
8
2
1 व्यतिपात गुलिक
9
11
10
12 धूम
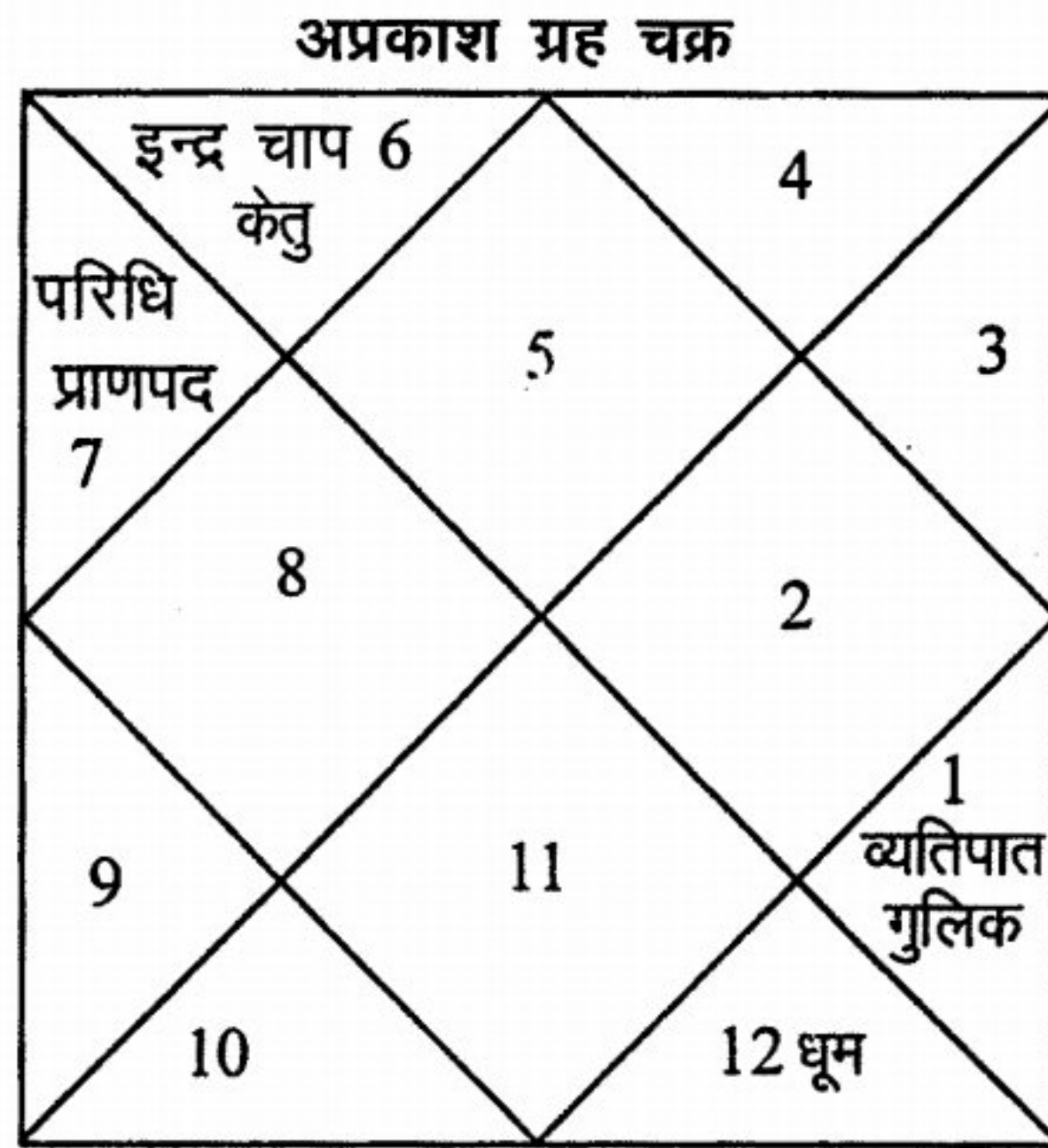
उपरोक्त कुंडली में चार भाव प्रभावित होते हैं, धन भाव, भ्रातृ भाव, आयु भाव तथा भाग्य भाव । फिर भी अध्ययनानुसार शुभाशुभ फलादेश निम्न प्रकार से है :–

धूम फल :-

1. यदि लग्न में धूम ग्रह हों तो शूरवीर निर्मल नेत्रवाला हठी, घृणारहित, दुष्टबुद्धि

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड, अध्याय 6, श्लोक 1 से 72 खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।।

महाक्रोधी होता हैं ।

2. द्वितीय भाव में धूमग्रह हो तो जातक धनी, रोगी, अंगहीन, राजपक्ष से चिन्ताशील, मूर्ख और नपुंसक होता हैं ।

3. तृतीय स्थान में धूमग्रह हो तो बुद्धिमान, संग्राम में धीर, मिष्टभाषी, शान्तचित्त, तथा धनवान होता है ।

4. चतुर्थ भाव में हो तो स्त्री रतिहीन, नित्य चिन्ताशील, शास्त्रव्यसनी होता है।

5. पञ्चम भाव में हो तो कम सन्तानवाला, धनहीन, स्थूलकाय, सर्वभक्षी तथा मित्र रहित होता है ।

6. छठे भाव में होने से बलवान्, शत्रु को जीतने वाला, तेजस्वी, नीरोग और विख्यात होता है ।

7. सातवें भाव में हो तो दरिद्री, अतिकामी, लम्पट, कान्तिरहित होता हैं ।

8. आठवें भाव में हो तो–हिम्मतवान, उत्साही, सत्यवादी, निष्ठुर, कठोर वृत्तिवाला होता है ।

मानक उदाहरण में धूम अष्टम भाव में है अतः उपरोक्त फल होगा ।

9. नवम भाव में धूम हो तो धनी, मानी, प्रजावाला, बन्धुप्रेमी, ऐश्वर्यशाली होता है।

10. दशम भाव में हो तो सन्तान तथा ऐश्वर्य सम्पन्न, बुद्धिमान, सुखी, सत्यवादी होता है।

11. एकादश भाव में धूम ग्रह हो तो धन सम्पत्तियुक्त, रूपवान्, कलाप्रेमी, विनीत ओर गान–वाद्यनिपुण होता है ।

12. द्वादश भाव में धूमग्रह हो तो पतित, पापी, लम्पट, (परस्त्रीगामी) व्यसनी और निर्घृण, दुष्टप्रकृति होता है ।

पातग्रह फल :-

1. लग्न में यदि पात ग्रह लग्न में हो तो दुःखी, रोगी, क्रूर, घातकारी, मूर्ख और बन्धुद्वेषी

होता है।

2. धनस्थान में यदि पात हो तो कुटिल, पितप्रकृति, भोगी, घृणारहित, दुष्टात्मा, पापी और कृतघ्न होता है ।

3. तृतीय भाव में पात हो तो अपने विचार पर दृढ़ रहने वाला, रणवीर, दानशील, धनाढ्य, राज में मानवाला, सेनाध्यक्ष होता है ।

4. चतुर्थ भाव में पात हो तो सुख, सौभाग्यहीन, रोगी, दरिद्री तथा कैदी होता है ।

5. पांचवे भाव मे पात हो तो रूपवान, दरिद्री, त्रिदोषयुक्त शरीर, निष्ठुर और निर्लज्ज होता है ।

6. छठे भाव में पात हो तो शत्रुहन्ता, पुष्टशरीर, हथियार चलने में प्रवीण, कलाचतुर तथा शान्तप्रकृति होता है ।

7. सप्तम स्थान में पात हो तो धनऐश्वर्यहीन, स्त्री–पुत्र–रहित या स्त्री के आधीन रहने वाला तथा निर्लज्ज और परप्रेमी होता है ।

8. आठवें स्थान में पात हो तो नेत्ररोगी, विरूप, दुर्भागी, परनिन्दक, रक्तस्राव आदि रोगवाला होता है ।

9. नवम् भाव में पात हो तो अनेक व्यापार करने वाला, अनेक मित्रों वाला, बहुश्रुत, मिष्टभाषी, दारप्रेमी होता है ।

मानक उदाहरण में पात ग्रह नवम् भाव में स्थित है । अतः उपरोक्त फल घटित होगा।

10. दशम् भाव में पात हो तो लक्ष्मीवान् धर्मात्मा, शान्तप्रकृति, महापण्डित और अतिचतुर होता है ।

11. लाभस्थान में पात हो तो महाधनी, प्रतिष्ठित, सत्यवादी, दृढ़संकल्पवाला, सवारीवाला, गायनप्रेमी होता है ।

12. बारहवें स्थान में पात हो तो क्रोधी, अंगहीन, धर्मद्रोही, बन्धुद्वेषी तथा अनेक कामों में

संसक्त रहता है ।

परिधि फल :-

1. परिधिग्रह लग्न में हो तो विद्वान, सत्यप्रेमी, शान्त, धनवान, पुत्रवान, पवित्रमति, दानी, तथा गुरुभक्त होता है ।
2. धन स्थान में परिधि हो तो प्रभुतासम्पन्न, रूपवान, भोगी, सुखी, धर्मपरायण तथा अधिकारवान होता है।
3. तृतीयभावगत परिधियोग में जातक–स्त्रीप्रेमी,रूपवान, इष्टस्वजनों में रहने वाला, आस्तिक, गुरुभक्त तथा नौकरी करने वाला होता है ।

मानक उदाहरण में परिधि ग्रह तृतीय भाव में है अतः उपरोक्त फल घटित होगा ।

4. चतुर्थ भाव में परिधि हो शत्रु से भी प्रेमभाव रखकर उसकी सम्पूर्ण, भलाई करके विस्मित करने वाला होता है ।
5. पञ्चमभाव में परिधि हो धनवान्, शीलवान्, सुन्दर, मित्रप्रेमी, धर्मात्मा, स्त्रियों का प्यारा होता है ।
6. षष्ठ भाव में परिधि हो तो प्रसिद्ध धन पुत्रवान, भोगी, सबका हितेच्छु शत्रु का नाश करनेवाला होता है ।
7. सप्तमभाव में परिधि हो तो मध्यम सन्तान सुखवाला, दीन, निर्बुद्धि, निष्ठुर, स्त्रीरोगिणी रहे ।
8. अष्टमभाव मे परिधि सम्पन्न हो तो आत्मज्ञान संपन्न, शान्त, दृढ़ शरीर, दृढसंकल्पवाला, धर्मात्मा, सबल होता है ।
9. नवमभाव में परिधि हो तो पुत्रवान, सुखी, सुन्दर, धनाढ्य, चंचलतारहित, मानवाला, संतोषी होता है ।
10. दशमभाव में परिधि हो तो किसी किसी जगह गलती करने वाला, भोगी, दृढ़शरीर,

निर्मत्सर, बहुशास्त्रज्ञ होता है ।

11. लाभस्थान में परिधि हो तो स्त्रीभोगी, गुणवान, बुद्धिमान, स्वजनों का प्रिय, मंदाग्नि रोग वाला होता है ।

12. व्ययभाव में परिधि हो तो गुरुनिन्दक होता है ।

चापग्रह फल :-

1. लग्न में चापग्रह हो तो धन ऐश्वर्य युक्त, सर्वदोषरहित कृतज्ञ और समाज में मान्य होता है ।

2. धनभाव में चाप हो तो प्रिय वचन बोलने वाला, प्रगल्भ (ढीठ), विनीत, विद्वान्, धर्मात्मा तथा रूपवान होता है।

मानक उदाहरण में इन्द्रचाप द्वितीय भाव में है, अतः उपरोक्त फल घटित होगा ।

3. तीसरे भाव में चाप हो तो कलाप्रेमी परन्तु कृपण, चोरी करने वाला, हीनांग मैत्री तत्पर रहता है ।

4. चौथे भाव में चाप हो तो सुखी नीरोग धनादि, ऐश्वर्यवान, राजमान्य होता है ।

5. पंचम भाव में चाप हो तो रूपवान गम्भीर विचार वाला, सुरुचि सम्पन्न, प्रियभाषी, देवभक्त, सब कामों में अनुभवी होता है ।

6. छठे स्थान में चाप हो तो, शत्रु का नाश करने वाला धूर्तता रहित, सुखी, प्रीति में रुचिवाला, पवित्र विचार और सर्व कार्य में दक्ष होता है ।

7. सप्तम भाव में चाप हो तो आज्ञाकारी, पूर्णगुणी शास्त्रज्ञानवाला धार्मिक होता है ।

8. अष्टम भाव में चाप हो तो दूसरों की नौकरी करने वाला, क्रूरस्वभाव वाला, परस्त्रीगामी, चिन्ताशील होता है ।

9. नवम भाव में चाप हो तो आदर करने वाला, तपस्वी, व्रतादि में निष्ठावाला, विद्यावान, समाज में विख्यात होता है ।

10. दशमभाव में चाप हो धन, ऐश्वर्य, सन्तानवाला, गौ आदि का पालक समाज में प्रसिद्ध होता है ।
11. यदि लाभस्थान में चाप हो तो व्यापार से बहुत लाभ होता है । नीरोगी, बहुक्रोधी, अस्त्रविद्यानिपुण, स्त्रीभोगी होता है ।
12. बारहवें भाव में चाप हो तो अभिमानी, दुर्बुद्धि, निर्लज्ज, परस्त्रीगामी तथा दरिद्री होता है ।

शिखीफल :-

1. प्रथम भाव में शिखी हो तो सर्वविद्या में कुशल, सुखी, प्रिय व्याख्यान में निपुण, सर्व समृद्धिवान होता है ।
2. दूसरे भाव में शिखी हो तो व्याख्याता, मिष्टभाषी, सुन्दर, कवि, पंडित, मान सम्मानवाला, विनीत और सवारी वाला होता है ।

मानक उदाहरण में शिखि द्वितीय भाव में है, अतः उपरोक्त फल घटित होगा ।

3. तीसरे भाव में शिखी हो तो अतिकामी, दुर्बल, धनहीन तथा कठिन रोगवाला होता है।
4. चौथे भाव में शिखी हो तो रूपवान्, गुणी, सात्त्विक, विविध ज्ञान श्रवणप्रिय सुखी होता है ।
5. पञ्चम भाव में शिखी हो तो सुखी भोगी, कलाज्ञान वाला गुरुभक्त, चतुर, बुद्धिमान तथा वाचाल होता है ।
6. छठे भाव में शिखी हो तो मातृपक्ष का नाशक, किसी पद पर रहने वाला, बहुकुटुम्बी, बलवान, सुन्दर और चतुर होता है ।
7. सातवें भाव में शिखी हो तो रक्त विकारवाला, कामी, भोगी तथा वेश्यागामी होता है ।
8. आठवें भाव में शिखी हो तो नीच कर्म करने वाला, पापी, निर्लज्ज, निन्दक, स्त्रहीन, परपक्ष में रहने वाला होता है ।

9. धर्म, आचार तथा जाति की संस्कृति धारण करने वाला, सुखी, सबका हित चाहनेवाला, धर्मकार्यों में चतुर, ऐसे लक्षण नवमभाव के शिखी वाले के होते हैं ।
10. दशम भाव में शिखी होने से सुख और सौभाग्य से युक्त, कामिनियों का प्यारा, दानशील, ब्राह्मणभक्त होता है ।
11. लाभ भाव में शिखी होने से नित्य नये लाभ होते हैं । सब जगह आदर होता है। धनी, सुखी, शूरवीर, पंडित तथा धर्मतत्पर होता है ।
12. बारहवें भाव में शिखी होने पर बुरे कर्म करने वाला, बलवान, धर्म में श्रद्धाहीन, घृणारहित, परस्त्रीगामी तथा क्रूर होता है ।

गुलिक फल :-

1. लग्न में गुलिक हो तो रोगी, कामी, पापी, शठ, खल तथा दुःखी होता है।
2. धनभाव में गुलिक हो तो विकृत (बदशक्ल) दुःखी, क्षुदप्रकृतिवाला, व्यसनी, निर्लज्ज तथा निर्धन होता है ।
3. तृतीय भाव में गुलिक हो तो सुन्दर, ग्रामाधिपति, पुण्यकर्ता, सज्जनप्रिय तथा राजपूजित होता है ।
4. चतुर्थ भाव में गुलिक हो तो रोगी, दुःखी, सदा पापकर्म करने वाला, वात्तपित्त रोगी होता है ।
5. पंचम भाव में गुलिक होने से समाज में निन्दित, निर्धन, अल्पायु, द्वेषी, क्षुद्रप्रकृति, नपुंसक, स्त्री में अनुरक्त तथा नास्तिक होता है ।
6. छठे भाव में गुलिक हो तो शत्रुहीन, पुष्ट शरीर, कान्तिवाला, स्त्रियों को प्रिय, उत्साही, सुदृढ़ (गठीला) सबका प्रिय होता है ।
7. सातवें भाव में गुलिक हो हो स्त्री का अनुचर, पापी, जार, दुर्बल, प्रेमरहित, स्त्री की कमाई पर जीने वाला होता है ।

8. आठवें स्थान में गुलिक हो तो निर्धन, दुःखी, क्रूरकर्मरत, क्रोधी, घृणारहित, हिंसक, गुणहीन, दरिद्र होता है ।
9. नौवें भाव में गुलिक हो तो बड़े कष्ट से उपार्जन करने वाला, दुर्बल, बुरे कर्म करने वाला, घृणारहित, पिशुन (चुगलखोर) बाहर से अच्छा दीखने वाला होता है ।

मानक उदाहरण में गुलिक नवम् भाव में हैं, अतः उपरोक्त फल घटित होगा ।

10. दशमभाव में गुलिक हो तो पुत्रसन्तानवाला, सुखी, भोगी, देवपूजा तथा हवनादि करने वाला, कर्मयोगी, सुखी होता है ।
11. लाभस्थान में गुलिक हो तो सुन्दर भार्या वाला, सन्तानवाला, बन्धुवर्ग का हित करने वाला, हीनांग (छोटा कद) पर्यटनशील होता है ।
12. व्ययभाव में गुलिक हो तो नीच कर्म का आश्रय लेनेवाला, पापी, हीनांग, दुर्भागी, आलसी, नीच, संगति में रहने वाला होता है ।

प्राण पद फल :-

1. प्राणपद लग्न में हो तो मूक (गूंगा) उन्मत्त (पागल) तथा हीनांग, जडांग (बेकार अंगवाला) दुःखी, दुर्बल, तथा रोगी होता है ।
2. धन भाव में प्राणपद हो तो बहुधनी, बड़े अन्नभंडारवाला, बहुत नौकरवाला, बहुत सन्तानवाला, सौभाग्य वाला होता है ।
3. तृतीयभाव में प्राणपद हो तो हिंसकवृत्ति, अभिमानी, निष्ठुर, मलीन, मातृपितृभक्ति रहित होता है ।

मानक उदाहरण में प्राण पद तृतीय भाव में हैं अतः उपरोक्त फल लागू होगा ।

4. चौथे भाव में प्राणपद हो तो सुखी, सुन्दर, प्रेमी, स्त्रियों में प्यारा, गुरुभक्त, सुशील होता है ।
5. पंचम भाव में प्राणपद हो तो सुखभोगी, धर्मक्रियातत्पर, दयावान्, सर्वतः सन्तोषी होता है ।

6. छठे भाव में प्राणपद हो तो दूसरे के वश में रहने वाला, क्रोधी, मन्दाग्नि रोग वाला, दयाहीन, दुष्ट, धनी तथा अल्पायु होता है ।

7. सातवें भाव में प्राणपद हो तो ईर्ष्यालु, कामी, भयानक आकार, कुबुद्धिवाला, विरोधी स्वभाव वाला होता है ।

8. आठवें भाव में प्राणपद हो तो निरन्तर रोगी, नौकर, चाकर, भाई बन्धु तथा समाज से पीड़ित रहता है ।

9. नौवे भाव में प्राणपद हो तो पुत्रवान, धनवान, सौभाग्यवान, सुन्दर, विनीत तथा प्रेमी होता है ।

10. दशमभाव में प्राणपद हो तो बलवान, मतिमान, चतुर, राजकार्य में बुद्धिमान, देवभक्ति परायण होता है ।

11. लाभस्थान में प्राणपद हो तो विख्यात गुणवान, पंडित, भोगी, धनी, गौरववर्ण, मानी होता है ।

12. बारहवें भाव में प्राणपद हो तो क्षुद्रबुद्धि, दुष्ट, हीनांग, ब्राह्मण तथा बन्धुओं का द्वेषी, नेत्ररोगी अथवा काना होता है ।

* * *

अध्याय-13

षोडश वर्ग के आधार पर फलादेश

जातक के जन्म के समय के काल (इष्ट काल) के आधार पर ग्रह स्पष्ट तथा लग्न स्पष्ट करके जन्म लग्न कुंडली का निर्माण किया जाता हैं । इस कुंडली अध्ययन के लिए लग्न में विभिन्न भाग बनाकर सौलह प्रकार की कुंडलियों का निर्माण किया जाता है । जिनसे सोलह विभिन्न विशेष बातों का विस्तृत परिणाम निकाला जा सकता है । उदाहरण के लिए नवमांश कुण्डली बनाकर वैवाहिक जीवन का तथा द्वादशांश कुण्डली से माता–पिता का अध्ययन किया जाता है । इनमें लग्नेश तथा कुंडली में कार्येश की स्थिति तथा बल के आधार पर फल किया जाता है । यदि ग्रह उच्च राशि, स्वराशि, मित्र राशि तथा शुभ ग्रह की युति या दृष्टि से युक्त हो तो बलवान होता है तथा इसके विपरीत होने पर निर्बल होता है।

जन्म कुण्डली में षोडश वर्गो से विचारणीय विषय निम्न प्रकार से हैं ।

1. लग्न से शरीर का ।
2. होरा से सम्पति आदि का ।
3. द्रेषकाण से भ्रातृ का प्यार ।
4. चतुर्मांश से भाग्य का ।
5. सप्तमांश से पुत्र पौत्र आदि का ।
6. नवमांश से पत्नी का ।
7. दशमांश से किसी विशिष्ट फल का ।
8. द्वादशांश से माता पिता का ।
9. षोडशांश से हाथी, घोड़ा आदि वाहनों के सुख दुःख का ।
10. विषांश से उपासना का ।

11. चतुर्थविशांश से विद्या का ।

12. भांश बलाबल का ।

13. त्रिशांश अरिष्टों का ।

14. खेवदांश से शुभ–अशुभ फलों का ।

15. अक्षवेदांश तथा षष्ठयंश से समस्त वस्तुओं का विवेचन करना चाहिए । जिस भाव से पाप षष्ठयांश अधिक षष्ठयंश कुण्डली का स्वामी यदि पाप ग्रह हो निसंदेह उस भाव का नाश करता है और जिसमें षोडषांशधीश (षोडषांश लग्न कुण्डली का स्वामी) शुभ ग्रह हो उस भाव की पुष्टि या वृद्धि करता है, लग्न आदि द्वादश भावों तथा ग्रह स्पष्टों के राश्यादि विंशोपक बल देखकर शुभाशुभ का निर्देश देना चाहिए ।

विंशोपक बल ग्रहों का अध्याय चार में निकाल चुके हैं, जो निम्न प्रकार से हैं :–

विंशोपक बल चक्र

	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
1. षडवर्ग	11.80	16.80	12.40	11.40	12.80	16.85	12.5
2. सप्तवर्ग	11.90	17.50	13.55	12.30	13.35	16.75	10.80
3. दशवर्ग	11.06	15.19	14.69	13.64	13.82	16.26	10.75
4. षोडशवर्ग	11.37	13.89	14.38	12.00	13.81	17.38	11.47

तत्पञ्चोनं फलदं नहि ।।

तदूर्ध्वं स्वल्पफलदं दशोर्ध्वं मध्यमं स्मृतम् ।

तिथ्यूर्ध्वं पूर्णफलदं बोध्यं सर्वं खचारिणाम् ।।[1]

विश्वाबल 5 से कम होने पर वह फलप्रद नहीं होता है । 5 से अधिक और 10 तक हो तो स्वल्प फलदायक, 10 से अधिक और 15 तक रहने पर मध्यम फलप्रद और 15 से

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं० देवचन्द्र झा, वर्ग विवेचन अध्याय, श्लोक 26-27, प्रकाशन चौखम्बा, संस्कृत संस्थान, वाराणसी ।

अधिक 20 तक रहने पर पूर्ण फलप्रद होता है ।

लग्न कुण्डली

मं० 6
4
सू०
7 शु०
के०
5
3
8
2
श० बु०
9 चं०
11
1
रा०
10 गु०
12

देह विचार

होरा कुण्डली

सू०
श० 7 रा०
के०
चं० गु०
बु० 5 मं०
शु०

सम्पदा विचार
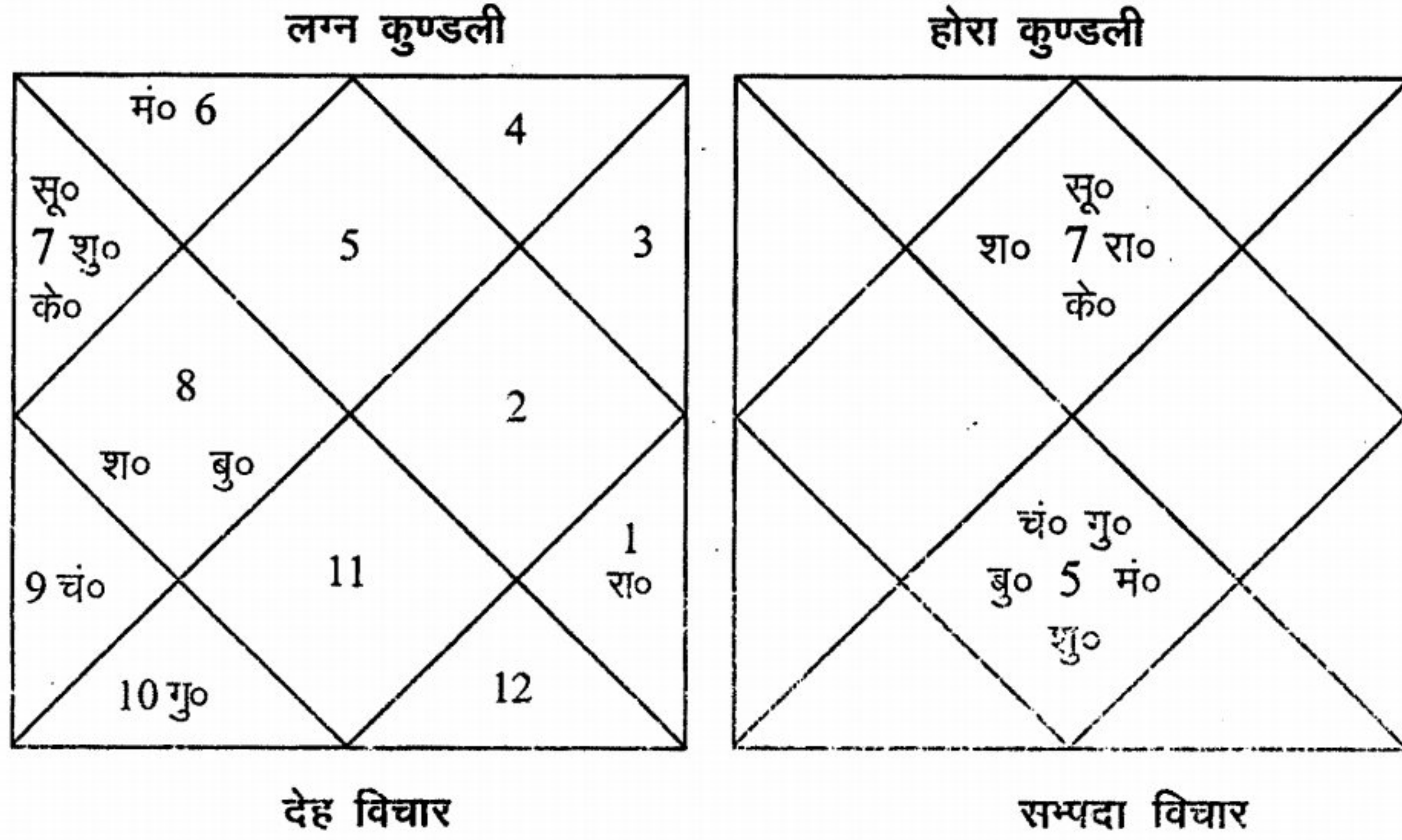
लग्न कुण्डली :- जातक की लग्न कुण्डली से उसके शरीर, स्वास्थ्य, विचार, मन आदि का विचार किया जाता है । क्योंकि लग्न कुण्डली का लग्नेश ही कार्येश भी होता है अतः इसकी स्थिति अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है । सिद्धांततः लग्नेश का शुभ स्थान में होना, बलवान होना उस पर दृष्टि तथा शुभाशुभ प्रति, फलादेश को प्रभावित करेगा । उदाहरण कुंडली में लग्नेश सूर्य तृतीय भाव में, शुक्र तथा केतु के साथ, नीच राशि में उच्चाभिलाषी है तथा 28° पर आत्मकारक है तथा षोडष वर्ग में विंशोपक बल मे 11.37 पर मध्यम स्थिति में है अतः इसका स्वस्थ मध्यम रहेगा । वास्तव में जातक की आयु 19 वर्ष है, जिसमें वह कभी भी बीमार नहीं हुआ, परन्तु कृशकाय है ।

होरा कुण्डली फल :- जातक की होरा कुण्डली से सम्पत्ति का विचार किया जाता है, यदि होरा कुण्डली का लग्नेश लग्न में हो तो जातक रजोगुणी तथा उच्चाभिलाषी होता है । यदि इसके साथ गुरु–शुक्र हों तो उच्च पद–प्रतिष्ठा सम्पत्ति प्राप्त करता है । लग्नेश यदि अपनी राशि में नही हो तो संपत्ति कम होती है। उदाहरण कुंडली में लग्नेश चन्द्रमा, सूर्य की होरा

में स्थित है, परन्तु इसके साथ शुभ ग्रह बु०, गु० तथा शु० भी हैं तथा मं० भी हैं । पुनः चन्द्रमा का विंशोपक बल 13.9 होने से यह जातक मध्यम स्तर का सम्पत्तिवान होगा।

द्रेष्काण

गु० 2
12
सू० 3
1
के० 11 शु०
4 बु०
मं० 10
5 रा०
7
9 चं०
6
श० 8

भ्रातृ सुख

चतुर्थांश

3
1
गु० रा० 5 सू०
1
मं० 12
5
मं० 10
6
8 श०
10 शु० के०
7
चं० 9

भाग्य विचार

द्रेष्काण कुण्डली फल :- द्रेष्काण कुंडली से भ्राता सुख का विचार किया जाता है । इसमें लग्नेश तथा तृतीयेश की स्थिति महत्वपूर्ण होती है, इनके शुभ स्थान तथा बली होने पर भ्राता सुख उपलब्ध होता है। वर्तमान कुंडली में लग्नेश मंगल उच्च राशि में दशम् स्थान में है जो भ्रातायोग बनाता है, परन्तु तृतीयेश बुध चतुर्थ स्थान में शत्रु राशि में है तथा लग्न कुंडली में भी तृतीय भाव नीच राशि का सूर्य, केतु तथा शुक्र के साथ होने से जातक को सहोदर भ्राता सुख से वंचित करता है जो सत्य है । जातक को चचेरे, मौसेरे भाईयों का सुख है, सहोदर का नहीं ।

इससे भाई बहन के सुख–दुख का विचार, इस लग्न स्वामी त्रक भाव में पाप पीड़ित हो और जन्म कुण्डली के तृतीय भाव का स्वामी 6, 8, 12 में हो तो भाई बहन का सुख नहीं होता ।[1]

चतुर्थांश कुण्डली फल :- जातक की चतुर्थांश कुण्डली से उसके भाग्य का विचार किया जाता है। इसके लिए लग्नेश तथा नवमेश का अध्ययन किया जाता है। उदाहरण कुंडली में लग्नेश शुक्र

1. "श्री राजधानी पंञ्चांग", प्रेमपाल कौशिक, दिल्ली, संवत् 2056, पेज 72 ।

के शुभत्व को कुछ कम करता है। भाग्येश शनि चतुर्थ स्थान में केन्द्र में बली है। शुक्र का विंशोपक बल 17.38 पूर्व फल देने वाला है, जबकि शनि का 11.47 मध्यम है, अतः जातक का भाग्य सामान्य से उच्च स्तर को होगा। यदा कदा कठिनाइयों के बाद भी अच्छे अवसर मिलते रहेंगे।

सप्तमांश

12
शु० 10
चं०
सू०
1
11
चं०
9
2
8
7
3 श०
5
गु०
रा० 4 मं०
बु० 6

पुत्र पौत्र आदि ज्ञान

नवमांश

9
7
शु०
10
8
6
बु०
के० 11
श० 5
रा०
4
12
2 गु०
चं० 1
सू० 3 मं०

स्त्री सुख

सप्तमांश कुंडली फल :- षोडश वर्ग की सप्तमांश कुण्डली से पुत्र–पौत्रादि का विचार किया जाता है । इस कुण्डली का फलादेश करने हेतु लग्नेश तथा बृहस्पति की स्थिति निर्णायक होती है । अध्ययन कुंडली में लग्नेश शनि पंचम स्थान में मित्र राशि में स्थित है। शनि का विंशोपक बल 11.47 है, पुनः गुरु भाग्य स्थान में शत्रु राशि में है । जिसका विंशोपक बल 13.81 है जो मध्यम है अतः जातक को सन्तान सुख प्राप्त होगा इसमें कोई बाधा नहीं आएगी। शनि तथा गुरु का क्रमशः पंचम एवं नवम् भाव में होना संतान सुख का कारक है।

नवमांश कुंडली फल :- सामान्यतः नवमांश कुंडली को लग्न कुण्डली के बाद सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इसमें ग्रहों का उच्च या नीच होना, लग्न कुंडली में ग्रहों की स्थिति को भी फलादेश में प्रभावित करता है, परन्तु पत्नी सुख हेतु इस कुंडली को विशेष महत्व दिया जाता है । उदाहरण कुंडली में लग्नेश मंगल अष्टम भाव में सूर्य के साथ होने से पत्नी सुख में कमी कारक है जबकि

सप्तमेश शुक्र तृतीय भाव में शुभ ग्रह बुध के साथ मित्र राशि में हैं । मंगल का विंशोपक बल 14.38 मध्य है तथा शुक्र का विंशोपक बल 17.38 पूर्व फल देने वाला है । अतः जातक को पत्नी सुख मिलने में विलम्ब हो सकता है। परन्तु बाद में पूर्ण सुख का योग बनता है । स्त्री जातक का नवांश का विशेष फल स्त्रीजातक अध्याय में आगे दिया गया है ।

दशमांश चक्र

1; 2; 3; 4 सू०; 5 रा०; 6 श०; 7 मं०; 8; 9 चं०; 10 बु०; 11 गु० शु० के०; 12

राज्य विचार

द्वादशांश चक्र

3; 4 बु० गु०; 5; 6 सू० रा०; 7; 8; 9 चं०; 10 श०; 11; 12 शु० के०; 1 मं०; 2
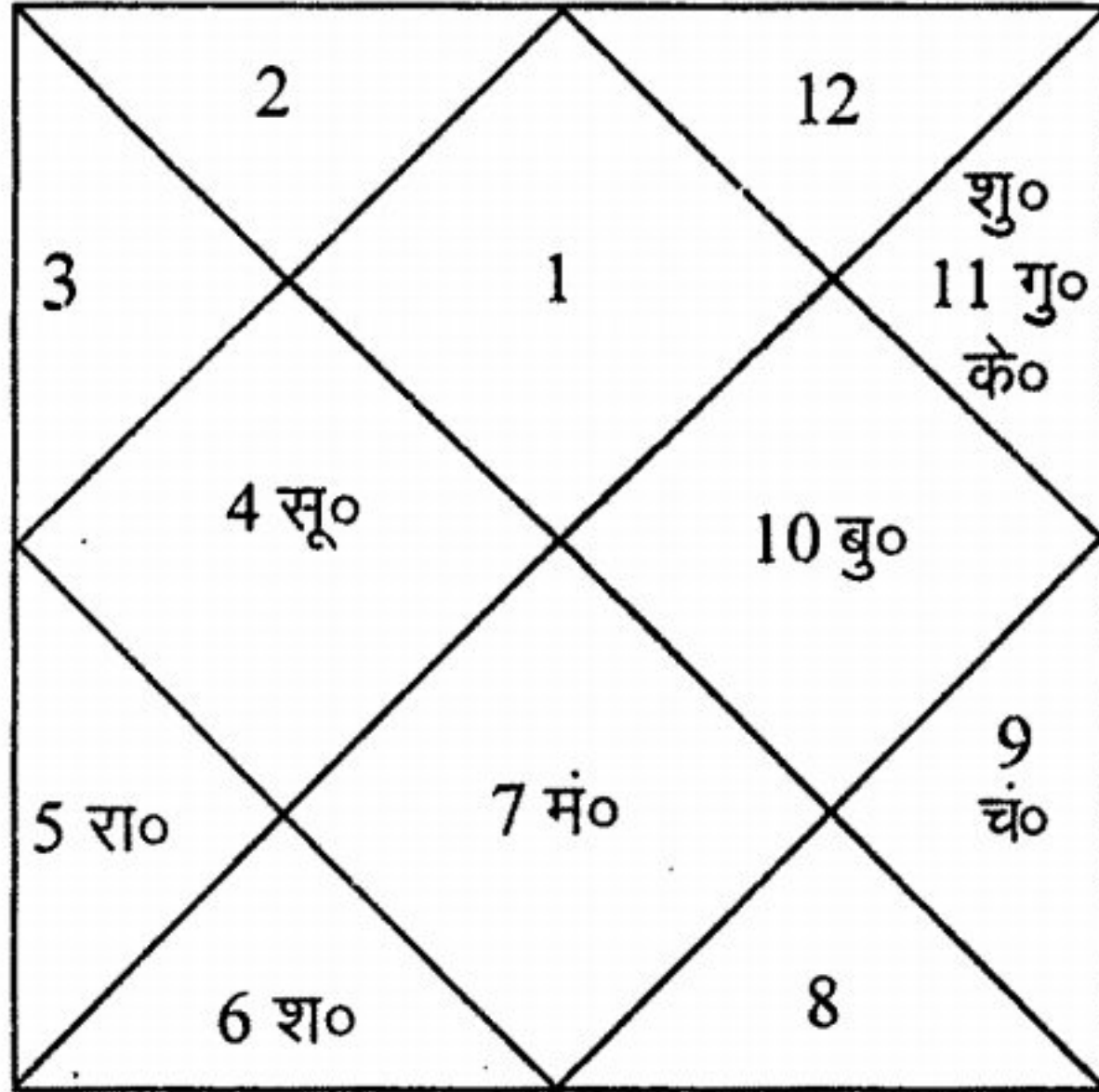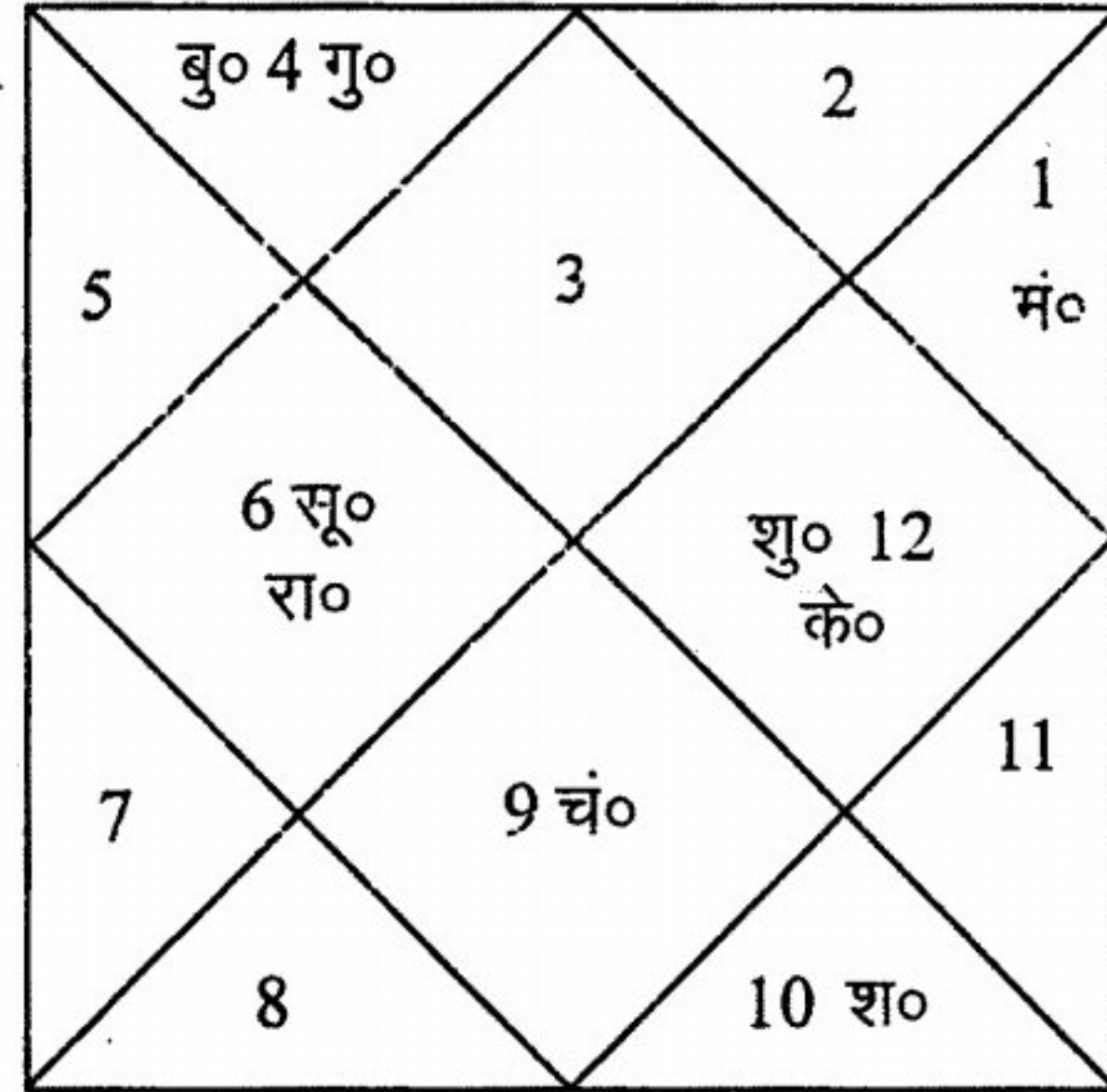
पितृ सुख

दशमांश कुंडली फल :- इस कुण्डली से राज्य का विचार किया जाता है, कि जातक कोई राज्य में उच्च पद प्राप्त करेगा या सरकारी नौकरी करेगा अथवा राज सत्ता से जुड़ेगा आदि। उपरोक्त कुण्डली में मंगल सप्त भाव में तुला राशि शुक्र के सम क्षेत्र में है तथा शनि छटे घर में, बुध सम क्षेत्र में है। दोनों का बल क्रमशः 11.47 तथा 14.38है । अतः जातक की सरकार में मध्यम स्थिति रहेगी । राज्य पक्ष मध्यम रहेगा ।

द्वादशांश कुंडली फल :- द्वादशांश वर्ग में मिथुन राशि की कुण्डली है । बुध धन में है । दशम राशि मीन गुरु की है । दोनों ग्रह धन घर में युति है तथा बुध का विंशोपक बल 12.00 और गुरु का 13.81 है । दोनों की स्थिति अच्छी तथा बल परिमाण मध्यम है । अतः पिता सुख अच्छा रहेगा । लेकिन बुध का शत्रु घर में जाना शुभ संकेत नही देता हैं । पिता पुत्र की विचारधारा में भिन्नता रहेगी । सो फलित घटित होता रहता है ।

षोडशांश चक्र

7 शु०
रा०
5
8 के०
6 मं०
4 सू०
श०
गु० 9 चं०
3 बु०
10
12
2
11
1

वाहन सुख विचार

विशांश चक्र

3
रा० 1
श०
12
4 मं०
2
5 चं०
गु० 11
6
8 सू०
10 के०
बु०
7
9 शु०
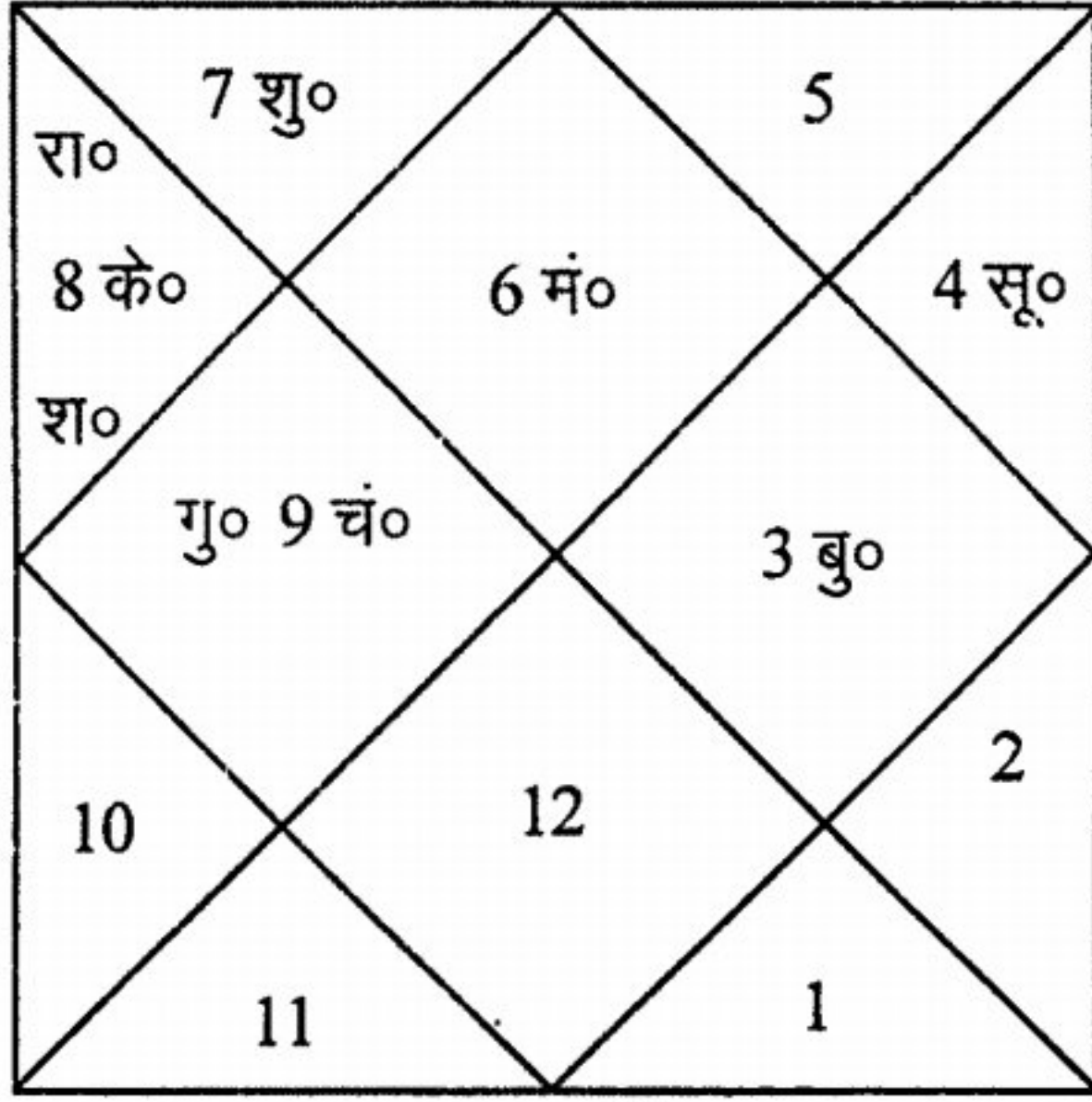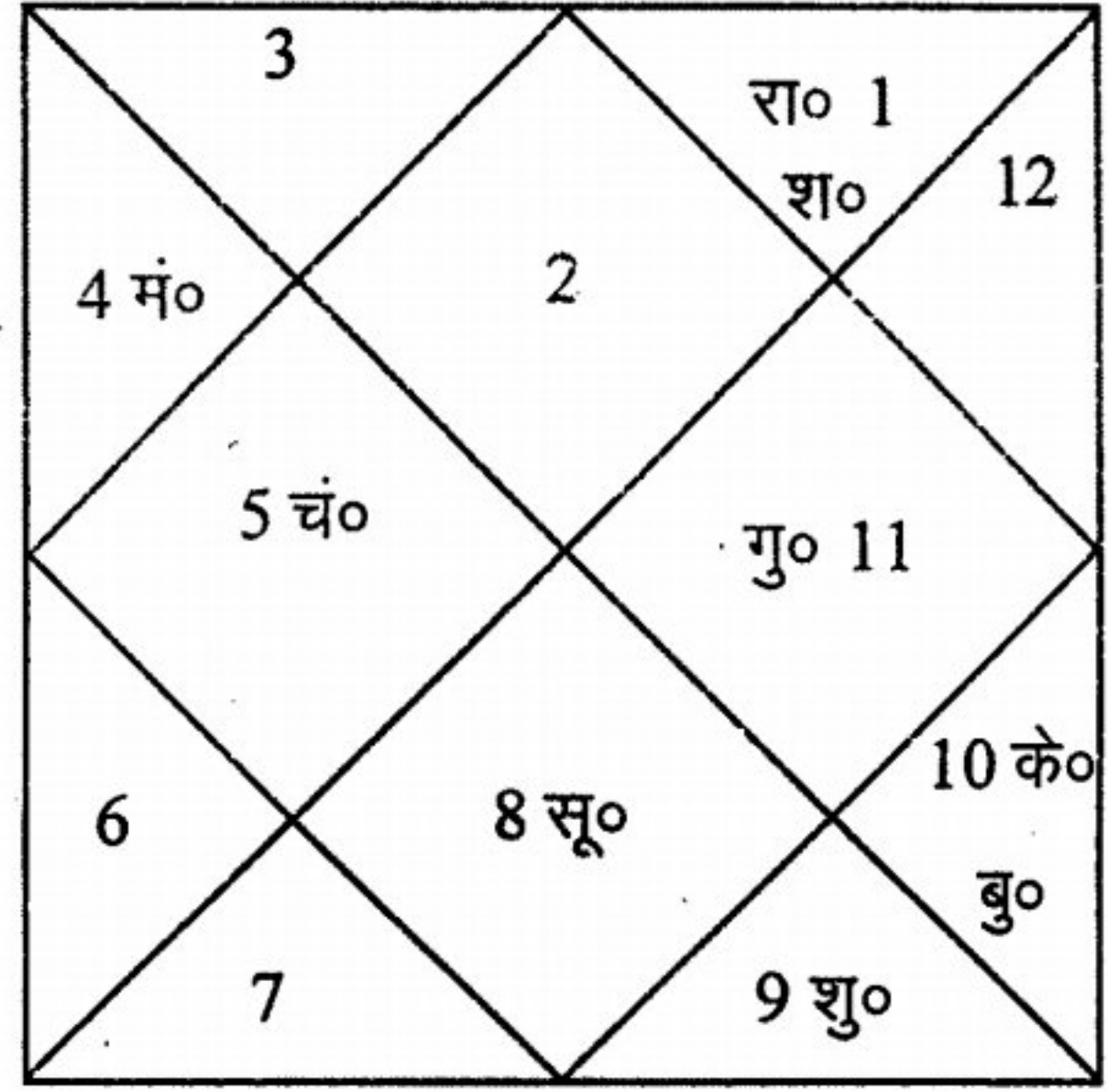
उपासनाज्ञान

षोडशांश फल :- यह लग्न कन्या बुध का है । सप्तम भाव मीन गुरु का है तथा चतुर्थ भाव गुरु का है । योग कारक ग्रह केन्द्र में एक दूसरे के सामने हैं तथा दोनों का बल क्रमशः 12.00 तथा 13.81 है । अतः जातक को वाहन का अच्छा सुख रहेगा ।

विशांश कुंडली फल :- विशांश लग्न वृष राशि शुक्र का है तथा शुक्र अष्टम भाव में धनु राशि सम क्षेत्र में हैं और पंचमेश बुध भाग्य घर में अपने मित्र शनि के शुभ घर में है तथा दोनों का बल क्रमशः 17.38 और 12.00 हैं, अतः जातक उपासना में मध्यम रुचि लेगा ।

चतुर्विंशांश चक्र

2
12
शु०
3
1
11
रा० 4 के०
सू०
10
5 चं०
गु०
7
9
6 मं०
बु० 8 शं०

विद्या विचार

भांश चक्र

1 चं०
11
10
2 रा०
12
3 श०
9
4 बु०
शु० 6
गु०
8 सू०
के०
5
7 मं०
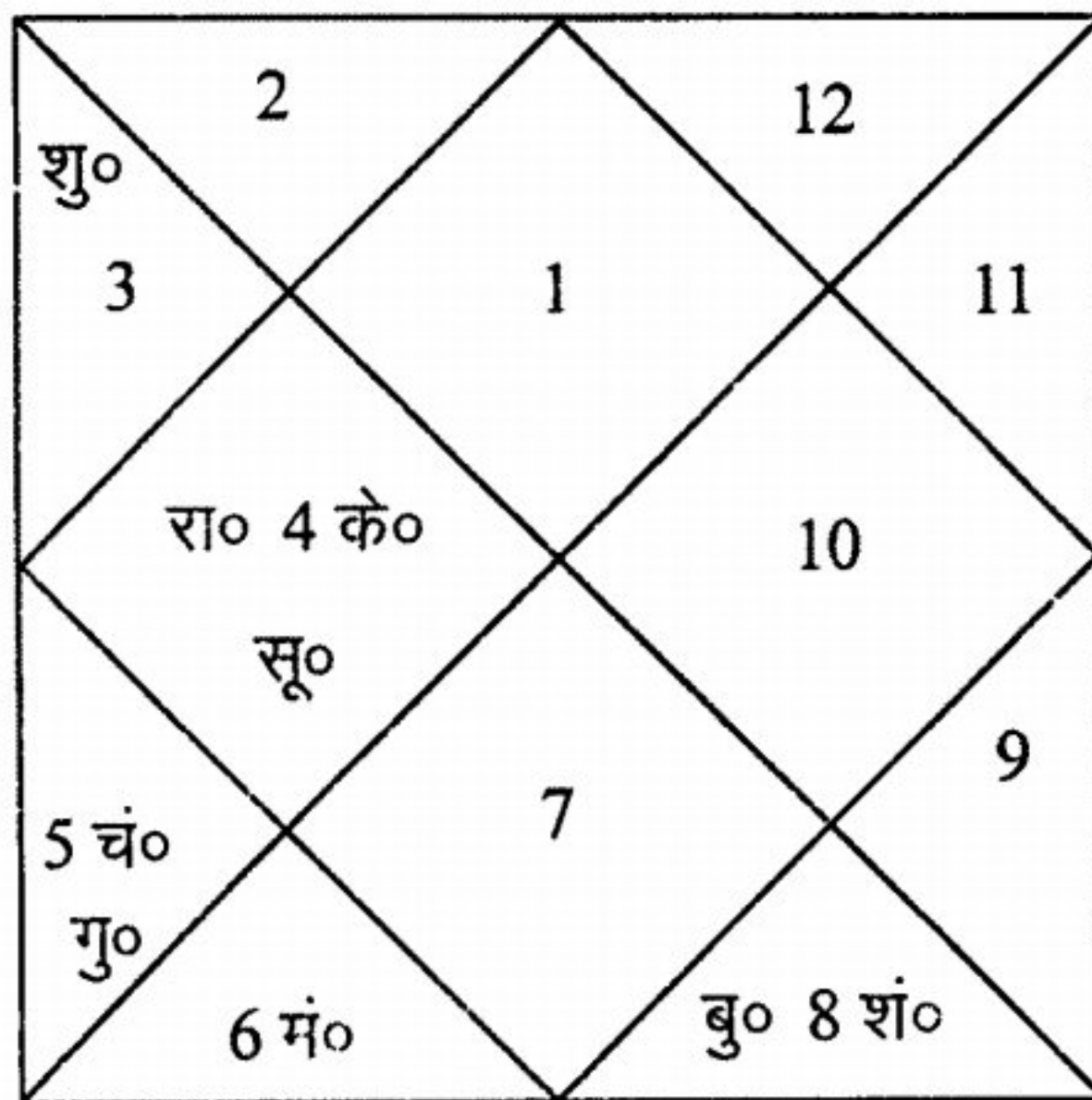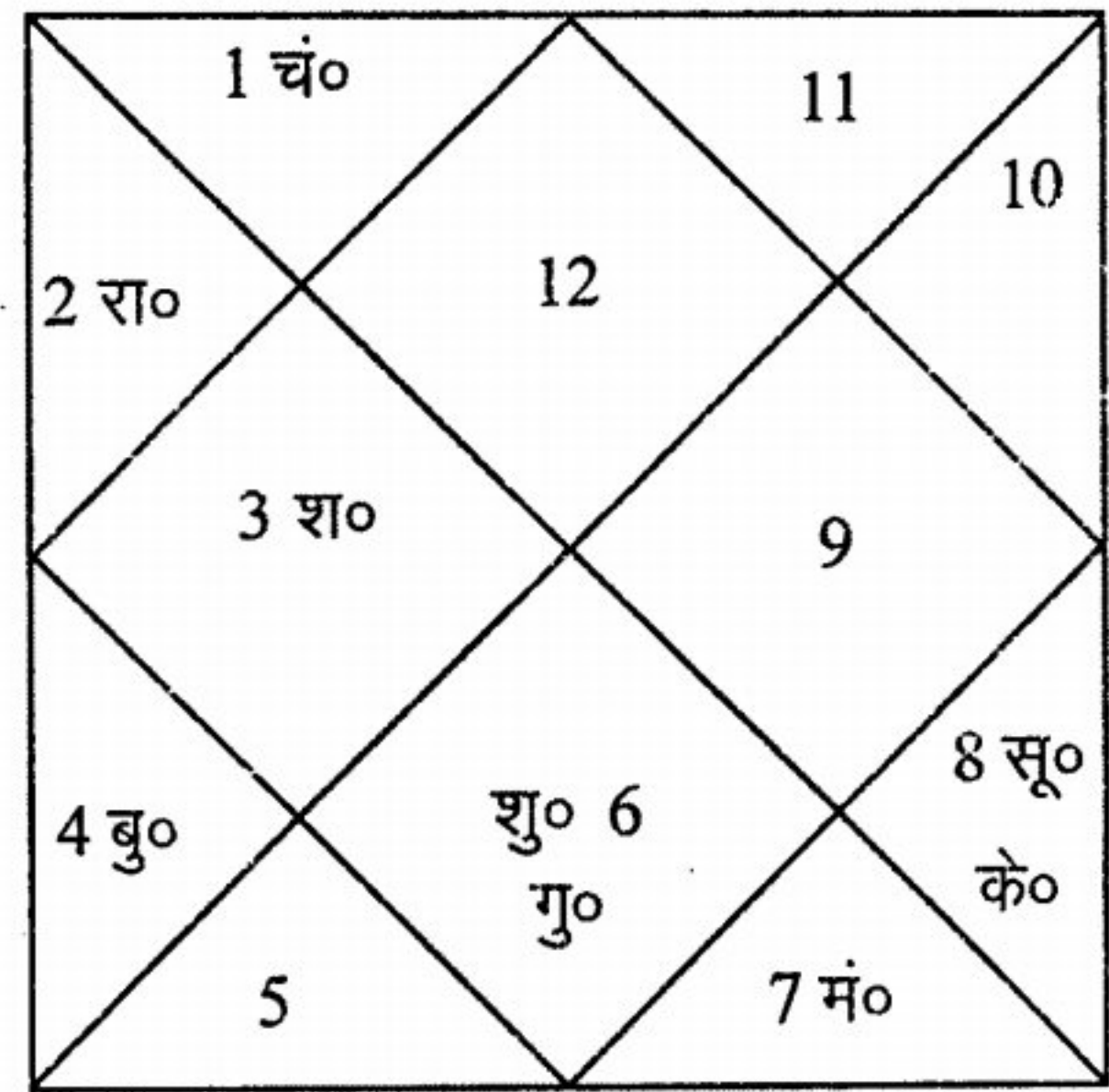
बलाबल ज्ञान

चतुर्विशांश फल :- इस वर्ग से विद्या का विचार किया जाता है । लग्नेश मंगल षष्ट भाव में कन्या राशि बुध के क्षेत्र में शत्रु राशि का है तथा पंचमेश सूर्य केन्द्र में मित्र के घर में। पंचम के सोम्य ग्रह गुरु और चन्द्र की युति हैं । मंगल का विश्वा बल 19.38 है, सूर्य का बल 11.37 है । अतः उच्च शिक्षा, लेकिन त्रुटिपूर्ण होगी। लगातार शिक्षा का संचालन नहीं होगा। ये बात घटित होती हैं । क्योंकि जातक का +2 के बाद एक वर्ष का अन्तर होने पर आयुर्वेदाचार्य में दाखला हुआ है ।

भांश बल :- इसका विचार लग्न तथा लग्नेश से करेंगे। लग्नेश सप्तम भाव केन्द्र मं अपने शत्रु बुध की रशि में शुक्र के साथ विराजमान है। गुरु का विश्वाबल 13.81 है और शुक्र का 17.38 शुक्र तथा गुरु आपस में शत्रु हैं अतः शारीरिक बल मध्यम रहेगा । गुरु तथा शुक्र के प्रभाव से कद लम्बा तथा गौर वर्ण होगा ।

त्रिशांश चक्र

शु० 8 के० रा०
6 श०
9
7 सू०
5
बु० 10
4
11
1 चं०
3
मं० 12 गु०
2

अरिष्ट ज्ञानम्

खवेदांश चक्र

12
10 बु०
चं०
9
1
11
2
रा० 8 के०
सू० 3 श०
5
7
गु० 4
शु० 6 मं०
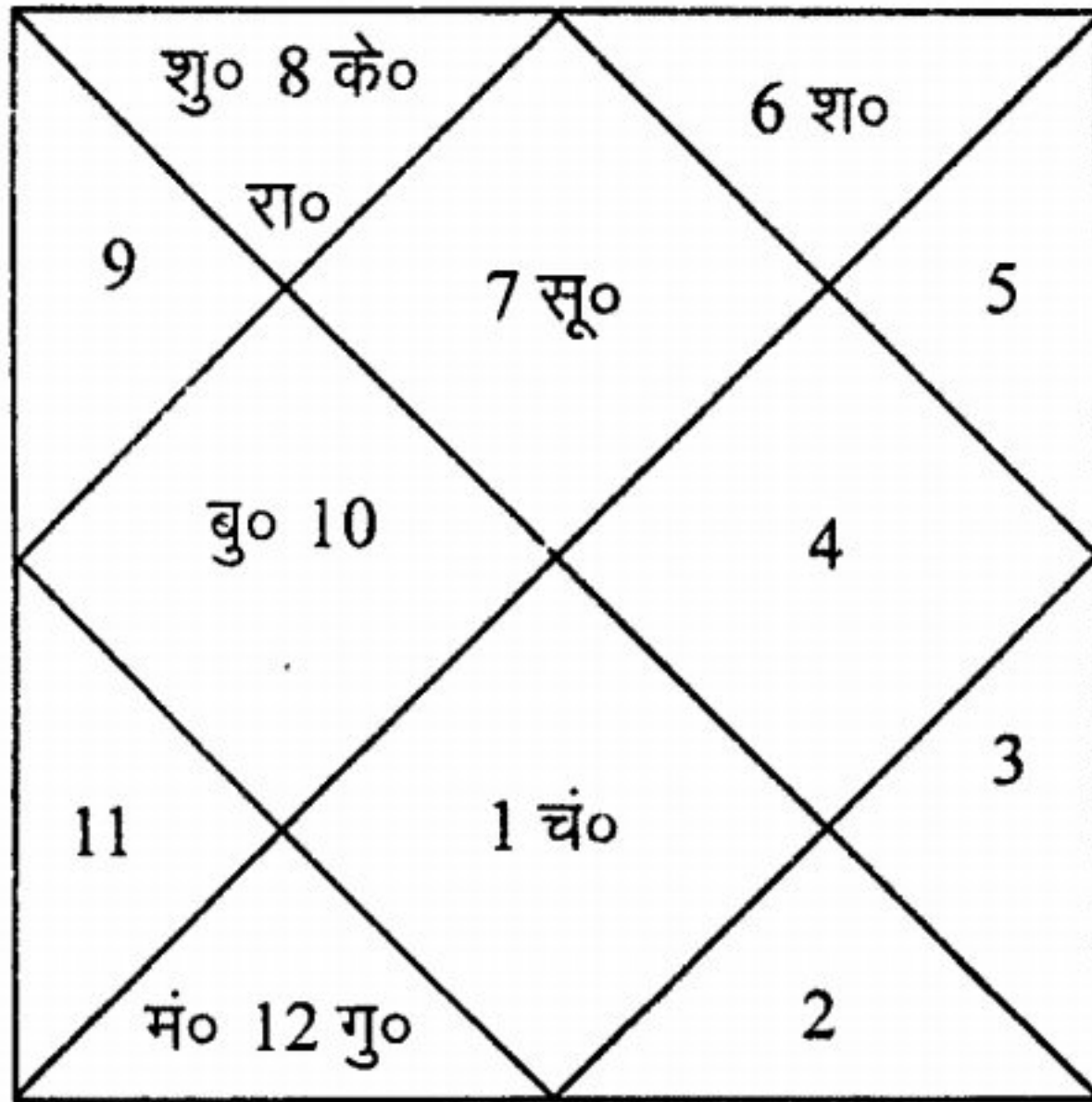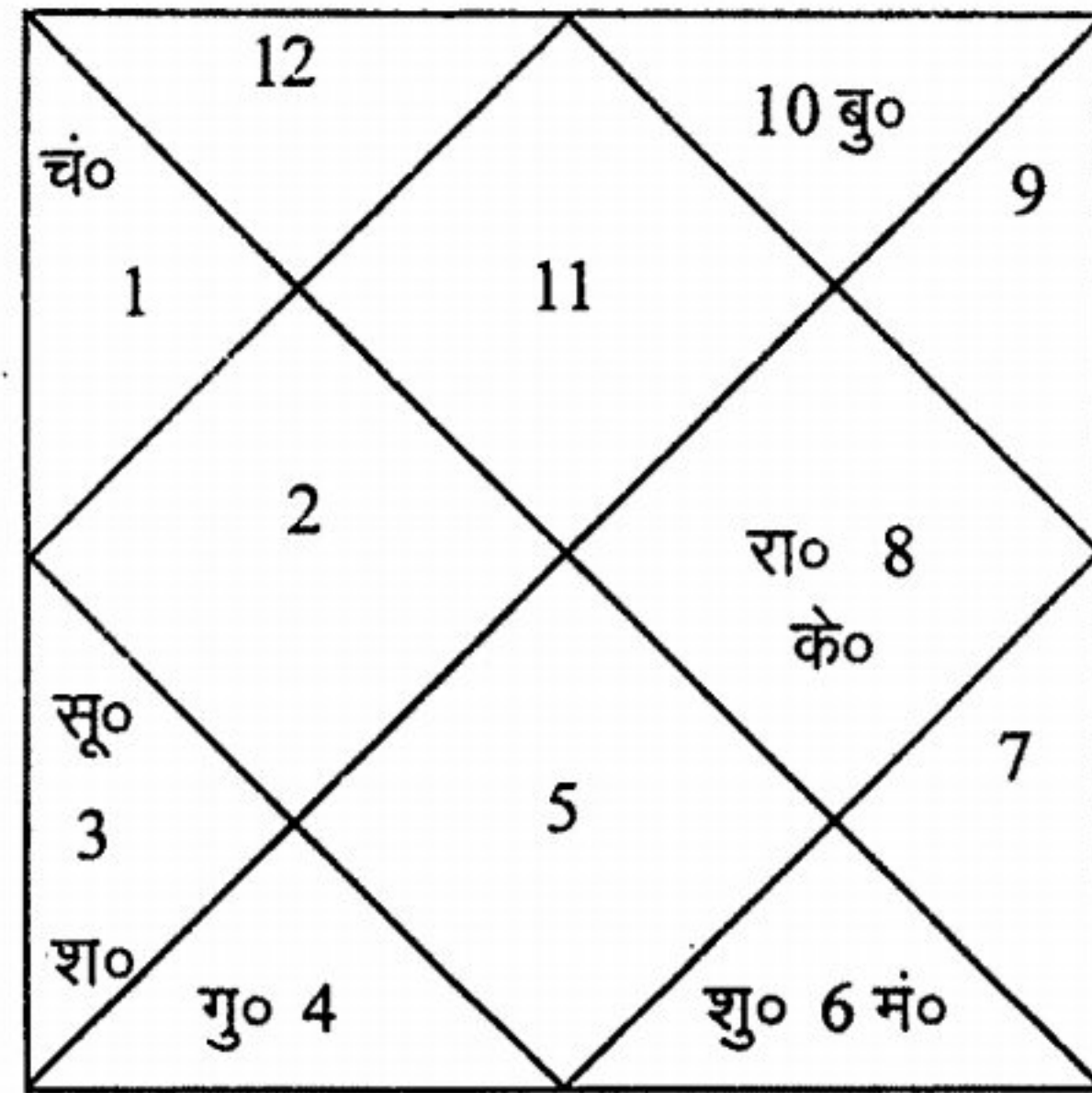
शुभाशुभ ज्ञानम्

त्रिशांश फल :- लग्नेश तथा 6-8-12 भावों मे अरिष्टो का ज्ञान अर्थात् बुरी घटनाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। लग्नेश तथा अष्टमेश शुक्र धन घर में राहु केतु पाप ग्रहों के साथ

वृश्चिक राशि सम क्षेत्र में है तथा शुक्र का विश्वा बल 17.38 है । इसमें गुरु षष्ट भाव में है जिसका विश्वा बल 13.81 हैं तथा बुध केन्द्र में मकर राशि सम क्षेत्र में है, अतः गुरु, राहू केतु के संयोग से दशानुसार अरिष्ट फल होंगे । जैसे बुध से माता का मरण, शुक्र से कुटुम्ब को हानि, गुरु से चोट भय, मामा, मौसी का निधन, व्याधि, चोट, बन्धन, झगड़ा, ऋणादि फल घटित होंगे ।

त्रिशांश कुण्डली का विशेष फल स्त्री जातक अध्याय में विस्तृत रुप से आगे दे दिया गया है, जो कि स्त्रीजातक के लिए बड़ा महत्वपूर्ण है ।

त्रिशांश कुण्डली से शुभाशुभ घटनाओं का विचार लग्न का स्वामी पापयुक्त 6, 8, 12वें भाव में हो तो जातक का जीवान्त ग्रहानुकूल वस्तु विशेष से होगा । सूर्य हो तो उच्च स्थान से गिरकर, चन्द्र हो तो जल में, मंगल हो शस्त्र से, शनि हो तो वाहन से, गुरु हो तो वायु से, शुक्र हो तो विलासिता से, बुध हो व्यापारिक झंझट से तथा राहु केतु का सम्पर्क होने विषादि से मृत्यु होती है।[1]

खवेदांश फल :- इस शुभाशुभ का ज्ञान प्राप्त किया जाता हैं इसमें लग्नेश, शनि सूर्य के भाव के साथ पंचम भाव में स्थित हैं । शनि का बल 11.47 तथा सूर्य का 11.37 है । पिता पुत्र में झगड़ा विचारधारा में भिन्नता, पिता की मृत्यु का कारण यह बालक होगा । शुक्र तथा मंगल का अष्टम भाव में योग प्रेम विवाह आदि के संकेत देता हैं । सूर्य शनि से पता लगता हैं कि यह जातक दो विवाह करेगा। प्रथम पत्नी से वियोग होगा । केन्द्र में राहू केतु के होने से शुभ फल घटित होंगे । शुक्र भाग्येश छटे घर में हैं अतः भाग्य के कार्यो में रुकावट होगी। भ्रातृ घर का मंगल अष्टम में है अतः और भाई नहीं होगा । शनि का विश्वाबल 11.47 हैं। अतः मध्यम फल घटित होंगे ।

---

1. "राजधानी पंञ्चांग", प्रेमपाल कौशिक, दिल्ली, संवत् 2056, पेज 72 ।

अक्षवेदांश

9 चं०
7 सू०
के०
10
8 शु०
6
श०
मं० 11
5 बु०
4
12
2 श०
1 गु०
3

समस्त वस्तु विचार

षष्टांश

8
6
5
चं०
9
7 शु०
के०
10
4 बु०
सू०
11
मं०
1
3 रा०
12
गु० 2 श०
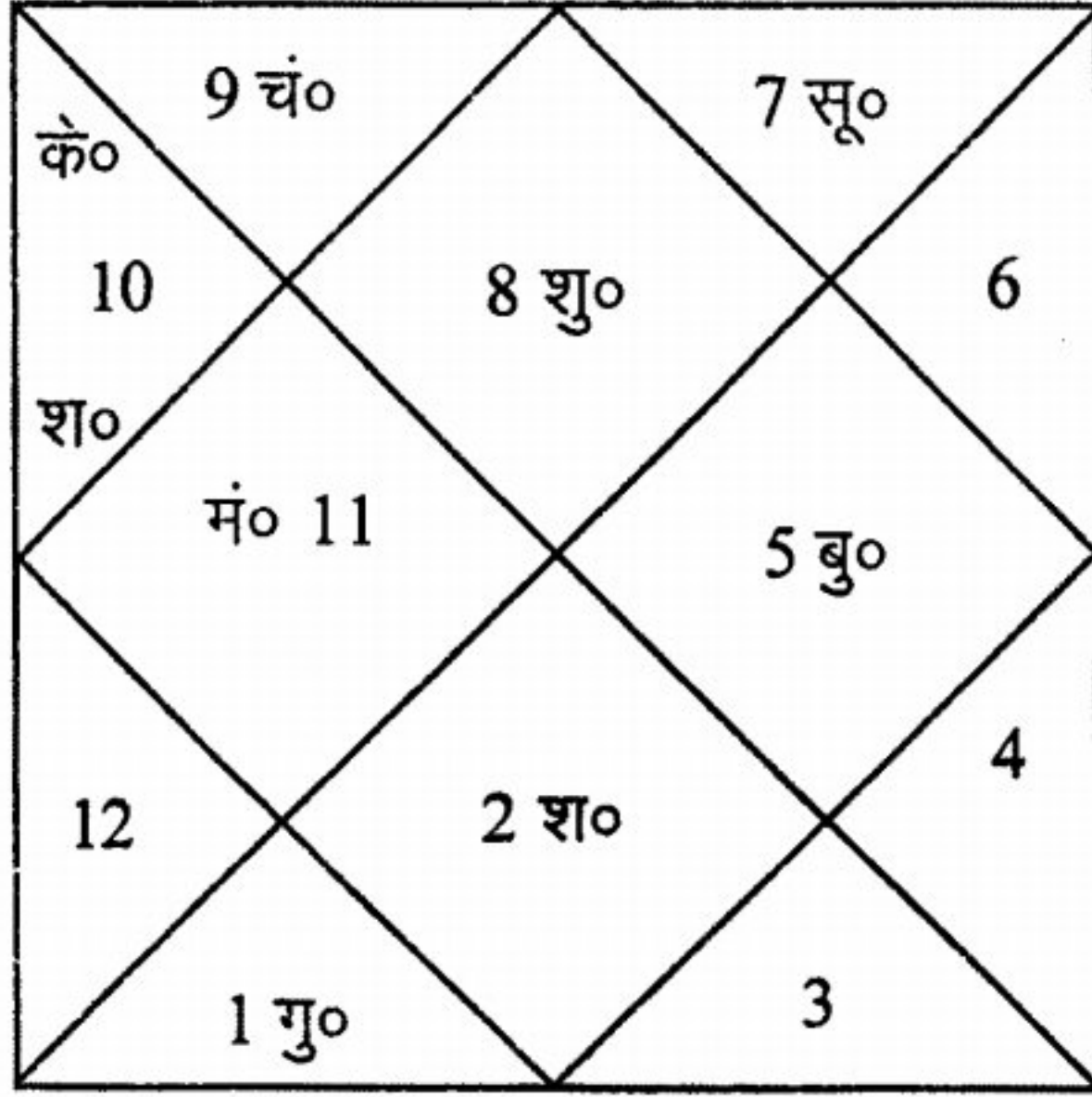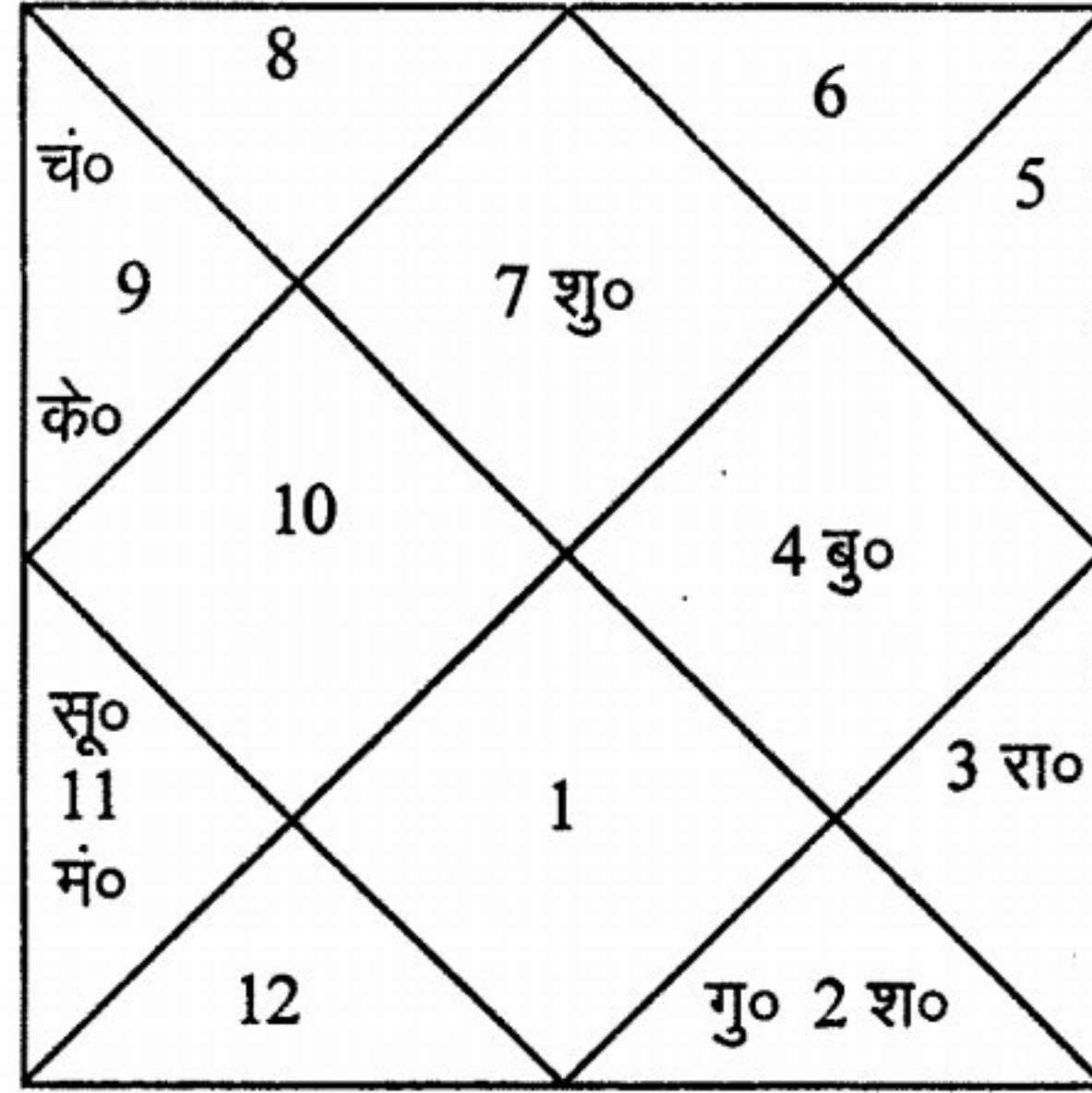
समस्त वस्तु विचार

अक्षवेदांश फल :- इसमें लग्नेश मंगल केन्द्र में कुम्भ राशि सम क्षेत्र में है तथा मंगल का विश्वा बल 14.38 है अतः समस्त वस्तुओं का मध्यम फल प्राप्त होता है । इसके साथ लग्न में शुक्र हैं जिसका विश्वाबल 17.38 अतः यह पूर्ण फल के खण्ड में स्थित है अतः जातक के जीवन में सभी वस्तुएं सरलता से प्राप्त होंगी । सभी वस्तुओं से तात्पर्य हैं गाड़ी, वाहन, घर में काम आने वाली वस्तुएं, ऐश्वर्य की वस्तुएं आदि ।

षष्टयांश फल :- इसका स्वामी शुक्र पूर्ण बल से युक्त है तथा लग्नेश लग्न में होने से जातक को किसी भी वस्तु की कमी नहीं होगी यह निश्चित है। क्योंकि विश्वा बल में शुक्र 17.38 बल प्राप्त है । यह अपने आप में पूर्ण बल है । कई कुण्डलियों में क्रूर षष्टयांश होता है । उसका फल उत्तम नहीं होता । डॉ० सुधीकान्त भारद्वाज ने अपने ग्रन्थ सर्वांग ज्योतिष में लिखा है कि :– "षष्टयंश कुण्डली में पाप घर का स्वामी जन्म कुण्डली में जिस भाव से बैठा हो वह उस घर का नाश करता है। इसी प्रकार षोडशांश कुण्डली में शुभ घर स्वामी किसी अन्य कुण्डली में जिस भाव में स्थित हो उस घर की वृद्धि करता है ।"[1]

* * *

1. "सर्वांग ज्योतिष", डॉ० सुधीकान्त भारद्वाज, भारद्वाज पब्लिकेशन, दिल्ली ।

अध्याय-14

दशाओं के आधार पर फलादेश

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" अध्ययन ग्रन्थ से दशाओं का फल पेज 295 से 496 तक 201 पेजों में विस्तृत रूप से दिया है।[1] यह अपने आप में बड़ा महत्वपूर्ण विषय है। इनमें बहुत सी दशाओं के फलादि प्राप्त नहीं है। लेकिन भगवान पराशर ने स्थान–2 पर संकेत दिये हैं कि कौन सी दशा किस अवस्था में ग्रहण करनी चाहिए। जिन दशाओं का फलादेश प्राप्त नहीं है शायद उनकी लिपि लेखक को प्राप्त नहीं हुई है। जिसके कारण उन दशाओं का फलादेश करना कठिन है। इस महाग्रन्थ में दशा फल के अन्त में एक विशेष बात दशा वाहन के बारे में कही है। उसमें प्रथम दृष्टि से ही दशा का ज्ञान हो जाता है कि जातक का जन्म किस वाहन की सवारी पर है। उसके जीवन का पूर्ण वृतान्त उससे पता लग जाता है। यह विषय आज तक अनभिज्ञ सा रहा है लेकिन अध्ययन तथा मनन करने पर जातक के जीवन का उसमें पूर्ण वृतान्त छिपा है। इस अध्याय के अन्त में स्पष्ट कर दिया जायेगा। लेकिन लोक में विंशोत्तरी दशा पर ज्यादा महत्व दिया गया है। इसके साथ–साथ योगिनी दशा, कालचक्र दशा का भी प्रचलन है। काल चक्र दशा से अरिष्टों का ज्ञान होता है तथा योमनी दशा से मृत्यु तुल्य कष्ट या मृत्यु का ज्ञान प्राप्त होता है। ऋषियों का उल्लेख है कि जब भी मनुष्य की मृत्यु होती है चाहे वह मारकेश दशा में हो या अन्त लगन, जन्म चन्द्रादि में हो तो भी संकटा इसके साथ जुड़ी होती है। अतः कहा जा सकता है कि जब भी मनुष्य की मृत्यु होगी संकटा जरूर होगी। "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" में स्थान स्थान पर यह भी इशारा किया गया है कि किन–किन योग में कौन सी दशा ग्रहण करनी चाहिए जोकि प्रथम दृष्टि में निम्न प्रकार से दें :–

1. लग्न राशि चन्द्र राशि युक्त हो तो षष्टी हायनी दशा उपयोगी है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वाखण्ड अध्याय 32 से 44, खेमराज श्रीकृष्णदास, वेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

2. वर्गोत्म लग्न तथा नवांश एक ही राशि का हो तो शताब्दिका दशा उपयोगी हैं
3. गुरु कर्क का हो तथा कर्क राशि के नवांश में हो तो पञ्चोतरी दशा उपयोगी है ।
4. लग्नेश से राहू लग्न को छोड़कर केंद्र या त्रिकोण स्थान में हो तो अष्टोत्तरी दशा उपयोगी है।
5. यदि शुक्र के नवमांश में जन्म हो तो द्वादशोत्तरी दशा फलप्रद होती है।
6. शुक्ल पक्ष में सूर्य की होरा, कृष्ण पक्ष में चन्द्र की होरा हो तो षोडशोत्तरी दशा का उपयोग करे।
7. विंशोतरी दशा सर्वमान्य हो गई है । अत: आगे की दशाओं पर विचार नहीं किया जा रहा है।
8. दिन में सूर्य की होरा और रात्रि में चन्द्र की होरा हो तो षटत्रिशत्कां दशा ग्रहण करें।
9. चन्द्र व शुक्र बलवान हों तो त्रिकुटा (मण्डुक दशा) प्रयोग में होनी चाहिए।
10. शूल दशा से मृत्यु का ज्ञान होता है।
11. उत्तरायण में सूर्य हो तो विंशोत्तरी तथा दक्षिणायन में हो तो अष्टोतरी दशा का विचार करना चाहिए।

दशा फल देखने का प्रकार पंचविध बताया गया है। जैसे महादशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तर दशा, सूक्ष्म दशा, प्राणदशा इस पंचविध दशा में ग्रहमैत्री का विचार अनिवार्य है। यदि ग्रह दशा का अन्त पत्यन्तर सूक्ष्म और प्राण मित्र अधिमित्र में होगा तो शुभ फल घटित होंगे। यदि ग्रह सम क्षेत्र में होगा तो समान फल घटित होंगे। इसी प्रकार शत्रु तथा अधिशत्रु में अनिष्ट फल घटित होंगे। उपरोक्त में तीन प्रकार से शुभ फल प्राप्त हो तो समय शुभ मान लिया जाता है इससे कम से अनिष्ट समय समझना चाहिए।

छठा प्रकार नक्षत्र पर आधारित होना चाहिए। जब ग्रह की महादशा, अन्तरदशा, पत्यन्तर, सूक्ष्म तथा प्राण दशा नक्षत्रों के आधार पर देखनी चाहिए। प्रत्येक कुण्डली में

पन्द्रह नक्षत्र शुभ और बारह नक्षत्र अशुभ माने गये हैं। जिनमें जन्म, विपत प्रत्यरि तथा वध ये अशुभ नक्षत्र हैं। जो ग्रह जन्म समय में इन नक्षत्रों पर होगा तो उनका फल अनिष्ट होगा। यदि जन्म समय में ग्रह सम्पत, क्षेम, साधक, मित्र तथा अधिमित्र नक्षत्र में होगा तो उनका फल भी शुभ होगा। तारा दशा इन्हीं नक्षत्रों पर आधारित है। ये अपने आप में बड़ा महत्वपूर्ण तथा शोध का विषय है। इस प्रकार से सूत्रानुसार जो भी दिशा ग्रहण करनी हो उसका फल निर्धारित करे। मानव उदाहरण में जातक का जन्म केतु महादशा का है जिसके दशा वर्ष सात होते हैं।

केतू दशा फल- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्व खण्ड अध्याय श्लोक 71 से 77 तक केतू महादशा का फल दिया है।[1] जो इस प्रकार है :–

1. केतू की श्रेष्ठ दशा में विजय, क्रूर कर्म से धन प्राप्ति, यवन या मलेच्छ राज से भाग्य वृद्धि और शत्रु नाश होता है।
2. केतू की पाप दशा में अतिकष्ट, विकल मनोरथ, धन प्राप्ति के योग की हानि, शूल रोग, अस्थि ज्वर, कम्पन रोग, ब्राह्मण द्वेष तथा अति मूर्खता होती है।
3. केतू यदि केन्द्र, त्रिकोण, लाभ में शुभ राशि में शुभ दृष्ट हो और सब उच्च में या शुभ वर्ग में हो तो राजा प्रीति, मन में चिंता, देश या ग्राम का आधिपत्य, सवारी, पुत्रोत्पत्ति, देशांतर यात्रा अन्य देश में सुख, स्त्री पुत्र का सुख, गौ आदि का लाभ होता है।
4. तीन, छः, ग्यारह भाव में हो तो केतू दशा में सुख होता है। राज्य, सम्मान, वैभव, मित्र प्राप्ति, सवारी आदि प्राप्त होती है। दशा के आदि में राज योग, मध्य में महान भय, अन्त में दूर की यात्रा तथा देह कष्ट या मृत्यु होती है।

<u>मानक उदाहरण केतू तृतीय स्थान पर अधिमित्र नक्षत्र में है शुभ स्वामी शुक्र के साथ है, तो उपरोक्त फल घटित होगा।</u>

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 32, श्लोक 71 से 77, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

5. केतू यदि 2, 8, 12 में हो और युक्त तथा दृष्ट हो तो कैद, बन्धुनाश, स्थान हानि, चिन्ता, रोग और नीच जाति से लाभ होता है।

शुक्र महादशा फल :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्व खण्ड अध्याय 32 श्लोक 78 से 89 में शुक्र महादशा का फल उपाय सहित दिया है।[1] जो निम्न प्रकार है :–

1. शुक्र की श्रेष्ठ दशा में सुख, सौभाग्य की उन्नति, मोटर आदि सवारी, अष्टविध ऐश्वर्य, धर्म बुद्धि, सुन्दर बगीचा, घोड़ा आदि युक्त सवारी, गीतोत्सव आदि श्रेष्ठ फल होता है। मानक उदाहरण में शुक्र तृतीय स्थान भाव में स्वगृही है तथा साधक शुभ नक्षत्र स्वाति में है अतः उपरोक्त फल घटित होगा।
2. शुक्र की पाप दशा में स्त्री पुत्र से भय, नीच संघ से धन हानि, अशुभ आदि से भय तथा स्त्री आदि को रोग कष्ट आदि न्येष्ट फल होता है।
3. शुक्र उच्च या परमोच्च में या स्व क्षेत्र में हो कर केन्द्र में हो तो राजकुल उत्पन्न को राज्य प्राप्ति, वस्त्र भूषण प्राप्त होते है। हाथी, घोड़े, पशुओं आदि का लाभ होता है। नित्य सुन्दर भोजन, अखण्ड मंडल (जिला) का अधिस्त्व, राजा से सम्मान और वैभव प्राप्त होते है। मृदंग आदि का वाद्यों का शब्द (गाना–बजाना) होता रहता है। घर में लक्ष्मी की कृपा रहती है।
4. यदि शुक्र मीन राशि का त्रिकोण में हो तो राजा के समान धन सम्पत्ति होती है। विवाह आदि उत्सव के कार्य पुत्रोत्पति, सेनापतित्व, इष्टमित्र मिलन, नष्ट हुए राज्य की प्राप्ति होती है। घर मे गौधन होता है।
5. यदि शुक्र 6, 8, 12 स्थान में हो अथवा नीच का या व्ययेश राशि में हो तो आत्मीय स्वजनों से द्वेष, स्त्री आदि को पीड़ा, व्यापार से होने वाले फल की हानि, गौ भैंस आदि का नाश, स्त्री पुत्र को पीड़ा, आत्मीय बन्धु से वियोग होता है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 32, श्लोक 78 से 89, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

6. यदि शुक्र 9,10 का स्वामी होकर लग्न तथा तृतीय भाव में हो तो शुक्र की दशा में महान सुख एवम् देश नगर का आधिपत्य, देवालय, तालाब आदि धर्म कार्य में रूचि, अन्नदान हो तथा महान् सुख हो, नित्य मिष्ठान् भोजन हो। उत्साह की वृद्धि, कीर्ति, सम्पत्ति, स्त्री पुत्र धन सम्पत्ति है। अपने अन्तर में तो उपरोक्त फल युक्त होता है। स्वगृही स्वाति साधक नक्षत्र में रूप, $\frac{6.34}{5.50}$ बल से युक पांचवे स्थान पर है। <u>मानक उदाहरण में यह फल घटित होना चाहिए।</u>

7. अन्यान्य अन्तर में अपना विशेष फल देते है। द्वितीय तथा सप्तम् भाव का स्वामी हो तो देह पीड़ा होती है क्योंकि यहां शुक्र मारकेश बन जाता है। उस दोष के नाश के लिये रूद्र पाठ या त्र्याम्बक मंत्र का जप करें तथा श्वेत वर्ण की गौ दूध वाली का दान करे आरोग्य का प्राप्त हो।

सूर्य दशा फल :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्व खण्ड अध्याय 32 श्लोक 6 से 15 में सूर्य महादशा फल का उल्लेख है ।[1] जो निम्न प्रकार से है :–

1. सूर्य की श्रेष्ठ दशा हो तो पुत्र प्राप्ति, श्रेष्ठ बुद्धि, अच्छे अधिकारों की प्राप्ति, ज्ञान का उदय, धन प्राप्ति, यंश विस्तार, पौरूष वृद्धि, सुख प्राप्ति और ईश्वरानुग्रह होता है।

2. यदि सूर्य की पाप दशा हो तो मनोरथ की विफलता, उद्योग और धन की हानि, अनेक रोगों की उत्पत्ति, राज क्षोभ, परिवार कलह, पिता को अरिष्ट, अग्नि बाधा आदि उपद्रव होते हैं।

3. सूर्य अपने मूल त्रिकोण में, अपनी राशि में, उच्च में अथवा परमोच्च में, केंद्र, त्रिकोण या लाभ भाव से स्थित हो तो भाग्येश अथवा दशमेश में युक्त हो तथा बलवान हो एवम् अपने वर्गों में हो तो उसकी दशा में मान सुख और पूर्वोक्त धन लाभ अधिक होते

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 32, श्लोक 6 से 15, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

है। विशेष करके राजकुल में सम्मान, घोड़ा, मोटर आदि की सवारी प्राप्त होती है।

4. यदि सूर्य पंचमेश से युक्त हो तो उत्तरोत्सव होता है यदि धनेश से सम्बन्ध हो तो विशेष ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। यदि वाहनेश से सम्बंध हो तो कम से कम तीन सवारी होती है और राजा की प्रसन्नता, विशेष धन लाभ या सेनापतित्व, उत्तम वस्त्र आदि लाभ होता है।

5. यदि सूर्य नीच हो 6, 8, 12 स्थान में हो, बलहीन और पापगृह युक्त हो तो अथवा राहू केतु से युक्त हो या त्रिषडाय के स्वामी से युक्त हो तो उस दशा में महान् पीड़ा, धन–धान्य का नाश, राजकोप, प्रवास, राजदण्ड, ज्वर पीड़ा, अपकीर्ति, बन्धु और मित्रों से विरोध तथा अप मृत्यु का भय होता है। चोर, सर्प, घाव का भय, पिता के मरने का भय, घर में अशुभ कार्य, पितृ वर्ग में चिन्ता तथा परिवार में कलह होती है। सूर्य पर यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो कुछ सुख, पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो अधिक दुख होता है।

मानक उदाहरण में सूर्य का विलोकन करने पर तुला नीच राशि में 28 अंश पर आत्मकारक उच्चाभिलाषी है, शुक्र सौम्य ग्रह के साथ तथा केतू पाप गृह के साथ है अतः सूर्य का अपनी दशा में मध्यमनिष्ट फल प्राप्त होगा। सूर्य अधिशत्रु राशि में इसका बल $\frac{5.4}{5.00}$ है। ग्रहों की पद संख्या में सबसे हीन है तथा विशाखा वध नक्षत्र में है। अतः नेष्ट फल की अधिकता रहेगी।

चन्द्रमहादशाफल : "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्व खण्ड अध्याय–32 में चन्द्र महादशा फल दिया है।[1] जो निम्न प्रकार से है :–

1. चन्द्रमा की श्रेष्ठ दशा हो तो माता को सुख, मकान, बाग–बगीचा, तालाब आदि समाज

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 32, श्लोक 16 से 22, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

में श्रेष्ठता, उत्तम सवारी आदि प्राप्त होती है।

मानक उदाहरण में चन्द्रमा अपने मित्र गुरू के घर पंचम भाव में है तथा द्वादशेश भी है। या जन्म नक्षत्र तथा बल $\frac{7.21}{6.00}$ है। अतः उपरोक्त फलों में समान फल घटित होगा क्योंकि 6, 8, 12 भाव के स्वामी सामान्तयः अनिष्ट फल कारक माने गए हैं।

2. चन्द्रमा की पापदशा हो तो धनहीनता, कृपणता, बहुधन नाश, रोग किंकृतव्यबिमूढ़ता, निंदा, मातृ मरण, दुख सीत ज्वर आदि होता है।

3. **विशेष रूप से फल** - चन्द्रमा यदि उच्च में हो, अपनी राशि में, मूल त्रिकोण में, केंद्र त्रिकोण या लाभ में हो और शुभ ग्रहों से युक्त हो, बलवान तथा शुक्ल पक्ष का हो अथवा नौवें दशवें का मालिक हो, बलवान ग्रह से युक्त हो तो उसकी दशा में भाग्य की बहुत बुद्धि होती है, धन धान्य का लाभ होती है और घर में विवाह आदि शुभ कार्य होते है। वाहन का लाभ होता है। राजदर्शन उद्योग की सिद्धि, मनोरथ सिद्धि, घर में लक्ष्मी की चकाचौंध रहती है। मित्र या स्वामी की कृपा से भाग्य वृद्धि, राज्य से लाभ तथा महान सुख होता है। घोड़ा, मोटर आदि सवारी प्राप्त होती है। पुत्र लाभ होता है। और यदि चंद्रमा उच्च राशि या स्वक्षेत्र होकर धन स्थान में हो तो अनेक धन लाभ, भाग्य वृद्धि, महान सुख, विद्या लाभ, अकस्मात विशेष धन प्राप्ति तथा राज्य सम्मान होता है।

5. चन्द्रमा नीच राशि का या क्षीण हो तो धन हानि होती है।

6. तीसरे भाव में यदि बलवान होकर स्थित हो तो कभी सुख कभी धन होता है।

7. चन्द्रमा बलरहित, पाप ग्रह से युक्त हो तो शरीर में व्याधि, मन में चिन्ता, नौकर द्वारा धन हानि मातृ वर्ग की मृत्यु होती है।

8. यदि चन्द्रमा 6, 8, 12 स्थान में बलरहित तथा पाप ग्रह युक्त हो तो राजद्वेष, मन में

दुख, धनधान्य का नाश, माता को क्लेश, देह में जड़ता आदि फल होता है।

9. बलवान् चन्द्रमा यदि तीसरे भाव में हो तो कभी कभी लाभ तथा देह में जड़ता होती है, शान्ति करने से सुख होता है।

मंगल महादशा फल :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्व खण्ड अध्याय 32 में मंगल महादशा फल दिया है।[1] जो निम्न प्रकार से है :–

1. मंगल की श्रेष्ठ दशा हो तो भूमि की प्राप्ति, धन का आगमन, सुबुद्धि चिन्ता रहित मन, पराक्रम का उदय, भाइयों से लाभ आदि फल होते हैं।
2. यदि मंगल पापी हो तो रोग और कष्ट देने वालों तथा कलह, चोरी अग्नि, कैद, घाव, दृष्टिमंदता, राजा से पीड़ा, क्रोध आदि होते है।
3. यदि मंगल उच्च का या परमोच्च का अथवा मूल त्रिकोण में, स्वगृही, केंद्र, त्रिकोण, लाभ या धन स्थान में हो तो पूर्णबल युक्त हो, शुभ गृह से दृष्ट हो, शुभ नवमांश में हो तो बहुत भूमि लाभ, राजा से लाभ, धन लाभ, ऐश्वर्य वृद्धि, अधिक राज सम्मान, सवारी, वस्त्र, आभूषण, तालाब, विदेश में भूमि, मकान का लाभ, भाईयों का सुख होता है।
4. मंगल बलवान् होकर केंद्र या तीसरे भाव में हो तो अपने उद्योग सं धन लाभ, युद्ध में शत्रु से विजय हो। स्त्री पुत्र से सुख, तथा राजा से सम्मान होता है। दशा के आदि में सुख परन्तु अन्त में कष्ट होता है।
5. यदि मंगल नीच का 6, 8, 12 भाव में हो, बल रहित हो, पाप युक्त या दुष्ट हो तो न्येष्ट होता है।

मानक उदाहरण में मंगल भाग्येश तथा केन्द्रेश होकर धन घर में, पंचधा मैत्री अनुसार मित्र क्षेत्र में है, विश्वाबल के अनुसार मध्यम बलि है तथा षड् बल में बलि रूप बल $\frac{6.36}{5.00}$

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 32, श्लोक 71 से 77, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

है। अतः शुभ फल घटित होंगे।

राहू महादशा फल :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्व खण्ड अध्याय 32 में राहू महादशा फल दिया है ।[1] जो इस प्रकार से है :–

1. राहू की श्रेष्ठ दशा, महान कल्याणकारी, राज्य वृद्धि, धन प्राप्ति, धर्म बुद्धि, तीर्थ यात्रा, ज्ञान और प्रभाव की उन्नति करता है।

2. राहू की पाप दशा, भय तथा स्वांग रोग, कष्ट शस्त्र से घात, विष से भय, स्वजन् विरोध, वृक्ष से गिरना, शत्रु से पीड़ा आदि न्येष्ट फल कारक है।

3. **विशेष फल** - राहू का वृष राशि उच्च तथा कर्क राशि मूल त्रिकोणा है। केतू का वृश्चिक राशि उच्च और मिथुन राशि मूल त्रिकोण है। राहू का कन्या राशि और केतू का मीन राशि स्वगृही है। राहू की श्रेष्ठ दशा में बहुत सुख, धन धान्य का लाभ होता है। राहू का श्रेष्ठ दशा में मित्र या स्वामी के द्वारा मनोरथ सिद्धि, वाहन का लाभ, पुत्रोत्पत्ति, नये भवन का निर्माण, धार्मिक कार्य, विवाह आदि उत्सव होते हैं। विदेश यात्रा, राज सम्मान, अलंकार आभूषण आदि की प्राप्ति और यदि शुभ ग्रह युक्त अथवा दृष्ट हो राज कारक गृह से युक्त हो, केंद्र, त्रिकोण या लाभ स्थान में हो, तीसरे स्थान में या शुभ गृह की राशि में हो तो राजा अथवा बड़े आदमी के सम्पर्क से बहुत लाभ हो, यवन जाति से लाभ हो, घर में कल्याण हो।

4. आठवें या बारहवें स्थान में हो तो कष्टदायी होता है। पाप ग्रह से सम्बंध हो तो या मार्क गृह से युक्त हो, नीच राशि में हो तो स्थान हानि, सम्मान हानि, मन में घोर चिंता, स्त्री पुत्र का नाश, हीन भोजन प्राप्त होता है। तथा दशा के आदि में देह पीड़ा, धन धान्य का नाश होता है। दिशा के मध्य में सुख अपने ही धन लाभ से होता है। अन्त में कष्ट, स्थान हानि तथा चिन्ता होती है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 32, श्लोक 34 से 42, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

मानक उदाहरण में राहू भाग्य स्थान में शुक्र सूर्य से दृष्ट है। सूर्य की उच्च दृष्टि भी है तथा शुक्र की सौम्य दृष्टि है। अतः राहू का फल श्रेष्ठ समझना चाहिए।

गुरु महादशा फल :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्व खण्ड अध्याय 32 में गुरू महादशा का फल दिया है।[1] जो इस प्रकार है :–

1. बृहस्पति का श्रेष्ठ दशा में विपुल धन लाभ, अधिकार प्राप्ति, पुत्र प्राप्ति, सौभाग्य वृद्धि, गुणों का उदय, अनेक नौकर, मोटर आदि सवारी बहुत वैभव होता है।
2. पाप दशा में राज भय, व्याधि, धैर्य, हानि, धन प्राप्ति, पृथ्वी और पुत्र की हानि तथा पिता को कष्ट, चोरी आदि का भय होता है।
3. **विशेष फल** - बृहस्पति उच्च का या स्वगृही होकर केंद्र लाभ या त्रिकोण में हो, मूल त्रिकोण में या उच्च से लाभ स्थान में हो अथवा परमोच्च में हो या अपने नवमांश हो तो राज्य से लाभ, महान सुख, सम्मान् और कीर्ति, हाथी, घोड़े आदि सवारी, देव–ब्राह्मण पूजा, स्त्री पुत्र का सुख, यज्ञ आदि श्रेष्ठ कुम, वेदान्त का श्रवण होता है। महाराज की कृपा से इच्छित कार्य की सिद्धि होती है। मोटर आदि सवारी का लाभ, घर में कल्याण और सुख होता है। स्त्री पुत्र का लाभ होता है। अन्नादि का दान होता है।
4. बृहस्पति नीच का, अस्त या पाप गृह युक्त हो, 8,12 स्थान में हो तो स्थान हानि, चिन्ता, पुत्र पीड़ा, महान भय, धन हानि, तीर्थ यात्रा आदि होती है। गुरू दशा में पहले कष्ट, मध्य और अन्त में लाभ सुख, राज सम्मान और वैभव प्राप्त होता है।

मानक उदाहरण में गुरू छठे घर में नीच राशि का है। बृहस्पति श्रवण नक्षत्र क्षेम का है तथा शनि अपने मित्र के घर में है। रूपबल में $\frac{5.16}{6.8}$ कमजोर है। अतः नेष्ठ फल अधिक घटित होंगे।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 32, श्लोक 44 से 51, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

शनिमहादशा फल :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्व खण्ड अध्याय 32 में शनि महादशा का फल दिया गया है जो इस प्रकार है :–

1. शनि की श्रेष्ठ दशा में सम्पत्ति, ज्ञान, यज्ञ आदि, ग्राम नगर आदि का नायक होना, व्यापार वृद्धि आदि तथा उत्सव होते है।
2. शनि की पाप दशा में विष प्रयोग, धन की चोरी, देह में कष्ट, रोग, राजकोष, कार्य की विरूद्धता, उद्योग की हानि और शरीर पीड़ा होती है।
3. **विशेष फल :-** यदि शनि उच्च का, स्वगृही, मित्र क्षेत्री, मूल त्रिकोण अथवा भाग्य स्थान में हो, परमोच्च या अपने नवमांस में हो 3, 11 स्थान में हो तो राजा से सम्मान और विभूति की प्राप्ति होती है। अच्छी कीर्ति या धन का लाभ हो। महाराज की कृपा से हाथी, घोड़ा, आभूषण आदि का लाभ हो।
4. यदि शनि राजयोग करता हो तो सेनापति से सुख हो। घर में खूब लक्ष्मी हो तथा कल्याण, सम्पत्ति, स्त्री पुत्र आदि लाभ होते हैं।
5. यदि शनि 6, 8, 12 भाव में हो, नीच अथवा अस्त हो तो विष और शस्त्र से पीड़ा होती है। स्थान हानि तथा महान भय होता है। माता पिता का वियोग तथा स्त्री पुत्र को पीड़ा होती है। राजकोष से अनिष्ट और बन्धन होता है।
6. यदि शनि शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट होकर तथा राजयोगाकारक गृह से युक्त होकर केंद्र या त्रिकोण में हो, मीन अथवा धन राशि में हो, महान् उत्साह युक्त और राजा से बहुत बड़ा लाभ हो।

मानक उदाहरण में शनि वृश्चिक राशि सम मैत्री में है अनुराधा नक्षत्र मित्र में है तथा षडबल में महान बलि है। अतः शनि के केंद्र में शुभ गृह बुध के साथ है। उपरोक्त शुभ फल अधिक घटित होंगे।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 32, श्लोक 52 से 60, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

बुध महादशा फल :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्व खण्ड अध्याय 32 में बुध महादशा का फल दिश गया है।[1] जो इस प्रकार है :–

1. बुध की श्रेष्ठ दशा में सुन्दर वस्त्र, अनंत धन राशि प्राप्ति, कल्याण सुख, स्वजन परिवार सुख, विजय प्राप्ति, इष्ट वस्तु आदि फल प्राप्त होता है।
2. न्येष्ट दशा में विदेश यात्रा, दुख, बन्धु क्षय, बुद्धिहीनता धन क्षय, कष्ट, आपत्ति, कलह, भूमि तथा धन का नाश होता है।
3. विशेष फल – बुध उच्च राशि में या स्वगृही होकर केंद्र या त्रिकोण में अथवा लाभ स्थान में हो, मित्र क्षेत्र में स्थित या मित्र गृह युक्त हो तो महान सुख होता है। धन–धान्य लाभ, सत्कीर्ति, धन, सम्पत्ति की प्राप्ति, ज्ञान वृद्धि, राजप्रीति, सत्क्रम तथा गुण की वृद्धि होती है। स्त्री पुत्र का सुख, देह की आरोग्यता, क्षीर भोजन, सौख्य तथा व्यापार में लाभ होता है।
4. बुध शुभ ग्रह की दृष्टि से युक्त होकर भाग्य स्थान में या पाप युक्त अथवा दुष्ट हो तो राजद्वेष, मन में चिन्ता, बन्धुओं से विरोध, विदेश यात्रा होती है। दूसरे की नौकरी, कलह, मूत्र कृच्छ की बीमारी होती है।
5. यदि 6, 8, 12 भाव में हो तो लाभ, सुख तथा धन का नाश करता है। वात रोग पाण्डु रोग, राजा, चोर, अग्नि से भय, खेती, भूमि का नाश होता है। दशा के आदि में धन, विद्या का लाभ, महान सुख पुत्र प्राप्ति, घर में कल्याण, सम्पत्ति, सन्मार्ग प्रवृत्ति, धन का लाभ होता है। दशा मध्य में राज सम्मान प्राप्त होता है और अन्त में दुख होता है।

मानक उदाहरण में बुध केंद्र में वृश्चिक राशि का मित्र क्षेत्र में है। ज्येष्ठा नक्षत्र अतिमित्र के नक्षत्र में है। षड्बल में तीसरे नम्बर पर बलवान है अतः बुध की दशा में उपरोक्त शुभ फल घटित होंगे।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 32, श्लोक 61 से 70, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

द्वादश भावाधीश दशा फल :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्व खण्ड अध्याय 32 में द्वादश भावों के स्वामी ग्रहों के फल का विस्तृत रूप वर्णन किया है जो अपने आप में बड़ा महत्वपूर्ण तथा फलादेश के लिये अद्वितीय है।[1] जो निम्न प्रकार से है :–

1. लग्नेश की दशा शारीरिक बल देती है।
2. धनेश की दशा शुभ हो तो धनदाता, अशुभ हो तो कष्ट और मृत्यु।
3. तृतीयेश की दशा प्रायः न्येष्ट फलदायक होती है।
4. सुखेश की दशा में भूमि और मकान का विचार।
5. पंचमेश की दशा में विद्या संबंधी और सन्तान सम्बंधी विचार किया जाता है।
6. षष्ठेश की दशा में शत्रु आदि का विचार किया जाता है।
7. सप्तमेश की दशा में रोग और कष्ट का विचार किया जात है।
8. अष्टमेश की दशा में मृत्यु का विचार किया जाता है।
9. नवमेश की दशा में सत्कार्य का विचार किया जाता है।
10. दशमेश से राज्य का विचार किया जाता है।
11. लाभेश से लाभ का विचार।
12. व्ययेश की दशा में रोग, धन हानि कष्ट का विचार किया जाता है।
13. दशाओं के विचाराणीय विषय किसी भी भाव का स्वामी बलवान हो, स्वग्रही हो, उच्च तथा त्रिकोण में शुभ वर्ग में हो तो महत्वपूर्ण फल करता है। यदि शत्रु राशि में, नीच राशि में तथा निर्बल हो तो अशुभ फल करता है। प्राचीन आचार्यों ने कहा है कि शुभ ग्रह प्रायः शुभ फल देते है।

भावेश दशा फल :-

1. पंचमेश और नवमेश की दशा श्रेष्ठ होती है ऐसा प्राचीन आचार्यों ने कहा।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 32, श्लोक 90 से 160, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

2. पंचमेश और दशमेश की दशा सन्तान और ऐश्वर्य देने वाली होती है।

3. सुखेश तथा नवमेश की दशा सुख और कीर्तिदायक होती है।

4. कोई भी दशा पंचमेश से युक्त हो तो शुभदायक होती है। नवमेश से युक्त हो तो अतिसुखदायक होती है।

5. जिस भाव से पांचवें, छठे सातवें उच्च राशि स्थित शुभ ग्रह हो तो विद्या धन, धर्म, सत्कर्म, ख्याति और पौरूष की सिद्धि होती है।

6. जिस भाव में 4, 5, 9, 10, 11 भाव के स्वामी हो तो उस दशा में पुत्र, स्त्री आदि प्राप्त तथा राजकुल में महान आदर होता है।

7. जिस भाव में बृहस्पति अथवा शुक्र या शुभ भाव की स्वामी हो तो उस भाव की सिद्धि तथा योगानुसार कल्याण हो।

8. जिस भाव के चौथे स्थान के उच्च राशि गत् ग्रह हो या शुभ ग्रह हो तो उसकी दशा में कल्याण, उत्सव, सम्पत्ति तथा देव ब्राह्मण की पूजा होती है तथा वाहन और भूमि का लाभ होता है, पशुओं की वृद्धि होती है। चन्द्रेश युक्त हो तो बहुधान्य, रस की प्राप्ति होती है। जिस भाव से चतुर्थ स्थान में पूर्ण चन्द्रमा और उच्च राशि का हो तो भूमिगत द्रव्य और मणि आदि प्राप्त होती है। और यदि शुक्र हो तो नाच गान का आनन्द रहता है। बृहस्पति हो तो मोटर आदि की सवारी। लग्नेश क्रमेश भाग्येश और उच्चस्थ शुभ गृह का योग हो तो श्रवण रत्न युक्त सिंहासन प्राप्त हो और उच्चस्थ बृहस्पति का योग हो तो सर्वोत्कर्ष युक्त महान् ऐश्वर्य शाली साम्राज्य प्राप्त होता है। इस प्रकार भाव की दशा का फल अच्छी प्रकार से करना चाहिए।

9. एक ही राशि की दशा अपने शुभ ग्रह और पाप ग्रहों के 18 प्रकार के योगों से भिन्न–2 विचित्र फलदायक होती है।

18 प्रकार के योग :-

शुभ सम्बन्ध 9 योग :- परमोच्च ग्रह का सम्बन्ध, केवल उच्च का सम्बन्ध अथवा उस भाव से सम्बन्धित प्रथम अथवा द्वितीय भाव में उच्च गृह का सम्बन्ध या मूल त्रिकोण, स्वगृही, अधिमित्र ग्रही अथवा दृष्टियुक्त समग्रही ये शुभ योग कहलाते है।

अशुभ सम्बन्ध 9 योग :- शत्रु राशि में, अधिशत्रु की राशि में, नीच और परम् नीच में अथवा पिछली अगली राशि में पाप ग्रह का योग, नीच अंश में, नीच वर्ग में और बलहीन होना ये नौ भेद पाप सम्बन्ध योग के है।

शुभ योग में विशेष :- अपने वर्ग में केंद्र या त्रिकोण में शुभ होता है। ऐसे ही पाप ग्रहों से पीड़ित और पराजित ग्रह सुसुप्त अवस्था में अथवा मूढ़ अवस्था में होने से अशुभ होता है, उसकी दशा न्येष्ट होती है। जो ग्रह परमोच्च राशि गत तथा पूर्ण बलवान हो उसकी दशा सम्पूर्ण राज भोग और शुभ फलदायक होती है, उस दशा में लक्ष्मी का भण्डार, श्रेष्ठ भवन आदि का सुख होता है।

10. उच्च राशिगत होने पर भी यदि पूर्ण बलवान् हो तो दशा में अनेक प्रकार के ऐश्वर्य रहते हुए भी कुछ रोगों की चिन्ता रहती है।

ग्रह का अवरोह क्रम - अतिनीचगत दुर्बल ग्रह की दशा में जो अपने उच्च से नीच राशि की तरफ आता हुआ ग्रह मध्य में हो उस ग्रह की दशा आवरोहिनी कहलाती है। (नीचे उतरना) फल व्याधि अर्थहीनता, क्लेश और मृत्युदायक होता है।

ग्रह का आरोह क्रम - अपनी नीच राशि से उच्च राशि की तरफ जाता हुआ मध्य में जो ग्रह है अथवा जो किन की उच्च राशि के हो तो वह मध्यनाम दशा है और धनदातृ है। इसका नाम आरोहण है।

11. जो ग्रह नीच राशि से या शत्रु के नवांश के हो उसकी दशा अधम नाम की है। वह दशा भय, क्लेश, व्याधि और दुःख बढ़ानेवाली होती है। अपने दशाकाल में नाम के

अनुसार फल देने वाली के दशायें है।

12. यदि ग्रह भाग्येश अथवा बृहस्पति से युक्त अथवा दृष्टि सम्बंध रखता हो तो दूसरे ग्रहों की दशा में भी अपने अन्तर में भाग्य वृद्धि कारक होता है।
13. जो ग्रह भाग्य योग देने वाला है, वह मार्गी हो अथवा होने पर और बलहीन ग्रह है उनसे दृष्टि आदि सम्बन्ध करता हो तो उनको भी जेष्ठ फलदान में समर्थ कर देता है।
14. बलाबल के अनुसार ग्रह दशा फल देने वाली है।
15. यदि ग्रह स्वग्रही अथवा केंद्राचि शुभस्थान में हो तो अपने विश्वाबल के अनुसार पूरा, आधा या चौथाई जितना फल देने में समर्थ हो तथा शीर्षोदयी (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक तथा कुम्भ) हो तो निरन्तर सम्बंधियों को जबर्दस्ती खींचकर लाने वाला तथा अपनी दशा के आदि में पूरा देने वाला होता है।
16. राशि में जो दशा हो वह मध्यम काल से फल तथा पृष्ठोदरी राशि की दशा मध्यम फल देने वाली है। वह फल की दशा के अन्त में देती है।
17. मनुष्य के जन्म के समय ये स्वामी ग्रह तथा अन्य ग्रहों के विचार करें। इस बल के अनुसार शुभ और विपरीत भाव वाले ग्रहों का सम्बन्ध तथा नैसर्गिक बल तथा तात्कालिक बल और मैत्रीबल का विचार करें। इस बल के अनुसार शुभ और अशुभ फल का निर्णय करें और ग्रह के शत्रु सम ग्रहों का भी निरीक्षण करे। दशा स्वामी से विपरीत भाव वाले ग्रहों का सम्बंध तथा दशस्वामी से सम्बन्धित भावों का विचार बारहों राशियों में करें। बारह राशियों की दशा तथा अन्तर दशा की कल्पना करें। जिस भाव की राशि अपने मित्र या स्वगृही ग्रह से युक्त हो इस दशा के राजा के समान सम्पत्ति सुख होता है तथा शत्रु, नीचत्व अथवा नीच पापग्रहयुक्त हो तो उसकी दशा से अनर्थ, कलह, रोग और मृत्यु भय होता है। इसी प्रकार उस राशि के अष्टक वर्ग विचार में यदि बिन्दु अधिक हो अथवा केवल शून्य हों अथवा एक अधिक हो तो हानि या वृद्धि

भाव के ग्रह के अनुसार फल जानें ।

18. शुभाशुभ स्थान भेद से भी फल में भेद होता है। इसी प्रकार सभी ग्रह अपनी अर्न्तदशाओं में शुभाशुभ फल देते है। किसी राशि की दशा में अन्तर्दशाओं में भिन्न फल होते है। यह ग्रह क्षेत्र के अनुसार फल घटित होता है।

19. अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर, सूक्ष्म तथा प्राण दशा निकाल कर दिन–दिन का फल प्राप्त होता है। इस प्रकार जो मनुष्य होरा ग्रन्थ का अध्ययन करेंगे वे फल कहने में समर्थ होंगे।

20. जिन भावों के स्वामी कारक होकर केंद्र के त्रिकोण के हो तो उस भाव के फल की प्राप्ति होती है। और दुष्ट स्थान में हो तो भावहानि होती है।

21. भाव का स्वामी दूसरे, तीसरे तथा लाभ में हो तो माता–पिता के कारक होते है।

22. जिस भाव का स्वामी अपने भाव को देखता हो या अपने भाव में हो अथवा लग्न में बलवान हो, बलाबल और उच्च राशि में हो तो उस भाव में इच्छित फल प्राप्त होता है।

उपरोक्त सभी का विचार कर महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा, सूक्ष्मदशा तथा प्राण दशा के कल का विचार करना चाहिए तथा नित्य ही इस होरा ग्रन्थ का अध्ययन करने से योगो की स्मृति होती है। जिससे देवज्ञ का यश क्षितिज तक फैलता है।

काल चक्र दशा फल :-

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्व खण्ड अध्याय, 45 में काल चक्र दशा फल का विस्तृत वर्णन है।[1] इस दशा में ज्यादातर अनिष्टों का ज्ञान होता है। उसके साथ–साथ शुभ फलों का भी ज्ञान होता है। यह दशा अपने आप में बड़ी प्रभावशाली है। यदि विंशोत्तरी आदि दशायें ठीक चल रही होंगे भी इस दशा का अनिष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। उसमें मृत्यु का विचार अनिष्टों का विचार, रोगादि का विचार, शत्रुभय, चोटभय अन्य अनिष्ट तथा

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 32, श्लोक 41 से 136, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

अपना मरण का ज्ञान होता है। यह दशा सर्वथा विचारणीय है। क्योंकि यह दशा काल का चक्र है। यह चक्र शुभाशुभ का भान कराने वाला है। यह दशा भगवान शंकर ने माता श्री पार्वती जी को कही वह इस प्रकार है :–

काल चक्र जात लक्षण :-

1. यदि जातक जन्म मेषांश अर्थात मेष राशि की दशा में हो तो चोर होता है।
2. वृषांश जन्म में हो तो श्रीमान ।
3. मिथुनांश में जन्म हो तो ज्ञानी।
4. कर्कांश में जन्म हो तो राजा।
5. सिहांश में जन्म हो तो रजोगुणी।
6. कन्यांश में जन्म हो तो पंडित।
7. तुलांश में राज मंत्री।
8. वृश्चिकांश में निर्धन।
9. धनुअंश में जन्म हो तो ज्ञानी।
10. मकरांश में जन्म हो तो पापकर्मी।
11. कुम्भांश में जन्म हो तो वृणिग् वृति।
12. मीनांश में जन्म हो तो अनपति होता है।

मानक उदाहरण में जातक का जन्म मेषांश में हुआ है अतः फल चोर कहा जाता है।

शनि उदयफल :-

1. सूर्य की राशि में जन्म होने पर राजा।
2. चन्द्र की राशि में जन्म होने पर कृषक।
3. मंगत की राशि में जन्म होने पर शूरवीर तथा पापकर्मरत।
4. बुध की राशि में जन्म होने पर मेधावी होता है।

5. गुरु, शुक्र राशि में जन्म होने पर राजा।

6. शनि की राशि में जन्म होने पर चोर होता है।

मानक उदाहरण में जातक का जन्म मंगल की राशि में है अतः शूरवीर तथा प्रतापी होगा।

देह जीव फल :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", देहजीव फल दिया हैं।[1] जो निम्न प्रकार से है :–

1. देह राशि और जीव राशि में सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु में से एक–एक ग्रह भी यदि हो तो मरण होता है।

2. अनेक ग्रह यदि देह जीवन राशि में हो तो क्या कहना। यहां कहना का तात्पर्य शुभ फलों से हैं।

3. देह राशि में पाप ग्रह हो तो महाकष्ट होता है।

4. जीव राशि के पापग्रह हो तो उनकी दशा में मृत्यु होती है।

5. किसी एक ग्रह द्वारा देह जीव योग हो तो उसकी मृत्यु।

6. जीव राशि के गऊराशि तथा राहु, वक्री शनि, सूर्य हो तो मृत्यु योग जानना। दशा प्रारम्भ में शान्ति करानी चाहिए।

7. जीव राशि से शुरू हो और चन्द्रराशि हो, एवं बुध राशि में शुरू हो तो शोख्य हो तथा रोग और शत्रु का नाश होता है।

8. देह जीव राशि के पापग्रह का योग होने से दुःखदायक और शुभ योग होने से शुभ फल होता है।

9. देह राशि में शुभ ग्रह हो तो भाषण प्राप्त होते।

10. जीव राशि के शुभ ग्रह हो तो स्त्री पुत्रादि प्राप्त होते है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 45, श्लोक 46 से 52, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

गतिफलम् :-

पथम गतिर्मगडूकी द्वितीय कर्मटी तथा।

बाणायनवपर्यंत गति सिंहावलोकनम्।।[1]

प्रथम मांडूकी, दूसरी मर्कटी तथा तीसरी 5, 9, 11 सिंहावलोक गति है।

मडूके तु महाव्याधिर्मर्कटयां तु महद्भयम।

सिंहावलोके मरण गर्गस्य वचनं यथा।।[2]

यहां भगवान पराशर ने गर्ग ऋषि का उदाहरण दिया है। अतः कहा जाता है गर्म ऋषि पराशर से पहले हुए। मांडूकी की गति में महाव्याधि दायिनी होती है। मर्कटी गति में महाभय और सिंहावलोकन गति में मरण होता है।

गति फल :-

1. मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या ये माण्डूकी गति संज्ञक हैं। अतैव ये महाव्याधि कारक है।
2. मेष, वृश्चिक, धन, मीन ये सिंहावलोकन गति संज्ञक है। ये गति महा भयकारक है।
3. सिंहावलोकन की राशि में माण्डूकी गति की राशि हो तो अपमृत्युकारक योग होता है।
4. मीन राशि दशा में वृश्चिक आदि ग्रह हो तो निश्चय ही ज्वर होता है।
5. इसी प्रकार कन्या की दशा में कर्केश हो तो माता तथा बन्धु का नाश होता है।
6. सिंह राशि दशा में मिथुनांश हो अथवा कन्या हो अवश्य व्याधि होती है।
7. कर्क की दशा में सूर्य हो तो वध होता है।
8. मेष राशि में धनु होने से पिता तथा बन्धु की मृत्यु होती है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 48, श्लोक 53, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. वही, श्लोक 54 ।

पुनःगतिफलम् :-

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 45 में उपरोक्त पुनः गतिफलम् दिया है जो निम्न प्रकार है :–

1. कन्या में कर्क राशि हो तो प्रथमार्द्ध में अतिश्रेष्ठ उत्तरार्ध में यात्रा सुखपूर्वक होती है।
2. सिंह राशि में मिथुन हो तो पूर्वार्द्ध नेष्ट और उत्तरार्द्ध में नैर्ऋत्य दिशा की यात्रा सुखपूर्वक होती है।
3. कर्क राशि में मेष और सिंह राशि होने से कार्य की हानि होती है और दक्षिण दिशा में प्रतिवर्ष यात्रा होती है। कुम्भ में व्याधि और महादुख तथा मिथुन में निर्धन हो
4. मीन राशि में वृश्चिक राशि हो तो उत्तर दिशा में संकट होता है। मकर राशि में संकट, दुख तथा धनु राशि में होने से संकट होता है। धनु और मेष में भय और यात्रा, वध और बन्धन तथा मृत्यु होती है।
5. तुला राशि में विवाह स्त्री प्राप्ति तथा वृश्चिक में यात्रा होती है। मेष राशि में बल बुद्धि और दक्षिण दिशा की यात्रा होती है।
6. देह और जीव राशि के योग में यदि शनि हो तो अपमृत्यु कारक है। नक्षत्र के अंश से राशि की दशा तथा अर्न्तदशा जानकर जीव देह का विचार करके गति विचार में सप्तमयन्त राशि पद से मूल दिशा और प्रथमान्त से अर्न्तदशा जानना ऐव सप्तमयन्त से अर्न्तदशा जानना दोनों का देह जीव योग देखना।

कालचक्र दशा फल :-

1. सूर्य महादशा में (अर्थात सिंह राशि की दशा में) रक्त पित की बीमारी अवश्य होती है।
2. चन्द्र महादशा में (अर्थात कर्क रोश की दशा में) धन, कीर्ति तथा प्रजा की वृद्धि, वस्त्र

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 45, श्लोक 60 से 65, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

आभूषण प्राप्त होते हैं।

3. मंगल महादशा में (अर्थात मेष, वृश्चिक राशि दशा में) पित् ज्वर, ग्रन्थि का फटना आदि होता है।

4. बुध दशा में (अर्थात मेष, वृश्चिक राशि दशा में) प्रजा तथा धन की वृद्धि तथा ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

5. गुरू महादशा में (अर्थात् धन, मीन दशा में) धन, कीर्ति, प्रजा की वृद्धि और अनेक भोग मिलते हैं।

6. शुक्र महादशा में (अर्थात् वृष तुला राशि की दशा में) विद्या, विवाह, सुवास, मकान आदि शुभ फल होते हैं।

7. शनि महादशा में (अर्थात् मकर कुम्भ राशि दशा में) विशेष ज्वर, महादुःख तथा बन्धु नाश होता है।

इस प्रकार दशा की राशि में सूर्य आदि ग्रहों के योग में देखकर शुभ ग्रहों से शुभ फल, अशुभ ग्रहों से अशुभ फल जानना चाहिए। मिश्रित योग में मिश्रित फल होता है। अशुभ योग में 12, 8 भावेशों का योग आवश्यक है। यदि मृत्यु कारक दशा हो तो शान्ति करानी चाहिए।[1]

अर्न्तदशा फल :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" अध्याय 45 में उपरोक्त अर्न्तदशाफल दिया है।[2] यह फल भगवान शंकर जी ने पार्वती को कहा। जो निम्न प्रकार है :–

1. मेष राशि दशा अर्न्तदशा में मंगल हो (अर्थात् मेष राशि में वृश्चिक राशि का अन्तर) ज्वर तथा भ्रमण संभव है और बुध गुरू, शुक्र, चन्द्र हो तो वस्त्राभुषण आदि प्राप्त होता है।

2. शनि अपने अंश दशा में राजा से कलह तथा शत्रु से भय कराता है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 45, श्लोक 60 से 65, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. वही, श्लोक 75 से 136 ।

3. मेष राशि नवांश दशा में सूर्य आदि ग्रहों का क्रम से फल निश्चय करना चाहिए। गुरू अपने अंश में राजमहल प्राप्त कराता है।
4. यदि गुरू वृष राशि की दशा में अपने अन्तर में हो तो विद्या लाभ, महान् प्रेम तथा शारीरिक सुख प्राप्त कराता है।
5. यदि वृष के स्वांश में मंगल हो तो देश त्याग, मरण ज्वर, शस्त्राघात कराता है।
6. वृष के अन्तर में शुक्र, बुध, चन्द्रमा हो तो सुन्दर वस्त्र, आभूषणों का लाभ तथा स्त्री सौख्य देते हैं।
7. वृष के अन्तर में सूर्य, राजभय, पितृ मरण, पशु से भय कराता है।[1]

मिथुन राशि दशा का फल :-

1. मिथुन में शुक्र के अन्तर में मोती आदि रत्नों की प्राप्ति, स्त्री, वस्त्र, आभूषण प्राप्त होते हैं।
2. मिथुन अन्तर में मंगल की राशि का अन्तर हो तो पिता को भय, ज्वर, घाव तथा यात्रा का योग होता है।
3. मिथुन राशि में गुरू राशि का अन्तर हो तो विद्या लाभ, धन लाभ महान् वैभव तथा सबसे प्रेम होता है।
4. मिथुन राशि में शनि राशि अन्तर हो तो यात्रा, महाव्याधि, मृत्यु धन नाश तथा बन्धु नाश होता है।
5. मिथुन राशि में बुध नाश होता है। विद्या लाभ और मित्रों से प्रीति होती है।
6. मिथुन में चन्द्र राशि का अन्तर हो तो ऐश्वर्य, धन, लाभ स्त्री पुत्र से मिलाप और मन की प्रसन्नता होती है।[2]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 45, श्लोक 75 से 83, खेमराज श्रीकृष्णदास, वेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. वही, श्लोक 75 से 136 ।

कर्क दशा फल :-

1. कर्क राशि दशा में सूर्यांश अर्थात् सिंह राशि का अन्तर हो तो राजभय, शत्रु तथा पशु से भय, ज्वर, व्याधि तथा दाह होता है।

2. कर्क राशि में बुध या शुक्र के अंग की दशा हो तो पुत्र, विद्या, बंधु रत्न, धन लाभ होता है।

3. कर्क राशि दशा में मंगल (मेष और वृश्चिक राशि) हो तो विष या शस्त्र से मृत्यु तथा घोर ज्वर दाह तथा सर्व प्रकार का दुख होता है।

4. कर्क राशि में गुरू हो तो अति वैभव लाभ, धन लाभ तथा राजमैत्री प्राप्त होती है।

5. इसी प्रकार शनि हो तो वात व्याधि, घात तथा जंगली पशु का विषयुक्त दर्शन तथा अन्य अनेक क्लेश प्राप्त होते हैं।[1]

सिंह राशि में अन्तर्दशा फल :-

1. सिंह दशा में मंगल (मेष, वृश्चिक राशि) हो तो ज्वर, पित, रोग शस्त्राघात, हैजा तथा मुख के रोग होते हैं।

2. शुक्र तथा बुध (वृष, तुला, मिथुन, कन्या) हो तो सुन्दर वस्त्र, भूषण, विद्या, पुत्र, स्त्री का लाभ होता है।

3. सिंह की दशा में चंद्र (कर्क राशि) हो तो उन्नत अवस्था से पतन, देश त्याग, महाभय, विशेष धन हानि होती है। महाशत्रु का भय, ज्वर तथा व्याधि, अज्ञान और मृत्यु होती है।

4. सिंह राशि के अन्तर में गुरू (धन, मीन राशि) हो तो धन सम्पत्ति का लाभ, द्विज देवता की कृपा तथा विद्या लाभ होता है।[2]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 45, श्लोक 93 से 102, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. वही, श्लोक 103 से 110 ।

कन्या राशि दशा में अन्तर दशा फल :-

1. शनि स्वांश हो तो यात्रा, ज्वर, भूख–प्यास से कष्ट तथा रोग, दुख प्राप्त होता है।
2. गुरू (धन मीन राशि) अन्तर हो तो राजकृपा, लाभ, ऐश्वर्य, बन्धु तथा विद्या प्राप्ति होती है।
3. कन्या में मंगल (अर्थात् मेष वृश्चिक राशि) हो तो व्यर्थ की यात्रा, ज्वर मसूरी रोग, अग्नि भय, शस्त्र से घाव तथा मृत्यु होती है।
4. कन्या में शुक्र बुध तथा चन्द्र (वृष, तुला, मिथुन, कन्या, कर्क राशि) हो तो स्त्री पुत्र, नौकर आदि की प्राप्ति तथा वस्त्राभूषण प्राप्त होता है।
5. कन्या में सूर्य (सिंह राशि) हो तो यात्रा, ज्वर, पुत्र हानि तथा शस्त्राघात होता है।[1]

तुला राशि दशा में अन्तर :-

1. तुला में वृष तुला हो तो स्त्री, पुत्र, धन, वस्त्र, सम्पत्ति का लाभ होता है।
2. तुला में मंगल (मेष, वृश्चिक राशि) हो तो पिता, मित्र धन की हानि, सिर दर्द, बुखार, शस्त्र से आघात् तथा अग्नि से भय होता है।
3. तुला में गुरू (धन, मीन राशि) हो तो धन्, रत्न, धर्म, सर्वसम्पत्ति तथा राजकृपा का लाभ होता है।
4. तुला में शनि (मकर, कुम्भ राशि) हो तो यात्रा, महाव्याधि, शत्रु बाधा तथा हानि होती है।
5. तुला में बुध (मिथुन, कन्या राशि) हो तो स्त्री, पुत्र लाभ, धन लाभ इच्छित वस्तु की प्राप्ति, सौभाग्य और बन्धु लाभ होता है।
6. तुला में बुध, शुक्र, चंद्र (मिथुन, कन्या, वृष, तुला तथा चंद्र राशि) हो तो व्याधि का नाश, महान् सुख, सम्पूर्ण अर्थ की सिद्धि होती है।[2]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 45, श्लोक 111 से 119, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. वही, श्लोक 120 से 127 ।

वृश्चिक राशि दशा में अर्न्तफल :-

1. वृश्चिक राशि में सूर्य (सिंह राशि) हो तो शत्रु से क्षोभ, भय, व्याधि धन नाश, पिता से भय होता है एवम् पशु से क्षति होती है।
2. वृश्चिक राशि में (मेष वृश्चिक राशि) हो तो वात पित् की बीमारी, शीतला की बीमारी, अग्नि तथा शस्त्र से भय होता है।
3. वृश्चिक राशि में गुरु (धन, मीन राशि) अन्तर हो तो धन सम्पत्ति रत्न की प्राप्ति, देव ब्राह्मण पूजा तथा राजकृपा होती है।
4. वृश्चिक राशि में शनि (मकर, कुम्भ राशि) हो तो धन, बन्धु का नाश, चिन्ता, व्याकुलता, शत्रु बाधा, महाव्याधि होती है।
5. वृश्चिक राशि में मंगल (मेष, वृश्चिक राशि) हो तो दाह, ज्वर, वमन्, मुख रोग, दर्द और क्लेश होता है।
6. वृश्चिक राशि में बुध, शुक्र तथा चन्द्र (मिथुन, कन्या, वृष, तुला तथा कर्क राशि) हो तो धन, विद्या सम्पत्ति प्राप्त होती है। शत्रु नाश तथा राज लाभ होता है।[1]

धनु राशि में अर्न्तफल :-

1. धनु राशि में सूर्य (सिंह राशि) अन्तर हो तो स्त्री नाश, धन हानि, कलह राजभय तथा यात्रा होती है।
2. धनु राशि में गुरू (धन, मीन राशि) हो तो दान, धर्म, तप, स्त्री धन का लाभ तथा राजसम्मान होता है।
3. धनु राशि में बुध शुक्र तथा चंद्र राशि हो तो धन विद्या सम्पत्ति प्राप्त होती है। शत्रु नाश तथा राजलाभ होता है।[2]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 45, श्लोक 128 से 136, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. वही, श्लोक 137 से 144 ।

मकर राशि में अर्न्तफल :-

1. मकर में शनि (मकर, कुंभ राशि) हो तो देव, ब्राह्मण, राजा का कोप बन्धुओं से नाश तथा देश त्याग होता है।
2. मकर राशि में शुक्र, बुध, चन्द्र, बृहस्पति (वृष, तुला, मिथुन, कन्या, कर्क, धन और मीन) हो तो देवार्चन, तप, ध्यान, द्विज पूजा आदि लाभ होता है।
3. मकर में मंगल (मेष, वृश्चिक राशि) हो तो सिर दर्द, ज्वर, हाथ पैर में घाव, रक्त पित्, अतिसार की बीमारी होती है।
4. मकर में शनि (कुम्भ राशि) हो तो बन्धु, पुत्र पिता की हानि, ज्वर, राजा तथा शत्रु से भय होता है।[1]

कुम्भ राशि दशा में अर्न्तफल :-

1. कुम्भ राशि में शुक्र (वृष, तुला राशि) हो तो अनेक विद्या तथा धन लाभ, स्त्री पुत्र, मित्र सुख तथा ऐश्वर्य होता है।
2. कुम्भ राशि में मंगल (मेष, वृश्चिक राशि) हो तो ज्वर, अग्नि, चोर से हानि, शत्रु से भय, मन में दुख होता है।
3. कुम्भ राशि में गुरू (धन, मीन राशि) हो तो दुख व्याधि का नाश, देव ब्राह्मण की पूजा, मन में सन्तोष होता है।
4. कुम्भ राशि में बुध (कुम्भ राशि) हो तो सन्निपात्, कलह, देशयात्रा, क्षय रोग होता है।
5. कुम्भ राशि में बुध (मिथुन, कन्या राशि) हो तो पुत्र, मित्र, धन, स्त्री का लाभ प्राप्ति, मन में सन्तोष तथा सौभाग्य होता है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 45, श्लोक 145 से 152, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

6. कुम्भ राशि चन्द्र (कर्क राशि) हो तो स्त्री, विद्या लाभ, आश्रित मनुष्य की व्याधि का नाश तथा पीड़ा होती है।[1]

मीन राशि दशा में अर्न्तफल :-

1. मीन राशि में सूर्य (सिंह राशि) हो तो कलह, चोर भय, बन्धुओं से हानि स्थान नाश होता है।

2. मीन राशि में बुध, शुक्र (मिथुन, कन्या, वृष, तुला) हो तो शत्रु नाश, विजय राजा, गौ, ब्राह्मण की कृपा तथा मिलाप एवम् रत्न लाभ होता है।

3. मीन राशि में मंगल (मेष, वृश्चिक राशि) हो तो विवाद, पित्त रोग शीशा धातु की भस्म करना, शत्रु क्षय आदि होते हैं।

4. मीन राशि में गुरू (धन, मीन राशि) हो तो धन सम्पत्ति, स्त्री का लाभ, राजपूजा, वस्त्राभरण का लाभ होता है।

5. मीन राशि में शनि (मकर, कुम्भ राशि) हो तो वेश्या संग से समस्त ऐश्वर्य का नाश, देश त्याग, दरिद्र होता है। इसी प्रकार क्रम से ग्रहों का फल सव्य मार्ग का कहा गया है। इन्हीं फलों को अपसव्य मार्ग में भी समझना चाहिए। मनुष्यों के पूर्व जन्म कृतधर्म, कर्म के फल से इस जन्म में जो सुख दुख प्राप्त होते हैं वे सब इस दशा के रूप में प्राप्त होते है इसमें सन्देह नहीं। मित्र ग्रह की अर्न्तदशा शुभ, शत्रु ग्रह की अशुभ, सम ग्रह की मध्यम समझनी चाहिए।[2]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 45, श्लोक 153 से 160, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. वही, श्लोक 161 से 164 ।

चरपर्यादशाफल :-

अधुना संप्रवक्ष्यामि चरपर्या दशाफलम्।

यस्य विज्ञानमात्रेण दैवज्ञो जायते द्विज।।[1]

अब चरपर्यादशा का फल कहते है जिसके जानने से मनुष्य दैवज्ञ होता है। मनुष्यों की सम्पूर्ण आयु के शुभाशुभ, सुख दुख आदि का निश्चित रूप से ज्ञाता होता है। जन्म समय के लग्न से प्रारम्भ करके बारह भावों में पूर्वोक्तानुसार आयु के वर्ष होते है इनका फल इस प्रकार है :–

1. जब जिस भाव का विचार करना हो तब देखना चाहिए कि उस राशि से 5, 8, 9 स्थान में पाप ग्रह हों तो उस राशि की दशा दुखदायक होती है।
2. विचारीय राशि से 3, 6, स्थान में पाप ग्रह हों तो जय आदि शुभ फल और अशुभ ग्रह युक्त हो तो पराजय होती है।
3. लाभ स्थानों में शुभ और पाप दोनों प्रकार के ग्रह हो तो निश्चित रूप से लाभ होता है। ये बात भगवान पराशर ने अपने शिष्य मैत्रेय को कही।
4. जब दशा स्वामिनी राशि शुभ ग्रह युक्त हो तथा राशि भी शुभ स्थान में हो तो दशा का फल भी शुभ होता है। (1, 4, 7, 10, 5, 9) राशि यदि पाप ग्रह युक्त शुभ स्थान में हो तो कल्याणकारी है।
5. राशि पाप हो, उसमें शुभ ग्रह हो तो पहले सुख होता है।
6. पाप राशि में पाप ग्रह हो तो वह दशा सर्व सुखदाता होती है।
7. शत्रु क्षेत्र की दशा रात्रि की हो तो उसमें दोनों प्रकार के ग्रह हो तो (शुभ, पाप) हो तो पहले कष्ट, बाद में सुख होता है।
8. पाप राशि में शुभ और पाप ग्रह हों तो प्रथम सौख्य, बाद में दुख होता है। राशि शुभ

1. ''बृहत्पाराशर–होराशास्त्र'', पूर्वखण्ड, अध्याय 46, श्लोक 1, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

हो तो शुभ, पाप हो तो अशुभ फल होता है।

9. यदि राशि शुभ हो तो शुभ और पाप हो तो अशुभ फल होता है।
10. द्वितीय, पंचम में सौम्यग्रह हों तो राजप्रीति और जय होती है । तृतीय भाव में पापग्रह हो तो शत्रु की पराजय तथा बंधन और अपनी जय होती है ।
11. चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह हो सुख और अष्टभाव में शुभग्रह हो तो आरोग्यता होती है ।
12. नवमभाव में शुभग्रह हो गुरु जनों से धर्मवृद्धि और सौख्य होता है ।
13. विपरीत परिस्थिति हो तो विपरीत कहना । पाप राशि में पाप ग्रह हों तो देह पीड़ा और मनोव्याथा होती है ।
14. सप्तम भाव में पापग्रह के योग से या स्थिति से भार्या को कष्ट होता है ।
15. चतुर्थ भाव में पाप योग हो तो स्थान हानि ।
16. पंचम भाव में पाप योग से पुत्र को पीड़ा होती है ।
17. दशम भाव में पाप योग से कीर्ति हानि ।
18. नवम भाव में पाप योग से पितृ पीड़ा होती है ।
19. यदि पापग्रह से 11 वें भाव में भी पाप ग्रह हो तो अबाध पीड़ा होती है ।
20. 11वें सौम्य ग्रह हो तो सौख्य होता है । यदि केन्द्र के स्थान में सौम्य ग्रह हो तो लाभ और शत्रु पर जय होती है ।
21. इस प्रकार जन्मकाल की ग्रह स्थिति तथा वर्तमान ग्रहस्थिति का विचार करके ही तत्–2 राशि दशा का फल कहना चाहिए । जिस जातक की राशि ग्रह युक्त हो और राशि के पृष्ठभाग में भी शुभग्रह हो वह दशा शुभ फलदायिनी होती है और विपरीत होने से विपरीत फल होता है ।
22. 5-8-9-12 भावों में शुभ तथा पाप दोनों प्रकार के ग्रह हों तो मिश्रित फल होता है उस राशि दशा में मिश्रित फल कहना चाहिए ।

23. मेष, कर्क, तुला, मकर राशियों के फल के प्रतिबंधक स्थान क्रम से कुंभ, वृष, सिंह वृश्चिक हैं ।
24. दशाप्रद राशि स्थिर द्विस्वभाव हो और उसके बाधा स्थान में पापग्रह हो तो महाक्लेश, बंधन, व्यय और नाश होता है ।
25. दशाराशि में उच्च का या स्वगृही ग्रह हो तो शुभ, सौख्य और धनलाभ होता है ।
26. यदि वह राशि ग्रह शून्य हो तो अशुभ या फलहीन होती है ।
27. बाधक स्थान से 6-8-12 राहुयुक्त हो तो महान भय होता है । यात्रा बंधन प्राप्ति राजा तथा शत्रु से पीड़ा और भय होता है ।
28. सूर्य, मंगल, शनि राहु ये ग्रह यदि दशा राशि में या अन्तरदशा राशि में हों तो पतन और राजकोष से भय होता है ।
29. दशाराशि से त्रिकोण में यदि नीच राशिगत ग्रह हो तथा उस राशि में नीचस्थ या पापग्रह हो तो उसके भोगकाल में मृत्यु का भय होता है ।
30. भुक्ति राशि में उच्चस्थ ग्रह हो अथवा उससे त्रिकोणभाव में उच्चस्थ ग्रह हो तो उस दशा के भोगकाल में मनुष्य को बहुत सुख होता है । वह मनुष्य नगर तथा ग्राम का स्वामी, धन, पुत्र प्राप्ति, सेनापति का ऊँचा पद प्राप्त करता है ।
31. दशा स्वामी गुरु दृष्ट हो या शुभराशि स्थित हो तो उसकी दशा में धन प्राप्ति तथा पुत्रोत्पत्ति होती है ।

ग्रहों की शत्रु राशि :-

1. सूर्य की शत्रु राशि 2-6-7-10-11 है ।
2. चन्द्र की शत्रु राशि 7-8-11 है ।
3. मंगल की शत्रु राशि 3-6-7-11-12 है ।
4. बुध की शत्रु राशि 4-8-11-12 है ।

5. गुरु की शत्रु राशि 2-7-3-6 हैं ।
6. शनि की शत्रु राशि 1-5-8-9-4 हैं ।
7. शुक्र की शत्रु राशि 4-5-8-9 हैं । इन शत्रुराशियों का ध्यान में रखते हुए अन्तरदशा का विचार करे ।
8. जो ग्रह राजयोगकारक है ।
9. जो ग्रह शुभ ग्रहों के मध्य में हैं ।
10. जिस ग्रह से त्रिकोण में शुभ ग्रह हों वह ग्रह शुभ फल देता है।
11. राजयोग कारक ग्रह की दशा में राजयोग के अनुसार जो शुभ फल होना संभव है । वह शुभ फल होता है ।
12. इसी प्रकार दो शुभग्रहों के मध्य में तो पाप ग्रह हैं, वह भी शुभ फल कारक ही है । अशुभ ग्रह की दशा में शुभ ग्रह का अंतर शुभ होता है ।
13. इसी प्रकार जिस ग्रह के त्रिकोणस्थ शुभग्रह हो उसकी दशा भी शुभफलदात्री होती है ।
14. जिस पापग्रह का आरंभ (दशा) और अंत (दशा) शुभ या मित्र राशि की दशा में हो वह दशा भी शुभफल देने वाली होती है ।
15. इसी प्रकार प्रति राशि एक–एक वर्ष चलाना चाहिए ।
16. आरंभिक राशि त्रिकोण में शुभग्रह हो तो शुभफल होता है । मूल दशा भी शुभ हो और अन्तर दशा भी शुभ हो अतिशुभ फल होता है ।
17. शुभराशि में पापान्तर भी जब शुभ हो सकता है । तब शुभ राशि में शुभान्तर के शुभ हो सकता है । तब शुभराशि में शुभान्तर के शुभ होने में तो कहना ही क्या है ।
18. दशा के आदि तथा अन्त में नीच, शत्रुस्थ ग्रहायोग युक्त राशि का अन्तर हो तो भाग्य का विपर्यय (उल्टा निकृष्ट होना) ही जानना ।

19. जिस राशि में अथवा जिस राशि में त्रिकोण नीचस्थ ग्रह हो । जब दशाराशि का स्वामी नीच ग्रह हो अथवा नीचग्रहों से सम्बन्ध हो तब भाग्यभाव की हानि ही करता है।

20. राहु तथा केतु के लिए क्रमशः कुंभादि चार तथा वृश्चिकादि चार राशियों में दशा का आरम्भ हो तो दशा शुभ होती है ।

21. जिस दशा को शुभ माना जाय वह दशा यदि मकर राशि की हो अथवा दशांत राशि जिस राहु केतु से दृष्ट या युक्त हो । अथवा शुक्र या चन्द्रमा से युक्त या दृष्ट हो तो राज के कोप से धन क्षयकारी दशा जानना ।

22. यही फल जहां शत्रुराशि मे दशा को अंत होता हो अथवा राहु की दृष्टि से युक्त या दृष्ट हो तो भी जानना । यह फल शनि की दशा में तथा मकर राशि दशा में नहीं देखना ।

23. राहु की दशा के अन्त में सर्वस्व का नाश तथा मरण एवं बंधन होता है या देशत्याग अथवा महान कष्ट होता है ।

24. राहु या दशाप्रद राशि से त्रिकोण स्थान में पापग्रह हो तो निश्चस ही दुःख होता है, इस प्रकार कही हुई रीति से सब योगायोगों का विचार करके ही निश्चित फल कहना चाहिए।

25. यदि दशाप्रद राशि राहु आदि पापग्रह युक्त हो तो उस दशा में भी पूर्वोक्त अशुभ फल होता है । दशा का आरंभ और अन्त मकर राशि में हो तो शुभफल होता है । उसी राशि मे यदि राहु हो तो शुभफल का निरोध करके धननाश कारक होता है ।

26. जिस राशि में राहु हो उस राशि की दशा नाशकारक होती है । यदि राहु धन स्थान में हो तो धनी मनुष्य के भी घर का नाश करता है ।

27. चन्द्र तथा शुक्र जिस राशि के 12 भाव में हो तो राजकोष होता है । यदि 12 स्थान

में भौम और केतु हो तो अग्नि से मृत्यु या व्यथा होती है ।

28. चन्द्रमा और शुक्र यदि धन राशि में हों तो राजा से धनलाभ होता है । दशा के आरंभ तथा अन्त में भी धनलाभ होता है ।

29. स्थान आदि के द्वारा जो योग और फल दशाप्रद राशि के लिए कहे गये हैं, वे सब योग अर्गला योग के विचार में भी प्रयुक्त करना चाहिए । ऐसा ही प्रथम ब्रह्मा ने कहा है ।

30. जिस दशाप्रद राशि से अर्गला मे पाप या शुभ ग्रह हो । उस ग्रह से यदि लग्न लग्न दृष्ट या युक्त हो तो योग की प्रबलता समझना ।

31. इसी प्रकार अर्गला के प्रतिबन्धक योग में भी यदि कोई ग्रह की दृष्टि हो तो वह योग भी दृष्ट या युक्त लग्न के लिए विपरीत योग होने पर विपरीत फलकारक होता है । शुभयोग यदि प्रतिबंधित नहीं हो तो शुभ फल निःसन्देह होता है ।

योगिनी दशा फल :-

"बृहत्पाराशर--होराशास्त्र", अध्ययन ग्रंथ, दैवज्ञ गणेशदत्त पाठक ग्रंथ तथा पं. देवचंद्र आह आदि ग्रंथों में कहीं पर भी योगिनी दथा का फलादेश प्राप्त नहीं है। लेकिन हम इसका फलादेश "मानसागरी" से तथा "सचित्र ज्योतिष शिक्षा" बाबूलाल ठाकुर वाले ग्रन्थ से अध्ययन कर लिख रहे हैं। क्योंकि यह दशा अपने आप में निरन्तर फलकारी तथा दिव्य दशा है। किसी ग्रन्थ में ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है कि यह दशा जम्मू कश्मीर आदि क्षेत्र में विचारणीय है। यह ठीक नहीं है। यह दशा भारत ही नहीं विश्व के सभी देशों में विचारणीय दशा है। यह हमारा मत है क्योंकि इस दशा का फल बहुत बार घटित होते देखा गया है। "मानसागरी" तथा "सचित्र ज्योतिष शिक्षा" में योगिनी दशा का समान फल दिया है। अतः हम "मानसागरी" ग्रन्थ से इस दशा फलादेश कर रहे हैं। यह दशा आठ योगिनियों की है।

1. मंगला 2. पिंगला 3. धान्य 4. भ्रामरी

5. भद्रिका 6. उल्का 7. सिद्धा 8. संकटा

इनके स्वामी क्रमशः चंद्र, सूर्य, गुरु, मंगल, बुध, शनि, शुक्र तथा राहू केतू हैं। इनमें पहली तीन दशाओं के तीन–तीन नक्षत्र हैं। फिर तीन दशाओं के चार–चार नक्षत्र हैं तथा फिर दो दशाओं के तीन–तीन नक्षत्र हैं। ये कुल 27 नक्षत्रों की दशा है। इसकी नक्षत्र गणना आर्द्रा नक्षत्र से होती है। इस दशा में विशेष रूप से संकटा दशा अनिष्टकारी कही गई है। जब भी जातक की मृत्यु होगी उस समय संकटा दशा का अन्तर पत्यन्तर होगा यह निश्चित है।

शनि में शुक्र का अन्तर हो तो अनायास धन और सुख के लिये विद्या प्राप्ति निर्दोष, भुज पराक्रम से युत, विदेश यात्रा में सुख का लाभ होता है।

दशा क्रम कथन :-

नत्वा गणेशं गिरमब्जयोनि विष्णुं शिवं सूर्यमुखान् ग्रहेन्द्रान्।

वक्ष्ये स्फुटं सूर्यकृताद्यशास्त्राद्दशाक्रमं वा किल योगिनीजम्।।[1]

गणेश, सरस्वती, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य आदि नवग्रहों को प्रणाम करके सूर्य के किये हुए आद्य शास्त्र से योगिनी दशा के क्रम को कहता हूँ।

योगिनी दशा ज्ञान :-

आदौ जनस्य विधिवत् प्रसवं विचार्यं संवत्सरर्त्वयनमासदिनर्क्षकालैः।

यस्मिन् भवेद्दिवसभे जननं जनस्य तद्भ पिनाकनयनैः सहितं विधेयम्।।

गौरीशमूर्त्या विभजेच्च शेषं यत्संख्यकं सैव दशा जनस्य।

यया जनः कर्मफलस्य पंक्तिः शुभाशुभस्य स्फुटतामुपैति।।[2]

दैवज्ञ को चाहिये कि पहले मनुष्य के जन्म समय को अच्छी तरह समझ कर उस समय

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 470 ।
2. वही, पेज 470 ।

के संवत् ऋतु, अयन, मास, वार, नक्षत्र और समयों के द्वारा विधिवत् प्रणाली के अनुसार जन्म का विचार करके जिस नक्षत्र में जन्म हो अश्विनी से उसकी संख्या में तीन जोड़कर आठ के भाग देने से जो शेष बचे उस शेष संख्या के तुल्यसंख्यक मंगला आदि योगिनी की दशा समझें, उसी पर से मनुष्य का स्पष्ट शुभाशुभ फल होता है।

योगिनी दशा वर्ष संख्या :-

एंक द्वौ गुणवेदबाणरससप्ताष्टाङ्कसंख्याः क्रमात्

स्वीयस्वीयदशा-विपाकसमये ज्ञेयं शुभं वाऽशुभम्।[2]

उक्त मंगला आदि आठ योगिनियों के क्रम से 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 ये दशा वर्ष मान हैं, इसी के अनुसार अपनी–अपनी दशा में उक्त योगिनियों के शुभ या अशुभफल समझना। दशामान को दिनात्मक बनाकर पृथक्–पृथक् दशावर्ष संख्या से गुणाकर गुणनफल में 36 के भाग देने से लब्धि दिनादि अन्तरदशा होती है।

योगिनी दशा का चक्र :-

1.मंगला	2.पिंगला	3.धान्या	4.भ्रामरी	5.भद्रिका	6.उल्का	7.सिद्धा	8.संकटा	
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	राहु/केतु	स्वामी
		अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा		
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फा०	उ०फा०	हस्त	
चित्रा	स्वामी	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू०षा०	उ०षा०	
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भा०	उ०भा०	रेवती			

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 470 ।

मंगला दशा फल :-

मंगला की महादशा में धर्म, विप्र, देवता, गौ, पुरजनों में उत्कर्षता (महत्त्व) अनेक प्रकार के भोग, यश, धन, राजा से श्रेष्ट घोड़ा, हाथी आदि सवारी का लाभ, घर में मंगल कार्य, भूषण वस्त्र की ढेर, स्त्री सुख, ज्ञान की वृद्धि होती है।[1]

पिंगला दशा फल :-

पिंगला की महादशा में हृदय में रोग, शोक नाना प्रकार के रोग कुसंग से शरीर तथा मन में रोग, तृष्णा, रक्त का विकार, ज्वर, पित्त, शूल, स्त्री, पुत्र तथा नौकरों को कष्ट, मान का नाश, धन का व्यय और सत्प्रेम का नाश होता है।[2]

धान्य दशा फल :-

धान्या की महादशा में धन का आगम, सुख, व्यापार भोग सम्मान की वृद्धि, शत्रुओं का नाश, सुख, विद्या लाभ, राजाओं से आदर में निरत, ज्ञानोदय, श्रेष्ट, तीर्थ, देवता, सिद्ध (महात्माओं) की सेवा में अनुरक्त होता है, यह दशा भाग्य से मिलती है।[3]

भ्रामरी दशा फल :-

भ्रामरी की दशा में दुर्गम वन, पहाड़ दुर्गम बाग, धूप में व्याकुल होकर दूर–दूर तृष्णा से व्याकुल चारों तरफ मृगवत् घूमता है, राज कुलोत्पन्न राजा अपने राज्य को छोड़कर पृथ्वी पर घूमकर कष्ट पाता है।[4]

भद्रिका दशा फल :-

भद्रिका की दशा में आत्मीय जन, ब्राह्मण, राजाओं से मैत्री तथा आदर, घर में मंगल

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 472 ।
2. वही, पेज 472।
3. वही, पेज 472 ।
4. वही, पेज 473 ।

कार्य, सब प्रकार के सुख्र, व्यवसाय में रुचि, राज्य लाभ, अत्यन्त, सुन्दरी युवतियों से क्रीड़ा, (भोग) विलास, सुख होते हैं।[1]

उल्का दशा फल :-

उल्का की महादशा में मान, धन, गौ वाहन, व्यापार वस्त्र, इनकी हानि, राजा से कष्ट, नौकर, सन्तान और स्त्री से शत्रुता, सौन्दर्य की हानि, हृदय नेत्र, पेट, कान, दांत और पैर में रोग होता है।[2]

सिद्धा दशा फल :-

सिद्धा योगिनी की महादशा में कार्यों में सिद्धि, उत्तम भोग, मान धन की वृद्धि, विद्या, राजा में अधिकार, धन, सात्विक धर्म का लाभ, सत् ज्ञान का लाभ, व्यापार में लाभ, वस्त्र, भूषणादिकों का लाभ, सन्तान के विवाहदि शुभ कार्य, सज्जनों से संगति, राजा से ऐश्वर्य का लाभ होता है।[3]

संकटा दशा फल :-

संकटा की दशा में राज्य में नाश, घर, पुर, नगर, गांव, गौशालादि में अग्नि भय, तृष्णा, रोग, धातु की क्षीणता, विकृति, पुत्र, स्त्री से वियोग, मोह, शत्रुभय, देह में दुर्बलता होती है। जन्म काल के पश्चात् संकटा की दशा अन्तर्दशा के बिना मृत्यु नहीं होती। अर्थात्–संकटा की दशा या अन्तर्दशा आने पर ही मृत्यु होती है।[4]

संकट विशेषता :-

भ्रामरी या उल्का की महादशा में संकटा की अन्तर्दशा हो तो मृत्यु होती है। यदि आयु

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 473 ।
2. वही, पेज 473।
3. वही, पेज 473 ।
4. वही, पेज 474 ।

खण्डा में उक्त समय हो तो अवश्य मृत्यु अन्यथा–मृत्यु तुल्य कष्ट समझना चाहिये।[1]

मंगला में अन्तर दशा फल

मंगला में मंगला फल :-

मंगला की दशा में मंगला की अन्तर्दशा हो तो मित्र, पुत्र, स्त्री, स्वशरीर और व्यापार में सुख तथा घर में मंगल कार्यनित्य होता है।[2]

मंगला में पिंगला फल :-

मंगला में पिंगला की अर्न्तदशा हो तो अपने परिवारों से कलह, मन में उद्वेग और अनेक प्रकार की नित्य पीड़ा होती है।[3]

मंगला में धान्या फल :-

मंगला में धान्या की अन्तर्दशा हो तो हाथी, घोड़ा, गौ, धनों की प्राप्ति पुत्र और मित्र से सुख, अनेक प्रकार के भोग विलास होते हैं।[4]

मंगला में भ्रामरी फल :-

मंगला में भ्रामरी की अन्तर्दशा हो तो स्त्री, मित्रों से कलह, बराबर विदेश वास, धननाश, परन्तु राजाओं से संगति होती है।[5]

मंगला में भद्रिका फल :-

मंगला में भद्रिका की अन्तर्दशा हो तो धन, धान्य, पुत्र, स्त्रियों से और अपने बन्धु वर्ग से प्रसन्न रहे, आमोद–प्रमोद या सुगन्धि को पहचानने वाला होता है।[6]

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 474।
2. वही, पेज 474 ।
3. वही, पेज 475 ।
4. वही, पेज 475 ।
5. वही, पेज 475 ।
6. वही, पेज 475 ।

मंगला में उल्का फल :-

मंगला में उल्का की अन्तर्दशा हो तो धन, कीर्ति और पुत्रों के लिये चिन्ता, स्त्री, मित्र और पशुओं की पीड़ा, राजा से दण्ड–भय होता है।[1]

मंगला में सिद्धा फल :-

मंगला में सिद्धा की अन्तर्दशा हो तो पुत्र, धन, स्त्रियों से आनन्द, अनेक प्रकार के सुख, बन्धु और मित्रों का समागम होता है।[2]

मंगला में संकटा फल :-

मंगला में संकटा का अन्तर हो तो जल, अग्नि, चोर और राजा से पीड़ा, लड़ाई की वृद्धि और मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।[3]

पिंगला में अन्तर दशा फल

पिंगला में पिंगला फल :-

पिंगला में पिंगला की अन्तर्दशा हो तो रोग, शोक, व्यसन, पीड़ा, उद्वेग, सन्ताप, क्लेश, भ्रमण होता है।[4]

पिंगला में धान्या फल :-

पिंगला में धान्या की दशा हो तो धान्य, धन, विलास, पुत्र, अभीष्ट, सिद्धि, वन और सुन्दरी स्त्री से सुख होता है।[5]

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 475।
2. वही, पेज 475।
3. वही, पेज 476।
4. वही, पेज 476।
5. वही, पेज 476।

पिंगला में भ्रामरी फल :-

पिंगला में भ्रामरी की अन्तर्दशा हो तो देश छोड़ना, घर, गांव, नगर के लोगों से धन की हानि, अपने बन्धु वर्गों से कलह होता है।[1]

पिंगला में भद्रिका फल :-

पिंगला में भद्रिका की अन्तर्दशा में कल्याण, स्थानान्तर से पुत्र की कीर्ति, व्यापार में धन का लाभ होता है।[2]

पिंगला में उल्का फल :-

पिंगला में उल्का की अन्तर्दशा हो तो बन्धुओं से विग्रह, राजा, चोर और समाज से पीड़ा होती है।[3]

पिंगला में सिद्धा फल :-

पिंगला में सिद्धा हो तो मन्त्र यन्त्रों की सिद्धि, धान्य धन का लाभ, परन्तु कास, श्वास और प्रमेह का भय होता है।[4]

पिंगला में संकटा फल :-

पिंगला में संकटा का अन्तर हो तो धन की हानि, दुष्ट रोग का भय, शत्रुभय और राजभय होता है।[5]

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 476।
2. वही, पेज 476।
3. वही, पेज 477।
4. वही, पेज 477।
5. वही, पेज 477।

पिंगला में मंगला फल :-

पिंगला में मंगला का अन्तर हो तो अनेक रोग, शोक, मोह, भय और पीड़ा तथा आयु का क्षय होता है।[1]

धान्य अन्तर दशा फल

धान्या में धान्या फल :-

धान्या की दशा में धान्या की अन्तर्दशा हो तो भूमि, गांव, धन, धान्य का लाभ, राजा, स्वजन, पुत्र, स्त्री से अनेक प्रकार के सुख होते हैं।[2]

धान्या में भ्रामरी फल :-

धान्या में भ्रामरी का अन्तर हो तो भ्रमण, कष्ट, हानि, स्थानान्तर से लाभ, अपने जनों से विरोध होता है।[3]

धान्या में भद्रिका फल :-

धान्या में भद्रिका का अन्तर हो तो सौभाग्य हो तो सौभाग्य, गृह और मित्रों से सुख, राजमंत्री श्रेष्ट वहन, वस्त्र, भूमि का लाभ होता है।[4]

धान्या में उल्का फल :-

धान्या में उल्का का अन्तर हो तो अनेक प्रकार के कष्ट और उत्पात, हृदय, कमर में शूल आदि से पीड़ा और धन का नाश होता है।[5]

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 477।
2. वही, पेज 477।
3. वही, पेज 477।
4. वही, पेज 477।
5. वही, पेज 478।

धान्या में सिद्ध फल :-

धान्या में सिद्धा का अन्तर हो तो पुत्र सुख, मित्र का आगमन, अनेक प्रकार के मांग विलास प्राप्त होते हैं।[1]

धान्या में संकटा फल :-

धान्या में संकटा का अन्तर हो तो बन्धन, नीति, व्यापार, राज दरबार के कार्य में मन और उत्साह होता है।[2]

धान्या में मंगला फल :-

धान्या में मंगला का अन्तर हो तो उसके घर में बराबर मंगल, धन धान्य, सोना चांदी, पुत्र से, स्त्री से सुख होता है।[3]

धान्या में पिंगला फल :-

धान्या में पिंगला का अन्तर हो तो अनेक प्रकार से अपने हाथ से उपार्जित भूमि धन हो, उत्साह से सम्पन्न रहे, राजा से भय, सिर में रोग और शूल रोग होता है।[4]

भ्रामरी अन्तर दशा फल

भ्रामरी में भ्रामरी फल :-

भ्रामरी में भ्रामरी का अन्तर हो तो भय, मोह, विष से पीड़ा अपने स्थान में अपने परिवार में पर्वत में शत्रुओं से दुष्ट जन से पीड़ा होती है।[5]

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 478।
2. वही, पेज 478 ।
3. वही, पेज 478 ।
4. वही, पेज 478 ।
5. वही, पेज 479 ।

भ्रामरी में भद्रिका फल :-

भ्रामरी में भद्रिका का अन्तर हो तो विदेश यात्रा, मित्रों का संग, विद्या का लाभ, राजा से सम्मान होता है।[1]

भ्रामरी में उल्का फल :-

भ्रामरी में उल्का का अन्तर हो तो ज्वर, शूल, शोणित विकार से पीड़ा, धन, पुत्र, स्त्री को कष्ट और हानि होती है।[2]

भ्रामरी में सिद्धा फल :-

भ्रामरी में सिद्धा का अन्तर हो तो सदा सब कार्य में सिद्धि, विवेक, विद्या और निधि का लाभ, भय और रोग पीड़ा का नाश होता है।[3]

भ्रामरी में संकटा फल :-

भ्रामरी में संकटा का अन्तर हो तो मरण, क्लेश, शोक, मोह, गमन (भ्रमण) रोग, राजा के यहां चोरों में प्रसिद्ध होता है।[4]

भ्रामरी में मंगला फल :-

भ्रामरी में मंगला का अन्तर हो तो विलास, अनेक सुख, राज सेवा से अतिपुष्ट और मंगल होता है।[5]

भ्रामरी में पिंगला फल :-

भ्रामरी में पिंगला का अन्तर हो तो गुदा, पांव, मुख में रोग, हाथी, घोड़ा, महिष, बाघ और व्रण इनसे भय बना रहता है।[6]

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 479।
2. वही, पेज 479।
3. वही, पेज 479।
4. वही, पेज 479।
5. वही, पेज 480।
6. वही, पेज 480।

भ्रामरी में धान्य फल :-

भ्रामरी में धान्या का अन्तर हो तो धन, वाहन, भोग विलास की वृद्धि राजा तथा भीलों से प्रेम और शत्रुओं का नाश होता है।[1]

भद्रिका अन्तर फल

भद्रिका में भद्रिका फल :-

भद्रिका में भद्रिका का अन्तर हो तो यश, कल्याण, घोड़ा, गौ का लाभ, व्यसन और पीड़ा का नाश, पुण्यपथ का ज्ञान होता है।[2]

भद्रिका में उल्का फल :-

भद्रिका में उल्का का अन्तर हो तो लोगों से विवाद करने वाला, रोग, स्थाननाश, धनहानि, मन में अशान्ति होती है।[3]

भद्रिका में सिद्धा फल :-

भद्रिका में सिद्धा का अन्तर हो तो ब्राह्मण और देवता में भक्ति, पुत्र, मित्र, स्त्री, अपनी देह, घर, ग्राम जनों में उत्सव होता है।[4]

भद्रिका में संकटा फल :-

भद्रिका में संकट का अन्तर हो तो संकट, पीड़ा, मोह, शोक आदि व्यसन, भ्रान्ति, देशगमन और पीड़ा होती है।[5]

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 480।
2. वही, पेज 480।
3. वही, पेज 480 ।
4. वही, पेज 480 ।
5. वही, पेज 481 ।

भद्रिका में मंगला फल :-

भद्रिका में मंगला का अन्तर हो तो सन्मान, धन, भूमि, यश, व्यापार से लाभ, पुत्रों से सुख और पितृ वंशजों की वृद्धि होती है।[1]

भद्रिका में पिंगला फल :-

भद्रिका में पिंगला का अन्तर हो तो पित्त रोग होता है। खेती, व्यापार, जमीन और वृद्धों के आश्रय से अनेक प्रकार के सुख होते हैं।[2]

भद्रिका में धान्या फल :-

भद्रिका में धान्या का अन्तर हो तो सन्तति, स्त्री और मित्रों से सुख, विद्या, घर में मंगल, धान्य, राजा से सम्मान नित्य होता है।[3]

भद्रिका में भ्रामरी फल :-

भद्रिका में भ्रामरी का अन्तर हो तो शोणित विकार, अग्नि, मृत्युभय, घर, खेती और शत्रुओं का नाश और अपने परिवारों से सुख होता है।[4]

उल्का अन्तर फल

उल्का में उल्का फल :-

उल्का में उल्का की दशा दो अकस्मात शत्रुओं से धन की हानि, बड़ी व्यथा और राज्यनाश से भय होता है।[5]

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 481।
2. वही, पेज 481।
3. वही, पेज 481।
4. वही, पेज 481।
5. वही, पेज 481।

उल्का में सिद्धा फल :-

उल्का में सिद्धा का अन्तर हो तो सिद्धा अपने फल को छोड़कर दूसरे के फल को देती है और विदेश की यात्रा होती है।[1]

उल्का में संकटा फल :-

उल्का में संकटा का अन्तर हो तो मरण तुल्य कष्ट, स्त्री, पुत्र, मित्र, नौकर आदि जनों की हानि तथा कुल का क्षय होता है।[2]

उल्का में मंगला फल :-

उल्का में मंगला का अन्तर हो तो मोह तथा धन, मित्र, विवेक, स्त्री आदि से सुख और निर्मलता होती है।[3]

उल्का में पिंगला फल :-

उल्का में पिंगला का अन्तर हो तो कुष्ट (कोढ़), गल और शिर के रोगों से पीड़ित होकर पृथ्वी में भ्रमण करता है इसमें सन्देह नहीं।[4]

उल्का में धान्या फल :-

उल्का में धान्या का अन्तर हो तो लाभ नहीं होता है और सुख नहीं होता है, थोड़ी वात–व्याधि तथा कफ का आरम्भ होता है, स्त्री, पुत्र, आत्मीय जनों से झगड़ा होता है।[5]

उल्का में भ्रामरी फल :-

उल्का में भ्रामरी का अन्तर हो तो मनुष्य को मानसिक दुःख, मोह, अज्ञानता, गलती,

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 482।
2. वही, पेज 482।
3. वही, पेज 482।
4. वही, पेज 482।
5. वही, पेज 482।

शत्रु का भय, अनेक कष्टों का समागम होता है।[1]

उल्का में भद्रिका फलानि :-

उल्का की महादशा में भद्रिका का अन्तर हो तो कल्याण तथा धन का लाभ, अलंकरण, वस्त्र इनकी हानि, कुलज से तथा मित्र जनों से सुख होता है।[2]

सिद्धा में अन्तर दशा फल

सिद्धा में सिद्धा फल :-

सिद्धा की महादशा में सिद्धा की अन्तरदशा हो तो कार्यों की सिद्धि, आत्मीयजनों से सुख, धन–धान्यों की प्राप्ति पुत्र से तथा मित्र से सुख प्राप्ति होती है ।[3]

सिद्धा में संकटा फल :-

सिद्धा के संकटा का अन्तर हो तो कारागार, राजा और चोरों से धन की हानि तथा महाभय, स्वदेश त्याग होता है।[4]

सिद्धा में मंगला फल :-

सिद्धा की महादशा में मंगला का अन्तर हो तो सुख–भोग, आत्मीय जन से सुख, राजा से धन का लाभ तथा कार्यों में सिद्धि होती है।[5]

सिद्धा में पिंगला फल :-

सिद्धा की महादशा में पिंगला का अन्तर हो तो अभिमान, क्रोधानल से नाश, आत्मीयजनों से शत्रुता और परधन का हरण करने वाला होता है।[6]

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 483।
2. वही, पेज 483।
3. वही, पेज 483 ।
4. वही, पेज 483 ।
5. वही, पेज 484 ।
6. वही, पेज 484 ।

सिद्धा में धान्या फल :-

सिद्धा में धान्या का अन्तर हो तो पुरुषों को पूर्व पुण्य फल का उदय, सभी प्रकार से अब अभिलाषा की सिद्धि होती है।[1]

सिद्धा में भ्रामरी फल :-

सिद्धा में भ्रामरी का अन्तर हो तो व्यसन से स्वस्थान का परित्याग और राजा से भय होता है।[2]

सिद्धा में भद्रिका फल :-

सिद्धा में भद्रिका का अन्तर हो तो मनुष्यों के घर में मंगल, कार्य, भोग विलास किया, सुखदायक गुण और सब कार्यों की सिद्धि होती है।[3]

सिद्धा में उल्का फल :-

सिद्धा में उल्का का अन्तर हो तो धनधान्य का नाश, कष्ट, शोक, व्यसन, गुदा में रोग और मोह होता है।[4]

संकटा अन्तर दशा फल

संकटा में संकटा फल :-

संकटा में संकटा का अन्तर हो तो अवश्य मृत्यु, राजवंश से नुकसान, स्वदेशत्याग और धन का नाश होता है।[5]

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 484।
2. वही, पेज 484।
3. वही, पेज 484।
4. वही, पेज 484।
5. वही, पेज 484।

विशेष :- आयु पूर्ति के समय में उक्त अन्तरदशा हो तो मरण होता है अन्यथा मरण तुल्य कष्ट होता है।

संकटा में मंगला फल :-

संकटा में मंगला का अन्तर हो तो स्त्री को शिरोरोग तथा अनेक रोग व्याधि व्यसनों में पीड़ा होती है।[1]

संकटा में पिंगला फल :-

संकटा में पिंगला का अन्तर हो तो अचानक धन की हानि, पुत्रशोक, शत्रुभय और आत्मीय जनों से वियोग होता है।[2]

संकटा धान्य फल :-

संकटा में धान्या का अन्तर हो तो गुल्म रोग से पेट में पीड़ा, अपने पुत्रों से विशेष सुख और स्वदेश में जनसमूह में सुयश होता है।[3]

संकटा में भ्रामरी फल :-

संकटा में भ्रामरी का अन्तर हो तो पृथ्वी में भ्रमणशील, देश, ग्राम, नगर, राजद्वार से भ्रष्ट और शत्रु का भय होता है।[4]

संकटा में भद्रिका फल :-

संकटा में भद्रिका अन्तर हो तो अनेक विद्या, भूषण, वस्त्र, विशेष यश और अपने बन्धु वर्ग से भिन्नजनों से विग्रह होता है।[5]

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 485।
2. वही, पेज 485।
3. वही, पेज 485।
4. वही, पेज 485।
5. वही, पेज 485।

संकटा में उल्का फल :-

संकटा में उल्का अन्तर हो तो प्राप्त धन, गांव का नाश, मृत्यु, बराबर, पशुमात्र, समुदाय को पीड़ा होती है।[1]

संकटा में सिद्धा फल :-

संकटा की महादशा में सिद्धा का अन्तर हो तो अनेक प्रकार के उत्साह, पुष्ट शरीर, सुख प्राप्ति और मन में प्रसन्नता होती है।[2]

दशा वाहन कथन :- बृहत्पाराशर–होराशास्त्र, पूर्वखण्ड अध्याय 47 में दशावाहन विचार दिया है।[3] यह अपने आप में बड़े महत्व का विषय है जो कि पहले भी करा जा चुका है। इसमें एक ही दृष्टि के जातक की जीवन की लीला का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। यह बहुत बार परिक्षित है। यह निम्न प्रकार से है :–

दशा वाहन :- इसमें दशा के वाहन गर्दभ, घोड़ा, हाथी, महिष, जम्बु (सियार) सिंह, काक (कौवा), हंस, मयूर ये नौ दशा के वाहन हैं।

विधि - जातक के जन्म नक्षत्र से लग्न स्पष्ट के नक्षत्र एक गणना करके 9 का भाग देना। शेष रहे सो वाहन जानना।

फल :-

1. दशाप्रवेश में यदि गर्दन वाहन हो तो कमाई होने पर पर खाने वाला मूर्ख लज्जाहीन, धनहीन, वस्त्रादि हीन दीन होता है।
2. अश्व का वाहन हो तो चपल, चंचल, बहुभक्षी, बुद्धिमान, शब्दकारी, सेनानति तथा दृढ़ शरीर वाला परम उद्यमी होता है।

---

1. "मानसागरी", मधुकान्त झा, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, पेज 486।
2. वही, पेज 486।
3. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 47, श्लोक 1 से 13, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

3. हाथी का वाहन हो तो कार्यकारी, मूर्ख चिन्तित, हठी किन्तु शुभ गति तथा योग्य सेनापति, सुन्दर सजीला, सुखकारी, चंचल तथा अनेक कला कौशल वाला होता है।
4. महिषि (भैंसा) की सवारी हो तो जातक बुद्धिबल से हीन प्रबल अग्निभय से आतुर, दो लड़ने वाले सांडों की तरह लड़ाई में सबसे आगे रहता है।
5. सियार दशावाहन हो तो जातक अतिचंचल व्याधि, दुःखपीड़ित स्त्रीवाला, क्लेशयुक्त तथा शत्रु पीड़ित तथा धनधान्यहीन होता है।
6. सिंह दशावाहन हो तो जातक बलवान तथा अनेक रीति से भोगों को प्राप्त करने वाला, शत्रुहन्ता होता है।
7. कौवा वाहन हो तो जातक चंचल निर्भय पर्यटनप्रिय मलिक कुवेशधारा नीचजनों के संगतिवाला तथा राज एवं शत्रुभययुक्त मानापमान के समान रोगी, कलब कामी, कुचेष्टाकारी तथा स्त्री का द्वेषी होता है।
8. हंस का वाहन हो तो अतीव सुन्दर, कलाप्रेमी, बहुत सन्तान सुखयुक्त सभा चतुर, प्रबल मतिमान् होता है।
9. मयूर वाहन हो तो बहुत सुखी, धैर्यवान, कलाकुशल, क्रीडा प्रेमी मधुरभाषी, मधुरभोजन प्रिय होता है।

मानक उदाहरण में जन्म नक्षत्र मूला है तथा लग्न नक्षत्र पूर्वा फाल्गुनी है । अब मूला से पूर्वा फाल्गुनी तक गिना तो 21 नक्षत्र आए, 21 ÷ 9 =2 लब्धि, 3 शेष, अतः हाथी का वाहन आया तो उपरोक्त फल घटित होगा ।

* * *

अध्याय-15

योगों के आधार पर फलादेश

योगों की महत्ता :-

जब तक योग का ज्ञान नहीं होगा कोई भी ज्योतिषी किसी भी कुण्डली का फलादेश करने में सफल नहीं होगा । योगों का ज्ञान अति अनिवार्य विषय है । ये योग जीवन पर्यन्त अध्ययन का विषय है । इनको बार–बार पढ़ने से ही ज्ञान का प्रकाश होता है । योगों के आधार पर फलादेश करना सभी आचार्यो ने एक मत से स्वीकार किया है । क्योंकि प्रत्येक कुण्डली में अलग–अलग योग प्राप्त होते हैं । इसलिये सभी का भाग्य भी भिन्न–भिन्न होता है ।

योग की परिभाषा :-

'ग्रह तथा भावों के पारस्परिक संबन्ध को योग कहते हैं ।' ये योग आठ प्रकार से घटित होते हैं । जो निम्न प्रकार से हैं :–

1. किसी विशेष भाव में किसी विशेष ग्रह की स्थिति के कारण ।
2. दो या दो से अधिक ग्रहों के पारस्परिक दृष्टि सम्बंध से ।
3. दो या दो से अधिक ग्रहों के संयोग से ।
4. एक भाव का दूसरे भाव से सम्बन्ध होने से ।
5. शुभ ग्रहों से ।
6. नीच ग्रहों से ।
7. कारक ग्रह का अकारक ग्रह से सम्बन्ध होने से ।
8. कारकत्व की शुभ स्थिति के कारण योग उत्पन्न होते हैं ।

इन योगों की संख्या अलग–अलग ग्रन्थों से भिन्न–भिन्न है ।

''बृहत्पाराशर–होराशास्त्र'', मूल ग्रन्थ में 65 योग प्राप्त होते हैं । ''बृहत्पाराशर–होराशास्त्र'',

देवचन्द्र झा, वाले ग्रन्थ में 81 योग प्राप्त होते हैं । जबकि "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं० गणेशदत्त पाठक वाले ग्रन्थ में मुख्य रूप से 97 योग प्राप्त होते हैं । "जातक परिजात", हरिशंकर पाठक के ग्रन्थ में 210 योग प्राप्त होते हैं । "योग दीपिका", नारायणदत्त, श्रीमाली के ग्रन्थ में 275 योग प्राप्त होते हैं । लेकिन बी० वी० रमन ने अपनी पुस्तक 300 महत्त्वपूर्ण योग में 300 योगों का वर्णन किया है । जातक तत्व में 595+127=792 योग तथा कहीं–कहीं 360 योगों का उल्लेख है, कहीं–कहीं 1800 योगों का उल्लेख हैं । लेकिन ये 1800 योग प्राप्त नहीं हैं। इतना अवश्य है, कुण्डली में हजारों योग उत्पन्न होते हैं, आवश्यकता देखने की है ।

योगफल घटित होने का समय :-

1. जिन ग्रहों से जो भी योग बनता हो चाहे वह शुभ योग है या अशुभ हैं । उन ग्रहों की महादशा व अन्तर्दशा में फल घटित होता है ।
2. कम अंक वाले की महादशा में अधिक अंक वाले ग्रह की अन्तर्दशा में फल घटित होगा।
3. उपरोक्त दोनों सम्भव न हो तो योग कारक ग्रह जिस भाव में बैठा हो । उसके स्वामी की महादशा में फल घटित होगा ।
4. यह भी सम्भव न हो तो दृष्टि से देखें, कारक ग्रह पर किस ग्रह की दृष्टि है । उसी की दशा में फल घटित होता है ।

नाभस आदि योग :-

आकृति योग :- 1. गदा 2. शकट 3. पक्षिन 4. वज्र 5. यव 6. श्रृंगाटक 7. हल 8. कमल 9. वापि 10. यूप 11. शर 12. शक्ति 13. दण्ड 14. नौ 15. कूट 16. छत्र 17. चाप 18. अर्धचन्द्र 19. समुंद्र 20. चक्र योग ।

संख्या योग :- 1. वीणा 2. दाम 3. पाश 4. केदार 5. शूल 6. युग 7. गोल योग ।

पञ्चमहापुरुष योग : 1. रूचक (मंगल) 2. भद्र (बुध) 3. हंस (गुरु) 4. माल्व्य (शुक्र) 5. शश (शनि)

भाग्य योग :- 1. अधि 2. अवतार 3. अमारक 4. आमारक 5. अंगुल 6. इन्द्र 7. कलानीधि 8. केसरी (गज केसरी) 9. काहल 10. क्रम 11. कुशुम 12. कार्मुक 13. कन्दुक 14. क्रोध 15. क्षेम 16. कुलवर्धन 17. कारिका 18. खंग 19. गौरी 20. गदा 21. भङ्ग प्रवाह 22. गज 23. गन्धर्व 24. गोल 25. गुरु 26. चाप 27. चक्र 28. चर्तुमुख 29. चन्द्र 30. चामर 31. चित्र 32. चण्डिका 33. चतुसागर 34. जय 35. त्रिलोचन 36. देवेन्द्र 37. दण्ड 38. देव 39. धर्म 40. धूम 41. ध्वज 42. नाग 43. नाभी 44. नल 45. नन्दा 46. नलिका 47. नृप 48. नागेन्द्र 49.नाशीर 50. पारिजात 51.पर्वत 52.पदम् 53.बुध 54. वशुमति 55.विष्णु 56. भेरी 57. भास्कर 58. भद्र 59. भूप 60. भव्य 61. भोग 62. मतस्य 63. मरुद्ध 64. मूसल 65. भदन 66. भाला 67. मृग 68. मृदंग 69. मुकुट 70. युग्म 71. रज्जु 72. राजपद 73. रवि 74. रसातल 75. लक्ष्मी 76. विद्युत 77. वृष्टि 78. विभावसु 79.शंख 80. श्रीनाथ 81. शारदा 82. श्री 83. शिव 84. शुभ 85. श्रीमद् 86. समुद्र 87. साम्राज्य 88. हरिहर ब्रह्म

नेष्ट :- 1. रेका 2. दरिद्रयोग 3.प्रेष्य 4. केमद्रुम योग

चन्द्रयोग :- 1. अनफा 2. सुनफा 3. दुर्धरा 4.चन्द मंगलम योग

सूर्य :- 1. वेशी 2. वोशी 3. उभयचरी 4. गुरुआदित्य 5. बुधादित्य योग

सामान्य भाषाधारित योग :-

राज योग :- केन्द्र त्रिकोण पर आधारित राज योग ।

सम्बंध चार प्रकार से होता है।

1. ग्रहों का साथ होना
2. ग्रहों का स्थान परिवर्तन
3. ग्रहों का दृष्टि सम्बंध

4. एक ग्रह दूसरे के घर में हों तथा दूसरे की पहले दृष्टि हो ।

भाव योग :

जातक तत्व ग्रन्थानुसार योग :-

तन विवेक योग :- 1. देह कर्श्य योग 2. दह पुष्टि योग 3. दीर्घ देह योग 4. वामन देह योग 5. विकलांग योग 6. रक्त पित्त योग 7. देह दुर्गन्ध योग 8. लकड़ी के सहारे चलने का योग 9. विलज्ज योग 10. सलज्ज योग 11. कपटा योग 12. हत्तकपटी योग 13. निष्कपटी योग 14. शूर योग 15. कातर योग 16. क्रोधी योग 17. कला प्रिय योग 18. दयावान योग 19. हास्या सक्त योग 20. द्रोही योग 21. गुरु द्रोही योग 22. चोर योग 23. व्यसनी योग 24. निर्व्यसनी योग 25. गोपाल योग 26. अविश्वासी योग 27. कामी योग 28. अतिकामी योग 29. अल्पकाम व अल्पवीर्य योग 30. नपुंसक योग 31. वीर्यच्युति योग 32. उन्माद योग 33. शीघ्रवार्धक्य चिन्होदय योग 34. प्रकृति ब्रर्द्धनयुवा योग 35. नाति ब्रर्द्धनयुवा योग 36. ब्रद्ध भी तरुण के समान योग 37. रसायन व्यसनी योग 38. सुख भुक्त योग 39. बहुभुक्त योग 40. श्रद्धान्न भोजन कर्त्ता योग 41. अल्प भोजन कर्त्ता योग 42. चिर भोजन कर्त्ता योग 43. चिरभोजन कर्ता योग 44. कपन्ना भोजन कर्त्ता योग 45. भोजन शूर योग 46. धीर योग 47. पिशुन योग 48. चांडाल योग 49. पिशाच योग 50. शिल्पज्ञ योग 51. क्षारादि योग 52. मधुरादि पदार्थ प्रिय योग 53. मधुरे अरुचि खट्टे परअरुचि योग 54. नीचक्रमाणि चपथगामीम्लेच्छ योग 55. ज्ञाति पीड़ा योग 56. जातिच्युति योग 57. जाति पोष्य योग 58. कौतुकी योग 59. आलसी योग 60. कृषिकर्त्ता योग 61. खल्वाट योग 62. शोभननेत्र योग 63. बुद् बुद् लोचन योग 64. मिलिताक्ष योग 65. विकल नयन योग 66. मन्दलोचन योग 67. वक्रनेत्र योग 68. नेत्ररोगी योग 69. अंधयोग 70. निशांध योग 71. नेत्र नाश योग 72. वामनेत्र घात योग 73. दक्ष नेत्र घात योग 74. नृपकोप से नेत्र नाश योग 75. नेत्र प्रमाद योग 76. घाण योग 77. दंपत्ति काण योग 78. बधिर योग 79.कर्णच्छेद योग 80.नाशाच्छेद

योग 81.मूर्ख दुर्गन्ध योग 82. मुक योग 83. गंगस्वर योग 84. पहसित मुख योग 85. दुर्मुख योग 86. दीर्घमुख योग 87. वाग्मी योग 88. जिव्हा दोष योग 89. अस्फुटोक्ति योग 90. गद गद वाक् योग 91. लल्शोक्ति योग 92. पुरुष वाक योग 93. दन्त विकार योग 94. हस्तनाश हस्तपीड़ा योग 95. कुब्जयोग 96. कठिन चित्त योग 97. विरुद्ध चित्त योग 98. अण्ड वृद्धि योग 99. जंघा क्षति योग 100. पंग योग

धनविवेक योग :-

101. धन योग 102. स्वलब्ध धन योग 103. महाधनी योग 104. सहस्र निष्केक्ष योग 105. द्विसहस्र निष्केक्ष योग 106. अयुक्त निष्केश योग 107. अयुताधिक निष्केश योग 108. लक्षधीश योग 109. द्विलक्षेश योग 110. विलसाधिप योग 111. कोटीश योग 112. बाल्येबहुधन लाभ योग 113. निध्याप्ति योग 114. स्वोपार्जित धनाप्ति योग 115. भ्रातृ धनाप्ति योग 116. भातृधन लाभ योग 117. बंधुसेवा कृषि से धन लाभ योग 118. पुत्रतः धनाप्ति योग 119. सपुत्रार्जित धनाप्ति योग 120. शत्रुतो धनाप्ति योग 121. भार्यातो धनाप्ति योग 122. पिता से धनाप्ति योग 123. धाप्ति विदेश योग 124. धन लाभ योग 125. परांगनाशक्ति में द्रव्यनाश योग 126. ज्ञाति विवाद से धनदानी योग 127. मिथ्या कीशांश कृत योग 128. राजदंड धन क्षय योग 129. चौराग्नि भूत कृत धन नाश योग 130. लोकापवाद से धन क्षय 131. निर्धन योग 132. पापमूलकधनक्षय योग 133. धर्ममूलक धनक्षय योग 134. भ्रातृकृत धन नाश योग 135. मातृकृत धन नाश योग 136. पुत्र कृत धन नाश योग 137. शत्रु कृत धन नाश योग, 138. जायाकृत धन नाश योग 139. पित्रकृत धन नाश योग 140. धन नाश योग 141. निर्धन योग 142. दरिद्री योग 143. महादरिद्री योग 144. सर्वसंपतिमान योग 145. बहुकुटुम्बी योग 146. विंशति जन पालक योग 147. पंच सज्जन पालक योग 148. त्रिशत जनपालक योग 149. अनेक जन पाल योग 150. अनादर योग 151. सम्पद्धीन योग 152. परिवार क्षय योग 153. विशेष प्रकार के धन योग

सहजविवेक योग :- 154. बहुभ्रातृ भगिनी योग 155. भातृलाभ योग 156. भ्रातृ भगिनी संख्या योग 157. मातृहीन योग 158. भ्रातृ हानि योग 159. भ्रातृसुखहीन योग 160. अनुजोत्पत्ति योग 161. अनुजहीन योग 162. भ्राता रोगी योग 163. भ्रातृतः स्नेह योग 164. राज प्रेप्य योग 165. भ्रतक योग 166. दासान्वित योग 167. बहुदासान्वित योग 168. विक्रमी योग 169. प्रसिद्ध कर्मा जीवि योग 170. काष्ट पाषाणदि विक्रेता योग 171. भिक्षुक योग 172. निम्न तथा नीच कर्माजीवी योग 173. पित्रादिताः अर्थ प्राप्ति योग

चतुर्थ विवेक योग :- 174. मातृर्दुग्धशोष योग 175. मातृसुखनपश योग 176. मातृ दीर्घायु योग 177. पिता माता सहैव मृत्यु योग 178. मातृवध योग 179. माता पतिव्रता योग 180. मातृ स्नेह योग 181. द्वितीय माता योग 182. चतुष्पद सुख योग 183. वाल्ये सुखी योग 184. नृपान्दात्पर सुखी योग 185. विंशति वर्षाघ्व सुखीयोग 186. त्रिंशद्वषर्त पर सुखी योग 187. आहव्यसि सुखी योग 188. बाल्ये दुःखीतवः सुखी योग 189. मध्य वदसी सुखी योग 190. आद्यमध्य व्यसी सुखी योग 191. अन्त्य तथा मध्यांतवयसी सुखी योग 192. आजीवन सुखी योग 193. सुखी योग 194. दुःखी योग 195. मूषिका मार्जाश्चादि दुख योग 196. प्रशादवान योग 197. इष्टिका योग 198. काष्ठग्रह योग 199. तृणं ग्रह योग 200. विचित्र ग्रह योग 201. हर्म्यप्रकारायियुत ग्रह योग 202. दैनिक वेश्म योग 203. गृह लाभ योग 204. दत्तक मामन योग 205.अकस्मात् गृह लाभ योग 206. गृहनाश योग 207. बहुगृहवास योग 208. स्थिरवास योग 209. बहुक्षेत्रवास योग 210. क्षेत्राप्ति योग 211. भ्रातृतः क्षेत्राप्ति योग 212. कतत्रवः क्षेत्राप्ति योग 213. शत्रुतः क्षेत्राप्ति योग 214. बहुक्षेत्राप्ति योग 215. क्षेत्राप्ति नाश योग 216. राजकोपात्सेत्रादिनाश योग 217. भूमिविक्रेता योग 218. पुत्रतः मित्रता योग 219. स्त्रीतः मित्रता योग 220. बहुजन मैत्री योग 221. सुहृत्पोष्य योग 222.बन्धुपूज्य योग 223. बन्धुपकार कर्ता योग 224. बंधु मिस्त्यज्यते योग 225. बंधु मध्ये कुत्सित योग 226.बंधु द्वेषी योग 227. पर्च्यकशायी योग

228. शयन सुखभाव योग

पचंम विवेक योग :- 229. बुद्धिमान योग 230. विशेष बुद्धिमान योग 231. क्षिप्रोत्तर दानशील योग 232. चंचल धी योग, 233. सात्विक योग 234. सुवाक योग 235. विस्मयशील योग 236. हीनद्यी योग 237. जड़ योग 238. याज्ञिक योग 239. मांत्रिक योग 240. भिषक् योग 241. रस वैद्य विष वैद्य योग 242. सर्जन डॉक्टर योग 243. वैयाकरण योग 244. मीमांशक योग 245. तर्कज्ञ योग 246. सांख्यज्ञ योग 247. गणितज्ञ योग 248. अकाउन्टेन्टादि योग 249. ज्योर्तिविद योग 250. भविष्य वक्ता योग 251. त्रिकालज्ञ योग 252. वेदांत संगीतज्ञ योग 253. वेदांतज्ञ योग 254. ब्रह्मनिष्ट योग 255. कवि योग 256. विदुषांरजक योग 257. विद्वान तथा पण्डित योग 258. षट्शास्त्र बल्लभ योग, 259. ग्रन्थकर्ता योग, 260. शूद्रोपि विद्वान योग, 261. सर्वविद्या योग, 262. अंग्रेजी फारसी अरबी विद्या योग, 263. जज बेरिस्टर वकील योग, 264. सभामूक योग, 265. अनपत्य योग, 266. गर्मानुत्पाद योग, 267. गर्मच्युति योग, 268. सर्पशापद् विपुत्र योग, 269. पितृ शापाद् विपुत्र योग 270. मातृशापाद विपुत्र योग, 271. कुल देव दोषाद् विपुत्र योग, 272. सुतहीन योग, 273. पुत्र नाश योग, 274. पुत्रार्ति वा पुत्रसुखरहित योग, 275. वंशविच्छेद योग 276. विलंबतः प्रजा योग, 277. कष्टात् पुत्र प्राप्ति योग, 278. शीघ्र संतानोदय योग, 279. पुत्र प्राप्ति योग, 280. कन्या प्राप्ति योग, 281. अल्पापत्य योग, 282. बहुप्रजा योग 283. पुत्र पुत्री संख्या योग 284. प्रथम पुत्र किंवा् पुत्री योग, 285. औरस पुत्र योग 286. दत्तपुत्र योग, 287. दासी पुत्र योग, 288. क्रीतपुत्र योग, 289. पुत्रतः मित्रोदासिन्यता योग, 290. आज्ञानुवर्ति सुत योग, 291. पुत्रवाक्य वश्य योग,

षष्ट विवेक योग :- 292. जाति शत्रु योग, 293. सुतशत्रु योग, 294. मातृ वैश्योग, 295. पिता शत्रु योग, 296. शत्रु पीड़ा योग, 297. स्त्री शत्रु योग, 298. वैरिहंता तथा शत्रुनाशक योग, 299. व्रणपिटीकादि पीड़ा योग, 300. तापगंड योग, 301. जलगण्ड योग, 302. पित्त रोग

योग, 303. आम रोग योग, 304. क्षय रोग योग, 305. चौशत्यज जनित रोग योग, 306. हृदयरोग योग, 307. स्त्री रोग योग, 308. दीर्घ रोगी योग, 309. उदर रोगी योग, 310. दंत रोगी योग, 311. स्मर रोगी योग, 312. नाभी रोगी योग, 313. पाद रोग योग, 314. गुदा रोगी योग, 315. शस्त्रपीड़ा योग, 316. अपस्मारी योग, 317. तालु रोग योग, 318. गल नेत्र योग, 319. मस्तक रोग योग, 320. मुख रोग योग, 321. कर्ण रोग योग, 322. पीनस रोग योग, 323. पिशाच पीड़ा योग, 324. चतुर्थिक ज्वर रोग योग, 325. पेट वैकल्य योग, 326. तनुशोष गुल्म सयंग्रहणी योग, 327. अतिसार रोग योग, 328. अग्निविशार्दि तथा शीत रोग योग, 329. प्रमेह रोग योग, 330. वात रोग योग, 331. मूत्र कृच्छ रोग योग, 332. कुष्टी योग, 333. शूल रोगी योग, 334. पामान रोग योग, 335. अर्श रोग योग, 336. कफ रोग योग, 337. प्लीहा रोग योग, 338. दद्रु रोग योग, 339. जलभय योग, 340. सर्पभय योग, 341. चोर तथा अग्नि भय योग, 342. स्फोट अग्नि तथा खल भय योग, 343. श्वान भय योग, 344. शृंगालादि भय योग, 345. चतुष्पद भय योग, 346. मृग भय योग, 347. गजभय योग, 348. अश्वभय योग, 349. गेह शौचित्य भय योग, 350. क्षेय चिन्ता भय योग, 351. सोख्य चिन्ता भय योग, 352. वाहन भरण वस्त्र चिंता योग, 353. छत्र चामर चिंता योग, 354. पुत्र चिन्ता योग, 355. धी चिन्ता योग, 356. तात बंधु चिन्ता योग, 357. यात्रा चिन्ता योग, 358. मातुल सुख भाव योग,

सप्तम विवेक योग :- 359. युद्धारम्भत्पूर्व धृष्ट योग, 360. युद्धे जातय योग, 361. युद्ध पराजय योग, 362. युद्धोत्साही तथा युद्ध कुशल योग, 363. सेनापति योग, 364. व्यभिचारी योग, 365. नानास्त्री गमन योग, 366. मातृगमन योग, 367. दंपतिजार योग, 368. भगीनी गमन योग, 369. वंध्या वा रजस्वला संयोग योग, 370. वैश्यासंगी योग, 371. ब्राह्मणी संग योग, 372. गर्भिणी संग योग, 373. कृष्ण वर्ण कुब्जा संग योग, 374. गुरु तल्पग योग, 375. व्योधिक स्त्री गमन योग, 376. पशुगामी योग, 377. भगन चुंबनशील योग, 378. विवाह

संख्या योग, 379. एक विवाह योग, 380. द्विभार्या योग, 381. त्रिभार्या योग, 382. बहुदारा योग, 383. शतस्यीगामी योग, 384. सुन्दरस्त्री गामी योग, 385. व्योधिका स्त्री योग, 386. विकलांगी स्त्री योग, 387. कलावती स्त्री योग, 388. रोगार्त स्त्री योग, 389. पुनर्भू भार्या लाभ योग, 390. पतिव्रता स्त्री योग, 391.सुदारा योग, 392. विधवा स्त्री लाभ योग, 393. जारिणी स्त्री लाभ योग, 394. कुदारा योग, 395. दासी समास्त्री योग, 396. बंध्या स्त्री योग, 397. षंढा स्त्री योग, 398. स्वदारस्त योग, 399. कलवांतर भोगी योग, 400. बाल्ये विवाह योग, 401. विवाह वर्ष संख्या विशेष योग, 402. पति पत्नि ग्रह साम्यता, 403. दूर देशे विवाह योग, 404. स्थूलस्तनी भार्या योग, 405. दीर्घ भगवती भार्या योग, 406. हृस्व भगवती भार्या योग, 407. आर्द्र गुहावती स्त्री योग, 408. जायानाश योग, 409. पाशी से स्त्री भरण योग, 410. अग्नि से स्त्री मरण योग, 411. ऊपर से गिरने से स्त्री मरण योग, 412. गर्भ निमित भार्या नाश योग, 413. भार्या मरण संख्या योग, 414. दान नाश के वर्ष योग, 415. जायाहीन योग, 416. लोकापवादाद्भार्यात्याग योग, 417. भार्या को अग्नि दाह योग, 418. स्त्री शरीर पिशाच पीड़ा, 419. दार हन्ता योग, 420. कलत्र संपत योग, 421. कामिनि तौषकृत योग, 422. वाणिज्य योग ।

अष्टम विवेक योग :- 423. दीर्घायु योग, 424. मध्यायु योग, 425. अल्पायु योग, 426. 13 से 19 वर्ष आयु योग, 427. 20 वर्ष आयु योग, 428. 21 से 24 वर्ष आयु योग, 429. 25 से 28 वर्ष आयु योग, 430. 29 से 36 वर्ष आयु योग, 431. 37 से 54 वर्ष आयु योग, 432. 55 से 70 वर्ष आयु योग, 433. 70 से 100 वर्ष आयु योग, 434. 120 वर्ष आयु योग, 435. अमितायु योग, 436. युगांतायु योग, 437. असंख्य वर्षायु योग, 438. सिंह से मरण योग, 439. सर्पान्मृति योग, 440. शस्त्रान्मृति योग, 441. श्वदंशान्मरण योग, 442. राजगेहे मृत्यु योग, 443. कुमृत्यु योग, 444. तीर्थे वा पर्वते मरण योग, 445. कफादतिसारद्वा मरण योग, 446. सकलान्मरण योग, 447. कारागारे वा शूहलेन मरण योग, 448. शय्यायां वा अंतराले मरण योग,

449. विभूति रोगान्मरण योग, 450. उर्ध्व बंध्नान्मरणा योग, 451. विद्युत् पाततो मरण योग, 452. वाहनान्मरण योग 453. स्वदेशे विदेशे वा मार्गे मरण योग, 454. चौरान्मरण योग, 455. शिलाप्रपान्तामरण योग, 456. कूप पातानमरण योग, 457. स्वजनेन हनन योग, 458. जलोदरेण मरण योग, 459. रक्तात्वशोषरोगान्मरणयोग, 460. रज्जु अग्निपातान्मरण योग, 461. स्त्री हेतुक मरण योग, 462. शूल रोगेण मरण योग, 463. काष्टापि घात से मृत्यु योग, 464. कमिपातो मरण योग, 465. यंत्र पीडनात्मरण योग, 466. विष्ठा मध्येमरण योग, 467. प्रेतः परिभिर्भक्ष्यते योग, 468. शैल शिखराऽशिखिन कुडय पाततो मरण योग, 469. रणे तथा शत्रु कोपेन भरण योग, 470. व्रषभेण मरण योग, 471. वृक्षपातरो मरण योग, 472. व्याघ्रतों मरण योग, 473. शरेणं मरण योग, 474. विषेण मरण योग, 475. गजः मरण योग, 476. पत्नि सहगामिनी योग, 477. शुभ लोकाप्ति योग, 478. ब्रह्मसायुत्त योग, 479. विषघात योग, 480. विषाग्निघात्योग, 481. पाषाण धात योग, 482. काष्ठ पाषाण घात योग, 483. अग्नि घात योग, 484. जल घात योग, 485. वाहन भय योग, 486. भुजच्छेद योग, 487. कर छेद योग, 488. कर पाद छेद योग, 489. मस्तक छेद योग, 490. कर्ण छेद योग, 491. ब्रह्महत्यादि योग ।

नवम् विवेक योग :- 492. पुण्यवान् योग, 493. शंकरभक्ति योग, 494. पात योग, 495. सूर्य आदि योग, 496. गौरी, लक्ष्मी आदि देवी योग, 497. विष्णु तथा सात्विक देव तथा स्कंद भैरवादि देव भक्ति योग, 498. गुरु भक्ति योग; 499. यक्षिणी तथा प्रेताशिन्यादि भक्ति योग, 500. पर पीड़क देव भक्ति योग, 501. धर्माध्यक्ष योग, 502. कूप तड़ाग जीर्णोद्वार, 503. यज्ञकर्ता योग, 504. यज्ञ विघ्न योग, 505. यज्ञ कर्त्ता योग, 506. भाग्यहीन योग, 507. विदेश भाग्योदय योग, 508. स्वदेशे भाग्योदय योग, 509. भाग्यवान योग, 510. सर्वत्र भाग्योदय योग, 511. भ्रातसंबंधः भाग्योदय योग, 512. पुत्रतः भाग्योदय योग, 513. विवाहोत्तर भाग्योदय योग, 514. भाग्योदय काल योग, 515. गंगास्नान योग, 516. महायात्रा योग, 517. जल,

थल, वायुमार्ग महायात्रा योग, 518. जलपर्यटन योग, 519. आकाशपर्यटन (हवाई जहाज) मुसाफिरी योग, 520. प्रवाझकाल योग, 521. प्रवज्या योग, 522. प्रव्रज्या भ्रष्ट योग, 523. नवम भावे द्विग्रह योग, 524. नवम् भावे त्रिग्रह योग, 525. नवम् भावे चर्तुग्रह योग, 526. नवम् भावे विग्रह योग।

दशम विवेक योग :- 527. व्यापार योग, 528. मानी योग, 529. मान हीन योग, 530. कर्मादि बैकल्य योग, 531. सत्कीर्ति योग, 532. असत्कीर्ति योग, 533. क्रूर सोम्य आज्ञाकर्ता योग, 534. राजकार्य कर्त्ता योग, 535. कुल मुख्य तुल्य योग, 536. प्रतापी योग, 537. श्रीमान योग, 538. पितृ सुख योग, 539. पिता परस्त्री गामी योग, 540. पिता धूर्त योग, 541. पितृदुःख योग, 542. पितृसुखाल्प योग, 543. शीघ्र पितृ मरण योग, 544. मातृनिधन योग, 545. विवाहेपितृमृति योग, 546. जले पितृमृति योग, 547. अन्य देशे पितृमृति योग, 548. पितृ नदहन योग, 549. जन्मतः प्राक् पितृमरण योग, 550. पितृ मात्रादि निधन काल, 551. सिंहासनाप्ति योग, 552. नृप तुल्य योग, 553. राजाधिराज योग, 554. भूपति योग, 555. भूपति तथा मंत्रि योग, 556. राज योग काल, 557. राज योग भंग योग, 558. रवि चन्द्र योग, 559. रवि बुध योग, 560. रवि गुरु योग, 561. रवि शुक्र योग, 562. रवि शनि योग, 563. चन्द्र मंगल योग, 564. चन्द्र बुध योग, 565. चन्द्र गुरुयोग, 566. चन्द्र शुक्र योग , 567. चन्द्र शनि योग, 568. मंगल बुध योग, 569. मंगल गुरु योग, 570. मंगल शुक्र योग, 571. मंगल शनि योग, 572. बुध गुरु योग, 573. बुध शुक्र योग, 574. बुध शनि योग, 575. गुरु शुक्र योग, 576. गुरु शनि, 577. शुक्र शनि योग, 578. चन्द्र से दशवे द्विग्रह योग, 579. चन्द्र से दशम् त्रिग्रह योग, 580. चन्द्र से दशम चार ग्रह योग ।

एकादश विवेक योग :- 581. बहुलाभ योग 582. ससुराल से बहुधन लाभ योग, 583. वाहनवान योग, 584. वाहन सुख योग ।

द्वादश विवेक योग :- 585. हानि योग, 586. त्यागी योग, 587. दम्भाद्धर्मं परिग्रह योग,

588. दानशील योग, 589. दान प्राप्ति योग, 590. धर्मेदृढ़ बुद्धि योग, 591. अन्नदाता योग, 592. सदसब्द्यय योग, 593. धन संचय कर्ता योग, 594. ऋणदाता योग, 595. बन्धन योग।[1]

नाभस योग :-

1. यदि सभी ग्रह चर राशि में हो रज्जु योग
2. सभी ग्रह स्थिर राशि में हो तो मुशल योग
3. सभी ग्रह द्विस्वभाव राशि में हो तो नल योग होता ।

योगफल :-

1. रज्जु योग में उत्पन्न पुरुष भ्रमणशील, रुपवान, परदेश में रहने वाला, क्रूर और खल होता है ।
2. मुशल योग में उत्पन्न पुरुष, मान, ज्ञान, धन ऐश्वर्य से युक्त, राजा का प्रिय, प्रसिद्ध अनेक पुत्रों वाला और स्थिरचित वाला होता है ।
3. नाल योग के उत्पन्न पुरुषहीन और अधिक अंगों वाला, धनसचंय करने वाला, अत्यन्त चतुर, वधुओं का हितैषी, सुरूप होता है ।

उपरोक्त योगों में कोई भी मानक उदाहरण पर घटित नहीं होता ।

दलयोग :-

1. किसी भी तीन केन्द्रों में शुभ ग्रह हो तो माला योग होता है ।
2. यदि पाप ग्रह हो तो व्याल योग होता है । ये दोनों दल योग हैं ।

फल :- माला योग के उत्पन्न पुरुष नित्य सुखी, वाहन, वस्त्र योग से सम्पन्न, सुन्दर शरीर, अनेक स्त्रियों से युक्त होता है ।

उपरोक्त दोनों योग मानक उदाहरण पर घटि नहीं हो रहे है ।

---

1. "जातक तत्वम्", श्रीमन महादेव पाठक, रतलाम्, पेज 67 से 471 ।

आकृति योग :-

1. **गदा योग :-** यदि सभी ग्रह समीप के केन्द्रों में हो तो गदा योग होता है ।
2. **शकट योग :-** सभी ग्रह केवल लग्न और सप्तम में हो तो शकट योग होता है ।
3. **विहंग :-** सभी ग्रह दशम तथा चतुर्थ में हों तो विहग योग होता है ।
4. **शृंगाटक :-** सभी ग्रह लग्न, नवम तथा पंचम भाव में हो शृंगाटक योग होता है ।
5. **हल योग :-** सभी ग्रह 2, 6, 10; 3, 7, 11; 4, 8, 12 में हो तो हल योग होता है ।
6. **वज्र योग :-** शुभ ग्रह लग्न और सप्तम में हो तो और पाप ग्रह दशम और चतुर्थ भाव में हों तो वज्र योग होता है ।
7. **यव योग :-** 1, 7 में पाप ग्रह और 4, 10 में शुभ ग्रह हो तो यव योग होता है ।
8. **कमल योग :-** यदि सभी केन्द्रों में मिश्रित शुभ पाप ग्रह हो तो कमल योग होता है।
9. **वापी योग :-** यदि केन्द्र से भिन्न (पणफर) में सभी ग्रह हों तो वापी योग होता है ।
10. **यूप योग :-** सभी ग्रह लग्न के चौथे भाव के अन्दर हों तो यूप योग होता है ।
11. **शर योग :-** सभी ग्रह लग्न से , चौथे से सप्तम के अन्दर हों तो शर योग होता हैं।
12. **शक्ति योग :-** सभी ग्रह सप्तम से दशम के अन्दर हों तो शक्ति योग होता है।
13. **दण्ड योग :-** सभी ग्रह दशम से लग्न तक हों तो दण्ड योग होता है ।
14. **नौका योग :-** सभी ग्रह लग्न से सप्तम में हों तो नौका योग होता है ।
15. **कूट योग :-** सभी ग्रह चतुर्थ से दशम के अन्दर हों तो कूट योग होता है ।
16. **छत्र योग :-** सभी ग्रह सप्तम से लग्न प्रयन्त हों तो छत्र योग होता है ।
17. **चाप योग :-** सभी ग्रह दशम से चतुर्थ प्रयन्त हों तो चाप योग होता है ।
18. **अर्धचन्द्र चक्र :-** उपरोक्त बताये गये ग्रहों के अतिरिक्त ग्रह हों तो अर्धचन्द्र चक्र योग होता है ।
19. **चक्र योग :-** जैसे लग्न से ग्यारहवें भाव तक एक–एक भाव छोड़कर (1-3-5-7-9-11)

में ग्रह हो तो चक्र योग होता है ।

20. **समुद्र योग** :- फन भाव से बारह तक एक–एक स्थान छोड़कर (2-4-6-8-10-12) में हों तो समुद्र योग होता है ।

फल :-

1. **गदा योग** :- गदा योग में उत्पन्न पुरुष निरन्तर धन के लिये उद्योगी यज्ञ करने वाला, शास्त्र और संगीत में कुशल, धन, सर्वण, रत्न से युक्त होता है ।

2. **शकट योग** :- इस योग में उत्पन्न पुरुष रोगी, कुनरवी, मूर्ख, गाड़ी से जीविका चलाने वाला, मित्र और स्वजनों में हीन होता है ।

3. **विहंग योग** :- इस योग में उत्पन्न पुरुष भ्रमणशील, परतन्त्र, दूत, सूरत से जीविका चलाने वाला ढीठ और झगड़ालू होता है ।

4. **शृंगाटक योग** :- योग में उत्पन्न पुरुष, कलह प्रिय, झगड़ालू, सुखी, राजा का प्रिय, सुन्दर स्त्री से युक्त और स्त्री का द्वेषी होता है ।

5. **हलयोग** :- योग में उत्पन्न पुरुष बहुभौजी, दरिद्र, कृषि करने वाला, दुखी, उद्वेग से युक्त, बन्धु तथा मित्रों के आसन्त और दास होता है ।

6. **वज्रयोग** :- योग में उत्पन्न पुरुष आदि और अन्त बलय और वृद्धावस्था में सुखी, शूर, सुन्दर, निर्दय, भाग्यहीन होता है ।

7. **थव योग** :- योग मे उत्पन्न पुरुष, नियम, मंगल को करने वाला, आयु के मध्य में सुख, धन, पुत्र से युक्त, दाता और स्थिर चित्त होता है ।

8. **कमल योग** :- योग में उत्पन्न पुरुष धन–ऐश्वर्य, गुणों से युक्त, दीर्घायु, अत्यन्त कीर्तिमान, सैकड़ो शुभ कार्य करने वाला होता है ।

9. **वापी योग** :- योग में उत्पन्न पुरुष धन, समुंद्र में चतुर, स्थिर धन और संपत्ति से युक्त, पुत्रवान, नेत्र को सुख देने वाला, पदार्थो से युक्त राज होता है ।

10. **यूप योग** :- योग में उत्पन्न पुरुष, ज्ञानी, यज्ञकर्ता, स्त्री से युक्त, सत्युक्त, व्रत नियम में सयुंक्त और विशिष्ट व्यक्ति होता है ।

11. **शर योग** :- योग में उत्पन्न पुरुष, बाण बनाने वाला, आखेट के धन से सुखी, मांस खाने वाला, हिंसक, कुत्सित, शिल्प करने वाला होता है ।

12. **शक्ति योग** :- इस योग में उत्पन्न पुरुष दरिद्र, निष्फल, दुःखी, नीच, आलसी, दीर्घजीवी, झगड़ालू बुद्धि का और निपुण होता है ।

13. **दण्ड योग** :- योग में उत्पन्न पुरुष स्त्री–पुत्र से हीन, निर्धन, निर्लज्ज, अपने स्वजनों से त्यक्त पृथ्वी और नीचों का दास होता है ।

14. **नौका योग** :- इस योग में उत्पन्न पुरुष जल में उत्पन्न पदार्थो से जीविका चलाने वाला, बहुत भोजन करने वाला, प्रसिद्ध कीर्ति वाला, दुष्ट, कृपण, मलिन और लोभी होता है।

15. **कूट** :- योग में पुरुष झूठ बोलने वाला, पापी, वधिक, धूर्त, क्रूर, नित्य, झूठा, व्यापार करने वाला, पहाड़ और जंगलों में रहने वाला होता है ।

16. **छत्र योग** :- योग में उत्पन्न पुरुष अपने जनों को आश्रय देने वाला, दयावान, अनेक राजाओं का प्रिय, उत्तम, बुद्धि युक्त, प्रथम और अन्तिम अवस्था में सुखी, दीर्घायु होता है ।

17. **चाप** :- योग में उत्पन्न पुरुष झूठ बोलने वाला, जेलखाने का मालिक, चोर, धूर्त, जंगल का प्रेमी, भाग्यहीन और अवस्था के मध्य में सुखी होता है ।

18. **अर्धचन्द्र योग** :- योग में उत्पन्न पुरुष सुन्दर शरीर वाला, सेनापति, राजा का प्रिय, बली, मणि, सुवर्ण और आभूषण से युक्त होता है ।

19. **चक्र योग** :- योग में उत्पन्न पुरुष अनेक राजाओं से रत्नजड़ित मुकुटों से नमस्कार किया जाने वाला राजा होता है ।

20. **समुद्र योग** :- योग में उत्पन्न पुरुष रत्न एवं धन से समृद्ध, भोगयुक्त, जनप्रिय पुत्रवान, स्थिर धनवाला और सज्जन होता है ।

मानक उदाहरण उपरोक्त योगों में 14वां नौका योग पर घटित होगा, जल से उत्पन्न पदार्थों से जीविका चलाने वाला, बहुत भोजन करने वाला, प्रसिद्ध कीर्तिवाला, दुष्ट, कृपण, मलिन और लोभी होता है ।

संख्या योग :-

1 **वीणा योग** :- सभी ग्रह सात राशियों में हों तो वीणा योग होता है ।

2. **दामिनी** :- सभी ग्रह छः राशियों में हों तो दामिनी योग होता है ।

3. **पाश** :- सभी ग्रह पांच राशियों में हो तो पाश योग होता है ।

4. **केदार** :- सभी ग्रह चार राशियों में हो तो केदार योग होता है ।

5. **शूल** :- सभी ग्रह तीन राशियों में हो तो शूल योग होता है ।

6. **युग** :- सभी ग्रह दो राशियों में हो तो युग योग होता है ।

7. **गोल** :- सभी ग्रह एक ही राशि में हो तो गोल योग होता है ।

फल :-

1. **वीणा** :- योग में उत्पन्न पुरुष गीत, नाथ, बाजा का प्रेमी, निपुण, सुखी, धनी, नेता तथा अनेक नौकरों वाला होता है ।

2. **दामिनी** :- योग में उत्पन्न पुरुष नीति और धन से युक्त, प्रभु, प्रसिद्ध, अनेक पुत्र, रत्न से समृद्ध और धीर तथा पंडित होता है ।

3. **पाश** :- योग में उत्पन्न पुरुष, बंधन को भोगने वाला, कार्य में चतुर, प्रपंची, बहुत बोलने वाला, दुःशील और अनेक नौकरों से युक्त तथा परिवार वाला होता है ।

4. **केदार** :- योग में उत्पन्न पुरुष बहुतों का उपकारी, कृषिकर्ता, सत्यवादी, सुखी, चंचल और धनी होता है ।

5. **शूल** :- योग में उत्पन्न पुरुष बड़ा आलसी, निर्धन, हिंसक, जाति बहिष्कृत, शूरवीर, संग्राम में लब्धकीर्ति वाला होता है ।

6. **युग** :- योग में जन्म पाखण्डी, निर्धन, लोक में बहिष्कृत पुत्र, माता के धर्म से हीन होता है ।

7. **गोल योग** :- योग में विद्या से हीन, मलिन, हमेशा दुःखी और दीन होता है ।

उपरोक्त योगों में तीन नम्बर योग – पाश योग घटित हो रहा है । इस योग में उत्पन्न पुरुष बंधन को भोगने वाला, कार्य में चतुर, प्रपंची, बहुत बोलने वाला, दुःर्बल, अनेक नौकरों से युक्त तथा परिवार वाला होता है ।

अनेक योग :

गजकेसरी योग :-

केन्द्रस्थितेदेवगुरौ शशांकाद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति ।

दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्केनीचास्तिहीनैर्गजकेसरीति ।।[1]

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है, और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुए शुक्र–गुरु और बुध से देखा जाता हो तो गजकेसरी योग होता है ।

फल :- इस योग में उत्पन्न पुरुष धनी, मेधावी, गुणी एवं राजा का प्रिय करने वाला होता है ।

अमला योग :-

लग्नाद्वा चन्द्रलग्नाद्वा दशमें शुभसंयुते ।

योगाऽयममला नाम कीर्तिराचन्द्रतारकी ।।[2]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्री गणेश दत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन, वाराणसी । पेज 192 से 200 ।
2. वही, पेज 293 ।

जन्मलग्न से अथवा चन्द्रमा से दशम स्थान में केवल शुभग्रह हों तो अमला योग होता है ।

फल :- अमला योग में उत्पन्न पुरुष की कीर्त्ति जब तक चन्द्रमा आकाश में रहेगा तब तक रहती है और वह राजा से पूज्य, महाभोगी, दाता और बंधुओं का प्रिय होता है ।

शुभाशुभयोग :-

शुभाशुभाढ्ये यदि जन्मलग्ने शुभाशुभाख्यौ भवतस्तदानीम् ।

व्ययस्वगैः पापशुभैर्विलग्नात्पापाख्यसौम्यग्रहकर्त्तरी च ।।[1]

यदि लग्न में शुभग्रह युत हों तो शुभयोग और पापग्रह युत हों तो अशुभ योग होता है। भाव में पापग्रह हो तो पापकर्त्तरी और शुभग्रह हो तो शुभकर्त्तरी होती है ।

फल :- शुभ योग वा शुभ कर्त्तरी हो तो जातक बुद्धिमान, रुप–शील–गुण से युक्त होता है। पापग्रह से उत्पन्न योग हो तो जातककामी पापकर्म करने वाला होता है ।

पर्वतयोग :-

सौम्येषु केन्द्रगृहगेषु सपत्नरंध्रे शुद्धेऽथवा शुभयुते यदि पर्वतःस्यात् ।

लग्नान्त्यपौ यदि परस्परकेन्द्रयातौ मित्रेक्षितौ भवति पर्वतनामयोगः ।।[2]

यदि सातवें–आठवें भाव में कोई ग्रह न हो अथवा शुभग्रह से युत हो और केन्द्रों में शुभग्रह हो तो पर्वत योग होता है ।

फल :- लग्नेश ओर व्ययेश परस्पर केन्द्र में हों और मित्रग्रह से देखे जाते हों तो पर्वत योग में उत्पन्न पुरुष भाग्यवान, विद्वान और दाता होता है।

---

1. ''बृहत्पाराशर–होराशास्त्र'', श्री गणेश दत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी, पेज 193।
2. वही, पेज 193 ।

काहलयोग :-

अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबंधुनाथौ-

लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात् ।

कर्मेश्वरेण सहिते तु विलोकिते वा

स्वोच्चे स्वके सुखपतौ यदि काहलः स्यात् ।।[1]

गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हो और लग्नेश बली हो तो काहल योग होता है । यदि सुखेश अपने उच्च या अपनी राशि का होकर कर्मेश से युत हो तो काहल योग होता है ।

फल :- इस योग मे उत्पन्न पुरुष तेजस्वी, साहसी, मूर्ख, सेवा के बल से युक्त कुछ ग्रामों का स्वामी होता है ।

चामरयोग :-

लग्नेश्वरे केन्द्रगते स्वतुंगे जीवेक्षिते चामरनामयोगः ।

सौम्यद्वये लग्नगृहे कलत्रे नवास्पदे वा यदि चामरः स्यात् ।।[2]

लग्नेश अपनी उच्चराशि का होकर केन्द्र में हो और गुरु में देख जाता हो तो (चामर) योग होता है । यदि लग्न सप्तम वा नवम वा दशम में दो शुभग्रह हों तो (चामर) योग होता है ।

फल :- चामर योग में उत्पन्न पुरुष राजा से पूज्य, विद्वान, वक्ता, पंडित वा राजा, सर्वज्ञ, वेद–शास्त्र का अधिकारी तथा 70 वर्ष तक जीने वाला होता है ।

शङ्खयोग :-

अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ सुतशत्रुनाथो लग्नाधिपे बलयुते यदि शङ्खयोगः ।

लग्नाधिपे चगगनाधिपतौ चरस्थे भाग्याधिपेबलयुतेतु तथा वदन्दि ।।[3]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्री गणेश दत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी, पेज 194 ।
2. वही, पेज 194 ।
3. वही, पेज 194 ।

पंचमेष, षष्ठेश केन्द्र में हों, लग्नेश बलवान हों तो 'शंख' योग होता हैं । लग्नेश–कर्मेश दोनों चर राशि में हों, भाग्येश बली हो तो (शङ्ख) योग होता है ।

फल :- शङ्ख योग में उत्पन्न पुरुष भोगी, दयालु, स्त्री, पुत्र, धन और क्षेत्र से युक्त, पुण्य कर्म करने वाला, पंडित, सज्जन और 80 वर्ष तक जीने वाला होता है ।

भेरीयोग :-

स्वांत्योदयास्तभवनेषु वियच्चरेषु कर्माधिपे बलयुते यदि भेरियोगः ।

केन्द्रे गतेसुरगुरौ सितलग्ननाथौ भाग्येश्वरेबलयुते तु तथैव वाच्यम् ।।[1]

यदि 2, 12, 7 भाव में ग्रह हों और कर्मेश बली हों तो 'भेरी' योग होता है । भाग्येश बली हो, गुरु, शुक्र, लग्नेश केन्द्र में हों तो 'भेरी' योग होता है।

फल :- भेरी योग में उत्पन्न पुरुष दीर्घायु नीरोग, निर्भय, राजा, भूमि, धन, पुत्र, स्त्री से युक्त, प्रसिद्ध, आचारवान, सुख–पराक्रम से युक्त, निपुण और कुलीन होता है ।

मृदङ्गयोग :-

उच्चग्रहांशकपती यदि कोणकेन्द्र
तुङ्गस्वकीयभवनोपगते बलाढ्ये ।
लग्नाधिपे बलयुते तु मृदंगयोगः
कल्याणरूपनृपतुल्ययशः प्रदः स्यात् ।।[2]

जन्मकाल में जो ग्रह उच्चराशि का हो उसके नवांश का स्वामी यदि केन्द्र, कोण में अपने उच्च स्वगृह में हो, बली हो और लग्नेश बली हो तो 'मृदंग' योग होता है।

फल :- इस योग में उत्पन्न पुरुष कल्याणकारी, राजा के समान यश वाला होता है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्री गणेश दत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी, पेज 195।
2. वही, पेज 195।

श्रीनाथयोग :-

कामेश्वरे कर्मगते स्वतुंगे कर्माधिपे भाग्यपसंयुते च ।

श्रीनाथयोगः शुभदस्तदानीं जातो नरः शक्रसमो नृपालः ।।[1]

सप्तमेश दशमस्थान में हो, अपनी उच्चराशि में कर्मेश भाग्येश के साथ हो तो 'श्रीनाथ' योग होता है ।

फल :- इसमें उत्पन्न पुरुष इन्द्र के समान राजा होता है ।

शारद योग :-

योगः शारदसंज्ञक सुतगते कर्माधिपे चन्द्रजे

केन्द्रस्थे दिननायके निजगृहप्राप्तेऽतिवीर्यान्विते ।

चन्द्रत्कोणगते पुरन्दरगुरौ सौम्यत्रिकाणे कुजे

लाभे वा यदि देवमन्त्रिणि बुधात्तच्छारदासंज्ञकः ।।[2]

यदि पांचवे भाव में कर्मेश हो, बुध केन्द में हो और सूर्य आनी राशि में अत्यन्त बली हो, अथवा चन्द्रमा से 9, 5 भाव में गुरु हो, बुध से त्रिकोण में भौम हो, बुध से लाभ में भाव में गुरु हो तो 'शारद' योग होता है ।

फल :- शारद योग में उत्पन्न पुरुष विद्या का विनोदी, कामी, शीलवान्, तपस्वी, अपने धर्म मे निरत, स्त्री, पुत्र, बन्धु के सुख से युक्त, राजा का प्रिय, गुरु, ब्राह्मण, देवता का भक्त होता है।

मत्स्य योग :-

लग्नधर्मगते पापे पंचमे सदसद्युते

चतुरस्रगते पापे योगोऽयं मत्स्यसंज्ञकः ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्री गणेश दत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी, पेज 195।
2. वही, पेज 196।

कालज्ञः करुणासिन्धुर्गुणधीबलरूपवान् ।

यशोविद्यातपस्वी च मत्स्ययोगसमुभ्दवः ।।[1]

लग्न से नवमभाव में पापग्रह हो, पाँचवे भाव में शुभग्रह–पापग्रह दोनों हों, चौथे या आठवें भाव में पापग्रह हों तो 'मत्स्य' योग होता है ।

फल :- मत्स्य योग में उत्पन्न पुरुष ज्योतिषी, करुणा की मूर्ति, गुणी, विद्वान, बली, रूपवान, यशस्वी, तथा तपस्वी होता है ।

कूर्मयोग :-

कलत्रपुत्रारिगृहेषु सौम्याः स्वतुङ्गमित्रांशकराशियाताः ।

तृतीयलाभोदयगास्तवसौम्य मित्रोच्चसंस्था यदिकूर्मयोगः ।।[2]

अपने उच्च वा मित्रांश वा अपनी राशि में शुभग्रह 7, 5, 6 भाव में हो और अपने मित्र वा उच्च की राशि में गये हुए पापग्रह 3, 11, 1 भाव में हो तो कूर्म योग होता है ।

फल :- कूर्मयोग में उत्पन्न पुरुष प्रसिद्ध कीर्त्तिवाला, राज्यभोग करने वाला, धार्मिक, सात्त्विक, धीर, सुखी, वाणी से उपकार करनेवाला अथवा राजा होता है ।

खङ्ग योग :-

भाग्येशे धनभावस्थे धनेशे भाग्यराशिगे ।

लग्नेशे केन्द्रकोणस्थे खङ्गयोग इतीरितः ।।[3]

भाग्येश धनभाव में हो और धनेश भाग्यभाव में हो और लग्नेश केन्द्र कोण में हो तो 'खङ्ग योग' होता है ।

फल :- खङ्ग योग में उत्पन्न पुरुष वेद के अर्थ को जाननेवाला, शास्त्र तथा समस्त आगम शास्त्र के तत्व को जानने वाला, बुद्धिमान, प्रतापी, बलवान, सुखी, मत्सरता से रहित, अपने

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्री गणेश दत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी, पेज 196।
2. वही, पेज 197।
3. वही, पेज 197।

पराक्रम से श्रेष्ठ, कुशल और कृतज्ञ होता है ।

लक्ष्मी योग :-

केन्द्रमूलत्रिकोणस्थे भाग्येशे परमोच्चगे ।

लग्नाधिपे बलाढ्ये च लक्ष्मीयोग इतीरितः ।।[1]

भाग्येश अपने परम उच्च में होकर केन्द्र (1, 4, 7, 10) वा अपने मूलत्रिकोण राशि में हो और लग्नेश बलवान हो तो 'लक्ष्मी योग' होता है ।

फल :- लक्ष्मी योग में उत्पन्न पुरुष गुणों से युक्त, अनेक देशों का स्वामी, विद्या तथा महत्कीर्ति से युक्त, कामदेव के समान स्वरूप, सभी दिशाओं में प्रसिद्ध, राजाओं का राजा और अनेक स्त्री–पुत्रों से युक्त होता है ।

कुसुमयोग :-

स्थिरलग्ने भृगौ केन्द्रे त्रिकोणेन्दौ शुभेतरे ।

मानस्थानगते सौरे योगोऽयं कुसुमो भवेत् ।।[2]

स्थिर लग्न (2, 5, 8, 11) में जन्म हो और शुक्र केन्द्र में हो, चन्द्रमा 5वें भाव में होर 10वें स्थान में शनि हो तो 'कुसुम' योग होता है ।

फल :- कुसुम योग में उत्पन्न पुरुष दाता, राजाओं से वंद्य, भोगी, उत्तम–कुल में उत्पन्न, राजाओं में मुख्य, संसार में कीर्त्तियुक्त, प्रतापी और राजा होता है ।

पारिजात योग :-

विलग्ननाथस्थितराशिनाथः स्थानेशराशीशतदंशनाथः ।

केन्द्रत्रिकोणायगतो यदि स्यात्स्वतुङ्गो वा यदि पारिजातः ।।[3]

लग्नेश जिस राशि में हो, उसका स्वामी जिस राशि में हो, उसका स्वामी वा उनके

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्री गणेश दत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी, पेज 197।

2. वही, पेज 197।

3. वही, पेज 197।

नवांश का स्वामी यदि केन्द्र, त्रिकोण, लाभ स्थान में अथवा अपनी उच्चराशि में हो तो 'पारिजात' योग होता है ।

फल :- पारिजात योग में उत्पन्न पुरुष मध्य और अन्तिम अवस्था में सुखी, राजा से वंदनीय, युद्धप्रिय, हाथी–घोड़े से युक्त, अपने धर्म–कर्म में रत, दयालु होता है ।

कलानिधि योग :-

द्वितीये पंचमे जीवे बुध - शुक्र - युतेक्षिते ।

क्षेत्रे तयोर्वा संप्राप्ते योगः स्यात्स कलानिधिः ।।[1]

दूसरे या पाँचवे स्थान में गुरु हो, बुध–शुक्र से युत वा दृष्ट हों अथवा इन्हीं की राशि में हों तो कलानिधि योग होता है ।

फल :- 'कलानिधि' योग में उत्पन्न पुरुष कामी, सुन्दर, गुणों से युक्त, राजाओं से पूज्याचरण वाला, सेना, घोड़ा, मतवाले हाथी, शंख, भेरी आदि बाजाओं से युक्त, रोग, भय और शत्रु से रहित होता है ।

लग्नाधियोग :-

लग्नाच्च दाराष्टमगेहसंस्थैः शुभैर्न पापग्रहयोगदृष्टैः ।

लग्नाधियोगो हि तथा प्रसिद्धः पापै सुखस्थानविवर्जितैश्च ।।[2]

लग्न से सातवें, आठवें भाव में शुभग्रह पापग्रह से दृष्ट युत न हों ओर चौथे भाव में पापग्रह न हों तो 'लग्नाधियोग' होता है ।

फल :- लग्नाधि योग में उत्पन्न जातक अनेक शास्त्रों को बनाने वाला, विद्वान, नम्र, सेनाधिकारी, मुख्यतः निष्कपट महात्मा और संसार में यश, धन और गुण से प्रसिद्ध होता है।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्री गणेश दत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी, पेज 199।
2. वही, पेज 199।

पुनः चन्द्र योग :-

सहस्ररश्मितश्चन्द्र कंटकादिगते सति ।
न्यूनमध्यवरिष्ठानि धनधीनैपुणानि च ।।
स्वांशे वा स्वाधिमित्रांशे स्थितो चेद्दिवसे शशी ।
गुरुणा दृश्यते तत्र जातो वित्तसुखान्वितः ।।
स्वाधिमित्रांशगश्चद्रो दृष्टो दानवमन्त्रिणा ।
निशासु कुरुते लक्ष्मीं छत्रध्वजसमाकुलम् ।
विपर्यस्थे तु शीतांशौ जायतेऽल्पधना नराः ।।[1]

यदि सूर्य से चन्द्रमा केन्द्र में हो तो जातक को धन, बुद्धि और निपुणता अल्प होती है। चन्द्रमा पणफर में हो तो धन, बुद्धि और निपुणता मध्यम होती है और चन्द्रमा आपोक्लिम में हो तो धन आदि उत्तम होते हैं । यदि दिन में जन्म हो तो और चन्द्रमा गुरु से देखा जाता हुआ अपने नवांश में वा अधिमित्र के अंश में हो तो जातक धनी और सुखी होता है । रात्रि का जन्म हो और चन्द्रमा अपने अधिमित्रांश में होकर शुक्र से देखा जाता हो तो लक्ष्मी, छत्र, ध्वज से युक्त मनुष्य होता है। इसके विपरीत चन्द्रमा हो तो अल्प धनी होता है ।

चन्द्राधियोग :-

शशिनः सौम्याः षष्ठे द्यूने वा निधनसंस्थिते ।
स्यादधियोगो जाताः सौम्यैः सबलैर्धराधीशः ।
मध्यबलैर्मन्त्री स्यादधमबलैः सैन्यनायकः ।।
चन्द्राद्वृद्धिगतैः सौम्यैः धर्मशीलो महाधनी ।
द्वाभ्यां समोऽल्पवसुमानेकेन परिकीर्त्तितः ।
चन्द्रल्लग्नाद्ग्रहाभावे दरिद्रो दुःखितो भवेत् ।।[2]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्री गणेश दत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी, पेज 199।
2. वही, पेज 200।

चन्द्रमा से शुभग्रह 6, 7, 8 भाव में हो तो 'अधियोग' होता है । यदि शुभग्रह बली हों तो अधियोग में उत्पन्न जातक राजा होता है । मध्यम बली हों तो मंत्री, अधम बली हो तो सेनानायक होता है । चन्द्रमा से (3, 6, 11) भाव में शुभग्रह हों तो जातक धर्मशील, महाधनी होता है । दो शुभ ग्रह हो तो समधनी और एक शुभग्रह हो तो अल्पधनी होता है । यदि चन्द्रमा से वा लग्न से उक्त स्थानों में ग्रह न हों तो दरिद्र होता है ।

धनयोग :-

1. पांचवे भाव में शुक्र की राशि (2, 7) हो और उसे शुक्र देखता हो तथा एकादश में शनि तो बहुधन का स्वामी होता है ।
2. पांचवे भाव में बुध की राशि (3, 6) हो और उसमें बुध युत हो तथा एकादश भाव में चन्द्रमा, भौम हो तो बहुत द्रव्य का स्वामी होता है ।
3. पांचवे भाव में शनि की राशि (10, 11) हो और उसमें शनि युत हो तथा एकादशभाव में बुध हो तो अनेक द्रव्य का स्वामी होता है ।
4. पांचवे भाव में सूर्य की राशि (5) हो और उसमें सूर्य हो तथा लाभभाव में रवि—चन्द्रमा हों तो बहुत द्रव्य का स्वामी होता है ।
5. पांचवें भाव में शनि की राशि (10, 11) हो और शनि युत हो तथा लाभ में भौम हों तो बहुत द्रव्य का स्वामी होता है ।
6. पांचवें भाव में गुरु की राशि (9, 12) हो और उसमें गुरु युत हो और लाभ भाव में चन्द्रमा, भौम हों तो वह बहुत द्रव्य का स्वामी होता है ।
7. सूर्य की राशि जन्मलग्न हो और सूर्य युत हो और मंगल गुरु से युत वा दृष्ट हो तो धनी होता है ।
8. चन्द्रमा की राशि लग्न में हो और चन्द्रमा से युत हो और गुरु भौम से युतदृष्ट हो तो धनी होता है ।

9. मंगल की राशि लग्न में हो और उसमें भौमयुत हो और बुध, शुक्र, शनि से दृष्ट युत हो तो धनी होता है।

10. गुरु की राशि लग्न में हो और उसमें गुरु युत हो और बुध, भौम से दृष्टयुत हो तो धनी होता है ।

11. बुध की राशि लग्न में हो और उसमें बुध युक्त हो और शनि, शुक्र से युत दृष्ट हो तो धनी होता है ।

12. शुक्र की राशि लग्न में हो और शुक्र युत हो और शनि बुध से युत दृष्ट हो तो धनी होता है ।

13. जो–जो ग्रह भाग्येश, पंचमेश से युत दृष्ट होते हैं – वे अपने दशा–अन्तर में शुभ फलद होते हैं और जो अष्टमेश, षष्ठेश और व्ययेश से युत होते हैं वे तथा मारकेश अपने समय में दुःखद होते हैं ।[1]

पुनः राजयोग :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", मूल ग्रन्थ पूर्वाखण्ड अध्याय 25 श्लोक 48 से 87 तक के राजयोग दिये हैं । जो कि निम्न प्रकार से हैं :–

ग्रहों तथा लग्नों का अंश के नामानुसार ही फल करता है । इन अंश युक्त में जिसका जन्म होता है अथवा जिसके जन्म में चन्द्रमा अपने ही अंश में हो उसी जातक के लिए ये योग सफल हैं । पूर्ण फल या न्यून फल ग्रह के बलाबल के अनुसार जानना ।

1. **राजचिन्ह योग :-** आत्मकारक से शुक्र और चन्द्रमा चौथे भाव में हो, वह जातक राजचिन्ह युक्त होगा । उसके महल पर ध्वजा अथवा दुदंभी (नगाड़ा आदि) वाद्य आदि रहते हैं । उपर्युक सभी योगों का फल देश, काल, परिस्थिति, पात्र आदि का विचार करके जो और जैसा फल सम्भव हो वैसा ही फल का निर्देश करना चाहिए ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्री गणेश दत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन, वाराणसी, पेज 212-213।

2. **बुद्धियोग :-** कारक लग्न तथा आरूढ लग्न 3, 6 ग्रह हों कारक लग्न को देखते हों, तथा चतुर्थेश भी देखता हो तो बालक तीव्रबुद्धि और चतुर होता है । तथा तृतीयेश भी कारक लग्न तथा आरूढ लग्न को देखते हों तो भी बालक बुद्धिमान, शास्त्रवेत्ता, कवि और हर काम मे चतुर होता है ।

3. **सुखयोग :-** जन्मलग्न तथा कारकलग्न से चतुर्थ भाव में ग्रह हों, और लग्न तथा कारक को देखते हों तो जातक सुखी होता है ।

4. **सेनाधीश योग :-** कारकलग्न या आरूढलग्न से तथा जन्मलग्न या सप्तमभाव से 3, 6 भाव में पापग्रह हों जो जातक सेनापति होता है ।

5. **प्रधानमन्त्री योग :-** लग्न (जन्मलग्न) से दशमेश को अमात्यकारक स्थितराशि देखता हो या युक्त हो तथा अमात्य कारक से भी युत दृष्ट हो तो प्रधानमन्त्री होता है। अमात्यकारक दशम भाव से या लाभ में हो या देखता हो किन्तु पापदृष्टि रहित हो तो प्रधानमंत्री होता है और कुल में भी प्रधान होता है ।

6. **सेनापति योग :-** अमात्य कारक से कारकेन्द्र (आत्मकारक) राशिनाथ (राशिस्वामी) युत हो तो बाल अवस्था से ही तीव्र बुद्धि सम्पन्न तथा सेनापति होता है ।

7. **वृद्धावस्था में प्रधानमंत्री योग :-** अमात्यकारक स्वगृही हो या दशमभाव में हो तो वृद्धावस्था में प्रधानमंत्री होता है । इस योग में या तो क्रम से भाग्यवृद्धि हो या केवल नाम मात्र का राजा हो ।

8. **राजयोग :-** पंचमभाव से कारकलग्न सप्तमभाव में नवमभाव में हो तो राजयोग होता है । इस योग में उत्पन्न हुआ विख्यात और विजयी होता है ।

9. **पुनः प्रधानमंत्री योग :-** आत्मकारक से भाग्येश केन्द्र या त्रिकोण स्थान में हो अथवा उच्चराशि में हो भाग्येशसे युत अथवा दृष्ट हो तो प्रधानमंत्री होता है।

10. **पुनः वृद्धावस्था में प्रधानमंत्री योग :-** कारकभाव कुण्डली में अमात्यकारक राशि का

स्वामी लग्न में हो अथवा अमात्यकारक से युक्त या दृष्ट हो तो वृद्धावस्था में प्रधानमंत्री होता है ।

11. **मंत्री योग :-** अमात्यकारक शुभग्रह युक्त होकर पंचम भाव या सप्तम भाव में हो तो मंत्री होता है । यह योग जिस कारक के साथ हो उस जातक को वही पद प्राप्त होता है।

12. **मंत्री समान योग :-** बलवान् पापीग्रह पंचम या सप्तम भाव में हो और अमात्यकारक से युत या दृष्ट हो तो भी मंत्री समान होता है ।

13. **पुनः राजयोग :-** भाग्यस्थान का आरूढ पद लग्नगत हो अथवा अमात्यकारक से नवमभाव में हो तो राजयोग कारक है ।

14. **राजलाभ योग :-** लाभेश लाभस्थान में हो, पापदृष्टिरहित हो तथा आत्मकारक शुभग्रह युक्त हो तो राजा से लाभ होता है ।

15. **राजभोग योग :-** आत्मकारक शुभराशि में या शुभग्रह अथवा शुभदृष्टि हो और यह योग धनु लग्न में अथ्वा धनुलग्न के आरूढ़ स्थान में हो तो राजभोगी होता है ।

16. **रसायन सिद्धि योग :-**

i) आत्मकारक अथवा नवमेश अपने नवांश में हो या वर्गोत्तमी हो तथा ऐसा होकर केन्द्रस्थानों में हो या दशमभाव के आरूढ़पद में हो तो रसायन सिद्धि होती है।

ii) आत्मकारक कारकलग्न में हो, धनेश स्वगृही या उच्च का हो तो रसायनी होता है ।

iii) नवमेश तथा दशमेश उच्च के होकर या वर्गोत्तमी होकर नवम, पंचम या लाभस्थान में हो तो राज्यप्राप्ति या रसायन सिद्धि होती है ।

iv) आत्मकारक का स्वामी मूलत्रिकोणी होकर लग्न में हो तथा पंचमेश से युक्त हो तो कीर्ति भी होती है और रसायन भी सिद्ध होती है ।

v) नवमेश नवम या लाभस्थ हो तथा पंचमेश भी पंचमभाव में हो और आत्मकारक से युक्त या दृष्ट हो तो इच्छानुसार धन की प्राप्ति होती है ।

vi) आत्मकारक का स्वामी स्वोच्च, मूलत्रिकोणी और शुभस्थान में स्थित हो तो निरंतर सुखी और पारे की भस्म के रसायन का ज्ञाता हो ।

vii) सुखेश दशमस्थान में हो एवं दशमेश सुखभाव में लग्न और कारक को देखते हों तो राजवैद्य और सन्मानी होता है ।

viii) जिसके दशमेश नवमभाव में हो और सुखेश पंचमभाव में हो अथवा नवमेश दशम में और पंचमेश चतुर्थ में हो तो उद्योग करने से सुवर्ण सिद्धि होती है ।

ix) बृहस्पति कारक में या लग्न में उच्चादि राशि का होकर स्थित हो, और मंगल का नवांश अष्टमभाव में हो, सूर्य तथा सुखेश कालांशक में हों तो रसायन सिद्धि होती है ।

x) बुध के नवांश 'अर्धयाम' हो तो अपने देश से ही सिद्धि प्राप्त होती है ।

xi) गुलिक लग्न में या कारकांश में आत्मकारक स्थित हो और पूर्ण चन्द्र दृष्ट हो तो चोरी आदिक्नीतिमान अथवा चोर होता है ।

xii) आत्मकारक का नवांश – गुलिक (शन्यांश) में हो और किसी से युक्त अथवा दृष्ट हो या बुध की दृष्टि हो तो अंडवृद्धि होती है ।

xiii) कारकांश में केतु हो सूर्य, चन्द्र से दृष्ट हो तथा बलहीन हो तो अंडवृद्धि होती है ।

xiv) कारकांश में केतु बुध तथा शुक्रदृष्ट हो तो राजकुल में दासी का पुत्र होता है।

xv) कारकांश में केतु, शुक्र, सूर्य दृष्ट हो तो भी दासी पुत्र होता है ।[1]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 25 श्लोक 76 से 87, खेमराज श्रीकृष्ण दास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।

प्राचीन काल में महादेव ने कहा था, यह शास्त्र अपने शिष्य या पुत्र को देना चाहिए। जिस किसी को तथा कुपुत्र और कुशिष्य को भी नहीं देना चाहिए । यह अतिगुप्त शास्त्र भगवान् शंकर की कृपा से प्राप्त हुआ है ।[1]

दरिद्रयोग :-

1. जन्म लग्नेश बारहवें भाव में और व्ययेश लग्न में हो, मारकेश से युत दृष्ट हो तो मनुष्य निर्धन होता है ।
2. लग्नेश छठे भाव में हो और षष्ठेश लग्न में हो और लग्नेश मारकेश से दृष्ट हो तो निर्धन होता है ।
3. लग्न और चन्द्रमा केतु से युक्त हो तथा लग्नेश आठवें भाव में हो, मारकेश से युत दृष्ट हो तो मनुष्य निर्धन होता है ।
4. लग्नेश पापग्रह से युत होकर 6, 8, 12 भाव में गया हो मारकेश से युत दृष्ट हो तो राजबालक होकर भी निर्धन होता है ।
5. लग्नेश 6, 8, 12 भावों के स्वामी से युक्त होकर पापग्रह से दृष्ट होकर शनि से भी युत हो तथा शुभग्रह से न दृष्ट हो तो मनुष्य दरिद्र होता है ।
6. पंचमेश और धर्मेश क्रम से 6, 12 भाव में हों और मारकेश से देखे जाते हों तो जातक निर्धन होता है ।
7. कर्मेश और नवमेश के अतिरिक्त अन्य पापग्रह लग्न में हो और मारकेश से युत दृष्ट हों तो जातक निर्धन होता है ।
8. जो भावेश 3, 8, 12 में स्थित हो और जिस भाव में 6, 8, 12 के स्वामी हों, पापग्रह वा शनि से दृष्ट हों तो जातक दुःखी, चंचल और दरिद्र होता है ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड अध्याय 25 श्लोक 216, खेमराज श्रीकृष्ण दास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।

9. चन्द्रमा के नवांश का स्वामी मारकेश से युत हो अथवा मारक स्थान में हो तो जातक निर्धन होता हे ।

10. लग्नेश के नवाशं को स्वामी 12, 6, 8 भाव में हो और मारकेश से युत दृष्ट हो तो जातक निर्धन होता है ।

11. शुभग्रह की राशि में पापग्रह और पापग्रह की राशि में शुभग्रह हो तो जातक को धन और अन्न, दोनो का कष्ट होता है ।

12. कारक से वा लग्न से 8, 12 पें भाव को कारक और लग्नेश न देखते हों तो जातक दरिद्र होता है ।

13. लग्न वा कारक से 12वें भाव पर लग्नेश वा कारक की दृष्टि हो जातक अधिक व्यय करने वाला होता है।

14. जो जो ग्रह त्रिकोणेश से युत दृष्ट न होकर त्रिकेश 6, 8, 12 से युत हों और मारकेश से दृष्ट हों वे अपनी दशा में दुःखदायी होते हैं ।[1]

दरिद्रभंगयोगा :-

1. धन भाव में भौम–चन्द्रमा धननाशक होते हैं, किन्तु बुध से देखे जाते हों तो महाधनी होता है एवं शनि हो तो भी महाधनी होता है ।

2. दूसरे भाव में रवि हो और शनि से देखा जाता हो तो दरिद्र होता है, किन्तु शनि न देखता हो तो महाधनी होती है ।

3. धनभाव में शुभग्रह हों तो बहुत धन होता है । किंतु उसी भाव में गुरु हों और बुध देखता हो तो सर्वस्व का नाश होता है, क्रूरग्रह आदि के योग से जातक को दरिद्रयोग होता है ।[2]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्री गणेश दत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी, पेज 214-215।

2. वही, पेज 218-219।

बंधन योग :-

पश्चाल्लग्नात्कारकाद्वा यदा वा वित्तद्वादशे ।

पंचमे नवमे वापि तथा षष्ठेपि द्वादशे ।।

तृतीयैकादशे विप्र चतुर्थे दशमेपि वा ।

ग्रहसाम्ये तथा विप्र एकमेकं द्वयं ।।

त्रयं त्रयं तिष्ठेदिति रीत्या नभश्चराः ।

वित्ते द्वौ द्वादशै दौ च तथा स्याच्च त्रये त्रयम् ।।

इति क्रमेण साम्येन बंधकारक उच्यते ।

श्रृंखलाबंधयोगोऽपि जायते द्विजसत्तम ।।

राशिनां राशिना थानां शुभसंबधके द्विज ।

तदा निरोधः संजातस्तनुपीडा विधीयते ।।

द्वादशे द्वितये वापि त्रिकोणे रिष्फषष्ठगे ।

लाभे त्रये व्योमतुर्ये पापा वै बंधकारकाः ।।[1]

लग्न से या कारक लग्न से 2, 12 में 5, 9 में 3, 11 में 4, 10 में बराबर 2 ग्रह हो । अर्थात् 1, 1 या 2, 2 अथवा 3, 3 ग्रह हों । अथवा 2, 12 में 2, 2 और स्थानों में 3, 3 ग्रह हों तो बन्धन (कैद) होने का योग है । भाव तथा भावेशों का शुभसम्बंध हो तो कैद तो नहीं तो परन्तु शरीरपीड़ा अवश्य हो तथा 2, 12 में 5, 9 में 6, 12 में और 3, 11 तथा 4, 10 में पापग्रह हों तो बन्धन कारक होते हैं ।

यह योग अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण है । यह योग सैंकड़ो बार घटित होते देखा गया है ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", खेमराज श्रीकृष्ण दास, वेकंटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई, पेज 218-219 ।

पञ्चमहापुरुष योग :- यह योग पांच ग्रह अर्थात् मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि में से कोई एक ग्रह उच्च, स्वगृही अथवा मूलत्रिकोण होकर लग्न से केन्द्र में बैठा रहने पांच प्रकार को महापुरुष योग होता है । और यदि वह पूर्ण बली हो तो फल अति उत्कृष्ट होता है ।

रूचक :- यदि उच्च, मूलत्रिकोण अथवा स्वक्षेत्र का मंगल लग्न से केन्द्र में बैठा हो तो रूचक योग होता है । ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर कोमल और कान्ति युक्त आकृति का होता है । उसके शरीर के अंग सुडौल, भृकुटी सुन्दर, काले केश, ग्रीवा शंख के समान, रक्त–श्याम वर्ण, कमर पतली और बड़ा बलवान होता है । ऐसा जातक अत्यन्त साहसी, शूरवीर, शत्रुओं पर विजय पाने वाला, कीर्तिमान, शीलवान और धनवान होता है । ऐसा जातक विद्या में अभिरुचि रखने वाला, मंत्रादि का प्रयोग करने वाला, देवताओं में प्रेम रखनेवाला और गुरुजनों के प्रति नम्र होता है । साधारण रूपसे उसकी आयु 70 वर्ष की होती है । उसके शरीर में शस्त्र अथवा अग्नि से कोई चिन्ह पड़ जाता है । और उसकी मृत्यु किसी देवस्थान में होती है ।

भद्र :- यदि बुध उच्च, स्वक्षेत्र अथवा मूलत्रिकोण का लग्न से केन्द्र में हो तो भद्र योग होता है । ऐसे योग वाले जातक का सिर सिंह के समान, चाल हस्ती के समान, उरु और वक्षस्थल ऊंचे एवं पुष्ट, हाथ–पैर लम्बे और मोटे, सजीली कुक्षि और आकृति में लम्बा, तलहथी एवं तलवे सुन्दर गुलाबी रंग के कमल–पुष्प के ऐसे होते हैं । ऐसा जातक अत्यन्त मधुरभाषी, विद्वान, बुद्धिमान, सत्कारी, धर्मात्मा, परोपकारी, स्वतन्त्र एवं रत्नों को तराजू से तौलने वाला होता है । अर्थात् महाधनी तथा कीर्ति एवं यश की प्राप्ति करने वाला होता है । साधारण रूप से इसकी आयु 80 वर्ष की होती है ।

हंस :- बृहस्पति उच्च, स्वक्षेत्र अथवा मूलत्रिकोण का यदि लग्न से केन्द्र में बैठा हो तो हंस योग होता है । ऐसे योग वाला जातक आकृति में खूब लम्बा, सुन्दर पावं, रक्त वर्ण की नखें और मधुवर्ण नेत्र वाला होता है । यह भी लिखा है कि ऐसा जातक 86 अंगुल ऊंचा होता

है । ऐसा जातक विद्या में निपुण, शास्त्रों को जानने वाला, सुखी, बड़े लोगों से आदरणीय, बहुगुण सम्पन्न, साधुप्रकृति, आचारवान और मनमोहिनी कान्ति का होता है । ऐसे जातक की स्त्री सुन्दर होती है और जातक अतिकामी होता है । ऐसे जातक की जलाशय में विशेष प्रीति होती है । वह अनेकानेक स्थानों पर अधिकार रखता है । ऐसे जातक की मृत्यु किसी जंगल में होती है । ग्रन्थान्तर में लिखा है कि यदि हंस योगवाले का जन्मलग्न कर्क, मकर, कुम्भ अथवा मीन राशि गत हो तो उस योग की चिहली–पुच्छ होता है अर्थात फल बहुत ही उत्कृष्ट होती है । "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं० देवचन्द्र झा के ग्रन्थ में आयु 100 वर्ष तथा "ज्योतिष रत्नाकार" ने 82 तथा 86 वर्ष आयु कही है ।

4. **मालव्य :-** शुक्र, उच्च, स्वक्षेत्र अथवा मूलत्रिकोण का यदि लग्न से केन्द्र में हो तो मालव्य योग होता है । ऐसे योग वाले जातक की चेष्टा और नेत्र स्त्रियों के सदृश सुन्दर, शरीर को मध्या–भाग किञ्चित दुबला, अर्थात् पतली कमर, नाक ऊंची, बलवान, गुणवान, शास्त्रों के भाव जानने वाला, तेजस्वी, धनी तथा स्त्री, पुत्र एवं वाहन आदि से सम्पन्न होता है । इसकी स्त्री हस्तिनी अर्थात गुणवती होती है । ऐसा जातक राजा के तीन गुण अर्थात उत्साह, शक्ति और मंत्रण में निपुण होता है । वह बड़ा उदार परन्तु परस्त्रीगामी होता है। मतान्तर से 70 अथवा 77 वर्ष की उसकी आयु होती है । ग्रन्थकारों ने यह भी लिखा है कि ऐसे जातक की मुख की लम्बाई 13 अंगुल होती है, चौड़ाई कान से कान पर्यन्त 10 अंगुल होती है और जातक देश–देशान्तर का राजा होता है ।

5. **शश :** शनि उच्च, स्वक्षेत्र, अथवा मूलत्रिकोण का यदि लग्न से केन्द्र में बैठा हो तो शश योग होता है । ऐसा जातक कद का मझोला, शरीर को थोड़ा बहुत दुबला, दांत बाहर की ओर निकले हुए और उसके नेत्र अति चंचल एवं देखने में क्रोधान्वित प्रतीत होते हैं । (शास्त्रकारों ने ऐसे नेत्रों को शूकर अर्थात सूअर की नेत्रों से उपमा दी है।) ऐसा जातक राजा, सचिव, सेनापति और जंगल–पहाड़ आदि पर अधिकार करने वाला अथवा घूमने वाला

होता है । पराये धन का हरण करने वाला, मातृ भक्त, चतुर, दूसरों के छिद्रों को जानने वाला और जार क्रिया में निपुण होता है । जातक का रंग श्यामवर्ण होता है । ऐसा जातक 70 वर्ष की आयु जी कर राज्य करता है ।

इन पांचो ग्रहों में यदि भौमादिग्रह के साथ सूर्य और चन्द्रमा भी हों तो जातक राजा नहीं होता केवल उन ग्रहों की दशा में उसे उत्तम उत्तम फल होते हैं । इन पांच योगों में से यदि किसी की कुण्डली में एक योग हो तो वह भाग्यशाली, दो योग हो तो राजा तुल्य, तीन हो तो राजा, चार हो तो राजाओं में प्रधान राजा और यदि पांचों योग हों तो चक्रवर्ती राजा होता है । परन्तु पांचों ग्रह केन्द्र में रहते हुए किस प्रकार उच्चादि हो सकते हैं । अतः यह योग यहां निष्फल हो जाता है ।[1]

उपरोक्त योगों में उदाहरण कुण्डली में कोई योग घटित नहीं हो रहा है । केवल परिजातादि फल घटित हो रहा है । जो अन्यत्र दे दिया गया है ।

चन्द्र के योग :-

सुनफा योग :- 1. चन्द्र से दूसरे भाव में सूर्य को छोड़कर शेष ग्रहों में से कोई ग्रह हो तो सुनफा योग होता है ।

2. बाहरवें में कोई ग्रह हो तो अनफा योग होता है ।
3. दूसरे व बारहवें भाव में ग्रह हो तो दुरधरा योग होता है ।
4. दो तथा बारह भाव में ग्रह न हो तो केमद्रुम योग होता है ।

फल :
1. सुनफा योग में उत्पन्न पुरुष राजमन्त्री, सुन्दर, यशस्वी, अपने बाहुबल से उपार्जित धन से युक्त, प्रसिद्ध, बड़ी कीर्तिवाला, बुद्धिमान होता है ।
2. अनफा योग में उत्पन्न पुरुष समर्थ, नम्र, सुन्दरवाणी वाला, शीलवान, गुणवान, उदार, कीर्तियुक्त और कामी होता है ।

---

1. "ज्योतिष रत्नाकर", देवकी नन्दन सिंह तथा "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं० देवचन्द्र झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी । पेज 584 से 587 ।

3. दुरधरा योग में उत्पन्न पुरुष धन, वाहन सुख से युक्त विजित शत्रुपक्ष वाला स्त्री से सन्तुष्ट होता है ।

4. केमद्रुम योग में उत्पन्न पुरुष धन, पुत्र, स्त्री, बन्धु से हीन होता है । दास और परदेशी होता है; नित्य मलिन, कुवेशधारी होता है । चाहे वह राजा का लड़का हो।

मानक उदाहरण में उपरोक्त योग तीन घटित हो रहा हैं ।

सूर्य योग :-

व्ययधनयुतकेटैर्वोशि दिनेशाद् -

उभयचरिकयोगश्चोभरस्थानसंस्थैः ।

निजगृहसुहृदुच्चस्थानतैश्चजाता -

बहुधनसुखयुक्ता राजतुल्य भवन्ति ।[1]

1. सूर्य से बारहवें ग्रह हों तो वोशि योग होता है ।
2. सूर्य से दूसर भाव में हों तो वेशि योग होता है ।
3. सूर्य से दो बारह भाव में ग्रह हों तो उभय चरिक योग होता है ।

फल :- योगकर्त्ता ग्रह अपने गृह का मित्रगृह वा अपने उच्चस्थान में हो तो जातक बहुत धन, सुख से युक्त, राजा के समान होता है ।

1. वोशि योग में उत्पन्न पुरुष मन्द दृष्टिवाला, बहुत कार्य करने वाला, नीचे देखने वाला, ऊंचा शरीर और झूठ बोलने वाला होता है ।
2. वेशि योग में उत्पन्न जातक दयालु, मोटा शरीर, वाणी बोलने में चतुर, आलसी और तिरछी निगाह वाला होता है।
3. उभयचरी योग में बालक सबका सहन करने वाला, स्थिर स्वभाव, अत्यन्त समृद्ध,

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्री गणेश दत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी, पेज 201 ।

अधिक बलवान शरीर वाला, छोटा कद, एक सी सीधी दृष्टि और अधिक लक्ष्मी से युक्त होता है ।

मानक उदाहरण में उपरोक्त योग तीन घटित हो रहा हैं ।

राजयोग :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं० गणेश दत्त पाठक वाले ग्रन्थ में 30 श्लोक दिये हैं जिनमें राज योग का विस्तृत उल्लेख दिया हैं, जो इस प्रकार है :–

1. भाग्येश राजा और पंचमेश मन्त्री होता हैं, दोनों का दृष्टि सम्बंध हो तो जातक राजा होता हैं ।
2. उक्त दोनों कहीं पर एक साथ हों अथवा एक दूसरे से सातवें भाव में हों तो इस योग में जातक राजा होता है ।
3. सुखेश दशम् स्थान मे और कर्मेश सुख स्थान में हो और पंचमेश नवमेश से देखा जाता हो तो राज योग होता है ।
4. पंचमेश, कर्मेश, सुखेश, लग्नेश यदि धर्मेश से युत हो तों हाथी–घोड़े आदि से युक्त अपने तेज से दिशाओं में प्रसिद्ध उत्तम राजा होता है ।
5. सुग्वेश–कर्मेश यदि पंचमेश, धर्मेश से युत हों तो जातक राज्य का अधिकारी होता हैं।
6. पंचमेश, धर्मेश लग्नेश से युत होकर लग्न में हो व चतुर्थ का दशम स्थान में हो तो यदि राजा का लड़का हो तो वह राजा होता हैं ।
7. नवम् स्थान में गुरु की राशि हो और अपने स्थान में शुक्र हो तथा पंचमेश से युक्त हो तो राजा होता है ।
8. आधी रात के बाद और दोपहर के बाद 2½ घटी शुभ बेला होती है, इस समय में उत्पन्न बालक धनी के समान होता है ।
9. चन्द्र शुक्र का और शुक्र चन्द्र को एकादश, तीसरे भाव से कष्ट परस्पर देखते हों तो वाहन और धन से पूर्ण होता है । इनमें से जो चाहे तीसरे भाव में हो ।

राज योग पांच प्रकार से दृष्टि/युति सम्बन्ध से घटित होता है ।[1]

1.	लग्नेश का सम्बन्ध	= 4, 5, 7, 9, 10	=	5 योग
2.	चतुर्थेश का सम्बन्ध	= 5, 7, 9, 10	=	4 योग
3.	सप्तमेश का सम्बन्ध	= 9, 10	=	2 योग
4.	पंचमेश का सम्बन्ध	= 9, 10	=	2 योग
5.	भाग्येश का दशमेश से		=	1 योग
	कुल		=	14 योग

राज योग सम्बन्ध चार प्रकार से हैं :–

1. ग्रहों का साथ होना ।
2. ग्रहों का स्थान परिवर्तन ।
3. ग्रहों का दृष्टि सम्बन्ध ।
4. एक ग्रह दूसरे के घर में हो तथा दूसरे की पहल पर दृष्टि हो ।

1. उपरोक्त योगों के अनुसार मानक उदाहरण में लग्नेश दशमेश के साथ तृतीय भाव में शुक्र दशमेश सूर्य लग्नेश के साथ तथा शुक्र स्वगृही हैं अतः राज योग घटित होता है।

राज योग का तात्पर्य हैं कि जातक अच्छा पद प्रतिष्ठा, धन, वैभव, नौकर, बंगला, गाड़ी से होना चाहिए क्योंकि इस तरह के योग बहुत सारी कुण्डलियों में पायेंगे वे सभी राजा या राजमन्त्री नहीं हो सकते । अतः यह बात विशेष ध्यान देने की है ।

2. चतुर्थेश (मंगल) पंचमेश (गुरु) का दृष्टि सम्बन्ध 50 % हैं । अतः यह भी राज योग बनता है ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्री गणेश दत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी, पेज 202-206।

परिजातादि योग :-

1. लग्नेश पारिजात अंशों में हो तो जातक दाता नहीं होता ।
2. उत्तमांश में हों तो उत्तम दाता होता है ।
3. गोपूरांश में हों तो पुरुषत्व से युक्त होता है ।
4. सिंहासनांश में सर्वजनमान्य होता है ।
5. पारावतांश में तो शूरवीर होता हैं ।
6. देवलोकेश में हो तो सभावद होता है और दूसरे भाव में हो तो मुनि समान होता है।
7. ऐरावतांश में दुष्ट होता है ।

इसी प्रकार सुखेश, सप्तमेंश और कर्मेश से फल जानना ।

मानक उदाहरण में सुखेश मंगल हैं, सप्तमेश शनि है और कर्मेश शुक्र हैं ।

1. मंगल सुखेश पारिजातांश में हैं अतः जातक दाता नहीं होगा ।
2. शनि सप्तमेश को कोई संज्ञा प्राप्त नहीं है। अतः उपरोक्त का कोई फल नहीं हैं।
3. कर्मेश शुक्र उतमांश में हैं अतः जातक उत्तम दाता होगा ।

इसी प्रकार पञ्चमेश से विद्या का विचार करना चाहिए : जैसे

1. पंचमेश पारिजातांश में हो तो कुलानुसार विद्या ।
2. उत्तमांश में हो तो उत्तम विद्या ।
3. गोपुरांश में हो तो कुलानुसार विद्या ।
4. सिंहासनांश में हो तो मंत्रित्व योग्य विद्या ।
5. पारावतांश में हो तो ब्रह्मविद्या युक्त ।
6. देवलोकांश में हो तो जातक कर्मयोगी दूसरे में उपासक ।
7. ऐरावतांश में हो तो भक्ति युक्त होता है ।[1]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", श्री गणेश दत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी, पेज 204।

मानक उदाहरण में गुरु पञ्चमेश है, उत्तमांश में है अतः जातक की उत्तम विद्या होनी चाहिए यह बालक आयुर्वेदाचार्य कोर्स कर रहा है, जो उत्तम विद्या के अन्तर्गत आता है ।

इसी प्रकार धर्मेश से देखा जाना चाहिए ।

1. धर्मेश पारिजातांश में हो तो इस जन्म और पूर्व जन्म में दोनों तीर्थयात्री होता है ।
2. उत्तमांश में उत्तम ।
3. गोपुरांश में इस जन्म और पर जन्म में यज्ञकर्ता होता है ।
4. सिंहासनांश में धीर, सत्यवादी, जितेन्द्रिय होता है । सभी धर्मो को त्यागकर एक धर्म का व्यवस्थापक होता है ।
5. पारावतांश में इस जन्म और परजन्म में जातीय पुरुष होता है ।
6. देवलोकांश में हो तो दंडधारी सन्यासी, दूसरे में अश्वमेघ यज्ञ करके इन्द्रपद को पाता है ।

मानक उदाहरण में धर्मेश मंगल पारिजातांश में हैं । अतः बालक तीर्थगामी होगा।

विशेष योग तथा फल :-

त्रिकोण (5, 9) लक्ष्मी का स्थान होता है ।

केन्द्र (1, 4, 7, 10) विष्णु का स्थान है ।

1. इन दोनों का संबंध मात्र से राज योग होता है ।[1]

मानक उदाहरण में केन्द्रेश सूर्य तथा नवमेश मंगल का सम्बन्ध नहीं है । अतः यह राज योग घटित नही हो रहा है ।

2. केन्द्रेश और पंचमेश से 'अमात्य' नाम का योग होता है ।[2]

---

1. ''बृहत्पाराशर–होराशास्त्र'', पं० श्री गणेशदत्त पाठक, राजयोगाध्ययन, पेज 206 ।
2. वही, पेज 206 ।

मानक उदाहरण में केन्द्रेश शनि का पञ्चमेश गुरु के साथ दृष्टि सम्बन्ध है । लेकिन गुरु का शनि के साथ दृष्टि सम्बन्ध नहीं है लेकिन शनि की राशि में मकर में हैं अतः यह राज योग घटित हो रहा है ।

3. इसी प्रकार कर्मेश और केन्द्रेश का सम्बन्ध हो तो राजा या मन्त्री होता है ।

मानक उदाहरण में कर्मेश शुक्र और केन्द्रेश सूर्य का तृतीय स्थान में हैं अतः यह प्रबल राजयोग है ।

4. केन्द्रेश नवमेश का सम्बन्ध हो तो राजा से वदित राजा होता है ।
5. धर्मेश व्यत्यय से अर्थात् धर्मेश धर्म में और कर्मेश धर्म भाव में हो अथवा एकत्र हो तो सभी सुखों से युक्त होता है ।[1]
6. यदि धर्मेश तथा कर्मेश पारिजात में हों तो राजा दंड का शिक्षक होता है ।
7. उत्तमांश में हो तो हाथी–घोड़े से युक्त राजा होता है ।
8. गोपुरांश में हों तो राजाओं सिंह, राजाओं में पूज्य चरण वाला राजा होता है ।
9. सिंहासनांश में हो तो सभी राजाओं का पालन करने वाला चक्रवर्ती राजा होता है ।

मानक उदाहरण में धर्मेश मंगल पारिजातांश में हैं और कर्मेश शुक्र उत्तमांश में है । यह बराबर एकांश में नहीं है अतः योग घटित नहीं है ।

परजातयोग :

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 15 में परजातादि योगफल दिया गया है ।[2] यह फल अन्य ग्रन्थों में भी स्फुट रूप में दिया है । इससे जातक के जन्म का ज्ञान होता है कि वह किस वर्ण से और कैसे उत्पन्न हुआ, जो अग्र प्रकार से है :–

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं० श्री गणेशदत्त पाठक, राजयोगाध्ययन, पेज 206 ।
2. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 15, श्लोक 1 से 14, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।

1. चतुर्थ भावस्थ चन्द्र से दृष्ट और शत्रुग्रह से युक्त या दृष्ट तो बालक निश्चय परजात है ।
2. 3-6-9-5 इन स्थानों का कोई स्वामी लग्न में हो तो भी उपर्युक्त योग में परजात है और यह गर्भाधान नौकर आदि से हुआ है ।
3. लग्न में पापग्रह, सातवें भाव में अस्त बुध, दशम में शनि इस योग में हुआ बालक वर्णसंकर है ।
4. लग्न में चन्द्रमा, तीसरे मंगल शुक्र हो तो पन्द्रह आवरण में भी परबालक है ।
5. लग्न में शनि या सूर्य चतुर्थ भाव में राहु हो तो अपने देवर से सन्तान की उत्पत्ति हुई है।
6. लग्न में राहु, मंगल हों, सप्तम में सूर्य चन्द्रमा हों तो रानी होने पर भी नीच जाति से बालक हुआ है ।
7. लग्न में सूर्य, चन्द्रमा हों या सप्तम में मंगल सूर्य हो इस योग में जन्म लेने वाला दूसरे से ही होता है ।
8. केन्द्रस्थान शून्य हों तो भी पर से ही जन्म हैं ।
9. 2-6-8-12 इन स्थानों में अधिक तर ग्रह हों तो परजात है । अन्य स्थान में 1-2 ग्रह हों तो भी परजात हैं ।
10. लग्नेश और सप्तमेश दोनों एक स्थान में हों तो परजात होता है ।
11. बृहस्पति यदि चन्द्रमा या लग्न को नहीं देखता हो तो भी जारज है । षड् वर्ग में बृहस्पति का अंश न हो तो जारज है ।
12. दो शत्रुग्रह किसी एक केन्द्र स्थान में हो और अन्य ग्रह न हो तो भी परजात है । स्थिर लग्न में विशेष करके योग बलवान् है ।
13. चतुर्थ, दशम तथा लग्न में पापग्रह सहित चन्द्रमा हो और लग्नेश से लग्न दृष्ट हो भी

परजात है ।

14. लग्नेश लग्न में हो तो परजात कभी ही होता है । यह परजातभंग सब कथित योगों का भंजक है ।

मातृस्थाने स्थितो चेत्कुजविधुसहितौ षष्ठरन्ध्राधिनाथौ ।

स्यातां यस्य प्रसूतौ भवति खलु नरस्त्वन्यजातस्ददानीम् ।।

क्वापि स्थाने स्थितौ स्तः कलुषखगयुतौ भाग्यषष्ठाधिनाथौ ।

चेदेवं राहुणा वा तदनु च शिश्विना संयुतावन्यजातः ।।[1]

जन्म समय में षष्ठेश भौम व चन्द्र से युक्त होकर यदि चतुर्थ भाव में रहे तो अथवा नवमेश व षष्ठेश पापग्रह से युत होकर किसी भी स्थान में रहे तो अथवा नवमेश व षष्ठेश राहु या केतु से युत होकर किसी भी स्थान में रहे तो जातक परजात (दूसरे से जन्मा) होता है ।

धनस्थाने यथा क्रूरः सहजे च तमस्था ।

पंचमे च भवेज्जीवो नीचततिस्तदा भवेत् ।।[2]

जो धनस्थान में क्रूर ग्रह और सहज नाम तीसरे स्थान में तम नाम राहु बैठा है और पंचम में गुरु (जीव) बैठा हो तो उस प्राणी को नीच जाति से उत्पन्न हुआ कहें ।

लग्नं शशाह सुरराजमन्त्री न वीक्षिते नैकगृहस्थितौ वा ।

न जीववर्गेण युतौ तदानीं जातं वपेदन्समागमेन ।।[3]

लग्न और चन्द्रमा यदि बृहस्पति से अदृष्ट हों, न परस्पर युत हों और न ही दोनों बृहस्पति के वर्ग में हो तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक परपुरुष के साथ समागम का प्रतिफल

---

1. "जातकालङ्कारः", डॉ० सत्येन्द्र मिश्र, चौखम्बा, सुभारती प्रकाशन, वाराणसी, पेज–56।
2. "गर्गजातकम्", गंगाविष्णु, श्रीकृष्णदास, कल्याण–प्रकाशन, बम्बई, पेज-9 ।
3. "जातकपारिजातः", श्री दैवज्ञ वैद्यनाथ, व्याख्या : डॉ० हरिशंकर पाठक, चौखम्बा सुरभारती, प्रकाशन, वाराणसी, पेज-118 ।

होता है ।

स्वांशे केवलपापसम्बन्धे परजातः।। नात्र पापात्।।

शनि-राहुभ्यां प्रसिद्धि ।। गोपनमन्येभ्यः ।।

शुभवर्गेऽपवादमात्रम् ।। द्विग्रह कुलमुख्या ।।[1]

आत्मकारक में नवांश यदि केवल पापग्रह के सम्बन्ध में हो तो वह जातक परजात (दूसरे से उत्पन्न) होता है । किन्तु आत्मकारक के पाप होने से परजात नहीं होता। (अर्थात् कारक भिन्न पाप ग्रहों के सम्बन्ध से ही उक्त फल समझना) कारकांश में शनि राहू हो तो परजात होना प्रसिद्ध हो जाता है । दूसरे पाप ग्रहों से गुप्त रहता है । शुभ ग्रह के वर्ग कारकांश में हो तो अपवाद मात्र होता है, वास्तव में परजात नहीं होता । आत्मकारकांश में दो ग्रह हों तो वह जातक अपने कुल मे मुखिया (श्रेष्ठ) होता है ।

मानक उदाहरण में उपरोक्त परजात योगों में से कोई भी योग घटित नहीं है ।

* * *

---

1. "जैमिनि–सूत्रम्", पं० श्री सीताराम शर्मा, चौखम्बा विद्याभवन, पेज-58 ।

अष्टक वर्ग के आधार पर फलादेश

महर्षि पाराशर ने अपने ग्रन्थ के उत्तरखण्ड के पाँचवे अध्याय मे अष्टक वर्ग की सहायता से फलादेश करने का विस्तृत विवरण दिया है । उनके अनुसार सूर्य से स्वयं का प्रभाव तथा पिता के स्वास्थ्य आदि के हेतु, चन्द्रमा से बुद्धि तथा माता के स्वस्थ का विचार करें। मंगल से जातक का स्वबल, भ्राता, भूमि का विचार तथा बुध से व्यापार, वृत्ति का, गुरु से सन्तान, धन, बुद्धि का, शुक्र से विवाह, भोगविलास, वाहन तथा पत्नी का एवं शनि से स्वास्थ्य, शोक दुःख हानि का विचार करना चाहिए उनके अनुसार सूर्य पिता, चन्द्रमा माता, मंगल भ्राता, बुध मित्र गुरु मामा, शुक्र स्त्री एवं शनि मृत्यु का स्थिर कारक है ।[1]

फलादेश करने के लिए अष्टकवर्ग सारिणी तथा सर्वाष्टक वर्ग निम्न प्रकार से अलग है :–

अष्टक वर्ग सारिणी

राशि	सूर्याष्टक वर्ग	चन्द्राष्टक वर्ग
5	5	4
6	2	3
7	3 (सू०)	4
8	4	3
9	6	4 (चं०)
10	5	6
11	6	4
12	5	3
1	4	4
2	2	5
3	3	5
4	3	5
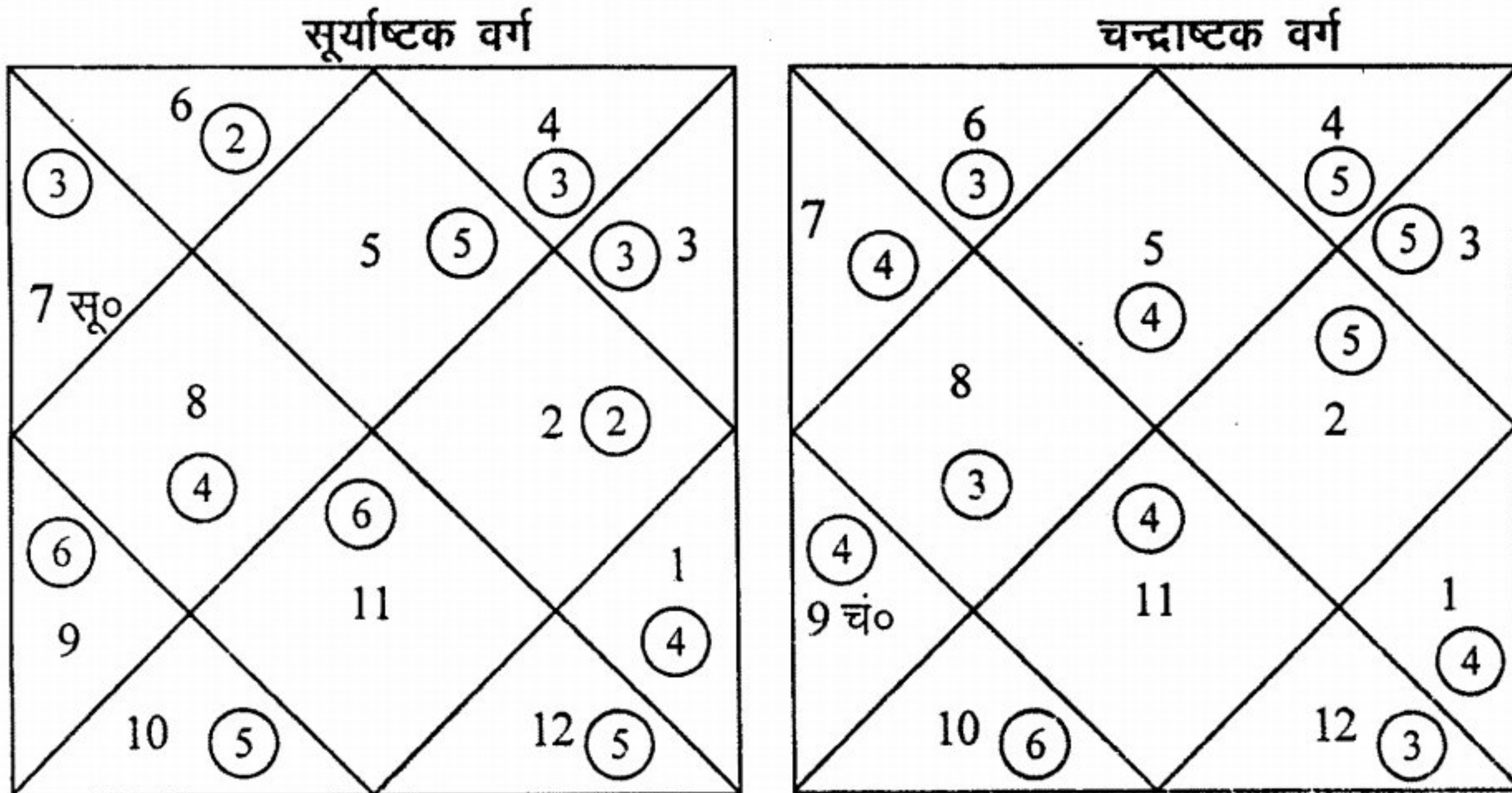
1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड, अध्याय 5, श्लोक 1, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

मंगलाष्टक वर्ग

6 मं० (4)
7 (4)
(3) 4
5 (4)
(4) 3
(2) 8
(4) 2
9 (3)
(3) 11
(2) 1
10 (2)
(4) 12

बुधाष्टक वर्ग

6 (6)
7 (4)
(4) 4
(6) 5
(6) 3
8 बु०
(5) 2
9 (5) (4)
(3) 11
(2) 1
(4) 10
(5) 12

गुरु अष्टक वर्ग

6 (3)
7 (5)
(5) 4
5 (6)
3 (5)
(5) 8
(2) 2
9 (4)
(4) 11
(7) 1
(5) 10 गु०
(5) 12

शुक्राष्टक वर्ग

6 (5)
(4) 7 शु०
(5) 4
5 (7)
(3) 3
8 (5)
(4) 2
9 (3)
(4) 11
(3) 1
10 (5)
(4) 12

शनि अष्टक वर्ग

6 (3)
7 (4)
(3) 4
5 (5)
3 (4)
(4) 8 श०
(4) 2
9 (1)
(2) 11
(3) 1
10 (4)
(2) 12

सर्वाष्टक वर्ग

मं० 6 (36)
(34) सू० 7 शु० के०
(32) 4
5 (39)
3 (37)
8 (33) श० बु०
(34) 2
(24) 9 चं०
(28) 11
1 रा० (28)
(34) 10 गु०
(27) 12
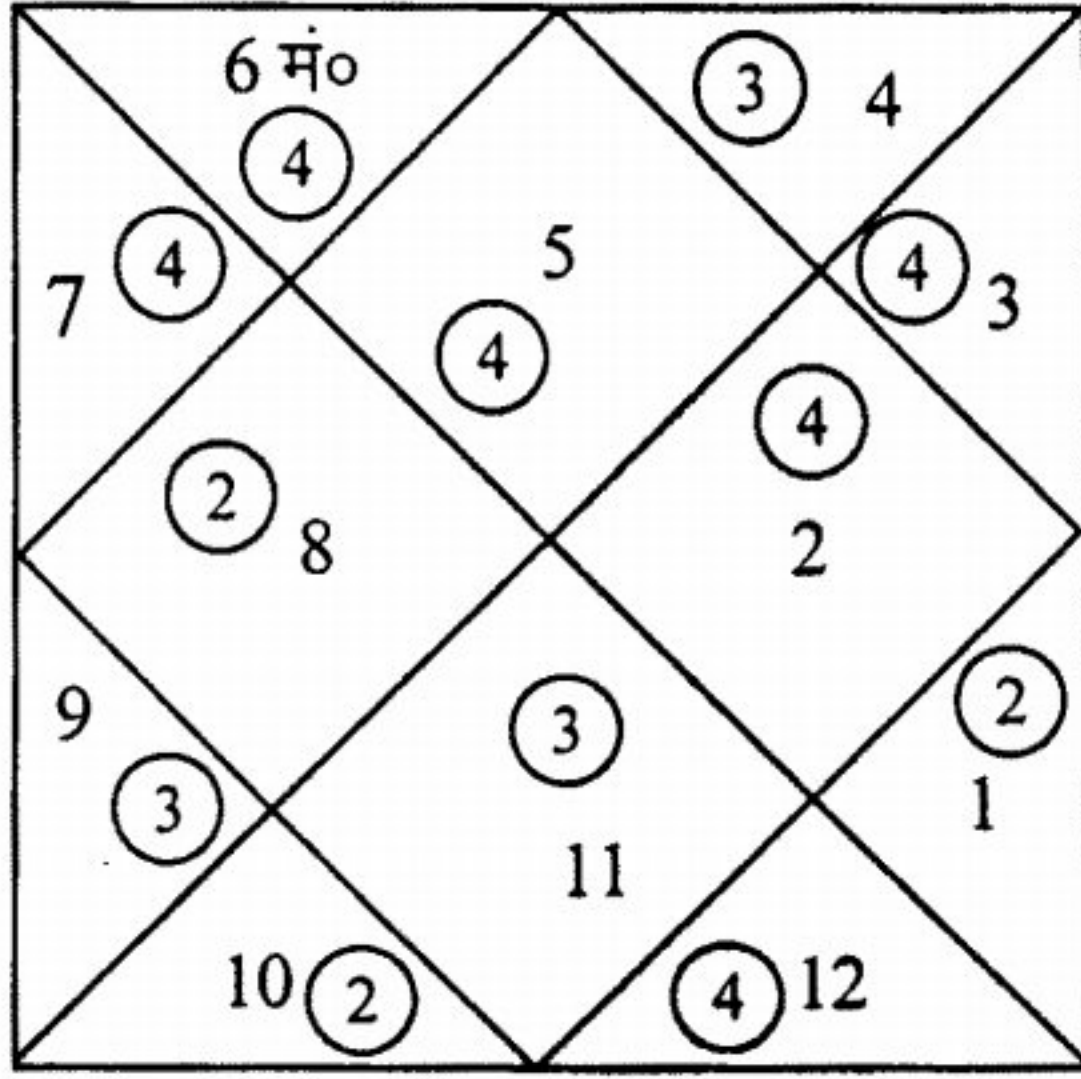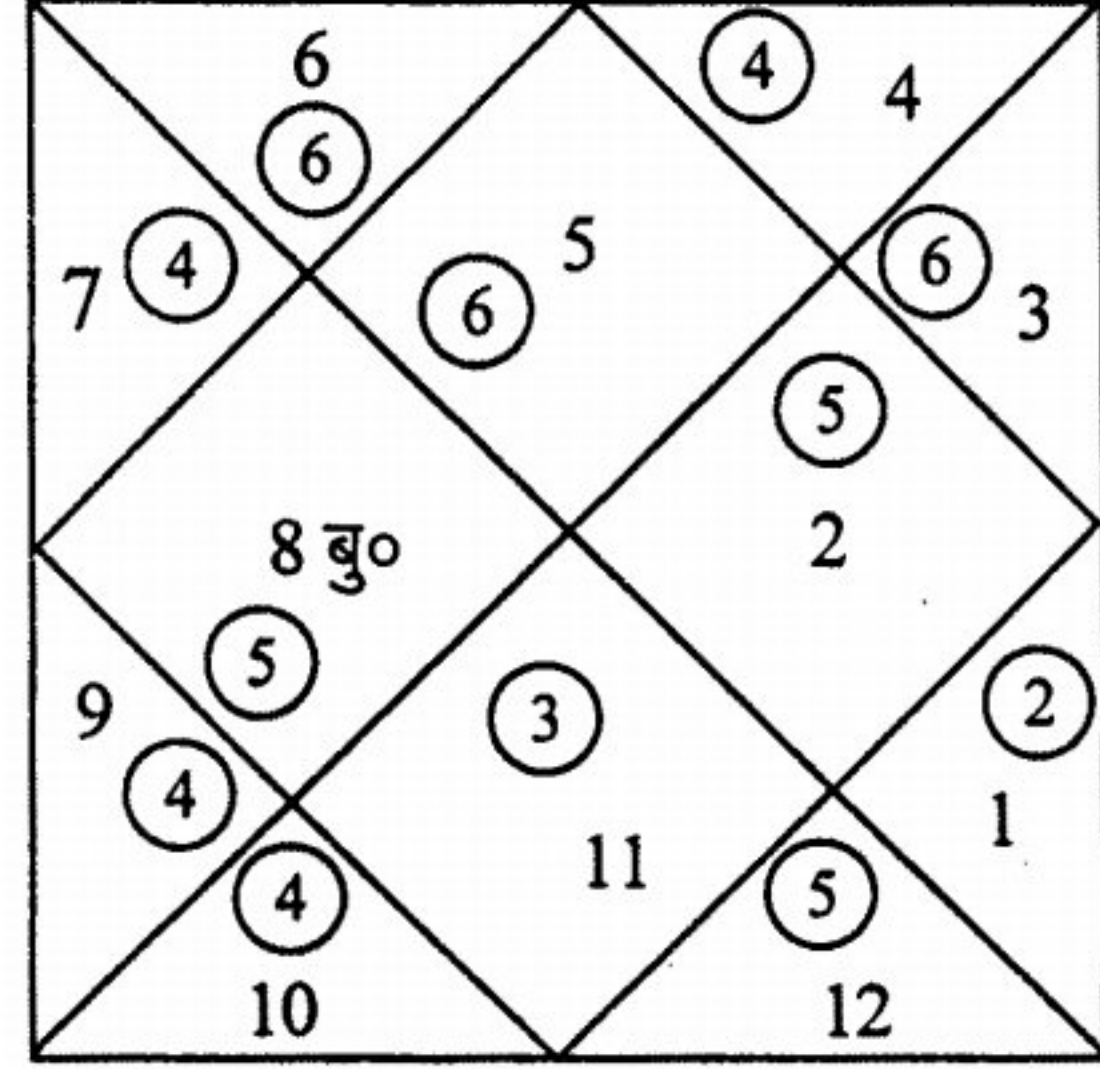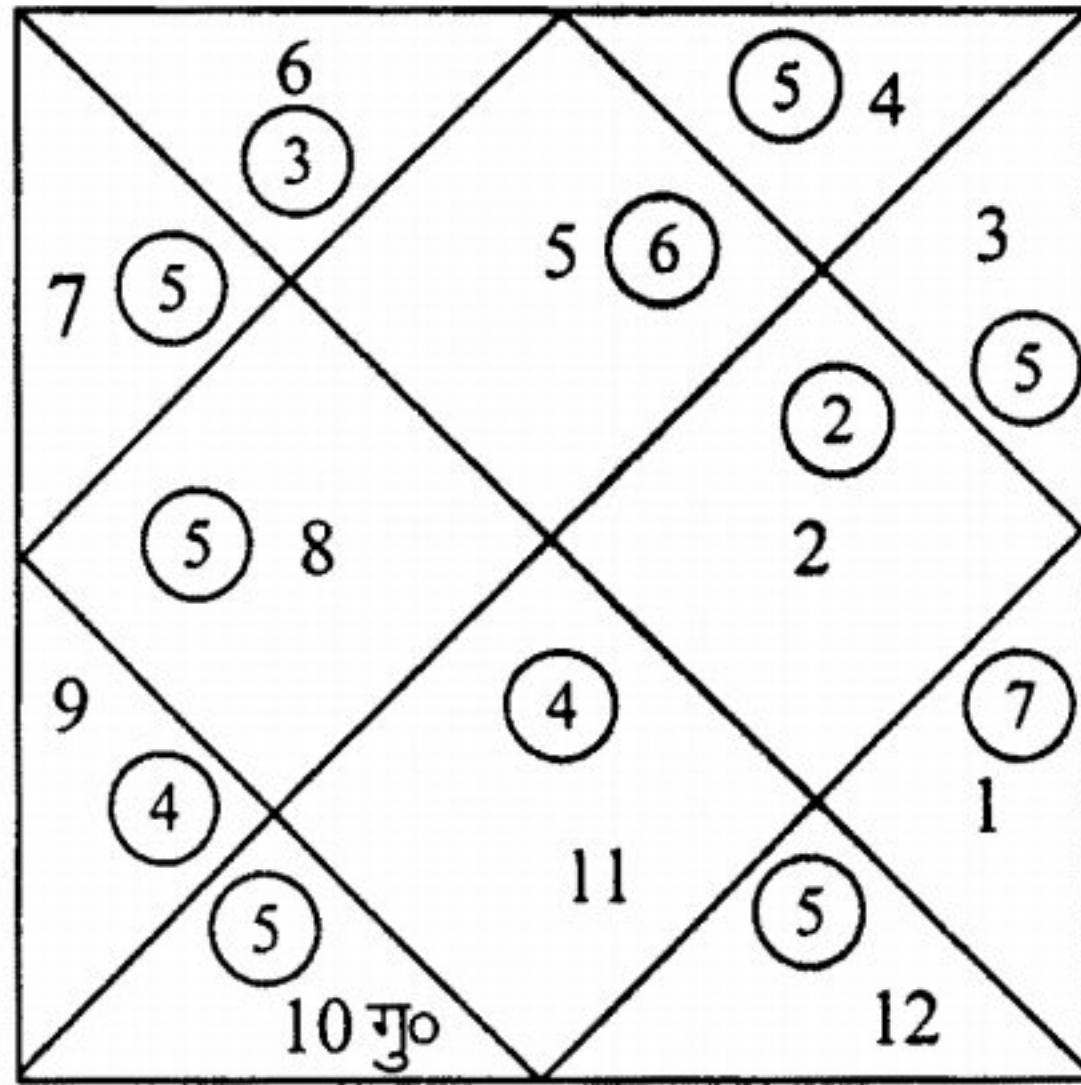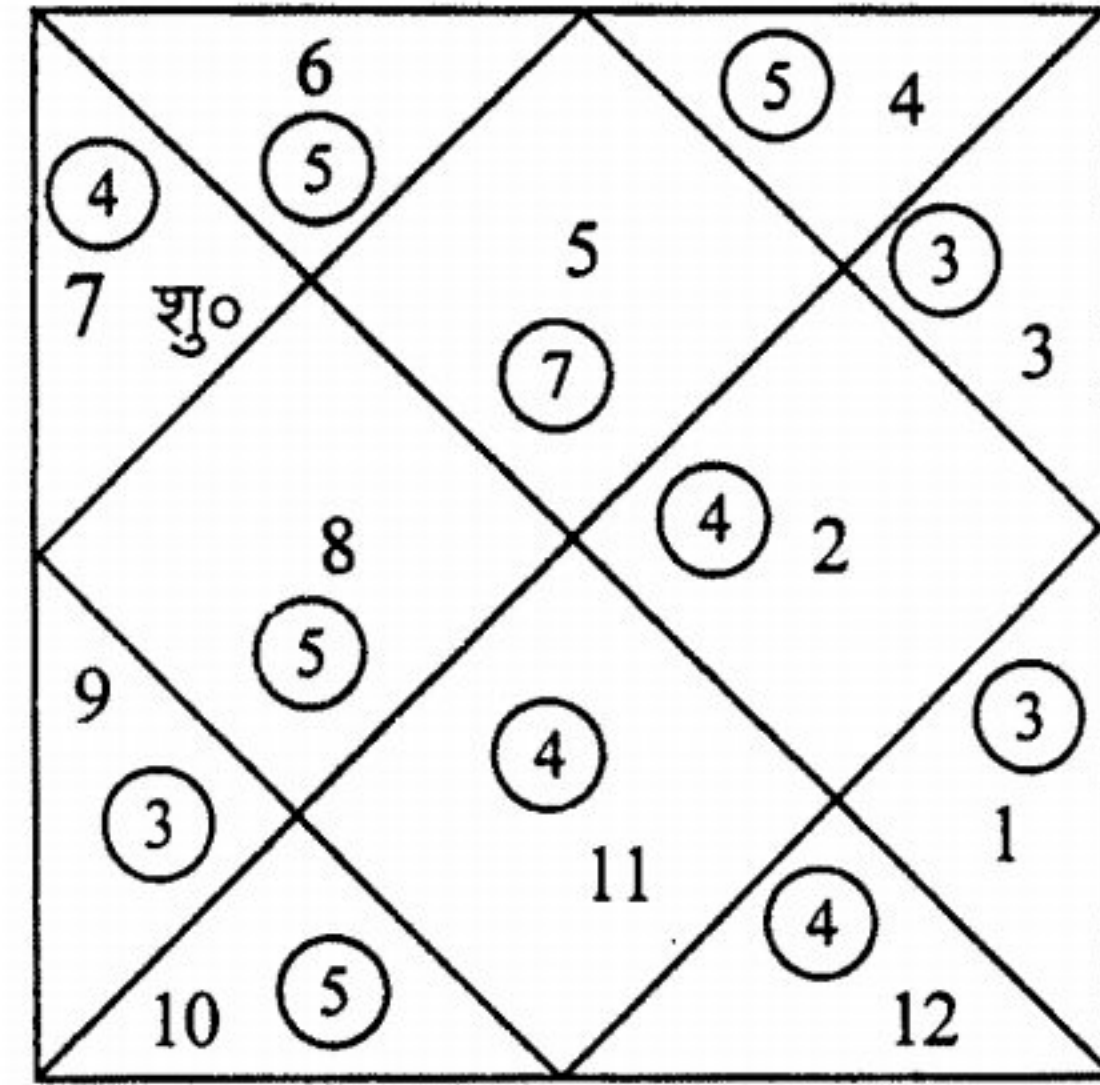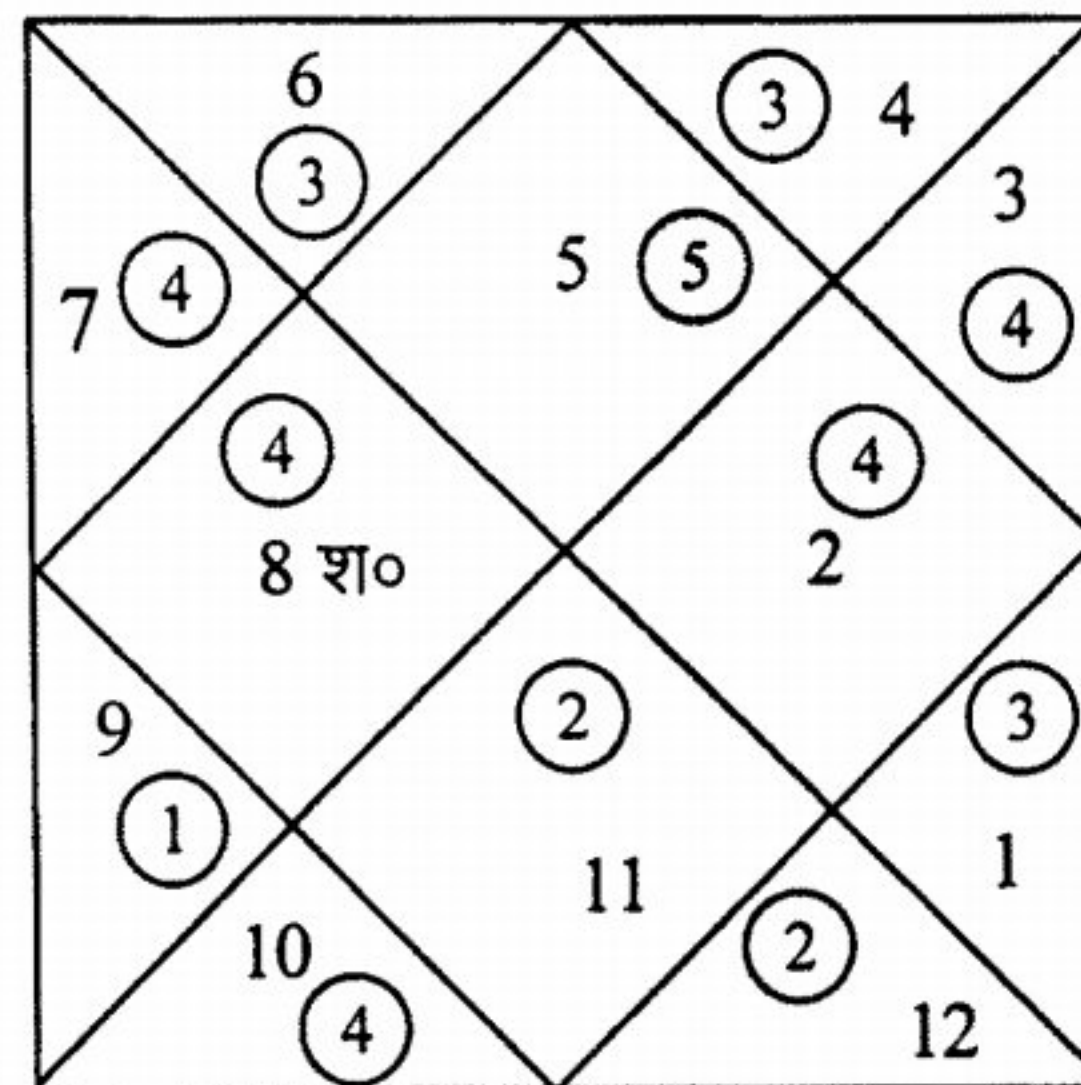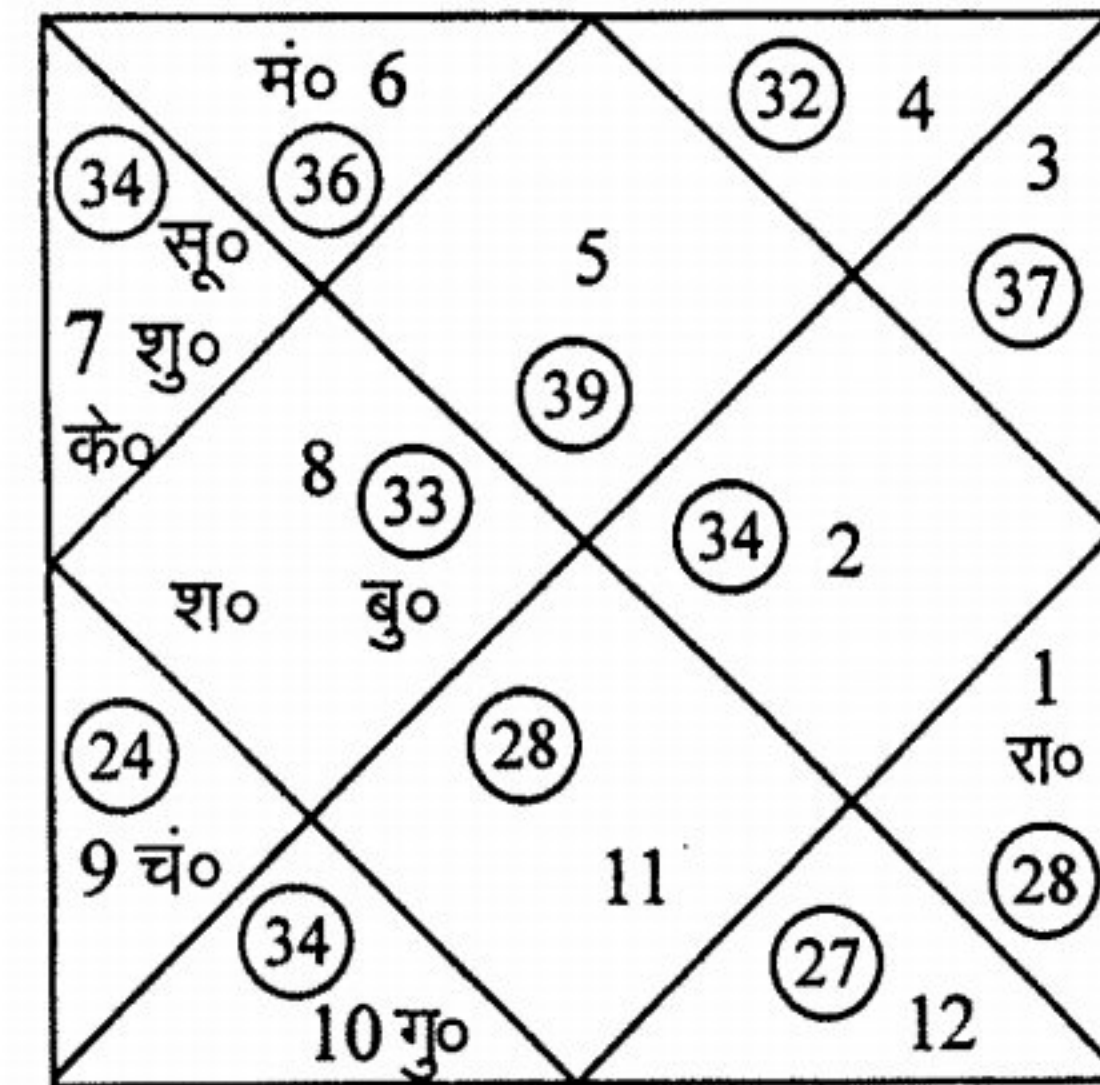
ग्रहानुसार फल :- सूर्य जहां जन्मकुण्डली में स्थित है, वहां से नवम् स्थान में जितनी रेखा सूर्याष्टक वर्ग में हो उससे सूर्य के शोध्यपिण्ड से गुणा करके 27 से भाग दें । शेष संख्या के अनुसार नक्षत्र गिने । उस नक्षत्र में गोचर में सूर्य आने पर पिता की मृत्यु अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट होगा । इस नक्षत्र से पांचवे तथा नौवें नक्षत्र पर सूर्य होने पर भी पिता, चाचा, ताऊ आदि को कष्ट होगा । सूर्य की दशा तथा भाव दशा में यह विचार अवश्य ही करना चाहिए । यदि सूर्य से चतुर्थ भाव में राहु, मंगल या शनि हो तथा गुरु शुक्र से यह भाव दृष्ट भी न हो तो उपरोक्त समय में पिता की मृत्यु होगी । इसी प्रकार लग्न अथवा चन्द्रमा से नवम् स्थान में शनि पाप दृष्ट हो तो भी दशानुकूल समय में पिता की मृत्यु होती है ।[1]

पुनः महर्षि का विचार था कि सूर्याष्टक वर्ग में जिस राशि में रेखा शून्य हो, उस राशि पर सूर्य वाले मास में विवाह आदि शुभ कार्य नहीं करना चाहिए ।

विवाह व्यवहारादि मारां अस्मि-वर्जतेत्सदा ।

कलहो मास दुःखानि शून्य मासे भवन्ति च ।[2]

चन्द्रफल :- जन्मकुंडली में चन्द्रमा से चतुर्थ भाव से माता, मकान, भूमि आदि का विचार करना चाहिए । यदि चन्द्राष्टक वर्ग में किसी राशि में रेखा बल शून्य हो तथा चन्द्रमा भी उसी राशि में स्थित हो तो चन्द्रमा के नक्षत्र में कोई भी शुभ कार्य नहीं करना चाहिए। चन्द्रमा से चतुर्थ भाव के पिण्ड को चतुर्थ भाव के फल से गुणा करके 27 से भाग देकर शेष नक्षत्र ज्ञात करें । प्राप्त नक्षत्र तथा उससे पांचवा, नौंवा नक्षत्र में भी शनि आने पर माता के लिए घातक है । इसी प्रकार चन्द्रमा से चौथे, पांचवे, आठवें तथा नौवें भाव पर सूर्य होने पर, माता से वियोग होता है । महर्षि का यह भी विचार है कि चन्द्रमा के अष्टक वर्ग में

---

1. "बृहत्पाराशर--होराशास्त्र", उत्तरखण्ड, अध्याय 5, श्लोक 8 से 14, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. वही, अध्याय 5, श्लोक 20 ।

चन्द्रमा से चौथे स्थान में रेखाओं की संख्या को चन्द्रमा के शोध्य पिण्ड संख्या से गुणा करके 27 से भाग देने पर प्राप्त नक्षत्र के ऊपर से गोचर में शनि आने पर जातक की माता के लिए मृत्यु योग होता है ।[1]

मंगल फल :- मंगलाष्टक वर्ग से भाई, पराक्रम, साहस आदि का विचार किया जाता है। होराशास्त्र के अनुसार, "मंगलाष्टक वर्ग में मंगल से तृतीय स्थान के रेखा बल को पिण्ड संख्या से गुणा करके 27 से भाग देने पर आए नक्षत्र तथा इसके त्रिकोण नक्षत्र में शनि का गोचर भ्राता के लिए मृत्यु कारक होता है ।"[2]

त्रिकोण शोधन में मंगल यदि बलहीन हो तो भ्राता के लिए श्रेष्ठ तथा बलवान होने पर नेष्ट होता है ।

उदाहरण कुंडली में मंगलाष्टक में मंगल से तीसरे भाव में रेखा संख्या 6 को शोध्य पिंड 105 से गुणा करके 27 से भाग करने पर शेष का नक्षत्र मघा तथा इसके त्रिकोण नक्षत्र चित्रा एवं ज्येष्ठा में शनि के गोचर के समय जातक के भ्राता के लिए मृत्यु कारक समय होगा ।

बुध फल :- इस महाग्रन्थ के अनुसार, "बुध से दूसरा तथा चौथा स्थान धन, पुत्र तथा मामा का तथा पांचवा स्थान मंत्र विद्या, कला, कौशल, सिद्धि आदि का होता है ।"[1] शोध्यपिण्ड सूत्र जिसके बारे में महर्षि ने सूर्य, चन्द्रमा आदि में विधि बताई उसी के अनुसार निकाले गए नक्षत्रों में शनि का गोचर बंधु मित्र आदि का नाश करता है । उदाहरण कुंडली में बुध से दूसरे स्थान में रेखा संख्या 4 को शोध पिण्ड 130 से गुणा करके 27 से भाग देने पर शेष 7वां नक्षत्र पुर्नवसु तथा इसके त्रिकोण पूर्वाफाल्गुनी एवं स्वाति में शनि का गोचर

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 5, श्लोक 20, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. वही, अध्याय 5, श्लोक 34 ।
3. वही, अध्याय 5, श्लोक 35 ।

मित्र–बंधु वर्ग के लिए विनाश कारक होगा ।

गुरु फल :- गुरु से पंचम भाव से ज्ञान, धर्म, धन, पुत्र (संतान) आदि को विचार किया जाता है । महाग्रन्थ के अनुसार गुरु अष्टक वर्ग से संतान संख्या तथा संतान के लिए नेष्ट समय भी निकाला जाता है । उपरोक्त ग्रन्थ के पांचवे अध्याय में श्लोक संख्या 37 से 43 तक इसका विशद विवरण दिया गया है । गुरु राशि से पांचवे स्थान में फलांक से नीच राशि तथा शत्रु ग्रहों की संख्या घटाने पर शेष पुत्र संख्या होगी अथवा गुरु की राशि के स्वामी के समान पुत्र संख्या हो । उनका यह भी विचार है कि गुरु से दूसरे, पांचवे, बारहवे भाव में पापग्रहों की संख्या के समान संतान नष्ट होती है ।

व्ययार्थ सुत संस्थैश्च पापैः स्यात्क्षीण संततिः।[1]

उदाहरण कुंडली में गुरुअष्टक वर्ग में गुरु से पंचम स्थान में 6 रेखा को शोध्यपिंड 118 से गुणा करके 27 से भाग देने पर शेष 6 का नक्षत्र आद्रा तथा इसके त्रिकोण पूर्वाफाल्गुनी एवं स्वाति पर शनि का गोचर जातक की संतान के लिए नेष्ट समय होगा ।

शुक्र फल :- शुक्र से भूमि, स्त्री, धन, वाहन, सन्तानोत्पाद क्षमता आदि का विचार करना चाहिए । "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", में उत्तरखण्ड के पांचवे अध्याय के श्लोक 44 से 62 तक स्त्री के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है । शुक्र के अष्टक वर्ग में जिन–जिन भावों में रेखा बल अधिक हो उन्हीं की दिशा से स्त्री, धन, व्यापार में लाभ आदि का योग होता है । शुक्र से सातवें घर के स्वामी की दिशा से भी उपरोक्त लाभ मिलता है । अन्य मत के अनुसार, "शुक्र के पंचम तथा नवम् स्थान स्थित राशि की दशा में विवाह संभव है ।"[1]

इससे स्त्री की राशि तथा जन्म नक्षत्र का भी पता चलता है । सप्तमेश जिस नक्षत्र में हो वह नक्षत्र या सप्तमेश की उच्च या नीच राशि वाला नक्षत्र जातक की स्त्री का जन्म

---

1. "अष्टकवर्ग महानिबन्ध" : पं० सुरेश चन्द्र मिश्र पेज 272, रंजन पब्लिकेशनंसए नई दिल्ली।

नक्षत्र होता है । स्त्री से संतान सुख का वर्णन करते हुए महर्षि लिखते हैं कि सप्तमेश स्वक्षेत्री, उच्च, उच्च नवांश या मित्र नवांश में होने पर स्त्री संतानवाली होगी।[1] तथा इसके विपरीत होने पर निसंतान होगी।[2] शुक्र तथा सप्तमेश की राशि को जोड़कर (12 से अधिक होने पर 12 घटा दें) तो स्त्रियों की संख्या आएगी । राजा की स्थिति में यह संख्या दोगुनी होगी। अन्य मतों के अनुसार शुक्र जिस नवाशं में हो उतनी संख्या स्त्रियों की होती है । सप्तम स्थान में शनि हो, शनि का नवमांश हो, शुक्र शनि की राशि या नीच नवमांश में हो तो जातक की स्त्री नीच होती है । सप्तम स्थान पर शनि या मंगल का प्रभाव; शनि का मंगल के घर में होना स्त्री के चरित्र का नाशक होता है । अन्य मत से यदि शुक्र शनि की राशि मे एक से तीन रेखा सहित हो तथा इस पर मंगल की दृष्टि हो तो भी पत्नी का चरित्र प्रभावित होता है।[3] शुक्र पापग्रस्त हो चन्द्रमा पापयुक्त या पापग्रह के नवांश में 12 या 7 स्थान में हो तो भी जातक स्त्री से कष्ट पाता है ।

उदाहरण कुंडली में शुक्राष्टक वर्ग में शुक्र से सप्तम भाव में 5 रेखा को शोध पिंड 109 से गुणा करके 27 से भाग देने पर शेष पांचवा नक्षत्र मृगशिरा तथा इसके त्रिकोण नक्षत्र आश्लेषा तथा हस्त में शनि होने पर स्त्री के लिए कष्टदायक होगा ।

शनि फल :- इसके अष्टक वर्ग से जातक की आयु का विचार किया जाता है । लग्न से अष्टम स्थान तक की रेखाओं के योग तथा शनि से लग्न तक की रेखाओं के योग के समान आयु वर्षो में रोग, व्याधि होती है । इन दोनों संख्याओं के योग वर्ष में मृत्यु योग होता है।[4] अष्टक वर्ग में जिस राशि में शनि के अष्टक वर्ग में रेखा नहीं होती उसमें शनि के गोचर के समय सूर्य तथा चन्द्रमा का भी योग होने पर मृत्यु योग बनता है ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड अध्याय-5, श्लोक 49-50, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. "अष्टकवर्ग महानिबन्ध" : पं० सुरेश चन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशनंस, नई दिल्ली, पेज 271।
3. "डोटस् आफ डेस्टीनी", (Dots of Destiny), विनय आदित्य, पेज 272 ।

समूलाष्टकवर्गे च यत्र नास्ति फलं गृहे ।

तत्र नास्ति फलं तस्य यदा याति शनैश्चरः ।।

तद्गृहे रवि चन्द्रौ चेदशाछिद्रे मृतिं वदेत् ।

दशाछिद्रसमायोगे मृत्युरेव न संशय ।।[1]

लग्न से शनि तथा शनि से लग्न तक रेखा संख्याओं का योग वर्ष कष्ट कारक होता है इसमें रोग, मृत्यु, धन हानि आदि संभव है । लग्न से शनि पर्यन्त रेखा संख्या को 7 से गुणा करके 27 से भाग देने पर विचारणीय कुंडली में 4 शेष बचे अतः रोहिणी नक्षत्र पर शनि, मंगल या राहु का गोचर धन हानि एवं सुख में कमी कारक होगा । इसी प्रकार लग्न से शनि एवं शनि से लग्न वर्ष संख्या क्रमशः 16 तथा 32वां वर्ष अनिष्ट कारक होगा । शनि से अष्टम स्थान पर 4 रेखा को शोध्य पिंड 149 से गुणा करके 27 का भाग देने पर शेष 2 से भरणी तथा इसके त्रिकोण नक्षत्र आर्द्रा तथा मघा से शनि का गोचर जातक के लिए अनिष्ट कारक होगा। शनि के अष्टक वर्ग में शून्य रेखा की राशि से शनि या गोचर होने तथा पाप ग्रह का भी योग होने पर निश्चित मृत्यु होती है । अन्य मत से जातक के कारक ग्रहों के नक्षत्रों से शनि का गोचर होने से जो ग्रह जिस भाव का कारक होता है शनि उसी भाव को नष्ट करता है ।

रविः पिता शशी माता भ्राता भौमा बुधः सुहृतः ।

मातुलेयः स्मृते जीवा ज्ञान पुण्ये सितः स्त्रिय ।।

एषा मृक्षे च तत्काले मरणं कुरुते शनिः ।[2]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड, अध्याय 5, श्लोक 70-71, खेमराज श्रीकृष्णदास, वेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. "अष्टकवर्ग महानिबन्ध" : पं० सुरेश चन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशनंस, नई दिल्ली, पेज 289।

मंगल के अष्टक वर्ग में भी लग्न से मंगल तथा मंगल से लग्न तथा रेखाओं के योग वर्षों में शस्त्र या अग्नि से भय संभव होता है । शनि तथा मंगल दोनों के उपरोक्त रेखा योग में शुभ ग्रह का प्रभाव न होने पर हानि, चिन्ता होती है । इस प्रकार इस महाग्रन्थ में साक्षात ज्योति स्वरुप महर्षि पाराशर ने अष्टक वर्ग के माध्यम से सभी ग्रहों के अलग–अलग अष्टक वर्ग बनाकर उनके द्वारा जातक के तथा कुण्डली से सम्बद्ध सभी स्थानों का विशद फलादेश किया है । इसके पश्चात् उन्होंने सभी ग्रहों का सामूहिक (सर्वाष्टक वर्ग) का फल बताने का विधान भी किया ।

सर्वाष्टक फल :- इस प्रकरण में बताया गया है कि किसी भी भाव में 18 से 25 रेखाएं कमजोर, 25 से 30 मध्यम तथा 30 से अधिक होने पर भाव को बलवान बना देती है ।

उदाहरण कुण्डली का पंचम भाव कमजोर, सात, आठ, नौ भाव मध्यम तथा शेष बलवान है। इसकी सहायता से शुभ दिशा, आयु का शुभ भाग मृत्यु समय तथा प्रत्येक भाव का शुभ फल मिलने का समय भी निकाला जाता है ।

शुभ दिशा :- 12, 11, 1 भाव की रेखाओं का योग पूर्व दिशा का 2, 3, 4 का उत्तर दिशा का 5, 6, 7 पश्चिम का तथा 8, 9, 10 दक्षिण दिशा के कारक हैं इनमें पड़ने वाली रेखाओं का योग जिस दशा का सर्वाधिक होगा वही दिशा सबसे लाभकारी होगी साथ ही जिस दिशा में सौम्य ग्रह उच्च, स्वगृही तथा उदित हो वह भी लाभकारी होगी ।

प्रादक्षिण्यादिभानां सकलफल युतिं दिक्चतुष्कक्रमेण कृत्वा।
तदाभ्यागतो यः समधिकफलतः शोभनं हानिमल्पात् ।।
सौम्याः स्वोच्चसवगेहोदितखचरयुते दिग्विभागे स्वकार्ये
वित्तेशाशासु वित्तं मृतिपति गत दिग्भागगे देहनाशः।[1]

शुभ आयु वर्ग :- मीन, मेष, वृष, मिथुन, आयु का प्रथम भाग, कर्क, सिंह, कन्या, तुला

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड अध्याय 5, श्लोक 85-86, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

मध्या भाग तथा वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ आयु के तृतीय भाग के द्योतक हैं । इनमें से कि जिस आयु भाग की रेखाओं का योग अधिक हो उसमें सुख धन आदि विशेष होता है।[1] अतः अधिक अन्तर आने पर अधिक उतार व चढ़ाव तथा लगभग समान योग रहने पर जीवन सामान्यतः एक समान सुख सुविधा पूर्ण होगा। उदाहरण कुण्डली में आयु के मध्य भाग में सर्वाधिक 141 रेखाएं हैं अतः यह श्रेष्ठ चाल होगी ।

गुरु राहु फल :- यदि किसी का जन्म लग्न, धनु या मीन हो तथा उसमें राहु हो तो गोचर में गुरु धनु या मीन राशि में होने पर अथवा इनके त्रिकोण में होने पर अरिष्ट कारका होगा यदि इसका षष्टेश से भी सम्बन्ध हो तो मृत्यु की संभावना होती है ।[2]

मृत्यु मास, दिन, लग्न ज्ञात करना :- अष्टक वर्ग की सहायता से मृत्यु कारक मास, दिन तथा लग्न का भी पता लगाया जा सकता है । अष्टम भाव का स्वामी जिस राशि में हो उसके त्रिकाण शोधन के बाद फल से अष्टम भाव के फल को गुणा करके 12 से भाग देने पर शेष बची राशि में सूर्य का गोचर मारक होता है । इसी प्रकार पिता के लिए दशम भाव से दशम् तथा माता के लिए चतुर्थ भाव से चतुर्थ, भ्राता के लिए पंचम भाव आदि का गणित करके अरिष्ट मास निकाला जा सकता है ।[3] इसी प्रकार अष्टमेश जिस द्वादशांस में हो उस राशि से त्रिकोण मे राहु का गोचर हो तथा सूर्य अष्टमेश से जिस त्रिकोण में राहु का गोचर हो तथा सूर्य अष्टमेश से जि[illegible] में हो ये दोनो राहु तथा सूर्य का योग जिस सौर मास में हो वह मृत्यु कारक होता[illegible]

मृत्यु दिवस :- सूर्य की राशि, अंश, घटी तथा राहु की भी यही गणनाएं लेकर दोनो की घटी बना लें इसे 21600 से भाग करें, भागफल को सूर्य के घटी मान में जोड़कर 60 का भाग देकर अंश तथा फिर 30 का भाग देकर राशि अंश कला बना ले । यह सूर्य का स्पष्ट होगा

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड, अध्याय 5, श्लोक 91, खेमराज श्रीकृष्णदास, वेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. उपरोक्त, अध्याय 5, श्लोक 92-93 ।
3. उपरोक्त, अध्याय 5, श्लोक 89-90 ।
4. उपरोक्त, अध्याय 5, श्लोक 96-97 ।

और इसी दिन जातक की मृत्यु होगी ।

चन्द्रमा से भी दिवस का ज्ञान होता है, अष्टमेश की राशि से त्रिकोण मे चन्द्रमा आने पर अथवा अष्टमेश जिस नवांश में हो उससे 5 या 9 में चन्द्रमा आने पर मृत्यु होती है।

मृत्यु लग्न :- जन्म लग्न अथवा जन्मकालीन चन्द्रमा जिस नवांश में हो उससे 64वीं नवांश राशि के लग्न में मृत्यु होगी। लग्न या अष्टम भाव के त्रिकोण राशि के लग्न में से जिसमें कम रेखा हो उसी में मृत्यु होगी।

भाव फल :- सर्वाष्टक वर्ग में जिन भावों में तथा राशियों में 30 से अधिक रेखा हो वे शुभ होते है। 25 से 30 तक मध्यम तथा 25 से कम रेखा वाली राशियां एवं भाव अशुभ फल वाले होते हैं। यदि अधिक रेखाओं के साथ इन राशियों में शुभ ग्रह भी हों तो निश्चय ही श्रेष्ठ फल मिलता है ।

त्रिंशाधिकफला ये स्यू राशयस्ते शुभप्रदाः ।
त्रिशांत पुचविंशादिराश्यो मध्यमाः स्मृताः ।।
अतिक्षीणफला ये च राशयः कष्ट दुःखदाः ।
श्रेष्ठराशिषु सर्वेषु सुकार्याणि कारयेत् ।।[1]

अष्टक वर्ग से भाग्यशाली पुरुषों के लक्षण भी प्रदर्शित होते हैं । यथा यदि जातक के एकादश भाव में दशम् तथा द्वादश भाव से अधिक रेखाएं हो वह धनी, सम्पन्न होगा। इसी प्रकार व्यय भाव से लग्न तथा धन भाव में अधिक रेखा होना भी अच्दी आर्थिक स्थिति का द्योतक है।[2] अन्य आधुनिक मत से व्यय भाव में अधिक रेखाओं का होना विदेश से धन आगमन आगमन की सूचना देता है इसी प्रकार छठे स्थान शत्रु भाव बलवान होने पर व्यक्ति प्रतिस्पर्धा में लाभ प्राप्त करता है चाहे वह चुनाव, झगड़ा या प्रतियोगिता परीक्षा हो ।[3] परन्तु

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड, अध्याय 5, श्लोक 102-103 खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. उपरोक्त, अध्याय 5, श्लोक 105-106 ।
3. "डोट्स ऑफ डेस्टिनी", विनय आदित्य, सिस्टम विजन, दिल्ली, पेज 25।

इस ग्रन्थ में ऐसी नहीं मिलता है । उदाहरण कुंडली में दशम भाव में 34 एकादश में 37 द्वादश में 32 लग्न में 39 तथा धन स्थान में 36 रेखाएं है। अतः महर्षि पराशर के कथनानुसार यह जातक धनवान एवं सभी सुख सुविधा युक्त होगा ।

शुभ-अशुभ वर्ष :- सर्वाष्टक वर्ग से जीवन के अशुभ वर्षो का भी पता चलता है । लग्न से शनि तक तथा शनि से लग्न तक अलग–अलग रेखाओं का योग करके 7 से गुणा करके 27 से भाग देने पर लब्धि वर्ष संख्या में जातक को कष्ट होगा । दोनो में अशुभ वर्षो मे कोई भी शुभ कार्य व्यापार, कृषि, व्यापार में हानि का योग होता है।[1] अन्य मत के अनुसार इसी सूत्र की सहायता से बुध, गुरु तथा शुक्र की स्थिति के अनुसार शुभ वर्ष भी निकाले जा सकते है।[2]

उदाहरण कुंडली में उपरोक्त नियम लागू करने पर :–

लग्न से शनि तक रेखाएं $39 + 36 + 34 + 33 = \frac{142 \times 7}{27} = 36$ लब्धि, 22 शेष

शनि से तक रेखाएं $33 + 24 + 34\ 28 + 23 + 28 + 34 + 37 + 32 + 39 = \frac{316 \times 7}{27}$
$= 81$ लब्धि, 25 शेष

लग्न से मंगल तक रेखाएं $36 + 39 = \frac{75 \times 7}{27} = 19$ लब्धि, 12 शेष

मंगल से लग्न तक रेखाएं $\frac{386 \times 7}{27} = 100$ लब्धि, 2 शेष

लग्न से राहु तक रेखाएं $39 + 36 + 34 + 33 + 29 + 34 + 28 + 27 + 28 = \frac{283 \times 7}{27}$
$= 73$ लब्धि, 10 शेष ।

राहु से लग्न तक रेखाएं $28 + 34 + 37 + 32 + 39 = \frac{170 \times 7}{27} = 44$ लब्धि, 2 शेष

इस प्रकार जातक की आयु का 36वां, 81वां, 19वां, 100वां, 73वां तथा 44वां वर्ष अनिष्ट कारक होगा । जबकि शेष बचने वाली संख्या 22, 25, 12, 2, 10 से सम्बन्धित

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड, अध्याय 5, श्लोक 111-115 मुम्बई ।
2. "डोट्स ऑफ डेस्टिनी", विनय आदित्य, सिस्टम विजन, दिल्ली, पेज 22-23।

नक्षत्रों पर से शनि, राहु, मंगल का गोचर भी अनिष्ट फल देगा ।

इसी प्रकार लग्न से शुक्र तक रेखाएं 39+36+24 = $\frac{109 \times 7}{27}$ = 28 लब्धि, 7 शेष

शुक्र से लग्न तक रेखाएं = $\frac{350 \times 7}{27}$ = 90 लब्धि, 20 शेष

लग्न से बृहस्पति पर्यन्त रेखाएं 39+36+34+33+24+34 = $\frac{200 \times 7}{27}$ = 51 लब्धि, 33 शेष

बृहस्पति से लग्न तक रेखाएं34+28+27+28+34+37+32+39 = $\frac{259 \times 7}{27}$ = 67लब्धि,4शेष

अतः जातक की आयु का 28 वां, 90वां, 51वां तथा 67 वां वर्ष श्रेष्ठ फलदायी होगा। इसी प्रकार नक्षत्र संख्या 7, 20, 23, 4 पर से गुरु तथा शुक्र कर गोचर श्रेष्ठ फल देगा ।

ग्रहों का शुभाशुभ फल :- "बृहत्पाराशर" के अनुसार एक ग्रह प्रत्येक राशि में 0 से 8 तक शुभ अंक दे सकता है । चार से अधिक रेखा जिस राशि में हो उसमें उस ग्रह का गोचर उत्तम फल देगा जबकि इससे कम में अनिष्ट फल देगा । कहने का अर्थ यह है कि अधिक रेखा संख्या मे अधिक अच्छा गोचर में ग्रह देगा जबकि रेखा संख्या घटने पर फल भी घटता जाएगा । सूर्य के गोचर से प्रत्येक मास का तथा चन्द्रमा के रेखा राशि में गोचर से प्रत्येक दिन का फल देखा जाता है।[1]

इस प्रकार अष्टक वर्ग की सहायता से जन्म कुण्डली का सम्पूर्ण अध्ययन किया जा सकता है । वस्तुतः अष्टक वर्ग कुंडली में पाए गए योगो का फलित होने का सही समय निकालने में सटीक बढ़ता है ।

* * *

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड, अध्याय 5, श्लोक 119, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

अध्याय-17

स्त्रीजातक अध्याय

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", खेमराज श्रीकृष्ण दास वाले ग्रन्थ में स्त्रीजातकफल अध्याय स्वतन्त्र रुप से नहीं दिया गया है । यह "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं० देव चन्द्र झा वाले ग्रन्थ में अध्याय 80 में दिया गया है । यह अध्याय अपने आप में बड़ा महत्वपूर्ण है । इसमें मैत्रेय तथा भगवान पराशर में प्रश्न उत्तर शैली में लिखा गया है । इस अध्याय मे कुल 56 श्लोक लिखे हैं जिसमे स्त्री जातक का फल लिया है तो इस प्रकार है :–

मैत्रेय उवाच :-

श्रुतं भगवता प्रोक्तं पुंसा जातकजं फलम् ।

नारीणमथ कथं वेद्यमेतद् ब्रवीहि में ।।[1]

मैत्रेय ने कहा (हे महर्षे) पुरुषों का जातक फल मैंने सुना । स्त्रियों का वह फल कैसे जाना जा सकता है, कृपया इसे बतलाइए । पराशर ने कहा (हे मैत्रेय) तुम्हारा प्रश्न अच्छा है अतः मैं बतलाता हूं सुनो ! महर्षियों ने पुरुषों की तरह स्त्रियों का भी पूवोक्त जातक फल कहा है, अर्थात् वे ही स्त्रियों पर भी लागू समझना । फिर भी उसमें जो विशेष सम्भव हैं उसे भी सुनो ।

स्त्रियों का शारीरिक फल लग्न से, सन्तति–विचार पञ्चम से, पति–सौख्य सप्तम् से, वैधव्य का विचार अष्टम से करना चाहिए । जो फल स्त्री में सम्भव नहीं हो वह उसके पति में लागू समझना चाहिए ।

1. स्त्री जन्मकुण्डली के लग्न तथा चन्द्र समराशिस्थ हों तो नारी सुशीला, सुलक्षणा, स्त्रियोचित स्वभावानुरूप गुणों से युक्त होती है । उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि रहे तो

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", अध्याय 80 पं० देवचन्द्र झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

वह स्वस्थ, सौख्ययुक्त तथा सुभगा होती है ।

2. यदि लग्न, चन्द्र, विषम राशिगत होकर पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हों तो वह स्त्री शील गुण–रहित एवं दुर्भगा होती है । शुभाशुभ ग्रहों के योग एवं दृष्टि से शुभाशुभ (शीलगुणों का सदसत्त्व) कहना । अतः लग्न–चन्द्र में एक समराशि दूसरे विषम में तथा शुभाशुभ दोनों तरह के ग्रहों की दृष्टि रहे तो मिश्रित फल, (पुरुष, स्त्री दोनों के शील गुणों से युक्ता) होती है। लग्न और चन्द्रमा में जो प्रबल हों, उनका गुण सर्वांश रूप में समझना ।

3. लग्न चन्द्रमा में जो प्रबल हो उसकी राशि या तदधिष्ठित राशि के त्रिशांश से स्त्रियों का फल (विशेष रूप से) समझना चाहिए ।

4. लग्न, चन्द्रमा में बली जो हो वह कुजगृह (मेष, वृश्चिक)स्थ होकर मंगल के ही त्रिशांश में हो तो कन्या दुष्टा अर्थात् कन्यावस्था में ही परपुरुष भुक्ता होती है । शुक्र त्रिशांश में हो तो विवाहान्तर दुश्चरित्रा, बुध त्रिशांश में मायाविनी, शनि–त्रिशांश में हो तो दासी, तथा गुरु के त्रिशांश में हो तो सती होती है । यदि बुध राशि (कन्या मिथुन) में होकर कुजत्रिशांश में हो तो कपटयुक्ता, शुक्रत्रिशांश में -- कामुकी, बुध त्रिशांश में गुणापेता, शनित्रिशांश में क्लीबतायुक्ता, गुरु के त्रिशांश में हो तो साध्वी होती है ।

5. शुक्रराशि (वृष, तुला) में होकर यदि वे (लग्न–चन्द्रमा में बली) कुजत्रिशांश में हो तो चरित्रहीना, शुक्र के ही त्रिशांश में रहें तो विख्यातगुणा, बुधत्रिशांश मे सत्कलाओं से परिपूर्णा, गुरुत्रिशांश में रहें तो गुणवती तथा शनित्रिशांश में रहने पर दीधिषू (पुनर्भू = सगाई करने वाली) कन्या होती है । चन्द्रराशि कर्क में होकर वे (लग्न, चन्द्रमा में बली) यदि मंगल के त्रिशांश मे रहें तो स्वतन्त्रता, शुक्रत्रिशांश में हो तो कुलटा, बुध त्रिशांश में रहें तो शिल्पकलाओं में प्रवीणा, गुरुत्रिशांश में हो तो

बहुगुणयुक्ता, शनित्रिशांश में रहें तो पतिघातिनी होती है ।

6. सूर्यराशि सिंह में होकर वे (लग्न चन्द्र में बली) भौम त्रिशांश में रहें तो वक्रवादिनी, शुक्रत्रिशांश में रहे तो सती, बुधत्रिशांश में रहें तो पुरुषाकारा, गुरुत्रिशांश में रहे तो रानी, शनित्रिशांश में रहने पर भ्रष्टा होती है ।

7. गुरुराशि (धन मीन) मे रहते हुए वे भौमत्रिशांश में रहें तो अनेक गुणवती, शुक्रत्रिशांश में पुंश्चली, बुधत्रिशांश में विज्ञानवेत्री, गुरुत्रिशांश में अधिक गुणवती, शनित्रिशांश में रहें तो अल्परति करते वाली होती है ।

8. शनिराशि (मकर कुम्भ) में होकर वे (लग्न–चन्द्रमा में बली) भौमत्रिशांश में रहे तो दासी, शुक्रत्रिशांश में हो तो विदुषी, बुधत्रिशांश में हों तो पापयुक्ता तथा नीच पुरुष के साथ सुरत करने वाली, गुरुत्रिशांश में सती तथा शनित्रिशांश मे भी नीच पुरुषगामिनी होती हैं ।

9. सप्तम भवन निर्ग्रह तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हों तो उसका पति कापुरुष होता है । सप्तम भाव चन्द्र राशि का हो तो उस स्त्री का स्वामी परदेशी होता है । शनि बुध दोनों उसमें हो तो उसका पति पुंसत्वविहीन होता है ।

10. सप्तम में सूर्य रहें तो स्त्री पतित्यक्ता, मंगल में रहने पर बालविधवा, होती है । पापदृष्ट शनि सप्तम में रहें तो अविवाहिता ही वह बूढ़ी हो जाती है । शुभ ग्रह सप्तम में हों तो कन्या सधवा, साध्वी और असद्ग्रह उसमें हों तो वैधव्ययुक्ता होती हैं । शुभ पाप दोनों तरह के ग्रह रहें तो वह मिश्रित फलभागिनी होती हुई सगाई (पुनर्भूः) करने वाली होती है । शुक्र तथा मंगल परस्पर एक दूसरे के नवांश में हों तो कन्या परपुरुषगामिनी होती है । लग्नगत सचन्द्र, शुक्र या शनि की राशि (वृष तुला, मकर तथा कुम्भ) में हो वह स्त्री माता के साथ पांशुला होती है ।

11. सप्तम भवन में भौमराशि या भौमनवांश हो तो उस स्त्री का पति क्रोधी तथा लम्पट

होता है । वहीं बुध राशि (मिथुन, कन्या) या बुध का नवांश हों तो स्त्री का पति सत्कलाभिज्ञ सुपण्डित होता है । गुरु की राशि या गुरु नवांश वहां हों तो स्त्री का पति अनेकविध गुणों से युक्त, सयतेन्द्रिय होता है । शुक्रराशि (वृष, तुला) या शुक्र का नवांश सप्तम में हो तो पति सौभाग्यशील, सुन्दर तथा स्त्रियों का प्रेमी, शनिराशि (मकर, कुम्भ) या शनिनवांश सप्तम में हो तो वह मूर्ख तथा जरावस्थापन्न (बूढ़ा), सिंह राशि या सिंह का नवांश सप्तमगत तो पति अति कठोर एवं बहुत कार्य करने वाला, कर्क राशि या कर्क का नवांश सप्तमगत हो तो वह सुरूप, कामी, तथा मृदुल होता है । मिश्रित राशि एवं नवांश में मिश्रित फल, तथा राशि नवांश के बलानुसार फलादेश करना चाहिए ।

12. स्त्री के अष्टम भाव में सूर्य रहें तो वह दरिद्रा, दुःखिता, खिन्ना, क्षतांगी तथा धर्मपराङ्मुख होती हैं ।

13. अष्टम में चन्द्र हों तो उसकी दृष्टि, स्तन तथा भग कुत्सित होते हैं । साथ वस्त्रालंकार रहित वह रुग्णा तथा निन्दिता भी होती हैं ।

14. अष्टमगत भौम के होने पर स्त्री रोगयुक्ता, दुर्बला, निष्प्रभा (कान्तिहीन) दुःख संताप से शोकित विधवा होती है ।

15. बुध के अष्टमस्थ होने पर स्त्री भीत तथा झगड़ालू, धन, धर्म, अभिमान से रहित, गुणहीन होती हैं ।

16. गुरु के अष्टमगत होने पर वह शीलरहित अल्पसन्तति वाली, पतित्यक्ता, मोटा हाथ–पैर वाली तथा अधिक खाने वाली होती है ।

17. शुक्र अष्टमस्थ हों तो स्त्री प्रमत्त, दरिद्रा, गन्दी, कपट करनेवाली, क्रूरा तथा धर्मरहिता होती है।

18. शनि अष्टमस्थ हों तो वह गन्दी, ठगी, दुष्टस्वभाव वाली तथा पतिसौख्य से विहीन

होती हैं ।

19. राहु के अष्टमस्थ होने पर स्त्री क्रूर–हृदया, रुग्णा, परित्यक्ता (जिसे पति ने छोड़ रखा हो) कुलटा तथा कुरूपा होती है ।

वन्ध्या योग तथा शान्ति –

लग्नगत शुक्र तथा चन्द्र, शनि भौम से दृष्ट हों तथा पञ्चम भवन पापग्रह युक्त तथा पापदृष्ट हो तो स्त्री वन्ध्या होती है । वह शिव स्नपन (रुद्राभिषेक) या विष्णु–कीर्तन से सन्तानयुक्त होवे ।

दुर्भगा-सुभगा योग –

सप्तम भाव में पापग्रह का नवांश हो, और शनि की दृष्टि भी उस पर रहे तो स्त्री दुर्भगा, सप्तगत शुभग्रह के नवांश में वह पतिबल्लभा तथा सुभगा होती है ।

पितृगृहसुखयोग –

बुधराशि (मिथुन–कन्या) लग्न शुक्र तथा चन्द्रमा से युक्त हो तो वह स्त्री पितृगृह में सर्वविध सौख्यपूर्णा होती है ।

सौख्यकृद्योग –

लग्न में शुक्र, चन्द्र, बुध हों, तो कन्या अनेक सौख्य तथा गुणों से युक्त होती है । गुरु लग्नगत हों तो पुत्र, धन, सुख, समृद्धि से युक्त होती है ।

वन्ध्या काकबन्ध्या योग –

लग्न से अष्टम में अपने घर के सूर्य, चन्द्र हों तो (अष्टमभाव में कर्क या सिंह हो और उसमं सूर्य चन्द्र दोनों हों) तो कन्यावन्ध्या होती है । बुधक्षेत्र (मिथुन, कन्या) या चन्द्रगृह कर्क अष्टम हों और उसमें बुध तथा चन्द्रमा हों तो वह कन्या काकबन्ध्या होती है ।

शनि, मंगल की राशि (मकर, कुम्भ, मेष, वृश्चिक) लग्न में शुक्र चन्द्रमा का संयोग तथा पापग्रह की दृष्टि हो तो कन्या निश्चयतः वन्ध्या (बांझ) होती है ।

मृतवत्सा योग –

सप्तम भवन सूर्य, राहु से युक्त या अष्टम शुक्र, गुरु तथा राहु से युक्त हो, पञ्चम भी सपाप हो तो कन्या मृतवत्सा होती है ।

अष्टम में शुक्र, गुरु, भौम हों या सप्तमस्थ मंगल शनि से युक्त या इष्ट हों तो कन्या गर्भस्रावी होती है ।

कुलहन्तृयोग –

जन्म समय में लग्न तथा चन्द्रमा दोनों में पापग्रह की कर्त्तरी (द्वादश में मार्गी और द्वितीय में वक्री पापग्रह) हो तो वह स्त्री पति तथा पिता के वंश को नष्ट करने वाली होती है ।

विषकन्या योग (1) –

भद्रातिथि (1, 7, 12), रवि, मंगल तथा शनि दिन, और आश्लेषा, शतभिषा, कृतिका नक्षत्र इन तीनों के संयोग में जन्म लेने वाली कन्या विषसंज्ञक तथा दुष्फल को भोगने वाली होती हैं ।

(2) जिसके जन्मकाल में – लग्न में एक शुभग्रह और एक पापग्रह तथा षष्ट में दो पापग्रह हो तो वह कन्या विषसंज्ञक होती हैं ।

विषकन्याफल –

विषयोगोत्पन्न कन्या मृतवत्सा, वस्त्रभूषणविहीन तथा शोकसन्तापयुक्ता होती है ।

विषयोगभगं –

लग्न या चन्द्रमा से सप्तम में शुभग्रह या सप्तमेष हो तो यह विषयोग निःसन्दिग्ध नष्ट हो जाता हैं ।

पतिघातकयोग (मंगलिक योग) –

लग्न से 1, 4, 7, 8, 12 में स्थित मंगल शुभग्रह के योग या दृष्टि से विहीन हों तो कन्या विधवा हो जाती हैं । उक्त स्थान में चन्द्रमा से भी भौम या शनि हों तो स्त्री के पति का

निधन होता है । वर की कुण्डली में ऐसा योग हो तो स्त्री की मृत्यु कहनी चाहिए ।

वैधव्ययोगभंग –

स्त्रियों का वैधव्यकारक उपर्युक्त योग पुरुष की कुण्डली में हो (1, 4, 7, 8, 12 में मंगल हो) तो स्त्री का मरण होता है । दोनों की कुण्डली में यह स्थिति रहे तो कल्याण कहना चाहिए ।

जन्मकाल में शनि, शुक्र परस्पर नवांशगत हों (शनि, नवांशस्थ शुक्र तथा शुक्र, नवांशस्थ शनि हों) दोनों मे पारस्परिक दृष्टि भी हो, अथवा शुक्रराशि (वृष, तुला) लग्न में कुम्भ का नवांश हो तो उत्पन्न कन्या युवावस्था आने पर पुरुषाकार अपनी सखी के द्वारा (अप्राकृतिक मैथुन क्रिया से) अपनी मदनाग्नि को शान्त करती है ।

वेदान्तादिशास्त्रज्ञतायोग –

जन्म समय में मंगल, शुक्र, बुध तथा गुरु प्रबल हों, लग्न सम राशि का हो तो कन्या वेदान्त तथा अनेक शास्त्रों में निपुण होती है ।

सन्यासयोग –

सप्तमभाव में पापग्रह, नवम में भी कोई ग्रह रहें तो वह स्त्री सन्यास्ता, विशेषतः पापग्रह की अर्न्तदशा में होती है ।

मृत्युयोग –

अष्टम भाव में शुभ तथा पापग्रह तुल्य पराक्रम (बल) वाले हों तो स्त्री पति के साथ दिवंगत होती है । अष्टम में शुभग्रह पापग्रह की दृष्टि या युति से वंचित हो तो पति के पूर्व ही स्त्री मरती है ।

* * *

अध्याय-18

प्रश्न प्रकरणाध्याय

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड, अध्याय 22 में 78 श्लोक दिये हैं । जबकि "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं० देवचन्द्र झा वाले ग्रन्थ में कुल 47 श्लोक दिये हैं । मूल ग्रन्थ में ज्योतिष के ज्ञान के लिए 'शिव शक्ति' दोनों के मन्त्र कहे गए हैं । जो निम्न प्रकार से हैं :–

"ॐ ऐं गौरी वद वद गिरि परमैश्र्य सिद्धयर्थ में" यह शक्ति का मन्त्र है ।[1]

"ॐ सर्वज्ञ नाथ पार्वती पते शिव, शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मिपालय ज्ञानं प्रदय" यह शिव का मन्त्र है ।[2]

दोनों मन्त्रों के विनियोग :–

अन्योर्मत्रयोः दक्षिणामूर्ति ऋषि गौरी परमेश्वरी सर्वज्ञः शिवश्च देवते ।
मायत्र्यनुष्टु भौ छन्दसी मम त्रिकालदर्शक ज्योतिः शस्त्र ज्ञानप्राप्तये जपे विनियोगः।।

उपरोक्त मन्त्र विनयोग का है ।

विनियोग :- विनियोग शुभ मुहूर्त में 'शिव शक्ति के मन्त्रों का संकल्प कर, दूध, दीप, पुष्प जल रखें। दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग पढ़कर तीन बार दाहिनी तरफ भूमि में डाल दें । यह विनियोग होता है ।

पुरश्चरण :- यह सवा लाख मन्त्र जप कर दशांश हवन, हवन के दशांश तर्पण तथा तर्पण के दशांश मार्जन, मार्जन के दशांश ब्राह्मण भोज तथा गुरु को दक्षिणा देने पर पुरश्चरण होता है ।

करन्यास, अंगन्यास **'ऐं'** बीज मन्त्र से करें। क्योंकि यह बीज भगवती सरस्वती का है।

ध्यान :- हिमालय पर्वत पर अति सुन्दर बगीचे में वट वृक्ष के नीचे उत्तम आसन पर स्थित

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 47, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई, पेज 627 ।
2. वही, पेज 627 ।
3. वही, पेज 627 ।

शोभायुक्त, श्वेतवस्त्र सम्पन्न, संगमुख, श्री भवती गौरी तथा ध्यानस्थ, त्रिनेत्र चतुर्भुज भालचन्द्र, जटाधारी, सर्गनियनता, देवाधिदेव, महादेव साक्षात् परब्रह्मस्वरुप शिव का ध्यान करें।

इस प्रकार उपासना करके गुरु द्वारा भूगोल, खगोल की गणित का अभ्यास करके इस होराशास्त्र का जातक फल सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करकें वह सर्वहितैषी, मितभाषी ब्राह्मण दैवज्ञ (अर्थात् भू देव) और त्रिकाल दर्शी होता है । उसकी वाणी कभी मिथ्या नहीं होती ।[1]

इसी प्रकार पूछने वाल भी निष्ठावान, निष्कपट, नम्र, लोभ रहित होकर द्रव्य (भेंट) रखकर यदि दरिद्र हो तो फल, पुष्पादि से 'दैवज्ञ' को पूजित करके प्रसन्न चित्त से प्रश्न करें।

1. दैवज्ञ को चाहिए कि वह पूर्वाभिमुख बैठकर प्रथम राशि चक्र लिखे और आरुढ लग्न का विचार करें ।
2. इस रीति से पृच्छ जिस दिशा में बैठा हो वह आरुढ़ लग्न जाने या पृच्छक जिस राशि का स्पर्श करे वह आरुढ़ लग्न जाने ।
3. वृषादि चार राशि मेष बीथी और वृश्चिकादि चार राशि मिथुन बीथी तथा शेष राशि वृषबीथी हैं ।
4. आरुढ़ लग्न से प्रश्न लग्न तक जो संख्या हो उतनी संख्या की राशि बीथी में देखना, उस बीथी की राशि छत्र संज्ञक होती है ।

बीथी ज्ञान चक्र

मेष	मिथुन	वृष
2	8	1
3	9	12
4	10	7
5	11	6

राशि चक्र

12	1	2	3
11			4
10			5
9	8	7	6

किस भाव से क्या देखें :- "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं० देवचन्द्र झा वाली पुस्तक में श्लोक

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पूर्वखण्ड, अध्याय 47, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई, पेज 628 ।

6 से 11 तक यह ज्ञान लिखा है कि किस भाव से क्या देखें जो निम्न प्रकार से है :–

1. लग्न से प्रश्नकर्ता की शील, सुख–दुख का विचार करें ।
2. द्वितीय से सुवर्णादि रत्नों का तथा लाभ हानि का विचार करें ।
3. तृतीय भाव से पराक्रम, भ्राता तथा मृत्युसुख का विचार करें ।
4. चतुर्थ भाव से चित्र, घर, गांव, माता तथा बहन का विचार करें ।
5. पंचम भाव से सन्तान, बुद्धि, शस्त्रों का विचार करें ।
6. षष्ट भाव से शत्रु, मामा के रोग का विचार करें ।
7. सप्तम से वर्णो का विचार करें ।
8. अष्टम से मृत्यु, **युद्ध**, रोगभय का विचार करें ।
9. नवम भाव से वीर्य, कूप, देवालयों के निर्माण का विचार करें ।
10. दशम से राज्य, पितृसुख तथा राजकार्य का विचार करें ।
11. एकादश से कन्या, काञ्चन, धान्य तथा वाहनों के लाभ सम्बन्धी का विचार करें ।
12. द्वादश से शत्रु, क्रत अवरोध, भोजदान आदि कार्यो का विचार करें ।[1]

आधुनिक मत से तथा अन्य मत से :-

आचार्य वादरायण कृत ग्रन्थ, प्रश्न विद्या व्याख्या, डॉ० सुरेश चन्द्र मिश्र, में इस विषय में काफी विस्तार से लिखा है जो निम्न प्रकार से है :–

i) **प्रथम भाव** - शरीर कष्ट सर्व प्रश्न, आयु, सुख, विपत्ति, स्वरुप, मुख, स्वास्थ्य, व्यवहार, साहस, यश, भांजे की बहू, स्वयं का अपना विचार ।

ii) **द्वितीय भाव** - धन, धातु, सोने, चांदी व अनाज का व्यापार, कुटुम्ब की शान्ति, कपड़े, खजाना, बचत, ऐश्वर्य, सुख, नेत्र व रास्ते का विचार, जमानत देना, तेजी मन्दी, जनरल मर्चेन्ट, कपड़े की दुकान, ट्रेवलर्स चैक, रास्ते का कष्ट, वाणी का

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं० देवचन्द्र झा, अध्याय-48, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, पेज 638 ।

प्रयोग, शेयर बाजार व इसी प्रकार की आर्थिक क्रियाएं यथा ऋण लेना, देना, गिरवी रखना, कम्पनी जमा खाता आदि ।

iii) **तृतीय भाव** - बहन, भाई, घरेलू नौकर, समुद्र यात्रा, साहस, भुजा परिश्रम, पुरुषार्थ, मुकदमे की हार जीत, सद्बुद्धि सैनय बल, सैनिक पदोन्नति, उद्योग व्यापार, भोजन, पुत्रवधू से सम्बन्ध व उसका स्वास्थ्य, संचार साधन, दलाली, ठेकेदारी, आवास परिवर्तन, यात्रा के साधन, पुस्तक व्यवसाय, बड़े महत्त्वपूर्ण कागजों पर हस्ताक्षर करना आदि ।

iv) **चतुर्थ भाव** - बाग–बगीचा, खेत, खलिहान, वाहन, लोकप्रियता, जन सम्पर्क, गड़ा धन, अचल सम्पत्ति, आवागमन , मित्र लाभ हानि, गृह प्रवेश, राजनीति से लाभ, पिता, माता, पद प्राप्ति, पैतृक सम्पति, पर्वतीय गुफाओं, कन्दराओं में प्रवेश या फंसना, दवाई उद्योग, प्राचीन भवन, सार्वजनिक स्थान, झूठे आरोप, नष्ट धन का स्थान, जड़ी–बूटियां, वेदाध्ययन।

v) **पंचम भाव** - विद्या, बुद्धि, सन्तान, परीक्षा में उत्तीर्ण अनुत्तीर्ण, गर्भस्थिति, ग्रन्थ रचना, वाक्पटुता, शिष्य, मन्त्र सिद्धि, गुप्त विद्याएं, सन्धि विग्रह, पुत्रसुख, धन लाभ, अचानक लाभ, सट्टा, लाटरी, जुआ आदि, कूटनीति, राजनीति, दादागिरी, पेट, अपहरण, कलात्मक उपलब्धियां, बलात्कार, राजदूत सम्बंध, खुशी के मौके, मनोरंजन, मशीनी सफलता, धार्मिक प्रवृत्ति, क्रूरता, स्पष्टवादिता ।

vi) **षष्ट भाव** - चाचा, मामा, मामा का घर, युद्ध, विवाद, हार–जीत, गाय, भैंस, ऊंट, भय, शंका, चोरी, अस्वास्थ्य, रोग, दांत, सेवक, क्रूर, कार्य, दुर्दशा, गुप्त तान्त्रिक प्रयोग, अग्निकांड, बड़ी दुर्घटनाएं, विस्फोट, गहरी चालबाजी, ऋण लेना, रोग संक्रमण, साझेदारी टूटना, तलाक, ज्येष्ठ पुत्र का व्यवसाय व परिवार, परीक्षा परिणाम, सुख, नेत्र रोग, भोजन की अनियमता, चोरी व उद्योग आदि ।

vii) **सप्तम भाव** - व्यापार, वस्तु का खरीदना, स्त्री, अपनी मृत्यु, सेवक, समीप दूर की यात्राएं, काम सुख, नपुंसकता, पति–पत्नी सम्बन्ध, नौकर, चोरी, यात्रा से वापसी, भांजा, प्रेम सम्बन्ध, दत्तक पुत्र, खोई वस्तु, कलात्मक कार्य, व्यवसाय का प्रारम्भ, चोरी का सामान, भूलना, सुख, विलासिता, वधू प्रवेश, समुद्री यात्रा, कानूनी बचाव, आय कर, जन सम्पर्क, विदेश सम्पर्क आदि ।

viii) **अष्टम भाव** - आयु, विरोधी, गहरी साजिश, पकड़ा जाना, कैद, किला या पर्वत, जंगल आदि दुर्गम स्थानों में गमन, हारना, नदी का तैरना, शत्रुओं का वध, स्त्री की मृत्यु, जहरीले जानवरों का डंक या काटना, धाव, चोट, बड़ी बीमारी, आकस्मिक दुर्घटना, बहुत बोलना, चमचागिरी, अपशकुन, चुगलखोरी, मृतक प्राणी, नष्ट धन, बदनामी, अपनी त्रुटियां, दहेज, अनुपार्जित धन, सर्जरी विद्या, सर्जरी से गुजरना, घाटा, ऋण चुकता होना आदि ।

ix) **नवम भाव** - स्वाध्याय, दीक्षा, मन्दिर, राजयोग, शुभकार्य, गुरु, साला, भाभी, देवर, तीर्थ यात्रा, पिता, भाग्योदय, जन कल्याण कार्य, परोपकार, उन्नति, यश, राज्य कृपा, पुस्तक प्रकाशन, कानूनी दांव–पेंच, अध्यापन कला, योगसिद्धि, कल्पना व स्वप्न, जलीय स्थान, कुएं आदि में गिरना, उच्च शिक्षा, नयी खोज, चतुष्पद सम्पत्ति, विदेशवास, किराये की सम्पत्ति आदि ।

x) **दशम भाव** - राज्य, मुद्रा, धन, विशेष स्थान, आकाश यात्रा, आकाशीय उपग्रह, दूसरे लोकों के समाचार, अधिकार, राजयोग, पदनाश, पदावनति, सम्मान, नगर, व्यापरिक, सामाजिक प्रतिष्ठा, अभिनन्दन, सम्मान, विदेश यात्रा, बदनामी, पिता, स्थायी नौकरी, जिम्मेवारी, चुनाव जीतना, जन सम्पर्क, तस्कर वृत्ति, दूसरे की सम्पत्ति को दबा लेना, जांच विनिवेश आदि ।

xi) **एकादश भाव** - काम में बढ़ोतरी, लाभ प्राप्ति, राजमान, बड़ा भाई, हाथ, सवारी,

जायदाद, वस्त्राभूषण, विद्या, धन, कन्या का लाभ, खरीदी वस्तु से लाभ, ससुर धन का अपहरण, समृद्धि, साझेदारी, रोग मुक्ति, बायां कान, दामाद, साले, शुभ समाचार आदि ।

xii) **द्वादश भाव** - त्याग, भोग, सांसारिक सुख, सन्यास, मोक्षेच्छा, विवाह, आंख, खेती, खर्च, चाचा, युद्ध में पराजय, धन का उपयोग, अस्थिभंग, हानि, पाप, अपराध, सजा होना, बाधाएं, भय दब्बूपन, स्वार्थ–हीनता, रुकावटें, गुप्त मंन्त्रणाएं, बदले की भावना, धोखेबाजी, जासूसी, नींद का सुख, अनपेक्षित मांग, धन की कमी, दान की वृत्ति, भेंट देना, जीवन का छिपा रहस्य, क्रोध, शरीर हानि, पद से हटाना, खतरा व कठिनाइयां आदि ।[1]

जो भाव प्रश्न लग्न में बली हो उसी की वृद्धि होगी । एक से अधिक कार्य स्थान होने पर उन सबसे विचार करना चाहिए । अर्थात् प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न जिस भाव से सम्बन्धित हो, उसी भाव कार्य भाव मानकर, उसके बलाबल से विचार करना चाहिए ।

प्रश्न के नियम :-

प्रायः एक ही समय एक ही प्रश्न पूछा जाना चाहिए । यदि एक से अधिक प्रश्न पूछे जाएं और लग्न वही हो तो प्रथम प्रश्न का उत्तर लग्न से देना चाहिए । दूसरे प्रश्न का उत्तर चन्द्र राशि को लग्न मानकर चन्द्र कुण्डली से देना चाहिए । तीसरे प्रश्न का उत्तर सूर्यराशि को लग्न मानकर सूर्यकुण्डली से देना चाहिए । तीन से अधिक का उत्तर एक समय में नहीं देना चाहिए । अन्यथा उत्तर सही नहीं होगा ।[2]

भावों का बलाबल विचार :-

भावः स्वस्वायिसत्खैर्न्युक्तो दृष्टोऽपि वर्धते ।

अशुभरीक्षितयुते नष्टो मिश्रैस्तु मध्यमः ।।[2]

---

1. "प्रश्न विद्या", आचार्य बादरायण, व्याख्या, डॉ० सुरेशचन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन, दिल्ली, पेज 55-57 ।
2. "सर्वांग ज्योतिष", डॉ० सुधीकान्त भारद्वाज, प्रश्नाध्याय, भारद्वाज पब्लिकेशन, दिल्ली, पेज 638 ।
3. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं० देवचन्द्र झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, पेज 638 ।

भाव अपने स्वामी या शुभ ग्रहों (बुध, गुरु, शुक्र तथा पूर्ण चन्द्र) से युक्त या दृष्ट हो तो वह भाव बलवान होता है । यदि वह पाप ग्रहो से (क्षीण चन्द्र, मंगल, सूर्य, राहू, केतु पाप युक्त, बुध से युक्त दृष्ट हो तो दुर्बल होता है । शुभ, अशुभ दोनों तरह के ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो मध्यम फलप्रद होता है ।

कपट प्रश्न :- कई बार दैवज्ञ के पास कपटी व्यक्ति भी आते हैं कि क्या यह कुछ जानता है या नहीं इस विचार के ज्ञान के लिए, प्रश्न लग्न कुण्डली में चन्द्र, शनि लग्नगत हो, बुध रश्मिहीन तथा सूर्य, कुम्भ राशिस्थ हो तो प्रश्न कर्ता दुष्टभाव से आया है, ऐसा समझना चाहिए ।

कार्य सिद्धि :-

1. प्रश्नलग्ने लग्न का, कार्यधीश कार्य गृह को देखता हो कार्य सिद्धि होती है ।
2. लग्नेश कार्य को कार्येश लग्न को देखता हो कार्य सिद्धि होती है ।
3. या अपने–अपने भाव पर स्थित लग्नेश कार्येश एक दूसरे के दृष्ट हो ।
4. लग्नेश, कार्येश पूर्ण चन्द्र से दृष्ट हो तो कार्य सिद्धि समझना ।

लेकिन "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", मुम्बई वाले ग्रन्थ में राहू काल का जिक्र दिया है । जहाँ राहूकाल का समावेश होगा वह कार्य का विनाश करेगा चाहे वह किसी भी भाव का कार्य है । चाहे रागी का प्रश्न है या कोई अन्य है ।

राहु की गति वक्र है और काल की गति मार्गी है । सूर्योदय से 50-50 पल प्रतिराशि भोग करते हैं । अतः एक राशि पर दिन–रात में बारम्बार समायोग होता है । सूर्यादि वारों में 1, 2, 3, 4, 5, 6, 8 घटिकाओं के हिसाब से 'राहु' पूर्वादि दिशाओं में विपरीत क्रम से 'काल' मार्गी क्रम से 2½ - 2½ घटी या 1-1 घर चलते है।

राहू वारक्रम से दिशा संचार :- रविवार को पूर्व से, सोमवार को उत्तर से, मंगल को आग्नेय से, बुध को नैऋत्य से, गुरु को दक्षिण से, शुक्र का पश्चिम से, शनि का वायु कोण से 1-1 घंटा क्रम, व्युत्क्रम से चलते हैं ।

1. रविवार को : पूर्व उत्तर, आग्नेय, नैर्ऋत्य, दक्षिण, पश्चिम ।
2. सोमवार को : ईशान, उत्तर, पश्चिम, इशान, दक्षिण ।
3. मंगलवार को : नैर्ऋत्य, वाव्य, आग्नेश, ईशान, दक्षिण क्रम में ।
4. बुधवार को : वाव्य, उत्तर, पूर्व, नैर्ऋत्य, दक्षिण, आग्नेय, पश्चिम, उत्तर क्रम से
5. गुरुवार को : वाव्य, ईशान, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, नैर्ऋत्य क्रम से ।
6. शुक्रवार को : वाव्य, पश्चिम, उत्तर, ईशान, आग्नेय, पश्चिम, दक्षिण क्रम से ।
7. शनिवार को : वाव्य, ईशान, उत्तर, पूर्व, आग्नेय, नैर्ऋत्य, वाव्य कर्म से चलते हैं।[1]

नक्षत्र, तिथि वार क्रम संचरण :-

ईशान, वायु, उत्तर, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम इन 7 दिशा विदिशाओं में अश्विनी से वर्तमान नक्षत्र तक जानना । इसी प्राकर तिथी, वार पर चलाना । प्रश्न, दिन दोनों पर संयोग हो तो मृत्यु तथा एक पर संयोग से व्याधि जानना ।

लेकिन राहूकाल का ज्योतिष और काल निर्णय ग्रन्थ[2] में कुछ निम्न प्रकार से दिया है। लेकिन यह सटीक बैठता है । इस ग्रन्थ में राहूकाल को प्रतिदिन 1 घण्टा 30 मिनट महीने के हिसाब से प्रत्येक वार में माना है । जिसका समय निम्न प्रकार से है :–

1. 14 जनवरी से 13 मई तक

2. 14 जुलाई से 13 सितम्बर ।

रविवार – 4.30 से 6.00 बजे शाम। सोमवार – 7.30 से 9.00 बजे सुबह।
मंगलवार – 3.00 से 4.30 बजे शाम। बुधवार – 12.00 से 1.30 बजे शाम।
गुरुवार – 1.30 से 3.00 बजे शाम। शुक्रवार – 10.30 से 12.00 बजे शाम।
शनिवार – 9.00 से 10.30 बजे सुबह।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड अध्याय 22, श्लोक 27 से 34, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।
2. "ज्योतिष और काल निर्णय", डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली, साधना पाकेट बुक्स ।

14 मई से 13 जुलाई

रविवार – 4.30 से 6.00 बजे शाम। सोमवार – 7.30 से 9.00 बजे सुबह।

मंगलवार – 3.00 से 4.30 बजे शाम। बुधवार – 12.00 से 1.30 बजे दोपहर।

गुरुवार – 1.30 से 3.00 बजे सायं। शुक्रवार – 10.30 से 12.00 बजे सुबह।

शनिवार – 9.00 से 10.30 बजे सुबह।

14 सितम्बर से 13 जनवरी

रविवार – 4.30 से 6.00 बजे शाम । सोमवार – 7.30 से 9.00 बजे सुबह ।

मंगलवार – 3.00 से 4.30 बजे शाम । बुधवार – 12.00 से 1.30 बजे दोपहर ।

गुरुवार – 1.30 से 3.00 बजे सायं । शुक्रवार – 10.30 से 12.00 बजे सुबह ।

शनिवार – 9.00 से 10.30 बजे सुबह ।[1]

उपरोक्त समय राहूकाल का दिया गया है । अतः आधुनिक मत से है । इसे ग्रहण करना चाहिए ।

कार्य सिद्धि कथन :-

प्रश्नांङ्परस्तनुं कार्य-गेहं कार्याधिपो यदि ।

कार्यमंङ्गाधिपः कार्या-धीशोऽङ्गं वाऽपि पश्यति ।।

स्वस्वभावस्थयोर्लग्न-कार्याधीशनभोगयो : ।

मिथादृष्टिस्तदाऽपि स्यात् कार्यसिद्धिः प्रयासतः ।

पूर्णेन्दुनेक्षितौ ना चे-दनायासं तु सा भवेत् ।।[2]

1. प्रश्नलग्नलेश लग्न को, कार्यधीश कार्य गृह को देखता हो तो ।
2. लग्नेश कार्य को और कार्येश लग्न को देखें तो ।

---

1. "ज्योतिष और काल निर्णय", डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली, साधना पाकेट बुक्स ।
2. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं० देवचन्द्र झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी श्लोक 14-15 पेज 639 ।

3. अपने–अपने भाव स्थित हों तथा कार्येश लग्नेश की परस्पर दृष्टि हो तो इन तीनों योगों में कार्य सिद्धि होती है ।

4. यदि लग्नेश, कायर्येश पूर्ण चन्द्र से दृष्ट हो तो अनायास कार्यसिद्धि होती है ।

योगान्तर में :-

1. यदि प्रश्न लग्न शुभ ग्रह युक्त तथा शुभ ग्रह के षड्वर्ग में हो शीर्षोदय राशि लग्नगत हो तो शीघ्र कार्य सिद्धि होती है ।

   शीर्षोदय राशि :– मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक तथा कुम्भ हैं ।

2. वैपदीत्य में पापग्रह युक्त या पाप षड्वर्गस्य प्रश्नलग्न की स्थिति में कार्य सिद्धि नहीं होती है ।

3. शुभ पाप दोनों के सम्मिश्रण में विलम्ब से कार्यसिद्धि होती है ।[1]

मौष्टिक प्रश्न :-

1. मौष्टिक या मानसिक प्रश्न में स्वनवांशस्य ग्रह प्रश्न लग्न या नवम पञ्चम में अपने नवांश को देखे तो जीव सम्बद्ध प्रश्न समझना ।

2. दूसरे के नवांश में स्थित ग्रह प्रश्न लग्न या नवम पञ्चम में अपने नवांश को देखे तो जीव सम्बद्ध प्रश्न करना ।

3. इसी तरह परवांशस्थ ग्रह लग्न या त्रिकोण (1-5-9) में दूसरे के नवांश को देखे अर्थात् दूसरे के नवांश में स्थित लग्न या त्रिकोण पर परनवांशस्थ ग्रह की दृष्टि रहे तो मूल सम्बद्ध प्रश्न समझे ।

4. इसी तरह समराशि में प्रथम नावांशस्थ लग्न हो तो जीवचिन्ता, द्वितीय नवांशस्थ हो तो मूल चिन्ता एवं तृतीय नवांशस्थ लगन रहने से धातु, चिन्ता, चतुर्थ में जीव, पञ्चम में मूल इत्यादि समझें ।

---

1. "ज्योतिष और काल निर्णय", डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली, साधना पाकेट बुक्स ।

5. विषय राशिगत प्रश्न लग्न में प्रथम नवांशस्थ में धातु, द्वितीय नवांशस्थ होने पर मूलसम्बद्ध, तृतीय नवांश से जीव, इसी तरह आगे समझना ।[1]

पथिक गमनागमन विचार :-

1. प्रश्नांक में चतुर्थ या दशम में शुभग्रह हो तो गन्तुक व्यक्ति का गमन तथा उच्च स्थानों के पापग्रह हो तो आगन्तुक का आगमन नहीं होता ।
2. लग्न, चतुर्थ या दशम में जितने दिनों द्वितीय राशि (द्वितीय पञ्चम तथा एकादश) में ग्रह आवे उतने दिनों में आगन्तुक पथिक का आगमन कहना चाहिए ।[2]

शीघ्रगमनयोग :-

1. प्रश्न लग्न से सप्तमस्थ चन्द्रमा तथा नवमेश राशि के उत्तरार्ध में स्थित हो तो पथिक को मार्ग में आते हुए समझना चाहिए ।
2. प्रश्न लग्न से चतुर्थ स्थान में गुरु, शुक्र या चन्द्र स्थित हो तो पथिक को घर आए जानना चाहिए ।
3. प्रश्न लग्न के द्वितीय या तृतीय स्थानगत गुरु, शुक्र हों तो भी घर आए ही पथिक को जानना चाहिए ।
4. प्रश्न लग्न में शुक्र, बुध एवं शनि इनमें से एक भी चर लग्न गत हो तों परदेशी शीघ्र आता है यदि ग्रह वक्री नहीं रहे तो ।[3]

पथिक क्लेश योग :-

प्रश्न लग्न यदि 1, 2, 4, 9, 10 राशि में हो, उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो, पापग्रह की दृष्टि हो अथवा पापग्रह केन्द्रगत हो तो पथिक को क्लेश पीड़ित समझना चाहिए ।[4]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", प्रश्नाध्याय, श्लोक 17-18, पं० देवचन्द्र झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, पेज 639।
2. वही, पेज 640।
3. वही, पेज 640।
4. वही, श्लोक 25, पेज 641।

पथिकारिष्ट योग :-

प्रश्न से अष्टम में सूर्य या मंगल हो तो चोट का भय समझना चाहिए । सिंह का सूर्य और प्रश्न लग्न से अष्टम के स्थित चन्द्रमा का मंगल शनिदृष्ट हों, जग में शुभ ग्रह नहीं हो तो पथिक को पथिक शह–कष्टमय समझना ।[1]

विवाह प्रश्न :-

प्रश्न लग्न से 3, 6, 11, 7, 5 में से कहीं भी चन्द्रमा, सूर्य, बुध, गुरु से दृष्ट हों या लग्न से केन्द्र अथवा त्रिकोण में गुरु, बुध, शुक्र तथा चन्द्र हों और लग्नेश, सप्तमेश, क्रमशः सप्तम् तथा लग्नगत हों तो शीघ्र विवाह करना चाहिए ।[2]

स्त्रीमृत्यु योग :-

प्रश्न लग्न से 4, 7 में पाप ग्रह हों और शुक्र निर्बल हो, सप्तम में राहु हो, तीनों स्थिति में स्त्री की मृत्यु कहना ।[3]

योगान्तर से :-

जयाभाव (सप्तम) सपाप हो और चतुर्थ (सुख) भाव शुभ ग्रह युक्त हो तो पत्नी की मृत्यु, दोनो स्थान सपाप हों तो दोनो की मृत्यु कहनी चाहिए ।[4]

गर्भ प्रश्न :-

प्रश्न लग्न से पञ्चम शुभ ग्रह या अपने स्वामी से युक्त हो अथवा दृष्ट हो, मासेश भी शुभ हो तो सकुशल गर्भ समझना चाहिए । इसके विपरीत (पञ्चम सपाप तथा स्वामी के योग या दृष्टि रहित और मासेश भी दुर्बल हो तो) गर्भ का अकुशल कहना चाहिए ।[5]

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", प्रश्नाध्याय, पं० देवचन्द्र झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, पेज 641 ।
2. वही, पेज 641 ।
3. वही, पेज 641 ।
4. वही, पेज 641 ।
5. वही, पेज 641 ।

योगान्तर से :-

प्रबल शुक्र तथा चन्द्र प्रश्न लग्न से पञ्चम स्थान को देखें तो पुत्र का और वे दोनो पञ्चमस्थानगत् हो तो कन्या का जन्म कहना चाहिए ।

नीच राशियों, या अस्तंगत या शत्रुभवन या त्रिक (6, 8, 12) में व दोनों रहें तो सन्तान की बाधा होती है । यदि ये बली लाभ स्थानगत् हों तो पुत्रोत्पत्ति कहनी चाहिए ।[1]

पुत्रयोग :-

पञ्चमेश लग्न में, लग्नेश पञ्चम् में बली चन्द्रमा के साथ रहें, प्रश्न लग्नेश तथा पञ्चमेश उच्चगत् हों और पञ्चमेश तथा प्रश्न लग्नेश में परस्पर दृष्टि हो तो निसन्देह पुत्रोत्त्पत्ति होती है ।[2]

योगान्तर से :-

पञ्चमेश अस्तंगत् हो, नीच राशिगत हो, पीड़ित हो तो प्रश्नकर्ता अपुत्र होता है। पुत्र होने पर भी शीघ्र ही पुत्र की मृत्यु हो जाती है । पञ्चमेश राहु या मंगल के साथ हो तो अनपत्यता होती है, ऐसा पूर्वाचार्यो में कहा है ।[3]

रोगी का मरण प्रश्न :-

1. प्रश्न लग्न पाप ग्रह की राशि हो ।
2. अष्टम पाप ग्रह युक्त या दृष्ट हो ।
3. चन्द्र पापी ग्रहों के मध्य होकर अष्टम में हो ।
4. पाप ग्रह अष्टम् या द्वादश में हो ।
5. चन्द्र प्रश्न लग्न से 1, 6, 7, 8 में स्थित हो ।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", प्रश्नाध्याय, पं० देवचन्द्र झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, पेज 641 ।
2. वही, पेज 642 ।
3. वही, पेज 643 ।

6. चन्द्र लग्न में, सूर्य सप्तम् में हो ।
7. मेषस्थ भौम वृश्चिक के नवांशगत चन्द्रमा के साथ हो तो उपरोक्त योगों में रोगी की मृत्यु होती है ।[1]

मृत्यु तथा रोग शान्ति :-

1. यदि प्रश्न कर्ता तैलाभ्यक्त, सूतकवाला, तालाब के पास बैठा हुआ हो तो पृच्छक की मृत्यु होती है ।
2. प्रश्नलग्न से 5, 3, 6, 9, 10, 11 इन भावों में शुभग्रह हो तो रोग शान्ति होती है और पाप ग्रह हो तो मृत्यु, इसमें शुभग्रह बलहीन तथा पाप ग्रह बलवान न हों।
3. जन्म लग्न या प्रश्न लग्न में 1, 5, 7, 9, 10, 11 स्थानों में शुभ ग्रह हों तो शुभ दायक होते है।[2]

रोगी का कल्याणकर योग :-

1. प्रश्न लग्न से सप्तम् शुभ ग्रह युक्त हों ।
2. लग्नेश उदित हो अष्टमेश निर्बल तथा लाभेश प्रबल हो तो कल्याण कहना चाहिए।
3. प्रश्न लग्न से सप्तम शुभ पाप दोनों के ग्रह हों तो मिश्रित फल कहना चाहिए।[3]

पल श्रुतिकथन

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" उत्तराखण्ड अध्याय 24 में 5 श्लोक फल श्रुतिकथन दिये हैं। इसमें बतलाया गया है, कि गुरु और शास्त्र के प्रभाव से मनुष्य सर्वज्ञ होता है । यहाँ गुरु की महत्ता बताई गई है । पहले भी बतलाया गया है कि गुरु मुख से ज्ञान प्राप्त कर ही शिष्य का कल्याण संभव

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", प्रश्नाध्याय, पं० देवचन्द्र झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, पेज 643।
2. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", खेमराज श्रीकृष्णदास, वेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई, पेज-631।
3. वही, पेज-644।

है । बिना गुरु के कोई भी प्राणी इस ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता। गुरु की ही कृपा से यह ज्ञान विशद् होता है तथा कल्याणकारी होता है । कहा है कि :–

होराशास्त्रमिदं सर्वं श्रद्धाविनसंयुतः ।

श्रुत्वा गुरुमुखादेव बुद्धिमानवलोक्य च ।।

यो जानाति स शास्त्रार्थं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।

श्रावयेद्दर्शयेद्विद्वानन्यो गर्गो द्विजोत्तमः ।।

सर्वपापविनिर्मुक्तो ब्रह्मलोकं स गच्छति ।

वेदेभ्श्च समुद्धृत्ये ब्रह्मा प्रोवाच विस्तृतम् ।।

शास्त्रमाद्यं तदेवेदं वेदांगं वेदचक्षुषी ।

गर्गस्तस्मादिदं प्राह मया तस्माद्यथा तथा ।।

तदुक्तं तव मैत्रेय शास्त्रमाद्यंतमेव हि ।।[1]

फल और उपदेश परम्परा इस शास्त्र को गुरुमुख से पढ़कर अभ्यास करना चाहिए। गुरु और शास्त्र के प्रभाव से मनुष्य सर्वज्ञ होता है तथा पापमुक्त होता है । दूसरे योग्य अधिकारी को उपदेश करना चाहिए । इसके सम्यक् ज्ञान से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है । ब्रह्मजी ने पूर्वकाल में वेदों से उद्धार करके इस शास्त्र का उपदेश गर्ग मुनि को किया। यह शास्त्र वेद का नेत्र है । और गर्गजी ने ब्रह्मजी से पढ़कर हमको उपदिष्ट किया और हमने तुमको आद्यन्त कहा है ।

।। बृहत्पाराशर–होराशास्त्र अध्ययन सम्पूर्ण।।

।। ॐ शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः ! ।।

---

1. "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", उत्तरखण्ड, अध्याय 24, श्लोक 1 से 5, खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेकंटेश्वर स्टीम् प्रेस, मुम्बई ।

उपसंहार

"बृहत्पाराशर–होराशास्त्र" के अध्ययन को हमने गणित तथा फलित भागों में विभक्त करके 18 अध्यायों में अपना शोध कार्य पूर्ण किया है । शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में हमने लग्न की परिभाषा, इसके साधन की विधि, भाव लग्न, होरा लग्न, प्राणपद आदि के गणितीय सूत्रों की व्याख्या कर सरल विधि प्रतिपादित की है । द्वितीय अध्याय भाव साधन में कुण्डली के बारह भावों को निकालने की विधि बताई गई है, इसमें उदाहरण कुण्डली के भाव स्पष्ट किए गए है । तीसरे अध्याय में ग्रह की परिभाषा, भयात्–भयोग, चन्द्र स्पष्ट आदि सहित सभी ग्रहों की स्पष्ट स्थिति का वर्णन किया है । इसमें ग्रहों के कारकांश, स्वांश तथा मैत्री चक्र को भी लिया गया है । मुख्य ग्रहों के अतिरिक्त अप्रकाश ग्रहों जैसे धूम, व्यतिपात, इन्द्रचाप आदि के विषय में भी जानकारी दी है । चतुर्थ अध्याय में षोडश वर्ग साधन विधि दी गई है, क्योंकि जन्म कुण्डली के अतिरिक्त अन्य कुण्डलियां भी विशेष फल देखने हेतु महत्वपूर्ण होती हैं, अतः महर्षि पाराशर ने इन सब के बारे में सूत्र दिए है। इन कुण्डलियों को वर्गों में भी बांटा गया है यथा षड्वर्ग, सप्तवर्ग, दसवर्ग तथा षोडशवर्ग ।

शोध प्रबन्ध के पांचवें अध्याय में हमने ग्रह बल तथा भाव बल निकालने की विधियों को सरल रूप में वर्णित किया है । गणित की दृष्टि से यह अध्याय विस्तृत तथ महत्वपूर्ण भी है । इसमें उच्चबल, द्रेष्काण बल, काल बल, चेष्टाबल आदि का साधन किया है । होरेश बल साधन का सूत्र हमारे ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं था, अतः हमने "बाबूलाल ठाकुर" के ग्रन्थ से सहायता ली है । चेष्टा बल "केशवी जातक", "ग्रहलाघव" के आधार पर निकाला गया है । इस अध्याय में दृष्टि साधन एवं भाव दिक्बल के सूत्र जो महर्षि पराशर के ग्रन्थ में खोले नहीं गए थे, का पूरा विवरण देने का प्रयास किया गया है । ग्रहों की भावों पर दृष्टि तथा उनका इष्ट–कष्ट फल भी दिया गया है, दृष्टि निकालते समय आधुनिक कोज्या, ज्या सूत्रों के स्थान पर प्राचीन पद्धति का ही प्रयोग किया है ।

शोध प्रबन्ध का छठा अध्याय दशा साधन से परिपूर्ण है, इसमें महर्षि पराशर द्वारा वर्णित सभी 42 प्रकार की दशाओं का वर्णन है, इतना विशद् वर्णन महर्षि पराशर के ग्रन्थ के अतिरिक्त किसी भी प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थ में पाया जाना दुर्लभ है । विंशोत्तरी दशा को आगे अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा, सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में बांटा गया है । इसके अतिरिक्त षोडशोत्तरी, अष्टोत्तरी, शताब्दिका, षष्टिहायनी दशा, नवमांश स्थिर दशा, नक्षत्र दशा, तारा दशा, वर्णद दशा तथा पंचस्वर दशा का भी वर्णन है । ग्रन्थ के आधार पर यह भी स्पष्ट किया गया है कि जातक की कुण्डली में ग्रहों की स्थिति तथा उत्पन्न योगों को आधार मान कर कौन सी दशा ली जाएगी । उदाहरण के लिए यदि चन्द्रमा लग्न में हो तो षष्टिहायनी दशा लेनी चाहिए । इसी प्रकार यदि जन्म लग्न तथा नवमांश लग्न एक ही हो तो शताब्दिका दशा लगेगी । गुरु यदि कुण्डली में भी कर्क के नवमांश में हो तो महर्षि पराशर के अनुसार पंचोत्तरी दशा लेनी चाहिए । इसी प्रकार राहु यदि लग्नेश से 4, 5, 7, 9, 10 अर्थात् लग्न को छोड़कर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो अष्टोत्तरी दशा ग्रहण करनी चाहिए ।

सातवें अध्याय में हमने देखा कि महर्षि ने जातक की आयु निकालने के लिए अनेक तरीके सुझाए हैं । आयुर्दाय नामक इस अध्याय में पिण्डायु, ध्रुव आयु, नवमांश आयु, भावायु, अष्टक वर्ग से आयु आदि सहित ग्यारह प्रकार से स्पष्ट आयु निकालने की विधि दी गई है। हमने यह भी पाया है कि असमंजस को समाप्त करने के लिए ग्रन्थ मे यह भी स्पष्ट किया गया है, कि किन–किन परिस्थितियों में कौन सी आयु ग्रहण करनी चाहिए । उदाहरण के लिए यदि कुंडली में सूर्य उदय हो, शशयोग या हंसयोग हो अथवा अनफा, सुनफा, दुर्धरा योग हों तो पिण्डायु ली जाती है । रश्मि भेद से यदि 5 से 10 रश्मियां हो तो अंशायु लेनी चाहिए ।

अष्टक वर्ग साधन महर्षि पराशर के अनुसार गणित तथा फलित का श्रेष्ठ भाग है, हमने पाया कि इसे वे ज्यादा महत्व देते हैं । इसमें अष्टक वर्ग की विधि, ग्रहों के अष्टक वर्ग,

सर्वाष्टक वर्ग साधन, त्रिकोण शोधन, एकाधिपत्य शोधन तथा पिण्ड शोधन उदाहरण कुण्डली पर घटित करके दिखाया गया है । नवम् अध्याय में सुदर्शन चक्र तथा इसके आधर पर फल लिखने की विधि बताई गई है । यह सुदर्शन चक्र भी अन्य ग्रन्थों में दुर्लभ है। इसे महर्षि पराशर ने ज्योतिष शास्त्र का सारभूत माना है । इसमें भाव दशा चक्र बनाकर प्रत्येक भाव को 10-10 वर्ष की दशा दी गई है, जिससे फल भी निकाला जा सकता है ।

फलित खण्ड में भी नो अध्याय (10 से 18) हैं, दशवां अध्याय भावाधीश की विभिन्न स्थानों में स्थिति के आधार पर फल बताता है । हमने देखा कि भावेश यदि त्रिक स्थानों 6, 8, 12 में चला जाए तो उसका फल बिल्कुल बदल जाता है । यहां हमने मानसागरी तथा जातक संग्रह जैसे ग्रन्थों से सहायता ली है । एकादश अध्याय में सभी ग्रहों का विभिन्न भावों तथा विभिन्न राशियों में अलग–अलग फल दिया गया है । इस अध्याय में भी हमने ज्योतिष के प्रसिद्ध ग्रन्थों यथा "सारावली", "जातक संग्रह", "मानसागरी", "चमत्कार" "चिंतामणि" तथा "ज्योतिष रत्नाकर" की सहायता ली है । फलादेश को अधिक सटीक बनाने के लिए इस शोध निबन्ध में महर्षि पराशर द्वारा बताए गए, अप्रकाश ग्रहों तथा गुलिक आदि के सूत्रों का वर्णन द्वादश अध्याय मे किया गया है । अगले अध्याय में हमने षोडशवर्ग कुण्डली के आधार पर फल दिया है । हमने पाया कि कुछ प्रकरणों के विषय में जन्म कुण्डली के अतिरिक्त अन्य कुण्डलियां भी बहुत महत्वपूर्ण हैं यथा धन के लिए होरा, संतान के लिए सप्तमांश, वैवाहिक जीवन के लिए नवमांश कुण्डली आदि । इन कुण्डलियों में लग्नेश तथा उसकी स्थिति अधिक महत्वपूर्ण मानी गई है । यहां ग्रहों की दृष्टि आदि को महत्व नहीं दिया जाता ।

चौदहवां अध्याय जातक की दशाओं के आधार पर फलादेश से परिपूर्ण हैं । यहां पर महादशा, अन्तर, प्रत्यन्तर, सूक्ष्म तथा प्राण पांच दशा एक दशा की बनती है । इसमें भाव

चक्र दशा तथा चरपर्यादशा का भी वर्णन हैं । महर्षि पराशर ने अपने ग्रन्थ में योगिनी दशा का फल नहीं दिया है या वह उपलब्ध नहीं है अतः इस अध्याय की पूर्णता के लिए "मानसागरी" ग्रन्थ से योगिनी दशा फल तथा उनका अन्तर्दशा फल दिया गया है । अध्याय पन्द्रह में योगों के आधार पर फल देने का प्रयास किया गया है । इस अध्याय में 724 योगों के नाम तथा मुख्य–मुख्य का फल भी दिया गया है । योग की परिभाषा, पंचमहापुरुष योग, सूर्य तथा चन्द्रमा से बनने वाले योग, तन विवेक, धन विवेक आदि की विस्तृत व्याख्या की गई है । शोध प्रबन्ध का सोलहवां अध्याय अष्टक वर्ग के आधार पर फलित करने से सम्बन्धित है । ग्रन्थ में इसे महत्वपूर्ण माना गया है । विशेषकर गोचर में ग्रहों का फल अधिक या कम रेखा या बिन्दुओं पर अधिक निर्भर करता है । अध्याय सत्रह में स्त्रीजातक का विवरण है । क्योंकि ग्रह उसी स्थान पर स्त्री तथा पुरुष की कुंडली में अलग–अलग फल भी देते है। यह अध्याय मूल ग्रन्थ में नहीं है, अतः इसे "बृहत्पाराशर–होराशास्त्र", पं० देव चन्द्र झा वाले ग्रन्थ से लिया गया है । अंतिम अध्याय प्रश्न प्रकरण है । इसे भारतीय ज्योतिष का सबसे श्रेष्ठ भाग कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी । क्योंकि जिनकी जन्म कुण्डली उपलब्ध नहीं है उनकी समस्याओं का समाधान इसी पद्धति द्वारा किया जाता है ।

इस प्रकार शोध प्रबन्ध के प्रथम नौ अध्यायों में महर्षि पराशर द्वारा प्रदत्त गणितीय सूत्रों को सरल भाषा में ढालने का प्रयास किया गया है । जिससे साधारण व्यक्ति भी इन्हें थोड़े प्रयास से समझ सके । अगले नौ अध्यायों में फलित भाग को सरल किया गया है । जहां मूल ग्रन्थ में सूत्र नहीं मिले वहां अन्य ग्रन्थों की सहायता से इस भाग को भी सम्यक् एवं संतुलित रुप में सुगम भाषा में रखा गया है । गुरु कृपा से ही इतने महान ग्रन्थ के विषय में कुछ लिखा है, अन्यथा मेरी क्षुद्र बुद्धि कहां तक समर्थ है ?

* * *

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. **अथर्व वेद संहिता** : पं० श्रीराम शर्मा, शांतिकुंज, हरिद्वार संवत्-2057।
2. **अष्टक वर्ग महानिबन्ध** : आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ, व्याख्या, डॉ० सुरेश चन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन, दिल्ली-1989 ।
3. **आयुर्निर्णय** : आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ, पर्वतीय, रंजन पब्लिकेशन, दिल्ली-1998 ।
4. **उल्झे प्रश्न-सुलझे उत्तर** : सुरेश चन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन, दिल्ली, 1992।
5. **ऋग्वेद संहिता** : पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, शांतिकुंज, हरिद्वार संवत्-2057।
6. **केशवी जातक** : गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, कल्याण–प्रकाशन, बम्बई-1896।
7. **गर्गजातकम्** : गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, कल्याण–प्रकाशन, बम्बई-1987।
8. **गर्गमनोरमा** : खेमराज श्रीकृष्णदास, प्रकाशन, बम्बई-1998 ।
9. **ग्रहलाघव** : पं० रामस्वरूप, खेमराज श्रीकृष्णदास बम्बई-1951।
10. **चमत्कार चिन्तामणी** : श्री भट्टनारायण कृत, व्याख्या, ब्रजबिहारीलाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, मुम्बई, दिल्ली, बैंगलोर, पुणे, चेन्नई, कोलकाता, पटना, वाराणसी-1975।
11. **जातकालंङ्कार** : डॉ० सत्येन्द्र मिश्र, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2002।
12. **जैमिनि-सूत्रम्** : पं० श्री सीताराम शर्मा, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी-2002।
13. **जातक तत्वम्** : श्रीमन् महादेव पाठक, रतलाम्-1899 ।
14. **जातक पारिजात** : डॉ० हरिशंकर पाठक, चौखम्बा, सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2001 ।

15. **ज्योतिष और काल-निर्णय** : डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली, साधना पॉकेट बुक्स-1899।

16. **ज्योतिष-योग दीपिका** : डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली, आनन्द पेपर बैक्स, दिल्ली, बम्बई-1990 ।

17. **ज्योतिष रत्नाकर** : देवकीनन्दन सिंह, मोतीलाल, बनारसी दास, दिल्ली, वाराणसी, पटना, बंगलौर, मद्रास-1934 ।

18. **ज्योतिष सर्व संग्रह** : रामस्वरुप शर्मा, दीपचन्द बुकसेलर, नयागंज, हाथरस। 1981 ।

19. **ज्योतिष हस्तरेखा विज्ञान एवं तंत्र में सूर्य** : डॉ० जी० के० शर्मा, निरंजनी अखाड़ा, हरिद्वार-1980 ।

20. **पारस्कर-गृह्यसूत्रम्** : डॉ० हरिदत्त शास्त्री, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, दिल्ली-1973 ।

21. **प्रश्न विद्या** : आचार्य बादरायण, व्याख्या, डॉ० सुरेशचन्द्र मिश्रा, रंजन पब्लिकेशन, दिल्ली-1998 ।

22. **फलित-मार्तण्ड** : मुकुन्द वल्लभ मिश्रा, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कलकत्ता, बंगलौर, वाराणसी, पुणे, पटना-1968 ।

23. **बृहत्पाराशर-होराशास्त्र** : खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई-1999।

24. **बृहत्पाराशर-होराशास्त्र** : पं० गणेशदत्त पाठक, ज्योतिष प्रकाशन, वाराणसी-1998।

25. **बृहत्पाराशर-होराशास्त्र** : पं० देवचन्द्र झा, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी-1990।

26. **भारतीय कुण्डलीदर्पण** : पं० कौशलकिशोर त्रिपाठी, श्रीदुर्गा पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद, संवत्-2039 ।

27. **भारतीय ज्योतिष** : डॉ० नेमीचन्द शास्त्री, भारतीय ज्ञान पीठ-1952 ।

28. **भावकुतूहलम्** : महीधर कृत्, खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई-2000 ।

29. **भुवन दीपक** : डॉ० सत्येन्द्र मिश्र, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2002।

30. **मुहूर्तपारिजात् (ज्योतिषकल्पद्रुम)** : पं० सीताराम झा, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी संवत् - 2017 ।

31. **महाभारत** : गीता प्रेस, गोरखपुर, संवत्-2046 ।

32. **मानसागरी** : मधुकान्त झा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी- 1970 ।

33. **वृहज्जातक** : पं० केदारदत्त जोशी, मोतीलाल बनारसी दास - 1985।

34. **वृहद्दैवजरञ्जनम्** : डॉ० मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल, बनारसीदास, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कलकत्ता, बंगलौर, वाराणसी, पुणे, पटना-1985 ।

35. **वाराही (बृहत्) संहिता** : खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई 1987।

36. **श्रीमार्तण्ड पञ्चांगम्** : श्री प्रियव्रत शर्मा, रुचिका पब्लिकेशन, करोलबाग, दिल्ली- 1977 ।

37. **सचित्र ज्योतिष शिक्षा** : बाबुलाल ठाकुर, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, वाराणसी, पटना, मद्रास - 1970 ।

38. **सर्वांग ज्योतिष** : डॉ० सुधीकान्त भारद्वाज, भारद्वाज् पब्लिकेशन, दिल्ली—यन्त्रस्थ।

39. **सारावली** : श्रीमत् कल्याण वर्मा, व्याख्या डॉ० मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, बंगलौर, वाराणसी, पुणे, पटना-1977 ।

English Books

40. Dots of Destiny : Vinay Aditya, System Vision, Delhi, 1996.

41. Suryasiddhanta An Astro-Liguistic Study : Dr. Sudhikant Bhardwaj, Primal Publication, Delhi 1992.

42. Vedic Astrology : Dr. K. S. Charak, System Vision, Delhi-1996.

पत्र-पत्रिकाएं :-

1. गोस्वामी, ज्योतिष टाईमस, नई दिल्ली ।
2. मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र, जोधपुर ।
3. वैदिक ज्योतिष रस, दिल्ली ।
4. भृगु ज्योतिष पत्रिका, दिल्ली ।
5. भविष्य सत्यता, हिसार ।
6. नक्षत्र वाणी, लखनऊ ।
7. Times of Astrology, Delhi.
8. Astrological Magazine, Bangalore.
9. फ्यूचर समाचार, दिल्ली ।

* * *